श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम्
(मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके)

'पी-एच्.डी.' संस्कृतम् उपाधये प्रस्तुतः

शोध-प्रबन्धः

शोध-निर्देशकः

डॉ. विश्वबन्धुः

संस्कृतभाषा एवं साहित्य विभाग

साँ.बौ.भा.ज्ञा.अ.वि.वि.

शोधार्थी

दीपकतिवारी

पी-एच्.डी. संस्कृतम्

नामांकन सं. : En16-00017

भाषा साहित्य एवं कला प्राध्ययन केन्द्र

साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय

शैक्षणिकपरिसर, साँची, रायसेन (मध्यप्रदेश) भारतम्

2021

शोधार्थी द्वारा घोषणा-पत्र

मैं एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि यह शोधकार्य **श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम् (मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके)** **डॉ. विश्वबन्धु** (सहायक प्राध्यापक, भाषा साहित्य एवं कला प्राध्ययन केन्द्र) के मार्गदर्शन में किया है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार इस शोध-प्रबंध में किसी भी प्रकार का कोई ऐसा तथ्य उद्धृत नही किया गया जो इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय के समक्ष किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया हो।

साथ में यह भी घोषणा करता हूँ कि -

1. मैंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 2018 के मापदण्डों के अनुसार एक सत्र का कोर्स वर्क सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है।
2. मैंने शोध-प्रबंध अंतिम रूप से जमा करने से पूर्व विभागीय शोध समिति के समक्ष प्रस्तुति भी दी है और दिए गये निर्देशों/सुझावों के आधार पर संशोधनों को सफलतापूर्वक शामिल किया है।
3. मैंने राष्ट्रीय संगोष्ठी मे शोध-प्रबंध से सम्बन्धित दो शोध पत्र भी प्रस्तुत किया है जिसकी छायाप्रति शोध-प्रबंध के अन्त मे संलग्न है।
4. मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध-प्रबंध में कोई भी सामग्री, किसी अन्य शोध से या किसी प्रकाशित समग्री का हिस्सा नहीं है, यदि Plagiarism के अन्तर्गत कोई भी सामग्री पायी जाती है तो उसके लिए मैं स्वयं उत्तरदायी रहूँगा।

स्थान................

दिनांक...............

शोधार्थी हस्ताक्षर

(साँ.बौ.भा.ज्ञा.अ.वि.)

प्रमाण-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध जिसका विषय **श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम् (मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके)** **श्री दीपक तिवारी** द्वारा किया गया शोध कार्य है, जिसे साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में पी-एच.डी. - संस्कृतम् उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में पूर्ण किया गया है।

मेरी जानकारी के अनुसार

1. यह शोधार्थी का मौलिक कार्य प्रतीत होता है।
2. यह शोध कार्य यू.जी.सी. के दिशा निर्देशों को पूरा करता है।
3. विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. से सम्बन्धित अध्यादेश की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

स्थान........... हस्ताक्षर

दिनांक......... **शोध निर्देशक**

<u>प्रमाण-पत्र</u>

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध जिसका विषय **श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम् (मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके)** श्री दीपक तिवारी द्वारा किया गया शोध कार्य है, जिसे साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में पी-एच.डी.- संस्कृतम् उपाधि हेतु **डॉ. विश्वबन्धु** के निर्देशन में पूर्ण कराया गया है।

मेरी जानकारी के अनुसार

1. यह शोधार्थी का मौलिक कार्य प्रतीत होता है।
2. यह शोध कार्य यू.जी.सी. के दिशा निर्देशों को पूरा करता है।
3. विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. से सम्बन्धित अध्यादेश की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

स्थान........... हस्ताक्षर

दिनांक......... **विभागाध्यक्ष**

<u>सर्वाधिकार</u>

मैं, **दीपक तिवारी** एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, रायसेन द्वारा इस शोध-प्रबंध **श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम् (मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके)** को शैक्षणिक/अनुसंधान उद्देश्य से इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट प्रारूप में उपयोग के अधिकार होंगे।

नोट – शोधार्थी अथवा अन्य के द्वारा शोध-प्रबंध के आँकडों/ निष्कर्षों का प्रयोग व्यक्तिगत रूप से किया जा सकेगा, बशर्ते कि यथा स्थान विश्वविद्यालय के सर्वाधिकार का उल्लेख किया जाए।

स्थान................
दिनांक...............

शोधार्थी हस्ताक्षर
दीपक तिवारी
(साँ.बौ.भा.ज्ञा.अ.वि.)

कार्तज्ञपुष्पाञ्जलि

सर्वप्रथम मैं हृदयस्थ अपने इष्टदेव के श्रीचरणकमलों में पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूँ। जिनकी अहैतुकि कृपा से यह शोधकार्य पूर्णता को प्राप्त हुआ। तदुपरान्त महर्षिवेदव्यास श्रीचरणों में नमन करता हूँ। इसी क्रम में स्वर्गीय गुरु जी श्रीहरिनारायण रिछारिया जी के चरणों में पुष्पांजलि समर्पित करता हूँ।

शोधप्रबन्ध का कार्य अत्यन्त परिश्रम का कार्य है जिसमें पूर्ण योजना एवं सटीक मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता होती है। इस शोध प्रबंध का कार्य मेरे स्वयं के सामर्थ्य से पूर्णता को प्राप्त नहीं हो पाता। अत: इस शोध प्रबंध के कार्य में मेरे परम पूज्य सरस्वती के वरदपुत्र विद्वान् ऋजु प्रकृति के धनी शिष्यानुरागी गुरुवर आचार्य डॉ. विश्वबंधु जी के सानिध्य व आशीर्वाद से मेरा शोध प्रबंध कार्य संपन्न हो सका ऐसे श्रद्धेय गुरु को मैं कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ। मान्यवर आचार्य डॉ. देवेन्द्र सिंह जी का मेरे शोध कार्य की पूर्ति में महनीय सहयोग रहा है इसलिए मैं उनको भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ साथ ही विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। हमारे विश्वविद्यालय के पुस्तकालय प्रभारी अमित जी, हरीश जी, प्रकाश जी को आभार ज्ञापित करता हूँ। डॉ. सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालयस्थ संस्कृत विभाग के सभी अध्यापकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मेरे अग्रज की भूमिका का निर्वहन करने वाले डॉ. ऋषभ भारद्वाज जी को भी धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

माता (श्रीमति बबीता तिवारी) तथा पिता (श्रीमान् श्याम लाल तिवारी) जी के श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ। सभी बन्धु बांधवों के प्रति जिन्होंने मुझे धैर्यवान बनाया तथा गणमान्य मित्रों में आशीष आर्य, अजीत आर्य, नितिन गावकरे, ऋषिकांत भार्गव, विकास आर्य, दीपक आर्य, उमाशंकर कौशिक जी आदि सहृदय जनों के प्रति कृतज्ञ हूँ। साथ ही नीलेश, बालकृष्ण, शिवभजन, योगेश एवं सभी सहायकों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अंत में उन सभी ग्रन्थों, ग्रन्थकारों व शोध पत्र एवं शोधार्थियों का आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न करने के निमित्त बने।

दीपक तिवारी

शब्दसंक्षेपिका

ऋ. =	ऋग्वेदः
शु. य. (मा.) =	शुक्लयजुर्वेदः
अ. (शौ.) =	अथर्ववेदशौनकीयसंहिता
तै. सं. =	तैत्तिरीयसंहिता
ऐ. ब्रा. =	एतरेयब्राह्मणः
तै. ब्रा. =	तैत्तिरीयब्राह्मणः
बृ. उ. =	बृहदारण्यकोपनिषत्
छा. उ. =	छान्दोग्योपनिषत्
सम्. उ. =	संन्यासोपनिषत्
मु. उ. =	मुण्डकोपनिषत्
ब्र. सू. =	ब्रह्मसूत्रम्
वे. सू. =	वेदान्तसूत्रम्
वै. सू. =	वैशेषिकसूत्रम्
त. वा. =	तन्त्रवार्तिकम्
पू. मी. =	पूर्वमीमांसा
गौ. धर्म. =	गौतमधर्मसूत्रम्
आ. धर्म. =	आपस्तम्बधर्मसूत्रम्
बौ. धर्म. =	बोधायनधर्मसूत्रम्
वै. धर्म. =	वैखानसधर्मसूत्रम्
भा. गृह्य. =	भारद्वाजगह्यसूत्रम्
आ. गृह्य. =	आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्
ला. श्रौ. सू. =	लाट्यायनश्रौतसूत्रम्
भा. महा. =	श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
वा. पु. =	वायुपुराणम्
म. पु. =	मत्स्यपुराणम्
ब्रा. पु. =	ब्रह्माण्डपुराणम्
वि. पु. =	विष्णुपुराणम्

व. पु. = वराहपुराणम्

प. पु. = पद्मपुराणम्

भ. गी. = श्रीमद्भगवद्गीता

म. स्मृ. = मनुस्मृतिः

या. स्मृ. = याज्ञवल्क्यस्मृतिः

अ. सं. = अत्रिसंहिता

सू. सं. = सूतसंहिता

ल. स्मृ. = लघुहारीतस्मृतिः

प. स्मृ. = पराशरस्मृतिः

वि. धर्म. = विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रम्

गौ. स्मृ. = गौतमस्मृतिः

शङ्. स्मृ. = शङ्खस्मृतिः

बु. स्मृ. = बुधस्मृतिः

हा. स्मृ. = हारीतस्मृतिः

शङ्. लि. स्मृ. = शङ्खलिखितस्मृतिः

व. स्मृ. = वसिष्ठस्मृतिः

ना. स्मृ. = नारदस्मृतिः

अं. स्मृ. = अङ्गिरास्मृतिः

सं. स्मृ. = संवर्तस्मृतिः

द. स्मृ. = दक्षस्मृतिः

अर्थ. = अर्थशास्त्रम्

पा. अ. = पाणिनि अष्टाध्यायी

शु. नी. = शुक्रनीतिः

श. द्रु. = शब्दकल्पद्रुमः

अनुक्रमणिका

		पृ.क्र.
	वाङ्मुखम्	1-7
प्रथमोऽध्यायः	पुराणस्वरूपानुशीलनम् : तल्लक्षणं महापुराणाभिधानञ्च	8-24
	1.1 पुराणलक्षणम्	
	1.2 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः	
	1.3 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपादनशैली	
	1.4 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यविषयः	
द्वितीयोऽध्यायः	धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचयः	25-65
	2.1 धर्मसूत्रसाहित्यम्	
	2.2 स्मृतिसाहित्यम्	
	2.3 भाष्यं निबंधश्च	
तृतीयोऽध्यायः	श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था	66-121
	3.1 वर्णधर्माः	
	3.1.1 ब्राह्मणधर्मः	
	3.1.2 क्षत्रियधर्मः	
	3.1.3 वैश्यधर्मः	
	3.1.4 शूद्रधर्मः	
	3.2 आश्रमधर्माः	
	3.2.1 ब्रह्मचर्याश्रमः	
	3.2.2 गृहस्थाश्रमः	
	3.2.3 वानप्रस्थाश्रमः	
	3.2.4 संन्यासाश्रमः	

चतुर्थोऽध्यायः	**श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्काराः**	**122-147**
	4.1 गर्भाधानसंस्कारः	
	4.2 पुंसवनसंस्कारः	
	4.3 जातकर्मसंस्कारः	
	4.4 नामकरणसंस्कारः	
	4.5 उपनयनसंस्कारः	
	4.6 समावर्तनसंस्कारः	
	4.7 विवाहसंस्कारः	
	4.8 अंत्येष्टिसंस्कारः	
पञ्चमोऽध्यायः	**श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितो राजधर्मः**	**148-182**
	5.1 राज्यस्य सप्ताङ्गानि	
	5.2 राजशब्दस्यार्थः	
	5.3 राज्ञो महत्त्वप्रतिपादनम्	
	5.4 राजधर्मः शब्दस्यार्थः परिभाषा तन्माहात्म्यञ्च	
	5.5 राजधर्मः	
	उपसंहारः	**183-186**
	सन्दर्भग्रन्थाः	**187-195**
	परिशिष्टभागः	
	प्रकाशितशोधपत्रम्	
	सेमिनारशोधपत्रम्	
	प्लेगरिज्म रिपोर्ट	

वाङ्मुखम्

''शब्दब्रह्मणि निष्णात: परब्रह्माधि गच्छति''

(ब्रह्मबिन्दूपनिषत् म. -22)

शब्दब्रह्मणि निष्णातः साधक: परब्रह्म प्राप्नोति। शब्दब्रह्म परब्रह्मणः प्राप्तेः साधनमस्ति। महाकविदण्डिना शब्दज्योतिः सकललोकानां प्रकाशनस्य एकमात्रं साधनं मन्यते। शब्दज्योतिषा अज्ञानान्धकारस्य निवृत्तिर्वर्तते। अत एव शब्दब्रह्म एव परञ्ज्योतिरस्ति यथाहि –

इदमन्धंतम: कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्येत।।

(काव्यादर्श:,1/4)

शब्दब्रह्मण: साधनाया: आधारग्रन्थो वेदोऽस्ति। वेद: विश्वविद्याया: प्राचीनतम: ग्रन्थोऽस्ति। ज्ञानपुञ्जवेदग्रन्थान् आर्षजातिः प्रारम्भिकस्रोतस्कत्वेन प्रतिपादयति। प्राचीनकाले ऋषय: समाध्यवस्थायां यस्याः राशे: साक्षात्कारं कृतवन्त: सा शब्दराशिः 'वेद' इति नाम्ना ज्ञायते। वेदस्य विषये प्राप्यते यत् येषां तत्त्वानां ज्ञानं सांसारिकसाधनै: न सम्भवति तेषां तत्त्वानां ज्ञानं वेदेन सम्भवति यथाहि -

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।

एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

(वेददीपिका, पृ. 4)

परवर्त्तिकाले लिखितेषु ब्राह्मणारण्यकोपनिषत्वेदाङ्गादिषु ग्रन्थेषु वेदा: ईश्वरेण कृता: मन्यन्ते। युग-युगान्तरे पुष्पितपल्लवितभारतीयदार्शनिकविचारधाराया: प्रवर्तकैः स्वस्य स्वस्य मतानां पुष्टिः तथा च स्वीयसिद्धान्तानां व्याख्या वेदानाधारीकृत्य सम्पादिता। अत एव वक्तुं

शक्यते यत् वेदः भारतीयज्ञान-विज्ञान-सभ्यता-संस्कृति-धर्म-दर्शन-अध्यात्म-काव्यशास्त्र-साहित्यशास्त्रादीनां मूलाधारो ग्रन्थोऽस्ति। वेदेभ्यः निःसृतज्ञानराशिः ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषत्सु पुष्पिता महाभारतैतिहासिककाव्येषु पल्लविता महर्षिवेदव्यासस्य पुराणपरम्पायां विस्तृता संवर्धिता च जाता। अत एव वेदार्थस्योपबृंहणं सर्वैः स्वीकृतमस्ति। महाभारते उपबृंहणस्य सर्वप्रथमं प्रमाणं प्राप्यते यथाहि –

पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिज्योत्सना प्रकाशिता।

(महाभारतम्,1/1/86)

वेदस्य मन्त्रैः प्रतिपादितार्थस्य सिद्धान्तस्य तथ्यस्य उपबृंहणं पुराणानां प्रामुख्यम् उद्देश्यमस्ति यथाहि –

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।

(महाभारतम्, 1/1/267)

पुराणेषु वैदिकमन्त्राणाम् आख्यानाम् उपबृंहणं सर्वत्रैव दृश्यते। 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' अस्य मन्त्रस्य श्रीमद्भागवतमहापुराणे "आत्मा वास्यमिदं विश्वम्" इति व्याख्या उपलभ्यते। इतोऽपि अस्मिन् महापुराणे 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया', 'तत्सवितुर्वरेण्यं', 'प्रणवो धेनुः', 'आत्मानं चेदविजानीयात्' प्रभृतिमन्त्राणां विशद्परिवर्तितसंशोधितव्याख्याः प्राप्यन्ते। ऋग्वेदस्थविष्णुसूक्तस्य "विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचम्" इत्यस्य मन्त्रस्य विस्तरेण व्याख्या श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते यथाहि –

विष्णोर्नु वीर्यगणनां कतमोऽर्हतीह

यः पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजांसि।

चस्कम्भ यः स्वरंहसास्खलता त्रिपृष्ठं

कस्मात त्रिसाम्यसदनादुरु कम्पयानम्।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 2/7/40)

अष्टादशपुराणेषु, एकोनविंशतौ उपपुराणेषु, एकोनविंशतौ औपपुराणेषु च श्रीमद्भागवतम् 'महापुराणमिति' उक्तम्। महर्षिवेदव्यासेन श्रीमद्भागवतमहापुराणम् वेदार्थस्य प्रतिपादक: तथा च निगमकल्पवृक्षस्य गलितं, सुपरिपक्वं, मधुरतमं फलञ्च मन्यते। यथाहि –

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं

शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।

पिबत भागवतं रसमालयं

मुहुरहो रसिकाः भुवि भावुका:।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 1/1/3)

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य अन्तिमे भागे द्वादशे स्कन्धे त्रयोदशेऽध्याये भागवतस्य महत्तावर्णने भागवतं सर्ववेदान्तसार: कथ्यते तथा अस्य ग्रन्थस्य प्रयोजनं कैवल्यैव अस्ति यथाहि –

सर्ववेदान्तसारं यद् ब्रह्मात्मैकत्वलक्षणम्।

वस्त्वद्वितीयं तन्निष्ठं कैवल्यैकप्रयोजनम्।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 12/13/12)

अतएव श्रीमद्भागवतमहापुराणम् संस्कृतसाहित्यस्य रत्नमिति उक्तम्। अयं भक्तिशास्त्रस्य सर्वस्वग्रन्थोऽस्ति। वैष्णवसम्प्रदायस्य आचार्यै: प्रस्थानत्रयीवत् श्रीमद्भागवतमहापुराणम् उपजीव्यग्रन्थ: मन्यते। वल्लभाचार्येण श्रीमद्भागवतमहापुराणं महर्षिवेदव्यासस्य समाधिभाषा निरूपिता। श्रीमद्भागवतमहापुराणे अद्वैततत्त्वस्य मुख्यरूपेण प्रतिपादनं दृश्यते यथाहि –

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत्परम्।

पश्चादहं यद्रेतच्च योऽवशिष्येत् सोऽस्महम्।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 2/9/32)

विषयविवेचनदृष्टया श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य स्वरूपः चतुर्धा विभज्यते– घटनात्मकः, उपदेशात्मकः, स्तुत्यात्मकः, गीतात्मकश्चम। घटनात्मके वर्गे भगवल्लीलायाः साधारणचरित्राणाञ्च वर्णनं गृह्यते। साधारणचरित्रं पुन: त्रिषु भागेषु विभज्यते। भविष्येतिहासोपाख्यानभेदेन। इतिहासस्य साधारणतया प्रयोजनद्वयं आख्यायते। प्रथमस्तावित् उपदेशकरणं द्वितीयाश्चे विशिष्टानिुशानुशासनम्। श्रीमद्भागवतस्य प्रथमे स्कन्धे सन्निविष्टानि सूत - शौनकयोः, व्यासनारदयोः, शुकदेवपरीक्षितयोश्च प्रसङ्गानि इतिहासस्य उदाहरणानि इति प्रतिपादनीयं। एवं प्रकारेण प्रायश: सर्वेषु स्कन्धेषु कथाविशेषस्य उपक्रमं कर्तुम् अनेकेषां व्यक्तीनां वर्णनं विहितं वर्तते। परमतत्त्वस्य ज्ञानं कारयितुं जन्ममृत्युरूपसंसारचक्रतः मुक्तिमार्गं बोधयितुं च रूपकमाध्यमेन अपि आध्यात्मिकतत्त्वस्य वर्णनं क्रियते। सामान्यजनानाम् कृते कथात्मकं चरित्रं स्मरणीयम् अनुकरणीयञ्च भवति। एतेषां पात्राणां स्वनरूप: नाधिभौतिकोऽपितु अधात्मिक: इत्थंण इमानि सर्वाणि पात्राणि वस्तुत: स्थूलेन जगता सम्बद्धानि भवन्ति सूक्ष्म् जगता एव एतानि सम्बद्धानि भवन्ति। श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थे स्कन्धे वर्णितं पुरञ्जनोपाख्यानं पञ्चमे स्कन्धे वर्णितं भवाटवी उपाख्यानञ्च तथ्यस्याऽस्योदाहरणत्वे न प्रतिपादयितुं शक्यिते। एतैः आख्यानैः यद् विशेषतत्त्वं लक्षितं कारितं वर्तते सः तत्रैव निर्दिष्टो वर्तते। श्रीमद्भागवते यत्र उपाख्यानानि प्राप्यन्ते तत्रैव स्पिष्टीतभवति एव यत् एतानि सर्वाणि रूपकानि वर्तन्त्। यत्र रूपकं नास्ति तत्र रूपकस्य चर्चा अपि नास्ति। तस्मात् तानि इतिहासरूपेण वर्तन्ते।

श्रीमद्भागवतस्य प्रतिपादनशैल्यनुसारं प्रकृतमहापुराणस्य द्वितीयः रूप उपदेशात्मकः अस्ति। उपदेशाः अपि द्विधा विभक्तुं शक्यन्ते। प्रथमस्तु साधारणोपदेशः द्वितीयस्तु विशेषोपदेशः।

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यो विषयः परमात्मा श्रीकृष्णोऽस्ति। श्रीमद्भागवते भगवतो विविधस्वरूपाणां वर्णनं दृश्यते। महापौराणिकशैलीमनुरुद्धय भागवतमहापुराणेऽपि

दशविषया: ते सङ्ग्रहीता: सन्ति सर्गः, विसर्गः, स्थानं, पोषणः, अतिमन्वन्तरम्, ईशानुकथा, निरोधः, मुक्तिः, आश्रयः एतेषाम् दशविषयाणाम् वर्णनं श्रीमद्भागवते दृश्यते। निरुप्यतेऽपि तत्रैव-

अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणभूतयः।

मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 2/10/1)

श्रीमद्भागवतमहापुराणं संस्कृतसाहित्यस्य अलौकिकरसमयप्रतिनिधिशास्त्रमस्ति। इदं पुराणं सकलसाहित्यशास्त्रादीनां युगपत् बोधयति। इदं शब्दप्रधानवेदवत् आदिशति, अर्थप्रधानपुराणवद् उपदिशति, रसप्रधानकाव्यवत् सर्वजनान् मुह्यति। अत एव त्रिवृतवत् अस्ति। यथाहि –

वेद: पुराणं काव्यं च प्रभुर्मित्रं श्रियमेव च।

बोध्यन्तीति हि प्राहुस्त्रिवद् भागवतं पुनः।।

(तत्त्वसन्दर्भः,जीवगोस्वामी, पृ. 74)

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य ज्ञान-विज्ञान-धर्म-दर्शन-सभ्यता-संस्कृत्यादीनां विविधविषयाणां लोके मानवजीवने महत्त्वपूर्णमस्ति एतेन कारणेन श्रीमद्भागवतमहापुराणे सतत् शोधकार्यं प्रचलति। वर्तमानशताब्द्यां श्रीमद्भागवतमहापुराणे शोधकार्यं कृतमस्ति अस्योल्लेख: -

श्रीमद्भागवतमहापुराणेन सम्बद्धानां पूर्वकृतकार्याणां सर्वेक्षणम् -

1. "श्रीमद्भागवतपुराण में वर्णित पुरूषार्थ-चतुष्ट्य की उपयोगिता आधुनिक परिप्रेक्ष्य में" (शोधग्रन्थः) कौशल, मनीशः, (निदेशकः-पण्डा, नरेश चरणः), पञ्जाबविश्वविद्यालयः, 2011।

2. "श्रीमद्भागवतमहापुराण में लोकाचार अंश" (शोधग्रन्थ), रानी, सुमन, (निदेशकः- हरि. एन.), महर्षि दिव्यानन्द विश्वविद्यालयः, 2016।

3. "श्रीमद्भागवत में विशिष्टाद्वैत एक समीक्षात्मक अध्ययन", (शोधग्रन्थः), द्विवेदी, मुरलीधरः, (निदेशकः - कुमार, सुरेन्द्रः), महर्षिदिव्यानन्द विश्वविद्यालयः, 2015।

4. "श्रीमद्भागवतपुराण में नीति एवं आचार" (शोधग्रन्थ), देवघर, मेधा, (निदेशकः - त्रिपाठी, घताथरः), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालयः, 2013।

5. "श्रीमद्भागवत के सम्बादों और उपनिषदों का तात्विक विवेचन" (शोधग्रन्थ), रावत, कल्याणसिंह, (निर्देशकः - माथुर, कमलेशः), जीवाजी विश्वविद्यालयः, 2016।

शोधकार्याणां श्रृङ्खलायां "श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम्" (मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके) विषये नवीनकार्यमस्ति। यस्मिन् श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य स्मृतिनां सन्दर्भेषु धर्मशास्त्रीयविवेचनं कृतमस्ति। शोधप्रबन्ध: पञ्च अध्यायेषु विभक्तोऽस्ति। अध्यायानां संक्षिप्तपरिचय: निम्नानुसारोऽस्ति।

प्रथमोऽध्याय: - "पुराणस्वरूपानुशीलनम् : तल्लक्षणं महापुराणाभिधाञ्च"

अस्मिन् पुराणशब्दस्य व्युत्पत्तिः, पुराणलक्षणस्य विवेचनं कृतमस्ति।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं विप्र पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

तदुपरान्तं श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालेन सम्बन्धितः निर्णय: कृतोऽस्ति, प्रतिपादनशैल्या: प्रतिपाद्यविषयणां च वर्णनमस्ति।

द्वितीयोऽध्याय: - "धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचय:"

अस्मिन् अध्याये धर्मशब्दस्य निष्पत्तिः, परिभाषा, प्रकारान्तरभेदानां वर्णनं कुर्वन् भारतीयज्ञानस्य मूलस्रोतस्कान्तर्गतं वैदिकधर्मसूत्रसाहित्यानां तथा धर्मशास्त्रीयस्मृतिसाहित्यानां, भाष्यनिबन्धसाहित्यानां परिचयात्मकविवेचनं कृतमस्ति।

तृतीयोऽध्याय: - "श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था"

सनातनसंस्कृतौ गुणकर्मयोश्च आधारे ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रवर्णानां स्थापना समाजस्य सुव्यवस्थितरूपेण सञ्चालनस्य कृते कृता अस्ति। श्रीमद्भगवद्गीतायां श्रीकृष्णेन उक्तं –

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभाश:"

श्रीमद्भागवतमहापुराणे वर्णितचतुर्णां वर्णानां विशिष्टकर्तव्यकर्मणां सूक्ष्मातिसूक्ष्मविवेचनं कृतम्। ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-सन्न्यासाश्रमाणां कर्तव्याकर्मणां सकलनियमविधिनां साङ्गोपाङ्विवेचनं कृतमस्ति।

चतुर्थोऽध्याय: - "श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्कारा:"

भारतीयसंस्कृत्यां जन्मत: मृत्युपर्यन्तं षोडशसंस्काराणां वर्णनं प्राप्यते। धर्मशास्त्रकारा: संस्काराणां सङ्ख्यानिधारणे विविधमतं स्वीकृतवन्त:। श्रीमद्भागवतमहापुराणे गर्भाधानसंस्कार-पुंसवनसंस्कार-जातकर्मसंस्कार-नामकरणसंस्कार-उपनयनसंस्कार-समावर्तनसंस्कार-विवाहसंस्कार- अन्त्येष्टिसंस्काराणां विवेचनं क्रियते।

पञ्चमोऽध्याय: - "श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितो राजधर्म:"

प्रस्तुतेऽध्याये राजधर्मस्य सूक्ष्मविवेचनं कृतमस्ति। अस्यान्तर्गतं राजस्यसप्ताङ्गानि, राजशब्दस्यार्थ:, राज्ञोमहत्त्वप्रतिपादनं, राजधर्मशब्दस्यार्थ: परिभाषा तन्माहात्म्यञ्च, राजधर्म: इत्येषां विषयाणां सूक्ष्मभेदेन श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यसन्दर्भाणाम् आलोके विवेचनं कृतमस्ति।

---*---

वाङ्मुखम्

''शब्दब्रह्मणि निष्णात: परब्रह्माधि गच्छति''

(ब्रह्मबिन्दूपनिषत् म. -22)

शब्दब्रह्मणि निष्णातः साधक: परब्रह्म प्राप्नोति। शब्दब्रह्म परब्रह्मणः प्राप्तेः साधनमस्ति। महाकविदण्डिना शब्दज्योतिः सकललोकानां प्रकाशनस्य एकमात्रं साधनं मन्यते। शब्दज्योतिषा अज्ञानान्धकारस्य निवृत्तिर्वर्तते। अत एव शब्दब्रह्म एव परञ्ज्योतिरस्ति यथाहि –

इदमन्धंतम: कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्येत।।

(काव्यादर्श:,1/4)

शब्दब्रह्मण: साधनाया: आधारग्रन्थो वेदोऽस्ति। वेद: विश्वविद्याया: प्राचीनतम: ग्रन्थोऽस्ति। ज्ञानपुञ्जवेदग्रन्थान् आर्षजातिः प्रारम्भिकस्रोतस्कत्वेन प्रतिपादयति। प्राचीनकाले ऋषय: समाध्यवस्थायां यस्याः राशे: साक्षात्कारं कृतवन्त: सा शब्दराशिः 'वेद' इति नाम्ना ज्ञायते। वेदस्य विषये प्राप्यते यत् येषां तत्त्वानां ज्ञानं सांसारिकसाधनै: न सम्भवति तेषां तत्त्वानां ज्ञानं वेदेन सम्भवति यथाहि -

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।

एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

(वेददीपिका, पृ. 4)

परवर्त्तिकाले लिखितेषु ब्राह्मणारण्यकोपनिषत्वेदाङ्गादिषु ग्रन्थेषु वेदा: ईश्वरेण कृता: मन्यन्ते। युग-युगान्तरे पुष्पितपल्लवितभारतीयदार्शनिकविचारधाराया: प्रवर्तकैः स्वस्य स्वस्य मतानां पुष्टिः तथा च स्वीयसिद्धान्तानां व्याख्या वेदानाधारीकृत्य सम्पादिता। अत एव वक्तुं

शक्यते यत् वेदः भारतीयज्ञान-विज्ञान-सभ्यता-संस्कृति-धर्म-दर्शन-अध्यात्म-काव्यशास्त्र-साहित्यशास्त्रादीनां मूलाधारो ग्रन्थोऽस्ति। वेदेभ्यः निःसृतज्ञानराशिः ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषत्सु पुष्पिता महाभारतैतिहासिककाव्येषु पल्लविता महर्षिवेदव्यासस्य पुराणपरम्पायां विस्तृता संवर्धिता च जाता। अत एव वेदार्थस्योपबृंहणं सर्वैः स्वीकृतमस्ति। महाभारते उपबृंहणस्य सर्वप्रथमं प्रमाणं प्राप्यते यथाहि –

पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिज्योत्सना प्रकाशिता।

(महाभारतम्,1/1/86)

वेदस्य मन्त्रैः प्रतिपादितार्थस्य सिद्धान्तस्य तथ्यस्य उपबृंहणं पुराणानां प्रामुख्यम् उद्देश्यमस्ति यथाहि –

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।

(महाभारतम्, 1/1/267)

पुराणेषु वैदिकमन्त्राणाम् आख्यानाम् उपबृंहणं सर्वत्रैव दृश्यते। 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' अस्य मन्त्रस्य श्रीमद्भागवतमहापुराणे "आत्मा वास्यमिदं विश्वम्" इति व्याख्या उपलभ्यते। इतोऽपि अस्मिन् महापुराणे 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया', 'तत्सवितुर्वरेण्यं', 'प्रणवो धेनुः', 'आत्मानं चेदविजानीयात्' प्रभृतिमन्त्राणां विशद्परिवर्तितसंशोधितव्याख्याः प्राप्यन्ते। ऋग्वेदस्थविष्णुसूक्तस्य "विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचम्" इत्यस्य मन्त्रस्य विस्तरेण व्याख्या श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते यथाहि –

विष्णोर्नु वीर्यगणनां कतमोऽर्हतीह
यः पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजांसि।
चस्कम्भ यः स्वरंहसास्खलता त्रिपृष्ठं
कस्मात त्रिसाम्यसदनादुरु कम्पयानम्।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 2/7/40)

अष्टादशपुराणेषु, एकोनविंशतौ उपपुराणेषु, एकोनविंशतौ औपपुराणेषु च श्रीमद्भागवतम् 'महापुराणमिति' उक्तम्। महर्षिवेदव्यासेन श्रीमद्भागवतमहापुराणम् वेदार्थस्य प्रतिपादक: तथा च निगमकल्पवृक्षस्य गलितं, सुपरिपक्वं, मधुरतमं फलञ्च मन्यते। यथाहि –

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं

शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।

पिबत भागवतं रसमालयं

मुहुरहो रसिकाः भुवि भावुका:।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 1/1/3)

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य अन्तिमे भागे द्वादशे स्कन्धे त्रयोदशेऽध्याये भागवतस्य महत्तावर्णने भागवतं सर्ववेदान्तसार: कथ्यते तथा अस्य ग्रन्थस्य प्रयोजनं कैवल्यैव अस्ति यथाहि –

सर्ववेदान्तसारं यद् ब्रह्मात्मैकत्वलक्षणम्।

वस्त्वद्वितीयं तन्निष्ठं कैवल्यैकप्रयोजनम्।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 12/13/12)

अतएव श्रीमद्भागवतमहापुराणम् संस्कृतसाहित्यस्य रत्नमिति उक्तम्। अयं भक्तिशास्त्रस्य सर्वस्वग्रन्थोऽस्ति। वैष्णवसम्प्रदायस्य आचार्यै: प्रस्थानत्रयीवत् श्रीमद्भागवतमहापुराणम् उपजीव्यग्रन्थ: मन्यते। वल्लभाचार्येण श्रीमद्भागवतमहापुराणं महर्षिवेदव्यासस्य समाधिभाषा निरूपिता। श्रीमद्भागवतमहापुराणे अद्वैततत्त्वस्य मुख्यरूपेण प्रतिपादनं दृश्यते यथाहि –

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत्परम्।

पश्चादहं यद्रेतच्च योऽवशिष्येत् सोऽस्महम्।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 2/9/32)

विषयविवेचनदृष्टया श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य स्वरूपः चतुर्धा विभज्यते– घटनात्मकः, उपदेशात्मकः, स्तुत्यात्मकः, गीतात्मकश्चम। घटनात्मके वर्गे भगवल्लीलायाः साधारणचरित्राणाञ्च वर्णनं गृह्यते। साधारणचरित्रं पुन: त्रिषु भागेषु विभज्यते। भविष्येतिहासोपाख्यानभेदेन। इतिहासस्य साधारणतया प्रयोजनद्वयं आख्यायते। प्रथमस्तावित् उपदेशकरणं द्वितीयाश्चे विशिष्टानिुशानुशासनम्। श्रीमद्भागवतस्य प्रथमे स्कन्धे सन्निविष्टानि सूत - शौनकयोः, व्यासनारदयोः, शुकदेवपरीक्षितयोश्च प्रसङ्गानि इतिहासस्य उदाहरणानि इति प्रतिपादनीयं। एवं प्रकारेण प्रायश: सर्वेषु स्कन्धेषु कथाविशेषस्य उपक्रमं कर्तुम् अनेकेषां व्यक्तीनां वर्णनं विहितं वर्तते। परमतत्त्वस्य ज्ञानं कारयितुं जन्ममृत्युरूपसंसारचक्रतः मुक्तिमार्गं बोधयितुं च रूपकमाध्यमेन अपि आध्यात्मिकतत्त्वस्य वर्णनं क्रियते। सामान्यजनानाम् कृते कथात्मकं चरित्रं स्मरणीयम् अनुकरणीयञ्च भवति। एतेषां पात्राणां स्वनरूप: नाधिभौतिकोऽपितु अधात्मिक: इत्थंण इमानि सर्वाणि पात्राणि वस्तुत: स्थूलेन जगता सम्बद्धानि भवन्ति सूक्ष्म् जगता एव एतानि सम्बद्धानि भवन्ति। श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थे स्कन्धे वर्णितं पुरञ्जनोपाख्यानं पञ्चमे स्कन्धे वर्णितं भवाटवी उपाख्यानञ्च तथ्यस्याऽस्योदाहरणत्वे न प्रतिपादयितुं शक्यिते। एतैः आख्यानैः यद् विशेषतत्त्वं लक्षितं कारितं वर्तते सः तत्रैव निर्दिष्टो वर्तते। श्रीमद्भागवते यत्र उपाख्यानानि प्राप्यन्ते तत्रैव स्पिष्टीतभवति एव यत् एतानि सर्वाणि रूपकानि वर्तन्त्। यत्र रूपकं नास्ति तत्र रूपकस्य चर्चा अपि नास्ति। तस्मात् तानि इतिहासरूपेण वर्तन्ते।

श्रीमद्भागवतस्य प्रतिपादनशैल्यनुसारं प्रकृतमहापुराणस्य द्वितीयः रूप उपदेशात्मकः अस्ति। उपदेशाः अपि द्विधा विभक्तुं शक्यन्ते। प्रथमस्तु साधारणोपदेशः द्वितीयस्तु विशेषोपदेशः।

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यो विषयः परमात्मा श्रीकृष्णोऽस्ति। श्रीमद्भागवते भगवतो विविधस्वरूपाणां वर्णनं दृश्यते। महापौराणिकशैलीमनुरुद्धय भागवतमहापुराणेऽपि

दशविषया: ते सङ्ग्रहीता: सन्ति सर्गः, विसर्गः, स्थानं, पोषणः, अतिमन्वन्तरम्, ईशानुकथा, निरोधः, मुक्तिः, आश्रयः एतेषाम् दशविषयाणाम् वर्णनं श्रीमद्भागवते दृश्यते। निरुप्यतेऽपि तत्रैव-

अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणभूतयः।

मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, 2/10/1)

श्रीमद्भागवतमहापुराणं संस्कृतसाहित्यस्य अलौकिकरसमयप्रतिनिधिशास्त्रमस्ति। इदं पुराणं सकलसाहित्यशास्त्रादीनां युगपत् बोधयति। इदं शब्दप्रधानवेदवत् आदिशति, अर्थप्रधानपुराणवद् उपदिशति, रसप्रधानकाव्यवत् सर्वजनान् मुह्यति। अत एव त्रिवृतवत् अस्ति। यथाहि –

वेद: पुराणं काव्यं च प्रभुर्मित्रं श्रियमेव च।

बोध्यन्तीति हि प्राहुस्त्रिवद् भागवतं पुनः।।

(तत्त्वसन्दर्भः,जीवगोस्वामी, पृ. 74)

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य ज्ञान-विज्ञान-धर्म-दर्शन-सभ्यता-संस्कृत्यादीनां विविधविषयाणां लोके मानवजीवने महत्त्वपूर्णमस्ति एतेन कारणेन श्रीमद्भागवतमहापुराणे सतत् शोधकार्यं प्रचलति। वर्तमानशताब्द्यां श्रीमद्भागवतमहापुराणे शोधकार्यं कृतमस्ति अस्योल्लेख: -

श्रीमद्भागवतमहापुराणेन सम्बद्धानां पूर्वकृतकार्याणां सर्वेक्षणम् -

1. "श्रीमद्भागवतपुराण में वर्णित पुरूषार्थ-चतुष्ट्य की उपयोगिता आधुनिक परिप्रेक्ष्य में" (शोधग्रन्थः) कौशल, मनीशः, (निदेशकः-पण्डा, नरेश चरणः), पञ्जाबविश्वविद्यालयः, 2011।

2. "श्रीमद्भागवतमहापुराण में लोकाचार अंश" (शोधग्रन्थ), रानी, सुमन, (निदेशकः- हरि. एन.), महर्षि दिव्यानन्द विश्वविद्यालयः, 2016।

3. "श्रीमद्भागवत में विशिष्टाद्वैत एक समीक्षात्मक अध्ययन", (शोधग्रन्थः), द्विवेदी, मुरलीधरः, (निदेशकः - कुमार, सुरेन्द्रः), महर्षिदिव्यानन्द विश्वविद्यालयः, 2015।

4. "श्रीमद्भागवतपुराण में नीति एवं आचार" (शोधग्रन्थ), देवघर, मेधा, (निदेशकः - त्रिपाठी, घताथरः), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालयः, 2013।

5. "श्रीमद्भागवत के सम्बादों और उपनिषदों का तात्विक विवेचन" (शोधग्रन्थ), रावत, कल्याणसिंह, (निर्देशकः - माथुर, कमलेशः), जीवाजी विश्वविद्यालयः, 2016।

शोधकार्याणां श्रृङ्खलायां "श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम्" (मनु-याज्ञवल्क्यस्मृत्योर्विशेषालोके) विषये नवीनकार्यमस्ति। यस्मिन् श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य स्मृतिनां सन्दर्भेषु धर्मशास्त्रीयविवेचनं कृतमस्ति। शोधप्रबन्ध: पञ्च अध्यायेषु विभक्तोऽस्ति। अध्यायानां संक्षिप्तपरिचय: निम्नानुसारोऽस्ति।

प्रथमोऽध्याय: - "पुराणस्वरूपानुशीलनम् : तल्लक्षणं महापुराणाभिधाञ्च"

अस्मिन् पुराणशब्दस्य व्युत्पत्तिः, पुराणलक्षणस्य विवेचनं कृतमस्ति।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं विप्र पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

तदुपरान्तं श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालेन सम्बन्धितः निर्णय: कृतोऽस्ति, प्रतिपादनशैल्या: प्रतिपाद्यविषयणां च वर्णनमस्ति।

द्वितीयोऽध्याय: - "धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचय:"

अस्मिन् अध्याये धर्मशब्दस्य निष्पत्तिः, परिभाषा, प्रकारान्तरभेदानां वर्णनं कुर्वन् भारतीयज्ञानस्य मूलस्रोतस्कान्तर्गतं वैदिकधर्मसूत्रसाहित्यानां तथा धर्मशास्त्रीयस्मृतिसाहित्यानां, भाष्यनिबन्धसाहित्यानां परिचयात्मकविवेचनं कृतमस्ति।

तृतीयोऽध्याय: - "श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था"

सनातनसंस्कृतौ गुणकर्मयोश्च आधारे ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रवर्णानां स्थापना समाजस्य सुव्यवस्थितरूपेण सञ्चालनस्य कृते कृता अस्ति। श्रीमद्भगवद्गीतायां श्रीकृष्णेन उक्तं –

"चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभाश:"

श्रीमद्भागवतमहापुराणे वर्णितचतुर्णां वर्णानां विशिष्टकर्तव्यकर्मणां सूक्ष्मातिसूक्ष्मविवेचनं कृतम्। ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-सन्न्यासाश्रमाणां कर्तव्याकर्मणां सकलनियमविधिनां साङ्गोपाङ्विवेचनं कृतमस्ति।

चतुर्थोऽध्याय: - "श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्कारा:"

भारतीयसंस्कृत्यां जन्मत: मृत्युपर्यन्तं षोडशसंस्काराणां वर्णनं प्राप्यते। धर्मशास्त्रकारा: संस्काराणां सङ्ख्यानिधारणे विविधमतं स्वीकृतवन्त:। श्रीमद्भागवतमहापुराणे गर्भाधानसंस्कार-पुंसवनसंस्कार-जातकर्मसंस्कार-नामकरणसंस्कार-उपनयनसंस्कार-समावर्तनसंस्कार-विवाहसंस्कार- अन्त्येष्टिसंस्काराणां विवेचनं क्रियते।

पञ्चमोऽध्याय: - "श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितो राजधर्म:"

प्रस्तुतेऽध्याये राजधर्मस्य सूक्ष्मविवेचनं कृतमस्ति। अस्यान्तर्गतं राजस्यसप्ताङ्गानि, राजशब्दस्यार्थ:, राज्ञोमहत्त्वप्रतिपादनं, राजधर्मशब्दस्यार्थ: परिभाषा तन्माहात्म्यञ्च, राजधर्म: इत्येषां विषयाणां सूक्ष्मभेदेन श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यसन्दर्भाणाम् आलोके विवेचनं कृतमस्ति।

---*---

प्रथमोऽध्यायः

पुराणस्वरूपानुशीलनम् : तल्लक्षणं महापुराणाभिधानञ्च

1.1 पुराणलक्षणम्

1.2 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः

1.3 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपादनशैली

1.4 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यविषयः

भारतीयधर्मदर्शनसंस्कृतिसभ्याताया उत्सो वेदोऽस्ति। विदितमेवास्ति एतद् वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययनं स्त्रीणां शूद्राणां पतितब्राह्मणानाञ्च कृते वर्जितमासीत्। यथाहि -

स्त्रीशूद्रद्विजातीनां त्रयी न श्रुतिगोचरा[1]

तात्कालीनसामाजिकान् वैदिकसिद्धान्तानवगमयितुं तथा तान् तस्यामेव विचारधारायां योजयितुं पौराणिकसाहित्यस्य सृजनमकारि। येन सर्वेऽपि सामाजिकाः स्वतन्त्ररूपेणाध्ययनं कृत्वा ज्ञानं प्राप्तुं शक्नुयुः। पौराणिकग्रन्थेषु वैदिकसिद्धान्तानाम् उपबृंहणं दृश्यते।[2] "उपबृंहणम्" नाम तथ्यस्य पुष्टीकरणम् तथा च तस्य विस्तारणमस्ति। पौराणिकसाहित्यं प्रामाणीकर्तुं 'पञ्चमोवेदः' इति संज्ञया विभूषितम्। यथाहि-

इतिहासपुराणं च पञ्चमोवेद उच्यते[3]

छान्दोग्योपनिषदि चतुर्णां वेदानामुल्लेखं कुर्वन् पुराणं पञ्चमोवेदः इत्युक्तमस्ति।[4] पुराणानां प्रामाणिकतायाः परिपुष्ट्यर्थं पद्मपुराणस्योद्धरणं द्रष्टव्यं तद्यथा - ब्रह्मणा सर्वप्रथमं सर्वशास्त्रेभ्यः प्राक् पुराणानां रचना कृता।[5] एवं प्रकारेण स्पष्टमस्ति यत् तात्कालिकसमाजेऽपि पुराणानां महत्त्वपूर्णं सम्माननीयञ्च स्थानमासीत्।

पुराणशब्दस्य व्युत्पत्तिः

पुराणशब्दोऽयं नित्यं क्लीबलिङ्गे वर्तते। भाषाशास्त्रदृष्ट्या 'पुरा भवम्' इत्यर्थे "सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च"[6] अनेन सूत्रेण पुराशब्दात् 'ट्यु' प्रत्यये कृते सति

---

[1] भा. महा. 1/4/25

[2] पुराण विमर्श, पृ. 243

[3] भा. महा. 1/4/20

[4] "ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम् ।।" छा. उ. 7/1/2

[5] "पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम्" प. पु., सृष्टिखण्डः, अध्यायः 104

[6] पा. अ., 4/3/23

तुटागमे च विहिते 'पुरातनं' शब्दोऽयं निष्पन्नो भवति। पाणिनिना सूत्रद्वये पुराणशब्दस्य प्रयोगः कृतो वर्तते।[7] 'पुराण'शब्दस्य व्युत्पत्तिक्रमे 'पुरातन'शब्दस्य व्युत्पत्तिः कर्तव्या अस्ति। व्युत्पतिदृष्ट्या पुराणशब्दः निपातनात् सिद्धो भवति। 'तुडागमाभावे' निपातनात् 'पुराण'शब्दस्य व्युत्पत्तिः कथ्यते। पुराणशब्दस्य प्रयोगः ऋग्वेदे बहुधा प्राप्यते। ऋग्वेदे प्रयुक्तः 'पुराणम्' इति शब्दः विशेषणत्वेन प्रयुक्तो अस्ति तथा तस्यार्थः पुराकाले यज्जातमिति अस्ति।[8] निरुक्तकारेण यास्केन शब्दोऽयं "पुरा नवं भवति" इति रीतया व्याख्यातः।[9] प्राचीनकाले यद्वर्तितं तत् अस्मिन्नर्थेऽपि पुराणशब्दस्य प्रयोगो दृश्यते।[10] परन्तु पद्मपुराणे अन्या एव व्युत्पतिः दृश्यते।[11] अस्मिन्नेव क्रमे ब्रह्माण्डपुराणे सन्निविष्टोऽर्थो द्रष्टव्यः "पुरा एतत् अभूत्"।[12] सायणेन सृष्टेरुत्पत्तेः विकासस्य च प्रतिपादकत्वेन पुराणमुक्तम्।[13] मधुसूदनेनाऽपि सृष्टेरितिहासस्य पुराणसंज्ञा विहिता।[14]

उपर्युक्तविवेचनानुसारेण वक्तुं शक्यते यत् 'पुराण'शब्दस्य अभिप्रायः तेन ग्रन्थेन वर्तते यस्मिन् परम्परायाः निर्वहनं दृश्यते तथा च तस्मिन्नेवोपक्रमे पुरातनस्य नूतनपद्धत्या स्थापनाऽपि दृश्यते। तस्मात् पुराणेषु विषयवस्तुनः प्राचीनता अपेक्षिताऽस्ति।

महापुराणानां वर्गीकरणम्

अष्टादशमहापुराणानि सात्त्विक्-राजसिक-तामसिकेति वर्गत्रयानुगुणं त्रिषु वर्गेषु विभक्तानि वर्तन्ते। विष्णुपुराणानुसारेण विभाजनमिदं विवेच्यविषयम् अनुगुणम् अस्ति।

---

[7] तथैव, 2/1/49, 4/3/105

[8] पुराणविमर्श, पृ. 3

[9] निरुक्त, 3/19

[10] "यस्मात्पुराह्यनतीदं पुराणं तेन तत् स्मृतम्" वा. पु., 1/203

[11] "पुरा परम्परां वृष्टिं पुराणं तेन तत् स्मृतम्" प. पु., 2/5/53

[12] ब्र. पु., 1/1/173

[13] संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 87

[14] तथैव

सात्त्विकपुराणेषु विष्णोः माहात्म्यं वर्णितमस्ति। राजसिकपुराणेषु प्रायेण ब्रह्मणः अग्नेश्च माहात्म्यं वर्णितं दृश्यते। शिवतत्त्वसम्बन्धानि पुराणानि तामसिकवर्गे अन्तर्गतानि वर्तन्ते।[15]

सात्त्विकपुराणेषु विष्णु - नारद - श्रीमद्भागवत - गरुण - पद्म - वाराहपुराणानामन्तर्भावो भवति। यथाहि -

वैष्णवं नारदीयञ्च तथा भागवतं शुभम्।

गारुडञ्च तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शने।[16]

राजसिकपुराणेषु ब्रह्माण्ड – ब्रह्मवैवर्त – मार्कण्डे – भविष्य – वामन - ब्रह्मपुराणानां संग्रहणमस्ति। यथाहि -

ब्रह्माण्डं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं तथैव च।

भविष्यं वामनं ब्राह्मं राजसानि निबोधत।[17]

तामसपुराणेषु प्रायेण - मत्स्य - कूर्म्म - लिङ्ग - शिव - स्कन्द - अग्निपुराणानां परिगणनं भवति। यथाहि -

मात्स्यं कौर्मं तथा लैङ्गं शैवस्कान्दे तथैव च।

आग्नेयञ्च षडेतानि तामसानि निबोधत।।[18]

श्रीमद्भागवतमहापुराणे अष्टादशमहापुराणानां वर्णनं निम्नलिखितक्रमेण प्राप्यते – ब्रह्मपुराणं, पद्मपुराणं, विष्णुपुराणं, शिवपुराणं, लिङ्गपुराणं, गरुडपुराणं, नारदपुराणं, भागवतपुराणं, अग्निपुराणं, स्कन्धपुराणं, भवष्यिपुराणं, ब्रह्मवैवर्तपुराणं, मार्कण्डेयपुराणं, वामनपुराणं, वराहपुराणं, मत्स्यपुराणं, कूर्मपुराणं, ब्रह्माण्डपुराणम्।

---

[15] "सात्विकेषु पुराणेषु माहात्म्यमधिकं हरेः। राजसेषु च माहात्म्यमधिकं ब्राह्मणो विदुः ।।
तद्वदग्नेश्च माहात्म्यं तामसेषु शिवास्य च।" म.पु., 53/67, 68

[16] प. पु.,उत्तरखण्डः,अध्यायः, 43

[17] तथैव

[18] तथैव

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं लैङ्गं सगारुडम्।

नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कान्दसंज्ञितम्।।

भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं सवामनम्।

वाराहं मात्स्यं कौर्मं च ब्रह्माण्डारव्यमिति त्रिषट्।।

ब्रह्मन्निदं समाख्यातं शाखाप्रणयनं मुनेः।

शिष्यशिष्यप्रशिष्याणां ब्रह्मतेजो विवर्धनम्।।[19]

मत्स्यपुराणे पद्मपुराणे च महापुराणभेदो यथा निरूपितोऽस्ति तत्र परस्परं विवेचनभिन्नता दृश्यते। सात्त्विक - राजसिक - तामसिकभेदेन एकमतत्वं नास्ति। श्रीमद्भागवतपुराणं पौराणिकसाहित्यान्तर्गतं 'महापुराण'वर्गे समाहितं अस्ति। श्रीमद्भागवते पुराणानां पञ्च लाक्षणिकविषयाः पूर्णरूपेण यथास्थानं वर्णिताः सन्ति।

1.1 पुराणलक्षणम्

पुराणं पञ्चलक्षणसमाहरणमिति संस्कृतवाङ्मये आधिक्येन दृष्टिपथे आयाति। काव्यमीमांसाकारेण राजशेखरेण सर्गः, प्रतिसंहारः, कल्पः, मन्वतरः, वंशविधिश्चेति पुराणस्य पञ्च लक्षणानि स्वीक्रियन्ते।[20] शब्दकल्पद्रुमे निरूप्यते एतत् व्यासादिद्वारा अथ च वेदार्थवर्णनहेतुप्रवृत्तः पञ्चलक्षणेन समन्वितश्च ग्रन्थः 'पुराणं' कथ्यते।[21] ब्रह्मवैवर्तपुराणेऽपि पुराणस्य पञ्च लक्षणानि उक्तानि सन्ति। यथाहि –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं विप्र! पुराणं पञ्चलक्षणम्।।[22]

---

[19] भा. महा., 12/7/23 - 25

[20] "सर्गः प्रतिसंहारः कल्पो मन्वन्तराणि वंशविधिः जगतो यत्र निबद्ध तद्विज्ञेयं पुराणमिति" काव्यमीमांसा, अ. 2

[21] श. द्रु., तृतीयकाण्डम्, पृ. 179

[22] तथैव

'शुक्रनीति' नाम्नि ग्रन्थेऽपि पुराणस्य एतेषामेव लक्षणानां वर्णनं दृश्यते।[23] वायुपुराणेऽपि पुराणस्य लक्षणानि प्राप्यन्ते वर्णनं प्राप्यते।[24] विष्णुपुराणे[25], सूतसंहितायामपि[26] एतेषामेव लक्षणानां वर्णनं प्रकाशितमस्ति। अन्येषु पुराणेष्वपि पुराणामानाम् इदमेव लक्षणं प्रकाशितं दृश्यते। पुराणानाम् इदं लक्षणं पुराणस्य प्रतिपाद्यविषयान् एव लक्षीकरोति। पौराण्कि विषयाणाम् अनुशीलनं स्पष्टीकरोति यत् प्रायश: सर्वेषु पुराणेषु सर्गः, प्रतिसर्गः, वंशः, मन्वन्तरः, वंशानुचरितमिति च पञ्च विषया: विस्तरेण निरूपिता: सन्ति। यत् सृष्टेः उत्पत्तिः केन प्रकारेण अभवत् ? सृष्टेः लयः कुत्र तथा केन प्रकारेण भवति ? पदार्थानाम् उत्पत्तिक्रमः? चरितादिश्च एतेषां उपर्युक्तविषयाणां विवेचनं यत्र भवति तत् पुराणमिति। एतेषां पौराणिक साहित्ये प्रतिपादितविषयाणां विस्तृतं विवेचनं क्रियते।

1.1.1 सर्गः

विविधप्रकारकानां जागतिकपदार्थानामुत्पत्तिः अथवा सृष्टिरेव 'सर्गः' उच्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य द्वादशस्कन्धस्य सप्तमेऽध्याये सर्गस्य लक्षणमित्थं निरुपितमस्ति। यथाहि -

अव्याकृतगुणक्षोभान्महतस्त्रिवृतोऽहमः।

भूतमात्रेन्द्रियार्थानां संभवः सर्ग उच्यते।।[27]

मूलप्रकृतेः विद्यमानगुणत्रयं सत्व - रजस् – तमसाख्यं चेतनायाः सान्निध्यम् अवाप्य क्षुब्धा: भवन्ति। अस्मिन् क्रमे महदादितत्त्वानामपि अभिव्यक्तिः भवति। सात्विकराजसिकतामसिकत्रिगुणात्मकाहंकारात् मनस: पञ्चज्ञानेन्द्रियाणां पञ्चकर्मेन्द्रियाणां

[23] "सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं यस्मिन् पुराणं तद् विकीर्तितम् ।।" शु. नी., 4/53
[24] "सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्च लक्षणम् ।।" वा., पु., 4/10
[25] "सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशमन्वन्तराणि च । सर्वेष्वेतेषु कथ्यन्ते वंशानुचरितं च तत् ।।" वि. पु., 3/6/25
[26] "सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्च लक्षणम् ।।" सू. सं., 1/1/33
[27] भा. महा. 12/7/11

शब्दरूपरसगन्धस्पर्शादीनां प्रादुर्भावो भवति। पञ्चतन्मात्रेभ्यः पुनः जलाकाशपृथिव्यग्निवाय्वादीनां पञ्चमहाभूतानामुत्त्पतिः भवति। उत्पत्तेः इदं विवेचनमेव पुराणेषु 'सृष्टिः' 'सर्गः' वा इति नाम्नाऽभिधीयते।

1.1.2 प्रतिसर्गः

सृष्टेः सद्य: विपरीतरूपं प्रलयोऽस्ति। लोकसिद्धः अयं प्रलयः एव प्रतिसर्गः इति नाम्ना अभिधीयते। विष्णुपुराणे अयं 'प्रतिसंचरः' इति नाम्नाभिधीयते।[28] श्रीमद्भागवतमहापुराणे अस्य शब्दस्य स्थाने 'संस्था' शब्दस्य प्रयोगो दृश्यते तथा प्रलयस्य चतुर्णां प्रकाराणां वर्णनं अस्ति - नैमित्तिकं, प्राकृतिकं, नित्यम्, आत्यन्तिकम्। यथाहि –

नैमित्तिक: प्राकृतिको नित्य आत्यन्तिको लय:।

संस्थेति कविभि: प्रोक्ता चतुर्धाऽस्य स्वभावतः।।[29]

एभ्य: परं प्रतिसर्गस्थाने श्रीमद्भागवतमहापुराणे 'प्रतिसंक्रमः' इत्ययं शब्दोऽपि प्रयुक्तोऽस्तिः। यथाहि -

कालद्रव्यगुणैरस्य त्रिविधः प्रतिसङ्क्रमः।[30]

1.1.3 वंशः

ब्रह्मणरुत्पन्नानां राज्ञां भूत-वर्तमान-भविष्यकालिकी सन्ततिपरम्परा वंश इत्यभिधीयते।

"राज्ञा ब्रह्मप्रसूतानां वंशस्त्रैकालिकोऽन्वय:"[31]

श्रीमद्भावगतमहापुराणे वंशो राजवंशप्रयन्त्यमेव परिसीमितोऽस्ति परन्तु पुराणान्तरेषु वंशान्तर्गतं ऋषिवंशपरम्परायाः अपि वर्णनं दृश्यते।

---

[28] "प्रकृतौ संस्थितं व्यक्तमतीतं प्रलये तु यत। तस्मात् प्राकृतसंज्ञोऽयमुच्यते प्रतीसञ्चरः ।।" वि.पु., 2/1/25

[29] भा. महा. 12/7/16

[30] तथैव. 3/10/14

[31] तथैव. 12/7/16

1.1.4 मन्वन्तरम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणे मन्वन्तरम् इत्थं परिभाषितमस्ति मनुः, देवता, मनुपुत्रः, इन्द्रः, सप्तर्षिः ईशश्च एताभिः षड्विशेषताभिः युक्तः समयः एव मन्वन्तरमस्ति।

मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः।

ऋषयोंऽशावतारश्च हरेः षड्-विधमुच्यते।।[32]

मन्वन्तरं कालः मानस्य सूचकोऽस्ति। चतुर्दशमन्वन्तराणि भवन्ति एवं प्रत्येकस्यापि मन्वन्तरस्यैक: विशिष्ट: मनुः भवति।

1.1.5 वंशानुचरितम्

मन्वादिवंशोत्पन्नानां वंशजानां राज्ञाञ्च विशिष्टचरितस्य वर्णनमेव वंशानुचरितमित्यभिधीयते।[33] अस्मिन् मनोः वंशोत्पन्नानां महर्षिराज्ञाञ्च चरितमपि समन्वितमस्ति। पौराणिकग्रन्थेषु महर्षीणां चरितस्यापेक्षया राजचरितस्यैव विशेषमहत्वं दरीदृश्यते।

एतैः पञ्चभि: लक्षणैः साकं अन्यानि दशलक्षणानि अपि प्राप्यन्ते। एतद् ज्ञातव्यमस्ति यत् दशलक्षणैः समन्वितं शास्त्रमेव 'महापुराणम्' इति संज्ञया विभूषितं भवति। शब्दकल्पद्रुमे महापुराणानां लक्षणमेव प्रतिपादितम् अस्ति सर्गः, विसर्गः, वृतिः, रक्षा, अन्तरम्, वंशः, वंशानुचरितम्, संस्था, हेतुः, अपाश्रयश्चेत्यादि:।[34] ब्रह्मवैवर्तपुराणे दशलक्षणानां वर्णनम् एवं प्राप्यते। यथाहि-

सृष्टश्चापि विसृष्टिश्च स्थितिस्तेषाञ्च पालनम्।

कर्म्मणां वासना वार्त्त मनुनाञ्च क्रमेण च।।

---

[32] तथैव. 2/7/15

[33] तथैव. 12/7/16

[34] श. द्रु., तृतीयकाण्डम्. पृ. 663

वर्णनं प्रलयानाञ्च मोक्षस्य च निरूपणम्।

उत्कीर्त्तनं हरे रेव देवानाञ्च पृथक् पृथक्।।

यशाधिकं लक्षणञ्च महतां परिकीर्तितम्।।[35]

श्रीमद्भागवतमहापुराणे एतेषां दशलक्षणानां अन्यसमानार्थकपदैः सङ्कलनमस्ति।

सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्ति रक्षान्तराणि च।

वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयाः।।

दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः।

केचित् पञ्चविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया।।[36]

भागवतस्य दशमे स्कन्धे सर्गः, प्रतिसर्गः, वंशः, वंशानुचरितम् तथा मन्वन्तरमित्यादीनां पञ्चलक्षणानां निरूपणं कृतमस्ति। अवशिष्टेषु पञ्चलक्षणेषु 'विसर्गः' सृष्टेः एव भेदोऽस्ति। 'अपाश्रयः' शब्देन ईश्वरस्य ग्रहणमस्ति तथा स ईशो जगत्कर्ता वर्तते। एवं प्रकारेण सृष्टिवर्णनेव तस्यान्तर्भाव: सम्भवोऽस्ति। वृत्तिशब्दस्य कृते "परस्परोऽपमर्दकभावः" कथनेन वंशानुचरिते एवाऽस्यान्तर्भावो भवति। रक्षापि वंशानुचरितस्यैवान्तर्निहितास्ति यतोहि अस्मिन् भगवतः अवताराणां वर्णनं दरीदृश्यते तथा भगवतावताराः कस्मिञ्चित् रूपे वंशपरम्परायामेव भवन्ति। अतः वंशानुचरिते अवताराणामपि संग्रहः अभिप्रेतः अस्ति अतः उपरोक्तानि दशलक्षणानि पुराणस्य सर्गादि पञ्चलक्षणेष्वेवान्तर्भवन्ति इति तु सुस्पष्टमेवास्ति।

1.2 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः

पुराणसाहित्यस्य कालनिर्धारणम् एकमत्यन्तं दुष्करं कार्यं वर्तते। पुराणेषु वर्णितं विषयवस्तु अत्यन्तं प्राचीनं वर्तते। पौराणिकमान्यतानुसारं समेषां पुराणानां प्रणेता महर्षिः वेदव्यासो वर्तते।

---

[35] तथैव

[36] भा. महा. 12/7/9 - 10

“इतिहासपुराणानां पिता मे रोमहर्षण:”[37]

महर्षिवेदव्यासो महाभारतकालस्य ऋषिः वर्तते। एतेन सिद्धान्तेन ज्ञायते यत् पुराणानां रचना महाभारतेन सममेवाऽभवत्। परञ्च आधुनिक-विदुषां मतमिदं वर्तते यत् पुराणानां यत् स्वरूपं दृष्टिगोचरं भवति तत् पौराणिकसाहित्यस्य रचनाकालमाश्रित्य स्थायी रूपं पञ्चशताब्दी यावदेव सुघटितं जातम् आसीत्।[38] लोकमान्यतिलकस्य मतानुसारेण पौराणिकग्रन्थानां रचनाकालः ख्रीष्टाब्दद्वितीयशताब्देः परं कथमपि न भूयात् पश्चात् कथमपि न भवितुं शक्नोति। पार्टिजरमहोदयानुसारं पुराणानां मौलिक: स्वरूप: ख्रीष्टाब्दप्रथमशताब्दी यावदेवम् अस्तित्वे आगत आसीत्। डॉ. हाजरा पुराणेषु विशेषशोधकार्यं कृतवान्। डॉ. हाजरामहोदयस्य मतेन प्राचीनतमेषु पुराणेषु मार्कण्डेयः, ब्रह्माण्डः, विष्णुः, मत्स्यः, भागवतः, कूर्मश्च इत्येतेषां परिगणनं वर्तते। विद्वद्भिः प्रतिपुराणं कालक्रम: भिन्नतया प्रतिपादित:। यथाहि– विष्णुपुराणं ख्रीष्टाब्दचतुर्थशताब्दे: रचना स्वीक्रियते। वायुपुराणं ख्रीष्टाब्दपञ्चमशताब्दे: रचना स्वीक्रियते। कूर्मपुराणं ख्रीष्टाब्दसप्तमशताब्दे: मन्यते। हरिवंशपुराणं ख्रीष्टाब्दचतुर्थशताब्दे: रचना स्वीक्रियते। एतेषामेव मध्ये भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः 600-700 ई. मध्ये स्वीकुर्वन्ति। अग्निपुराणस्य रचनाकालः 800 ई. मन्यते। महामहोपाध्यायः पी.वी. काणे महोदयः अग्निपुराणस्य कञ्चित् अंशं ख्रीष्टाब्दसप्तमशताब्दे: रचनां स्वीकरोति पश्चात् तस्य च काव्यशास्त्रीयमंशं 900 ई. स्वीकरोति। नारदीयपुराणं ई. दशमशताब्देः साहित्यं मन्यते। ब्रह्मपुराणस्य अपि अयमेव कालः स्वीक्रियते। स्कन्दपुराणस्य काचित् सामग्री अष्टमशतकीया अन्यश्च किञ्चित् अंशः तदनन्तरीकया वर्तते। डा. हाजरा गरुडपुराणं दशमशतकस्य स्वीकरोति। ब्रह्मवैवर्तस्य विषये विदुषां कथनं वर्तते यत् एतस्य रचना 700 ख्रीष्टाब्दात् पूर्वमेव जाता आसीत् परञ्च वर्तमानरूपः य: दृश्यते पुराणस्याऽस्य स: 16 तमायां शताब्द्यां प्राप्तः।

---

[37] भा. महा. 1/4/22

[38] हिस्ट्री ऑफ द संस्कृत लिटरेचर, पृ. 58

द्वैतमतस्य संस्थापकेन आनन्दतीर्थेण (मध्वाचार्यापरनामधेयेन जन्म- 1199ख्री.) भागवततात्पर्यनिर्णये श्रीमद्भागवतस्य मूलतात्पर्यस्य निर्देशं कुर्वता पञ्चमवेदत्वेन भागवतम् अङ्गीकृतम्। इतोपि आचार्येण रामानुजेन (जन्मकाल – 1017ख्री.) स्वकीये वेदान्ततत्त्वसारे भागवतस्य वेदस्तुतिं (10/87) यावत् अन्यत्र चाऽपि एकादशस्कन्धात् केचन् श्लोका: उद्धृता:। इत्थं भागवतस्य अस्तित्तवं तस्मात् पूर्वमेव सिद्धं भवति। श्रीशङ्कराचार्यस्य प्रबोधसुधाकरे अनेकेषु पद्येषु भागवतस्य छाया दृश्यते। गुरुगोविन्दभगवत्पादस्य गुरुणा गौडपादाचार्येण स्वकीये पञ्चीकरण-व्याख्याने भागवतात् 'जग्रहे पौरुषं रूपम्'[39] श्लोकः उद्धृतः वर्तते। उत्तरगीतायाम् चापि प्रसिद्धस्य पद्यस्य उद्धरणं प्रदत्तं वर्तते।[40]

तदुक्तं भावगते -

श्रेयः स्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो
क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये।
तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते
नान्यद्यथा स्थूलतुषावधातिनाम्।।[41]

एवं प्रकारेण बाह्यसाक्ष्यान् आधृत्य श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य गौडपादाद् प्राचीनतमत्वं सिद्धं भवति। आचार्यशङ्करस्य आविर्भावकालः सप्तमशत्याः अन्तिमभागे विद्वद्भिः विशिष्टानि प्रमाणानि आधृत्य सिद्ध: कृतोऽस्ति। तस्य प्रगुरो: गौडपादस्य समयः सप्तमशतकस्य आरम्भे युक्तियुक्तो वर्तते। अत एव भागवतपुराणं षष्ठशतकाद् अर्वाचीनं केनापि प्रकारेण न भवेदिति प्रमाणै: अध्यवसीयते। काश्याः प्रसिद्धसरस्वतीभवनपुस्तकालये बङ्गाक्षरेषु भागवतस्य एका विशिष्टा प्रति: प्राप्ता भवति। यस्याः लिपेः कालः दशमशतकस्य आर्श्वे पार्श्वे निर्विवादरूपेण सिद्धो भवति।

---

[39] भा. महा. 1/3/1

[40] वैष्णव संप्रदायों का साहित्य और सिद्धांत पृ. 102

[41] भा. महा. 10/14/4

1.3 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपादनशैली

विषयविवेचनदृष्टया श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य स्वरूपः चतुर्धा विभज्यते– घटनात्मकः, उपदेशात्मकः, स्तुत्यात्मकः, गीतात्मकश्च। घटनात्मके वर्गे भगवल्लीलायाः साधारणचरित्राणाञ्च वर्णनं गृह्यते। साधारणचरित्रं पुन: त्रिषु भागेषु विभज्यते। भविष्येतिहासोपाख्यानभेदेन। इतिहासस्य साधारणतया प्रयोजनद्वयं आख्यायते। प्रथमस्तावत् उपदेशकरणं द्वितीयाश्च विशिष्टानुशासनम्। श्रीमद्भागवतस्य प्रथमे स्कन्धे सन्निविष्टानि सूत - शौनकयोः, व्यासनारदयोः, शुकदेवपरीक्षितयोश्च प्रसङ्गानि इतिहासस्य उदाहरणानि इति प्रतिपादनीयं। एवं प्रकारेण प्रायश: सर्वेषु स्कन्धेषु कथाविशेषस्य उपक्रमं कर्तुम् अनेकेषां व्यक्तीनां वर्णनं विहितं वर्तते। परमतत्त्वस्य ज्ञानं कारयितुं जन्ममृत्युरूपसंसारचक्रतः मुक्तिमार्गं बोधयितुं च रूपकमाध्यमेन अपि आध्यात्मिकतत्त्वस्य वर्णनं क्रियते। सामान्यजनानाम् कृते कथात्मकं चरित्रं स्मरणीयम् अनुकरणीयञ्च भवति। एतेषां पात्राणां स्वरूप: नाधिभौतिकोऽपितु अधात्मिक: इत्थं इमानि सर्वाणि पात्राणि वस्तुत: स्थूलेन जगता सम्बद्धानि भवन्ति सूक्ष्म जगता एव एतानि सम्बद्धानि भवन्ति। श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थे स्कन्धे वर्णितं पुरञ्जनोपाख्यानं पञ्चमे स्कन्धे वर्णितं भवाटवी उपाख्यानञ्च तथ्यस्याऽस्योदाहरणत्वेन प्रतिपादयितुं शक्यते। एतैः आख्यानैः यद् विशेषतत्त्वं लक्षितं कारितं वर्तते सः तत्रैव निर्दिष्टो वर्तते। श्रीमद्भागवते यत्र उपाख्यानानि प्राप्यन्ते तत्रैव स्पष्टीभवति एव यत् एतानि सर्वाणि रूपकानि वर्तन्ते। यत्र रूपकं नास्ति तत्र रूपकस्य चर्चा अपि नास्ति। तस्मात् तानि इतिहासरूपेण वर्तन्ते।

श्रीमद्भागवतस्य प्रतिपादनशैल्यनुसारं प्रकृतमहापुराणस्य द्वितीयः रूप उपदेशात्मकः अस्ति। उपदेशाः अपि द्विधा विभक्तुं शक्यन्ते। प्रथमस्तु साधारणोपदेशः द्वितीयस्तु विशेषोपदेशः।

1.3.1 साधारणोपदेशः

साधारणोपदेशान्तर्गतं गुरुणा, मित्रेण, सम्बन्धिभिः कृता उपदेशाः आयान्ति। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रत्येकमध्यायेषु तथा सकलसंवादेषु इदं प्रकारकीयोपदेशः। यथा निर्देशं सामान्ये जीवने तानि तत्त्वानि सन्निवेश्य जीवः स्वयमेव स्वकीयं कल्याणं कर्तुं शक्नोति। वर्णितानां सकलोपदेशानां सारभूततत्त्वमिदमेव वर्तते यत् सर्वविषयाणाम् आसक्तिं परित्यज्य स्वस्य स्वस्य च कर्तव्यकर्मणि अनुष्ठेयानि सन्ति इतोऽपि भगवतः स्मरणं निरन्तरं कर्तव्यम् वर्तते। ज्योतिषचक्रवर्णनेन भूगोलेत्यादिना च राज्ञां च प्रजानां व्याख्यानेन एतस्याः वार्तायाः परिपुष्टिः कृता वर्तते यत् जीवस्य जीवनस्य पूर्णता केवलं ईश्वरप्राप्तौ वर्तते।[42]

1.3.2 विशेषोपदेशः

विशेषोपदेशान्तर्गतं प्रामुख्येन हंसगीता, कपिलगीता, उद्धवं प्रति श्रीकृष्णस्य उपदेशाश्च आयान्ति। तथा च चतुःश्लोकीभागवतं, सप्तश्लोकीभागवतं, दीक्षारूपेण ध्रुवं प्रति देवर्षिनारदस्योपदेशः – प्रभृतयोऽपि एतस्मिन् वर्गे एव आयान्ति।

प्रतिपाद्यविषयस्य प्रतिपाद्यानुक्रमे प्रकृतस्य महापुराणस्य तृतीयः रूपः स्तुत्यात्मको वर्तते। स्तुतिशब्दस्य साधारणोऽर्थः भवति - प्रशंसा। श्रीमद्भागवते स्तुतीनामत्यधिकं विस्तारो दृश्यते। प्रायशः सर्वाः स्तुतयः भगवता श्रीकृष्णेनैव सम्बद्धाः सन्ति। श्रीकृष्णस्य माध्यमेन परमेश्वरं विष्णुं प्रति आस्था व्यक्ता कृता अस्ति तथा अन्याः काश्चित् स्तुतयः अन्यदेवताभिः सम्बद्धाः प्राप्यन्ते। श्रीमद्भागवते एकेश्वरवादेन सह बहुदेववादस्यापि छाया दृश्यते। अन्यदेवतानां स्तुतिमाध्यमेनापि श्रीकृष्णस्यैव महिमा उपवर्णिता वर्तते। उदाहरणस्वरूपेण द्वितीयस्य स्कन्धस्य पञ्चमेऽध्याये ब्रह्मणः स्तुतिः कृता वर्तते। नारदेण क्रियमाणायाः स्तुतेरस्याः मुख्यप्रयोजनं ब्रह्मणोऽपि परस्य उत्कृष्टतत्त्वस्य ज्ञानप्राप्तिः वर्णिताऽस्ति। श्रीमद्भागवते इच्छानुसारी देवपूजनस्य अनेकत्रनिरुपणं दृश्यते परञ्च अन्ते निष्काम - सकाम

[42] भागवत दर्शन, पृ. 13

मोक्षेच्छूकानां कृते श्रीकृष्णस्यैव पूजा विहिताऽस्ति। अतः अन्यदेवपूजनमपि अत्र देवपरकमेव नाऽस्ति, अपितु भगवत्परकमेव सिध्यते।

स्तुतेः प्रकारद्वयं विद्यते। प्रथमा सकामस्तुतिः द्वितीया निष्कामस्तुतिः। निष्कामस्तुतेः अपि प्रकारद्वयम् तत्त्वज्ञानस्य प्राधान्ये दृश्यते तथा द्वितीये ते साधनायाः प्राधान्यं दरीदृश्यते। देवस्तुतौ तत्त्वज्ञानस्य प्राधान्यम् अस्ति अथ च प्रह्लाद-ध्रुव-अम्बरीष-ब्रह्मादीनां स्तुतौ साधनायाः प्राधान्यं वर्तते। साधनापरकस्तुतिषु आत्मसाक्षात्कारं तथा मुक्तिम् अपि निषिध्य निरूप्यते भक्तस्य सत्सङ्गे लीलाश्रवणे कीर्तने भक्तचरिते च यावती आनन्दानुभूतिः प्राप्यते, तावती आत्मस्वरूपस्थितौ अपि न प्राप्यते"। अस्मिन्नेव सन्दर्भे राज्ञः पृथोः क्रियमाणा स्तुति: अत्यन्तभावस्य प्रधानतायाः वर्णनं प्राप्यते। यत् तच्च "अस्मभ्यं दशसहस्राणि कर्णानि यच्छन्तु यैः वयं भवतां कथां श्रौतुं शक्नुमः" वाक्येन निरुपितमस्ति। यथाहि –

न कामये नाथ तदप्यहं क्वचिन् न यत्र युष्मच्चरणाम्बुजासवः।
महत्तमान्तर्हृदयान्मुखच्युतो विधत्स्व कर्णायुतमेष मे वरः।।[43]

एताभिः सर्वाभिः स्तुतिभिः आत्मशुद्धिरेव भवति। भगवत्तत्त्वज्ञानस्य च प्राप्तिः भवति। साधने भगवत्स्वरूपे निष्ठा भवति।

गीतात्मकशैली श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य अन्यतमा प्रतिपादनशैली वर्तते। प्रस्तुतप्रकरणे गीतात्मकशब्दात् गेयात्मिका शैली ग्रहीतव्या अस्ति। श्रीमद्भागवतस्य उपदेशात्मकभागे एव अन्तर्भवन्ति - कपिलगीता, हंसगीता आदि गीतशब्दस्य शाब्दिकार्थः गायनं वर्तते। यदा अन्तःस्थात्मा स्वव्यथाम् अन्तवेर्दनां तथा अनुभूतिं स्वस्यान्ते संवरणं कर्तुं असमर्थो भवति धैर्यसमाप्तिश्च ज्ञायते तदा स्वयमेव योऽन्तर्ध्वनिः निर्गच्छति तस्यैव नाम गीतमस्ति। तच्च संसारस्य कटुतायाः अनुभवेन, ज्ञानेन, विरहेण, प्रेम्ण प्रेम्णः इच्छया, विरहसम्भावनया अथवा अन्यैः अपि कारणैः हृदयात् प्रस्फुटितं भवति।

---
[43] भा. महा. 4/20/24

श्रीमद्भागवते एतादृशानि प्रसङ्गानि दृष्टिगोचराणि भवन्ति। एषु प्रायशः अधिकांशप्रसङ्गानि तथा ताः प्रेमानुरागिण्यः सन्ति। गोपीभिः गीतानि पंचगीतानि प्राप्यन्ते। येषु द्वारिकाधीशकृष्णस्य जायानां गीतमेकम्। पिङ्गलायाः एकं गीतम्, भिक्षुकस्य ब्राह्मणस्य गीतमेकम्, ऐलगीतम्, भ्रमरगीतम्। संसारस्य कटुतायाः अनुभवेन तासां हृदयेषु या व्यथा समागता सा अस्मिन् गीते चित्राङ्कितास्ति।

द्वितीयगीतं ब्राह्मणभिक्षुकस्य वर्तते। सः सात्त्विकः सदाचारी सामाजिकैः अपमानितः प्रताडितश्च निरुपितोऽस्ति। तेन अपमानेन तेन प्रताडित्रनाऽस्य ब्राह्मणभिक्षुकस्य अन्तर्वेदना अस्मिन् गीते प्रस्फुटिता। श्रीकृष्णस्य जायाभिः परमानन्दस्थितौ नक्तं दिनं प्रतीयते। गोपीनां हृदयम् अनिर्वचनीयं वर्तते। यथा प्रेममयः अमृतमयः श्रीकृष्णमयश्च वर्तते। इत्थं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे घटनोपदेशस्तुतिगीतैः माध्यमेन अनेकानेकविषयाणां प्रतिपादनं दृश्यते।

1.4 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यविषयः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यो विषयः परमात्मा श्रीकृष्णोऽस्ति। श्रीमद्भागवते भगवतो विविधस्वरूपाणां वर्णनं दृश्यते। महापौराणिक शैलीमनुरुद्धय भागवतमहापुराणेऽपि दशविषयाः सङ्ग्रहीताः दृश्यते। ते च सन्ति सर्गः, विसर्गः, स्थानं, पोषणः, अतिमन्वन्तरम्, ईशानुकथा, निरोधः, मुक्तिः, आश्रयः एतेषाम् दशविषयाणाम् वर्णनं श्रीमद्भागवते दृश्यते। निरुप्यतेऽपि तत्रैव -

अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणभूतयः।

मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।।[44]

एषु दशेष्वपि विषयेषु श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रधानविषय आश्रयोऽस्ति। 'आश्रय'शब्देन जीवानां शरण्यः परमेश्वरो बोध्यः व्यक्ताव्यक्ताभासस्य अधिष्ठानं निरपेक्षं साक्षि

---

[44] भा. महा., 2/10/1

तत्त्व ब्रह्म अस्ति। आश्रयतत्त्वस्याऽस्य उपलब्धिरेव प्रयोजनम्। अस्य उपलब्धिमेव कारयितुम् अन्ये नवविषया: प्रवृत्ता: सन्ति। यथाहि प्राप्यते -

दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणम्।
वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेनार्थेन चाञ्जसा।।[45]

सर्ग-विसर्गेत्यादिमाध्यमेन प्रभोः अनन्तमहिम्नः ब्रह्मस्वरूपस्य च बोधं कारयित्वा अविद्याया निवृत्तकरणमेव श्रीमद्भागवतस्य प्रयोजनं वर्तते। श्रीमद्भागवतस्य प्रत्येकं स्कन्धे एव आश्रयतत्त्वस्य निरूपणं दृश्यते। शङ्कराचार्यस्य दृष्ट्यां-सगुणनिर्गुणयोः द्वयोः प्रकारयोः वर्णनं प्राप्यते तथा समस्तविकल्पे: रहितं निर्गुणस्वरूपमेव स्वीकरणीयम्। यतोहि उपनिषदग्रन्थेषु यत्रापि ब्रह्मण: स्वरूप: प्रतिपादित: तत्र अशब्दास्पर्शारूपाव्ययेत्यादिभि: निर्विशेष एव प्रतिपादितोऽस्ति।[46] विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तस्य प्रस्थापकाचार्येण श्रीमतारामानुजेन शङ्कराचार्यस्य वैपरीत्येन सगुणब्रह्मण: स्वरूप: प्रतिपादित:। विषयेऽस्मिन् तत्त्वमिदं तावदालोच्यमस्ति यत् ब्रह्म एव सर्वदा ’सर्व’शब्दस्य वाच्यमिति चिज्जडात्मकजगत् तस्यैव आकारप्रकारभेदत्वात् कारणावस्थायां तदेव सूक्ष्मावस्थया तल्लीनत्वात् स्थूलावस्थायां तत एव अभिव्यक्तत्वात्। यथाहि –

“अत्रेदं तत्त्वं चिदचिद्वस्तुशरीरतया तत्प्रकारं ब्रह्मैव सर्वथा सर्वशब्दाभिधेयम्। तत् कदाचित् स्वस्मात् स्वशरीरतयापि पृथग्व्यपदेशानर्हसूक्ष्मदशापन्न-चिदचिद्वस्तुशरीरं तत्कारणावस्थं ब्रह्म। कदाचिच्य विभक्तनाम रूपव्यवहारार्हस्थूलदशापन्नचिदचिद्वस्तुशरीरं तच्च कार्यावस्थमिति कारणात् परस्माद् ब्रह्मणः कार्यरूपं जगदनन्यत्।।”[47]

---

[45] तथैव., 2/10/2

[46] “अतश्चान्यतलिङ्ग परिग्रहेऽपि समस्तविशेषरहितं निर्विकल्पमेव ब्रह्म प्रतिपत्तव्यं न तद्विपरीतम्। मव्ययम्’ इत्येवमादिषु अपास्तसमस्तविशेषमेव ब्रह्म उपदिश्यते।” शारीरक भाष्य, ब्र.सू., 3/2/11

[47] श्रीभाष्य, ब्र.सू., 2/1/14

श्रीमद्भागवतमहापुराणे आश्रयभावोऽयमित्थं निरूपितोऽस्ति– “सृष्टिप्रलयौ विषमप्रतीत्यौ तदभावश्च येन विभाति तत् परंब्रह्म एव आश्रयोऽधिष्ठानं वा। तदेव ’परमात्म’शब्दवाच्यमिति। य आध्यात्मिकः पुरुषः, स एव आधिदैविकः ; यः ब्रह्मजगतः पार्थक्यम् अभिव्यनक्ति स एव आधिभौतिकः पुरुषः। एकस्याऽसत्त्वेऽन्यस्यानुपलब्धिरिति। एते त्रय एव सापेक्षाः। एतेषां त्रयाणां भावाभावस्य ज्ञाता एव अपेक्षाहीनः आश्रयः परंब्रह्म। यथाहि-

आभासश्च निरोधश्च यतश्चध्यवसीयते।

स आश्रयः परं ब्रह्म परमात्मेति शब्द्यते।।

योऽध्यात्मिकोऽयं पुरुषः सोऽसावेवाधिदैविकः।

यस्तत्रोभयविच्छेदः पुरुषो ह्याधिभौतिकः।।

एक मेकतराभावे यदा नोपलभामहे।

त्रितयं तत्र यो वेद स आत्मा स्वाश्रयाश्रयः।।[48]

जीवस्य वृत्तीनां त्रयो विभागाः – जाग्रत्, स्वप्नम्, सुषुप्तिरिति। त्रिष्वास्वस्थासु तदभिमानिदेवतासु विश्वतैजसप्राज्ञाख्यासु प्रतीयते आभ्यश्च अवस्थाभ्यः परः तुरीयरूपेण लक्ष्यते स एव ब्रह्म। तद् ब्रह्म एव ’अपाश्रय’शब्देन उच्यते।

त्यतिरेकान्वयो यस्य जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु।

मायामयेषु तद्ब्रह्म जीववृत्तिष्वपाश्रयः।।[49]

एकादशे स्कन्धे स्थाने स्थाने मुक्तिबन्धनाभ्यां परत्वेन यस्य तत्त्वस्य उपदेशः विधत्तः अस्ति तदेव आश्रयतत्त्वमिति।”

---

[48] भा. महा., 2/10/7,8,9

[49] तथैव, 12/7/19

पुराणस्य ये पञ्च विषयाः वर्णिताः सन्ति त एव प्रतिपाद्याः विषयाः श्रीमद्भागवत्महापुराणस्य। श्रीमद्भागवत्महापुराणे दशानां विषयाणां प्रतिपादनं न दृश्यते अपितु पुराणप्रतिपाद्याः पञ्च विषयाः एव तस्य प्रतिपाद्यमिति। महापुराणेऽस्मिन् निरूपिताः अन्ये विषयाः लक्षणमात्रमिति। भागवत्महापुराणे केवलं मात्रम् आश्रयस्वरूपस्य परमात्मनः एव प्रतिपादनमस्ति। भगवता सह श्रीमद्भागवत्महापुराणस्य प्रतिपाद्य-प्रतिपादकभावोऽस्ति।

---*---

द्वितीयोऽध्यायः

धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचयः

2.1 धर्मसूत्रसाहित्यम्

2.2 स्मृतिसाहित्यम्

2.3 भाष्यं निबन्धञ्च

भारतीयज्ञानपरम्परायां वैदिकसाहित्यं ज्ञानस्य उत्सभूतत्वेन निरूपितमस्ति। चत्वारश्च वेदाः– ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च। वेदं व्युत्पत्तिपादविषया निरूप्यते **“वेद्यते ज्ञायते अनेनेति वेदः”**। वेदानां चातुर्विध्यं संरचनाश्रितं तत्र च निरूपितविषयाश्रितञ्च। एतदेव चातुर्विध्यम् ऋग्वेदीये पुरूषसूक्ते समुल्लिखितमस्ति।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।[1]

अभ्युपेयोपायकरणादिसंयुतो वेदः चतुर्धा विभज्यते– संहिताब्राह्मणारण्यकोपनिषदश्च। वेदानां समुचितज्ञानप्राप्त्यर्थं षण्णां वेदाङ्गानामध्ययनं क्रियते। तेषां नामानि मुण्डकोपनिषदि मिलति यथा यथाहि-

“ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दोज्योतिषमिति”।[2]

कल्पे श्रौतसूत्राणि गृह्यसूत्राणि धर्मसूत्राणि शुल्वसूत्राणि च सन्निविष्टानि सन्ति। श्रौतसूत्रं ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यम्- अर्थम् अनुसरत् यज्ञं प्रतिपादयति। गृह्यसूत्रेषु गृहस्थाश्रमवासिनां च कृते कर्तव्यानुष्ठानयोश्च वर्णनं मिलति। धर्मसूत्रेषु सामाजिकानां कर्तव्यानां धर्मादीनां वर्णितमस्ति। इत्थं प्रकारेण शुल्वसूत्रेषु याज्ञिककुण्डनिर्माणस्य विधिः प्राप्यते।

2.1 “धर्मसूत्रम्”

“धर्मः” शब्दस्याऽस्य प्रयोगो वेदब्राह्मणारण्यकोपनिषत्पुराणस्मृत्यादिषु दर्शनशास्त्रसम्बद्धसैद्धान्तिकप्रतिपत्तिप्रतिपादकेषु ग्रन्थेषु च अथ च धर्मशास्त्रे च विविधार्थेषु

---

[1] ऋ., 10/90/7

[2] मु. उ., 1/1/5

प्रयुक्तो अस्ति। अस्य शब्दस्य प्रयोगः पुंल्लिङ्गे अथ च नपुंसकलिङ्गेऽपि मिलति। यथा वेदे पुँल्लिङ्गे-

त्वे धर्माण आसते जुहूभिः सिञ्चतीरिव।

कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधिश्रियो धिषे विवक्षसे।।[3]

नपुंसकलिङ्गे-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।[4]

"धर्मः" शब्दस्य अस्य विशिष्टेऽर्थे प्रयोगस्तावत् वैशेषिकदर्शनस्य वैशेषिकसूत्रोपस्कारे प्राप्यते यथाहि– **"यतोऽभ्युदयनिश्रेःयससिद्धिः स धर्मः"।**[5] अस्य सूत्रस्य टीकायां वर्णनं मिलति- **"अभ्युदयस्तत्त्वज्ञानं निःश्रेयसमात्यन्तिकी दुःखनिवृत्तिः तदुभयं यतः स धर्मः"** इति। गौतमधर्मसूत्रे धर्मस्य मूलं प्राप्यते- **"वेदोधर्ममूलम्। तद्विदां च स्मृतिशीले।।"**[6] मनुस्मृतेः मन्वर्थमुक्तावलीटीकायामपि ज्ञाप्यते- **श्रुतिप्रमाणको धर्मः।**[7] स्मृतिग्रन्थेषु धर्मोऽयम् द्विधा विभज्यते प्रथमः साधारणधर्मः द्वितीयश्च विशिष्टधर्मः। साधारणधर्मः सकलमनुष्याणां कृते अनुकरणीयः विशिष्टश्च द्वितीयः (असाधारणधर्मः) वर्णाश्रमानुपालनकर्तृभिः नियमत्वेन अनुपालनीयः। साधारणधर्मस्य विवेचनं संस्कृतवाङ्मये बहुशः मिलति। यथाहि-

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

दानं दमो दया क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्।।[8]

---

[3] ऋ., 10/21/3
[4] ऋ., 10/90/16
[5] वै. सू., 1/2
[6] गौ. धर्म., 1/1/2
[7] म. स्मृ., 2/1
[8] या. स्मृ., 1/122

वर्णविशेषस्य धर्मो विशिष्टधर्मः। वर्णधर्मः, आश्रमधर्मः, वर्णाश्रमधर्मः, नैमित्तिकधर्मः, गुणधर्माश्च एते सर्वे विशिष्टधर्मे सन्निविष्टाः सन्ति। मनुस्मृतेः कुल्लूकभट्टस्य टीकायां 'वर्णविशेषस्य धर्म एव विशिष्टधर्मः' अस्यां प्रतिपत्त्याम् उल्लिखितमस्ति– **"वर्णशब्दश्च वर्णधर्माऽऽश्रमधर्म-वर्णाश्रमधर्म-गुणधर्म-नैमित्तिकधर्माणामुपलक्षकः"**।[9] "धर्मसूत्रम्" शब्दस्य 'धर्म' अवयवस्य विचारोपरान्तं 'सूत्रं' शब्दः वर्ण्यते। शास्त्रीयार्थानां प्रतिपादकः वाक्यविशेषः सूत्रं यथा- "**शास्त्रीयबह्वर्थप्रतिपादकसंक्षिप्तो वाक्यविशेषः**"।

अन्यत्रापि परिभाषा प्राप्यते-

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्।

अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रकृतो विदुः।।[10]

इत्थं सूत्रन्नाम शास्त्रस्य प्रतिपाद्यस्याल्पाक्षरेण निरूपकः।

धर्मसूत्राणां परिचयः

यानि धर्मसूत्राणि प्राप्यन्ते तेषां धर्मसूत्राणां परिचयः प्रस्तूयते। मौलिकग्रन्थेषु समीक्षासु च धर्मसूत्राणां नामानि प्राप्यन्ते इत्थंप्रकारेण- गौतमधर्मसूत्रम्, बौधायनधर्मसूत्रम्, आपस्तम्बधर्मसूत्रम्, हिरण्यकेशिधर्मसूत्रम्, वसिष्ठधर्मसूत्रम्, विष्णुधर्मसूत्रम्, हारीतधर्मसूत्रम्, शङ्खलिखितधर्मसूत्रम्, वैखानसूत्रम्। एतेषां प्रमुखधर्मसूत्रीयग्रन्थानां क्रमशः परिचयः स्वरूपगतपरिशीलनञ्चाऽत्र प्रस्तूयते।

2.1.1 गौतमधर्मसूत्रम्

प्राप्तधर्मसूत्रसाहित्ये गौतमधर्मसूत्रं प्राचीनतमं धर्मसूत्रमिति मन्वते विद्वान्सः। सामवेदीयं धर्मसूत्रमिदम्। अस्य धर्मसूत्रस्य रचनाकारो महर्षिगौतमः श्रूयते। लाट्यायनश्रौतसूत्रे तथा च

---

[9] म. स्मृ., 1/25

[10] काव्यमीमांसा, 2

द्रौह्यायणश्रौतसूत्रे गौतमनाम्नः आचार्यस्य वर्णनं। यथाहि लाट्यायनश्रौतसूत्रे- **“देवा ब्रह्माण आगच्छतागच्छतागच्छतेति गौतमः”**।[11] गौतमधर्मसूत्रस्य हरदत्तकृतमिताक्षराटीका तथा च मस्करीकृता टीका प्राप्यते। गौतमधर्मसूत्रस्य प्राचीनतमटीकाकारो असहायोऽपि श्रूयते। तस्य वर्णनं महाभाष्ये मिलति यथाहि-

"एकाकिभिः क्षुद्रकैर्जितमिति असहायैरित्यर्थः"।।[12]

गौतमधर्मसूत्रेऽस्मिन् त्रयः प्रश्नाः सन्ति। प्रथमद्वितीययोः प्रश्नयोः नव- नव अध्यायाः सन्ति तृतीय प्रश्ने च दशाध्यायाः सन्ति। मूलरूपेण अस्मिन् धर्मसूत्रे अष्टाविंशतिः अध्यायाः सन्ति। अस्मिन् धर्मसूत्रे एकसहस्राणि सूत्राणि सन्ति। इदं धर्मसूत्रं केवलं गद्यमयमस्ति।

2.1.2 बौधायनधर्मसूत्रम्

इदं धर्मसूत्रं बोधायनकल्पसूत्रस्य अंशमात्रमस्ति। कृष्णयजुर्वेदीयाचार्यो बोधायनो अस्य धर्मसूत्रस्य रचनाकारोऽस्ति। एकस्मिन् स्थाने तर्पणस्य प्रसङ्गे सूत्रकारैः सह काण्वबोधायनस्य नामपि श्रूयते। यथाहि– काण्व**बोधयनं तर्पयामि**[13] एतेन कारणेन काण्वबोधायनो वर्तमानधर्मसूत्रस्य रचनाकारो नास्तीति। प्रवर्तमानबोधायनधर्मसूत्रस्य कर्ता अस्य वंशजोऽस्ति। यस्य अर्वाचीनता स्वयंसिद्धास्ति। बोधायनधर्मसूत्रस्य एकमात्रं टीकाकारो गौविन्दस्वामी अस्ति। तस्य टीकायाः नाम “विवरणं” प्राप्यते।[14] गोविन्दस्वामिनाऽपि बोधायनस्य स्थाने 'काण्वायनः' कथ्यते। बोधायनधर्मसूत्रं गौतमधर्मसूत्रात् परं रचितं दृश्यते। धर्मसूत्रेऽस्मिन् गौतमस्य नाम अपि श्रूयते।[15] डॉ. बर्नेल द्वारा बोधायनधर्मसूत्रं चतुर्षु प्रश्नेषु विभज्यते। डॉ. 'आर शामशास्त्री' द्वारा तथा च डा. 'कैलेण्डः' द्वारा इदं धर्मसूत्रं अन्यविधया

---

[11] ला. श्रौ. सू., 1/3/3

[12] महाभाष्यम्, 1/1/24, 5/3/51

[13] बौ. धर्म., 2/6/9/14

[14] संस्कृत वाङ्गमय का वृहद् इतिहास, वेदाङ्गखण्डः, पृ. 193

[15] बौ. धर्म., 1/1/2/7

विभज्यते। बोधायनधर्मसूत्रं चतुर्षु प्रश्नेषु विभक्तोऽस्ति। अस्मिन् अन्तिमं प्रश्नं परिषिष्टो मन्यते। अस्मिन् धर्मसूत्रे प्रश्नस्य विभाजनम् अध्यायेषु तथा च खण्डेषु कृतम्। प्रथमेप्रश्ने एकादशाध्यायाः एकविंशतिश्च खण्डाः सन्ति। तृतीये प्रश्ने दशाध्यायाः अष्टादशखण्डाश्च सन्ति। तृतीये प्रश्ने दशाध्यायाः दशखण्डाश्च सन्ति। इत्थमेव चतुर्थे प्रश्ने अष्टाध्यायाः अष्टौ खण्डाश्च सन्ति। इत्थं प्रकारेण अस्मिन् धर्मसूत्रे समाहृत्य ऊनचत्वारिंशत् सप्तपञ्चाशत् खण्डाश्च सन्ति। परन्तु विषयविभाजनस्य दृष्ट्या धर्मसूत्रमस्तव्यस्तमस्ति। एकस्यैव विषयस्य विवेचनं विभिन्नाध्यायेषु प्राप्यते। कञ्चिदपि नियमम् उपक्रम्य तस्य परिशिष्टः एकत्रैव न दृश्यते।

अस्मिन् धर्मसूत्रे विषयाः गद्यशैल्या पद्यशैल्या च निबद्धाः वर्तन्ते। ग्रन्थनामानि अपि उल्लिख्यन्ते यथाहि- चत्वारः वेदाः, तैत्तिरीयसंहिता, तैत्तिरीयब्राह्मणः, गोपथब्राह्मणः, तैत्तिरीयारण्यकः, उपनिषद्, उल्लिख्यन्ते अत्र।[16] षट्वेदाङ्गानामपि अपि मिलति। बौधायनधर्मसूत्रे धर्मशास्त्रकाराणामपि नामानि मिलन्ति तेषु– औपजघ्निकात्यकाश्यपगौतमप्रजापतिमौदगल्यहारीतादयः प्रमुखाः सन्ति।

2.1.3 आपस्तम्बधर्मसूत्रम्

आपस्तम्बधर्मसूत्रं कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयशाख्या सह सम्बद्धोऽति। इदं धर्मसूत्रं अध्वर्यु संज्ञकानाम् ऋत्विजानां प्रमुखकल्पस्य अङ्गं वर्तते। आपस्तम्बमहर्षिणा प्रणीतमिदं धर्मसूत्रं। तस्मादेव अस्य धर्मसूत्रस्य नाम आपस्तम्बधर्मसूत्रमस्ति। अस्य धर्मसूत्रस्य सर्वप्रथमं प्रकाशनं हरदत्तकृत- उज्ज्वलाटीकया सह 'बुहलर' महोदयेन बुहलरानुवादेन सह कुम्भकोणस्थानात् संस्कृतमालान्तर्गत सम्पादितं कारितम्।[17] आपस्तम्बधर्मसूत्रस्य क्रमः गौतमबौधायनधर्मसूत्रयोः पश्चात् प्राप्यते। पी.वी. काणेमहोदयेन अस्य रचनाकालः 600-300

---

[16] बौ. धर्म., 2/8/14/4

[17] धर्म शास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 17

ई.पू. मध्ये स्वीक्रियते।[18] याज्ञवल्क्यशंखलिखिताभ्याम् आपस्तम्ब: धर्मशास्त्रकारत्वेन अनुमोद्यते।[19]

आपस्तम्बधर्मसूत्रस्य व्याख्याकारः हरदत्तोऽस्ति प्रणीताया: व्याख्यायाः नाम 'उज्ज्वला' वर्तते। धर्मसूत्रमिदं प्रश्नयोः विभक्तमस्ति। प्रश्नस्यविभाजनं पुन: पटलेषु पटलानञ्च कण्डिकासु अस्ति। प्रथमे प्रश्ने एकादश पटलाः सन्ति तथा च समाहृत्य द्वात्रिंशत् कण्डिकाः सन्ति। द्वितीये प्रश्ने पुनः एकादश पटलाः द्वात्रिंशत् कण्डिकाः सन्ति। इत्थं प्रकारेण धर्मसूत्रेऽस्मिन् द्वाविंशति: पटलाः तथा च एकषष्टिः कण्डिकाः सन्ति।

समाविष्टप्रश्नयोः विषयवस्तु अनुगुणं व्यवस्थितं नियोजनं न दृश्यते। कण्डिकासु विषयमनुगुणं विभाजनं न दृश्यते। अपितु एकैव विषयः एकाधिककण्डिकासु क्रमशः प्रचलितो दृश्यते इतोऽपि तस्य विषयस्य मध्येऽन्यविषयाणां विवेचनमपि दृश्यते। अस्य धर्मसूत्रस्य प्रमुखविशेषता भाषाशैली अस्ति। भाषाशैल्या: वैशिष्ट्यमाधायैव इदं धर्मसूत्रमन्येभ्योधर्मसूत्रेभ्यो विलक्षणं वर्तते। धर्मसूत्रस्य भाषा पाणिनेरपि प्राचीनतमा लक्ष्यते। इतोऽपि पाणिनेः नियमानां तादृशी निबद्धताभाषायां न लक्ष्यते। गद्यपद्योभयात्मिकाया: शैल्या: अवलम्बनम् अस्मिन् दृश्यते। धर्मसूत्रेऽस्मिन् तत्कालीनान्यधर्मशास्त्रीयार्चानां नामान्यपि परिकीर्तितानि सन्ति यथाहि– कण्वः, काण्वः, कुणिकः, कुत्सः, कौत्सः, पुष्करसादिः, वार्ष्यायणिः, श्वेतकेतुः, हारीतः। वेदानां वेदाङ्गानां च वर्णनात् अतिरिक्तम् पुराणस्य महाभारतस्याऽपि उल्लेख: प्राप्यते।[20] आपस्तम्बे पूर्वमीमांसायाः सम्बद्धपारिभाषिकशब्दानां तथा च सिद्धान्तानां उल्लेख आधिक्येन प्राप्यते। आपस्तम्बधर्मसूत्रस्य उल्लेखो ब्रह्मसूत्रस्य भाष्येऽपि प्राप्नोति।[21]

---

[18] धर्म शास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 20

[19] या. स्मृ., 1/1/4

[20] बौ. धर्म., 1/6/19/13, 2/9/23/.3 - 4, 1/10/29/7, 2/9/24/6

[21] ब्र. सू., 4/2/14

2.1.4 हिरण्यकेशिधर्मसूत्रम्

इदं धर्मसूत्रं हिरण्यकेशिकल्पसूत्रस्य भागोऽस्ति। कल्पसूत्रस्य षड्विंशतितमं प्रश्नं तथा च सप्तविंशतितमं प्रश्नं इत्थं प्रश्नद्वयं समाहृत्य एव हिरण्यकेशिधर्मसूत्रमस्ति। धर्मसूत्रस्योपरि महादेवदीक्षितकृत उज्ज्वला टीकाऽपि प्राप्यते। डॉ. 'किर्स्ते'महोदयेन मातृदत्तप्रणीतभाष्याधारेण हिरण्यकेशिगृह्यसूत्रस्य सम्पादनं कृतम्।[22] 'पी. वी. काणे' महोदयस्य मतानुसारं इदं धर्मसूत्रं स्वतन्त्ररचना नास्ति। 'कोंगू' राज्ञः दानपात्रे (454 ख्री.) हिरण्यकेशिशाखायाः सम्बद्धानां ब्राह्मणानां चर्चा प्राप्यते। आधुनिके भारते 'रत्नागिरि' क्षेत्रीयब्राह्मणा: आत्मानं हिरयण्केशिनो मन्वते। हिरण्यकेशिब्राह्मणानां सम्बन्धः तैत्तिरीयशाखायाः 'खाण्डिकेय' नामकेन चरणेन सह अस्ति। चरणव्यूहस्य भाष्ये उद्धृतं महार्णवमनुसारं हिरण्यकेशिजनाः सह्यपर्वतस्य परशुरामक्षेत्रं निकषा समुद्रतटात् दक्षिण-पश्चिमदिशोः निवसन्ति। टीकाकारो महादेवा: अस्य सूत्रस्य काल आपस्तम्बधर्मसूत्रात् परं न स्वीकरोति।

2.1.5 वसिष्ठधर्मसूत्रम्

धर्मसूत्रमिदं 'वसिष्ठधर्मशास्त्रं' नाम्नापि सम्बोध्यते। वसिष्ठशाखया सम्बद्धं श्रौतसूत्रं एवं गृह्यसूत्रञ्च न प्राप्यते। धर्मसूत्रमिदं सङ्क्षिप्तं परं च महत्वपूर्णमस्ति। कुमारिलमतानुसारेण धर्मसूत्रस्याऽस्य अधीतिन: प्रायेण ऋग्वैदिकब्राह्मणा: भवन्ति।[23] धर्मस्य प्रामाण्यविचारे प्रसङ्गे मनुना इदमेव धर्मसूत्रं धर्मप्रमाणत्वेनोद्धृतम् आदौ। इदं धर्मसूत्रं गौतमबौधायनापस्तम्बादि-धर्मसूत्रश्रृङ्खलायां माहात्म्यं भजते। कलकत्तातः प्रकाशिते (1876 ख्री.) जीवानन्दविद्यासागरद्वारा सङ्ग्रहीते सङ्ग्रहे अस्य धर्मसूत्रस्य विंशतितमस्याऽध्यायस्य एवं एकविंशतितमस्याऽध्यायस्य केचन अंशा: सङ्कलिता: सन्ति। एतत् विवरणं एम. एन. दत्त महोदयस्य कलकत्तात: प्रकाशिते (1980 ख्री.) सङ्ग्रहेऽपि अस्ति। परन्तु आनन्दाश्रमस्य

[22] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 20

[23] तन्त्रवार्तिक, पृ. 179

स्मृतिसङ्ग्रहे (1905 ख्री.) तथा बाम्बेसंस्कृतसीरीजमालायां डॉ. फुहररस्य संस्करणे त्रिंशत् अध्यायाः सङ्कलिता: सन्ति। इदं संस्करणं सर्वाधिकं प्रमाणिकं वर्तते।

अस्य धर्मसूत्रस्य भाषाशैली गौतमधर्मसूत्रेण सह सामञ्जस्यम् आवहति। उदाहरणार्थं वसिष्ठधर्मसूत्रस्य विंशतितमोऽध्यायः गौतमधर्मसूत्रस्य एकोनविंशतितेनाऽध्यायेन सह अक्षरशः समानमस्ति। अन्यत्र अपि शब्दार्थरूपेण समानताया अभावो नास्ति। बौधायनधर्मसूत्रस्य अधिकांशनियमानाम् उद्धरणम् अस्मिन् धर्मसूत्रे मिलति। पी. वी. काणेमहोदयो वसिष्ठधर्मसूत्रं मनुस्मृतेः पूर्वं मन्यते।[24] कारणं मनुस्मृतौ वसिष्ठधर्मसूत्रं धर्मप्रमाणरूपेण उद्धृतमस्ति।[25] इतोऽपि याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राचीनतमस्मृतिकारेषु वसिष्ठो धर्मसूत्रकाररूपेण उल्लिखितोऽस्ति।[26] एभिरवगम्यते यत् स्मृतिकारेषु तथा भाष्यकारेषु वसिष्ठस्य स्थानं गौरवास्पदमस्ति। तीरदेवस्य राजिमताम्रपत्रे अस्य धर्मसूत्रस्य उद्धरणं मिलति यस्य समयो अष्टमख्रीष्टाब्दस्य अन्तिमं चरणं मन्यते। अतः अस्य धर्मसूत्रस्य समयः ख्रीष्टाब्दात् 300-100 पूर्वं स्वीकरणीय:।

2.1.6 विष्णुधर्मसूत्रम्

बंगालस्थित– एशियाटिकसोसायटीद्वारा प्रकाशिते जीवानन्दकृतधर्मशास्त्रसङ्ग्रहे (1876 ख्री.) इदं धर्मसूत्रं प्रकाशितमस्ति। पुनः एम.एन. दत्तेन (1909 ख्री.) वैजयन्तीटीकया सह एषो ग्रन्थः प्रकाशितः। 'सेक्रेड बुक आफ दि ईस्ट' ग्रन्थस्य सप्तमे खण्डे डॉ. 'जे. जॉली' महोदयेन अस्य आङ्गलभाषायाम् अनुवादो विधत्त:। वैजयन्तीटीकयानुसारेण अस्य धर्मसूत्रस्य सम्बन्धो यजुर्वेदीयकाठकशाखया सह अस्ति। श्राद्धकल्पे वाचस्पतिमतानुसारं विष्णुधर्मसूत्रस्य अधीतिन: काठकशाखया सम्बद्धा: ब्राह्मणा: वर्तन्ते विष्णुः अस्याः शाखायाः सूत्रकारो वर्तते। अस्मिन् धर्मसूत्रे सूत्राणि गद्यपद्योभयात्मिकशैल्यां निबद्धानि वर्तन्ते। अस्य प्रथमोऽध्यायः तथा च अन्तिमोऽध्याय: पद्यमयोऽस्ति। आहत्य धर्मसूत्रेऽस्मिन् धर्मसूत्रे शत

---

[24] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 22

[25] म. स्मृ., 8/140

[26] या. स्मृ., 1/4

अध्यायाः सन्ति। अस्य भाषा शैली सरलाऽस्ति व्याकरणस्य नियमानुकूला वर्तते। धर्मसूत्रे मनु-याज्ञवल्क्यस्मृतिभ्याम् प्रायेण विषया:ग्रहीता: सन्ति। अस्य प्रारम्भिकांशानां समयः 300-200 ख्रीष्टाब्दात् पूर्वं मन्यते।[27] प्रो. काणे महोदयः अस्य अनुमानेन कालो निर्धारयते।[28] डॉ. 'जॉली' महोदयेन विष्णुधर्मसूत्रं याज्ञवल्क्यस्मृतेः प्राक् मन्यते। अस्य मतस्य खण्डनं काणेमहोदयेन द्वारा कृतम्।[29] अस्मिन् वेदवेदाङ्गेतिहासधर्मशास्त्रपुराणानामोल्लेखो दृश्यते। धर्मसूत्रेऽस्मिन् छन्दसामपि प्रयोगो दृश्यते तेषु छन्दस्सु अनुष्टुप्-इन्द्रवज्रा- त्रिष्टुप् प्राधान्येन प्रयुक्तानि दृश्यते।

2.1.7 हारीतधर्मसूत्रम्

कृष्णयजुर्वेदीयधर्मसूत्रमिदम् इति पी. वी. काणेमहोदयेन उद्धृतम् स्वकीये महनीयग्रन्थे।[30] धर्मसूत्रस्याऽस्य मैत्रायणीपरिशिष्टेन तथा च मानवश्राद्धकल्पसूत्रेण साम्यं दृश्यते। हेमाद्रिकृत'चतुवर्गचिन्तामणि' आख्यग्रन्थानुसारं हारीतधर्मसूत्रस्य एको भाष्यकारोऽपि उपलभ्यते।[31] धर्मसूत्रेऽस्मिन् काशमीरीशब्दः "कफेल्ला" इत्यस्य प्रयोगेण हारीत: काश्मीरवासी इति वक्तुं शक्यते।[32] याज्ञवल्क्यस्मृतौ धर्मशास्त्रकारत्वेन हारीतस्योद्धरणं दृश्यते।[33] नासिकजनपदस्य इस्लामपुरनामकात् हारीतधर्मसूत्रस्य एकः हस्तप्रतिलिपिः वामनशास्त्रिणा प्राप्ता। अस्मिन् त्रिंशत् अध्यायाः सन्ति।[34] मनुस्मृतेः टीकायामपि हारीतस्य वर्णनम् उपलभ्यते।[35] अस्मिन् धर्मसूत्रे निरूपिताः प्रमुखा विषयाः- धर्मस्य व्याख्या, ब्रह्मचारीणां भेदाः, स्नातकस्य गृहस्थस्य च आचारव्यवहारस्य वर्णनं, सन्न्यासीनां नियमानां

---

[27] आ. धर्म., भूमिका पृ. 16
[28] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ.24
[29] तथैव
[30] तथैव पृ. 25
[31] तथैव
[32] तथैव
[33] या. स्मृ., 1/4
[34] संस्कृत वाङ्गमय का वृहद् इतिहास, वेदाङ्गखण्डः, पृ. 208
[35] म. स्मृ., 2/1

वर्णनं, भक्ष्याभक्ष्यविचारः, आशौचसम्बन्धिनियमाः, पञ्चमहामखानां विधिविधानञ्च, वेदाध्ययनस्य अनध्यायनस्य वर्णनं, राजधर्मसम्बन्धिनो नियमाः, स्त्रीणां धर्माणां वर्णनं, प्रायश्चित्तानां वर्णनं इत्यादय: सन्ति। हारीतेन विवाहप्रकारेषु क्षात्रमानुषौ इत्याख्यौ द्वौ विवाहभेदौ स्वीकृतौ स्त:। अष्टाविधविवाहान्तर्गतम् आर्षप्राजापत्यविवाहयोश्च उल्लेखो न उपलभ्यते। धर्मसूत्रेऽस्मिन् हारीतेन ब्रह्मवादिनीनां स्त्रीणां वेदाध्ययनं स्वीक्रियते। अस्मिन् धर्मसूत्रे वेदवेदाङ्गधर्मशास्त्राणां सङ्केतो निरूपितोऽस्ति।[36] गद्यपद्यामिकशैल्यां गणेशपूजनस्य वर्णनम् उपलभ्यते यच्च अपरार्कद्वारा उद्ध्रियते।[37]

2.1.8 शङ्खलिखितधर्मसूत्रम्

अस्य धर्मसूत्रस्य अधीतिन: शुक्लयजुर्वेदीया:सन्ति। महाभारते एका कथा तादृशी प्राप्यते यस्या: कर्ता **'शङ्ख' नाम्ना भिधीयते**।[38] याज्ञवल्क्येनाऽपि शङ्खलिखितं धर्मशास्त्रकारत्वेन गण्यते[39] तथा च आपस्तम्बधर्मसूत्रेऽपि उज्ज्वलाटीकायां शंखलिखितस्योल्लेख: प्राप्यते।[40] जीवानन्दस्य स्मृतिसङ्ग्रहे अस्य धर्मसूत्रस्य अष्टादशाध्यायाः सन्ति इति उद्धरणं उद्धृतमस्ति। शंखलिखितधर्मसूत्रमुपरि भाष्यस्य सङ्केतमपि मिलति। कन्नौजनरेशगोविन्दचन्द्रलक्ष्मीधरेण स्वस्य कल्पतरुग्रन्थे अस्य चर्चा कृता। लक्ष्मीधरस्य कालः 1100-1160 ख्रिस्ताब्दोऽस्ति।[41] इदं भाषाशैलीदृष्ट्या पूर्ववर्तिधर्मसूत्राणि अनुसरति उपर्युक्तेनावगम्यते इदं यत् धर्मसूत्रमिदं कौटिल्यस्य समकक्षमस्ति तथा च व्याकरण वर्तते। इदं गौतमापस्तम्बाख्यात् परवर्तिनी तथा च याज्ञवल्क्यस्मृतेः कृति: अस्ति। एतेन कारणेन अस्य कालः 300-100 ख्रीस्ताब्दपूर्वं मन्यते।

---

[36] स्मृतिचन्द्रिका, तृतीय भाग, पृ. 290
[37] या. स्मृ ., 1/ 285
[38] महाभारत्, 12/23
[39] या. स्मृ., 1/285
[40] आ. धर्म., 1/1/9
[41] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 27

2.1.9 वैखानसधर्मसूत्रम्

'डॉ. डब्ल्यू कैलेण्डेन' सम्पादितं इदं धर्मसूत्रं वैखानसस्मार्तसूत्रस्य एको भागोऽस्ति। अस्मिन् स्मार्तसूत्रे दशप्रश्नाः सन्ति। येषु प्रथमसप्तप्रश्नयोश्च सम्बन्धः वैखानसगृह्यसूत्रेण सह अस्ति। एवञ्च अन्तिमानां त्रिप्रश्नानां सम्बन्धः धर्मसूत्रेण सह वर्तते। अस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनं 'टी. गणपति'शास्त्रीणा 1913 ख्रीष्टाब्दे कृतम्। महादेवः सत्याषाढश्रौतसूत्रमुपरि लिखितायां वैजयन्तीटीकायां कृष्णयजुर्वेदीयषट्सूत्रेषु बौधायनभारद्वाजापस्तम्बहिरण्यकेशिवाधूलवैखानसानां चर्चितोऽस्ति। गौतमधर्मसूत्रे वैखानसशब्दः वानप्रस्थस्य स्थाने आगतः।[42] बौधायनधर्मसूत्रेऽपि वैखानसशब्दः प्राप्यते। तत्र वैखानसशब्दस्य व्याख्या इत्थं प्राप्यते- वैखानसशास्त्रानुसारेण य आचरणं करोति सः वैखानसः। अस्मिन् धर्मसूत्रे त्रीणि प्रश्नानि सन्ति। प्रत्येक प्रश्न खण्डेषु विभक्तमऽस्ति। प्रथमे प्रश्ने एकादशखण्डाः द्वितीये प्रश्ने पञ्चदशखण्डाः एवं तृतीये प्रश्ने पञ्चदशखण्डाः सन्ति। इत्थं प्रकारेण अस्मिन् धर्मसूत्रे आहृत्य एकचत्वारिंशत् खण्डाः प्राप्यन्ते।

2.2 स्मृतिः

धर्मशास्त्रीयपरम्परायाम् अस्य शब्दस्य द्वौ अर्थौ प्रचलितौ स्तः। एकस्मिन् वेदवाङ्मयेतरसकलसंस्कृतवाङ्मयेन सह सम्बद्धोऽयं शब्दः। अन्यरीतया धर्मशास्त्रीयवाङ्मय मनु-याज्ञवल्क्यादिस्मृत्यादिभिः सह सम्बद्धोऽयं शब्दः।[43] महाभारते स्मृतेः द्वैधमुक्तमस्ति महास्मृतिः अनुस्मृतिश्च।[44] जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्रे मुख्यतया श्रौतसूत्राणि गृह्यसूत्राणि च स्मृतिः अपरनाम्ना प्रतिपाद्यन्ते।[45] गौतमधर्मसूत्रे स्मृतिः धर्मस्योपादनरूपत्वेन स्वीक्रियते।[46] स्मृतिकाराणां सम्बन्धे विविधमतानामुल्लेखो दृश्यते। तेषु गौतमधर्मसूत्रे मनोः नाम आदौ

---

[42] गौ. धर्म., 1/3/2

[43] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 40

[44] महाभारतम्, 12/200/30

[45] म. स्मृ., भूमिका, पृ. 7

[46] गौ. धर्म., 1/1/2

उल्लिखितमस्ति।[47] बौधायनः सप्तानां धर्मशास्त्रकाराणामुल्लेख: करोति तेषां नामानि- औपजङ्घनिः[48], कात्यः, काश्यपः, गौतमः[49], प्रजापतिः, मौद्गल्यः[50], हारीतश्च। वसिष्ठ, आपस्तम्बश्चापि स्वस्मिन् स्वस्मिन् धर्मसूत्रे प्रसङ्गानुगतानां नामानि उल्लिखति। मनुस्मृतौ महर्षिमनुः षण्णां धर्मशास्त्रकाराणामुल्लेखं करोति तेषां नामानि इत्थं प्राप्यन्ते- अत्रिः, उतथ्यस्य पुत्रः, भृगुः, वसिष्ठः, वैखानसः, शौनकश्च।[51] याज्ञवल्क्यस्मृतौ महर्षियाज्ञवल्क्येन तत्कालीनधर्मशास्त्रकाराणां सङ्कलनं कृतं तेषां वर्णनम् इत्थं मिलति यथाहि- मनुः, अत्रिः, विष्णुः, हारीतः, याज्ञवल्क्यः, उशनः, अङ्गिरा, यमः, आपस्तम्बः, संवर्तः, कात्यायनः, बृहस्पतिः, पराशरः, व्यासः, शङ्खलिखितः, दक्षः, गौतमः, शातातपः, वसिष्ठशच।[52] शङ्खलिखितधर्मशास्त्रे, योगियाज्ञवल्क्यस्य ग्रन्थे, भविष्यपुराणे, प्रयोगपारिजाते, कुमालिभट्टकृते तन्त्रवार्तिके, चतुर्विंशतिनामके ग्रन्थे, अङ्गिरास्मृतौ षट्त्रिशन्मतनामके ग्रन्थे, धर्मशास्त्रकाराणां तथा स्मृतीनां नामानि प्राप्यन्ते। इत्थं प्रकारेण आचारस्य व्यवहारस्य एवं प्रायश्चित्तस्य प्रकाशनार्थं सामाजिकानां व्यवस्थानां कृते महर्षिभिः धर्मशास्त्रीयस्मृतिग्रन्था: रचिता: सन्ति।

स्मृतिशब्दस्यार्थः

अस्य शब्दस्य व्याकरणगतनिष्पत्तिः "**स्मृ चिन्तायां**" धातोः "**क्तिन्**" प्रत्ययस्य संयोगेन सह भवति। अयं नित्यस्त्रीलिङ्गीशब्दः अस्यार्थः अनुभूतिविषयकज्ञानं अनुभूतिजन्यविषयकज्ञानं वा स्वाम्याश्रितक्रियाजन्यसंस्कारजन्यज्ञानं वा अनुभवसंस्कारजन्य ज्ञानं क्रियते विद्वद्भिः।[53] धर्मशास्त्रदृष्ट्या मनु-याज्ञवल्क्यादिभि: रचित: शास्त्रविशेषोऽस्य

[47] तथैव
[48] बौ. धर्म., 2/2/3/33
[49] तथैव 1/1/2/7
[50] तथैव 2/2/4/8
[51] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 41
[52] या. स्मृ., 1/45
[53] श. द्रु., पञ्चमकाण्डम्, पृ. 463

शब्दस्यार्थः। धर्मशास्त्रमैव स्मृतिः महर्षिमनुना मनुस्मृतौ कथिता।[54] सा च सात्त्विकराजसतामसभेदेन त्रिविधः प्राप्यते यथाहि-

तथैव स्मृतयः प्रोक्ता ऋषिभिस्त्रिगुणान्विताः।

सात्त्विका राजसाश्चैव तामसाः शुभदर्शने।।

वासिष्ठं चैव हारीतं व्यासं पाराशरं तथा।

भारद्वाजं काश्यपञ्च सात्त्विका मुक्तिदाः शुभाः।।

च्यावनं याज्ञवल्क्यञ्च आत्रेयं दाक्षमेव च।

कात्यायनं वैष्णवञ्च राजमाः स्वर्गदा मताः।।

गौतमं बार्हस्पत्यञ्च संवर्तञ्च यमं स्मृतं।

साङ्ख्यं चौशनसं देवि तामसा निरयप्रदाः।।

इति पाद्ममोत्तरखण्डे 43 अध्यायः।।[55]

2.2.1 मनुस्मृतिः

महर्षिमनुना प्रणीता स्मृतिः मनुस्मृतिः अस्ति। इयं स्मृतिः पद्यबद्धस्मृतिषु प्राचीनतमा स्मृतिः विद्वद्भिः मन्यन्ते। धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु इयं स्मृतिः महत्त्वपूर्णा, प्रौढा चास्ति। महर्षिमनोः नामोल्लेखः विविधग्रन्थेषु प्राप्यते यथा- "आत्रेयकृष्णयजुर्वेदीयसंहितायां, ताण्डिकौथुमराणायनीयपंचविशब्राह्मणे, यास्कीयनिरूक्ते, वसिष्ठधर्मसूत्रे, बौधायनधर्मसूत्रे, आपस्तम्बधर्मसूत्रे, गौतमधर्मसूत्रे, कूर्मपुराणे, मत्स्यपुराणे, स्कन्दपुराणे, वाल्मीकिरामायणे, महाभारते, वात्स्यायनप्रणीतकामसूत्रे इत्येतेषु ग्रन्थेषु प्राप्यते"।[56] मनुस्मृत्यां प्राप्तश्लोकानां सदृशाः श्लोकाः अनेकेषु ग्रन्थेषु प्राप्यन्ते यथा- "पातञ्जलमहाभाष्ये महर्षिपतंजलिना, कुमारिलभट्टेन, भगवत्पादशङ्करेण उपनिषद्ग्रन्थानां भाष्ये, ब्रह्ममीमासांसूत्रस्य

---

[54] म. स्मृ., 2/10

[55] श. द्रु., पञ्चमकाण्डं, पृ. 464

[56] म. स्मृ. भूमिका पृ., 8,9

शारीरिकभाष्ये, श्रीमदगवद्गीतायाः व्याख्यायाम् मनुस्मृतेः श्लोकाः उद्धृताः सन्ति"।[57] महर्षिमनोः तथा मनुस्मृत्याः प्रसिद्धिः इत्थं प्रकारेण विविधग्रन्थेषु प्राप्यते। हेमाद्रिविरचितचतुर्वर्गचिन्तामणेः दानखण्डे मानवधर्मशास्त्रस्य चतुर्विधसंहितानां नामोल्लेखं प्राप्यते यथाहि – भार्गवीयमनुसंहिता, नारदीयमनुसंहिता, बार्हस्पत्यामनुसंहिता, च आङ्गिरसीमनुसंहिता।[58] अस्यां स्मृत्यां द्वादशाध्यायाः सन्ति प्रथमेऽध्याये सृष्टेरुत्पत्तिः, सकलजीवानामुत्पत्तिः, कालस्यवर्णनं, संक्षिप्तरूपेण वर्णानां कमर्णां वर्णनमस्ति। द्वितीयेऽध्याये धर्मः, संस्कारः, ब्रह्मचारीणां सकलधर्मान् कथ्यते। तृतीयेऽध्याये गृहस्थाश्रमस्य, अष्टधाविवाहस्य, पंचयज्ञानां, पितृकार्यस्य, श्राद्धकर्मणः वर्णनमस्ति। चतुर्थेऽध्याये गृहस्थसम्बन्धितधर्माः निरूपिताः यथा– व्रतं, शुचिता, आचारः, अनध्यायः, अनाचारस्य निन्दा, इत्यादयः। पंचमेऽध्याये मृत्युस्थितेः, भक्ष्याभक्ष्य, वेदविहितहिंसायाः निषेधस्य, सपिण्डतायाः, शौचाशौचप्रकरणस्य, आचमनस्य, शुचितायाः, स्त्रीधर्मस्य, गृहस्थस्य कालावधेः वर्णनमस्ति। षष्टेऽध्याये वानप्रस्थसंन्यासयोः सूक्ष्मरूपेण विवेचनम् प्राप्यते। सप्तमेऽध्याये राजधर्मस्य विस्तरेण वर्णनं प्राप्यते। अष्टमेऽध्याये व्यवहारस्य, विवादस्य, व्यापारस्य, कर्मकारकवेतनस्य, सीमाविवादस्य, साहसस्य, स्त्रीसङ्ग्रहणस्य, दायभागस्य वर्णनं कृतमस्ति। नवमेऽध्याये स्त्रीपुंसानां धर्मस्य, स्त्रीरक्षायाः, नियोगस्य, द्वितीयविवाहस्य, दण्डस्य, राजकर्त्तव्यानां, वैश्यसूद्रयोः धर्माणां वर्णनं कृतमस्ति। दशमेऽध्याये वर्णशङ्करत्वस्य, व्रात्यस्य, उपनयनयोग्यतायाः, साधारणधर्मस्य, षट्कर्मणः, वर्णानां कर्मणां, वृत्तिविषयकनियमानां, प्रतिग्रहन्दियाः प्रतिपादनं कृतमस्ति। एकादशतमेऽध्याये दानार्हब्राह्मणानां, याज्ञस्य, प्रायश्चित्तस्य विस्तरेण प्रतिपादनं कृतमस्ति। द्वादशतमेऽध्याये कर्मविपाकस्य, कर्मणा जीवस्य गत्याः, आत्मज्ञानस्य, मोक्षफलस्य वर्णनम् अस्मिन् अध्याये अस्ति। मनुस्मृतौ व्याख्याः कृताः सन्ति तासां नामानि यथा- भारूचिकृतं मनुशास्त्रविवरणं,

---

[57] तथैव. 10

[58] तथैव. 13

मेधातिथिकृतं मनुभाष्यं, गोविन्दराजकृता मन्वाशयानुसारिणी टीका, सर्वज्ञनारायणकृता मन्वर्थविवृतिः, कुल्लूकभट्टकृता मन्वर्थमुक्तावली, राघवानन्दसरस्वतीकृता मन्वर्थचन्द्रिका, नन्दनाचार्यकृता नन्दिनी, रामचन्द्रकृता व्याख्या, मणिरामदीक्षितकृता सुखबोधिनी, कृष्णनाथकृता व्याख्या, रूचिदत्तकृताव्याख्या, काश्मीरकव्याख्या। महर्षिमनोः समयः ईसापूर्वद्वितीयशताब्दी मन्यते।[59]

2.2.2 याज्ञवल्क्यस्मृतिः

महर्षियाज्ञवल्क्यः शुक्लयजुर्वेदस्य माध्यन्दिन संहिताया: कर्ता ऋषित्वेन श्रूयते। महाभारतस्य शान्तिपर्वणि याज्ञवक्येन सम्बद्धा कथा प्राप्यते।[60] बृहदारण्यकोपनिषदि प्राप्यते यत् राज्ञा जनकेन याज्ञवल्क्याय एकसहस्रं गवा: प्रदत्ता:।[61] अस्याः स्मृतेः प्रथमो व्याख्याकारो विश्वरूपोऽस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृतिः मनुस्मृतेः अत्यधिकसुसंगठिताऽस्ति। याज्ञवल्क्यः सम्पूर्णस्मृतिं त्रिषु विभागेषु विभाजनं कृत्वा विषयान् सुव्यवस्थया प्रतिपादयति। अस्यां स्मृतौ पुनरुक्तिदोषो न दृश्यते। इयं स्मृतिः अनुष्टुप्छन्दसि निबद्धाऽस्ति। स्मृतेः भाषाशैली सरला सहजा सुबोध्या च अस्ति। अस्यां स्मृतौ नवाधिकसहस्राणि श्लोकाः प्राप्यन्ते। स्मृतिः अध्यायेषु विभाजितास्ति। प्रथमस्य अध्यायस्य नाम आचाराध्यायो द्वितीयस्य नाम व्यवहारोऽध्यायः तृतीयस्य नाम प्रायश्चित्तमध्यायोऽस्ति।

याज्ञवल्क्यस्मृतौ षट्वेदाङ्गानां चतुर्दशविद्यानांञ्च वर्णनमुपलभ्यते। मनु-याज्ञवल्क्योः मिथ: वैमत्यमपि उपलक्ष्यते यथाहि– मनुस्मृतौ उद्धृतमस्ति यत् ब्राह्मणः शूद्रकन्यया सह विवाह कर्तुं प्रभवति[62] परन्तु याज्ञवल्क्यमतानुसारं ब्राह्मणस्य परिणय: कथिञ्चदपि शूद्रया सह

[59] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 47
[60] महाभारतम् 12/312
[61] बृ. उ., 3/1/1-2
[62] म. स्मृ., 3/13

न जायते।[63] इतोपि मनुस्मृतौ दैविकपूजनस्याभावः याज्ञवल्क्येन पूजनस्य मन्त्रा: तथा च नवग्रहपूजनं, गणपतिपूजनं विशेषतया विधत्तम्।[64] याज्ञवल्क्यस्मृतेः शुक्लयजुर्वेदेन सह विशेषः सम्बन्धोऽस्ति। अस्यां उद्धृतानां मन्त्राणां सम्बन्धः वाजसनेयिसंहितया सह अस्ति। नीलकण्ठः स्वस्मिन् प्रायश्चित्तमयूखे उक्तवान् यत् शङ्कराचार्यः ब्रह्मसूत्रभाष्ये याज्ञवल्क्येन उक्तविषयाणां उल्लेखं कृतवान्।[65] एतेन कारणेन ईसापूर्वप्रथमख्रीष्टाब्दे तथा ख्रीष्टाब्दात् तृतीय परं याज्ञवल्क्यस्मृते: कालो भवनीय:।[66] याज्ञवल्क्यस्मृतौ विश्वरूपेण, विज्ञानेश्वरेण, अपरार्केण, शूलपाणिना च टीका लिखिता:सन्ति।

2.2.3 नारदस्मृतिः

इयं स्मृतिः संस्करणद्वये प्राप्यते। 'डा. जॉली' महोदयेन अस्याः सम्पादनं कृतम्। अस्याः भाष्यकारो असहायो वर्तते। स्मृतिरियं अष्टादशप्रकारेण विभक्ता वर्तते। एतेषु अष्टादशप्रकारेषु प्रमुखरूपेण येषां विषयाणां वर्णनं प्राप्यते ते सन्ति च– ऋणादानम्, उपनिधिः, सम्भूयसमुत्थानं, क्रीतानुशयः, समस्या, नपाकर्म, सीमाबन्धः, स्त्रीपुंसंयोगः, दायभागः, साहसः, वाक्पारुष्यं, दण्डपारुष्यं, प्रकीर्णं चेति। धर्मशास्त्रकारेषु याज्ञवल्क्येन नारदस्य गणना न कृता। वर्तमाननारदस्मृत्याम् अष्टाविंशत्याधिकसहस्राणि पद्यानि सन्ति। विश्वरूपस्य कृतायां टीकायां, मेधातिथेः कृतायां टीकायां, मिताक्षराटीकायाम् अस्याः स्मृत्याः अनेकानि उद्धरणानि प्राप्यन्ते। स्मृतिरियं सम्पूर्णरूपेण अनुष्टुप्छन्दसि आबद्धा वर्तते। सम्भवतः नारदस्मृतिः याज्ञवल्क्यस्मृत्याः पश्चात् रचिता स्यात् यतोहि याज्ञवल्क्येन दिव्यस्य केवलं पञ्चप्रकाराः एवोक्ताः किन्तु नारदेन सप्तप्रकाराः उक्ताः। नारदस्मृत्यां विशेषतया व्यवहारपदानामेव वर्णनं विद्यते। अस्य समयः 100– 300 ख्री. मध्ये स्वीक्रियते।[67]

---

[63] या. स्मृ., 1/ 56

[64] तथैव 1/ 271 - 308

[65] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 53

[66] तथैव

[67] तथैव पृ. 56

2.2.4 बृहस्पतिस्मृतिः

याज्ञवल्क्येन बृहस्पतेः गणना धर्मशास्त्रकारेष्वेव कृता। अस्याः स्मृत्याः रचनाकारो बृहस्पतिः वर्तते। अस्यां स्मृत्यामेव बृहस्पतेः नामोल्लेखः प्राप्यते। इयं एकोनां शीत्यां पद्येषु निबद्धाऽस्ति। स्मृतिचन्द्रिकायां बृहस्पतेः श्राद्धसम्बन्धितानि उद्धरणानि आगतानि सन्ति। पाराशरमाधवीये, निर्णयसिन्धौ तथा संस्कारकौस्तुभे बृहस्पतेः उद्धरणानि प्राप्यन्ते। मिताक्षरायां टीकायां वृद्धबृहस्पतेः उद्धरणमस्ति। अपरार्केण वृद्धबृहस्पतेः कानिचन् उद्धरणानि स्वीकृतानि सन्ति। अस्यां मुख्यरूपेण दानवर्णनं कृतमस्ति। अस्यान्तर्गतं सुवर्णदानं, पृथ्वीदानं, गोचर्मलक्षणं, नीलवृषभलक्षणं, निन्दावर्णनं, भूमिहरफलं, सरोवरादीनां निर्माणकार्यस्य वर्णनं प्राप्यन्ते। 'डॉ. जॉली' महोदयानुसारेण बृहस्पतेः कालखण्डः षष्ठीशताब्देः अथवा सप्तमीशताब्देः मध्ये स्वीक्रियते।[68]

2.2.5 कात्यायनस्मृतिः

व्यवहारपदस्य क्षेत्रे मनुनारदबृहस्पतिकात्यायनानां विशेषस्थानमस्ति। एतेषां गणना याज्ञवल्क्येन धर्मशास्कारेषु कृता।[69] अस्याः स्मृत्याः रचना कात्यायनेन कृतास्ति। इयं स्मृतिः खण्डेषु विभक्ता अस्ति। एवं प्रकारेण अस्याम् एकोनविंशति खण्डानि सन्ति। प्रत्येकस्मिन् खण्डे विविधविषयाणां वर्णनमस्ति। अस्यां मुख्यरूपेण आचाराणामुल्लेखः, नित्यनैमित्तिककर्मान्तर्गतं श्राद्धः, त्रिविधक्रियाः, अग्न्याधानम्, शमीगर्भादिः अनेकानि प्रकरणानि प्रतिपादितानि सन्ति तथा इतोपि अग्निमन्थनम्, अग्न्याधानम्, स्रुवालक्षणं, समिधालक्षणं, हवनकर्म, सन्ध्योपासनविधेः वर्णनं, तर्पणविधिवर्णनं, मृतकदाहसंस्कारवर्णनं, मृतकनिमित्ततर्पणवर्णनम् इत्यादीनां विषयाणां निरूपणं कृतम्। व्यवहारमयूखे बृहत्कात्यायनस्य तथा दायभागे वृद्धकात्यानस्य उद्धरणं प्राप्यते। जीवानन्दस्य सङ्ग्रहे त्रिषु

---

[68] तथैव

[69] या. स्मृ., 1/1/4

प्रपाठकेषु, एकोनविंशति खण्डेषु कात्यायन इति नामधेयेन एको ग्रन्थो विद्यते।[70] अयं अनुष्टुपछन्दसि अस्ति परन्तु कृत्रचित् इन्द्रवज्राछन्दो अपि प्राप्यते। अस्य समयः एकादशशताब्दी ख्री. मन्यते।[71]

2.2.6 अत्रिसंहिता

अत्रिसंहिता महर्षिणा अत्रिणा प्रणीताऽस्ति। याज्ञवल्क्येन अपि धर्मशास्त्रकारेषु अस्य गणना कृता।[72] इयं स्मृतिः पद्यरूपेण दरीदृश्यते। अस्याम् अष्टानवत्युत्तरविंशति पद्यानि सन्ति। अत्रिसंहितायां प्रमुखरूपेण धर्मशास्त्रोपदेशः, शुद्धिप्रकरणम्, यम-नियमवर्णनम्, प्रायश्चित्तः, दानफलम्, श्राद्धफलम्, निबन्धो ब्राह्मणश्च वर्णितोऽस्ति।

2.2.7 विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रम्

विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रं भगवता विष्णुना प्रोक्तम् अस्ति इति मन्यते। इदं धर्मशास्त्रम् अध्यायेषु विभक्तमस्ति। धर्मशास्त्रमिदं पञ्चाध्यायेषु त्रयोदशोत्तरेकशते पद्येषु प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ अस्योल्लेखः प्राप्यते।[73] अस्यां मुख्यरूपेण चतुर्णां वर्णानां धर्मस्य, संस्काराणां, ब्रह्मचारिणां वस्त्राभूषणानि तथा च आचाराणां, चतुर्वर्णकर्तव्यकर्मणां, चतुर्णाम् आश्रमवासिनाञ्च आचारः वर्णितोऽस्ति।

2.2.8 हारीतस्मृतिः

अस्याः स्मृतेः रचयिता धर्मशास्त्रकारो हारीतो वर्तते। स्मृतिरियं सप्तकसु अध्यायेषु विभक्ता अस्ति। सम्पूर्णा स्मृतिः त्रयोनवत्युत्तरेकशतेषु श्लोकेषु विभक्ता वर्तते। प्रत्येकस्मिन् अध्याये विविधविषयाणां वर्णनं प्राप्यते। यथा- प्रथमेऽध्याये वर्णाश्रमधर्मस्य, द्वितीयेऽध्याये चतुर्णां वर्णानां धर्मस्य, तृतीयेऽध्याये ब्रह्मचर्याश्रमधर्मस्य, चतुर्थेऽध्याये गृहस्थाश्रमधर्मस्य,

---

[70] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 59

[71] तथैव

[72] या. स्मृ., 1/1/4

[73] तथैव

पञ्चमेऽध्याये वानप्रस्थधर्मस्य, षष्ठेऽध्याये सन्यासाश्रमधर्मस्य, सप्तमेऽध्याये योगस्य वर्णनं प्राप्यते। याज्ञवल्क्येनापि धर्मशास्त्रकारेषु अस्या गणना कृता अस्ति।[74]

2.2.9औशनस्मृतिः

अस्याः स्मृतेः रचनाकार उशना अस्ति। महर्षियाज्ञवल्क्येन अस्योल्लेखो धर्मशास्त्रकारेषु कृतः। इयं एकपञ्चाशतेषु पद्येषु निबद्धा वर्तते।[75] अस्यां ब्रह्मचारिणः धर्मस्य, श्राद्धाशौचस्य, प्रेतकर्मणः, प्रायश्चित्तस्य, अनुलोम्नः, प्रतिलोम्नो विवाहोत्पन्नापत्यानां नाम्नां तथा तेभ्यश्च योग्यायोग्यकर्माणां वर्णनं प्राप्यते।

2.2.10 अङ्गिरसस्मृतिः

जीवानन्दस्य धर्मशास्त्रसङ्ग्रहे द्वासप्ततिपद्येषु अङ्गिरसो धर्मशास्त्रमेव लघुरूपेण उपलब्धं उपलभ्यते। इदमेव अस्याः सङ्क्षिप्तरूपं विद्यते। एतेषु पद्येषु प्रायश: प्रायश्चित्ता: वर्णिता: सन्ति। अस्यान्ते उच्छिष्टभोजनस्य निषेधो विद्यते। अन्यषां विषयाणां वर्णनं एवम् अस्ति– वस्त्रधारणम्, भोजनसम्बन्धिनियमाः, दानादेः वर्णनम् अपि प्राप्यते। अष्टादशस्मृतेः अन्तर्गतमपि द्वासप्ततिपद्येषु इयं प्रकाशिता अस्ति। अङ्गिराऋषेः उल्लेखो याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते।[76] मिताक्षराटीकायां तथा च वेदाचार्यस्य स्मृतिरत्नावल्याम् बृहदङ्गिरायाः नाम अपि आगतम् वर्तते। मिताक्षराटीकायां मध्यम-अङ्गिराया: अपि उद्धरणं प्राप्यते।

2.2.11 संवर्तस्मृतिः

अस्याः स्मृतेः रचनाकार आत्मविद्यायां पारङ्गतः संवर्तर् ऋषिर् विद्यते।[77] स्मृतिरियं त्रयोविंशत्युत्तरशतद्वय पद्येषु निबद्धा वर्तते। याज्ञवल्क्येन स्मृतिकारत्वेनाऽस्योल्लेखोऽपि विधत्तोऽस्ति। अस्यां मुख्यरूपेण योगशास्त्रेण सम्बद्धा: प्राणायामादिविषयकविषया: प्राप्यन्ते।

---

[74] तथैव

[75] तथैव

[76] तथैव

[77] सं. स्मृ., श्लोक 1

जीवानन्दस्य तथा आत्मानन्दस्य सङ्ग्रहेषु संवर्तक्रमेण 227 तः 230 पद्यानि प्राप्यन्ते।[78] मिताक्षराटीकायां बृहत्संवर्तस्योल्लेखोऽपि दृश्यते।

2.2.12 लघुयमस्मृतिः

यथा स्मृतेरनाम्नि एव ज्ञायते स्मृतिरियं यमेन निर्मिता वर्तते। अयम् अपि धर्मशास्त्रकारेषु गण्यते। वसिष्ठधर्मसूत्रे यमस्योल्लेखो धर्मशास्त्रकारत्वेन कृत्वा तद्विरचित स्मृत्या: उद्धरणे विधत्तमस्ति। इयम् एकोनशतपद्येषु निबद्धाः। अस्यां मुख्यरूपेण प्रायश्चित्ता: वर्णिता: सन्ति। प्रायश्चित्तस्यान्तर्गतं विविधव्रतानां वर्णनम् उपलभ्यते। इष्टपूर्ताभ्याम् सह पिण्डदानस्यपि वर्णनं कृतम्। जीवनन्दसङ्ग्रहे एका 'यमस्मृतिः' नाम्ना या स्मृति: सङ्ग्रहीताऽस्ति तासां अष्टसप्ततिश्लोका: वर्तन्ते ।[79]

2.2.13 आपस्तम्बस्मृतिः

अङ्गिरास्मृत्याम् आपस्तम्बस्य उल्लेखः प्राप्तः।[80] ऋषिणा याज्ञवल्क्येनापि आपस्तम्बऋषेः वर्णनं कृतम्।[81] आपस्तम्बस्मृत्यामपि आपस्तम्बस्योल्लेखः कृतः।[82] इयं स्मृतिः दशेषु अध्यायेषु विभक्ता अस्ति। अस्यां स्मृत्याम् अष्टानवत्यधिकशतश्लोकाः प्राप्यन्ते। अस्यां गोरोधनादे:, गोहत्याया:, शुद्धे:, अशुद्धे:, वस्त्रधारणस्य, रजस्वलाया:, विवाहस्य, सुरादिसेवनस्य, दूषितान्नस्य च निषेधः समुपलभ्यते।

2.2.14 पराशरस्मृतिः

पराशरस्मृतिः प्राचीना स्मृतिरस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृत्यां पराशरो धर्मशास्त्ररूपेण निरूपितोऽस्ति।[83] पराशरस्मृतिः द्वादशाध्यायेषु निबद्धाऽस्ति। अस्यां स्मृत्यां प्रथमेऽध्याये

---

[78] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 65

[79] तथैव

[80] अं.स्मृ., श्लोक 54

[81] या. स्मृ., 1/1/4

[82] आ. स्मृ.,1/1

[83] या. स्मृ., 1/1/5

धर्मोपदेशलक्षणस्य, द्वितीयेऽध्याये गृहस्थाश्रमधर्मस्य, तृतीयेऽध्याये शौचाचारस्य, चतुर्थेऽध्याये नानाविधप्रायश्चित्तानां, पञ्चमेऽध्याये पुनः प्रायश्चित्तस्य, षष्ठेऽध्याये विविधप्राणिवधेन प्राप्तव्यदोषाणां निवारणार्थं प्रायश्चित्तस्य, सप्तमेऽध्याये द्रव्यशुद्धेः, अष्टमेऽध्याये धर्माचारणस्य, नवमेऽध्याये गोसेवायाः, दशमेऽध्याये अगम्यागमनकरणे प्रायश्चित्तस्य, एकादशेऽध्याये भक्ष्याभक्ष्यस्य करणे प्राप्तव्यदोषेभ्यो मुक्त्यर्थं प्रायश्चित्तस्य तथा द्वादशेऽध्याये पुनः भक्ष्याभक्ष्यसम्बन्धितप्रायश्चित्तानां वर्णनं प्राप्यते।

2.2.15 व्यासस्मृतिः

जीवानन्दसङ्ग्रहे आनन्दाश्रमद्वारा प्रकाशिते संग्रहे च 'व्यास' नाम्ना स्मृतिरेका प्राप्यते। व्यासस्मृतिः महर्षिव्यासेन विरचिता वर्तते। महर्षिव्यासस्याप्युल्लेखो याज्ञवल्क्यस्मृतौ दरीदृश्यते।[84] अस्याः स्मृतेर्विभाजनम् अध्यायेषु वर्तते तथा अस्यां स्मृतौ चत्वारो अध्यायाः पञ्चाशदुत्तरशतद्वय श्लोकाश्च सन्ति। प्रथमेऽध्याये धर्माचरणस्य, षोडशसंस्काराणामथ च ब्रह्मचारिण: आचाराणामपि वर्णनं प्राप्यते। द्वितीयेऽध्याये विवाहविधेः, स्त्रीधर्मस्य च वर्णनं प्राप्यते। तृतीयेऽध्याये स्नानादिनित्यनैमित्तिकश्राद्धादिकर्मणां वर्णनमस्ति। चतुर्थेऽध्याये गृहस्थाश्रमस्य प्रशंसा, तीर्थवर्णनम् अन्यविविधाचाराणां च वर्णनं प्राप्यते।

2.2.16 शङ्खस्मृतिः

इयं स्मृतिः शङ्खऋषिणा प्रणीता वर्तते। धर्मशास्त्रकारशङ्ख ऋषित्वेन परम्परायां स्तूयते– अस्य उल्लेख: स्मृतेः मङ्गलाचरणे प्राप्यते।[85] याज्ञवल्क्यस्मृतौ अपि धर्मशास्त्रकाररूपेण शङ्खऋषेः उल्लेखः वर्तते।[86] अस्याः विभाजनम् अध्यायेषु वर्तते। अस्यां स्मृतौ अष्टादशाध्यायाः सन्ति।

---

[84] तथैव

[85] शङ्. स्मृ., 1/1

[86] या. स्मृ., 1/1/5

2.2.17 लिखितस्मृतिः

अस्याः स्मृत्याः प्रणेता 'लिखित:' ऋषिरस्ति। महर्षिणा याज्ञवल्क्येन याज्ञवल्क्यस्मृत्यां लिखितस्योल्लेखो धर्मशास्त्रकृद्भिः सह कृतोऽस्ति।[87] अस्यां स्मृत्यां त्रयोनवतिश्लोकाः सन्ति। अस्यां प्रमुखरूपेण इष्टकर्मण:, पूर्तकर्मण:, बलिवैश्वदेवकर्मण:, अतिथिपूजनस्य, सांस्कृतिकजीवनस्य, अशौचादेश्च विहितमस्ति।

2.2.18 दक्षस्मृतिः

जीवानन्दसङ्ग्रहे दक्षस्मृत्याः सङ्कलनमस्ति। इयं प्राचीनतमा स्मृतिः अस्ति। विश्वरूपः स्वस्यां टीकायां, मिताक्षराटीकायाम्, अपरार्ककृतायां टीकायाम् अस्याः स्मृत्याः उद्धरणं स्वीकरोति। दक्षेन निर्मिता इयं स्मृतिरस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृत्यां दक्षस्योल्लेखः प्राप्यते।[88] इयं स्मृतिः सप्ताध्यायेषु विभक्तास्ति। अस्याः स्मृत्याः प्रथमाध्यायस्य तृतीये श्लोके प्राप्यते यत् ब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थसन्न्यासिनां हितप्रयोजनार्थं प्रजापतिना दक्षेण ग्रन्थोऽयं विरचित:।[89] अस्यां स्मृत्यां मुख्यरूपेण आश्रमधर्मः, दिनचर्या, वैदिककर्म, गृहस्थाश्रमस्याचारः, नवकर्म, स्त्रीधर्मः, शौचाचारः, अशौचः, समाधिः, योगः, इन्द्रियनिग्रहः, अध्यात्मयोगसाधनं, द्वैतानुभाद्योगसाधनं, शास्त्रस्याध्यायनफलादयश्च निरूपिता सन्ति।

2.2.19 गौतमस्मृतिः

महर्षिः गौतमो वैदिकऋषित्वेन जगति प्रसिद्धोऽस्ति। एतेन गौतमधर्मसूत्रस्य तथा च गौतमस्मृत्याः अपि प्रणयनं कृतम्। महर्षिः याज्ञवल्क्यो धर्मशास्त्रकारत्वेन अस्य परिगणनं करोति।[90] इयं स्मृतिः एकविंशत्यध्यायेषु विभक्ताः अस्ति। इयं गद्यपूर्णा स्मृति:। मुख्यतया वर्णधर्म:, विवाहः, आश्रमधर्मः, संस्काराः, कर्त्तव्याकर्त्तव्यकर्म, वर्णानां वृत्यः, राजधर्मः,

---

[87] तथैव

[88] तथैव

[89] द.स्मृ., 1/3

[90] या. स्मृ., 1/1/5

व्यवहार, शौचाचारः, श्राद्धः, कर्मविपाकः, प्रायश्चित्तानि, व्रतानि, दायभागः आदयश्च विषया: स्मृत्यामस्यां निरूप्यन्ते।

2.2.20 शातातपस्मृतिः

इयं स्मृतिः 'शातातप' द्वारा रचिता अस्ति अस्योल्लेखः याज्ञवल्क्यस्मृत्यां धर्मशास्त्रकाराणां मध्ये प्राप्यते।[91] इयं स्मृतिः षष्ठेषु अध्यायेषु निबद्धा। अस्यां स्मृत्यां प्रामुख्येन प्रायश्चित्तस्य वर्णनं प्राप्यते तदन्तर्गतम् अकृतप्रायप्रायश्चित्त:, पूर्वजन्मकृतप्रायश्चित्त:, ब्राह्मणमहत्त्वं, कुष्ठनिवारणार्थप्रायश्चित्त:, प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्त:, मधुतैलादीनां स्तेयकर्मणा प्राप्तदोषनिवारणार्थं प्रायश्चित्त:, अगम्यागमनप्रायश्चित्त:, अनुचितव्यवहारेण प्राप्तदोषाणां निवृत्त्यर्थं प्रायश्चित्त: एते विषया: निरूप्यन्ते।

2.2.21 बुधस्मृतिः

अष्टादशस्मृतिषु बुधस्मृतेः अपि सङ्कलनं कृतं वर्तते। स्मृतिरियं सूत्रेषु निबद्धा वर्तते एवं च अस्यां स्मृतौ पद्यान्यपि प्राप्यन्ते। इयं स्मृतिः अत्यन्तसङ्क्षिप्तरूपेण प्राप्यते। अस्यां पंचचत्वारिंशत् सूत्राण्येव श्लोकरूपेण उपलभ्यन्ते। अस्यां मुख्यरूपेण चातुर्वण्यधर्मस्य विषयो निरूपितोऽस्ति।

2.3 भाष्यं निबन्धश्च

भारतीयसंस्कृतसाहित्ये समुचितार्थस्य प्रकाशनाय भाष्यपरम्परायारुदयोऽभवत्। “भाष्यम्” अयं शब्दः नित्यं क्लीबे वर्तते। अस्य व्याकरणीया व्युत्पत्तिः “**भाष्**” धातोः “**ण्यत्**” प्रत्यये सति भवति। शब्दकल्पद्रुमकारेण एवं प्रकारेण परिभाषितमस्ति यत् “**भाष्यते विवृततया वर्ण्यते इति**”।[92] लिङ्गादिसङ्ग्रहटीकायां भरतेन भाष्यस्य परिभाषेयं एवं वर्णितास्ति तद्यथा–

---

[91] तथैव

[92] श. द्रु., ततीयकाण्डम्, पृ. 509

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः।

स्वपदानि च वर्ण्यते भाष्यं भाष्यविदो विदुः।।[93]

एवं प्रकारेण सूत्रार्थवर्णनं तस्य प्रत्येकमपि पदानुसारेणैव क्रियतेऽथवा यत्रैवंप्रकारेण वर्णनं क्रियते विद्वत्समुदायैः तस्य "भाष्यं" इति सञ्ज्ञा प्रदीयते। भाष्यमाध्यमेन सर्वेषां ग्रन्थानां प्रत्येकं पदस्य पूर्वापरभावेन युक्तशास्त्रोक्तरीत्या च मूलभावस्यार्थ चार्थस्य प्रकटीकरणं क्रियते। यस्मात् सामान्यः विद्वत्समुदायः तस्य व्याख्येयांशस्य सम्पूर्णतया समुचितेन च अर्थप्राप्तिं कर्तुं शक्नुयुः। अतः केवलं धर्मशास्त्रीयग्रन्थानामुपरि लिखितभाष्याणां भाष्यकाराणाञ्च सङ्क्षिप्तः परिचयः प्रदीयते। यस्यान्तर्गतं धर्मसूत्रेषु स्मृतिग्रन्थेषु च लिखितानां प्रमुखरूपेण प्राप्तभाष्यनां भाष्यकाराणाञ्च परिचयः निम्नोक्तरीत्या प्रस्तुतः वर्तते तद्यथा-

2.3.1 असहायः

डॉ. जौलीमहोदयेन सम्पादितायां नारदस्मृतौ कल्याणभट्टेन संशोधितः असहायकृतस्य भाष्यस्य अंशः उद्धृतः।[94] व्यवहारमयूखस्य प्रथमेऽध्याये प्राप्यते यत् केशवभट्टात् प्रेरणां प्राप्य कल्याणभट्टेन असहायस्य टीका संशोधिता। विश्वरूपेण याज्ञवल्क्यस्मृतौ असहायस्य नामोल्लेखः कृतः। अनिरुद्धः 'हारलता'नाम्नि ग्रन्थेऽस्य उल्लेखं कुर्वन् कथयति यत् असहायेन गौतमधर्मसूत्रेऽपि भाष्यं लिखितम्। सरस्वतीविलासस्य ज्ञायते यत् मनु-याज्ञवल्क्य-असहाय-मेधातिथि-विज्ञानेश्वर-अपरार्क-निबन्धकारैः कृतस्य धर्मस्य विभागः स्वीकृतः। विवादरत्नाकरग्रन्थे प्राप्यते यत् असहायः मनुस्मृतौ टीकां लिखितवान्। इत्थं प्रकारेण ज्ञायते यत् एतेन गौतमधर्मसूत्रमनुस्मृत्यादिग्रन्थेषु भाष्यं लिखितम्। पी.वी.काणेमहोदयः अस्य समयः 750 ख्रीष्टाब्दं स्वीकरोति।[95]

---

[93] तथैव

[94] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 66

[95] तथैव

2.3.2 भर्तृयज्ञः

विद्वद्वर्गमध्ये अयं प्रसिद्धः भाष्यकारोऽस्ति। मेधातिथिना मनुस्मृत्याः भाष्ये अस्योल्लेखः कृतः। आपस्तम्बसूत्रध्वनितार्थकारिकाकारेण त्रिकाण्डमण्डनेन स्वग्रन्थे अस्य मतं उद्धृतम्। ग्रन्थावलोकनेन ज्ञायते यत् कात्यायनश्रौतसूत्रस्याऽपि एकायाः टीकायाः निर्माणमनेन कृतमिति। नित्याचारप्रदीपनामकस्य ग्रन्थस्यावलोकनेन ज्ञानं भवति यत् अनेन गौतमधर्मसूत्रे टीकायाः रचना कृता। अस्य समयः 800 ख्रीष्टाब्दः मन्यते।[96]

2.3.3 विश्वरूपः

त्रिवेन्द्रमसंस्कृतमालायाः अन्तर्गतं श्रीगणपतिशास्त्रिणा याज्ञवल्क्यस्मृतौ अधिकारिकरूपेण लिखितायाः विश्वरूपस्य बालक्रीडाटीकायाः प्रकाशनं कृतम्।[97] याज्ञवल्क्यीयमिताक्षरायाः भूमिकायाम् उक्तं यत् विश्वरूपः महर्षियाज्ञवल्क्यस्य सिद्धान्तानां व्याख्यां विस्तरेण कृतवान्। विश्वरूपेण ऋग्वेदीयमन्त्राः ब्राह्मणोपनिषदादिग्रन्थाः यथास्थानं उद्धृताः। अनेन धर्मशास्त्रकाराणाम् उल्लेखः क्रियते यथा- उशना, अङ्गिरा, अत्रिः, आपस्तम्बः, कात्यायनः, काश्यपः, गार्ग्यः, वृद्धगार्ग्यः, गौतमः, जातुकर्णः, दक्षः, नारदः, पाराशरः, पितामहः, पुलस्त्यः, पैठानीसः, बृहस्पतिः, बौधायनः, भारद्वाजः, भगुः, मनुः, वृद्धमनुः, यमः, याज्ञवल्क्यः, वृद्धयाज्ञवल्क्यः, वसिष्ठः, विष्णुः, व्यासः, शङ्खः, शातातपः, शौनकः, संवर्तः, सुमन्तुः, स्वयम्भूः, हारीतः इत्यादयः। पी.वी.काणेमहोदयानुसारेण अस्य समयः 750 ख्रीष्टाब्दात् 1000 ख्रीष्टाब्दं पर्यन्तमिति।[98]

2.3.4 भारुचिः

भारुचिः भाष्यकारश्रृङ्खलायां सम्मिलितोऽस्ति। अस्योल्लेखः याज्ञवल्क्यमिताक्षराटीकायां, पाराशरमाधवीये, सरस्वतीविलासे च प्राप्यते। मिताक्षरायाः

---

[96] तथैव

[97] तथैव

[98] तथैव पृ. 67

समयः 1050 ख्रीष्टाब्दः मन्यते अतः भारुचेः समयः मिताक्षरायाः पूर्वं स्वीक्रियते। रामानुजाचार्यः स्ववेदार्थसङ्ग्रहे ग्रन्थे विशिष्टाद्वैतसम्प्रदायस्य भूतपूर्वाचार्याणाम् उल्लेखं कृतवान् यथा– बौधायनः, टङ्कः, द्रमिडः, गुहादेवः, कपर्दी, भारुचिः। आपस्तम्बगृह्यसूत्रस्य भाष्ये सुदर्शनाचार्यः भारुचेः मतानां चर्चां कृतवान् अस्ति। पी.वी.काणेमहोदयेन अस्य समयः नवमशताब्द्याः पूर्वार्द्धं मन्यते।

2.3.5 मेधातिथिः

मेधातिथिः एकः प्रसिद्धः भाष्यकारोऽस्ति। अनेन मनुस्मृत्याः विस्तृता विद्वत्तापूर्णा च व्याख्या कृता। एषः मनुस्मृतेः प्राचीनतमभाष्यकाररूपेण प्रसिद्धोऽस्ति। स्वस्य भाष्ये अनेन गौतम - आपस्तम्ब - वसिष्ठ - विष्णु - शङ्ख - मनु - याज्ञवल्क्य - नारद - पाराशर - बृहस्पति - कात्यायनादीनाम् उद्धरणं प्रस्तुतं कृतम् अस्ति। एतेन असहायस्य अन्यभाष्यकाराणामपि उल्लेखः कृतः। लोल्लटः स्वस्य श्राद्धप्रकरणे ग्रन्थे मेधातिथेः उल्लेखं कृतवान् अस्ति। विश्वेश्वरसरस्वत्याः यतिसङ्ग्रहे मेधातिथेः वर्णनं प्राप्यते। मनुस्मृतेः व्याख्याकारः कुल्लूकभट्टः मेधातिथिं गोविन्दराजस्य पूर्वं स्वीकरोति। अतः अस्य समयः 1057 ख्रीष्टाब्दात् 1100 ख्रीष्टाब्दं पर्यन्तं मन्यते।

2.3.6 विज्ञानेश्वरः

धर्मशास्त्रसाहित्ये विज्ञानेश्वरेण कृतायाः मिताक्षराटीकायाः स्थानं महत्त्वपूर्णमस्ति। अस्याः टीकायाः प्रभावः अत्यधिकोऽस्ति। यथाहि - व्याकरणशास्त्रे महर्षिपतञ्जलेः महाभाष्यस्य स्थानं तथा काव्यशास्त्रे मम्मटकृतकाव्यप्रकाशस्य स्थानं वर्तते तथैव धर्मशास्त्रे मिताक्षरायाः स्थानं वर्तते। आधुनिकव्यवहारपद्धत्यां मिताक्षरायाः महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति। मिताक्षरा याज्ञवल्क्यस्मृतौ लिखितं भाष्यम् अस्ति। अनेकेषु ग्रन्थेषु अस्याः ऋजुमिताक्षरा, प्रमिताक्षरा, मिताक्षरा आभिः नामभिः अभिधानमपि प्राप्यते। अस्मिन् भाष्ये निबन्धकाराणां

भाष्यकाराणां च नामानि तदीयग्रन्थोद्धरणान्यपि प्राप्यन्ते तानि च सन्ति– असहायः, विश्वरूपः, मेधातिथिः, श्रीकरः, भारुचिः, भोजदेवश्च। अनेकेषां स्मृतिकाराणां नामानि तत्प्रणीतग्रन्थोद्धरणानि अपि प्राप्यन्ते तानि च सन्ति– अङ्गिरा, बृहदङ्गिरा, मध्यमाङ्गिरा, अत्रिः, आपस्तम्बः, आश्वलायनः, उपमन्युः उशना, ऋष्यश्रृङ्गः, कश्यपः, काण्वः, कात्यायनः, कार्ष्णाजिनिः, कुमारः, कृष्णद्वैपायनः, क्रतुः, गार्ग्यः, गृह्यपरिशिष्टः, गोभिलः, गौतमः, चतुर्विंशतिमतः, च्यवनः, छागलः, जमदग्निः, जातुकर्ण्यः, जाबालः, जैमिनिः, दक्षः, दीर्धतमा, देवलः, धौम्यः, नारदः, पराशरः, पारस्करः, पितामहः, पुलस्त्यः, पैठानसिः, प्रचेताः, वृद्धहारीतश्च। अस्मिन् भाष्ये विविधग्रन्थानां नामान्यपि प्राप्यन्ते। विज्ञानेश्वरः स्वकीये भाष्ये आत्मानं विज्ञानयोगी' नाम्ना सम्बोधयति। अयम् भारद्वाजगोत्रीयपद्मनाभभट्टस्य पुत्रः आसीत् तथा पूर्वमीमांसायाः ज्ञाता आसीत्। लक्ष्मीधरस्य कल्पतरुग्रन्थेऽस्य नामोल्लेखोऽस्ति। लक्ष्मीधरस्य समयः द्वादशशताब्दी अस्ति एतेन कारणेन अस्य समयः 1050 ख्रीष्टाब्दः मन्यते।[99]

2.3.7 गोविन्दराजः

गोविन्दराजः मनुस्मृतेः टीकाकारोऽस्ति। एतेन मनुस्मृतौ मनुटीका नाम्नः भाष्यं लिखितम्। एतेन धर्मशास्त्रीयस्मृतिमञ्जरी ग्रन्थस्य निर्माणं कृतम्। गोविन्दराजः नारायणस्य पौत्रः तथा माध्वस्य पुत्र आसीत्। कुल्लूकभट्टेन गोविन्दराजकृतभाष्यस्य अनेकानि उद्धरणानि प्रस्तूयन्ते। कुल्लूकभट्टः मेधातिथिं गोविन्दराजस्य पूर्वं स्वीकृतवान्। याज्ञवल्क्यीयमिताक्षराटीकायां गोविन्दराजस्य उल्लेखः न कृतः। अस्य समयः 1050 ईश्वी मन्यते।[100] अनिरुद्धस्य हारलताग्रन्थे अस्य चर्चा अस्ति।

---

[99] तथैव 73

[100] तथैव 76

2.3.8 अपरार्कः

अपरादित्यः याज्ञवल्क्यस्मृतेः टीकाकारोऽस्ति। एतस्य याज्ञवल्क्यस्मृतिभाष्यं पुणे स्थितेनानन्दाश्रमेण प्रकाशितं कृतम्। भाष्यस्य अन्ते प्राप्यते यत् अयं विद्याधरस्य वंशजोऽस्ति। जीमूतवाहनस्य कुलोत्पन्नः शिलाहारः अपरादित्यः प्रसिद्धोऽस्ति। ग्रन्थोऽयं मिताक्षरावत्टीकारूपः अस्ति परन्तु निबन्धनाम्ना अस्य प्रसिद्धिरस्ति। अस्मिन् निबन्धात्मकभाष्ये दीर्घसूत्रीयोदाहरणं प्रस्तूयते। पुराणादिगन्थेभ्यः उदाहरणम् उद्धृतमस्ति तथा अस्मिन् भाष्ये पुराणानां नामानि प्राप्यन्ते तानि च सन्ति– आदित्यपुराणम्, कूर्मपुराणम्, कालिकापुराणम्, देवीपुराणम्, नन्दीपुराणम्, नृसिंहपुराणम्, पद्मपुराणम्, ब्रह्मपुराणम्, ब्रह्माण्डपुराणम्, भविष्योत्तरपुराणम्, मत्स्यपुराणम्, मार्कण्डेयपुराणम्, लिङ्गपुराणम्, वराहपुराणम्, वामनपुराणम्, वायुपुराणम्, विष्णुपुराणम्, विष्णुधर्मोत्तरपुराणम्, शिवधर्मोत्तरपुराणम्, स्कन्दपुराणम् इत्यादीनि। पी.वी.काणेमतानुसारं अस्य समयः 115 ख्रीष्टाब्दात् 1130 ख्रीष्टाब्दं पर्यन्तं मन्यते।[101]

2.3.9 हरदत्तः

हरदत्तः टीकाकाररूपेण प्रसिद्धोऽस्ति। एतेन वैदिकसूत्रीयग्रन्थेषु टीका कृता यथा- आपस्तम्बगृह्यसूत्रे अनाकुलाटीकायाः, आपस्तम्बमन्त्रपाठे भाष्यस्य, आश्वलायनगृह्यसूत्रे अनाविलाटीकायाः, गौतमधर्मसूत्रे मिताक्षराटीकायाः लेखनं कृतमस्ति। एतेन कृतं भाष्यं आदर्शभाष्यं मन्यते। अनेन धर्मसूत्राणां भाष्येषु स्मृतेः उद्धरणान्यपि प्रदत्तानि सन्ति। अनेन निबन्धकाराणां चर्चा स्वकीयभाष्येषु न क्रियते। भाष्यकारः हरदत्तः दक्षिणभारतस्य निवासी आसीत्। वीरमित्रोदयधर्मशास्त्रीयग्रन्थे हरदत्तः दाक्षिणात्यनिबन्धकाररूपेण वर्णितोऽस्ति। हरदत्तः शिवस्योपासकः आसीत्। नारायणभट्टः स्वग्रन्थे प्रयोगरत्नाकरे हरदत्तस्य मिताक्षरायाः

[101] तथैव पृ. 80

उज्ज्वलाटीकायाः नामोल्लेखनं कृतवान्। अस्य समयः 1100 ख्रीष्टाब्दात् 1130 ख्रीष्टाब्दं पर्यन्तं स्वीक्रियते।[102]

2.3.10 कुल्लूकभट्टः

कुल्लूकभट्टः मनुस्मृतेः टीकाकारोऽस्ति। एतेन मन्वर्थमुक्तावलीटीकायाः रचना कृता या मनुस्मृतेः अन्यभाष्यानां सर्वश्रेष्ठा टीकाऽस्ति। अस्य टीकायाः शैली सङ्क्षिप्ता स्पष्टा उद्देश्यपूर्णाऽस्ति। अस्याः अन्तर्गतं गोविन्दराजस्य धरणीधरस्य भास्करस्य भोजदेवस्य मेधातिथेः वामनस्य, भट्टवार्तिकस्य विश्वरूपस्य उल्लेखः विधत्तोऽस्ति। अयं बङ्गालप्रदेशस्य बारेन्द्रकुलस्य नन्दननिवासिभट्टदिवाकरस्य पुत्रः आसीत्। एतेन धर्मशास्त्रीयस्मृति-सागरनामकग्रन्थस्य प्रणयनं कृतम्। बुहलरमहोदयः अस्य समयं 1500 ख्री. स्वीकरोति।[103]

2.3.11 शूलपाणिः

बङ्गालप्रदेशस्य धर्मशास्त्रकारेषु प्रमुखरूपेण अस्य गणना क्रियते। अनेन याज्ञवल्क्यस्मृतेः टीकायाः रचना कृता यस्याः नाम ’दीपकलिका’ अस्ति। इयं व्याख्या सङ्क्षिप्ता अस्ति। व्याख्यायां प्रयुक्तम् उद्धरणं वीरमित्रोदये अष्टाविंशतितत्वादौ च प्राप्यते। रूद्रधरेण शूलपाणेः कृते 'गौडीयः' शब्दस्य प्रयोगः कृतः। एतेन कारणेन शूलपाणेः बङ्गीयत्वं मन्यते। अस्य समयः पी. वी. काणेमतानुसारेण 1500 ख्री.।[104]

2.3.12 निबन्धः

भारतीयस्मृतिषु पौराणिकग्रन्थेषु च मनुष्याणां कल्याणार्थं कर्त्तव्याकर्त्तव्यरूपेण विधिनिषेधात्मकं यत् वचनं प्राप्यते तदैव सर्वमान्यरूपेण शास्त्रम् इत्यभिधीयते। स्मृतिग्रन्थाः पौराणिकग्रन्थाश्च सङ्ख्यात्मकदृष्टया बहुतराः प्राप्यन्ते। उभयोः ग्रन्थयोः प्रतिपादित-

[102] तथैव 83
[103] तथैव 84
[104] तथैव 88

विषयसिद्धान्तयोः विरोधाभासः वैमत्यप्रदर्शनञ्च यत्किञ्चित् दृष्टिगोचरं भवति। अतः विरोधाभासवैमत्यनिवारणार्थं विविधग्रन्थेषु प्राप्यविषयाणां सङ्कलनोद्देश्येन निबन्धग्रन्थाणां परम्परायाः उद्भवः अभूत्। एते ग्रन्थाः भारतीयसनातनधर्मस्य विधिकृत्यादीनां निर्णायकग्रन्थरूपेण स्वीक्रियन्ते तथा एते 'विश्वकोषाः' इति नाम्नाऽपि अभिधीयन्ते। श्रुतिस्मृतिपुराणादिवाङ्मयेषु धर्मशास्त्रसम्बद्धदान–आचार–श्राद्ध-प्रायश्चित्तादिविषयाणां प्रतिपादनमस्ति। तैः विषयैः सह सम्बन्धितविषयवस्तूनां सङ्ग्रहणं निबन्धग्रन्थेषु प्राप्यते। निबन्धग्रन्थाणां मुख्यप्रयोजनं धर्मशास्त्रीयविविधविषयाणां सङ्कलनं तथा तेषां निर्णयस्य प्रस्तुतीकरणमिति। धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु निबन्धग्रन्थः स्वतन्त्रः ग्रन्थः नास्ति। एषु ग्रन्थेषु धर्मशास्त्रीयविषयाणां विस्तारपूर्वकं सङ्कलनं प्राप्यते। शब्दशास्त्रीयदृष्ट्या अयं शब्दः पुँल्लिङ्गोऽस्ति। निबन्धशब्दस्य निष्पत्तिः '**नि**' उपसर्गपूर्वकात् '**बन्ध्**' धातोः '**घञ्**' प्रत्ययस्य संयोगेन भवति। अस्यार्थः '**ग्रन्थस्य वृत्तिः**'।[105]

2.3.13 लक्ष्मीधरविरचितकृतकल्पतरुः

धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थानां परम्परायां पण्डितलक्ष्मीधरभट्टेन विरचितः कृत्यकल्पतरुः प्राचीनतमः निबन्धग्रन्थोऽस्ति अस्य अपरं नाम 'कल्पतरुः' अपि अस्ति। अयं कान्यकुब्जस्य राज्ञः गोविन्दचन्द्रस्य महामात्यः आसीत्। अस्य समयः द्वादशशताब्दी ई. मन्यते।[106] कृत्यकल्पतरुः धर्मशास्त्रीयविधिनियमानां एकः विशालकायग्रन्थोऽस्ति। अयं ग्रन्थः त्रयोदशभागेषु विभक्तोऽस्ति ते च विभागाः सन्ति– ब्रह्मचारिकाण्डः, गृहस्थकाण्डः, नियतकाण्डः, श्राद्धकाण्डः, दानकाण्डः, प्रतिष्ठाकाण्डः, तीर्थकाण्डः, शुद्धिकाण्डः, राजधर्मकाण्डः, व्यवहारकाण्डः, शान्तिकाण्डः, आचारकाण्डः मोक्षकाण्डश्च। विद्वद्भिः मन्यते अस्य ग्रन्थस्य एतेभ्यः अतिरिक्ताः अपि अनेके काण्डाः स्म।

---

[105] श. द्रु., द्वितीयकाण्डम्, पृ. 884

[106] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 77

2.3.14 देवण्णभट्टकृतस्मृतिचन्द्रिका

केशवादित्यस्य पुत्रः देवण्णभट्टः दाक्षिणात्यनिबन्धकारोऽस्ति तथा अयं सोमयाजी अपि अस्ति। अस्य समयः द्वादशशताब्दी ई. मन्यते।[107] दक्षिणभारते व्यवहारन्यायसम्बन्धिनिर्णयस्य कृते स्मृतिचन्द्रिका प्रामाणिकः ग्रन्थोऽस्ति। अयं ग्रन्थः बृहत्काण्डेषु विभक्तः। अस्मिन् ग्रन्थे संस्कारः आह्निककृत्यं व्यवहारः प्रायश्चित्तं श्राद्धम् इत्यादयः विषयाः सन्ति।

2.3.15 जीमूतवाहनकृतधर्मरत्नम्

बङ्गप्रदेशस्य पारिभद्रकुलोत्पन्नजीमूतवाहनस्य धर्मशास्त्रकारेषु विशेषस्थानं वर्तते। एतेन त्रयाणां ग्रन्थानां प्रणयनं कृतम् ते च ग्रन्थाः सन्ति– कालविवेकः, व्यवहारमातृका, दायभागश्च। इमे त्रयः ग्रन्थाः धर्मरत्ननाम्नः ग्रन्थस्य भागाः सन्ति। कालविवेकनाम्नि ग्रन्थे समयसम्बन्धिविषयानां वर्णनमस्ति। व्यवहारमातृकाग्रन्थे व्यवहारविधिनां वर्णनं प्राप्यते। दायभागग्रन्थे विधिसम्बन्धिविषयानां वर्णनं वर्तते। अयं भोजदेवगोविन्दराजयोश्च उल्लेखः कृतः अतः अस्य समयः द्वादशशताब्दी ई. मन्यते।[108]

2.3.16 अनिरुद्धप्रणीता हारलतापितृदयिता

अनिरुद्धः बङ्गप्रदेशस्य प्राचीनधर्मशास्त्रकाररूपेण प्रसिद्धोऽस्ति। एतेन हारलता पितृदयिता च द्वयोः ग्रन्थयोः रचना कृताऽस्ति। पितृदयितायाः एकं अपरं नाम कर्मोपदेशिनीपद्धतिः अपि अस्ति। इमौ ग्रन्थौ आचारसम्बन्धिविषयान् प्रकाशितं कुरुतः। अस्मिन् ग्रन्थे श्राद्धकर्मणः अपि वर्णनं प्राप्यते। अयं बङ्गालस्य चम्पाहट्टीयब्राह्मणः आसीत्। अस्य समयः द्वादशशताब्दी अस्ति।[109]

---

[107] तथैव 82

[108] तथैव 79

[109] तथैव 81

2.3.17 बल्लालसेनरचितः दानसागरः

दानसागरग्रन्थस्य रचयिता बङ्गालप्रदेशस्य बल्लालसेनास्ति। अयं विजयसेनस्य पुत्रः आसीत्। एभ्यः अतिरिक्ताः एतस्य त्रयः ग्रन्थाः अपि प्राप्यन्ते– आचारसागरः, प्रतिष्ठासागरः, अद्भुतसागरः। दानसागरे दानसम्बन्धिसकलसिद्धान्तानां सञ्चयनं कृतम्। बल्लालसेनः प्रसिद्धः धर्मशास्त्री अनिरुद्धस्य शिष्योऽस्ति। अस्य समयः द्वादशशताब्दी ई. स्वीक्रियते।[110]

2.3.18 श्रीधरकृतः स्मृत्यर्थसारः

स्मृत्यर्थसारः धर्मशास्त्रीयविषयाणां सङ्ग्राहकः महत्त्वपूर्णः ग्रन्थोऽस्ति अस्य निर्माता श्रीधराचार्योऽस्ति अयं विष्णुभट्टोपाध्यायस्य पुत्रोऽस्ति। अयं ग्रन्थः त्रिषु विभागेषु विभक्तोऽस्ति– आचारप्रकरणम्, आशौचप्रकरणं, प्रायश्चित्तप्रकरणम्। अस्मिन् ग्रन्थे मुख्यरूपेण कलिवर्ज्यप्रकरणं, संस्कारः, ब्रह्मचारीणां कर्त्तव्यानि, गोत्रं, प्रवरः, सपिण्डताविवेचनं, शौचः, आह्निककर्म, श्राद्धं, शुद्धाशुद्धिः, प्रायश्चित्तं च विषयाः सन्ति। अस्य समय: द्वादशशताब्दी ई. अस्ति।[111]

2.3.19 हेमाद्रिप्रणीतः चतुर्वर्गचिन्तामणिः

चतुर्वर्गचिन्तामणिधर्मशास्त्रीयनिबन्धस्य प्रणेता हेमाद्रिः अस्ति। अयं विशालकायनिबन्धोऽस्ति। विशेषरूपेण दक्षिणभारते प्रसिद्धोऽस्ति। हेमाद्रिः दक्षिणभारतीयोऽस्ति। अस्य समयः त्रयोदशशताब्दी मन्यते। अयं वत्सगोत्रीयकामदेवस्य पुत्रोऽस्ति। अयं देवगिरियादवराजमहादेवस्य अमात्यः आसीत्। चतुर्वर्गचिन्तामणिः धार्मिककृत्यानां धार्मिकनिर्णयानां च विश्वकोषात्मकग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे पञ्चखण्डाः सन्ति खण्डानां नामानि– व्रतखण्डः, दानखण्डः, तीर्थखण्डः, मोक्षखण्डः, परिशेषखण्डश्च। परिशेषखण्डः चतुर्षु भागेषु विभक्तः अस्ति– देवता, कालनिर्णयः, कर्मविपाकः, लक्षणसमुच्चयश्च।

---

[110] तथैव 81

[111] तथैव

2.3.20 सायणमाधवकृताः धर्मशास्त्रीयग्रन्थाः

आचार्यः सायणः वेदानां व्याख्याकारोऽस्ति एतेन कारणेन एकः प्रसिद्धः आचार्योऽस्ति। अस्य ज्येष्ठभ्राता माधवः आसीत् यः माधवाचार्यविद्यारण्यस्वामी'नाम्ना प्रसिद्धः स्म। आचार्यः सायणः विजयनगरस्य अधिपतिमहाराजबुक्कस्य महाराजहरिहरस्य च महामात्यः आसीत्। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी ख्री. मन्यते।[112] सायणस्य पितुः नाम मायणः तथा मातुः नाम श्रीमती स्म। अयं चतुर्वेदीब्राह्मणकुलोत्पन्नः अभवत्। अयं वेदानां भाष्येण सह धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां लेखनं कृतवान् तेषां नामानि– पुरुषार्थसुधानिधिः, दत्तकमीमांसा, स्मृतिसङ्ग्रहः, कुरुक्षेत्रमाहात्म्यः, पराशरस्मृतेः पाराशरमाधवीयभाष्यं, कालनिर्णयः कालमाधवीयः वा चास्ति। पाराशरमाधवीयः महत्त्वपूर्णः ग्रन्थोऽस्ति अस्य अन्यत् नाम आचारमाधवीयः पराशरमाधवीयश्च अस्ति। कालनिर्णये पञ्चप्रकरणानि सन्ति– उपोद्घातप्रकरणं, वत्सरप्रकरणं, प्रतिपत्प्रकरणं, द्वितीयादितिथिप्रकरणं, प्रकीर्णप्रकरणं च।

2.3.21 श्रीदत्तोपाध्यायः

मध्ययुगीनमैथिलधर्मशास्त्रीयनिबन्धकारेषु श्रीदत्तोपाध्यायः प्राचीनतमोऽस्ति। अयं धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचनां कृतवान्– आचारादर्शः, छन्दोगाह्निकः, समयप्रदीपः, पितृभक्तिः, श्राद्धकल्पश्च। आचारादर्शे दामादरमैथिलेन लिखिता आचारादर्शबोधिनी टीका प्राप्यते। सामवेदीयपाठकानां कृते छन्दोगाहनिकश्राद्धकल्पयोः ग्रन्थयोः रचना कृता। यजुर्वेदीयानुयायिनां कृते पितृभक्तिः नाम्नः ग्रन्थस्य निर्माणं कृतम्। समयप्रदीपनाम्नि ग्रन्थे सकलव्रतानां समयस्य विवेचनं कृतमस्ति। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी मन्यते।[113]

[112] तथैव 86

[113] तथैव 84

2.3.22 चण्डेश्वरः

चण्डेश्वरः मिथिलायाः धर्मशास्त्रीयनिबन्धकारेषु सर्वश्रेष्ठः मन्यते। अस्य धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थान्तर्गतं स्मृतिरत्नाकरः, विवादरत्नाकरः, कृत्यरत्नाकरः, गृहस्थरत्नाकरः, दानरत्नाकरः, शुद्धिरत्नाकरः, कृत्यचिन्तामणिः, राजनीतिरत्नाकरः, दानवाक्यावलिः, शिववाक्यावलिश्च आयान्ति। स्मृतिरत्नाकरे सप्ताध्यायाः सन्ति– कृत्यम्, दानम्, व्यवहारः, शुद्धिः, पूजा, विवादः, गृहस्थश्च। विवादरत्नाकरः शतेषु तरङ्गेषु विभक्तोऽस्ति। कृत्यरत्नाकरे द्वाविंशतिः तरङ्गाः सन्ति। गृहस्थरत्नाकरे अष्टषष्टिः तरङ्गाः सन्ति। दानरत्नाकरे एकोनत्रिंशत्तरङ्गाः प्राप्यन्ते। शुद्धिरत्नाकरे चतुःत्रिंशत् तरङ्गाः सन्ति। राजनीतिरत्नाकरे षोडश तरङ्गाः प्राप्यन्ते। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी मन्यते।[114]

2.3.23 शूलपाणिकृतः स्मृतिविवेकः

शूलपाणिः बङ्गालप्रदेशस्य धर्मशास्त्री आसीत्। अस्य धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां नामानि इत्थं प्रकारेण प्राप्यते यथा– एकादशीविवेकः, तिथिविवकेः, दत्तविवेकः, दुर्गोत्सवविवेकः, दोलायात्राविवेकः, प्रायश्चित्तविवेकः, कालविवेकः, शुद्धिविवकः, श्राद्धविवकः इत्यारदयः। सकलविवेकानां सम्मिलितनाम स्मृतिविवेकोऽस्ति। शूलपाणिः राढीयब्राह्मणोऽस्ति। अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते।

2.3.24 विश्वेश्वरभट्टप्रणीतः मदनपरिजातः

विश्वेश्वरभट्टस्याश्रयदाताराजा मदनपालः आसीत्। मदनपालस्य कालखण्डः चतुर्दशशताब्दी ईश्वी मन्यते। आश्रयदाताराजामदनपालस्य स्मृत्यां विश्वेश्वरभट्टः मदनपारिजातनामकग्रन्थस्य लेखनं कृतवान्। अस्य ग्रन्थस्य विभागः स्तबकेषु अस्ति एवं नवस्तबकाः सन्ति तेषां नामानि यथा– ब्रह्मचर्यस्तबकः, गृहस्थस्तबकः, आह्निकस्तबकः,

---

114 तथैव 85

गर्भाधानादिसंस्कारस्तबकः, अशौचस्तबकः, द्रव्यशुद्धिस्तबकः, श्राद्धस्तबकः, विभागस्तबकः, प्रायश्चित्तस्तबकश्च।

2.3.25 दलपतिराजनिर्मितः नृसिंहप्रसादः

नृसिंहप्रसादग्रन्थं धर्मशास्त्रीयविश्वकोशः मन्यते। अस्य ग्रन्थस्य द्वादशविभागाः सन्ति तेषां नामानि यथा:- संस्कारसारः, आह्निकसारः, श्राद्धसारः, कालसारः, व्यवहारसारः, प्रायश्चित्तसारः, कर्मविपाकसारः, व्रतसारः, दानसारः, शान्तिसारः, तीर्थसारः, प्रतिष्ठासारश्च। अस्य समयः पंचादशशताब्दी ईश्वी मन्यते।[115]

2.3.26 मदनरत्नः

अयं एकः विशालकायनिबन्धग्रन्थोऽस्ति। अस्य ग्रन्थस्य अपरनाम रत्नदीपः मदनप्रदीपश्च अस्ति। राजामदनसिंहस्य राज्याश्रये प्रणीतः एतेन कारणेन अस्य ग्रन्थस्य नाम मदनरत्नोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे सप्तोद्योगाः सन्ति यथा– समयोद्योतः, आचारोद्योतः, व्यवहारोद्योतः, प्रायश्चित्तोद्योतः, दानोद्योतः, शुद्ध्योद्योतः, शान्त्युद्योतश्च। अस्य ग्रन्थस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी स्वीकरोति।[116]

2.3.27 रघुनन्दनभट्टाचार्यकृतं स्मृतितत्त्वं

रघुनन्दनभट्टाचार्यः बङ्गप्रदेशस्य एकः प्रौढः धमशास्त्रकारोऽस्ति। अयं बन्धघटीयब्राह्मणहरिहरभट्टाचार्यस्य पुत्रः आसीत्। अस्य धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थ-स्मृतितत्त्वमस्ति। स्मृतितत्त्वे अष्टाविंशति प्रकरणानि सन्ति यथा– मलमासतत्त्वं, दायतत्त्वं, संस्कारतत्त्वं, शुद्धितत्त्वं, प्राश्चित्ततत्त्वं, विवाहतत्त्वं, विधितत्त्वं, जन्माष्टमीतत्त्वं, दुर्गोत्सवतत्त्वं, व्यवहारतत्त्वं, एकादशीतत्त्वं, जलाशयोत्सर्गतत्त्वं, ऋग्वेदीवृषोत्सर्गतत्त्वं, यजुर्वेदीवृषोत्सर्गतत्त्वं, सामवृषोत्सर्गतत्त्वं, व्रततत्त्वं, देवप्रतिष्ठातत्त्वं, दिव्यतत्त्वं, ज्योतिषतत्त्वं, वास्तुयागतत्त्वं,

[115] तथैव 90
[116] तथैव 87

दीक्षातत्त्वं, आह्निकतत्त्वं, क्रियातत्त्वं, मठप्रतिष्ठातत्त्वं, पुरुषोत्तमक्षेत्रतत्त्वं, छन्दोगयाश्राद्धतत्त्वं, यजुर्वेदीश्राद्धतत्त्वं, शूद्रकृत्यविचारतत्त्वं च। स्मृतितत्त्वस्यातिरिक्तः गयाश्राद्धपद्धतिः, रासयात्रापद्धतिश्च धर्मशास्त्रीयग्रन्थौस्तः। अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते।[117]

2.3.28 हरिनाथकृतः स्मृतिसारः

स्मृतिसारस्य रचनाकारः हरिहरनाथोऽस्ति। अयं ग्रन्थः अप्रकाशितोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे आचारः, संस्कारः, व्यवहारः इत्यादयः विषयाणां विवेचनं कृतमस्ति। शूलपाणिः दुर्गोत्सवविवेके तथा मिसरुमिश्रः विवादचन्द्रे ग्रन्थे हरिहरनाथकृतस्मृतिसारग्रन्थस्य उद्धरणम् उद्धृतम्। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी ईश्वी अस्ति।[118]

2.3.29 रुद्रधरः

रुद्रधरः मिथिलायाः धर्मशास्त्रकारोऽस्ति। एतेन धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थानां लेखनं कृतं तेषां नामानि यथा– शुद्धिविवेकः, श्राद्धविवेकः, वर्षकृत्यम् इत्यादयः। मिथिलायाः धार्मिककृत्यानां कृते अयं प्रामाणिकः ग्रन्थोऽस्ति। रुद्रधरः रत्नाकारस्य, स्मृतिसारस्य, शूलपाणेश्च उल्लेखनं कृतवान्। अतः अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते।[119]

2.3.30 मिसरुमिश्रः

मिसरुमिश्रः मिथिलायाः निवासी आसीत्। एतेन विवादचन्द्रनामकधर्मशास्त्रीयग्रन्थस्य लेखनं कृतम्। चन्द्रसिंहस्य समकालिकः मिसरुमिश्रस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते। अस्य ग्रन्थस्य मुख्यविषयः व्यवहारदायभागौस्तः।

---

[117] तथैव 91

[118] तथैव 85

[119] तथैव 88

2.3.31 वाचस्पतिमिश्रः

मिथिलायाः सर्वश्रेष्ठः निबन्धकारोऽस्ति। व्यवहारविधियोः निर्णयात्मकः ग्रन्थः व्यवहारचिन्तामणिः प्रसिद्धोऽस्ति। अस्यातिरिक्तः अन्यधर्मशास्त्रीयग्रन्थानामपि लेखनं कृतं यथा– आचारचिन्तामणिः, आह्निकचिन्तामणिः, शुद्धिचिन्तामणिः, कृत्यचिन्तामणिः, तीर्थचिन्तामणिः, तिथिनिर्णयः, द्वैतनिर्णयः, शुद्धिनिर्णयः, कृत्यमहार्णवः, आचारमहार्णवः, विवादमहार्णवः, व्यहारमहार्णवः, दानमहार्णवः, शुद्धिमहार्णवः, पितृयज्ञमहार्णवः। वाचस्पतिमिश्रः मिथिलायाः राजाहरिनारायणस्य परामर्शदाता आसीत्। अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी वर्तते।[120]

2.3.32 गोविन्दानन्दः

गोविन्दानन्दस्य बङ्गालप्रदेशस्य निबन्धकाराणां विशेषस्थानं वर्तते। अस्य अपरनाम कङ्कणाचार्योऽस्ति। अस्य पितुर्नाम गणपतिभट्टः आसीत्। अस्य समयः षोडशशताब्दी ईश्वी स्वीक्रियते।[121] अयं कौमुदी नाम्ना धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां लेखनं कृतवान् यथा– दानकौमुदी, क्रियाकौमुदी, श्राद्धकौमुदी, वर्षकृत्यकौमुदी, शुद्धिकौमुदी, गोविन्दकौमुदी च। अयं प्रसिद्धधर्मशास्त्रकारशूलपाणेः प्रायश्चित्तविवेके तत्त्वकौमुदीनामकवैदुष्यपूर्णाटीकाऽपि लिखितवान्।

2.3.33 टोडरानन्दः

मुगलराज्ञः अकबरस्य कोषामात्यटोडरमलेन टोडरानन्दनामकधर्मशास्त्रीय-निबन्धग्रन्थस्य निर्माणं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य विभागाः सन्ति तेषां नामानि यथा– आचारसौख्यं, व्यवहारसौख्यं, दानसौख्यं, श्राद्धसौख्यं, विवेकसौख्यं, विवाहसौख्यं, प्रायश्चित्तसौख्यं, वास्तुसौख्यं, समयसौख्यं च। अस्य निबन्धकारस्य समयः षोडशशताब्दी ई. मन्यते।

---

[120] तथैव 89

[121] तथैव 90

2.3.34 नन्दपण्डितः

काश्याः विद्वत्परम्परया सह नन्दपण्डितस्य सम्बन्धोऽस्ति। अस्य पितुर्नाम धर्माधिकारी आसीत्। अयं महाराजाकेशवनायकस्य आश्रितः पण्डितः स्म। अस्य समयः षोडशशताब्दी ई. मन्यते।[122] अस्य दत्तकमीमांसानामकग्रन्थः प्रसिद्धः ग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे दत्तकपुत्रस्य सम्बन्धे सकलविधिनियमानां सूक्ष्मविधिना प्रतिपादनं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य अपरनामपुत्री-करणमीमांसाऽस्ति। एतेन याज्ञवल्क्यीयमिताक्षराटीकायां प्रमिताक्षरा भाष्यं कृतमस्ति।

2.3.35 नीलकण्ठकृतः भगवन्तभास्करः

भगवन्तभास्करप्रसिद्धग्रन्थस्य रचना नीलकण्ठः कृतवान्। अस्य ग्रन्थस्य अपरनाम स्मृतभास्करोऽस्ति। अयं नारायणभट्टस्य पौत्रः तथा प्रसिद्धमीमांसाकशङ्करभट्टस्य पुत्रः आसीत्। नीलकण्ठस्य आश्रयदाताराजा सेङ्गरक्षत्रियावर्तसभगवन्तदेवः आसीत्। आश्रयदातामहाराज्ञः यशसे कृते धर्मशास्त्रीयग्रन्थस्य नाम भगवन्तभास्करः कृतः। अस्मिन् ग्रन्थे मीमांसारीत्याः प्रयोगः कृतः। अस्य निबन्धस्य विभागः द्वादशमयूखेषु कृतः यथा– संस्कारमयूखः, आचारमयूखः, समयमयूखः, श्राद्धमयूखः, नीतिमयूखः, व्यवहारमयूखः, दानमयूखः, उत्सर्गमयूखः, प्रतिष्ठामयूखः, प्रायश्चित्तमयूखः, शुद्धिमयूखः, शान्तिमयूखश्च। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. अस्ति।[123]

2.3.36 नारायणभट्टः

काश्यां समागतभट्टकुलस्य मूलप्रतिष्ठापकः नारायणभट्टः मन्यते। अस्य पितुर्नाम रामेश्वरभट्टः आसीत्। अस्य धर्मशास्त्रीयग्रन्थाः सन्ति यथा– त्रिस्थलीसेतुः, प्रयोगरत्नः, अन्त्येष्टिपद्धतिः, रुद्रपद्धतिश्च। अस्य समयः षोडशशताब्दी ई. अस्ति।[124]

---

[122] तथैव 92

[123] तथैव 94

[124] तथैव 91

2.3.37 मित्रमिश्रकृतः वीरमित्रोदयः

धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां वीरमित्रोदयस्य सर्वाधिकं महत्त्वपूर्णस्थानं वर्तते। श्रीहंसमिश्रस्य पौत्रः तथा परशुराममिश्रस्य पुत्रः वीरमित्रः अस्य ग्रन्थस्य रचनाकारोऽस्ति। अयं ओरछानरेशवीरसिंहदेवस्य राज्यसभायाः विशिष्टप्रतिभासम्पन्नविद्वान् आसीत्। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. मन्यते।[125] अस्मिन् ग्रन्थे द्वाविंशतिभागाः सन्ति तेषां नामानि इत्थं प्रकारेणास्ति यथा– परिभाषाप्रकाशः, संस्कारप्रकाशः, आह्निकप्रकाशः, पूजाप्रकाशः, प्रतिष्ठाप्रकाशः, राजनीतिप्रकाशः, व्यवहारप्रकाशः, शुद्धिप्रकाशः, श्राद्धप्रकाशः, तीर्थप्रकाशः, दानप्रकाशः, व्रतप्रकाशः, समयप्रकाशः, ज्योतिषप्रकाशः, शान्तिप्रकाशः, कर्मविपाकप्रकाशः, चिकित्साप्रकाशः, प्रायश्चित्तप्रकाशः, प्रकीर्णप्रकाशः, लक्षणप्रकाशः, भक्तिप्रकाशः, मोक्षप्रकाशश्च।

2.3.38 अनन्तदेवकृतः स्मृतिकौस्तुभः

अयं ग्रन्थः धर्मशास्त्रीयविषयाणां प्रौढग्रन्थोऽस्ति। महाराष्ट्रीयब्राह्मणः अनन्तदेवः अस्य ग्रन्थस्य प्रणेता अस्ति। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. मन्यते।[126] अस्य पितुर्नाम बोपदेवः आसीत्। एतेन पंचदशधर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना क्रियते यथा– स्मृतिकौस्तुभः, प्रायश्त्तिदीपिका, कालविन्दुनिर्णयश्च प्रमुखाः ग्रन्थाः सन्ति। स्मृतिकौस्तुभः एकः अत्यन्तविशालकायग्रन्थोऽस्ति यः सप्तखण्डेषु विभक्तः अस्ति तेषां नामानि यथा– संस्कारकौस्तुभः, आचारकौस्तुभः, राजधर्मकौस्तुभः, दानकौस्तुभः, उत्सर्गकौस्तुभः, प्रतिष्ठाकौस्तुभः, तिथिसंवत्सरकौस्तुभश्च। प्रत्येकः कौस्तुभः दीधितिषु प्रकरणेषु वा विभक्तोऽस्ति। सकलकौस्तुभानां सम्मिलितं नाम स्मृतिकौस्तुभः कथ्यते। इत्थं प्रकारेण अस्मिन् ग्रन्थे अष्टाशीत्याध्यायाः सन्ति। अनन्तदेवस्य अन्यधर्मशास्त्रीयग्रन्थाः सन्ति तेषां

---

[125] तथैव 94

[126] तथैव 95

नामानि यथा– अग्निहोत्रप्रयोगः, आग्रहायणप्रयोगः, चातुर्मास्य प्रयोगः, अन्त्येष्टिप्रयोगः, नक्षत्रसत्रप्रयोगः, भगवन्नामकौमुदीटीकाप्रकाशिका, भगवद्गिर्णयः, मथुरासेतुः, मीमांसान्यायप्रकाशिकाटीका, देवतातत्त्वविचारः, सिद्धान्ततत्त्वश्च।

2.3.39 दिवारकरभट्टकृतधर्मशास्त्रसुधानिधिः

दक्षिणात्यधर्मशास्त्रकाराणां पण्डितदिवाकरभट्टस्य नाम विशेषगौरवेण साकं शोभते। अस्य पितुर्नाम महादेवभट्टः तथा मातुर्नाम गङ्गा आसीत्। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. मन्यते। शास्त्रसुधानिधिग्रन्थस्य विभागः स्वतन्त्रोऽस्ति तस्य नाम यथा आचारार्कः, तिथ्यर्कः, दानहारावली, प्राश्चित्तमुक्तावली, आह्निकचन्द्रिका, श्राद्धचन्द्रिका च। अस्मिन् ग्रन्थे स्मृतिपुराणयोः विविधविषयाणां निर्णयात्मकसङ्कलनमस्ति।

2.3.40 काशीनाथोपाध्यायकृतधर्मसिन्धुः

काशीनाथोपाध्यायविरचितधर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य धर्मसिन्धोः अपरनाम धर्मसिन्धुसारोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे सकलधर्मशास्त्रीयविषयाणां सङ्कलनं सङकलितविषयाणां निर्णयोऽपि अस्ति एतेन कारणेन अयं ग्रन्थः विशेषलोकप्रियग्रन्थोऽस्ति। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. मन्यते।[127] मोरोपन्तकविना काशीनाथोपाध्यायस्य जीवनचरितं लिखितम्। अयं ग्रन्थः त्रिषु परिच्छेदेषु विभक्तोऽस्ति। प्रथमपरिच्छेदे सामान्यरीतिः, कालनिर्णयः, सङ्क्रान्तिनिर्णयः, सङ्क्रान्तिदाननिर्णयः, मलमासादिनिर्णयः, सिंहस्थगुरुमीमांसा, व्रतोपवासनिर्णयः, तिथिनां निर्णयः, स्थालीपाकविचारः, ग्रहणमीमांसा इत्यादयः। द्वितीयपरिच्छेदे व्रतोपवासादीनां समयस्य विस्तरेण वर्णितमस्ति। तृतीयपरिच्छेदे द्वौ भागौ स्तः पूवार्द्धः उत्तरार्द्धश्च। पूर्वार्द्धे संस्काराणां विधिः, अह्निककृत्यः, अग्न्याधानं, देवप्रतिष्ठा, शान्तिपौष्टिकर्म, नित्यनैमित्तिकर्म इत्यादयः। उत्तरार्द्धे विशेषरूपेण श्राद्धप्रकरणमस्ति।

---

[127] तथैव 96

2.3.41 नागेशभट्टः

नागेशभट्टः वैयाकरणः आसीत् एतेन धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना कृता। अस्य पितुर्नाम शिवभट्टः तथा गुरोर्नाम हरिदीक्षितः आसीत्। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. अस्ति।[128] अयं शेखरनाम्ना धर्मशास्त्रीय ग्रन्थान् लिखितवान् यथा– आचारेन्दुशेखरः, तिथीन्दुशेखरः, तीर्थेन्दुशेखरः, प्रायश्चित्तेन्दुशेखरः, श्राद्धेन्दुशेखरः, लक्षणरत्नमालिका, सापिण्डयदीपकः, सपिण्डीमंजरी च।

2.3.42 रत्नाकरभट्टकृतव्रतकल्पद्रुमः

देवभट्टस्य पुत्रः रत्नाकरभट्टः व्रतकल्पद्रुमस्य रचनाकारोऽस्ति। अस्य आश्रयदाताराजा महाराजजयसिंहः आसीत्। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. स्वीक्रियते।[129] महाराज्ञः प्रेरणया अस्य गन्थस्य लेखनं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य अपरनाम जयसिंहव्रतकल्पदुमोऽस्ति। अयं ग्रन्थः एकोनविंशतिस्तबकेषु विभक्तोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे सकलव्रतानां सङ्कलविधियोः वर्णनमस्ति।

43 पण्डितविश्वशर्माकृतव्रतराजः

पण्डितगोपालशर्मणः पुत्रः विश्वशर्मा व्रतराजधर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य प्रणेता अस्ति तथा काश्याः दैवज्ञः याज्ञिकः पुराणधर्मशास्त्राणां ज्ञाता आसीत्। अस्मिन् ग्रन्थे देवोपासना, पूजापद्धतिः, हवनकर्म, व्रतोद्यापनं, व्रतलक्षणं, देशः, अधिकारी, धर्मः, प्रायश्चित्तम्, उपवासधर्मः, हविष्यविधिः, अग्न्युत्तारणं, प्राणप्रतिष्ठा, व्रतकथा इत्यादयः व्रतसम्बन्धिसकलविषयाणां विवेचनमस्ति। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. स्वीक्रियते।[130]

---*---

[128] तथैव 95

[129] धर्मशास्त्रांक, पृ. 437

[130] तथैव

तृतीयोऽध्यायः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था

3.1 वर्णधर्माः

3.2 आश्रमधर्माः

भारतीया सामाजिकव्यवस्था सुगठिता सुव्यवस्था च दृश्यते। ऋषिभि: परस्परम् आचार विनिमयेन व्यवस्थेयं पुष्टाकृता। ऋषय: यासां व्यवस्थानां समाजस्य कृते निर्धारणं कृतवन्तः तासु व्यवस्थासु जीवनव्यवहारं कुर्वन् भारतीयसमाजे युगपर्यन्तकालः सुचारुरूपेण व्यतीतः। सामाजिकव्यवस्थायाः सम्यक् संचालनार्थं अनेकानेकव्यवस्थानां विधानं कृतं तासु वर्णव्यवस्थायाः स्थानं महत्त्वपूर्णमस्ति। अस्याः व्यवस्थायाः अन्तर्गतं वर्णानां चतुर्धाविभाजनं कृतं यथा- ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः। ऋषयः प्रत्येकवर्णस्य कृते आवश्यकं कर्त्तव्यानामाचाराणाञ्च निरूपणं कृतवन्तः, यस्मात् चतुर्षु वर्णेषु सामंजस्यं स्थापितं भवेत्। वर्णानां प्रथमोल्लेखः ऋग्वेदस्थपुरुषसूक्ते प्राप्यते। एतस्मिन् चतुर्णां वर्णानामुत्पत्तिः विराट्पुरुषस्य विभिन्नाङ्गेभ्यः निर्दिष्टा यथा-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत्।।[1]

वेदप्रमाण्यवादिभि: धर्मशास्त्रकारै: वेदे बीजरूपत्वेन प्रतिपदितेयं व्यवस्था पुष्पिता पल्लविता च कृता। चतुर्ष्वपि वर्णेषु अन्तर्विरोधो न दृश्यते अपितु परस्परं सामञ्जस्येव लक्ष्यते।

चत्वारो वर्णाः मिलित्वा समाजस्य पूर्णतां साधयन्ति यथा शरीरस्य पूर्णता सर्वेषाम् अङ्गानां स्वस्थे पूर्णे च सति भवति। तथैव समाजस्य पूर्णता चतुर्णां वर्णानाम् उन्नत्यां सत्यां भवितुमर्हति। एतेषु वर्णेषु कस्यचित् एकस्य वर्णस्य अभावे विकले वा सति समाजस्य संचालनं बाधितं भविष्यति। वर्णानाम् इदं विभाजनं तेषां दक्षतानां क्षमतानाञ्च आधारेण कृतमस्ति। प्रत्येकवर्णः स्वकीयया दक्षतया क्षमतया च समाजस्य उन्नत्यां योगदानं करोतिस्म। ब्राह्मणस्य कृते मुखं प्रतीकत्वेन निश्चीयते। एषः प्रतीकः ब्राह्मणस्य कार्यं प्रकटीकरोति अर्थात्

[1] ऋ., 10/90/12

ब्राह्मणस्य कार्याणि मुखेन वाचा वा सम्बन्धितानि भवन्ति। बाहुः शक्तेः रक्षणस्य च प्रतीकः। प्रायः सर्वाणि कार्याणि कराभ्यां सम्पादितानि भवन्ति। अतैव क्षत्रियाणां कृते बाहुप्रतीकः निर्धारितः। ऊरुः शरीरस्य आधारस्तम्भौ भवत:- समाजस्य आर्थिकस्थित्या: आधारः वैश्यः मन्यते। सः सर्वविधव्यापाराणां संचालनं करोति। अतैव तस्य कृते ऊरुप्रतीकः निर्धारितः। सम्पूर्णसमाजस्य गतिः शूद्रवर्णे समाश्रिता वर्तते। यथा शरीरस्य गतिः पादयोः आश्रिता वर्तते। अतैव शूद्रवर्णस्य कृते पादप्रतीको निर्धारितः।

यथा शरीरस्य प्रत्येकम् अङ्गम् आवश्यकं महत्त्वपूर्णञ्च भवति, कस्यापि अङ्गस्य न्यूनतायां सत्यां शरीर: स्वकीयं संचालनं सम्यग्रूपेण कर्तुं असमर्थः भवति तथैव प्रत्येकं वर्णः समाजस्य कृते आवश्यकः उपयोगी च भवति। एकस्यापि वर्णस्याभावे समाजः स्वकीयं संचालनं निर्बाधरूपेण कर्तुं असमर्थः भवति।

3.1 वर्णधर्मः

वर्णशब्दस्य निष्पत्तिः 'वृ वरणे' इति धातोः 'णित्'प्रत्ययस्य संयोगेन जायते। अस्य च अर्थः 'वृणोति' इति प्राप्यते। संस्कतवाङ्मये वर्णशब्दस्य प्रयोगः पुंल्लिङगे नपुंसकलिङ्गे च भवति। निरूक्तकारेण यास्केन अस्य व्यत्पत्तिः **'वर्णो वृणीते'** स्वीक्रियते।[2] शब्दकोशग्रन्थेषु वर्णशब्दस्य अनेके अर्थाः प्राप्यन्ते।

वर्णोत्पत्तिः

ऋग्वेदीये, शुक्लयजुर्वेदीये, अथर्ववेदीये च पूरुषसूक्तेषु वर्णानामुत्पत्तिः विराट्पुरूषस्याङ्गेभ्यः निरूप्यते।[3] यथा- मुखात् ब्राह्मणस्य, बाहुभ्याम् क्षत्रियस्य, ऊरोः वैश्यस्य, पादात् शूद्रस्योत्पत्तेः अनुसरणं मनुस्मृत्यामपि प्राप्यते।[4] श्रीमद्भगवद्गीतायां

[2] निरुक्त., 2/1

[3] ऋ.,10/90/12, शु.य.(मा.), 30/11, अ.(शौ.), 19/6/6

[4] म.स्मृ., 1/31

वर्णानामुत्पत्तिः श्रीकृष्णात् एव दृश्यते।[5] उत्पत्तेः अस्य क्रमस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतेऽपि प्राप्यते यथा-

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा मुखबाहूरुपादजाः।[6]

वर्णानां प्रकाराः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य एकादशे स्कन्धे सप्तदशेऽध्याये कृष्ण-उद्धवसंवादे श्रीकृष्णः उद्धवं प्रति सम्बोधनं कुर्वन् कथयति यत् सृष्टेः आरम्भे कृते युगे सकलमानवानां 'हंस' नाम्ना एकः वर्ण आसीत्। यथाहि –

आदौ कृतयुगे वर्णो नृणां हंस इति स्मृतः।[7]

अस्य संवादस्यानन्तरं प्राप्यते यत् त्रेतायुगे विराट्पुरुषात् ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राणामुत्पत्तिरभवत्। अस्य क्रमस्योल्लेखः पूर्वेषु ग्रन्थेषु प्राप्यते। ऋग्वेदीये पुरुषसूक्ते, यजुर्वेदीये पूरुषसूक्ते, अथर्ववेदीये पूरुषसूक्ते च वर्णनमिदं द्रष्टव्यम्। धर्मसूत्रेषु स्मृतिषु च अस्य क्रमस्य वर्णनं इत्थं प्राप्यते –

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णाः।[8]

'लोकानां तु वृद्ध्यर्थम्' वर्णनिरूपण प्रसङ्गे मनुस्मृतेः अनेन वाक्येन ज्ञायते यत् सकलमानवानां वृद्ध्ये व्यवस्थेयं परिकल्पिताऽस्ति मनुस्मृत्यां कथिता।[9] श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य तृतीयस्कन्धस्य तृतीयेऽध्याये विराट्पुरुषात् वर्णानामुत्पत्त्या साकं तेषां कर्त्तव्यकार्याणामपि सूत्रात्मकशैल्यां वर्णितम्। यथाहि –

---

[5] भ.गी., 3/13
[6] भा.महा., 11/17/13
[7] तथैव 11/17/10
[8] या.स्मृ., 1/1/10
[9] म.स्मृ., 1/31

यस्तून्मुखत्वाद्वर्णानां मुख्योऽभूद्ब्राह्मणो गुरूः।[10]

अर्थात् ब्राह्मणस्य मुखात् उत्पत्तिः भवति एतेन कारणेन ब्राह्मणः क्षत्रियवैश्यशूद्रवर्णानां गुरु: अस्ति। अत्र ब्राह्मणस्य विद्याभ्याससम्बन्धिकार्याणि प्रतिपाद्यन्ते। क्षत्रियस्य कृते –

यो जातस्त्रायते वर्णान् पौरूषः कण्टकक्षतात्।[11]

अर्थात् चौरादितत्त्वात् रक्षणं क्षत्रियस्य कर्त्तव्यमस्ति। इत्थं प्रकारेण व्यापारकर्मणि वैश्यस्य, सेवाकर्मणि शूद्रस्य च कर्त्तव्यानामपि उल्लेखः प्राप्यते। अनेन कारणेन स्पष्टं भवति यत् वर्णानामुत्पत्त्याः मुख्यं प्रयोजनं समाजे स्थितं सकलकार्याणां सम्पादनार्थं वर्णानामुत्पत्तिः निरुपिता।

3.1.1 ब्राह्मणधर्मः

वर्णव्यवस्थाप्रतिपादकप्रसङ्गेषु चतुर्षु वर्णेषु प्रथमं स्थानं ब्राह्मणस्य आयाति। अस्य वर्णस्योत्पत्तिः मुखाद्भवति शरीरस्य मुख्याङ्नात् निष्पत्तिकथनप्रसङ्गेनैव समाजे ब्राह्मणस्य श्रैष्ठ्यं ज्ञायते। वेदपुराणधर्मादिशास्त्राणां सकलशिक्षायाः ज्ञानं कारयितुं प्रथमोऽधिकारः अस्यैव वर्णस्य वर्णितोऽस्ति। अत्र ब्राह्मणेन कर्त्तव्यकर्मणां वृत्तयादीनां विवेचनं क्रियते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्तव्यसन्दर्भानां धर्मशास्त्रीयपरिप्रेक्ष्ये तुलनात्मकं विवेचनं प्रस्तूयते।

ब्राह्मणस्य श्रैष्ठ्यम्

श्रीमद्भागवते प्राप्यते यत् ब्राह्मणो जन्मना एव गुरु: भवति। एतस्य वर्णनं श्रीशुकदेवः श्रीबलरामकृष्णयोश्च नामकरणसंस्कारस्य समये पुरोहितगर्गमुनेः माहात्म्ये नन्देन उद्घाटयति- “भवान् ब्रह्मवादीनां श्रेष्ठः तथा च सर्वान् मनुष्यान् संस्कारेण पावनीकर्तुं समर्थोऽस्ति यतोहि ब्राह्मणः जन्मना एव श्रेष्ठः गुरूश्च भवति”। इत्यस्य तात्पर्यस्य प्रतिपादक: श्रीमद्भागवतमहापुराणीय: श्लोको निम्नाङ्क्तिः –

---

[10] भा.महा., 3/6/30

[11] तथैव 3/6/31

त्वं हि ब्रह्मविदां श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुमर्हसि।

बालयोरनयोर्नॄणां जन्मना ब्राह्मणो गुरुः।।[12]

आपस्तम्बधर्मसूत्रेऽपि कथितम् अयं वर्णः जन्मना गुरुः अस्ति।[13] महाभारतेऽपि एतस्य विषये उल्लेखो लभ्यते।[14] मनुस्मृत्यानुसारेण जात्या विशिष्टातया, उत्पत्तिस्थानस्य श्रैष्ठ्येन, श्रुतिस्मृतिविहिताचरणेन, यज्ञोपवीताद्युच्चसंस्कारैः, वेदशास्त्रादिज्ञेन च ब्राह्मणस्य सर्ववर्णानामीश्वरत्वेन निरूप्यते।[15] भारतीये समाजे ब्राह्मणानां गरीयसी मर्यादा अस्ति। धर्मशास्त्रादीनां समीक्षणेन ज्ञायते यत् इदं स्थानं तेषमेव ब्राह्मणानां विहितम् आसीत् येऽहर्निशं त्यागमय तपस्विजीवनवृत्त्या समाजस्य पुरस्तात् उच्चादर्शं प्रस्तावयन्ति। अथ च येषाम् उपरि देशस्य संस्कृतेः विकासस्य संरक्षणस्य च दायित्वम् वर्तते। क्षत्रियाद्यन्यवर्णाः आदित एव एतां महत्तां पालयितुं न शक्नुवन्ति। एतैः कारणैः महाभारते प्राप्यते यत् स एव 'ब्राह्मण'पदवाच्यो भवितुमर्हति यः जातकर्मादिविविधसंस्कारैः सुसंस्कृतः स्यात्, यः पवित्रः स्यात्, वेदाभ्यासयुक्तः षट्कर्मणाम् अनुष्ठानस्य कर्त्ता स्यात्, शौचेन सदाचारेण च युक्तो भवेत्, स्वकीयजीवनं पालयन् गुरुवाक्येषु श्रद्धावान् स्यात्, वृतार्थी सत्यवादी च स्यात्।[16] एतैः लक्षणैः समन्वितानां ब्राह्मणानां वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते। एषु वेदव्यासः, शुकदेवः, गर्गाचार्यः, सान्दीपनिः आदय आचार्याः अन्यतमाः वर्तते।

ब्राह्मणजीवनस्योद्देश्यम्

ब्राह्मणोऽत्यन्तसात्त्विकवृत्त्या एवं जीवनं व्यापयेत् इत्यत्र प्रमाणार्थेम् इदं लभ्यते यथाहि–

---

[12] भा.महा., 10/8/6

[13] आ.धर्म., 1/1/1/5

[14] महाभारतम्., 1/28/4

[15] म.स्मृ., 10/3

[16] महाभारतम्., 12/189/2,3

ब्राह्मणस्य हि देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते।

कृच्छ्राय तपसे चेह प्रेत्यानन्तसुखाय च।।[17]

"ब्राह्मणस्य शरीरम् अत्यन्तं दुर्लभम् अस्ति। अतः अनेन शरीरेण सांसारिकविविधभोगानां, विषयाणाञ्च आनन्दं प्राप्तुं न शक्यते तेन। इदं शरीरं कृच्छ्रादिव्रतानां करणार्थं एवं च आनन्दस्वरूपमोक्षप्राप्त्यर्थमस्ति"।

ब्राह्मणस्य लक्षणम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणे ब्राह्मणस्य इमानि लक्षणानि प्राप्यन्ते –

शमो दमस्तपः शौचं संतोषः क्षान्तिरार्जवम्।

ज्ञानं दयाच्युतात्मत्वं सत्यं च ब्रह्मलक्षणम्।।[18]

"शमः, दमः, तपः, शौचं, सन्तोषः, क्षमा, लोकव्यवहारे सरलता, ज्ञान, दया, भगवत्परायणता, सत्यकथनञ्च" इत्यादीनि लक्षणानि ब्राह्मणे भवेयुः।

पुनः एकादशस्कन्धे पुनः कृष्ण-उद्धवस्य संवादे ब्राह्मणस्य स्वभावविषये प्राप्यते यत् – शमः, दमः, तपः, सन्तोषः, क्षमा, लोकव्यवहारे सरलता, कृष्णभक्तिः, दया, सत्यकथनञ्च इत्यादयो गुणाः ब्राह्मणस्य स्वभावस्य परिचायकाः भवन्ति। यथा –

शमो दमस्तपः शौचं सन्तोषः क्षान्तिरार्जवम्।

मद्भक्तिश्च दया सत्यं ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमाः।।[19]

अत्रिऋषिणा अपि ब्राह्मणस्य उपर्युक्तानि लक्षणानि वर्णितानि सन्ति यथा- पवित्रता, मङ्गलाचरणं, परिश्रमी, अनसूया, स्पृहा, दमः, दया, दानम् एते गुणाः ब्राह्मणे समुपलभ्यन्ते।[20]

---

[17] भा.महा., 11/17/42

[18] तथैव 7/11/21

[19] तथैव 11/17/16

[20] अ.स्मृ., श्लोक 33

ब्राह्मणं सकलसाहित्येषु आदर्शरूपेत्व प्रस्तूयते। यस्मात् ब्राह्मणेतरवर्णाः ब्राह्मणस्य सात्त्विकपूर्णजीवनशैलीं पश्यन् प्रेरणां प्राप्य स्वस्य जीवनेऽपि एषां गुणानां विकासं कुर्युः एवं च यथार्थ मनुष्यत्त्वं प्राप्नुयुः।

ब्राह्मणस्य विहिताविहितानि कर्माणि

श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतं ब्राह्मणस्य विहितकर्मणां वर्णनं समुपलभ्यते एषु कर्मसु यज्ञस्य, अध्ययनस्य, दानस्य, ब्रह्मचर्यानुपालनस्य च प्राधान्येनोपदेशोऽस्ति। यथा –

इज्याध्ययनदानानि विहितानि द्विजन्मनाम्।।[21]

एभ्यो विशेषेण प्रतिपादितेभ्य: अध्यापनं, प्रतिग्रहं, याजनं एतान्यपि कर्माणि ब्राह्मणस्य कृते विहितकर्तव्यत्वेन उपदिष्टानि सन्ति । यथा –

विप्रस्याध्ययनादीनि षडन्यस्याप्रतिग्रहः।।[22]

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रथमस्कन्धस्य प्रथमेऽध्याये मुनीनां वर्णनं प्राप्यते। ते मुनय: ब्राह्मणस्य कर्तव्यकर्मणाम् अनुष्ठातृत्वेन निरूपिता: सन्ति यथा –

मुनयः प्रातर्हुतहुताग्न्यः।[23]

ब्राह्मणस्य वृत्तय:

जीवनं यापयितुं वृत्तिरेका आश्रयितव्या। ब्राह्मणस्य वृत्तिविषयेऽपि ये निर्देशा: प्राप्यन्ते ते सङ्गृह्याऽत्र आलोच्यन्ते। एषु निर्देशेषु अन्यतम एको निर्देशोऽस्ति यत् ब्राह्मण: वार्ताशालीनयायावरशिलोञ्छवृत्त्या स्वजीवनम् पालयेत्। यथा –

---

[21] भा.महा., 7/11/13

[22] तथैव 7/11/14

[23] तथैव 1/1/5

वार्ता विचित्रा शालीनयायावरशिलोंछनम्।

विप्रवृत्तिश्चतुर्धेयं श्रेयसी चोत्तरोत्तरा।।[24]

प्रतिग्रहणम् इत्यस्य पदस्य अर्थो अस्ति दत्तस्य दानस्य स्वीकरणम् प्रतिग्रह: अध्यापनं, याजनञ्च एतानि त्रीणि कर्माणि केवलं ब्राह्मणेभ्यरेव विहितानि सन्ति। एतैः कर्मैः ब्राह्मणः एव जीवनं यापयेत् इति निर्देश: सर्वत्र उपलभ्यते। अन्ये ये वर्णा: सन्ति ते एतानि कर्माणि आश्रयितुमक्षमा: सन्ति। यथा –

प्रतिग्रहोऽध्यापनं च ब्राह्मणस्यैव याजनम्।।[25]

एवं विधस्य आचरणस्य प्रोत्साहनाय श्रीमद्भागवते एतेषामाचाराणां पालनेन प्राप्तव्य फलानां वर्णनं प्राप्यते- "यः ब्राह्मणो गृहस्थधर्मस्य निष्कामभावेन निर्वहति, कृषिक्षेत्रादिहाटकेषु निपतितं बीजमन्नं च सङ्गृह्य सतोषपूर्वकं स्वं जीवनं यापयति, स्वस्य शरीर-प्राण-अन्तःकरण-आत्मादीनां परमात्मश्रीकृष्णं समर्पयति, बन्धुवान्धवसंसारिकबन्धनादिषु कदापि आसक्तिं न करोति सः सन्न्यासं विना एव परमशान्तिसुखस्वरूपं परमपदमवाप्नोति।" यथाहि –

शिलोञ्छवृत्त्या परितुष्टचित्तो धर्मं महान्तं विरजं जुषाणः।

मय्यर्पितात्मा गृह एव तिष्ठन्नातिप्रसक्तः समुपैति शान्तिम्।।[26]

ब्राह्मणस्यापद्धर्मः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य एकाशे स्कन्धे कृष्ण-उद्धवसंवादे कृष्णेन उद्धवं प्रति क्रियमाणे उपदेशे ब्राह्मणस्यापद्धर्मस्य सम्बन्धे प्राप्यते यत् यदि ब्राह्मणोऽध्ययन-अध्यापनयाजनादिभिः जीविकां निर्वोढुम् असमर्थे भवेत् तर्हि सो वैश्यवृत्तिम् अनुसरन् जीवनं

---

[24] तथैव 7/11/16

[25] तथैव 11/17/40

[26] तथैव 11/17/43

यापयेत्। सङ्कटापन्ने सति क्षत्रियवृत्त्याऽपि जीवनं जीवेत् परन्तु कदाऽपि श्वानवृत्ति न आचरेत्। यथाहि –

सीदन् विप्रो वणिग्वृत्त्या पण्यैरेवापदं तरेत्।

खड्गेन वाऽऽपदाक्रान्तो न श्ववृत्त्या कथंचन।।[27]

स्मृत्यावलोके विवेचनम्

मनुयाज्ञवल्क्यादिस्मृतिषु ब्राह्मणस्य पूर्वोक्तानि कर्तव्यानि षट्कर्माण्येव वर्णितानि सन्ति। तानि च सन्ति यस्यान्तर्गतं अध्ययन-अध्यापन-यजन-याजन-दान-प्रतिग्रहणकर्माणि।[28] एतेभ्यः कर्मेभ्यः त्रीणि कर्माणि अध्यापनं याजनं प्रतिग्रहश्च इमानि तस्य जीविकायाः साधनत्वेन प्राप्यन्ते।[29] तत्र वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य मुख्यं कर्म कथितम्।[30] अत्रिसंहितायां ब्राह्मणस्य कृते 'तपः' इत्यस्य आधिक्येनाऽपि उल्लेखः प्राप्यते।[31] ब्राह्मणस्य इष्टपूर्तश्च कर्मयोः वर्णनमपि अत्रिसंहितायां कृतम्।[32] लघुहारीताचार्ये अपि ब्राह्मणानां कर्मप्रकरणे एतानि एव कर्माणि प्रोवाच। अध्यापनस्य त्रीणि उद्देश्यानि विहितानि सन्ति तत्र स्पष्टतया उल्लेख: प्राप्यते यत्- यो ब्राह्मण एतानि त्रीणि उद्देश्यम् विहाय अन्यम् उद्देश्यम् स्वीकृत्य अध्यापयति तदा स: शूद्राचारे प्रवृत्तो मन्तव्यो भवेत्। तानि त्रीणि उद्देश्यानि इमानि भवन्ति – प्रथमं नाम धर्मज्ञानार्थम् अध्यापनं, द्वितीयं नाम अर्थलाभार्थम् अध्यापनं, तृतीयं नाम पूर्णतः परोपकारार्थम् अध्यापनम्।[33] उल्लिख्यमानामिदमस्ति यत् सर्वत्र वेदस्य अध्ययन-अध्यापनेन सह धर्मशास्त्रस्य अध्ययन-अध्यापनयोश्च अपि निर्देशः समुपलभ्यते।[34] ब्राह्मणस्य

---

[27] तथैव 11/17/47

[28] म.स्मृ., 1/88, या.स्मृ., 1/118

[29] तथैव 10/76

[30] तथैव 10/80

[31] अ.स्मृ., श्लोक 13

[32] तथैव, श्लोक 45

[33] ल.स्मृ., 1/18 – 20

[34] तथैव 1/24

अन्याचाराणामपि विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम्। पराशरस्मृत्यां ग्रन्थान्तरेषु विहितेभ्य: कर्मभ्य: अन्यान्यपि ब्राह्मणस्य षट्कर्माणि निरूपितानि सन्ति। अन्यस्मृतिषु पराशरोक्तानि कर्माणि नित्यकर्मरूपेण गण्यन् तानि कर्माणि सन्ति- सन्धा, स्नानं, जपः, होमः, देवपूजनं, वैश्यदेवकर्म च इति।[35] बुधस्मृत्यां सामान्यरूपेण अध्यापनं, याजनं, क्रयः, विक्रयः, शिलोञ्छः, भिक्षा, कृषिश्च इत्यादिना जीवनं यापनस्य निर्देशोऽस्ति।[36] आपत्कालीनधर्माणां विषयेऽपि सर्वेषु ग्रन्थेषु समानरूपेण एकस्यैव सिद्धान्तस्य प्राप्तिः भवति तदनुसारं यदि ब्राह्मणः स्मृतिवर्णितविहितकर्मणां सम्पादनेन जीविकां प्राप्तुमक्षमो भवेत् तर्हि क्षत्रियवैश्यवृत्तिभ्याम् धनं प्राप्येत्।[37] तत्रैव विशेषनिर्देशोऽपि समुपलभ्यते यत् सामान्या स्थितिम् अवाप्य आपद्धर्मं त्यजन् पूर्ववत् स्वस्य स्वभाविककर्मसु प्रतिष्ठितो भवनीय:।

निष्कर्ष:

एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृत्याञ्च वर्णितसिद्धान्तानामवलोकनेन ज्ञायते यत् धर्मशास्त्रीयसिद्धान्तानां सुनियोजनाय पौराणिकग्रन्थेषु कथात्मकशैल्या उपबृंहणं दृश्यते। धर्मशास्त्रेषु श्रीमद्भागवते च ब्राह्मणस्य विहितकर्तव्यकर्मनिरूपणाप्रसङ्गे आपद्धर्मकथने क्षत्रियवत्तय: आश्रयणमपि कथितम्। पौराणिकग्रन्थेषु वर्णितानां द्रोणाचार्य-अश्वत्थामा-कृपाचार्याणां वर्णनेन प्रतिपत्तिरियमेव भवति यत् तस्मिन् समये ब्राह्मणः स्वेन धर्मेण साकं क्षत्रियधर्ममपि परिवहति स्म। धर्मशास्त्रेषु वर्णितां 'समादृतपदवीं' ब्राह्मण: तदैव प्राप्नोति यदा सः स्वस्य जीवने श्रुतिस्मृतिषु विहितानां नियमाचाराणां विधिवत् पालनं करोति। गौतमधर्मसूत्रे अस्योल्लेखः प्राप्यते।[38] अनेन ज्ञायते यत् पूर्वस्मिन् समयेऽपि तादृशाः ब्राह्मणाः भवन्तिस्म ये स्वकीयानां कर्त्तव्यानां कर्मणां च सम्पादनं तथा च कुर्वन्तिस्म। समाजे तेषां सम्मानं नगण्यमेव

[35] प.स्मृ., 1/38
[36] बु.स्मृ., 24
[37] म.स्मृ., 10/81 – 82, प.स्मृ., 2/2 – 7, बु.स्मृ., 25 – 28
[38] गौ.धर्म., 1/8/5 – 11

भवतिस्म। तादृशा: ब्राह्मणाः पतिताः ब्राह्मणाः कथ्यन्तेस्म। स्मृतिग्रन्थेषु तादृशानां विधिवतवर्णनं प्राप्यते। इत्थं तत्कालीन समाजे द्विविधाः अपि ब्राह्मणाः विद्यमानाः आसन्। श्रीमद्भागवते तपस्विनां ब्रह्मविचारे अधिष्ठितानां वेदव्यासशुकदेवादीनां वर्णनं प्राप्यते येषां जीवनं वैराग्यपूर्णाः आसीत्।

3.1.2 क्षत्रियधर्मः

धर्मशास्त्रीयसाहित्ये वर्णपरिगणनाक्रमे ब्राह्मणात् परं क्षत्रियवर्णस्यैव परिगणनं प्राप्यते। येन क्षत्रियस्य महत्त्वाधायिस्थानं समाजे प्राप्यते। क्षत्रिया: समाजनियोजनाय व्यवस्थां स्थापयन्ति। इत्थं प्राशासनिकं कार्यं, युद्धकार्यं, दण्डव्यवस्था, सकलप्राणिनां रक्षणम् इत्यादयोऽस्यैव वर्णस्य प्रमुखानि कर्त्तव्यानि आसन्। एतस्य वर्णस्योत्पत्तिः विराट्पुरुषस्य बाहुभ्याम् अभवत् यथा –

बाहुभ्योऽवर्तत क्षत्रं क्षत्रियस्तदनुव्रतः।[39]

यथा मानवदेहे बाहू शरीरस्य रक्षाख्यं कार्यं कुरुतः तथैव विराट्पुरुषस्य बाहुभ्याम् उत्पन्नः क्षत्रियवर्णस्थो जनः समाजसंरक्षणं करोति तत्कालीनसमाजे समाजस्य सुरक्षायै कर्त्तव्यकर्माणि क्षत्रियेण सम्पाद्यन्ते यथा –

योजातस्त्रायते वर्णान् पौरुषः कण्टकक्षतात्।[40]

क्षत्रियः स्वकीययुद्धकौशलेन प्रशासनिकव्यवस्थया च समाजस्य परिपालनं पोषणञ्च करोतिस्म। श्रीमद्भागवतमहापुराणे क्षत्रियाणां इमान्येव कर्माणि विहितानि सन्ति। यत्र चोक्तं- "राजा पितृवत् सकलप्रजानां कष्टं दूरीकुर्यात् यथा गजराजोऽन्यानां गजानां रक्षणं करोति तथा च धैर्यं धारणं कुर्वन् स्वेन स्वात्मानः उद्धारं करोति"। यथाहि –

---

[39] भा.महा., 3/6/31

[40] तथैव 3/6/31

सर्वाः समुद्धरेद् राजा पितेव व्यसनात् प्रजाः।

आत्मानमात्मना धीरो यथा गजपतिर्गजान्।।[41]

क्षत्रियलक्षणम्

क्षत्रियाणाम् आत्मनि स्थितानां गुणानां वर्णनमपि श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते। अस्यान्तर्गतं- युद्धे उत्साहः, वीरता, धीरता, तेजस्विता, त्यागः, मनोजयः, क्षमा, ब्राह्मणान् प्रति भक्तिः, अनुग्रहः, प्रजायाः रक्षणं एतानि लक्षणानि प्राप्यन्ते। यथा-

शौर्यं वीर्यं धृतिस्तेजत्याग आत्मजयः क्षमा।

ब्रह्मण्यता प्रसादश्च रक्षा च क्षत्रलक्षणम्।।[42]

एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य एकादशे स्कन्धे कृष्ण-उद्धवसंवादे श्रीकृष्णः क्षत्रियस्य प्रकृत्यान्तर्गतं स्वरूपं वर्णयति। यथा –

तेजो बलं धृतिः शार्यं तितिक्षौदार्यमुद्यमः।

स्थैर्यं ब्रह्मण्यतैश्वर्यं क्षत्रप्रकृतयस्त्विमाः।।[43]

विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रे क्षत्रियस्य आत्मनि स्थितानां व्यवहारगतानां गुणानां वर्णनं समुपलभ्यते अस्यान्तर्गतं तेजः, धैर्यं, दक्षता, सङ्ग्रामं प्रति अविमुखता, दानम्, ईश्वरभावेन प्रजानां परिपालनम् इमे गुणाः वर्णिताः सन्ति।

क्षत्रियकर्म

श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितपृथुचरित्रावलोकनेन क्षत्रियस्य कर्मणः सम्बन्धे वर्णितं प्रजायाः सर्वविधसंवर्धनं, सुशासनं, रक्षणञ्च क्षत्रियस्य कर्माणि सन्ति।[44] मन्वादिस्मृतिग्रन्थेषु

---

[41] तथैव 11/17/45

[42] तथैव 7/11/22

[43] तथैव 11/17/17

[44] तथैव 4/17 - 19

सामान्यतया प्रजायाः रक्षणं, दानं, यजनम्, अध्ययनम् इमे एव क्षत्रियाणां धर्माः कथ्यन्ते।[45] एभ्य: परं शस्त्रस्य धारणं करणमपि तस्य धर्मः कथितः।[46] राजर्षिणा मनुना याज्ञवल्क्येन ऋषिणा च प्रजानां रक्षणं क्षत्रियस्य विशिष्टो धर्मो वर्णितः।[47] याज्ञवल्क्यस्मृत्याः मिताक्षराटीकायां प्राप्यते यत् प्रजापालनप्रधानरूपेण क्षत्रियस्य धर्मः।[48] तत्रैव विशिष्टनिर्देशोऽपि समुपलभ्यते सः ब्राह्मणं सेवेत।[49] पृथ्वीपालनस्य सम्बन्धे निर्देशो मिलति यत् सः शस्त्राणि धृत्वा, शत्रुसेनां विजित्य, प्रजायाः पालनं कुर्वन् धर्मपूर्वकं धरां शिष्यात्।[50] गौतमस्मृत्यां क्षत्रियस्य कर्त्तव्यानां विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते।[51]

क्षत्रियस्य चरित्रम्

चरित्रस्य सन्तुलनार्थं श्रूयते यत् क्षत्रिय: सर्वदा स्वभार्यया सहैव जीवनं जीवेत् एवं स्वभार्यायां रमेत। समाजे परदाराणां न ऐच्छेत्।[52] श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गतं मनुकृष्णबलरामपृथुऋषभादीनां जीवनावलोकनेन ज्ञायते यत् सर्वे स्वभार्यासु एव रमन्ते। एतेषां जीवने चरित्रात्मकदोषाः न प्राप्यन्ते। इत्थं नैतिकव्यवहाराणां शिक्षाप्रदानार्थं श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतानां सिद्धान्तानां कथात्मकशैल्यां वर्णनं प्राप्यते।

क्षत्रियस्य वृत्तिः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते यत् क्षत्रियोऽर्थपुरुषार्थस्य सिद्ध्यर्थं ब्राह्मणवर्णं परित्यज्य अन्येभ्यः सर्वेभ्यो वर्णेभ्यः तेषां योग्यतायाः क्षमतायाश्च अनुसारं धनानि कररूपेण ग्रहणं कुर्यात्। यथा –

---

[45] म.स्मृ., 1/89, या.स्मृ., 1/118, अ.स्मृ., 14, ल.स्मृ., 2/2, शंङ्.स्मृ., 1/3 - 4
[46] म.स्मृ., 10/79
[47] म.स्मृ., 10/80, या.स्मृ., 1/119
[48] मिताक्षरा. या.स्मृ., 1/119
[49] वि.धर्म., 112
[50] प.स्मृ., 1/58
[51] गौ.स्मृ.,10/2 – 3
[52] ल.स्मृ., 2/3

राज्ञो वृत्तिः प्रजागोप्तुरविप्राद् वा करादिभिः।[53]

स्मृतिग्रन्थेषु अस्यैव सिद्धान्तस्य सूक्ष्मचिन्तनेन स्पष्टीभवति यत् क्षत्रियः सामान्यावस्थायां प्रजायाः कररूपेण तासां धनानां षष्ठांशं स्वीकुर्यात्।[54] इत्थंप्रकारेण स्मृतिविहितसिद्धान्तानुसारं राज्ञः वृत्तिः वर्णिता अस्ति। एतेनैव माध्यमेन तस्य जीवनस्य यापनं भवतिस्म।

क्षत्रियस्यापद्धर्मः

आपद्धर्मस्य सम्बन्धे प्राप्यते यत् यदा क्षत्रियः प्रजापालनादीनां माध्यमैः स्वस्य जीवनं यापयितुं न शक्नोति तदा सः वैश्यवृत्त्याः आश्रयणं स्वीकुर्यात्। वने गत्वा विविधपशूनां वधं कृत्वा मृगयावृत्त्या जीवनं निर्वहेत्, ब्राह्मणवत् अध्यापनं कृत्वा जीवनं निर्वहेत्। परन्तु श्वानवृत्त्या तु कदापि जीवनं न जीवेत्। यथा –

वैश्यवृत्त्या तु राजन्यो जीवेन्मृगययाऽऽपदि।

चरेद् वा विप्ररूपेण न श्ववृत्त्या कथंचन।।[55]

सः आपत्कालेऽपि कृषिकर्म न स्वीकुर्यात्।[56] वैश्यधर्मान्तर्गतेन प्राप्तधर्मेण, शास्त्रविहितविक्रययोग्यवस्तूनां विक्रयं कृत्वा जीविकोपार्जनं कुर्यात्।[57] अस्मिन्नैव सन्दर्भे विक्रयार्थं विहिताविहितवस्तूनां सङ्कलनं प्राप्यते।[58] प्राणसङ्कटे सति सः ब्राह्मणवृत्तिं न अनुसरेत्।[59] अस्यां स्थित्यां प्रजायाः तेषां धनानां चतुर्थांशं कररूपेण गृह्णीयात्।[60] आपद्धर्मस्य

---

[53] भा.महा., 7/11/14
[54] ल.स्मृ., 2/3
[55] भा.महा., 11/17/48
[56] म.स्मृ., 10/83
[57] तथैव 10/85
[58] तथैव 10/86 – 89
[59] मन्वर्थमुक्तावली. तथैव, 10/85
[60] तथैव 10/118

स्थित्यामपि सः स्वकर्त्तव्यानि पालयेत्।[61] याज्ञवल्क्यस्मृत्याम् आपद्धर्मविषये प्राप्यते यत् क्षत्रियः तेषां वस्तूनां विक्रयः कुर्यात् येषां वस्तूनां विक्रयो न कर्तुं शक्यतेस्म।[62] गौतमस्मृत्यां क्षत्रियस्य कृते वैश्यकर्मणां वर्णनं मिलति।[63] श्रीमद्भागवतमहापुराणे क्षत्रियधर्मस्य प्रोत्साहनार्थं स्वधर्मपालनेन प्राप्तव्यफलस्य वर्णनं मिलति- "यदि राजा स्वस्य धर्मस्य पालनं निष्ठापूर्वकं करोति तदा सः सूर्यसमप्रभविमानम् आरुह्य स्वर्गलोकं गच्छति तत्र इन्द्रेण सह सुखपूर्वकं वसति"। यथाहि –

एवं विधो नरपतिर्विमानेनार्कवर्चसा।

विधूयेहाशुभं कृत्स्नमिद्रेण सह मोदते।।[64]

निष्कर्षः

असुरसमुदायात् सभ्यसमाजस्य संरक्षणार्थं क्षत्रिय: सन्नद्धो भवति। सुरक्षित: समाज एव स्व- स्वकर्मणि सन्नद्धो भवितुं शक्नोति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे सद्गुणैः युक्तस्य श्रेष्ठक्षत्रियस्य वर्णनं मिलति। यः स्वस्य प्रजायाः सुरक्षायै समृद्ध्यर्थं स्वस्य श्रेष्ठप्रदर्शनं करोति। श्रीमद्भागवते निष्ठुरक्रूरकुशासकत्वेन 'वेन'स्य वर्णनं प्राप्यते।

3.1.3 वैश्यधर्मः

वर्णपरिगणनाक्रमे क्षत्रियात् परं वैश्यवर्णस्य परिगणनं प्राप्यते। वैदिकग्रन्थानाम् अनुसरणं कुर्वन् श्रीमद्भागवतेऽपि अस्य वर्णस्य उद्भवो विराट्पुरुषस्य ऊरोः कथितः। यथाहि –

विशोऽवर्तन्त तस्योर्वोर्लोवृत्तिकरीर्विभो।[65]

---

[61] तथैव 10/119

[62] या.स्मृ 3/36 – 38

[63] गौ.स्मृ., 7/3

[64] भा.महा., 11/17/46

[65] भा.महा., 3/6/32

ऋग्वेदेऽयं शब्दः अनेकेषु मन्त्रेषु उद्धृतः।[66] प्राचीनकालादेव अयं वर्णः भारतीयसमाजस्य आधारस्तम्भत्वेन प्रतिष्ठितोऽस्ति। एतेनैव समाजस्य सकलानाम् आर्थिकगतिविधीनां व्यापाराणाञ्च सञ्चालनं क्रियते। तैत्तिरीयसंहितायां वैश्यवर्ण: समाजे अन्यवर्णानाम् अपेक्षया सङ्खात्मकदृष्ट्या बहुलसमुदायत्वेन निरूपितोऽस्ति।[67] पशुपालनं कृषिकर्म च अस्य वर्णस्य प्राचीनकार्यम् निर्दिष्टमस्ति।

वैश्यलक्षणम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणे वैश्यस्य स्वरूपो विस्तरेण निरूपितोऽस्ति तत्र वैश्यवर्णीयपरुषे अनेके गुणा: समवेता: भवेयुरिति निर्देश: प्राप्यते। स: देवतागुरुभगवन्तं प्रति भक्तिमान् भवेत्, धर्मार्थकामपुरुषाथाणां संरक्षणं कुर्यात्, आस्तिक्यो भवेत्, उद्योगशील:, लोकव्यवहारे निपुणश्च भूयात्। यथाहि –

देवगुर्वच्युते भक्तिस्त्रिवर्गपरिपोषणम्।

आस्तिक्यमुद्यमो नित्यं नैपुणं वैश्यलक्षणम्।।[68]

अस्यैव पुराणस्य एकादशस्कन्धस्य सप्तदशेऽध्याये वैश्यस्य स्वभावनिरूपणं प्राप्यते। तदनुसारं– आस्तिकता, दानकर्मणि निष्ठः, अदम्भः, ब्राह्मणानां सेवा, धनसञ्चये असंतुष्टिः इत्यादयः गुणाः वैश्यवर्णीये प्राप्यन्ते। यथाहि –

आस्तिक्यं दाननिष्ठा च अदम्भो ब्रह्मसेवनम्।

अतुष्टिरर्थोपचयैर्वैश्यप्रकृतयस्त्विमाः।।[69]

---

[66] ऋ., 3/34/2

[67] तै.सं., 7/1/1/5

[68] भा.महा., 7/11/23

[69] तथैव 11/17/18

वैश्यकर्मवृत्तिश्च

कर्मदृष्ट्या श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते यत् वैश्यो ब्राह्मणानां अनुयायी भूत्वा वार्त्तावृत्त्या स्वस्य आजीविकां प्राप्नुयात्। यथा –

वैश्यस्य वार्तावृत्तिश्च नित्यं ब्रह्मकुलानुगाः।[70]

विष्णुपुराणे वार्त्तावृत्त्याः अन्तर्गतं कृषिः, वाणिज्यं, पशुपालनम् इत्यादीनि कर्माणि निरूपितानि सन्ति।[71] पुराणसाहित्ये प्राप्यते एताः वृत्त्यः ब्रह्मणा वैश्यं जीविकायाः प्राप्त्यर्थम् प्रदत्ताः।[72] श्रीमद्भगवद्गीतायामपि वैश्यस्य स्वभाविककर्मणाम् अन्तर्गतं कृषिः, गौरक्षा, वाणिज्यम् इत्यादीनां गणना कृता। यथा –

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।[73]

पशूनां रक्षा, दानम्, अध्ययनं, कृषिकर्म, व्याजवृत्त्या जीवनस्य यापनञ्च वैश्यवर्णस्य एतानि कर्माणि निरूपितानि सन्ति।[74] गवां रक्षया, व्यापारकर्मणा जीवनं यापयेत्।[75] ब्राह्मणस्य क्षत्रियस्य च सेवा 'वैश्यकर्म' कथितमस्ति।[76] वैश्यो धनैः ब्राह्मणान् संतोषयेत्, यज्ञसमये ऋत्विजान् तृप्तिकारकं भोजनं कारयेत्, अमरणं यावत् यज्ञादिकर्माणां नियोजनं कारयेत्, दम्भपूर्णवाण्या न व्यवहरेत्।[77] लघुहारीतस्मृत्यामपि कृषिः, गौरक्षा, पशुपालनं, व्यापारकर्म, लौहकर्म एतेषां कर्मणां वर्णनं वैश्यस्य विशेषकर्मसु प्राप्यन्ते।[78] श्रीमद्भागवतस्य महापुराणस्य

---

[70] तथैव 7/11/15
[71] वि.पु., 5/10/28
[72] तथैव 3/8/30
[73] भ.गी., 18/44
[74] म.स्मृ., 1/90, या.स्मृ., 1/118 – 119
[75] अ.स्मृ., 15, वि.धर्म., 107, ल.स्मृ., 2/6
[76] वि.धर्म., 106
[77] ल.स्मृ., 2/8
[78] ल.स्मृ., 2/10, प.स्मृ., 1/161, शंङ्.स्मृ., 1/4, गौ.स्मृ., 10/6, बु.स्मृ., 29

दशमस्कन्धे गोपानां वर्णनं प्राप्यते ये गवां रक्षणेन, कृषिकर्मणा, व्यापारादीनां सम्पादनेन स्वस्य जीवनं यापयन्ति। राज्ञे वैश्यद्वारा करसम्प्रदानस्याऽपि वर्णनं समुपलभ्यन्ते । यथा –

नन्दः कंसस्य वार्षिक्यं करं दातुं कुरूद्वह।[79]

वैश्यस्यापद्धर्मः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे वैश्यस्यापद्धर्मस्य विषये प्राप्यते यत् आपत्काले वैश्यः शूद्रवृत्त्या, कारुकर्मणा, जीवनं यापयेत्। यथा –

शूद्रवृत्तिं भजेद् वैश्यः शूद्रः कारुकटक्रियाम्।

कृच्छ्रान्मुक्तो न गर्ह्येण वृत्तिं लिप्सेत कर्मणा।।[80]

मनुस्मृत्यां कथितं यत् यदा स्वस्य धर्मस्य पालनेन जीवनं न यापयितुं शक्नोति तदा सः निषिद्धकार्याणि त्यजन् शूद्रवृत्या जीवनं यापयेत्। तथा पुनः सामार्थ्यापन्ने सति स्वधर्मे प्रतिष्ठेत्।[81]

निष्कर्षः

इत्थं प्रकारेण पौराणिकग्रन्थेषु स्मृतिग्रन्थेषु च प्राप्यसन्दर्भानां विवेचनेन ज्ञायते यत् वैश्यवर्णः समाजे अर्थव्यवस्थाया आधारस्तम्भ आसीत्। अद्यपि अयं वर्णः भारतीयसमाजे आधारस्तम्भरूपेण स्थितोऽस्ति। श्रीमद्भागवते स्मृतिषु च प्राप्यसन्दर्भानाम् अध्ययनेन प्राप्यते यत् श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतविचारधारायाः एव समर्थनं कृतम्। श्रीमद्भागवते गोपानां वर्णनं मिलति एतेषां वैश्यकर्मणा सह सम्बन्धो ज्ञायते। एते वैश्यवर्णस्थकार्याणां सम्पादनं कुर्वन्ति।

---

[79] भा.महा., 10/5/19

[80] तथैव 11/17/49

[81] म.स्मृ.,10/98

3.1.4 शूद्रधर्मः

वर्णपरिगणनाक्रमे वैश्यात् परं शूद्रस्य परिगणनं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे वैदिकग्रन्थानान् अनुसरन् विराट्पुरुषस्य पादेभ्यः एतस्य वर्णस्य समुत्पत्ति अभूतदिति अवगम्यते। यथा –

पद्भ्यां भगवतो जज्ञे शुश्रूषा धर्मसिद्धये।

तस्यां जातः पुरा शूद्रो यद्वृत्त्या तुष्यते हरिः।।[82]

पी. वी. काणेमहोदयानुसारं वैदिकसाहित्ये दासदस्यु-आदिशब्दैः शूद्र एव अवबोध्यते तदनुसारं "ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर जिन, दास और दस्युओं का उल्लेख मिलता है"।[83] आर. एस. शर्मणः अनुसारेण "शूद्र वर्णान्तरर्गत दास और दस्यु थे उचित नहीं है। वास्तव में आर्थिक तथा सामाजिक विषमताओं के कारण आर्य और आर्येत्तर दोनों ही वर्गों के अन्दर श्रमिक समुदाय का उदय हुआ जो भविष्य में शूद्र शब्द से सम्बोधित किया गया"।[84] एतै वर्णीयैः समाजे श्रमिककार्याणाम् आपूर्तिः कृता। शूद्रवर्णस्य एतेषां कर्मणां वर्णनं तत्कालीनसाहित्ये अकरोत्। पुराणेषु शद्रस्य मुख्यकर्त्तव्यं द्विजातीनां निश्चलसेवा वर्णिताऽस्ति यथाहि –

शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा।[85]

शूद्रलक्षणम्

श्रीमद्भागवते शद्रस्य यानि लक्षणानि वर्णितानि सन्ति तानि शूद्रस्य आत्मगतस्वभावस्य परिचायकानि सन्ति। तदनुसारं- सज्जनानां सान्निध्ये विनम्रतापूर्वकम्

---

[82] भा.महा., 3/6/33
[83] धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग. पृ. सं. 30
[84] शूद्रों का प्राचीन इतिहास, पृ. सं. 30
[85] भा.महा., 7/11/15

आचरणं, शुचिता, सेवाकर्म, मन्त्रान् विना यज्ञकर्म, अस्तेयं, सत्यस्य गवां ब्राह्मणानाञ्च रक्षणं एतानि लक्षणानि अकथयन्। यथा –

शूद्रस्य संनतिः शौचं सेवा स्वामिन्यमायया।

अमन्त्रज्ञो ह्यस्तेयं सत्यं गोविप्ररक्षणम्।।[86]

श्रीमद्भागवतस्य एकादशे स्कन्धे श्रीकृष्ण-उद्धवसंवादे शूद्रस्य एतानि लक्षणानि तत्स्वभावस्य गुणत्वेन निरूपितानि सन्ति- विप्राणां गवां च सेवकर्म, देवानां यजनं, स्वपुरुषार्थेण प्राप्तसम्पायां संतुष्टिः शद्रस्य एते स्वभावाः प्राप्यन्ते। यथा –

शुश्रुषणं द्विजगवां देवानां चाप्यमायया।

तत्र लब्धेन सन्तोषः शूद्रप्रकृतयस्त्विमाः।।[87]

शूद्रकर्म

परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।[88]

श्रीमद्भगवद्गीतायां शूद्रवर्णस्य सेवाकर्म स्वभावरूपेण निरूपितम्। स्मृतिषु प्राप्यते यत् अयं वर्णः पञ्चमहायज्ञान् मन्त्ररहितेन सम्पादयेत्।[89] अयं नित्यधर्मस्य पूर्तधर्मस्य च अधिकारी उक्तः।[90] पुराणेषु निर्दिष्टोऽस्ति यत् शूद्रदम्पती सदा स्वस्य कर्मणि निष्ठावन्तौ भवेताम्, सः देशकालादीनां ज्ञाता भवेत्, रजोगुणात् तमोगुणात् विमुक्तो भवेत्, अहंकाररहितो भवेत्, शुद्धचित्तवान्, अतिथिसत्कारकर्त्ता, विनीतः, श्रद्धावान्, पवित्रतापूर्णः, लोभमोहाभ्याम् रहितः, अन्यं प्रति नमस्कारशीलः, चैर्यादिकुकृत्यादिगुणेभ्यो रहितः, गोब्राह्मणानां रक्षकः, स्वस्य

---

[86] भा.महा., 7/11/24

[87] तथैव 11/17/19

[88] भ.गी., 18/44

[89] म.स्मृ.,10/127, वि.धर्म., 108

[90] अ.स्मृ., 46

भार्यायां च रमेत्।[91] लघुहारीतेन लघुहारीतस्मृत्यां शूद्रस्य धर्माः इत्थं प्रतिपादिताः प्राप्यते – तत्र शूद्रस्य कृते पाकयज्ञस्य निर्देशः कृतोऽस्ति, याचकाय दानं दद्यात्, आलस्य परित्यज्य पाकयज्ञेन देवानां यजनं विधिपूर्वकेन कुर्यात्।[92] शूद्रवर्णः एकमात्रवर्णोऽस्ति यस्य कार्यं सर्वेषां वर्णानां सेवा अस्ति।[93] विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रे प्राप्यते यत् सः क्रमेण त्रयाणां वर्णा सेवाकर्मणि निमग्नो भवेत्।[94] वेदज्ञानां गृहस्थब्राह्मणानाञ्च सेवा एव तस्य परमो धर्मोऽस्ति।[95] गौतमस्मृत्यां शूद्रवर्णस्य कर्त्तव्यानां कर्मणां विस्तृतरूपेण वर्णनं प्राप्यते।[96]

शूद्रस्य वृत्तिः

शूद्रः यस्य सेवा करोतिस्म सः स्वामि सेवकस्य जीविकायाः निर्वहणं करोतिस्म। स्वामि येषां सम्पदायाः अर्जतिस्म तासु सम्पदासु सेवकस्यापि अधिकारः आसीत्। यथा –

शूद्रस्य द्विजशुश्रुषा वृत्तिश्च स्वामिनो भवेत्।[97]

शूद्रः स्वबन्धुबान्धवानां भरणपोषणार्थं सर्वेभ्यो वर्णेभ्यो धनसङ्ग्रहीतुं शक्नोति।[98] स्वामिद्वारा प्रदत्तधनसम्पदासु सन्तुष्टो भवेत् स इति निर्देशः प्राप्यते-

तत्र लब्धेन संतोषः[99]

यदा द्विजसेवामात्रेण तस्य जीवननिर्वहणं न भवति तदा सः कारुकर्मणा आजीविकायाः प्राप्तिः कुर्यादिति उपलभ्यते। यथा –

शूद्रः कारुकटक्रियाम्[100]

---

[91] व.पु., 115/35 - 40, भा.महा., 7/11/24, वि. पु., 3/8/35
[92] ल.स्मृ., 2/12
[93] म.स्मृ., 1/91, वि.धर्म., 108, या.स्मृ., 1/120
[94] वि.धर्म., 111
[95] म.स्मृ., 9/334
[96] गौ.स्मृ., 10/7
[97] भा.महा., 7/11/15
[98] वि. पु., 3/8/35
[99] भा.महा.,11/17/19

जीविकाया इच्छया सः धनाढ्यवैश्यक्षत्रियाणां सेवां कुर्यात्।[101] सर्वाणां वर्णानां सेवायाः अन्तर्गतं ब्रह्मणानां सेवा तस्य विशेषकर्मरूपेण निरूपिता।[102] श्रीमद्भागवते प्राप्यवर्णनानुसारेणैव मनुस्मृत्यां शूद्रस्य वृत्त्याः सम्बन्धे प्राप्यते यत् तस्य वृत्तिव्यवस्था स्वामिना कर्तव्याऽस्ति।[103] सः कषिकर्मणा, गवां रक्षणेन, वार्तया, वर्णानां सेवया, कारुकर्मणा च जीविकायाः प्राप्तिः कुर्यात्।

शूद्रस्यापद्धधर्मः

अस्मिन् सन्दर्भे प्राप्यते निम्नवर्णस्य पुरुषः आपत्कालं त्यक्त्वा उत्तमवर्णस्य वृत्तिनाम् अवलम्बनं न कुर्यात्। आपत्काले सर्वे वर्णाः सर्वजीविकां स्वीकुर्युः। आपत्कालेऽपि सर्वाभिः वृत्तिभिः जीवनं यापनं कुर्युः परन्तु श्वानवृत्त्याः आश्रयः न स्वीकुर्युः। यथा –

जघन्यो नोत्तमां वृत्तिमनापदि भजेन्नरः।

ऋते राजन्यमापत्सु सर्वेषामपि सर्वशः।।[104]

निष्कर्षः

एवं प्रकारेण ज्ञायते यत् शूद्रवर्णः तत्कालीनसमाजे अन्येषां त्रयाणां वर्णानां सेवाकर्मणि संलग्नो भवति स्म। तस्मात् अतिरिक्तं सः कृषिमाध्यमेन शिल्पकलामाध्यमेन जीविकां प्राप्तुं स्वतन्त्र आसीत्। श्रीमद्भागवतमहापुराणे शूद्रस्य कर्मणि सेवाकर्मणः वर्णनं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गतम् अनेकेषां ईदृशानां पात्राणाम् उल्लेखनं मिलति। ये सेवाकर्मणा जीविकां प्राप्नुवन्ति। तदन्तर्गतं त्रिवक्रा नाम्नः सेविकायाः वर्णनं मिलति या राज्ञः कंसस्य कृते

[100] तथैव 11/17/49
[101] म.स्मृ., 10/121
[102] म.स्मृ., 10/123, प.स्मृ., 1/62
[103] म.स्मृ., 10/115
[104] भा.महा., 7/11/17

मलयाचलचन्दनस्य लेपनिर्माणं करोतिस्म।[105] एकस्य रजकस्यापि वर्णनं प्राप्यते येन वस्त्रप्रक्षालनस्य कार्यं क्रियते स्म।[106] सौचिकस्य वर्णनमपि प्राप्यते यः सीव्यतिस्म।[107] सुदामा नाम्ना एकस्य मालाकारस्याऽपि निर्देशो मिलति यः पुष्पाणां मालानिर्माणेन राज्ञः कंसस्य सेवां करोतिस्म।[108] एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे शूद्रवर्णस्थपात्राणां वर्णनं प्राप्यते येषां जीवनं ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानां सेवाकर्मणि एव संलग्नो आसीत्।

आश्रमधर्माः

भारतीयसनातनपरम्परायां जीवनस्य लक्ष्यं वर्तते पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्तिः। पुरुषार्थचतुष्टयान्तर्गते धर्मार्थकाममोक्षाणां समावेशो वर्तते। एतेषां प्राप्तये जनाः सर्वदा प्रयत्नशीलाः भवन्ति। धर्मशास्त्रकारैः पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्तेः सुगमतायै चतुर्णामाश्रमाणां व्यवस्था कृता वर्तते, एते चत्वारः आश्रमाः वर्तन्ते- ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमश्च, धर्मशास्त्रेषु एतेषामाश्रमाणां कर्तव्यस्य आचारस्य च विधानं कृतं वर्तते। आश्रमनियमान् पालयन् जनः निजकर्तव्यं परिसमाप्य पुरूषार्थचतुष्टयं प्राप्तुं शक्नोति, इत्थं प्रकारेण आश्रमाणां विधानं मानवजीवनस्य सफलतायै एव कृतं वर्तते।

भौतिकोन्नतिप्राप्तिः नापितु जन्मकर्मबंधनैर्मुक्तिप्राप्तिरेव मनुष्यस्य मुख्यं लक्ष्यं वर्तते[109]। महाभारते चतुर्णामाश्रमाणां महत्त्वसंबन्धे प्राप्यते यत् सविधिपूर्वकं चतुरः आश्रमानङ्गीकृत्याचारस्य पालनं कृत्वा सः ब्रह्मलोके महीयते इति।[110] इत्थं प्रकारेणाश्रमाणां व्यवस्था आनन्दपूर्वकजीवनशैल्या सह मोक्षप्राप्तेः साधनरूपापि वर्तते इति स्पष्टतया ज्ञातुं शक्यते।

---

[105] तथैव 10/42/3

[106] तथैव 10/41/32

[107] तथैव 10/41/40

[108] तथैव 10/41/43 – 51

109 बृ.उ., 6/2/1

110 महाभारतम्,12/242/15

त्रिऋणात्मकतत्त्वमपि आश्रमव्यवस्थायाः मूले महत्त्वपूर्णतत्त्वरूपेणविद्यते। ऋषीणाम्, मुनीनाम्, पुराणानां धर्मशास्त्राणाञ्चानुसारेण मनुष्यो जन्मप्रभृतित्रिभिः ऋणैर्युक्तो भवति – **जायमानो ब्राह्मणस् त्रिभिर् ऋणैर् ऋणवान् जायते,**[111] एतानि त्रीणि ऋणानीत्थं वर्ततन्ते- देवऋणम्, ऋषिऋणम्, पितृऋणम्। दैवीयकर्मकाण्डीय – पद्धतीनामवलम्बनेन सह नैरन्तर्येण यज्ञाद्यनुष्ठानविधानेन देवऋणान्मुक्तिर्जायते– **यज्ञेन देवेभ्यः।**[112] वेदाध्ययनेन, निरन्तरवेदाभ्यासेन, अन्यशास्त्राणामध्ययनेन वा सः ऋषिऋणान्मुक्तो भवति। यथा- **स्वाध्यायेन ऋषिभिः।**[113] अस्य प्राथमिकमुद्देश्यं तु ऋषीन् प्रति आभारप्रकटनमासीद् एषां कृपया वयं ज्ञानोपार्जनं कृतवन्तः। अतः सः ब्रह्मचर्याश्रमे उषित्वा ज्ञानोपार्जनं करोति स्म, ततश्च वानप्रस्थाश्रमं प्रविश्य स्वकीयं ज्ञानं ब्रह्मचारिभ्य एवमन्तेवासिभ्यः प्रदाय ऋषिऋणान्मुक्तो भवति स्म। सन्ततेः उत्पत्यनन्तरं सः पितृऋणान्मुक्तोभवति स्म। यथा- **प्रजया पितृभ्यः।**[114] किन्तु पितृऋणान्मुक्तये गृहस्थाश्रमे प्रवेशः अनिवार्यः आसीद् यतोहि अस्मिन्नेवाश्रमे व्यक्तिः प्रजां संवर्ध्य निजपैतृकवंशस्य वृद्धिं कृत्वा पितृणाद्विमुच्यते स्म। महाभारतस्यानुसारं यो मनुष्यः ऋणत्रयान्मुक्तेः पूर्वमेव संन्यस्तो भवति, सः वेदविरूद्धमार्गमेवाश्रयते।[115]

मनुस्मृतेः अनुसारं यो मनुष्यः ऋणत्रयान्मुक्तिं विनैव मोक्षं प्राप्तुं प्रयतते सः अधोगतिं प्राप्नोति।[116] इत्थं प्रकारेणाश्रमाणां व्यवस्था प्राचीनभारतीयमनीषिणामद्वितीयज्ञानस्य प्रज्ञायाश्च प्रतीकरूपेण वर्तते, यत्र ज्ञान – विज्ञानेन सह लौकिक – पारलौकिककर्मणां धर्मस्य भोगस्य त्यागस्य चाद्भुतसमन्वयस्य प्रदर्शनं भवति।

---

111 मन्वर्थ. म.स्मृ., 6/36
112 तथैव 6/36
113 तथैव 6/36
114 मन्वर्थ.म.स्मृ., 6/36
115 महाभारतम्, 12/11/17
116 म.स्मृ., 6/35

आश्रमशब्दस्य अर्थः

संस्कृतभाषायां श्रमधातोः आश्रमशब्दस्य निष्पत्तिर्जायते, यस्य सामान्यरूपेणार्थो भवति – परिश्रमः। शब्दकल्पद्रुमे अस्य शब्दस्य व्युत्पत्तिः आङ् उपसर्गपूर्वकात् श्रमधातोः घञ् प्रत्यये सति प्रदर्शिता वर्तते। तत्रास्यार्थः 'शास्त्रोक्तधर्मविशेषः' इत्युक्तो वर्तते, तस्यानुसारेण शास्त्रप्रोक्तधर्मविशेष एव आश्रम इत्युक्तः।[117] वाल्मीकिरामायणे अस्यार्थः 'कुटी' इति स्वीकृतो वर्तते, अर्थात् तत्स्थलं यत्र तपस्विनः तपः पूर्णजीवनं यापयन्ति।[118] पी. वी. वामनकाणे इत्यस्यानुसारं आश्रमशब्दस्य व्युत्पत्तिः अर्थो वा इत्थं वर्तते- 'आश्राम्यन्ति अस्मिन् इति आश्रमः' अर्थात् तादृशं जीवनस्तरं यत्रात्यधिकः परिश्रमः स्यात्।[119] मनुस्मृत्या अनुसारमाश्रमव्यवस्थायाः प्रमुखं प्रयोजनं मनुष्यजीवनाय तादृशक्रमप्रदानं येन सः जीवनस्य सम्यग्विकासं कुर्वन् मुक्तिं प्राप्नुयात्।[120] आश्रमव्यवस्था सनातनसंस्कृतेः अद्वितीयविशेषता वर्तते।

धर्मशास्त्रकाराः स्वीय- स्वीयग्रन्थेषु चतुर्भ्यः अपि आश्रमेभ्यः केषाञ्चन विशेषधर्माणां कर्तव्यानञ्च विधानं चक्रुः यस्य सम्पालनं प्रतिव्यक्ति अनिवार्यं वर्तते। महर्षिगौतमस्यानुसारं आश्रमधर्मविहीनो जनः पतितः स्वीक्रियते तथा एतादृशेन पतितेन सह वाद-संवादसम्बन्धिव्यवहारोऽपि निषिद्धो वर्तते। एतादृशस्य जनस्य समाजे किमपि सम्मानजनकं स्थानं नासीत्, नैव च एतादृशाः जनाः समाजे कस्यचिज्जनस्य सम्मानस्याधिकारिणः आसन्।[121]

3.2.1 ब्रह्मचर्याश्रमः

भारतीयधर्मशास्त्रकारैः स्वीयस्मृतिग्रन्थेषु मानवजीवनस्य प्रथमो भागः ब्रह्मचर्याश्रमाय योग्यो मन्यते। बालकस्य विद्याध्ययनयोग्यावस्थायाः प्राप्तौ सत्यां तस्याश्रमधर्माः प्रारभ्यन्ते।

---

117 श.द्रु. प्रथमकाण्डम्, पृ. 195

118 रामायणम्, 3/12/5, 3/15/20, 25-26

119 धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 267

120 म.स्मृ., 6/88

121 गौ.धर्म., 1/9/7

ब्रह्मचर्याश्रमप्रवेशात् पूर्वं पितृभ्यां तस्यान्यसंस्कारा अक्रियन्त, किन्तु ततः परम् आचार्यद्वारा ज्ञानं प्राप्नुवन् बालकः स्वयमात्मानं संस्कृतं कुर्वन् विकासाय प्रयतते। अस्मिन् आश्रमे वसन् सः निजशक्तीः संचयन् समस्तभौतिकसुखसुविधाभ्यः दूरे भूत्वा संयमितानुशासितजीवनं गमयति तथा स्वस्य शारीरिकम्, मानसिकम्, आध्यात्मिकं च विकासं करोति। इत्थं प्रकारेणायमाश्रमः इन्द्रिय-संयमस्य, चरित्रनिर्माणस्य, कठोरतपसः, अध्ययनस्य तथा अनुशासनस्य च काल- खण्डः मन्यते। अयमाश्रमः पूर्णरूपेण ग्रहस्थाश्रमाय आधारभूतो वर्तते। अस्मिन्नाश्रमान्तर्गतगुरुकुले वसन् विद्यार्थी आत्मानं शिक्षाद्वारा मानसिकरूपेण, चारित्रिकरूपेण तथा योग्यं करोति येन सः स्वीयगृहस्थाश्रमं पालयन् अन्येषां त्रयाणामाश्रमाणां पालनस्योत्तरदायित्वं निर्वोढुं शक्नुयात्।

ब्रह्मचर्यम् इति मुख्यतया शब्दद्वयेन निष्पद्यते, यत्र प्रथमपदं 'ब्रह्म' तथा द्वितीयपदं 'चर्यम्' वर्तते। अत्र "ब्रह्म"- पदस्यार्थः महान् एवं चर्यपदस्यार्थः विचरणं वर्तते। इत्थं प्रकारेण ब्रह्चर्यस्यार्थः ब्रह्मणः मार्गे गमनं वर्तते। सामान्यरूपेण ब्रह्मचर्येण तात्पर्यम् इन्द्रियनिग्रहः अथवा वेदाभ्यासव्रतपालनमासीत्।[122]

इत्थं प्रकारेण नियम – संयम- पालनपुरस्सरं वेद- वेदाङ्गाद्यध्ययनं ब्रह्मचारिणः प्रमुखं कर्तव्यं मन्यते। अस्मिन्नाश्रमे प्रवेशः उपनयनसंस्कारेण सह भवति।[123] धर्मशास्त्रकारैः वर्गत्रयाय उपनयनसंस्कारस्य वर्णनमक्रियत, शूद्राय उपनयन- संस्कारस्य विधानं न प्राप्यते। ब्राह्मणस्योपनयनसंस्कारः अष्टमे वर्षे, क्षत्रियस्य एकादशे वर्षे, वैश्यस्य च द्वादशे वर्षे कर्तव्यः। अयं सन्दर्भः श्रीमद्भागवते इत्थं प्रकारेण प्राप्यते- "गर्भाधानादिसंस्काराणां क्रमे यज्ञोपवीत-संस्काररूपद्वितीयजन्म सम्प्राप्य गुरुकुले वसेत्।[124] उपनयनस्य शाब्दिकोऽर्थः 'कुमारस्य आचार्यसमीपनयनमस्मिन् कर्मणि' तत्कृत्यं येन बालकः आचार्यस्य समीपम् आनीयते तथास्य

122 ब्रह्मवेदः । तदध्ययनार्थं व्रतमुपचाराद् ब्रह्म । ब्रह्मचरितुं शीलमस्य । अमरकोषः

123 म.स्मृ., 2/173

124 भा.महा., 11/17/22

संस्कारस्य माध्यमेन तस्य द्वितीयं जन्म भवति।[125] वस्तुतः द्विजशब्दस्यतात्पर्यं जन्मद्वयेन वर्तते, एकं मातुःगर्भाद्, द्वितीयं मूंजमेखलाधारणस्य पश्चाद् गुरोः गर्भाद्, अस्मिन् जन्मनि सावित्री तस्य माता तथा आचार्यः तस्य पिता भवति।[126]

स्मृतिकालीनसमाजे ब्रह्मचर्याश्रमः पूर्णरूपेण वैराग्ययुक्तः आसीत्। मन्वादिस्मृतिषु विस्तारपूर्वकं ब्रह्मचर्यस्य आचाराणां वर्णनमक्रियत। तस्यान्तर्गते – उपनयनसंस्कारस्य पश्चाद् गुरुकुले प्रविश्य विध्यनुसारं क्रमेण वेदाध्ययनम् कर्त्तव्यम्।[127] ब्रह्मचारी निजवर्णानुसारं चर्म, सूत्रम्, मेखलाम्, दण्डम्, वस्त्रादि धारयेत्।[128] सः इन्द्रियनिग्रहपूर्वकं तपसः नियमान् पालयेत्।[129] नित्यकर्मान्तर्गते स्नानम्, देवानाम्, ऋषीणाम्, पितृगणानाञ्च तर्पणम्, देवार्चनम्, समिधाधानञ्च सन्ति।[130]

ब्रह्मचारिणः निषिद्धकर्मणामुल्लेखः

श्रीमद्भागवते ब्रह्मचारिणः निषिद्धकर्मणां वर्णनं प्राप्यते यथा- अञ्जनधारणम्, सौन्दर्यवर्धकमुखरागादिचूर्णलेपनम्, स्त्रीणां चित्रनिर्माणम्, मांस- मद्यसेवनम्, सुगन्धितद्रव्यप्रयोगः, आभूषणादिधारणम्, गुप्तेन्द्रियाणां केशानां नखानाञ्च कर्तनादिकं निषिद्धकर्म वर्तते।[131] सः निरीक्षणात्मकदृष्ट्या स्त्रियाः दर्शनम्, स्पर्शम्, वार्तालापादिकम्, मैथुनकर्म कुर्वन् प्राणिषु दृष्टिपातं न कुर्यात्।[132]अस्मिन्नेव परिप्रेक्ष्ये स्मृति – ग्रन्थेष्वपि ब्रह्मचारिणः निषिद्धकर्मणां वर्णनं प्राप्यते। यथा- मधुमांसभक्षणम्, सुगन्धिद्रव्याणां लेपनम्, उत्कटाम्ल- मधुर – लवणादिरसयुक्तभोजनम्, मालाधारणम्, स्त्रीभिस्सह सम्पर्कः, प्राणिनां

---

125 तथैव 11/17/22
126 म.स्मृ., 2/20, या.स्मृ., 1/39
127 म.स्मृ., 2/173
128 तथैव 2/174
129 तथैव 2/175
130 तथैव 2/176
131 भा.महा.,7/12/12, 11/17/24
132 तथैव 11/12/53

हिंसा, तैलादिना शरीरमर्दनम्, अंजनप्रयोगः, उपानद्धारणम्, छत्रधारणम्, कामः, क्रोधः, लोभः, नृत्यम्, गानम्, वादनम्, द्यूतः, वादविवादः, अन्यदोषाणां कथनम्, असत्यभाषणम्, मैथुनेच्छया स्त्रीदर्शनम्, स्पर्शः,वार्यस्खलनम्, एतानि सर्वाण्यपि कर्माणि ब्रह्मचारिणः कृते निषिद्धानि वर्तन्ते।[133] यानि कर्माणि तेन न कर्तव्यानि।

गुरुं प्रति ब्रह्मचारिणः आचारः

गुरुः, आचार्यः सर्वदेवमयः भवति सः ईश्वरस्वरूपः इत्युच्यते। आचार्यस्यानुगमनम् एवं सदाचारपूर्वकं सुश्रूषाविधानंब्रह्मचारिणः कर्तव्यं वर्तते।[134] गुरोः समीपे वसन् ब्रह्मचारी मनः, बुद्धिम्, वाणीं शरीरं च संयमयन् गुरुं पश्यन् करबद्धस्सन् तिष्ठेत्।[135] गुरोः आह्वाहने सति सः अध्ययनं कुर्यात् तथा अध्ययनात् पूर्वं पश्चाच्च क्रमशः शिरसा गुरुचरणौ प्रणमेत्।[136] दक्षिणहस्तं उत्तरीयवस्त्राद् बहिः कृत्वा तिष्ठेत्, सदाचारं पालयन् गुरुद्वारा 'आस्यताम्' इति कथनात् परं गुरुं प्रति मुखं कृत्वा उपविशेत्।[137] सः विद्यार्थी गुरोः अनुगमनं कुर्यात्, उपविष्टवतः गुरोः प्रतिश्रवणमुत्थाय कुर्यात्, गुरोः विपरीतदिशि मुखं कृत्वा तस्य प्रतिश्रवणं न कुर्यात्, गुरोःप्रतिश्रवणं तेन सहसम्भाषणञ्च विनम्रतापूर्वकं कुर्यात्।[138] शिष्यस्य आसनम्, शय्या च गुरोः आसनादिभ्यः निम्नस्तरे स्यात्।[139] गुरोः नामोच्चारणं न कुर्यात् तथा तस्य प्रत्येकं कार्यस्यानुकरणमपि न कुर्यात्।[140] गुरोः दोषान् न शृणुयात् [141], इत्यादि प्रकारेणगुरुं प्रति शिष्यस्य आचाराणां वर्णनं प्राप्यते।

---

133 म.स्मृ., 2/177-180, या.स्मृ., 1/33
134 भा.महा.,11/17/27-29
135 म.स्मृ., 2/192
136 भा.महा.,7/12/3
137 म.स्मृ., 2/193
138 म.स्मृ., 2/196-197
139 तथैव 2/198
140 तथैव 2/199
141 तथैव 2/200

इत्थं प्रकारेण ब्रह्मचारिणे भिक्षायाः, आचमनस्य, भोजननियमस्य, वेदाध्ययनविधेः, गुरुवन्दन- विधेः, प्राणायामस्य, सावित्रीजपस्य, अग्निकार्यस्य, शौचाचारस्य, इन्द्रियसंयमस्य, संध्योपासनस्य, अभिवादनस्य, पंचमहायज्ञस्य, नित्य-नैमित्तिककर्मणः, इत्यादीनां वर्णनं सविस्तरं प्राप्यते।

गुरूकुले विद्यार्थिनः आचारः

श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते ब्रह्मचर्याश्रमस्य वर्णनं सप्तमे एकादशे च स्कन्धे प्राप्यते, यत्रोक्तं वर्तते यद् ब्रह्मचारिणः मुख्यः धर्मः आचार्यस्य सेवाविधानं वर्तते।[142] इन्द्रियाणां निग्रहं कुर्वन् सः गुरुकुले वसेत् तथा गुरूणां चरणयोः सुदृढानुरागं विधाय तद्धिताय कार्यं कुर्यात्।[143] प्रतिदिनं गुरोः जागरणात् पूर्वं संजागृयात् तथा गुरोः शयनस्य पश्चात् शयनं कुर्यात्, वस्त्रभोजनादिकमपि गुरोः अपेक्षया न्यूनमात्रायामेव स्वीकुर्यात्।[144] गुरुकुले वसन् वेद-वेदाङ्गाद्यध्ययनम् उपनिषदादीनाञ्चाध्ययनं कुर्यात्।[145] सायंकाले प्रातः च गुरुम्, अग्निम्, सूर्यं तथान्यश्रेष्ठदेवान् उपासीत एवं द्वयोः सन्ध्ययोः मौनं भूत्वा एकाग्रचित्तः च भूत्वा गायत्रीं जपेत्।[146] ब्रह्मचारी मेखलाम्, कमण्डलुम्, मृगचर्म, वस्त्रम्, जटाम्, दण्डम्, यज्ञोपवीतं तथा हस्ते कुशं धारयेत्।[147] सायंकाले तथा प्रातःकाले भिक्षाटनं कुर्यात् तथा गुरवे समर्पयेत्, गुरोः आज्ञानुसारमेवभिक्षां गृह्णीयात् यदि आज्ञा न स्यात् तदा विना भोजनमेव तिष्ठेत्।[148] शीलादिकं पालयन् अल्पाहारं कुर्यात् तथा श्रद्धवान् जितेन्द्रियश्च तिष्ठेत्, स्त्र्यधीनैः सह तथा स्त्रीवर्गेण सहावश्यकतानुसारमेव व्यवहरेत्।[149]बलपूर्वकं निजेन्द्रियेषु संयमं धारयेत्।[150] युवकः ब्रह्मचारी

142 भा.महा.,11/18/42
143 तथैव 7/12/1
144 म.स्मृ., 2/194
145 भा.महा.,7/12/13, 11/17/22
146 भा.महा., 7/12/2, 11/17/26
147 तथैव 7/12/4, 11/17/23
148 तथैव 7/12/5, 11/17/28
149 तथैव 7/12/6

युवत्या गुरुपत्न्या स्वस्य केशप्रसाधनम्, शरीरमर्दनम्, स्नानम्, इत्यादि कार्याणि न कारयेत्, यदा ताः एकान्ते न स्युः तदापि आवश्यकतानुसारमेवताभिस्सहव्यवहरेत्।[151] अस्य विशिष्टकारणमिदं वर्तते यद् यावद् आत्मसाक्षात्कारेण देहः इन्द्रियाणि च प्रतीतिमात्रमितिविनिश्चित्यस्वतन्त्रो न जायते तावदहं 'पुरुषः' 'इयं स्त्री' अयंद्वैतः खण्डितः न भवति, अथ च इदमपि निश्चितमेव यदेतादृशः पुरुषाः यावत् स्त्रियाः संसर्गे स्थास्यन्ति तावत् तासु तेषां भोग्य- बुद्धिः भविष्यति।[152] ब्रह्मचारीवीर्यस्खलनं न कुर्याद् यदि भवति चेद् जले स्नानं कृत्वा प्राणायामं गायत्रीजपं च कुर्यात्।[153] अग्नौ, गुरौ तथा सर्वप्राणिषु ईश्वरं सम्पश्यन् मामेव उपासेत, इत्थं प्रकारेण ब्रह्मचारी समेभ्यः पापेभ्यो विमुच्यते।[154] यदि ब्रह्मचारी ब्रह्मलोकम् इच्छति चेत् तदा सः आजीवनं ब्रह्मचर्यव्रतं पालयेत्।[155] शौचम्, आचमनम्, स्नानम्, सन्ध्योपासनम्, सरलता, तीर्थसेवा, जपः, मनसः, वाण्याः, शरीरस्य च संयमः, अस्पृश्यानामस्पर्शः, भक्ष्याक्ष्यविचारः, वाणीप्रयोगस्य विवेकः एते आचाराः ब्रह्मचारिणे सहैवान्यवर्गेभ्यश्चोक्ताः वर्ततन्ते।[156] गुरुदक्षिणासम्बन्धे प्राप्यते यद् यदि शिष्यः सामर्थ्यवान् वर्तते चेत् सः गुरोः अनुसारं दद्यात्।[157]

इत्थं प्रकारेणश्रीमद्भागवते त एव नियमाः प्राप्यन्ते ये च ब्रह्मचर्यसम्बन्धे मनुस्मृतौ एवं याज्ञवल्क्यस्मृतौ च प्राप्यन्ते। ब्रह्मचारिणः समेषां नियमानामेकसाकमध्ययनेन ज्ञायते यद् ब्रह्मचारिणः प्रमुखमुद्देश्यं गुरुकुले उषित्वा वेदादिसकलविद्यानामध्ययनं भवति स्म, तत्र उषित्वा सः आश्रमस्य विविधक्रियाकलापैः व्यावहारिकं ज्ञानमर्जयति स्म। भिक्षाटनेन सः

---

150 तथैव 7/12/7
151 तथैव 7/12/8-9
152 तथैव 7/12/10
153 तथैव 11/17/25
154 तथैव 7/12/15, 11/15/32
155 तथैव 11/17/31
156 तथैव 11/17/34-35
157 तथैव 7/12/14, 11/17/34

अहंकारादिदुर्गुणेषु विजयं प्राप्य विनयादिगुणैः सम्पन्नो भवति स्म। निषिद्धकर्मणां परित्यागेन तस्य मनः, मस्तिष्कम्, ध्याने एकाग्रचित्तं भवति स्म, तथा सः बाह्याडम्बरैः मुक्तो भूत्वा अन्तर्मुखी संजायते स्म, इत्थं प्रकारेण ब्रह्मचर्यद्वारा सः स्वकीयं सम्पूर्णं विकासं करोति स्म।

3.2.2 गृहस्थाश्रमः

ब्रह्मचर्याश्रमस्य पश्चाद् गुरोः आज्ञां स्वीकृत्य ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रमं प्रविशेत्। गृहस्थाश्रमः भारतीयसमाजे द्वितीयाश्रमरूपेण प्रतिष्ठितो वर्तते। ब्रह्मचारी समावर्तनोपरान्तं स्नानं कृत्वा क्रोधविनिर्मुक्तः प्रसन्नचित्तस्सन् गुरोराज्ञया सवर्णजातीयया, असगोत्रया, असपिण्डया, अप्रवरया, अस्पृष्टमैथुनया, युवत्या सह विवाहं कृत्वा गृहस्थाश्रमं प्रविशेत्।[158]

अस्मिन् आश्रमे जनः निजपारिवारिकस्य, सामाजिकस्य तथा धार्मिकस्य च कर्तव्यस्य निर्वाहं करोति तथा समाजस्य सशक्तीकरणे तथा गतिशीलतायां च निजयोगदानं ददाति स्म। सामाजिकधारणायाः अनुसारमेकाकी जनः यज्ञादिकर्मणां विधाने अयोग्यः भवति अतः सः विवाहोपरान्तं गृहस्थाश्रमं प्रविश्य एतानि सर्वाणि कार्याणि सम्पादयति स्म्। एतमाश्रममं प्रविश्य सः सामर्थ्यानुगुणं धनं संगृह्य तस्य प्रयोगं स्वस्मै समाजाय च करोति स्म। धर्मशास्त्रकारैः गृहस्थिभ्यः उक्तं वर्तते यत् पूर्वं देवान्, पितॄन्, अतिथीन्, ब्रह्मचारिणः, वानप्रस्थिनः, सन्यासिनः, भृत्यान् संपोषयेत् ततः अवशिष्टेन स्वीयं जीवनं यापयेत्। गृहस्थाश्रमः सामाजिकव्यवस्थायाः आधारस्तम्भरूपेण प्रतीयते यतोहि समेषामाश्रमाणां पालनमनेन आश्रमेण परिपूर्णरूपेण भवति। अयमेवाश्रमः नानाकर्तव्यानामुत्तरदायित्वानां च निर्वाहं कुरुते।

पुराणेषु गृहस्थाश्रमस्य मान्यता सर्वश्रेष्ठत्तवरूपेण प्राप्यते। समस्तस्थावरजङ्गमविहङ्गमप्राणिनां जीवनं गृहस्थाश्रमेवालम्बते।[159] परिव्राजकस्य,

---

158 म.स्मृ., 3/4-5

159 "पिपीलिकादि भूतानि जंगमाश्च विहंगमाः। उपजीवन्ति सूश्रोणि गृहस्थेषु न संशयः ।।"व.पु., 190/52-53

ब्रह्मचारिणः तथा वेदाध्येतुः, तीर्थगन्तुः, स्नानाय गतस्य देवदर्शनाय गतस्य भ्रमणकर्तुः वा येषां निश्चित भोजनप्रबन्धः नासीद् अर्थाद् यदा सायंकालः संजायते तत्रैव वासः क्रियते स्म, एतादृशानामाश्रयः गृहस्थाश्रम एव भवति स्म।[160] गृहस्थः पूज्यपुरुषाणां जलेन, आसनादिना सत्कारं कृत्वा तेषां सम्मानं कृत्वा निर्धनो भूत्वापि धन्यो भवति स्म।[161] देवानाम्, ऋषीणाम,पितॄणाञ्चापि अस्मिन्नेवाश्रमे पूजनं भवति स्म।[162] अत एव अयमाश्रमः पितॄणाम्, देवानाम्, ऋषीणाम्, मनुष्याणां तथा समेषामन्यप्राणिनां स्वस्य च कल्याणस्याश्रयः कथितः।[163] गृहस्थाश्रमे उषित्वा मनुष्यः धर्मम्, अर्थम्, कामम्, प्रजानन्दम्, अमृतम्, यशः, तथा शोकरहितं शुद्धलोकं च प्राप्नोति, यस्यं कल्पनां योगिनोऽपि न कर्तुं शक्नुवन्ति।[164]

गृहस्थस्य महत्त्वं तस्योच्चकर्तव्यानां कारणादेवासीत्, अतः गृहस्थाश्रमस्य श्रेष्ठतायाः मूलाधारः सदाचारः आसीत्। अन्यथा ऋद्धि- सिद्धिपरिपूर्णतायामपि कर्तव्यहीनगृहस्थस्य गृहं सर्पप्राणिनः आश्रयभूतवृक्षवन्निन्दितः आसीत्।[165] क्रोधादिषट्शत्रून् जेतुं तेभ्यः रक्षणाय च गृहस्थाश्रमः उत्तमदुर्गरूपेण वर्तते।[166] स्मृतिग्रन्थेषु गृहस्थस्य निमित्तं नित्य- नैमित्तिक- काम्यकर्मणां वर्णनमत्यधिकविस्तरेण एवं सूक्ष्मरूपेणाक्रियत।

गृहस्थप्रकारः

धर्मशास्त्रकारैः गृहस्थस्य विविधप्रकाराणामुल्लेखः कृतो वर्तन्ते, यत्र बौधायनधर्मसूत्रे गृहस्थस्य द्विधा विभाजनं प्राप्यते, प्रथमः शालीनः द्वितीयश्च यायावरः। [167] पी. वी. काणे इत्यस्यानुसारं शालीनाः गृहे तिष्ठन्ति, तेषां सविधे कर्मकराः पश्वादयश्च भवन्ति स्म, ते

---

160 वि. पु., 3/9/11-13
161 भा.महा., 4/22/10
162 तथैव 7/14/15
163 तथैव 4/25/40
164 तथैव 4/25/39
165 तथैव 4/22/11
166 तथैव 5/1/18-19
167 बौ.धर्म., 3/1/1/3

स्थिररूपेण ग्रामेषु निवसन्ति स्म, तेषां सकाशे समृद्धसम्पत्तिरपि भवति स्म तथा ते सांसारिकं जीवनं यापयन्ति स्म। किन्तु यायावराः अत्युत्तमजीविकया जीवनं यापयन्ति स्म, ते क्षेत्राद् अन्ननयनवेलायां यदन्नं धरायां पतति स्म तं तस्मात् क्षेत्रात् संगृह्य जीविकोपर्जनं कुर्वन्ति स्म। ते सम्पत्तेः संग्रहं न कुर्वन्ति स्म, याजनेन, अध्यापनेन, प्रतिग्रहेण वा जीवनं न यापयन्ति स्म।[168]

वैखानसधर्मसूत्रे गृहस्थानां चतुर्धा विभाजनं प्राप्यते।

1. वार्तावृत्तिः-कृषिणा, पशुपालनेन, वाणिज्येन वा प्राप्तजीविकाः,

2. शालीनाः – याजनं विधाय प्राप्तधनेन गृहस्थस्य कर्तव्यानां निर्वाहकाः,

3. यायावराः- अध्ययनाध्यापनेन, यजन- याजनेन, दान- प्रतिग्रहेण वा जीवननिर्वाहकाः।

4. घोराचारिकाः- अध्यापनेन, याजनेन, तथा प्रतिग्रहेण नापितु केवलं शिलोञ्छवृत्त्या अन्नं संगृह्य स्वयमेव याजकाः भवन्ति स्म।[169]

महाभारते तथा याज्ञवल्क्यस्मृतौ उभयत्रापि गृहस्थस्य चतुष्प्रकाराणामुल्लेखः प्राप्यते। महाभारतस्यानुसारं चत्वारः प्रकाराः आसन्-

1. कुसूलधान्यम्- विहितेभ्यः ब्राह्मणस्य षट्कर्मभ्यः प्राप्तजीविकाः।

2. कुम्भधान्यम्- केवलमध्ययने, यजने दाने वा अनुरक्ताः।

3. अश्वस्तनम्- अध्ययनाय दानाय च महत्तत्त्वं यच्छन्ति।

4. कपोतीमाश्रिताः- केवलं स्वाध्याये दत्तचित्ताः।[170]

याज्ञवल्क्यानुसारेण अपि गृहस्थस्य चतुर्धा विभाजनं याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते यथा –

1. कुसूलधान्याः- वर्षत्रयं यावद्धनसंग्राहकाः।

---

168 धर्मशास्त्र का इतिहास,प्रथम भाग, पृ.355-356

169 वै.धर्म., 1/5/1-5

170 महाभारतम्, 12/243/2-3

2. कुम्भीधान्याः- एकं वर्षं यावत् सामग्रीसंग्राहकाः

3. त्र्यवाहिकाः- दिनत्रयं यावत् सामग्रीसंग्राहकाः।

4. अश्वस्तनिकाः- केवलमेकस्य दिवसस्य कृते सामग्रीसंग्राहकाः।[171]

महाभारते एवं याज्ञवल्क्यस्मृतौ च केवलं विभाजितनामसु एव समानता प्राप्यते, तेषां जीविकोपार्जनसिद्धान्तेषु तु कथमपि समानता दृष्टिगोचरा न भवति। एतेषां समेषां विभाजनानामध्ययनेन स्पष्टी भवति यद् एते प्रकाराः ब्राह्मण- गृहस्थाश्रमवासिनामेव स्युः न तु वैश्यक्षत्रिययोरिति, यतोहि अन्यवर्गजनेभ्यस्तु नैकानि साधनानि स्मृतिग्रन्थेषु वर्णितानि सन्ति, केवलं ब्राह्मणस्य कृते एव जीविकायाः त्रीणि कर्माणि निर्दिष्टानि, तस्य कृते सामान्यपरिस्थितौ एतेभ्यः अतिरिक्तकर्मणां साधनानां वा विकल्पः न निर्दिष्टो वर्तते एवं धनस्य अन्नसंग्रहणस्य वा समस्या ब्राह्मणवर्णस्य कृते एव आसीदतः स्पष्टीभवति यदयं यः विभाजनप्रकारः प्राप्यते सः ब्राह्मणवर्णाय एव स्यादिति।

श्रीमद्भागवतमहापुराणे गृहस्थाश्रमाय विविधकर्तव्यानाम्, कर्मणाम्, एवमनुष्ठानानां वर्णनं प्राप्यते। यस्यान्तर्गते उक्तं वर्तते यद् गृहस्थः पञ्चमहायज्ञैः अर्थाद् ब्रह्मयज्ञेन, पितृयज्ञेन, देवयज्ञेन, भूतयज्ञेन तथा अतिथियज्ञेन च श्रीकृष्णं यजेत।[172] मनुस्मृतौ एवं याज्ञवल्क्यस्मृतावपिपञ्चमहायज्ञानां निर्देशः प्राप्यते, अत्र पञ्चमहायज्ञाः विस्तृतरूपेण प्राप्यन्ते" गृहस्थः विवाहनिष्पादिताग्नौ गृह्यसूत्रानुसारं पञ्चमहायज्ञान् सम्पादयेत्।[173] प्रारब्धप्राप्तवृत्त्या गृहस्थः यज्ञादिकार्याणि सम्पादयेत् तथा तत्रावशिष्टान्नेन निजजीवनं यापयेत्।[174] गृहस्थः निजकार्याणि वासुदेवमर्पयेत् तथा महामुनीन् उपासेत।[175] सः श्रद्धापूर्वकं

---

171 या.स्मृ., 1/128

172 भा.महा., 11/7/50, 7/14/15

173 म.स्मृ., 3/67, या.स्मृ., 1/102

174 भा.महा., 7/14/14

175 तथैव 7/14/2

भगवतः लीलावताराणां सुधापानं कुर्यात्।[176] बुद्धिमान्पुरूषः अनासक्तभावेन अन्तरात्मना विरक्तस्सन् संसारेण शरीरेण च सह व्यवहरेत्।[177] पुनः वैराग्ययुक्तव्यवहारस्य निर्देशः प्राप्यते यद् मात्रा- पित्रा, भ्रात्रा, बन्धुभिः, मित्रैः, तथान्यजनैस्सह अन्तरात्मना निर्ममतया तेषामनुमोदनं कुर्यात्।[178] गृहस्थः समस्तसम्पत्तिमुपयुञ्जन् संचयराहित्येन इदं मन्येत यदिदं सर्वमप्यैश्वर्यमीश्वरप्रदत्तं वर्तते इति।[179] मनुष्याणामधिकारः केवलं तावत्सम्पत्तौ वर्तते यावता तस्य क्षुधा उपसमेत। एतस्याः अधिकसम्पत्तिस्थापने तु सः चौरः एव भवति तथा दण्डस्य अधिकारी भवति। [180] सर्वैः प्राणिभिस्सह पुत्रवद् व्यवहरेत्।[181] त्रिवर्गस्य प्राप्तये अधिकं कष्टं न सहेत, देशकालप्रारब्धानुगुणं यत् प्राप्येत तस्मिन्नेव सन्तुष्टस्स्यात्।[182] निजसम्पत्या सर्वानपि जीवान् संतोषयेत्।[183] स्त्रीष्वनासक्तः स्यात्।[184]

गृहस्थद्वारा श्राद्धविधानस्यापि वर्णनं प्राप्यते।[185] श्राद्धतिथीनां वर्णनमप्यक्रियत।[186] स्नानेन, जपेन, तपसा, होमेन, व्रतेन, द्विजार्चनेन, पितृकार्येण च अक्षयफलप्राप्तेः वर्णनं प्राप्यते।[187] शुभकार्यसम्पादनसमये दानस्य वर्णनम्,[188] दानयोग्यपात्रेभ्य एव दानं दद्यात्।[189] गृहस्थस्य मुख्यधर्मः समेषां प्राणिनां रक्षा वर्तते।[190] इत्थं प्रकारेण श्रीमद्भागवते गृहस्थधर्माणां वर्णनं शास्त्र- सम्मतमेव प्राप्यते।

---

176 तथैव 7/14/3
177 तथैव 7/14/5
178 तथैव 7/14/6
179 तथैव 7/14/7
180 तथैव 7/14/8
181 तथैव 7/14/9
182 तथैव 7/14/10
183 तथैव 7/14/11
184 तथैव 7/14/12
185 तथैव 7/14/19
186 तथैव 7/14/20-24
187 तथैव 7/14/25
188 तथैव 7/14/26
189 तथैव 7/15/2
190 तथैव 11/18/42

एवं रीत्या वक्तुं शक्यते यद् व्यक्तिगतरूपेण, पारिवारिकरूपेण, सामाजिकरूपेण च सर्वतोभावेन गृहस्थाश्रमस्यात्यधिकं महत्त्वं वर्तते। अस्मिन्नेवाश्रमे उषित्वा जनः देवऋणात्, पितृऋणात् , ऋषिऋणाच्च मुक्तिं प्राप्नोति स्म। पञ्चमहायज्ञानां माध्यमेन सः निजपरिवारस्य भरण- पोषणेन साकं समाजस्यान्यसदस्यान् प्रत्यपि निजकर्तव्यं पालयति स्म, अस्मिन्नेवाश्रमे सः धर्मार्थकामपुरुषार्थान् अर्जयन् प्राप्तिमार्गे संलग्नो भूत्वा तिष्ठति स्म, यत् समस्तमानवजीवनस्यान्तिमं चरमं च लक्ष्यं भवति। अन्याश्रमाणां पालन- पोषणं गृहस्थाश्रमद्वारा एव भवति स्म अत एव गृहस्थाश्रमः सर्वोत्तमः आश्रमः तथान्याश्रमाणामाधारः मन्यते स्म।

3.2.3 वानप्रस्थाश्रमः

अयमाश्रमः सांसारिकसमस्तबन्धनेभ्यः मुक्त्युद्देश्यस्य दृष्ट्या प्रथमसोपानं मन्यते स्म। यथा ब्रह्मचर्याश्रमः गृहस्थाश्रमाय आधाररूपेण वर्तते तथैववानप्रस्थः संन्यासे प्रवेशाय योग्यत्त्वं सम्पादयति स्म। अस्मिन्नाश्रमेऽपि प्रवेशस्य आयुषः वर्णनं न प्राप्यते। यदा मनुष्यः गृहस्थाश्रमसम्बन्धिनिजकर्माणि, उत्तरदायित्वानि, कर्तव्यान् पूर्णरूपेण सम्पादयति स्म तदा तस्यास्मिन्नाश्रमे प्रवेशायानुमतिः भवति स्म। क्रमदृष्ट्यायमाश्रमः तृतीयस्थाने वर्तते। एवं रीत्या मनुष्यस्य आयुषः तृतीयकालखण्डे अस्याश्रमस्य कर्तव्यानाम्, नियमानां निर्वाहः अनिवार्यः आसीत्। महाभारते प्राप्यते यद् यदा गृहस्थः वृद्धत्वं प्राप्नुयात्, तस्य सन्ततेः अपि सन्ततिः संजायेत तदा अर्थाद् यदा सः गृहस्थाश्रमस्य सर्वोत्तरदायित्वानां पालने समर्थः स्यात् तदा सः निजेन्द्रियाणि वशीकुर्वन् पत्न्या सह पत्नीं विना वा जीवनस्य तृतीयभागरूपं वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत्।[191] श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् "गृहस्थमनुष्यः वानप्रस्थाश्रमप्रवेष्टुः भार्यायै पुत्रान् समर्प्य अथवा आत्मना सह संस्थाप्य शान्तचेतसा निजायुषः तृतीयकालखण्डमरण्ये गमयेत्।[192]

---

191 महाभारतम्,12/144/4

192 भा.महा., 11/18/1

याज्ञवल्क्यः कथयति यद् "गृह्याग्निना सह सपत्नीकः पत्निं विना वा वानप्रस्थं प्रविशेत्।[193]अयमेव भावः मनुस्मृतावपि प्राप्यते- "स्नातकद्विजः शास्त्रविधानानुसारं वृद्धावस्थायाम् अग्निहोत्रस्य साधनगार्हपत्यादिना सह जितेन्द्रियस्सन् वने निवशेत्।[194] लघुहारीते अप्युक्तं वर्तते यद् "सम्यग्रीत्या पुत्रपौत्रादीन् निजवृद्धावस्थां च दृष्ट्वा, निजभार्यां पुत्रेभ्यः समर्प्य अथवा अत्मना सह संस्थाप्य वनं गच्छेत्।[195] बौधायनस्यानुसारंवैखानसऋषिद्वारोपदिष्टशास्त्रानुसारं चाचरणशीलः जन एव वानप्रस्थी वर्तते।[196] अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः जीवनं वैखानसव्रतमुक्तम्।[197] मनोः अनुसारं वानप्रस्थे जीवयिता वैखानसशास्त्रानुसारं जीवनं यापयेत्।[198]

वानप्रस्थिप्रकाराः

विष्णुस्मृतौ एवं बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्रे च वानप्रस्थिनः चतुर्णामाश्रमाणामुल्लेखः कृतो वर्तते। विष्णुस्मृतेः अनुसारं यथा –

1. भूरिसंवार्षिकः – ये वानप्रस्थिनः एकवर्षाय विधिपूर्वकं वनस्यान्नादिपदार्थान् संगृह्णन्ति तथा वानप्रस्थस्य धर्मे तत्पराः सन्तः, जितेन्द्रियाः भूत्वा समयं यापयन्ति।

2. अन्यप्रकारकाः वानप्रस्थिनः मृत्युपर्यन्तं वने निवसन्ति वने प्राप्यमाणस्यान्नस्य षड्मासं यावत् संग्रहं कुर्वन्ति, पंचमहायज्ञे तत्पराः भवन्ति एकस्यां रात्रौ उपवासं कृत्वा द्वितीयदिवसस्य रात्रौ भोजनं कुर्वन्ति तथा धर्मपूर्वकं शरीरं त्यजन्ति।

3. तृतीयप्रकारस्यवानप्रस्थिनः एकस्मै मासाय अरण्यान्नसंग्रहं कुर्वन्ति शुद्धव्रतमेवं कर्माणि च कुर्वन्ति। रात्रिद्वयं उपवासं कृत्वा तृतीयदिवसस्य रात्रौ भोजनं कुर्वन्ति।

---

193 या.स्मृ ., 3/45
194 म.स्मृ., 6/1-4
195 ल. स्मृ., 5/2
196 बौ.धर्म., 2/6/11/16
197 अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 1/29
198 म.स्मृ., 6/21

4. सद्यः प्रक्षालकः- एतेमात्रमेकस्य दिवसस्य कृते अरण्यान्नस्य संग्रहणं कृत्वा पञ्चमहायज्ञे तत्पराः भवन्ति।[199]

बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्रे अपि भिन्ननामभिः प्रकाराः लक्षणानि च प्राप्यन्ते यानि विष्णुस्मृतिप्राप्तलक्षणेभ्यः भिन्नानि सन्ति- यथा

1. वैखानसः- यः अन्तेवासी अरण्येवसन् फलानि, मूलानि तथा कृष्टभूम्यन्नं गृह्णाति, अग्निहोत्रं पंचमहायज्ञं च करोति सः आत्मज्ञानी वैखानसवानप्रस्थः कथ्यते।

2. उदुम्बरः- अयं वानप्रस्थी पूर्वदिशातः फलानि, अकृष्टभूम्यन्नं समिधामादाय च पञ्चमहायज्ञमग्निहोत्रं च करोति, सः महाज्ञानी अपि कथ्यते।

3. फेनपः- यः चतुराभ्यासकर्ता वनवासी, फलात् निष्पन्नतैलेन, वन्यफलेन, श्रुतिविहितवन्यान्नेन चाग्निहोत्रं करोति, जलाशयनिष्पन्नपवित्रजलेन तथा अयाचितवन्यफलेन वनान्नेन चपञ्चमहायज्ञं करोति सः फेनपः कथ्यते।

4. वालखिल्यः – यः वल्कलं तथा चीवरं च धारयति, अग्निहोत्री आत्मज्ञानी चास्ति, संगृहीतान्नं कार्तिकमासस्यान्ते त्यजतिसः वालखिल्यः इत्युच्यते।[200]

इत्थं प्रकारेण वानप्रस्थिनां चतुष्प्रकाराणामुल्लेखः प्राप्यते। विष्णुस्मृतिवर्णितवानप्रस्थिनां प्रकारेषु द्वितीयतृतीयनाम्नामुल्लेखो नास्ति। बौधायनधर्मसूत्रे पचमानकस्य अपचमानकस्य द्वयोः वानप्रस्थिप्रकारयोः वर्णनं प्राप्यते।[201] द्वयोरपिपञ्च-पञ्चभेदाः प्राप्यन्ते। पचमानकस्यपञ्चप्रकाराः प्राप्यन्ते– 1. सर्वारण्यकः 2. वैतुषिकः 3. कन्दमूलभक्षकः 4. फलभक्षकः 5. शाकभक्षकः। इत्थं प्रकारेणैव अपचमानकस्यापि पञ्चप्रकाराः प्राप्यन्ते- 1. उन्मज्जकः 2. प्रवृत्ताशिनः 3. मुखेनादायिनः 4. तोयाहारः 5.

199 धर्मशास्त्रसंग्रहः, पृ. 424

200 धर्मशास्त्रसंग्रहः, पृ. 424

201 बौ.धर्म., 3/3/3/1-6,9-14

वायुभक्षकः च। वैखानसधर्मसूत्रानुसारमपि सपत्नीकापत्नीकनामकभेदद्वयं प्राप्यते।[202] सपत्नीकस्य चत्वारः भेदाः प्राप्यन्ते- 1. औदुम्बरः 2. वैरिंचः 3. बालखिल्यः 4. फेनपः। अपत्नीकस्य अनेकभेदाः प्राप्यन्ते। इत्थमेव महर्षिवाल्मीकिरचितरामायणस्य अरण्यकाण्डे वानप्रस्थिनामनेककोटीनां वर्णनं प्राप्यते यस्यान्तर्गते- वैखानसः, वालखिल्यः,सम्प्रक्षालकः, मरीचिपः, अश्मकुट्टः, शीर्णपर्शाशनः, पत्राहारः, तापसः, दन्तोलूखली, अन्मज्जकः, गायशय्यः, अशय्यः, अनवकाशिकः, मुनिः, सलिलाहारः, वायुभक्षकः, आकाश- निलयः, स्थण्डिल- शाही, उर्ध्ववासी, दान्तः, आर्द्रपटवासाः, सजपः, तपोनिष्ठः, पञ्चाग्निसेव्यादिवानप्रस्थिनामुल्लेखो प्राप्यते।[203]

वानप्रस्थवर्णितानामाचारात्मकधर्माणामुद्देश्यम्

अस्मिन्नाश्रमे वर्णितधर्माणां प्रमुखमुद्देश्यं वासनारागद्वेषमिश्रितगृहस्थाश्रमजीवनस्याचाराद् भिन्नः संयमपूर्णाचारयुक्तः भूत्वा तपोनिष्ठः च भूत्वा अरण्ये वसन् परमतत्त्वस्यान्वेषणमासीत्।[204] अयमाश्रमः ब्रह्मचर्याश्रमस्य संयमपूर्णाध्ययनशील- जीवनस्य तथा गृहस्थाश्रमस्य सुविधाजनकसेवायुक्तजीवनस्य च आचाराणां समुच्चयस्वरूपः आसीत्।[205] अनया विधिना सः वने निवसन् शनैः- शनैः स्वाध्ययनेन, तत्त्वचिन्तनेन, तपस्यया च निजव्यक्तित्वविकासे समर्थो भवति स्म। अतः इदमारण्यकजीवनं संन्यासाश्रमस्य सिद्धतासीद् यत्र समस्तमानसिकविकाराणां शमनं भवति स्म।[206] इत्थं प्रकारेण कठिन- तपसा, त्यागेन, संयमेन, साधनया, आत्मनिग्रहेण पवित्रतापूर्णजीवनं यापयन् वैराग्यप्राप्तिः उद्देश्यम् आसीत्।

---

202 वै.धर्म., 1/7-8

203 रामायणम्, 3/6/2-3

204 तपः इक्षा वनौकसः"। भा.महा., 11/18/42 – 'ईक्षा-तत्त्वविमर्शः"श्रीधरी टीका'

205 भारत की संस्कृति साधना, पृ.216

206 डॉ. राधाकृष्णन्, भारत की अन्तरात्मा, पृ.29

अनेनाश्रमेण सम्बन्धिताचारस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतस्य सप्तमस्कन्धे एकादशस्कन्धे च उपदेशरूपेण प्राप्यते। यत्र नारद-युधिष्ठिर संवादे कृष्णोद्धव संवादे च प्राप्यते, प्राप्तविषयाणां च विवेचनमित्थं प्रकारेण प्राप्यते।

आहारनिमित्तं पदार्थः एवम् आहारविधिः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे वानप्रस्थिनः आहारसम्बन्धिविषये वर्णनं प्राप्यते, अस्यान्तर्गते उक्तमस्ति यद् "वानाप्रस्थी कृष्टभूम्युत्पन्नमन्नम्, अकृष्टभूम्युत्पन्नमन्नम्, अग्निपाकान्नम्, अपक्वान्नं च न गृह्णीयात् केवलं सूर्यतापेन पक्वमन्नमेव गृह्णीयात् ।[207] सः वनस्य पवित्रकन्द – मूलैः अन्यफलैरेव वा शरीरस्य निर्वाहं कुर्यात्।[208] कन्दमूलानि सः अग्नौ भर्जनं कृत्वा, समयानुसारपक्वफलानि ऊलूखले पाषाणे वा कुट्टनं कृत्वा यथासौविद्ध्यं दन्तैः चर्बणं कृत्वा वा भक्षयेत्।[209] सः कं पदार्थं कुतः आनयेत्, कदानयेत्, कं पदार्थं भक्षयेत्, इत्यादिकं ज्ञात्वैव स्वजीवननिर्वाहाय स्वमेव सर्वविधकन्दमूलादीनां संग्रहं कुर्यात्। देशकालाद्यनभिज्ञजनद्वारा आनीतान् भूतकाले संग्रहीतान् वा पदार्थान् नोपयुञ्जेत।[210] महाराजमनुरपि इत्थमेव वानप्रस्थिनां कृते वर्णनमकरोत्- भूमौ उत्पन्नानि, जले उत्पन्नानि शाकादीनि, पवित्रवृक्षोत्पन्नपुष्पाणि, फलानि, मूलानि तथा फलनिष्पन्नतैलान्यपि भक्षयेत्।[211] वानप्रस्थिनां वर्जितान्नेषु मधु, मांसः, कवकम्, भूतृणम्, शेलुफलम्, कृष्टभूम्युत्पन्नमन्नम्, ग्रामे उत्पन्नफलमूलानां परिगणनं वर्तते।[212] अग्नौ पक्वम्, समयानुसारं वृक्षेभ्यः प्राप्तफलानि, पाषाणकुट्टितम्, उलुखले वा कुट्टितं दन्तैः चर्बणं कृत्वा भोक्तव्यम्।[213] पूर्वसंचितमन्नम्

---

207 भा.महा.,7/12/17
208 तथैव 11/18/12
209 तथैव 11/18/15
210 तथैव 11/18/7
211 म.स्मृ., 6/13, अष्टादशस्मृतिसंग्रहः, 104
212 म.स्मृ., 6/14,15
213 म.स्मृ., 6/17, या.स्मृ., 3/39

अश्विनमासे संत्यजेत्।[214] महर्षियाज्ञवल्क्यः एकस्मै दिवसाय, एकमासाय, षड्मासाय एकवर्षाय च भोजनसंग्रहस्य वर्णनं कृतवान्।[215] मनुस्मृतौ एतेषां कृते भोजनग्रहणस्य मात्रायाः वर्णनं कृतं वर्तते यत् ते अष्टग्रासपरिमितमेव भोजनं स्वीकुर्युः।[216] इत्थं प्रकारेण भागवते स्मृतिग्रन्थेषु च वानप्रस्थाहारसम्बन्धी यः विषयः प्राप्यते तत्र समानान्तरभावो विद्यते।

हवनमग्निहोत्राद्याचारश्च

वने स्वयमुत्पन्नधान्यद्वारा नित्य- नैमित्तिककर्मसम्पादनाय चरुपुरोडाशनिर्माणं कृत्वा समयानुसारं संन्ध्यासमये हवनं कुर्यात्।[217] अग्निहोत्रस्य अग्नेः रक्षायै गुहासुकन्दराणामाश्रयं स्वीकृत्य वसो विधातव्यः।[218] वेदविहितपशुद्वारा सः वानप्रस्थी माम् न यजेत्।[219] देवताभिः वानप्रस्थिने अग्निहोत्रस्य, दर्शपौर्णमासस्य, चातुर्मास्यादीनां विधानं तथैव कृतं वर्तते यथा गृहस्थिभ्यः कृतं वर्तते।[220] मनुस्मृतौ इत्थं प्रकारेण वर्णनं प्राप्यते, यथा- अग्निहोत्रम्,[221] पंचमहायज्ञः,[222] भिक्षाप्राप्तान्नेन बलिहरणम्,[223] पुनः अग्निहोत्रम्, दर्शेष्टिः, पौर्णमासः, नक्षेष्टिः, आग्रयणेष्टिः, चातुर्मासस्येष्टिः, उत्तरायणयज्ञः, दाक्षायणयज्ञः, पुरोडाशचरूद्वारा देवताभ्यः होमः इत्यादीनां वर्णनमक्रियत।[224] याज्ञवल्क्यस्मृतौ उक्तमस्ति यद् गृह्याग्निना सह वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत्।[225] अनेन वाक्येन ज्ञायते यत् सोपि अग्निहोत्रादिकं समर्थयतीति। अग्नेः रक्षायै

---

214 म.स्मृ., 6/15, या.स्मृ., 3/47
215 म.स्मृ., 6/18, या.स्मृ., 3/47
216 म.स्मृ., 6/28, या.स्मृ., 3/55
217 भा.महा.,7/12/19, 11/18/7
218 तथैव 7/12/20
219 तथैव 11/18/7
220 तथैव 11/18/8
221 म.स्मृ., 6/4
222 तथैव 6/5
223 तथैव 6/7
224 तथैव 6/9-12
225 या.स्मृ., 3/45

पर्णकुटीरे गुहासु वा वासः भवति स्म तथा स्वयमनावृते स्थले।[226] लघुहारीमध्येपि इत्यत्र अग्निहोत्रविधानस्य वर्णनं प्राप्यते।[227]

वानप्रस्थाश्रमे व्रतम्

वानप्रस्थीपुरुषः यदा रोगेण जरया वा निजकर्तव्यविधानेऽसमर्थः स्यात्, वेदान्तादिवर्णिततत्त्वचिन्तने वा समर्थः स्यात् तथा अनशनादिव्रतानि अनुष्ठेयानि।[228] मनुस्मृत्यनुसारमुक्तं वर्तते यत् चान्द्रायणविध्यनुगुणं मासस्य शुक्लकृष्णपक्षयोः सः वृतमाचरेत्, अथवा शुक्लपक्षान्ते एव तरलरूपेणापक्वां यवागूं सेवेत।[229] याज्ञवल्क्यस्मृतावपि वर्णितं चान्द्रायणव्रतं अथवा सर्वदा कृच्छ्रव्रतं कुर्यात्, पक्षानन्तरं मासानन्तरं दिनस्यावसाने वा भोजनं कुर्यात्।[230]

वानप्रस्थाश्रमे वस्त्राणि

वानप्रस्थी वस्त्रस्य स्थाने वृक्षवल्कलेन, पत्रेण, तृणेन वा आच्छादनयोग्यं वस्त्रसदृशं निर्माय धारयेद् मृगचर्म वा धारयेत्।[231] मनुस्मृतौ मृगचर्म, खण्डितवस्त्रं च पूर्णरूपेण वस्त्रं नोक्तमतः तमेव धारयेत्।[232] अश्विनमासागमनेन सह सः जीर्णवस्त्राणि संत्यजेत्।[233]

वानप्रस्थाश्रमे शौचाद्याचारः

वानप्रस्थी केशान्, रोमाणि, नखान्, समश्रुसदृशान् शरीरस्य मलानि नापसारयेत्, दन्तधावनादिकर्माण्यपि न कुर्यात्, तडागनद्यादिषु, सरोवरादिषु वा स्नायात् पृथिव्यां च

---

226 आ.धर्म., 2/9/22/21-22
227 अष्टादशस्मृतिसंग्रहः, पृ.104
228 भा.महा.,7/12/23
229 म.स्मृ., 6/20
230 या.स्मृ., 3/50
231 भा.महा.,11/18/2
232 म.स्मृ., 6/6
233 तथैव 6/15

शयीत।[234] अयमेव नियमः मनुयाज्ञवल्क्यस्मृत्यादिष्वित्थं प्रकारेण प्राप्यते यत् सः प्रातःकाले स्नायात्, जटारोमनखादिकं च धारयेत्।[235] वानप्रस्थिद्वारा सायं- प्रातः मध्याह्ने च स्नानं कर्तव्यम्।[236]

वानप्रस्थाश्रमे शयनाद्याचारः

मनुस्मृत्यनुसारंभूमावेव विपरिवर्तयेत्।[237] पृथिव्यां शयीत।[238] याज्ञवल्क्यानुसारं शुद्धो भूत्वा भूमावेव शयीत।[239] श्रीमद्भागवतानुसारमपि अस्यैव समर्थनं कुर्वाणो वेदव्यासः कथयति यत् सः पृथिव्यामेव शयनं कुर्यात्।[240] शय्यायामासन्दे च आच्छादनं विनैव भूमौ शयीत।[241]

वानप्रस्थाश्रमे सहनशीलता

श्रीमदभागवते वानप्रस्थिने शारीरिकसहनशीलतायाः वर्णनं प्राप्यते यत् सः शीतवायोः, अग्नेः, वर्षायाः, च प्रकोपादिकं सहेत।[242] व्रतादिद्वारा तावानेव कष्टं सहेत यावता बुद्धिविपर्ययो न स्यात्।[243] ग्रीष्मर्तौ पञ्चाग्नितपः, वर्षर्तौ अनावृत्तप्रदेशे वर्षाधारासहनम्, शीतर्तौ कण्ठपर्यन्तं जले स्थित्वा शीतसहनम्, इत्थं प्रकारेण घोरतपस्यामयं जीवनं गमयेत्।[244] घोरतपस्याद्वारा स्वकीयं चर्म पूर्णरूपेण शुष्कीकुर्याद् येन देहस्य समस्तनाडीनां दर्शनं भवेत्।[245] अन्यस्मृतिषु कथितं यद् ग्रीष्म काले पंचाग्निमध्यस्थो भूत्वा तपः कुर्यात्। अर्थात् त्रिषु ऋतुषु ऋतुधर्मानुकूलम् उग्रतपश्चर्यापूर्णजीवनं गमयेत्।[246]

---

234 भा.महा.,11/18/3
235 म.स्मृ., 6/6, या.स्मृ., 3/48
236 बौ.धर्म., 2/6/11/7, अष्टादशस्मृतिः,पृ. 104
237 म.स्मृ., 6/22
238 म.स्मृ., 6/26
239 या.स्मृ., 3/51
240 भा.महा.,11/18/3
241 आ.धर्म., 2/9/22/23
242 भा.महा.,7/12/20
243 तथैव 7/12/22
244 तथैव 11/18/14
245 तथैव 11/18/9
246 अष्टादशस्मृतिः, पृ. 104

कारणतत्त्वेषु कार्यतत्त्वानां विलयःआत्मस्वरूपे स्थितिश्च

अस्य विषयस्यान्तर्गते प्राप्यते यद् अनशनात् पूर्वं सः आवहनीयाद्यग्नीन् स्वात्मनि विलयेत्। अहम्भावं त्यक्त्वा स्वशरीरे स्थितानि तत्त्वानि तेषां कारणशरीरे विलयेत्।[247] अस्मिन् विषये विस्तृतवर्णनं प्राप्यते यत् सः स्वशरीरे स्थितं रोमछिद्राकाशं आकाशतत्त्वे विलयेत्, प्राणान्वायौ, स्थिततेजः अग्नौ, रक्त- कफादिजलीयतत्त्वानि जले, अस्थ्यादिकठोरपदार्थान् पृथिव्यां विलयेत्।[248] वाणीं तस्याः कर्म शब्दात्मकभाषणं च तस्याः अधिष्ठातृदेवतायामग्नौ, पाणिं तत्कौशलं च इन्द्रे, चरणं तत् गतिं च कालस्वरूपविष्णौ, रतिं उपस्थं च प्रजापतौ, पायुम् उत्सर्गं च तदाश्रयानुसारं मृत्यौ श्रोत्रं तच्छब्दात्मककर्म च दिशासु, स्पर्शं त्वचं च वायौ, नेत्रसहितरूपं ज्योतिषि, मधुरादिरससहितं रसेन्द्रियंजले, घ्राणेन्द्रियं तद्द्वाराघ्रातगन्धं च पृथिव्याम्, मनोरथैस्सह मनः चन्द्रमसि, अवगम्यमानपदार्थैस्सहबुद्धिं ब्रह्मणि, अहंभावं तथा अहंकारं च रुद्रे, चेतनासहितचित्तं क्षेत्रज्ञे, विलयेदेवमेवजीवस्य ब्रह्मणि, पृथिव्याः जले, जलस्याग्नौ, अग्नेः वायौ, वायोराकाशे, आकाशस्याहङ्कारे, अहंकारस्य महत्तत्त्वस्य च अव्यक्ते, अव्यक्तस्य अविनाशिपरमात्मनि लयः कर्तव्यः।[249] इत्थं प्रकारेण अविनाशिपरमात्मरूपेणावशिष्टं यच्चिद्वस्तुवर्तते, सः आत्मा वर्तते, सोऽहमिति ज्ञात्वा अद्वितीयभावे स्थितो भवेत्। यथा स्वाश्रयकाष्ठादिं भस्म कृत्वा यथाग्निः शान्तो भूत्वा स्वरूपे स्थितो भवति तथैव सोऽपि उपरतो भवेत्[250] एवं रीत्या तपश्चर्यां कुर्वन् शनैः शनैः अधिकाधिकं तपः कुर्वता येन स्वबुद्धिः स्थिरीकृता स्यात्, सः अग्निं स्वात्मनि संस्थाप्य उत्तरदिशि गच्छेत्।[251]

---

247 तथैव 7/12/24

248 तथैव 7/12/25

249 तथैव 7/12/26-30

250 तथैव 7/12/31

251 अष्टादशस्मृतिः, पृ. 105

वानप्रस्थनिर्वाहस्य फलम्

वानप्रस्थस्य आचाराणां निर्वहनकर्तारः अनायासेन ऋषीणां महान्तं लोकं गच्छन्ति।[252] देहपातं यावत्, मौनं धृत्वा, अतीन्द्रियतपस्वी ब्रह्म संस्मरन्ब्रह्मलोके पूज्यते।[253] यो वानप्रस्थी स्वमनः वशे संस्थाप्य, समाधिस्थः सन्तपश्चर्यामाश्रयते, सः पापविनिर्मुक्तः, निर्मलतया प्रशान्तरूपेण च तिष्ठति, सः पुराणपुरुषस्य दिव्यस्वरूपं प्राप्नोति।[254]

इत्थं प्रकारेण आश्रमे निवसन् स: वानप्रस्थी सांसारिकैः भौतिकबन्धनैश्च दूरे भूत्वा इन्द्रियनिग्रहम्, कठोरसाधनाम्, तपस्यां च कुर्वाणोमोक्षप्राप्तये उद्योगं करोति स्म तथा स्वप्रवृत्तीनां प्रयोगं सामाजिककल्याणाय संवर्धनाय च करोति स्म।

सः सद्ज्ञानेन सकलमानवान् उपदिश्य सन्मार्गं प्रति प्रेरयति स्म। सः अस्यां कालावधौ निष्कामभावेन जीवहिंसात्यागपूर्वकं जीवनं यापयति स्म। श्रीमद्भागवते स्थाने-स्थाने राजभिः एतादृशस्य चरितयुक्तस्य ऋषिगणस्य सम्मानस्य तथा तेषामुपदेशग्रहणस्य च वर्णनमक्रियत, एवं च एतादृशऋषिगणः अत्यधिकसम्माननीयदृष्ट्यावलोक्यते स्म।

3.2. 4 संन्यासाश्रमः

संन्यासाय वानप्रस्थोपरान्तमायुषः चतुर्थो भागः सुनिश्चितः आसीत्।[255] यत्र सः सांसारिकभोग्यपदार्थान् परित्यज्य एकाकि एवं तपपूर्णजीवनं यापयन् इन्द्रियाणि मनः च निगृह्य मोक्षप्राप्तिप्रयोजनाय निरन्तरं प्रयते स्म। बौधायनधर्मसूत्रानुसारं सः स्वगृहस्थानि एवं वानप्रस्थानि च सकलकर्तव्यानि निभाल्य संन्यस्तो भवेत्।[256] महाभारतस्यानुसारं वानप्रस्थोपरान्तं वृद्धावस्थाकारणात् शरीरस्य दुर्बलतायां रोगग्रस्ते वा सति संन्यासं

---

252 भा.महा.,7/12/17
253 अष्टादशस्मृतिः, पृ. 105
254 तथैव
255 म.स्मृ., 6/33
256 बौ.धर्म., 2/10/17/3-7

स्वीकुर्यात्।[257] मनोः अनुसारम् रागादिषु विजयमवाप्य जितन्द्रिये सतिसंन्यासं गृह्णीयात्।[258] स्मृतिग्रन्थेषु स्पष्टरूपेण उल्लेखः प्राप्यते यत् क्षत्रियस्य वैश्यस्य च कृते केवलं त्रयः एव आश्रमाः विहिताः, एवं संन्यासाश्रमः केवलं ब्राह्मणाय विहितः।[259] विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रेपि एतादृशः एव सिद्धान्तः प्राप्यते।[260]

संन्यासिनः प्रकाराः

यथा संन्यासात् पूर्वविहितानामाश्रमवासिनां विविधप्रकाराणामुल्लेखः वर्तते तथैव संन्यासाश्रमस्य आचारनियमानामनुसारं जीवनयापकानामपि विविधप्रकाराः प्राप्यन्ते। संन्यासोपनिषदः अनुसारम्- कुटीचक्रः, बहूदकः, हंसः, परमहंसः, तुरीयातीतः, तथा वधूतः इत्थं ब्रह्मचारिणां षड् भेदाः प्राप्यन्ते।[261] वैखानसधर्मसूत्रे संन्यासिनां चतुष्प्रकाराणामुल्लेखः वर्तते- कुटीचक्रः, बहूदकः, हंसः परमहंसश्च।[262] एतद्धर्मसूत्रानुसारमेव एते चत्वारः भेदाः विष्णु-स्मृतावपि प्राप्यन्ते- कुटीचक्रः, बहूदकः, हंसः परमहंसश्च। एतेषां श्रेष्ठतासम्बन्धे उत्तरोत्तरक्रमेण श्रेष्ठत्वस्य वर्णनं प्राप्यते।[263] महाभारतेऽपि अस्यपूर्णविवरणं प्राप्यते यथा-

चतुर्विधा भिक्षवस्तु कुटीचक्रबहूदकौ।

हंसः परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः।।[264]

कुटीचक्रः

एते संन्यासिनः एकदण्डिनः त्रिदण्डिनः वा भवन्ति। सकलसुखानि, भोग्यपदार्थान् , पुत्रैश्वर्यसुखं च परित्यज्य प्रयत्नपूर्वकं ममत्त्वादिकं परित्यज्य पुत्रैस्साकमेव निवसन्ति।[265] सः

257 महाभारतम्, 12/244/22

258 कुल्लूकभट्टः, म.स्मृ., 6/33

259 धर्मशास्त्रसंग्रहः, पृ.430

260 अष्टादशस्मृतिः, पृ.72

261 सं.उ., 2/13

262 वै.धर्म.,1/1/11-13

263 धर्मशास्त्रसंग्रहः,पृ.436

264 कृत्यकल्पतरुः,चतुर्दशो भागः, मोक्षकाण्डः, पृ., 2

अन्यस्य कस्यापि भोजनं न स्वीकरोति। कामक्रोधादिकं परित्यज्य पुत्रनिमित्तं धनमपि न संगृह्णाति स्म। यः निजगृहे भोजनादिकं ग्रह्णाति स्म सः कुटीचक्रनामकः संन्यासी इत्युच्यते स्म।[266] पतञ्जलिद्वारा एते ऐकागारिकनामकशब्देनापि सम्बोध्यन्ते स्म।[267]

बहूदकः

यः संन्यासी स्वबन्धुवान्धवान् परित्यज्य, त्रिदण्डं धारयति, भिक्षापात्रं यज्ञोपवीतं च धारयति, प्राणायामं करोति, गायत्रीजपं, हृदये विश्वरूपं भगवन्तं ध्यायन् निजेन्द्रियाणि जित्वा जीवति, कषायवस्त्राणि धारयति सः बहूदकः संन्यासी इत्युच्यते।[268]

हंसः

यः सम्पूर्णवन्धुबान्धवान् परित्यज्य योगमार्गे स्थितो भवति, तथा सकलेन्द्रियसमूहं वशीकृत्य तिष्ठति सः हंस- नामकः संन्यासी कथ्यते। अयं संन्यासी मुमुक्षुः सन् प्राजापत्यम्, चान्द्रायणम्, तुलापुरुषम् तथान्यव्रतान्याचरन्स्वशरीरंशुष्कयति तथा यज्ञोपवीतम्, दण्डम्, जन्तुभ्यः रक्षायै वस्त्राणि च धारयति।[269]

परमहंसः

अयं चतुर्थः प्रकारकः संन्यासी अत्यन्तश्रेष्ठः मतः। अस्य विषये प्राप्यते यत्- यः निरन्तरं स्वशरीरे व्यापकरूपेण ब्रह्मणः दर्शनं करोति, प्राणायामं कुर्वन् सर्वसङ्गैः रहितः स्वस्मिन् स्थितः, आत्मना युक्तः, गृहादिपरिग्रहं संत्यज्य योगी भूत्वा नित्यं पृथिव्यां विचरति सः ध्यानभिक्षुः अर्थात् परमहंसः कथ्यते। [270]

---

265 म.स्मृ., 6/95
266 धर्मशास्त्रसंग्रहः,पृ. 437
267 महाभाष्यम्, 5/1/113
268 धर्मशास्त्रसंग्रहः, पृ.437
269 तथैव
270 अष्टादशस्मृतिः, पृ.75

संन्यासे प्रवेशयोग्यता

ब्रह्मचर्याश्रमे उपनयनसंस्कारानन्तरं विद्यार्थी दीक्षितो भवति ततः परं तस्य वेदाद्यध्ययनं कार्यते उपनयनात् पूर्वं कस्यापि बालकस्य वैदिकसंहिताध्ययनं न कार्यते। गौतमीयतन्त्रे अस्य वर्णनं प्राप्यते-

द्विजानामनुपनीतानां स्वधर्माध्ययनादिषु।

यथाधिकारो नास्तीह सन्ध्योपासनकर्मसु।।[271]

गृहस्थाश्रमेपि समावर्तनसंस्कारस्य पश्चाद् विवाहसंस्कारेण सः ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रमस्य सर्वकर्तव्यानां पालनस्य योग्यतां धारयति। एवं रीत्या यः आश्रमद्वयस्य परिपालनं विधिपूर्वकं कुरुते सः वानप्रस्थाश्रमं प्रवेष्टुं शक्नोति। किन्तु संन्यासाश्रमे प्रवेशयोग्यतायाः वर्णनं स्मृतिग्रन्थेषु प्राप्यते। मनुस्मृतौ उच्यते यद् ऋणत्रयान्मुक्तेः अनन्तरमेव मोक्षप्राप्तेः मार्गं स्वीकृत्य ऋणमुक्तिं विनैव यदि संन्यासे प्रवृत्तो भवति चेत् सः नरकं गच्छति।[272] वेदानध्यायी अपि संन्यासं गृहीतुं न शक्नोति यदि सः इत्थं करोति चेत् सोऽपि नरकं गच्छति, सहैव येन यज्ञानां प्रीणनं कृतं नास्ति सोपि संन्यासस्य योग्यो नास्ति।[273] इत्थं प्रकारेण स्मृतिकालीनसमाजे प्रत्येकं मनुष्याय संन्यासधारणस्य अनुमतिः नास्ति। चतुर्षु वर्गेषु केवलं ब्राह्मण एव संन्यासस्य योग्यो मतः। अपि च येन वेदाद्यध्ययनं कृतं स्याद् ऋणत्रयान्मुक्तिश्च प्राप्ता स्यात् स एव संन्यासग्रहणस्य पात्रं भवति।

संन्यासग्रहणविधिः

प्राचीनभारतीयसमाजे यदा द्विजः वानप्रस्थाश्रमस्य सकलनियमान् परिपालयति स्म तदा संन्यासाश्रमप्रवेशयोग्यतां धारयति स्म। संन्यासाश्रमे प्रवेशाय विशेषानुष्ठानात्मककार्याणां

271 तन्त्र-विज्ञान और साधना, पृ.38

272 म.स्मृ., 6/35

273 म.स्मृ., 6/37

वर्णनं श्रीमद्भागवते एवं मन्वादिस्मृतिग्रन्थेषु विस्तारपूर्वकमक्रियत- श्रीमद्भागवते उक्तमस्ति यद् यदा सम्यकतया विरागस्योत्पत्तिः जायते तदा सः सर्वविधाग्नीन् परित्यज्य संन्यस्तो भवेत्।[274] सः पूर्वं वेदविधिपूर्वकम् अष्टविधश्राद्धान् प्राजापत्ययज्ञं च कुर्यात् तथा तस्य यज्ञस्य ऋत्विजाय निजसर्वस्वं प्रदाय तान् अग्नीन् स्वप्राणेषु संस्थाप्य निरपेक्षो भूत्वा संन्यासे विचरेत्।[275] इतोपि प्राप्यते यद् वानप्रस्थिनि ब्रह्मविचारसामर्थ्यस्य सत्वेपि शरीरं विना सर्वं परित्यज्य संन्यासं गृह्णीयात्।[276] मनुरपि अस्यैव मतस्योल्लेखं कृतवान्। यत्र चोल्लिखितं यद् "सर्वस्वदक्षिणावतीं प्राजापत्येष्टिं समाप्य अग्निमपि स्वस्मिन् आरोप्य ब्राह्मणगृहात् पूर्णकालाय गच्छेत्"।[277]

याज्ञवल्क्यस्मृतावपि इत्थमेव उपदेशः प्रदत्तः "वानप्रस्थस्य गृहस्थाश्रमस्य वानन्तरं सर्ववेदसंबद्धदक्षिणायुक्त- प्राजापत्येष्टिविधानात् परमग्नीन् स्वस्मिन् आरोप्य वेदाध्ययनम्, जपम् च कृत्वा पुत्रमुत्पाद्य अन्नदानं कृत्वा यथाशक्ति यज्ञं कृत्वा मोक्षे मतिं धारयेदन्यथा न।[278] बौधायनस्मृतौ संन्यासग्रहणविधेः अन्त्यन्तविस्तरेण वर्णनं प्राप्यते यत्र शिरसः केशानां कर्तनम्, शमश्रुनखादीनां कर्तनम्, दुग्धस्य, दध्नः, घृतस्य, जलस्य च प्राशनम्, सावित्रीजपः, होमप्रक्रिया, इत्याद्यनुष्ठानानां विधेः वर्णनं प्राप्यते।[279] लधुहारीतस्मृतावपि संन्यासविधेः वर्णनमक्रियत, यत्र वैश्वानरेष्टेः विशेषरूपेण वर्णनं प्राप्यते, अपि च श्राद्धादिकर्मणाम्, अग्नीनां चात्मनि समारोपस्योल्लेखः वर्तते।[280]

वसिष्ठेनापि एवमेव रीत्या संकेतः प्रदत्तः उक्तञ्च परिव्राजकः सर्वप्राणिभ्यः अभयं दक्षिणां च प्रदाय संन्यासे प्रतिष्ठितो भवेत्।[281] एवं रीत्या धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु संन्यासप्रवेशस्य

---

274 भा.महा., 11/18/12
275 तथैव 11/18/13
276 तथैव 7/13/1
277 म.स्मृ., 6/38
278 या.स्मृ., 3/56-57
279 बौ.स्मृ., 2/10/10–56
280 ल.स्मृ., 6/3–4
281 कृत्यकल्पतरुः,चतुर्दशो भागः, मोक्षकाण्डम्, पृ., 2

विधीनां वर्णनमक्रियत। श्रीमद्भागवतमहापुराणेपि एतेषामेव विधीनां समर्थनं सामञ्जस्यं च प्राप्यते।

संन्यासिविहिताचाराः –

संन्यासिनः आचारसम्बन्धे प्राप्यते यत् सः समस्तप्राणिनां हितैषी स्यात्, सर्वदा शान्तः स्यात्, स्वात्मनि एव रमेत, कस्याप्याश्रये न तिष्ठेत् ,नारायणपरायणो भूत्वा एकाकी एव संसारे विचरेत्।[282] सः स्वस्य अनिश्चितजीवनस्य आगम्यमानमृत्योश्च अभिनन्दनं न कुर्याद् इत्थं प्रकारेण जीवनं यापयन् सः कालं प्रतीक्षेत।[283] संन्यासिनः कृते स्पष्टनिर्देशः प्राप्यते यत् सः इच्छति चेत् संन्यासाश्रमचिह्नानि त्यक्तुं शक्नोति अस्य प्रमुखकारणमिदं यत् संन्यासिनः कृते कस्याप्याश्रमस्य बन्धनं धर्मस्य कारणं नास्ति।[284] सः आत्मानुसन्धाने निरतः स्यात्, अत्यन्तविचारशीलः सन् अपि सः समाजे अबोधबालकवत् तथा कविविद्वान्भूत्वापि समाजे मनुष्याणां मध्ये मूकवद् व्यवहरेत्।[285] सः जलं छननं कृत्वा पिबेत्, धरायां दृष्ट्वा चलेत्, नित्यं सत्यं ब्रूयात्, बुद्धिविवेकद्वारा पूर्णविचारणया शरीरद्वारा कार्याणि सम्पादयेत्।[286] सः एकाकी एव विचरणं कुर्यात्, येन सः निरन्तरं चिन्तनशीलः स्याद् एवम् आत्मतत्त्वस्यशोधनं कर्तुं पारयेत्, सः जितेन्द्रियः तिष्ठेत्, अर्थात् सकलभोग्यपदार्थेभ्योविरतः सन् वैराग्यपूर्णजीवनचर्यायाः आचरणं स्यात्, नित्यमात्मन्येव रमेत, सामान्य- रूपेण प्रतिकूलपरिस्थितिषु धैर्यं धारयेत्, सर्वेषु परमात्मानं पश्येत्।[287] ज्ञानेन्द्रियाणि विजित्य सः भोग्यपदार्थानां क्षुद्रतां ज्ञात्वा तान् संत्यजेत् तथा ईश्वरानन्दमात्मनि प्राप्य विचरेत्।[288] सः भिक्षानिमित्तमेव ग्रामम्, नगरम्, आपणं वा गच्छेत्, अन्यस्मिन् समये सः पवित्रदेशे 'तीर्थस्थले',

---

282 भा.महा.,7/13/3

283 तथैव 7/13/6, म.स्मृ., 6/45

284 भा.महा.,7/13/9

285 तथैव 7/13/10

286 तथैव 11/18/16, म.स्मृ., 6/46

287 भा.महा.,11/18/20

288 तथैव 11/18/23

नदीषु, पर्वतेषु, वने आश्रमेषु वा पृथिव्यां ममत्वरहितो भूत्वा विचरेत्।[289] सः दृश्यमानसकल-पदार्थान् क्षरणशीलान् ज्ञात्वा तेभ्यो विरक्तस्स्यात्।[290] निपुणो भूत्वा जडवदाचरणम्, विविध-विधिज्ञः सन्नपि पशुवृत्त्या आचरणम्, विद्वान् सन्नपि विवेकशून्यवदाचरणं कुर्यात्।[291] सः सम्दृष्ट्या युक्तस्स्यात्, धैर्यवान् स्यात्, अतिवादं न कुर्यात्।[292] संन्यासी सर्वासु परिस्थितिषु समानरूपेण तिष्ठेत्।[293] सः सर्वविधसहायतारहितो भूत्वा सर्वदा एकाकी एव पृथिव्यां विचरेद् एवं रीत्या सः स्वमोक्षसिद्धये सुखदुःखानुभवरहितः सन् सम्यग्विचारशीलो भूत्वा मुक्तिमवाप्नोति।[294]

सः अग्निरहितः स्यात्, अन्नप्राप्तिनिमित्तमेव ग्रामं गच्छेत्, स्थिरबुद्धिः स्यात्, मननशीलः इन्द्रियैकाग्रतायुक्तः स्यात्।[295] मनुस्मृतावपि उक्तमस्ति यत् सः स्वात्मनि रमेत, आत्मद्वारा देहसहाय्येन मुमुक्षुः संसारे विचरेत्।[296]

इत्थं प्रकारकलक्षणयुक्ते भगवतः दत्तात्रेयस्य[297] चरित्रे इत्थं प्रकारकाणि लक्षणानि दृश्यन्ते। प्रह्लादद्वारा कृते वर्णने स्पष्टोल्लेखः प्राप्यते।[298]

संन्यासिनः निषिद्धाचारः कर्माणि च

संन्यासिद्वारापरित्याज्याचाराणां कर्मणां च विषये समुचितरूपेण उल्लेखो वर्तते। अस्यान्तर्गते उक्तमस्ति यत् सः संन्यासी असत्यानात्मवस्तुप्रतिपादकशास्त्राणि नाधीयीत, स्वजीवननिर्वाहाय जिविकाप्राप्त्युद्योगं न कुर्यात्, सः वादविवादार्थं तर्कपूर्णवार्तां न कुर्यात्,

---

289 तथैव 11/18/24
290 तथैव 11/18/26
291 तथैव 11/18/29
292 तथैव 11/18/31
293 तथैव 11/18/35
294 म.स्मृ., 6/42
295 तथैव 6/43
296 तथैव 6/49
297 भा.महा.,7/13
298 तथैव 7/13/15-18

संसारे सर्वदा सर्वैः मनुष्यैस्साकं निष्पक्षो भूत्वा व्यवहरेत्।[299] सः शिष्यादिसंग्रहमपि न कुर्यात्, अधिकग्रन्थानामभ्यासं न कुर्यात्, व्याख्यानं न दद्यात्, महत्कार्याणि च नारभेत।[300] सः वेदस्य कर्मकाण्डभागं न व्याख्यायेत्, पाखण्डाचरणं न कुर्यात्, तर्क- वितर्कम्, वाद-विवादं च नकुर्यात्, देहार्थं केनापि द्वेषं न कुर्यात्।[301] कस्मै चिदपि न क्रुध्येत्, अवमानने सत्यपि द्वेषं न कुर्यात्, कदापि असत्यमपि न वदेत्।[302] परिव्राजकः नक्षत्रविद्यया, अनुशासनात्मक-नीतिविद्यादिना अथवा व्यवहाररीत्युपदेशेन वाधिकभिक्षाप्राप्तेः कामनां न कुर्यात्।[303] सः तादृशं गृहं न प्रविशेद्यद् वानप्रस्थिभिः,ब्राह्मणैः,पक्षिभिः,श्वानैः,भिक्षुभिः, वा व्याप्तं स्यात्।[304]

वस्त्रनिर्धारणम्

श्रीमद्भागवते उक्तं वर्तते यत् सः केवलं तावता परिमाणेन वस्त्रं धारयेद् येन गुप्ताङ्गस्याच्छानं स्यात्।[305] भागवतस्यैकादशे स्कन्धे कृष्णोद्धवसम्वादे अस्यैव वर्णनं प्राप्यते यत् सः तावदेव वस्त्रं धारयेदेन लोकमर्यादायाः उल्लङ्घनं न स्यात्।[306] सः जीर्णवस्त्रं धारयेत्।[307]

निवासनिर्देशः

सः निर्जने एकान्तस्थाने तिष्ठेत्।[308] सः सर्वदा नियते स्थाने न वसेत्।[309] सः निवासाय वृक्षस्य मूले वसेत्।[310] इत्थं प्रकारेण ज्ञायते यत् संन्यासी जनसमूहमध्ये न वसेत्। तेन तस्य आध्यात्मिकजीवनमबाधितमेव भवति।

---

299 तथैव 7/13/7
300 तथैव 7/13/8
301 तथैव 11/18/30, म.स्मृ.,6/47
302 म.स्मृ., 6/48
303 तथैव 6/50
304 तथैव 6/51
305 भा. महा.,7/13/2
306 तथैव 11/18/15
307 'स्थूलजीर्णवस्त्रम्'कुल्लूकभट्टः, म.स्मृ., 6/42
308 भा.महा.,11/18/21

चिन्तनम्

संन्यासिने निर्देशः प्राप्यते यत् सम्पूर्णविश्वं कार्यकारणतातः अतीते परमात्मनि अध्यस्तं जानन् कार्यकारण- स्वरूपेऽस्मिन् जगति ब्रह्मस्वरूपात्मानं विवकेपूर्णबुद्ध्या पश्येत्।[311] आत्मदर्शी संन्यासी सुषुप्तिजागरणयोः सन्धौ स्वात्मानुरूपस्य स्वरूपस्यानुभवं कुर्यात्।

अपि च बन्धनमोक्षौ द्वावपि मायारूपौ, वस्तुतः न किमपीत्थं विचिन्तयेत्।[312] सः निरन्तरमीश्वरभावनया परिपूर्णस्स्यात् तथेश्वरं स्वतः अभिन्नम्, अद्वितीयम्, अखण्डरूपं च चिन्तयेत्।[313] सः बन्धनमोक्षविषये चिन्तयेद् अथ च एवमपि निश्चिनुयाद् यद् विषयप्राप्त्यर्थमिन्द्रियाणां विक्षिप्तिरेव बन्धनं तथा संयम एव मोक्ष इति।[314] सः मनसः, वाण्याः, प्राणानां च संघातरूपजगत् मायारूपं ज्ञात्वा आत्मस्वरूपे स्थितस्स्यात्, ततश्च जगतः चिन्तनं न कुर्यात्।[315]

दण्डधारणम्

दण्डधारणस्यदार्शनिकोल्लेखः श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् वाण्यै मौनम्, शरीराय निश्चेष्टस्थितिः, मनसे च प्राणायामरूपी दण्डः वर्तते, यस्य सकाशे एते त्रयः दण्डाः वर्तन्ते सः दण्डी, केवलं शरीरे वंसदण्डधारणेन कश्चन दण्डी न भवति।[316] अत्र दण्डेनाशयः नियन्त्रणं सञ्यमश्च, यदि संन्यासी एवं प्रकारेण निजजीवने संयमं न धारयति चेत् सः स्वमार्गात् पथभ्रष्टः पतितश्च मन्यते।

---

309 अनिकेतो गृहशून्यः'कुल्लूकभट्टः, म.स्मृ., 6/42

310 वासार्थं वृक्षमूलानि' तथैव

311 भा. महा.,7/13/4

312 तथैव 7/13/5

313 तथैव 11/18/21

314 तथैव 11/18/22

315 तथैव 11/18/27

316 तथैव 11/18/17

भिक्षा भोजनं च

संन्यासी कस्माद् भिक्षां स्वीकर्तुं शक्नोति, कस्माच्च भिक्षा स्वीकर्तव्या, भिक्षया प्राप्तं भोजनं कथं कर्तव्यमित्यादिविषयाणां प्रतिपादनं श्रीमद्भागवते कृतं वर्तते यद् चतुर्षु वर्णेषु ये पतिताः अर्थात् पातकिनः सञ्जाताः तेभ्यः भिक्षां न याचेत, सहैव सः केवलमनिश्चितसप्तगृहेभ्य यावन्मात्रया प्राप्येत तावत्या एव सन्तुष्येत।[317] इत्थं प्रकारेण प्राप्तभिक्षामादाय ग्रामाद्बहिः जलाशयं गत्वा हस्तपादौ प्रक्षाल्य भिक्षां पवित्रीकृत्य ब्रह्मविष्णुसूर्यसमस्तप्राणिषु यथाशास्त्रविधि समुचितविभागं कृत्वावशिष्टान्नं भक्षयेत्।[318]

वानप्रस्थिभ्यः भिक्षां याचयित्वा प्राप्तान्नेन शिलविधिना प्राप्तान्नेन वा संन्यासस्य सिद्धिः भवति।[319] सः भोजनस्य प्राप्तौ अप्राप्तौ वा हर्षं शोकं च न प्रकटयेद् द्वयोरपि स्थित्योः धैर्यं धारयेत्।[320] प्राणनिमित्तमेव भिक्षाटनं कर्तव्यं यतोहि प्राणानां स्थैर्ये तत्त्वविचारः तत्त्वविचाराच्च तत्त्वज्ञानस्य प्राप्तिः तेन च मुक्तिमवाप्नोति। [321] कुल्लूकभट्टः मनुस्मृतेः टीकायां भिक्षापात्रं वर्णितवान्, सः भिक्षार्थं मृत्पात्रमुपयुञ्जीत। [322] निरन्तरं भिक्षायाचनेन तस्य हृदयाद् व्यवहाराच्च अहङ्कारः निर्गच्छति। तथा सः ईश्वरस्य सानिध्यमवाप्नोति।

परमहंसधर्माः

श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् ज्ञाननिष्ठः, विरक्तः, मुमुक्षुः, भक्तपुरुषश्च वेद-शास्त्रोक्तविधिनिषेधेभ्यः परं भूत्वा स्वच्छन्दं विचरेयुः, एवं ते आश्रममर्यादासु निर्बद्धाः न भवन्ति।[323] एतं सन्दर्भं श्रीधरस्वामी निजश्रीधरीटीकायां स्पष्टीकुर्वन् उल्लिखति यद्

---

317 तथैव 11/18/18
318 तथैव 11/18/19
319 तथैव 11/18/25
320 तथैव 11/18/33
321 तथैव 11/18/34
322 'मृन्मयकर्परादिभिक्षापात्रम्'कुल्लूकभट्ट, म.स्मृ., 6/44
323 भा.महा., 11/18/28

एतस्मात्पूर्वं संन्यासिनां ये धर्माः कथिताः ते बहूदकसंन्यासिनां धर्माःसन्ति अस्मिन् भावे परमहंसानां धर्माः कथिताः।[324]

ज्ञाननिष्ठसंन्यासिनः धर्माः

ज्ञानीपुरुषः शौचस्य, आचमनस्य, स्नानादिकर्माणि केवलं लीलामाध्यमेन आचरेद् केवलं विधिकिंकरो भूत्वा पालनं न कुर्यात्,[325] ज्ञाननिष्ठपुरुषं प्रति एवमुक्तमस्ति यतोहि सः पूर्णकालाय अभेदत्त्वं प्राप्तवान्, यस्माद् मृत्योः परं सः ईश्वरेण सह एकत्वं भजेत।[326]

वैराग्यनिष्ठसंन्यासिधर्माः

ज्ञाननिष्ठसंन्यासिने एतादृशाः नियमाः नोक्ताः अस्य प्रमुखकारणमिदं वर्तते यत् सः अभेदत्त्वभावे स्थितो वर्तते तस्य पतनमिदानीं न सम्भवम्, किन्तु यस्य एतादृशं ज्ञानं भावश्च एतावता न जागृतः सः पतितः भवितुमर्हति एतं विषयं मनसि निधाय श्रीकृष्णः उद्धवाय वैराग्यनिष्ठसंन्यासिधर्मान् प्रणिगदति। जितेन्द्रियपुरुषस्य यदेदं निश्चितं स्यात् संसारविषयभोगस्य फलं दुःखस्वरूपं वर्तते तदा सः विरक्तस्सन् गुरोः मुनेश्च शरणं गच्छेत्।[327] सः गुरोः भक्तिं कुर्यात्, श्रद्धां धारयेत्, गुरोः दोषान् नान्वेषयेत्, ब्रह्मज्ञानप्राप्तिपर्यन्तं गुरावीश्वरभावं निधाय तं सेवेत्।[328] एवं रीत्या सः ब्रह्मज्ञानप्राप्तिपर्यन्तं संन्यासाश्रमे जीवनं यापयेत्।

श्रीकृष्णोद्धवसंवादे इदंस्पष्टरूपेण प्राप्यते यद् यदि संन्यासग्रहणोपरान्तम् इन्द्रियनिग्रहद्वारावैराग्यं न सिद्ध्यति सः ज्ञानवैराग्यरहितो वर्तते तथापि सः त्रिदण्डिसंन्यासीभूत्वा स्वोदरपोषणं करोति चेत् सः ईश्वरेण सह विश्वासघातं करोति, एवं रीत्या सः ऐहिकपारलौकिकोभयगतिभ्यां वञ्चितो भवति, तस्य पतनं संजायते।[329]

---

324 "एवं बहूदकादिधर्मानुक्त्वा परमहंसधर्मानाह"श्रीधरीटीका, भा.महा., 11/18/2८

325 तथैव 11/18/36

326 तथैव 11/18/37

327 तथैव 11/18/38

328 तथैव 11/18/39

329 तथैव 11/18/40-41

पुर्वोक्तप्रकारेण अस्मिन्नाश्रमे जनः स्वसमस्तेच्छाः कामनाः पूर्णरूपेण त्यक्त्वा एकाग्रचित्तेन ईश्वरभक्तौ विलीनो भूत्वा नितान्तमेकाकितपस्विजीवनं गमयन् मोक्षप्राप्तिप्रयासान् कुर्वाणः स्यात्। अस्मिन्नाश्रमे यद्यपि तेसमाजात् पूर्णतः पृथग् वसन्ति स्म तथापि स्वसुदृढानुशासनेन, संयमेन, तपश्चर्यया, निवृत्या अहिंसया च समाजं सन्मार्गं प्रेरयन्ति स्म। समाजस्यनागरिकाः अपि तेषामनुशासितानासक्तजीवनेन प्रेरणां प्राप्नुवन्ति स्म।

श्रीमद्भागवतगतप्राप्यविषयानां विवेचनेनं प्राप्यते यद् व्यक्तिः क्रमेण प्रत्येकमाश्रमस्य व्यक्तिगतकर्तव्यानि, उत्तरदायित्वानि, परिपालयन् समस्तासक्तिभिः अनासक्तो भूत्वा जीवने मुक्तिभावं प्राप्नोति। शास्त्रीय- परम्परायां मनुष्यजीवनं सफलीकर्तुमेतेषां चतुर्णामाश्रमाणां निर्माणमत्यधिकमनोवैज्ञानिकविधिनाक्रियत, येन सः जीवने प्रयुज्यमानव्यवहारस्य, आचारस्येत्यादीनां च ज्ञानं गुरूकुले उषित्वा विनम्रतापूर्वकं प्राप्नोति स्म। ततः परं सः विवाहितः सन् प्राप्ताचाराणां ज्ञानस्येत्यादीनां च प्रयोगं कृत्वा गृहस्थाश्रमे वंशादीनां विस्तारं कृत्वा नित्य – नैमित्तिक – काम्य- कर्मणां विधिवदनुष्ठानं कृत्वा स्वकर्तव्यकर्मणः निवृत्तो भूत्वा वानप्रस्थं स्वीकृत्य अत्र विद्यमानसर्वविधानुष्ठानं विधाय सकलद्वन्द्वान् विजित्य संन्यासमार्गे अग्रसरो भवेत् क्रमशः मुक्तिभावं च सम्प्राप्य मोक्षं प्राप्नुयात्। आश्रमव्यवस्था मनुष्यजीवनस्य साफल्याय सुगमसाधनरूपेण प्राप्यते। एतन्माध्यमेन जीवशैल्याः सौन्दर्यपूर्णविधिज्ञानाय मार्गः प्राप्यते यश्च सकलसंसाराय भारतीयसनातनजीवनशैलीद्वारा प्रदीयते। भारतीयाश्रमव्यवस्था अद्भुतजीवनयापनस्य कला वर्तते अत्र न कश्चित्संदेहः। श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते चतुर्णामाश्रमाणां यत् किमपि उपदेशात्मकशैलीरूपेण तथा पात्राणां जीवनशैलीरूपेण वा प्राप्यते तद्धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या सङ्गतमेव प्राप्यते।

---*---

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्काराः

4.1 गर्भाधानसंस्कारः

4.2 पुंसवनसंस्कारः

4.3 जातकर्मसंस्कारः

4.4 नामकरणसंस्कारः

4.5 उपनयनसंस्कारः

4.6 समावर्तनसंस्कारः

4.7 विवाहसंस्कारः

4.8 अंत्येष्टिसंस्कारः

वैदिकर्षिभि: सकलसामाजिकानां समुन्तं विकसितञ्च जीवनं लक्षीकृत्य येन प्रकारेण विधये व्यवस्थापिता:, तेषु संस्कारा: महत्त्वाधायिनो वर्तन्ते, संस्कारै: मानवस्य जीवनं सुसंस्कृतं, सुव्यवस्थितम्, अनुशिष्टञ्च भवति। तत्रैव एतेषां नियोजने मनुष्यस्य समाजस्य च सहकारिकल्याणं निहितं वर्तते। संस्काराणामनुष्ठाने यत्र मानवस्य भौतिकोत्थानं सांस्कृतिकोत्थानञ्च अक्ष्णा लक्षीकृत्य नियोज्यते तत्रैव आध्यात्मिकप्रयोजनमपि एते पूरयन्ति। एतै: मानवस्य जीवनमपि परिशुद्धं भवति। इत्थंप्रकारेण मन्यते यत् संस्कारहीनमनुष्यः सकलविधकार्येषु अयोग्यः भवति। एवं च संस्कारेणैव मनुष्यस्य जीवनम् उन्नतं परिष्कृतं पवित्रञ्च विधातव्यं वर्तते। येन च स एकाग्रचित्तो भूत्वा स्वजीवनस्य परमलक्ष्यं प्राप्नुयात्। संस्कारा: मनुष्याणां जीवनं परिमार्ज्य सुसंस्कृतं कर्तुं प्रवृत्ता: वर्तन्ते। शंखस्मृत्यानुसारं संस्कारै: संस्कृत: अष्टमिरात्मगुणैश्च संयुक्तो मनुष्य: ब्रह्मलोकं गत्वा ब्रह्मपदं प्राप्नोति यस्मात् पुनः सः न च्यवते इति।

यथा-

संस्कारैः संस्कृतः पूर्वैरूत्तरैरनुसंस्कृतः।

नित्यमष्टगुणैर्युक्तो ब्राह्मणो ब्राह्मलौकिकः।

ब्राह्मं पदमाप्नोति यस्मान्न च्यवते पुनः।।[1]

संस्काराङ्गभूतयज्ञै: कर्मकाण्डैश्च देवता: प्रसादीकृत्य जीवनं सुखमयं कर्तुमाचर्य्यते मनुष्यै:। येन च जीवने विघ्नानां विघातव्यं भवितव्यं भवेत्, जीवनस्य विविधसोपानेषु एतेषाम् अनुष्ठानं विधीयेते येन मनुष्यस्यान्त:करणे समसामयिकविकृतीनामभावो भवेत् तथा सः स्वाभाविकगत्या स्वजीवनं विकासेत्।[2] डॉ. राजबलीपाण्डेयानुसारम् एतेषां मुख्योद्देश्यं केवलम्

---

[1] वीरमित्रोदय:, संस्कारप्रकाश:, पृ. 140

[2] सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 140

औपचारिकदैहिकसंस्कारे न, अपि तु संस्कार्यव्यक्तेः सम्पूर्णव्यक्तित्त्वस्य परिष्कारः शुद्धता परिपूर्णता चास्ति।[3] लक्ष्मीदत्तठाकुरानुसारं संस्काराणां मुख्यं प्रयोजनं केवलं शारीरिकसौन्दर्यस्य अभिवृद्धिः न भवति अपि तु तस्य आध्यात्मिकाभ्युदयं भवति।[4] प्राचीनकालादारभ्य एव अनेकविधपरिवर्तनानन्तरमपि हिन्दूसमाजे एतेषां संस्काराणां महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति।

संस्कारशब्दः नित्यपुल्लिङ्गी वर्तते। अस्य व्युत्पत्तिः **"सम"** उपसर्गपूर्वकात् **"कृञ् करणे"** धातोः भावार्थे **"भावे घञ्"** इत्यनेन घञ्प्रत्यये कृते प्रदर्श्यते यस्य तात्पर्यं परिशोधनं शुद्धता वा वर्तते।[5]

महाभारतस्य आदिपर्वणि महर्षिव्यासानुसारेण संस्कारो नाम संस्कृत: परिष्कृत: परिमार्जितो वा संवृत्तो भवतीति यथाहि – **"संस्कारैः संकृतास्ते"**।[6]

शबरस्वामिनानुसारं संस्कारो नाम येन व्यक्तिः कार्ययोग्यो भवति यथाहि – **"संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य"**।[7]

महर्षिजैमिनिना संस्कारस्य सम्बद्धता यज्ञीयपवित्रनिर्मलकार्यैश्च सह निरूपिता।[8]

तन्त्रवार्तिकानुसारं संस्कारो नाम ता: क्रिया: विधयश्च वर्तन्ते यै: योग्यता जायमाना भवति- **योगयतां चादधानाः क्रियाः संस्काराः इत्युच्यन्ते**।[9]

जगद्गुरवादिशङ्कराचार्यानुसारं संस्कारेण गुणाधानं क्रियते दोषाणाम् अपनयनञ्च क्रियते – **"संस्कारो हि नाम गुणाधानेन वा स्याद् दोषापनयनेन वा"**।[10]

---

[3] हिन्दू संस्कार, पृ. 19
[4] ठाकुरः, लक्ष्मीदत्तः, प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, पृ. 76
[5] श. द्रु., पञ्चमकाण्डम्, पृ. 206
[6] महाभारतम्, 1/108/18
[7] शबर, पूर्वमीमांसा पर टीका, 3/1/3
[8] पू. मी., 3/2/14, 3/8/3
[9] तं. वा., पृ. 1078

वीरमित्रोदये नाम्नि निबन्धग्रन्थेऽपि संस्कारस्य परिभाषा प्राप्यते। तत्र निर्देशोऽस्ति यत् शारीरिकाध्यात्मिकप्रकृत्या सविधिकानुष्ठानानामेव संस्कारत्वमिति। यथाहि –

"आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितग्रियाजन्योऽतिशयविशेषः संस्कारः"।[11]

आधुनिकविद्वद्भिरपि संस्कारशब्दः परिभाषितो वर्तते। राजबलीपाण्डेयानुसारं शुद्ध्यर्थं क्रियमाणा: धार्मिकी क्रियाः संस्कारान्तर्गता: वर्तते। इतोऽपि व्यक्तेः दैहिकं, मानसिकं, बौद्धिकं च परिष्करणं तदर्थं क्रियमाणम् अनुष्ठानम् संस्कारपदवाच्यं भवति। एभि: मनुष्य: परिपूर्णतया समाजनिष्ठो भवेत्।[12] लक्ष्मीदत्तठाकुरानुसारं – "संस्कारेणाभिप्रायः व्यक्तौ कार्यनिष्पादनशक्ते: प्रसरणं कर्तव्यमस्ति। प्रत्येकं कार्यार्थं विशिष्टशिक्षायाः आवश्यकता अनुभूयते। यावत्पर्यन्तं तद्विषयिणिशिक्षा न प्राप्यते तावत्पर्यन्तं तस्मिन् योग्यता न निष्पद्यते। प्रत्येकमपि मनुष्यः स्वधर्मानुसारं कार्यं करोति। अतः कस्मिञ्चित् कार्ये व्यक्तेर्योग्यतानिष्पादनमेव संस्कारः तस्य धर्मैरिति। मनुष्यः स्वाभ्युदयनिःश्रेयसार्थं यत् कर्म करोति तत् मनुष्यस्य धर्मः तथा यानि कर्माणि एतदर्थं क्रियन्ते तान्येव संस्कारपदेन कथ्यन्ते। अतः 'धर्मः' संस्कारस्यैव नामान्तरं वर्तते। अतः एव मनुना संस्काराः द्विधा विभक्ताः। प्रथमकोटौ वर्तमाना संस्काराः ये सन्ति तै: संसारिणां पापानां दोषाणाञ्चापनयनं भवति तथा च अभ्युदयनिश्रेयसलक्षणसिद्धिं साधयितुं कर्मणा योग्यतासिद्धि: एभि: भवति। द्वितीयकोटौ तादृशा: संस्काराः सन्ति येषां कृते सति स्वाध्याया, होमः, यज्ञोऽथवा अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धा:वर्तन्ते "।[13]

संस्काराणां प्रयोजनम्

मनुष्यजीवने जन्मतः आरभ्य मृत्युं यावत् संस्काराणां महत्त्वातिशये दृयते। मनुष्यस्य शारीरिकविकासनिमित्तं भौतिकविकासार्थं च जीवनप्रणाली सुव्यवस्थीकरणार्थं संस्काराणां

---

[10] वेदान्त सूत्र पर भाष्य, 1/1/4

[11] वीरमित्रोदय:, संस्कारप्रकाश:, पृ.132

[12] पाण्डेय:, राजबली, हिन्दू संस्कार, पृ. 19

[13] ठाकुर:, लक्ष्मीदत्त:, प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, पृ. 80-81

विधानं धर्मसूत्रेषु, स्मृतिषु, पुराणेषु इत्यादिषु च कृतं वर्तते। प्रामुख्येन मानवजीवने कुप्रभावाधायिनां विघ्नानां शमनार्थं संस्कारा: प्रवृत्ता: दृश्यन्ते। वस्तुतः एतेषां मुख्यं ध्येयं वैदिकदेवतानां पौराणिकानां च समाराधनेन सह सर्वविधौत्कर्ष्याय, शारीरिकमानसिकदोषाणां परिमार्जनम् एवं च नूतनगुणानामाविष्करणं वर्तते। मनुस्मृतौ लभ्यते यत् संस्कारेण लोक: परलोकश्च पवित्रो भवति।[14] श्रीमद्भागवतेऽपि संस्कारेण शुद्धेः सम्बन्धः प्राप्यते।[15] ये तावत् गर्भाधानादि-अन्यतेष्टिद्वारा सुसंस्कृताः भवन्ति त एव 'द्विजाः' इति संज्ञया सम्बोध्यन्ते।[16] संस्कारतत्त्वे हारीताचार्यस्य उद्धतमतानुसारं यदा कश्चित् व्यक्तिः गर्भाधानविध्यानुसारं सम्भोगे कर्मणि प्रवृत्तो भवति तदा सः स्वभार्यायां वेदाध्ययनयोग्यं भ्रूणं स्थापयति इति। पुसवनसंस्कारेण सः गर्भस्थस्य पुरुषत्वं नरत्वं वा सम्पादयति। सीमन्तोन्नयनसंस्कारेण मातृपितृभ्याम् उद्भूतानां दोषाणामपनयनं करोति। बीज-रक्त- भ्रूणेन च उत्पन्ना: दाषाः जातकर्म-नामकरण-चूडाकरण-समावर्तनेन च विधिपूर्वकं अपहृत्या: क्रियन्ते इत्थम् इमे दोषाः नष्टाः भवन्ति। एतैः अष्टप्रकारकैः संस्कारैर्नाम गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-जातकर्मनामकरण-अन्नप्रासन-चूडाकरण-समावर्तनैश्च पवित्रत्त्वस्य प्राप्तिर्भवति।[17] एवं च संस्कारैः संस्कृतो व्यक्तिः सामाजिकमूल्यानां आदर्शानां च ज्ञानं लभते। एतेषामनुष्ठाने जायमानविविधप्रकारकविधिविधानैः अनुष्ठानादिर्भ: वा मनुष्यस्य सामाजिकीकरणं भवति। संस्काराणां मुख्यमुद्देश्यं भौतिकव्यृद्धि: लौकिकसमृद्धिश्च वर्तते। दीर्घजीवनं, सुखं, समृद्धिः, सम्पत्तिः, शक्ति:, बुद्धि:, वैभव:, सन्तति: एतेषामिच्छां याचनां वा व्यक्ति: देवतायै करोति। संस्काराणां ध्येयं निवारणार्थकमपि वर्तते संस्कारेण अदृश्यबाधानाम् अशुभशक्तीनाञ्च विनाशस्य कामना अपि क्रियते।

---

[14] म. स्मृ., 2/26

[15] भा. महा., 10/5/4

[16] भा. महा., 7/15/52

[17] संस्कारतत्त्व, पृ. 857

संस्काराणां संख्या

संस्कारः शब्दोऽयं प्रकृतार्थे वैदिकवाङ्मयेऽलभ्योऽस्ति परं च वैदिकवाङ्मयेऽनेकत्र गर्भाधान-विवाह-अन्येष्टिसम्बद्धधार्मिकक्रियाणामुल्लेखः प्राप्यते। ऋग्वेदीयशाकलसंहितायाम्, अथर्ववेदीयशौनकसंहितायां, गोपथब्राह्मणे, शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिशतपथब्राह्मणे, उपनिषत्सु च संस्कारान्तर्गतक्रियाणां वर्णनं विस्तारपूर्वकं प्राप्यते। इत्थं संस्कारशब्दं अप्रयुक्त्वाऽपि कर्मकाण्डान्तर्गतयज्ञानां, पूजाविधीनां, अर्चनापद्धितीनाञ्च विवेचनं समुपलभ्यते। संस्काराणां सविस्तरं वर्णनं तद विधीनां क्रमपूर्वकं सविस्तरं वर्णनं च गृह्यसूत्रेषु कृतं वर्तते। धर्मसूत्रेषु स्मृतिषु च संस्काराणां नामानि वर्णितानि सन्ति।

विविधगृह्यसूत्राणामनुसारेण संस्काराणां संख्या

आश्वलायनगृह्यसूत्रे एकादशसंस्काराणां वर्णनं प्राप्यते- विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, चूडाकरणं, अन्नप्राशनम्, उपनयनं, समावर्तनं, अन्तेष्टिश्च इति।[18]

पारस्करमुनिभिः स्वग्रन्थे पारस्करगृह्यसूत्राख्ये षोडशसंस्काराणामुल्लेखः कृतः- विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, केशान्तसमावर्तनम्, अन्त्येष्टिश्चेति।[19]

शाङ्खायनगृह्यसूत्रे द्वादशसंस्काराणां वर्णनं समुपलभ्यते- विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणम्, उपनिष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, कर्णवेधनम्, उपनयनं, समावर्तनं, पितृमेधश्चेति।[20]

---

[18] अस्थाना, रीना,गृह्यानुष्ठानों का सांस्कृतिक अन्वेषण, पृ. 70

[19] तथैव

[20] तथैव पृ. 71

वाराहगृह्यसूत्रे त्रयोदशसंस्काराणां वर्णनं समुपलभ्यते- जातकर्म, नामकरणं, दन्तोगमनम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, वेदव्रतानि, गोदानं, समावर्तनं, विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनम् इति।[21]

वैखानसगृह्यसूत्रान्तर्गते वैखानसमुनिभिरष्टादशसंस्काराणां वर्णनं विधत्तं- ऋतुसंगमनं, गर्भाधानं, सीमन्तं, विष्णुबलिः, जातकर्म, उत्थानं, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, प्रवसागमनं, पिण्डवर्धनं, चौलकर्म, उपनयनं, पारायणं, व्रतबन्धविसर्गः, उपाकर्म, उत्सर्जनं, समावर्तनं, पाणिगृहणम् इति।[22]

गौतमगृह्यसूत्रे गौतमधर्मसूत्रवदेव चत्वारिंशत्संस्काराणामुल्लेखो व्यधायि सूत्रकृता।[23] गौतमधर्मसूत्रैव चत्वारिंशत्सङ्ख्यका: संस्काराः उल्लिखिताः सन्ति ते च- गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, चौलकर्म, उपनयनं, वेदस्य चत्वारः व्रतं, स्नानं, विवाहः, पञ्चमहामखाः (देवयज्ञः, पितृयज्ञः, मनुष्ययज्ञः, भूतयज्ञः, ब्रह्मयज्ञः), सप्तपाकयज्ञाः (अष्टका, पावर्णः, श्राद्धः, श्रावणी, आग्राहायणी, चैत्री, आश्वजायी), सप्तहविर्यज्ञाः (अग्न्याधेयम्, अग्निहोत्रं, दर्शपूर्णमासः, आग्रायणं, चातुर्मास्यं, निरूढपशुबन्धः, सौत्रामणिः), सप्तसोमयज्ञाः (अग्निष्टोमः, अत्यग्निष्टोमः, उक्थ्यः, षोडशी, वाजपेयः, इतिरात्रः, आप्तोर्यामः)।[24] एवं प्रकारेण गौतमस्मृत्यामपि चत्वारिंशत्संस्काराः उल्लिखिताः सन्ति।[25]

विष्णुधर्मसूत्रे दशसंस्काराणामेव वर्णनमस्ति परन्तु तत्र गर्भाधानं 'निषेधः' इति नामान्तरेण, नामकरणं 'नामध्येयम्' इति नाम्ना, निष्क्रमणं 'आदित्यदर्शनम्' नाम्ना च अभिहितं वर्तते।[26]

---

[21] अस्थाना, रीना,गृह्यानुष्ठानों का सांस्कृतिक अन्वेषण, पृ. 71

[22] तथैव

[23] तथैव

[24] गौ. धर्म., 1/8/14 - 22

[25] अष्टादशस्मृतिः, पृ. 578

[26] सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 142

अङ्गिरसा ऋषिणा पञ्चविंशतिसङ्ख्यानां संस्काराणामुल्लेखो व्यधायि। तेनोद्धृता: संस्कारा: एते सन्ति- गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तं, बलिः, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चौलकर्म, उपनयनं, वेदस्य चत्वारि व्रतानि, स्नानोद्वाहः, आग्रहणं, अष्टका, श्रावणी, आश्वयुजी, मार्गशीर्षी, पार्वणः, उत्सर्गः, उपाकर्म, पञ्चमहायज्ञाः इति।[27]

जातूकर्ण्यद्वारा षोडशसंस्काराणां वर्णनं कृतमस्ति – आधानं, पुंसः, सीमन्तः, जातकर्म, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, चौलकर्म, मौञ्जी, चतुर्व्रतानि, गोदानं, समावर्तनं, विवाहः।[28]

महर्षिमनुना मनुस्मृतौ त्रयोदशसंस्काराणां वर्णनं विधत्तम्। ते संस्कारा: एते सन्ति – गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, केशान्तः, समावर्तनं, विवाहः, अन्त्येष्टिश्चेति।[29]

महर्षियाज्ञवल्क्येनापि केशान्तसंस्कारमनुक्त्वा मनुस्मुतौ वर्णितानां संस्काराणामुल्लेखो व्यधायि।[30]

राजबलीपाण्डेयानुसारं महर्षिगौतमेन उद्धृतसंस्काराणाम् अनुक्रमणिकायां संस्कारेषु यज्ञेषु च भेदो न दृश्यते। सर्वाणि गृह्यकृत्यानि सर्वे श्रौतयज्ञाश्च येषां केषामपि ब्राह्मणेषु श्रौतसूत्रेषु च विशद्वर्णनं प्राप्यते ते सर्वे उपर्युपरि उद्धृतसंस्कारेषु अनुविद्धा: सन्ति। अत्र संस्कारशब्दस्य प्रयोगः सामान्यरूपेण समस्तधार्मिककृत्येषु वर्तते।[31]

हारीतानुसारेण यज्ञानां समावेशो देवसंस्कारेषु तथा च मनुष्यजीवने विभिन्नस्थलेषु सम्पाद्यमानानां संस्काराणां समावेशो ब्राह्मसंस्कारे कर्तव्योऽस्ति। केवलमात्रं ब्राह्मसंस्काररेव

[27] वीरमित्रोदय:, संस्कारप्रकाश:, पृ. 135

[28] तथैव

[29] म. स्मृ., 2/16

[30] या. स्मृ., 1/11 - 12

[31] पाण्डेय:, राजबली, हिन्दू संस्कार, पृ. 23

यथार्थतया 'संस्कार' नाम्ना अभिधेयोऽस्ति।[32] निःसन्देहेन यज्ञोऽपि परोक्षतया पावित्र्यसम्पादनैकप्रयोजनो भवति किन्तु तेषां मुख्यं लक्ष्यं देवानामाराधना वर्तते तथा च संस्काराणां प्रधानं ध्येयं संस्कार्यव्यक्तेः व्यक्तित्त्वं तथा देहस्य सुसंस्कृतीकरणम्।[33] स्मृत्यान्तर्गतसंस्कारशब्दस्य प्रयोगः केवलमात्रं तेषु एव धार्मिककृत्येषु कृतो वर्तते येषाम् अनुष्ठानं व्यक्तेः व्यक्तित्त्वशुद्ध्यर्थं क्रियते।[34] सकलस्मृतिनां पुराणानां च पर्यालोचनेन स्पष्टीभवति यत् संस्कारान् विना मनुष्याणां सर्वविधविकासः न भवितुं शक्यते। संस्काराणां सङ्ख्यात्मकदृष्ट्या अनेकानेकमत-मतान्तरं प्रप्यान्ते परन्तु भारतीयसमाजे षोडशसंस्कारान् सर्वसम्मत्त्या स्वीक्रियन्ते। षोडशसंस्काराः इमे वर्तन्ते – गर्भाधानम्, पुंसवनम्, सीमन्तोन्नयनम्, जातकर्म, नामकरणम्, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनम्, चूडाकरणम्, कर्णभेदनम्, विद्यारभ्यः, उपनयनम्, वेदारम्भः, केशान्तः, समावर्तनम्, विवाहः, अन्त्येष्टिश्चेति।

संस्काराणां प्रकारा:

संस्काराणां संख्यामाधाय प्रवर्तमानविप्रतिपतौ अपि सत्यां भारतीयसमाजे षोडश एव संस्कारा: प्रख्याता: सन्ति। यथोदितं हारीताचार्यस्य मतमिदं यत् संस्काराणां द्वैविध्यमिति ब्राह्मसंस्काराभिधानेन देवसंस्काराभिधानेन च। प्रवर्तमानगर्भाधानादिसंस्कारा: प्रथमे वर्गे निपतिता: सन्ति पाकहविष्यानुष्ठानादयश्च देवसंस्कारगता: वर्तन्ते। लौकिकदृष्ट्या एते पञ्चसु विभक्तुं शक्या: सन्ति विद्वांसै:- (क.) गर्भावस्थाया: संस्कारा:, (ख.) बाल्यावस्थाया: संस्कारा:, (ग.) विद्याध्यनेन सम्बद्धा: संस्कारा:, (घ.) गृहस्थाद्याश्रामार्थं सिद्धा: संस्कारा:, (ङ.) मृत्यो: परं सेव्या: संस्कारा:।

---

[32] सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 142

[33] म. स्मृ., 2/26

[34] सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 142

4.1 गर्भाधान संस्कार:

गर्भाधानसंस्कारेण श्रेष्ठसन्तानस्य प्राप्तिकाम: पुरुषः स्त्रियां स्वबीजं स्थापयति।[35] संस्कारप्रकाशे प्राप्यते- येन कर्मणा पतिः स्वपत्न्यां गर्भस्थापनं करोति तत् गर्भाधानम् इत्युच्यते।[36] अथर्ववेदे अस्य प्रसङ्गोऽपि प्राप्यते।[37] बृहदारण्यकोपनिषदि अपि अस्य संस्कारस्य कर्मकाण्डीयमन्त्रविधिना साकं भावनात्मकमन्त्रै: सहितं सविस्तरं वर्णनमुपलभ्यते। मेधावी तथा च गुणवान् सन्तानो भवेदिति कामनयाऽस्याचरणं दृश्यते।[38] गर्भाधानस्य निमित्तं विवाहात् कस्मिन् रात्रौ गर्भाधानं कर्तव्यं तथा कस्मिन् न कर्तव्यमित्यस्यापि विवरणं लभ्यते। मन्वादिस्मृतिकारैः गर्भाधानस्य विवरणं कृतमस्ति। लघ्वाश्वलायनस्मृतौ गर्भाधानसंस्कारस्य कर्मकाण्डीयपद्धत्या विवरणं प्राप्यते। तदन्तर्गतं अस्य संस्कारस्य दिवस:, नक्षत्रं, तिथि: इत्यादीनां वर्णनं लभ्यते तथा अस्मिन् संस्कारे क्रियमाणं पूजनं, हवनं तथा सूर्योपासनायाः वर्णनमपि प्राप्यते। गर्भाधानात् पूर्वं स्थालीपाकः, आग्रयणं तथा अग्निकरणम् एतेषाम् उल्लेखः लभ्यते।[39] गर्भाधानसंस्कारनिमित्तानि विस्तारपूर्वकं गृह्यसूत्रेषु प्राप्यन्ते। भारद्वाजमुनिना अस्य संस्कारस्य विषये एवमुक्तम् अयं संस्कारः गर्भधारणस्य संस्कार:। अतः प्रथमगर्भधारणसमये एव एतस्यानुष्ठानं कर्तव्यमस्ति यतोहि प्रथमबारमेव पावित्र्यपूरितं क्षेत्रं भविष्यस्य प्रत्येकं गर्भं पवित्रीकरोति।[40] अस्य संस्कारस्य करणसमये उपयुक्तः कालः तथा च वातावरणं च पूर्णरूपेण अवधीयते। यतोहि अयं संस्कारः तदैव सम्पन्नो भवति यदा पत्नी गर्भाधारणार्थं शारीरिकरूपेण समर्था भवति।

---

[35] या. स्मृ., 1/11

[36] भारतीय संस्कृति, पृ. 113

[37] अ. (शौ.), 5/25/3

[38] बृ. उ., 6/4/21

[39] धर्मशास्त्रसंग्रहः, पृ. 133-134

[40] भा. गृह्य., 6/3

शास्त्रीयदृष्ट्या गर्भाधानादिसकलसंस्काराणां विशेषप्रकारकीये ज्यौतिषीयमुहूर्ते अथवा समयस्य विशेषकालखण्डे यस्तु शुभ्र: पवित्रं च तस्मिन् एव अनुष्ठानं श्रूयते। दिवसे तथा सन्ध्याकाले गर्भाधानसंस्कारस्य निषेधः प्राप्यते। अस्योल्लेखः महर्षिकश्यपदित्योश्च सम्बादे प्राप्यते। यदा दिति: सन्ध्याकाले गर्भधारणार्थम् अनुमोदनं करोति तदा महर्षिः कश्यपः सन्ध्याकाले गर्भाधानस्य निषेधं वर्णयति– "त्वत्सदृश्या: भार्यायाः उपकाराणां प्रतीकारसम्पूर्णजीवनदानेनाऽपि न भवितुं शक्यते। भवत्याः पुत्रप्राप्तिकाममहं यथाशक्तिमवश्यं पूरयामि। परन्तु इदानीं भवत्या एकं मुहूर्तं स्थातव्यं, येन च जनाः माम् न निन्देयुः। अयं कालः राक्षसादीनां कालः वर्तते। अस्मिन् समये भगवतः भूतनाथस्य भूतप्रेतादय: सञ्चरन्ति। अस्मिन् सन्ध्याकाले भूतभावनभूतपतिः भगवान् शङ्करः स्वगणै: भूतप्रेतादिभिः सह वृषभारूढो भूत्वा सञ्चरणं करोति"।[41] एवं प्रकारकैः उक्तिभिः सन्ध्याकाले गर्भाधारणस्य निषेधः प्रतिपादितो वर्तते। वसुदेवस्य देवक्यां गर्भधारणास्य वर्णनं लभ्यते।[42] देवहूतिद्वारा स्वपतिऋषिकर्दमात् गर्भधारणेच्छा[43] प्रकटीकरणस्य वर्णनमेवं कर्दमऋषिद्वारा गर्भाधानस्य वर्णनं प्राप्यते। तत्र वर्णनं समुपलभ्यते कर्दमऋषिद्वारा सन्तानप्राप्तिनिमित्तं स्वस्वरूपस्य नवधा विभागं कृत्वा एकाग्रचित्तेन अर्धाङ्गरूपीस्वपत्नयां भावनां कुर्वन् तस्याः गर्भे वीर्यस्थापनं कृतम्।

तस्यामाधत्त रेतस्तां भावयन्नात्मनाऽऽत्मवित्।

नोधा विधाय रूपं स्वं सर्वसङ्कल्पविद्विभुः।।[44]

एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गत गर्भाधानसंस्कारस्य विवरणं प्राप्यते। अत्र अस्य संस्कारस्य विधिविधानामुल्लेखः न प्राप्यते केवलं सम्बादमाध्यमेन अस्य संस्कारस्य वर्णनं लभ्यते।

---

[41] भा. महा., 3/14/20-28

[42] तथैव 10/2/18

[43] तथैव 3/23/10-11

[44] तथैव 3/23/47

4.2 पुंसवनसंस्कारः

गर्भाधानसंस्कारानन्तरं गर्भे निष्ठे सति पुंसवनसंस्कारः क्रियते। गर्भस्थशिशु: पुत्रो भूयात् इति कामनया संस्कारोऽनुष्ठीयते।[45] वैदिकसंहितासु अपि पुत्रप्राप्त्युद्देश्येन क्रियमाणा: बह्बय: प्रार्थना प्राप्यन्ते।[46] याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते यत् अयं संस्कारः गर्भस्थशिशोः स्पन्दनात् पूर्वं कर्तव्योऽस्ति।[47] आपस्तम्बानुसारं, विष्णो: अनुसारं तथा बृहस्पत्यानुसारेण च अयं संस्कारो गर्भस्य स्पन्दनशीलोऽवस्थायां क्रियमाणोऽस्ति अर्थात् यदा स्पष्टतयाज्ञानं भवति तदा।[48] गर्भस्य प्रतिष्ठिते सति गर्भाधानस्य तृतीये मासे पुंसवनसंस्कारस्योल्लेखः प्राप्यते।[49] अस्मिन् संस्कारे विशिष्टविधिना साकं विविधौषधीनां रस: गर्भवत्या: नासिकायां सन्निविश्यते।

अस्मिन्नेव प्रक्रमेऽवधातव्यमस्ति यत् श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽपि पुंसवनसंस्कारस्य वर्णनं धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या सम्मतमेव प्राप्यते। इदमेवात्र अवधेयं यत् महापुराणेऽस्मिन् संस्कारोऽयमन्यत्र व्रतरूपेणापि उपवर्णितोऽस्ति।[50] अयं व्रतस्य एकवर्षाय विहितमस्ति यस्मिन् भगवतः विष्णोः पूजादिसात्त्विकनियमानां पालनस्य वर्णनं लभ्यते। महर्षिकश्यपेन दित्या: कृते अस्य व्रतस्य विधानं कथितं वर्तते। अत्र धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या वर्णितसदाचारपूर्वकाचरणस्य उल्लेखः प्राप्यते। व्रतस्याऽस्य अनुष्ठातु: आचरणस्योल्लेखः इत्थं प्राप्यते – "अस्मिन् व्रते प्राणिहिंसा न कर्तव्या, अशुभापवित्रवस्तूनां स्पर्शः न भवेत्, तडागादिषु स्नानं न कर्तव्यम्, क्रोधो न कर्तव्यः, दुर्जनैस्सह सम्भाषणं न कर्तव्यम्, मलिनवस्त्राणां धारणं न कर्तव्यम्, केनचित् धृता माला न धर्तव्या, उच्छिष्ठमभोज्यम्, चण्डिकायाः मांसयुक्तप्रसादस्य ग्रहणं न कर्तव्यम्,

---

45 आ. गृह्य., 6/14/9, 12
46 अ.(शौ), 3/23/4-6
47 या.स्मृ.,1/11
48 वीरमित्रोदय:, संस्कारप्रकाश:,पृ. 168
49 धर्मशास्त्रसंग्रह:, पृ. 134
50 भा. महा., 6/18/54

अपवित्रव्यक्तिद्वारा आनीतं भोजनं तथा रजस्वलाद्वारा दृष्टं भोजनं न भुञ्जीत, हस्तेन निर्मितया अंञ्जलिना जलं न पेयम्, उच्छिष्ठमुखो, आचमनं विना भूत्वा सन्ध्यासमये केशानुद्धाट्य श्रृङ्गाररहितो वाणीसंयमं विना शिरम् अनाच्छाद्य बहिः क्वचिदपि न गन्तव्यम्। पादमप्रच्छाल्य अपवित्रावस्थायां आर्द्रपादाभ्यां उत्तरस्यां पश्चिमस्याञ्च दिशि अन्यैस्सह नग्नावस्थायां प्रातः तथा सायं शयनं न कर्तव्यम्। प्रतिदिनमल्पाहारात् प्राक् गोब्राह्मणलक्ष्म्याश्च भगवतः अच्युतस्य च पूजा कर्तव्या। सधवानांमपि पूजा कर्तव्या"।[51] एवं प्रकारेण इदं व्रतं वर्षं यावत् पालनीयम् अस्ति। अस्य व्रतस्य प्रारम्भः मार्गशीर्षमासस्य शुक्लपक्षीयप्रतिपदः आरभ्य अग्रिमवर्षस्य मार्गशीर्षमासस्य अमावास्यायां यावत् भवति।[52] अस्मिन् भगवतः विष्णोः पूजा, स्तवनं, कीर्तनं, प्रणामः सदाचारस्य पालनं, मन्त्रजपः, कथाश्रवणं, नित्यहोमः, उद्यापनदिने पाकयज्ञमाध्यमेन पायसेन च होमस्य विधानं वर्तते।[53] अस्य व्रतस्य प्रयोगः सर्वप्रथमं दित्याः उत्तमपुत्रप्राप्त्युद्देश्येन कृतः आसीत्।

4.3 जातकर्मसंस्कारः

मनुस्मृतौ जातकर्मसंस्कारस्य विषये प्राप्यते यत् अस्मिन् संस्कारे मधुनः घृतस्य च प्रासनं सुवर्णमयेन पात्रेण कार्यते।[54] धर्मशास्त्रेषु जातकर्मसंस्कारात् पूर्वं नान्दीश्राद्धकरणस्याप्युल्लेखः लभ्यते।[55] अयं संस्कारः शिशोः जन्मकाले क्रियते। बृहदारण्यकोपनिषदि अपि अस्य वर्णनं प्राप्यते यत् जातकर्मणि पुत्रं स्वीकृत्य दधिघृताभ्यां होमः करणीयः शिष्टान्नस्य सुवर्णमयेन पात्रेण प्राशनं कार्य्यमस्ति कृते तथा शिशोः कर्णे वाग्, वाग्, वाग्, इति त्रिवारम् उच्चारणीयमस्ति।[56]

---

[51] भा. महा., 6/18/47-53
[52] तथैव 6/19/2, 21
[53] तथैव 6/19
[54] म. स्मृ., 2/29
[55] धर्मशास्त्रसंग्रहः, पृ. 135
[56] बृ. उ., 1/5/2, 6/4/24-28

पौराणिकसाहित्ये जातकर्मसंस्कारस्योल्लेखः मात्रं प्राप्यते। तत्र विधेः वर्णनं न समुपलभ्यते। शिशोः जन्मानन्तरं क्रियमाणः संस्कारः जातकर्मसंस्कारः। महाराजयुधिष्ठिरद्वारा परीक्षितस्य जन्मकाले जातकर्मसंस्कारस्य वर्णनं श्रूयते। श्रीधरीटीकायामपि **"जातकं जातकर्म"** इत्युक्त्वा स्पष्टीकृतं वर्तते।[57] भगवता विष्णुना यदा वामनावतारः स्वीकृतः तत्काले तेषां जातकर्मसंस्कारोऽभूत् इत्यपि लभ्यते। अस्य स्पष्टीकरणं श्रीधरीटीकायाः अध्ययनेन भवति। टीकायां **"कर्माणि"** इत्यस्य स्थाने **"जातकर्माणि"** शब्दप्रयुक्तोऽस्ति।[58] इतोऽपि षष्ठे स्कन्धे यदा चित्रकेतोः गृहे सन्तानोत्पित्तिः जातः यदा तस्य जातकर्मसंस्कारः कारितः इत्यपि श्रूयते तत्र सविस्तरं समुपलभ्यते यत् वस्त्राभूषणैः अलङ्कृतः सन् ब्राह्मणेन स्वस्तिवाचनं कारयित्वा, तेषामाशीर्वादं स्वीकृत्य जातकर्मसंस्कारः कारितः तथा जातकर्म संस्कारानन्तरं ब्राह्मणानां कृते सुवर्णं, रजतं, वस्त्रम्, आभूषणं, ग्रामः अथवा गजाः तथा गावः प्रदत्ताः।[59] दशमे स्कन्धे श्रीकृष्णस्य जन्मकाले नन्देन स्नानं कृतं तथा पवित्रो भूत्वा सुन्दरं वस्त्राभूषणं धृत्वा, वेदज्ञब्राह्मणद्वारा स्वस्तिवाचनं कारयित्वा स्वपुत्रस्य जातकर्मसंस्कारः कारितः तत्पश्चात् देवतानां तथा पितृणां विधिपूर्वकं पूजा कृता तथा ब्राह्मणानां कृते विविधप्रकारकाणां वस्तूनां दानं च दत्तम्।[60] एवं प्रकारेण प्राप्यते यत् तत्कालीनसमये जातकर्मसंस्कारे कर्मकाण्डीयपद्धतिम् अवलम्बतेस्म इति।

4.4 नामकरणसंस्कारः

येन संस्कारेण नाम सज्ञां वा दीयते स: नामकरणसंस्कारः। यथा देवतानामभिज्ञानं नाम तथैव मानवस्याभिज्ञानार्थं नामकरणसंस्कारेण मानवस्य नाम एकं निश्चीयते। बृहस्पतिद्वारा नामकरणस्य महत्त्वं प्रकाशिता। तेन व्यधायि – "नाम सकललौकिकव्यवहाराणां हेतुः वर्तते,

---

[57] श्रीधरी. भा. महा., 1/12/13

[58] तथैव 8/18/13

[59] भा. महा., 6/14/33-34

[60] भा. महा., 10/5/1-4

तत् शुभाशुभकर्मणां भाग्यस्य हेतुः वर्तते, नाम्ना एव मनुष्यः कीर्तिं लभते अतः नामकरणमत्यावश्यकं वर्तते"।[61] मनुस्मृतौ एतत्संस्कारविषयकं विस्तृतं विवेचनं प्राप्यते। तत्र उक्तं वर्तते– "शिशोः जन्मन: अनन्तरं दशमे दिवसे द्वादश वा दिवसे नामकरणसंस्कारः करणीयः अथवा तस्मात् शुभतिथौ, शुभमुहूर्ते, शुभनक्षत्रे वा अयं संस्कारः करणीयोऽस्ति"।[62] चतुर्षु वर्णेषु वर्तमानानां बालकानां बालिकानाञ्च कानि नामानि भवेयुः, अस्मिन् विषये ग्रन्थेषु महान् प्रकाशः कृतो वर्तते।[63]

पुराणेषु वर्ण्यते यत् अयं स्वस्तिवाचनान्तरं तथा च वृद्धिश्राद्धानन्तरं यथाविधिः अनुष्ठीयते।[64] श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य दशमे स्कन्धे गर्गाचार्यैः श्रीकृष्णस्य तथा बलरामस्य नामकरणसंस्कारस्य वर्णनं कृतम्।[65] विद्वद्भिः संज्ञायाः प्रकारद्वयम् उक्तम् प्रथमा केवलसंज्ञा द्वितीया अन्वर्थसंज्ञा इति। अन्वर्थसंज्ञान्तर्गतं व्यक्तेः आत्मिक व्यवहारिकगुणधर्मानुसारेण तथा नामार्थानुरूपतया संज्ञा भवति।[66] एतदनुलक्ष्यैव गर्गाचार्यैः श्रीकृष्णबलरामयोः नामकरणं कृतम् इति श्रूयते। गर्गाचार्यद्वारा श्रीकृष्णबलरामयोः नामकरणसंस्कारैः यथा विधत्तं तत् श्रूयते – "अयं रोहिण्या: पुत्रः अतः अस्य नाम रौहिणेयो भवेत्, अयं स्वबान्धवान् प्रसन्नं करोति अतः अस्य नाम रामः भवेत्, अस्य बलस्य सीमा न भवति अत अस्य नाम बलम् इति भवेत्, मानवेषु मतभेदे सति अयं मार्गप्रदर्शयति अत एतस्य नाम **"संकर्षणं"** भवेत्। श्रीकृष्णस्य नाम आधाय श्रीगर्गाचार्यस्योक्ति: समुपलभ्यते यत्- अयं कृष्ण अतः अस्य नाम अपि कृष्णः भवेत् तथा वसुदेवस्य गृहे एतस्य जन्म जातम् अतः अस्य नाम वासुदेवो भवेत् इति"।[67] बालानां नामकरणसम्बन्धे अक्षराणां सुन्दरत्वं तथा च उच्चारणे सौलभ्यं सार्थकत्वं च एतेषु विषयेषु

---

[61] वीरमित्रोदय:, संस्कारप्रकाश:,

[62] म.स्मृ., 2/30

[63] म.स्मृ., 2/31-33

[64] भा. महा., 10/8/10

[65] तथैव 10/8/11

[66] https//youtu.be./DNwj5S-eizq

[67] भा. महा., 10/8/12-14

मनः दीयते। तेषां नामानि सह देवानां सम्बन्धः योज्यते तथा दैवीयगुणानामाशाङ्कृत्वा गुणान् प्रकटीकुर्वन्ति यानि नामानि तानि एव दत्वा विशिष्टगुणानाम् अपेक्षा क्रियते इति।

4.5 उपनयनसंस्कारः

प्राचीनभारतीयैः ब्रह्मावलोकधिषणैः शिक्षायाः विस्तारार्थं प्रयोजनरूपेण उपनयनसंस्कारो विहितः। अयं संस्कारः तदा क्रियते यदा विद्यार्थी वैदिकशिक्षायारारम्भं करोति। सर्ववर्णीयाः बालकाः अस्य संस्कारात् प्राक् शूद्रवत् भवन्ति। मन्वानुसारेणाऽपि एवम् उल्लेखः प्राप्यते यत् यावत् पर्यन्तं द्विजातिनां उपनयनसंस्कारो न भवति तावत्पर्यन्तं ते शूद्रवदेव भवन्ति।[68] अनेन ज्ञायते यत् तत्काले अयं सिद्धान्तः प्रचलित आसीत् यत् प्रत्येकमऽपि व्यक्तिः शूद्र एव उत्पद्यते तथा संस्काराणां सुसम्पन्ने सत्येव सः द्विज इत्युच्यते। उपनयनसंस्कारानन्तरं विद्यार्थी वेदाध्ययनाधिकारी भवति। तथा गायत्री-उपदेशोऽपि तत्काले क्रियते यदा उपनयनसंस्कारः सम्पद्यते तदा। एवं प्रकारेण तत्कालीनसमाजे विद्याध्ययनार्थं उपनयनसंस्कार आवश्यक आसीत्।

मनुस्मृत्यां प्राप्यते यत्- गर्भकालात् अष्टमे वर्षे ब्राह्मणस्य, एकादशवर्षे क्षत्रियस्य तथा द्वादशवर्षे वैश्यस्य उपनयनसंस्कारः कर्तव्येति।[69] उपनयनस्य अस्य सिद्धान्तस्य वर्णनं याज्ञवल्क्यस्मृत्यामपि प्राप्यते।[70] विविधप्रयोजनदृष्ट्या अपि अस्य संस्कारस्य वर्णनं कृतं वर्तते। एतदन्तर्गततया उक्तं यत् अध्ययनं तथा चरित्रसमृद्ध्यर्थं ब्राह्मणस्य उपनयनं पञ्चमे वर्षे बलकामनया क्षत्रियस्य उपनयनं षष्ठे वर्षे धनेच्छार्थं वैश्यस्य अष्टमे वर्षे उपनयनसंस्कारः कर्तव्यः।[71] यदि एतेषु वर्णेषु उपनयनसंस्कारः न क्रियते तर्हि ब्राह्मणस्य षोडशे वर्षे, क्षत्रियस्य

---

[68] म.स्मृ.., 2/172

[69] तथैव 2/36

[70] या.स्मृ.,1/14

[71] म.स्मृ., 2/37

द्वाविंशत्यां वैश्यस्य चतुर्विंशत्यामुपनयनंसंस्कारः कर्तव्यः।[72] उपनयनसंस्कारान्तर्गततया छात्रस्य कृते यज्ञोपवीतधारणं कार्यते।[73] अनेन संस्कारेण सममेव छात्रस्य गुरुकुले प्रवेशो भवति तथा तत्र वेदादीनामध्ययनं तथा उपनीतनियमानां पालनञ्च कर्तव्यं भवति। अनेन संस्कारेण सह विद्यार्थिनः कृते दण्डः, कमण्डलुः, भिक्षापात्रं, मेखला, चर्म यज्ञोपवीतादिः धरणीयो भवति।[74]

एतेषां सिद्धान्तानां व्यावहारिकपक्षस्यापि श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्रतिपादनं कृतमस्ति। अस्य प्रथमोल्लेखः श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञो भरतस्य तृतीये जन्मकाले कृतो वर्तते। तत्र उक्तं- तेषां जन्म सात्विकब्राह्मणकुले जातः तदा एतेषां पितृपादैः शास्त्रानुसारेण समावर्तनपर्यन्तं विवाहात् प्राक् सर्वेऽपि उपनयनादिसंस्काराः कारिताः तथा शास्त्रविध्यनुसारं शौचाऽचमनादि आवश्यककर्मणां शिक्षा अपि दत्तेति।[75] भगवतः वामनस्य अवतारात्मकजन्मनोःऽनन्तरं तेषां यज्ञोपवीतसंस्कारस्य वर्णनं प्राप्यते– "देवगुरुबृहस्पतिना तेषां यज्ञोपवीतसंस्कारः कारितः, सविता एव गायत्रीमन्त्रस्य दीक्षां प्रदत्तवती, कश्यपऋषिणा मेखला प्रदत्ता, पृथ्वीद्वारा मृगचर्म दापितम्, चन्देण दण्डः प्रदत्तः, मात्रा अदित्या कौपीनवस्त्रं कटिवस्त्रञ्च प्रदत्तं, आकाशस्य अभिमानिदेवताभिः छत्रप्रदानं कृतं, ब्रह्मणा कमण्डलुः, सप्तर्षिद्वारा कुशप्रदानं, सरस्वत्या रूद्राक्षमालायाः प्रदानं कृतं, यक्षराजकुबेरेण भिक्षापात्रं प्रदानं कृतमेवं रीत्या तेषामुपनयनसंस्कारः जातः"।[76] श्रीकृष्णेन सान्दीपनिमुनेः साङ्गवेदस्य अध्ययनं कृतम्। अस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे तृतीयस्कन्धे प्राप्यते। अस्योल्लेखः श्रीधरीटीकायां कृतो वर्तते।[77] श्रीमद्भागवतमहापुराणे दशमे स्कन्धे श्रीकृष्णबलरामयोः उपनयनसंस्कारस्य वर्णनं लभ्यते।

---

[72] तथैव 2/38

[73] या.स्मृ., 1/16

[74] म.स्मृ., 2/41-46

[75] भा. महा.,5/9/4

[76] तथैव 8/18/14-17

[77] श्रीधरी. भा. महा., 3/3/2

अत्र च गर्गाचार्यैः तेषामुपनयनं विधिपूर्वकं द्विजातिसमुचितमुपनयनं कारितमासीत्।[78] संस्कारानन्तरं ब्राह्मणानां कृते दानस्यापि वर्णनं प्राप्यते।[79] उपनयनानन्तरं गुरुकुलं गत्वा विधिपूर्वकं गायत्रीव्रतस्य धारणं कृतं तथा वेदादीनामध्ययनञ्च कृतम्।[80]

4.6 समावर्तनसंस्कारः

यदा छात्रः गुरुकुले भूत्वा विद्याध्ययनं परिपूर्णं करोति तदा तस्य गृहस्थाश्रमे प्रवेशार्थोद्देशेन समावर्तनसंस्कारः क्रियते। अयं संस्कारः ब्रह्मचर्याश्रमस्य समाप्तेः सूचको वर्तते। शिक्षां समाप्य यदा विद्यार्थी गृहं प्रति गच्छति तदा अयं संस्कारः क्रियते। समावर्तनस्यार्थः वेदाध्ययनान्तरं स्वगृहं प्रति पुनरागमनम्।[81] समावर्तनान्तर्गततया वेदादिव्रतान् परिसमाप्य तथा गुरुदक्षिणायाः विधानं प्राप्यते।[82] श्रीमद्भागवतमहापुराणे नाभेः पुत्रेण ऋषभदेवद्वारा गुरोः कृते यथोचितं दक्षिणायाः दानं तथा गृहस्थप्रवेशस्य अनुमतिः स्वीकृता अनेन समावर्तनसंस्कारस्य सङ्केतः प्राप्यते।[83]

4.7 विवाहसंस्कारः

विवाहः मानवजीवनस्य एकम् आवश्यकम् अपरिहार्यं च संस्कारो वर्तते यच्च समाजनिर्माणस्य एका आधारभूता शिला च वर्तते। विवाहसंस्कारः सत्ये तथा कर्तव्ये च प्रतिष्ठितो वर्तते। विवाहः दम्पती तथा दम्पत्योः आत्मनः, मनसः, प्राणस्य शरीरस्य च आध्यात्मिकसम्बन्धद्वारा सुदृढं कर्तुमेकः प्रयत्नो वर्तते। वैवाहिकजीवनं विना समाजस्य कल्पनाऽपि कर्तुं न शक्यते। प्राचीनकालादेव सकलधर्मशास्त्रेषु तथा पुराणेषु विवाहस्य अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। अनेन माध्यमेन मनुष्यो गृहस्थाश्रमे प्रवेशार्थं समर्थो भवति।

[78] भा. महा., 10/45/26
[79] तथैव 10/45/27
[80] तथैव 10/45/29, 33-36
[81] वीरमित्रोदयः, संस्कारप्रकाशः
[82] या.स्मृ., 1/51
[83] भा. महा., 5/4/8

वेदेषु विवाहसूक्तानामुल्लेखो दृश्यते। गृह्यसूत्रेषु विवाहार्थं दिनं, नक्षत्रं, मासादीनामुल्लेखः कृतः तथा विवाहविधीनामपि विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम्। विधिपूर्वकविवाहानन्तरं सन्तानोत्पत्तौ सत्यां मानव: पितृऋणात् विमुक्तो भवति। मनुस्मृत्याम् अष्टप्रकारकविवाहानां वर्णनं प्राप्यते। तदन्तर्गततया ब्रह्मविवाहः, देवविवाहः, आर्षविवाहः, प्राजापत्यविवाहः, असुरविवाहः, गान्धर्वविवाहः, राक्षसविवाहः तथा पैशाचविवाहरिति।[84] अयमेव विवाहः याज्ञवल्क्यस्मृत्यामपि उल्लिखितो वर्तते।[85] एषु आदिमा: चत्वार: विवाहा: समाजे आम्नाता: तथा च अग्रिमा: चत्वार:निन्दिताश्च सन्ति। मनुस्मृत्यां वर्णभेदेन निन्दितविवाहोऽपि प्रशंसनीयः उक्तोऽस्ति। यथा- क्षत्रियस्य कृते राक्षसविवाहः, वैश्यस्य तथा शुद्रस्य कृते असुरविवाहः प्रशंसनीयः वर्तते।[86] एतेषां समेषां विवाहानां परिभाषाणामपि प्रदर्शनं मनुस्मृत्यां तथा याज्ञवल्क्यस्मृत्यां प्राप्यते।[87] श्रीमद्भागवतमहापुराणे विवाहस्य विविधरीत्या: वर्णनं प्राप्यते। एतदन्तर्गततया ब्रह्मविवाहः, गान्धर्वविवाहः, प्रतिलोमादि विवाहः इति।

विवाहनिमित्तं वरकन्ययोः योग्यत्वम्

वरकन्ययोरुद्वाहनिमित्तं काश्चन योग्यता: उपवर्णिता:सन्ति स्मृतिषु। वरकन्ययो: शारीरिकक्षमताधारेण कुलपरम्परागुणायं एषाञ्चाधारेण सम्बन्धो निश्चेतव्य: इति वर्णनं समुपलभ्यते।[88] कारणं यत् सन्तानस्य उपरि एतेषां गुणानां प्रभावो भवति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे कर्दमदेवहूत्या: आख्याने कन्याद्वारा वरे प्राप्तव्यगुणानां वर्णनमित्थं समुपलभ्यते – देवहूती: सद्गुणयुक्तं शीलवन्तं युवकं पतिमिच्छतिस्म तथा च कर्दमस्य शीलं-विद्या-रूपादिगुणान् दृष्ट्वा सा तत्र आसक्ता जाता।[89] मनुना अपि ते गुणसमूहेषु समृद्धः इति

---

[84] म.स्मृ., 3/21
[85] या.स्मृ..,1/58-59
[86] म.स्मृ., 3/24
[87] म.स्मृनु., 3/28-34, या.स्मृ., 1/58-59, 61
[88] म.स्मृ., 3/5-10, या.स्मृ., 1/52-56
[89] भा. महा., 3/22/9-10

कृत्वा कन्यादानं कृतम् आसीत्।[90] देवहूतीरपि सुन्दरी तथा लावण्ययुक्ता आसीत्। तस्याः सुन्दरता तथा आसीत् येन लक्ष्मी: अपि लज्जिता भवेत्, विश्वावसुः अपि तां दृष्ट्वा मूर्च्छितो जातः इति वर्णनमुपलभ्यते।[91] रुक्मिणी अपि कृष्णस्य रूपं गुणं च दृष्ट्वा तत्र आसक्ता आसीत्। श्रीकुष्णोऽपि तां बुद्ध्या, सुलक्षणया उदारशीलादि गुणेन एषा परिपूर्णा वर्तते इति ज्ञात्वा विवाहं कर्तुमिच्छन्तिस्म।[92] सत्यभामोऽपि स्त्रीरत्नमासीत् गुणयुक्ता च तस्याः पिता सत्रजितेन कुष्णद्वारा मणिमानीय समर्पणेसति तेषां समर्पणं महतोदात्तगुणं दृष्ट्वा स्वकन्यायाः दानं दत्तमासीत्।[93]

स्वयंवरः

धर्मशास्त्रे वर्णितं विवाहं त्यक्त्वाऽपि स्वयंवरस्य एकः प्रकारः राजवंशेषु दृश्यतेस्म यत्र राज्ञां समायोजनं भवतिस्म तथा सर्वस्मात् राजपरिवारस्य राजकुमाराः, राजा, महाराजाश्च आहूयतेस्म तथा कया स्वेच्छया पतिः निश्चिनोतिस्म। परन्तु कदाचित् सभायां ये आयाताः तैः स्वबलस्य परीक्षा अपि दातव्या भवतिस्म।[94] सत्यायाः स्वयंवरकाले श्रीकृष्णेन सप्तवृषभाणां एकदा एव नाथनं कृतमासीत्।[95] लक्ष्मणायाः स्वयंवरे जले प्रतिफलनं दृष्ट्वा मत्स्यभेदनं कृतम् अतः लक्ष्मणा श्रीकृष्णस्य कण्ठे रत्नमालां स्थापितवती इति।[96] राजपरिवारेषु तस्मिन् समये विवाह हेतु वरस्य निश्चयनार्थं स्वयंवरस्य आयोजनं क्रियतेस्म। अस्य च उदाहरणं द्रुपदेन स्वपुत्र्याः द्रौपद्याः विवाहार्थं कृतस्वयंवरस्य उल्लेखो प्राप्यते।[97]

---

[90] तथैव 3/22/11
[91] तथैव 3/22/17-18
[92] तथैव 10/52/23-24
[93] तथैव 10/56/38-44
[94] तथैव 10/58/42
[95] तथैव 10/58/33-47, 10/83/12
[96] भा. महा., 10/83/19-29, 10/58/57
[97] तथैव 10/83/19-26

ब्रह्मविवाहः

महाराज्ञ: मनोः पुत्र्या: देवहूत्या: विवाहः कर्दमऋषिणा जायते पुराणेषु विवाहस्याऽस्य यथा वर्णनं प्राप्यते तेन विवाहोऽयं ब्राह्मरूप: इति अवगम्यते। देवहूत्याः स्पष्टानुमत्यैव तस्याः विवाहः कर्दमऋषिणा सह जातः तथा च मनुना शतरूपाद्वारा च तयोः कृते आशीर्वादात्मकं वस्त्राभूषणं चापि दत्तम्।[98] अनेन प्रकारेण यः विवाहो भवति सः ब्रह्मविवाह इत्युच्यते। मनुस्मृतौ ब्रह्मविवाहस्य लक्षणं लभ्यते। तदनुसारं वेदाध्ययनं समाप्तं जातं यस्य वरस्य तं स्वयमाहूय वस्त्राभूषणै: आच्छाद्य तथा च मधुपर्केण पूजयित्वा कन्यायाः यदि दानं क्रियते तर्हि स ब्रह्मविवाह इत्युच्यते।[99] कर्दम: एक: ऋर्षिः वेदज्ञानी च वर्तते अतः तस्य विवाहः अनेन समं कारितः। अनेन ज्ञायते यत् अयं ब्रह्मविवाहः इति। एवमेव श्रीमद्भागवतमहापुराणे ब्रह्मविवाहस्य अन्यदुदाहरणं प्राप्यते। तत्र च दक्षस्य प्रसूत्या सह, धर्मस्य दक्षस्य त्रयोदशकन्याभिस्सह, अग्नेः 'स्वाहा' सह, पितृणां 'स्वधा' सह, शिवस्य 'सत्या' सह, बलरामस्य 'रेवत्या' सह ,भद्रायाः श्रीकृष्णेन सह एवं वर्णनं प्राप्यते।[100]

गान्धर्वविवाहः

मनुस्मृत्यां याज्ञवल्क्यस्मृत्यां च गान्धर्वविवाहस्योल्लेखः प्राप्यते। अत्र च उल्लिखितमस्ति कन्यायाः वरस्य च मिथ: इच्छया यदा आलिङ्गनपूर्वकं परस्परं संयोगो भवति, कामवासनया मैथुनसुखार्थं च विशेषेण उपयुज्यते यो विवाह: स: गान्धर्वविवाहः इत्युच्यते।[101] श्रीकृष्णरुक्मिण्योः विवाहः गान्धर्वविवाहः इति ज्ञायते। अस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्पष्टतया कृतं वर्तते। तत्र चोपलभ्यते – “भीष्मकनन्दिन्या रुक्मिण्या आह्वाने सति शिशुपालस्य तस्य सहायकानां च मानमर्दनं कृत्वा गान्धर्वविधिना विवाहार्थं

---

[98] तथैव 3/22/22-23

[99] म.स्मृ., 3/27

[100] भा. महा., 4/1/47-49, 10/52/65, 10/83/15

[101] म.स्मृ., 3/32, या.स्मृ., 1/61

स्वनित्यसंगिनीरुक्मिणी तथा आनीता श्रीकृष्णेन यथा गरुडद्वारा अमृतकलश: आनीत:"।[102] इतोऽपि दुष्यन्तद्वारा कण्वस्य दत्तकपुत्री शकुन्तलाया: तस्याः गान्धर्वविवाहः कृत: इत्यपि उपलभ्यते।[103] बाणासुरस्य पुत्र्या: उषाया: तथा च अनिरुद्धस्यापि गान्धर्वविवाहो जात: इति प्राप्यते।[104] तत्र च दुष्यन्तः सञ्चरन् कण्वस्य आश्रमं दृष्ट्वा तत्र गच्छन् सन् शकुन्तलां दृष्ट्वा मोहितो भवति। सा अपि एनं दृष्ट्वा मोहिता भवति तदा उभययोः इच्छानुसारेण सम्भोगो भवति। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे अपि उषायाः तथा अनिरुद्धस्य कथायां प्राप्यते यत् उषा स्वप्ने एकं नवयुवकं पश्यति। चित्रलेखया तस्य युवकस्य चित्रं उषाद्वारा वर्णितवर्णनानुसारेण निर्मीयते। चित्रलेखा चित्रे दृष्टवन्तं युवकं स्वमायाशक्तया तस्य गृहात् उषायाः राजभवने आनयति। तदा उषानिरुद्धयोर्मध्ये प्रेमपूर्णसम्बन्धो भवति तदनन्तरं द्वयोर्मध्ये सम्भोगक्रियायाः सम्पादनं भवति। एवञ्च स्मृतिषु वर्णितानां लक्षणानामालोके विमर्शनं कृत्वा प्राप्यते यत् अयं गान्धर्वविवाहस्य श्रेण्यामागच्छति।

राक्षसविवाहः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राक्षसविवाहस्यापि वर्णनं प्राप्यते। अत्र च अर्जुनसुभद्रयोः उदाहरणम् अस्यान्तर्गतं प्राप्यते यत् अर्जुनेन सुभद्रायाः अपहरणं कृतं। सैनकैः अर्जुनस्य रोधः कृतः तथापि अर्जुनेन सैनकानां तिरस्कारपूर्वकं मारणं तथा च सुभद्रायाः परिजनानां करुणक्रन्दनमिदं ज्ञापयति यत् अयं राक्षसविधेः विवाहः इति।[105] श्रीकृष्णद्वारा रुक्मेः पराजयः तथा रुक्मिण्याः हरणं राक्षसविवाहस्य एकः प्रकारः इत्युच्यते।[106] राक्षसविवाहस्य पितृभ्यां सम्बन्धिभिश्च विरोध: क्रियते येन युद्ध: सम्भाव्यते।

---

[102] भा. महा., 3/3/3
[103] तथैव 9/20/16
[104] तथैव 10/62/23-27
[105] तथैव 10/86/9-10
[106] तथैव 10/54

सवर्णविवाहः

समाजे यद्यपि अनुलोमविवाहः प्रतिलोमविवाहश्च प्राप्येते तथापि प्रथमा मान्यता सवर्ण- विवाहस्य कृते आसीत्। अस्मिन् विषये श्रीमद्भागवतमहापुराणे श्रीकृष्णेन उद्धवः इत्थं उपदिष्टः – "ब्रह्मचारिणां कृते अपेक्षते यत् शास्त्रानुसारं सुलक्षण्यकुले वर्धमानया कन्यया सह विवाहः कर्तव्य:"।[107] श्रीमद्भागवतमहापुराणे ययातिं विहाय येषां क्षत्रियाणां विवाहस्य वर्णनं विधत्तमस्ति तेषां सर्वेषां विवाहः क्षत्रियकन्याभिस्सह जात: इत्येतस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते श्रीकृष्णस्य रुक्मिण्या सह,[108] अनिरुद्धस्य उषया सह,[109] अर्जुनस्य दौपद्या तथा सुभद्रया सह,[110] दुष्यन्तस्य शकुन्तलया सह[111] इत्यादिषु उदाहरणेषु प्राप्यते।

अनुलोमविवाहः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे सवर्णया सह अनुलोमविवाहस्य उल्लेखो वर्तते यत् श्रीधरस्वामिन: अनुसारं वर्णक्रमात् स्मृत्युक्त- अनुलोमविवाहस्य सूचकः वर्तते।[112] राज्ञ: शर्यातेः पुत्री सुकन्या तस्याः विवाहः भृगुवंशीयच्च्यवनेन सह अनुलोमविवाहरूपेण प्राप्यते।[113] एवमेव राजामान्धाता तस्य पञ्चाशतस्य पुत्रीणां विवाहः सौभरिऋषिणा सह जातः।[114] मनोः कन्यायाः देवहूत्याः कर्दमेन सह विवाहोऽपि अनुलोमविवाहः।[115] ब्राह्मणपुरुषस्य शूद्राभि: स्त्रीभि: सह दाम्पत्यसम्बन्धविषये समाजे हीनभावना आसीत्। वृषलीपतिः निन्द्यतेस्म तथा सः तेन दोषेण नरकं गच्छति इति धारणा प्राप्यते।[116]

---

[107] भा. महा., 11/17/39
[108] तथैव 10/53-54
[109] तथैव 10/62
[110] तथैव 10/86
[111] तथैव 9/20/16
[112] श्रीधरी., भा. महा., 11/17/93
[113] तथैव 9/3/9, 22
[114] तथैव 9/6/38-46
[115] तथैव 9/22/22-23
[116] तथैव 9/26/23

प्रतिलोमविवाहः

शुक्राचार्यस्य पुत्र्या देवयान्याः कृते बृहस्पतेः श्रापः आसीत् यत् तस्याः विवाहः ब्राह्मणकुले न भूयादिति।[117] अस्यां परिस्थित्यां अस्याः विवाहः कारितः, ब्राह्मणकन्यायाः क्षत्रियेण वैश्येन शूद्रण वा सह विवाहः यदि भवति स: प्रतिलोमविवाहः इत्युच्यते। एतद्रीत्या अयं विवाहः प्रतिलोमविवाहेऽन्तर्भवति। श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽपि अस्य विवाहस्य "प्रतिलोमकः"[118] इति शब्देन सम्बोधनं कृतमस्ति।

श्रीमद्भागवतमहापुराणे धर्मशास्त्रस्य दृष्ट्या विपरीतविवाहस्य वर्णनं प्राप्यते तत्र च प्रद्युम्नस्य मातुलस्य रुक्मेः पुत्र्याः सह विवाहस्य उल्लेखः प्राप्यते।[119] धर्मशास्त्रानुसारं मातुलस्य पुत्री भगिनी सदृशी भवति। स्मृत्यानुसारेण यया सह विवाहः भवति सा कन्या स्वमातुः तथा पितुः गोत्रसपिण्डयोः तद्भवती न भवेत्।[120] या कन्या मातुः पञ्चमादूर्ध्वं पितुः सप्तमादूर्ध्वं तया सह विवाहः कर्तव्यः।[121] प्रद्युम्नेन यया सह विवाहः कृतः सा तस्य मातृसपिण्डस्य कन्या। एवं प्रकारेण अयं विवाहः धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या वेदविरुद्धः सिद्धो भवति। एवं च श्रीमद्भागवतमहापुराणे तादृशविवाहस्यापि वर्णनं कृतं वर्तते यच्च सर्वथा स्मृतिविरुद्धः एवास्ति। तत्र च श्रीकृष्णस्य स्वपितुः भगिन्याः श्रुकीर्तयाः पुत्र्या भद्रया सह विवाहकर्म धर्मशास्त्रीयसम्मतं न प्रतीयते।[122] यतोहि पितृभगिन्याः पुत्री भगिनी सदृशा भवति। अस्मिन् विषये मनुस्मृत्यां प्रायश्चित्तप्रकरणे एषा उक्तिः प्राप्यते यत् पितृभगिन्याः पुत्री, मातुर्भगिन्याः पुत्री, मातुलस्य पुत्री, एताभिस्सह यदि सम्भोगः क्रियते तर्हि चान्द्रायणव्रतम् आचरणीयम्।[123] अनेन ज्ञायते श्रीकृष्णद्वारा स्वपितृभगिन्याः पुत्र्या सह विवाहः स्मृतिविरुद्धः वर्तते।

---

[117] भा. महा., 9/18/22
[118] तथैव 9/18/5
[119] तथैव 10/61/18-19
[120] म.स्मृ.,3/5
[121] या.स्मृ., 1/53
[122] भा. महा., 10/58/56
[123] म.स्मृ., 11/171

4.8 अन्त्येष्टिसंस्कारः

अयं संस्कारः जीवनस्य अन्तिमः संस्कारः व्यक्तेः मरणानन्तरं आचर्य्यते। एतदन्तर्गतं अनेके धार्मिकाः कार्यकलापाः परिपालयन्ति। यथार्थेन अयं संस्कारः व्यक्तेः आत्मनः शान्त्यर्थम्। अयं आत्मसंस्कारः इत्यपि अभिधीयते अस्य विषये प्राप्यते – "अन्त्येष्टिः आत्मनः उत्थानार्थं तथा पवित्रीकर्तुं एकः संस्कारः वर्तते। मरणासनावस्थां प्राप्तः व्यक्तिः स्वजीवनात् हतोत्साहाभूत्वा स्वसद्गतिं प्राप्तुं सत्कुत्येषु संलग्नो भवति तथा परमात्मतत्त्वचिन्तने लीनः भवति। अनेन प्रकारेण अयमात्मसंस्कारः वर्तते।"[124] मनुष्यस्य मृत्योरनन्तरं देहनिमित्तं पारलौकिक दृष्ट्या या क्रियाः क्रियन्ते त एव अन्त्येष्टिः संस्कारः पदेन उच्यन्ते। एतस्मिन् समये देहस्य दाहः क्रियते तथा तत्कालादारभ्य पिण्डदानादि क्रियाः अपि आरभ्यन्ते। मनूस्मृतौ तथा याज्ञवल्क्यस्मृतौ च वचनं प्राप्यते यत् अयं संस्कारोऽपि मन्त्रोच्चारसहितं सम्पन्नं कर्तव्यम्।[125] स्मृतिग्रन्थेषु मृतव्यक्तेः ये संस्काराः तेषां विस्तारेण वर्णनं वर्तते। तथा च कस्य अयं संस्कारः कर्तव्यः कस्य न कर्तव्यः इत्यपि प्राप्यते। ये स्वच्छन्दरूपेण अनैतिकं जीवनं यापयन्ति तेषां अन्त्येष्टि तथा पिण्डदानादीनां निषेधः वर्तते। एवं प्रकारेण धर्मशास्त्रेषु अन्त्येष्टिकर्मणः विस्तारेण वर्णनं प्राप्यते।

श्रीमद्भागवतमहापुराणे अन्त्येष्टिक्रियायाः सर्वप्रथमोल्लेखः वर्तते तच्च युधिष्ठिरेण भीष्मस्य प्राणत्यागे सति तेषां दाहसंस्कारस्य वर्णनं प्राप्यते अत्र वेदव्यासेन **"निर्हरणादीनि"**[126] शब्दस्य प्रयोगः कृतः वर्तते च श्रीधरीटीकायां **"दाहसंस्कारादीनि"**[127] इत्यर्थ उक्तः वर्तते। चित्रकेतुना स्वमृतपुत्रस्य देहसंबन्धित अन्त्येष्टिक्रिया कृता इति श्रूयते।[128] अस्य अन्यत्र उल्लेखः हिरण्यकशिपुना स्वाग्रजस्य हिरण्याक्षस्य मरणे सति तर्पणादिकं कृतम्

---

[124] वैष्णव पुराणों में आचार समीक्षा, पृ. 349

[125] म.स्मृ., 2/16, या.स्मृ., 1/10

[126] भा. महा., 1/10/46

[127] श्रीधरी., भा. महा., 1/10/46

[128] तथैव 6/16/13

इति च लभ्यते। अस्मिन् विषये वेदव्यासेन **"कटोदकं"**[129] शब्दस्य प्रयोगः कृतः यस्यार्थः श्रीधरस्वामिना श्रीधरीटीकायां **"कटोदकं प्रेताय प्रदेयमुदकम्"**[130] इत्युक्ते प्रेतनिमित्तं जलप्रदानमित्यर्थः। एवमेव **"आब्दि"**शब्दस्य स्थाने **"प्रेतश्राद्धादिकम्"**[131] इत्युक्तं वर्तते अर्थात् मृतव्यक्तेः उद्देश्येन क्रियमाणं श्राद्धं कर्म। एकमन्यदुदारणमपि प्राप्यते हिरण्यकशिपुना स्वबान्धवान् देहस्य अनित्यता तथा जीवस्य नित्यता इत्येतत् सम्बन्धे एकम् उपाख्यानं वर्णितमस्ति यत्र च सुयज्ञनामकोपाख्यानस्य अन्तर्गतस्य पात्रसुयज्ञस्य अन्त्येष्टिकर्म कृतम् इति उल्लिखितं तथा अन्त्येष्टि इत्यर्थे **"सांपरायिकम्"**[132] इति शब्दप्रयोगः कृतः अस्यार्थः श्रीधरस्वामिना **"परलोककृत्यम्"**[133] इति उक्तः यस्यार्थः परलोकदृष्ट्या क्रियमाणकृत्यः। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य सप्तमे स्कन्धे एव हिरण्यकशिपोः मृत्युः यदा जायते तदा प्रह्लादद्वारा पिताहिरण्यकशिपोः अन्त्येष्टिः संस्कारः कारितः इति लभ्यते। तत्र च **"प्रेतकार्याणि"**[134] इति शब्दः प्राप्यते। गरुडपुराणेऽपि मृतव्यक्तेः निमित्तः सम्बोधनार्थं प्रेत इति संज्ञा प्राप्यते। इत्थंप्रकारेण प्रेतकार्याणिशब्दस्य तात्पर्यः मृतमनुष्यस्य निमित्तक्रियमाणकर्म भवति। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे अन्त्येष्टि अथवा श्राद्धनिमित्तं बहूनि पदानि प्रयुक्तानि सन्ति।

श्रीमद्भागवतमहापुराणे गर्भाधानं, पुंसवनं, जातकर्म, नामकरणम्, उपनयनं, समावर्तनं, विवाहः तथा अन्तेष्टि एतेषां विविधस्थाने वर्णनं कृतम्। एतेषां विषयाणां स्मृतिशास्त्रेषु क्वचित् सम्मतिः दृश्यते क्वचित् वैपरीत्यं च दृश्यते। समाजस्य विकासात्मकदृष्ट्या तत्कालीन समाजे अपि संस्काराणां कर्मकाण्डीयपद्धत्या आयोजनं क्रियतेस्म। अत्र च वैदिकमन्त्रेण देवपूजनं तथा संस्काराः भवन्तिस्म। तदनन्तरं ब्राह्मणेभ्यः गोदानं तथा धनदानादिकं क्रियतेस्म अनेन च ज्ञायते यत् गृह्यसुत्रेषु वर्णितानां संस्काराणां पद्धित्याः अवलम्बनं

[129] तथैव 7/2/17
[130] श्रीधरी., भा. महा., 7/2/17
[131] तथैव 7/2/12
[132] तथैव 7/2/59
[133] तथैव 7/2/59
[134] तथैव 7/10/22

श्रीमद्भागवतमहापुराणकालीन समाजे अपि क्रियतेस्म। संस्कारमाध्यमेनेव व्यक्ते आदिदैविकम् आदिभौतिकम् आध्यात्मिकं विकासः भवतिस्म। एवं प्रकारेण जन्मादारभ्य मृत्युरनन्तरमपि मानवजीवने संस्काराणाम् अधिकं महत्त्वं प्राप्यते। संस्कारमाध्यमेन जीवने परिष्कार तथा व्यक्तेः क्रमिकविकासे सहायः प्राप्यतेस्म। अद्य समाजे धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या पश्यामश्चेत् ज्ञायते यत् संस्काराणां प्रतिबिम्बमात्रं वर्तते। केचन् संस्काराः एव व्यक्तेः जीवने क्रियन्ते। संस्कारान् प्रति तेषां पारिवारिक-उदासीनतायाः कारणात् व्यक्तिः संस्कारवञ्चितः भवति। तथापि प्राचीनकालात् आरभ्य एतावतपर्यन्तं व्यक्तेः जीवने संस्काराः महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहन्तः सन्ति। संस्कारेण व्यक्तेः परिमार्जनेन सहैव शिक्षितः अपि भवति। यतोहि बहूनि शिक्षणानि तस्मै संस्कारमाध्यमेनैव प्राप्यन्ते इति।

---*---

पञ्चमोऽध्यायः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितो राजधर्मः

5.1 राज्यस्य सप्ताङ्गानि

5.2 राजशब्दस्यार्थः

5.3 राज्ञो महत्त्वप्रतिपादनम्

5.4 राजधर्मः शब्दस्यार्थः परिभाषा तन्माहात्म्यञ्च

5.5 राजधर्मः

सृष्टेः प्रारम्भकालादेव सभ्यसमाजे सामाजिकैस्सह सम्बन्धितविविधमूल्यानाम् उल्लेखः संस्कृतसाहित्येषु, धर्मशास्त्रेषु, नीतिशास्त्रग्रन्थेषु च प्राप्यते – सामाजिकाधिकारः, सम्पत्तिविभाजनविधिः, नैतिकमूल्यम्, मानवमूल्यम्, सामाजिककर्तव्यम्, व्यक्तिगतकर्तव्यं राज्यादिरक्षणं तथा सामाजिकव्यवस्थायाः नियमनाय च राज्यस्य सङ्कल्पनाक्रियत। सङ्कल्पितराज्यरक्षायै तथा तद्विकासाय च राजव्यवस्थायाः निर्माणमक्रियत। सृष्ट्यां मनुष्यः आत्मनियन्त्रितो भूत्वा निजधर्मस्य सम्यक्पालनं करोति स्म। किन्तु कालक्रमेण यदा राग-द्वेषसदृशानां दुष्प्रवृत्तीनां प्रभावेण समाजे अन्यायस्य, अराजकतायाः एवमव्यवस्थायाः स्थितिः समुत्पन्ना तथा सर्वत्र मत्स्यन्यायस्य व्यापकरूपेण प्रभावोऽभवत्तदास्याः समस्यायाः समाधानाय राज्ञः आवश्यकता समभूत्। ऋग्वेदे इत्थं प्रकारेण वर्णनं प्राप्यते यद् भययुक्तमानवाः मुक्तिप्राप्तये राजपदस्य निर्माणं कृत्वा राज्ञो वरणमकुर्वन्।[1] ऐतरेयब्राह्मणे कथानकमाध्यमेन निरूपितमस्ति यद् देवासुराणां मध्ये बारं-बारं युद्धे सति देवाः पराजिताः भवन्ति स्म। देवाः पराजयस्य कारणानां विमर्शमकुर्वन्। अनेनायं निष्कर्षः समागतः यत् तेषां पराजयस्य प्रमुखं कारणं तेषां मध्ये राज्ञो भाव एवासीदिति। तदा ते सर्वसम्मत्या 'सोमं' निजनृपत्वेन चितवन्तः तथासुरान् च पराजितवन्तः।[2] तैत्तिरीयब्राह्मणे प्राप्यते यत् सर्वेषु देवेषु श्रेष्ठः, यशस्वी तथा शक्तिशाली इन्द्र एवासीदतः स राजा बभूव।[3] इत्थं प्रकारेणैतैः उद्धरणैः इयं स्पष्टता जायते यद् युद्धपरिणामस्वरूपेण राज्ञः उत्पत्तिःसमभूत् तथा सैव व्यक्तिः नृपत्वेन स्वीक्रियते स्म या रणभूमौ सफलनेतृत्वं कुर्यात्, यतोहि युद्धे विजयः राज्ञः पराक्रमेणैव भवति। महाभारते राज्ञः उत्पत्तेः द्वयोः सिद्धान्तयोः वर्णनमक्रियत। प्रथम-सिद्धान्तान्तर्गतं समाजे समेऽपि स्व-स्वधर्माणां पालनं निजेच्छया कुर्वन्ति स्म तथा समाजस्य समेषामुत्तरदायित्वानां

[1] ता ईं विशो न राजानं वृणाना वीभत्सुवो अप वृत्रा दतिष्ठन। ऋ.10/124/8

[2] ऐ. ब्रा. 3/3

[3] तै. ब्रा. 2/2/7/2

कर्तव्यानाञ्च पालनं कुर्वन्ति स्म, किन्तु यदा कामक्रोधादिकारणेन वेदस्य धर्मस्य च विनाशः प्रवर्धितः, तदा चौरादिभ्यः त्रस्तान् जनान् वीक्ष्य तान् रक्षितुं व्यवस्थायाः नियमनाय देवताः ब्रह्मणः पार्श्वं जग्मुः। तदा ब्रह्मा आचारशास्त्रं निर्ममे तथा 'विरजा'नामकं राजानं सृष्ट्वा तस्य ग्रन्थस्य राज्ञा क्रियान्वयनमकारयत।[4] इत्थमेवान्यसिद्धान्तानुसारेण यदा समाजे पूर्णरूपेणाराजकतायाः विस्तारोऽभूत्तथासामाजिकानां सङ्ख्यात्यधिकावर्धत तदा जनसमुदायः ब्रह्मणः शरणमुपागच्छत्तथैकस्य सुयोग्यराजस्य प्राप्तये प्रार्थयत्। इत्थं प्रकारेण ब्रह्मणा मनुः राजपदे नियोजितः।[5] श्रीमद्भागवते प्रथमः सम्राड् मनुः तथा साम्राज्ञी शतरूपा चोल्लिखिता वर्तते, ययोश्चोत्पत्तिः ब्रह्मणः शरीरात्प्रजायाः वृद्ध्यर्थं समजायत।[6] मनुशब्दस्य विशेषणत्वेन 'स्वराट्'शब्दस्य प्रयोगोऽक्रियत। 'स्वेन राजते इति स्वराड्'[7]इति व्युत्पत्या स्पष्टमस्ति यद् ब्रह्मणा राजरूपेण मनोः सृष्टिरक्रियत। मनुस्मृतावुक्तमस्ति यद्राजोत्पत्तिः स्वस्वधर्मे संलग्नवर्गाणां तथाश्रमाणां रक्षायै चाक्रियत।[8] श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽप्यस्यैवार्थस्य प्रतिपादनमक्रियत यद् – राज्ञः दुस्सहतेजसा सुरक्षिता प्रजैवनिजकल्याणमवाप्नोति। यथाहि –

"न वै नृभिर्नरदेवं पराख्यं सम्मातुमर्हस्यविपक्वबुद्धे।

यत्तेजसा दुर्विषहेण गुप्ता विदन्ति भद्राण्यकुतोभयाः प्रजाः।। [9]

अथ चैकमितोप्यनेनार्थेन सम्बन्धितमन्योद्धरणं श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् ब्राह्मणानां रक्षायै ब्रह्मणा क्षत्रियाः नियुक्ताः। यथाहि –

ब्राह्मणैः क्षत्रबन्धुर्हि द्वारपालो निरूपितः।[10]

---

[4] महाभारतम्,12/59
[5] महाभारतम्, 12/67
[6] भा. महा., 3/12/49-53
[7] श. द्रु. पञ्चमकाण्डम्, पृ.478
[8] म.स्मृ., 7/35
[9] भा. महा., 1/18/42
[10] भा. महा., 1/18/34

कौटिल्यानुसारं वर्णनं वर्तते यत् समाजे प्रसृतस्वच्छन्दव्यवहारस्य नियन्त्रणाय यदा दण्डप्रयोगो न भवति तदा मत्स्यन्यायस्य स्थितिरुत्पद्यते, यतोहि दण्डधरस्याभावे बलवता दुर्बलो निगृह्यते।[11] इत्थं प्रकारेण मत्स्यन्यायात् त्रसितनागरिकैः मनुः निजनृपतिः घोषितः तथा रक्षाकारणात् तस्मै निजसम्पत्तेः 'एकं भागं' कररूपेण प्रदातुमभिमताःसञ्जाताः।[12] मनुस्मृतौ राजोत्पत्तिसन्दर्भे उवाच यद्यदा सर्वासु दिक्ष्वराजकतायाः विस्तारोऽभवत्तथा जनाः तयाराजकतया व्याकुलाः भूत्वैकस्मात् स्थानात् स्थानान्तरं पलायमाना आसन् तथा विश्वे एतेषां कोऽपि रक्षकश्च नासीत्तदा सम्पूर्णचराचरस्य रक्षायै राज्ञः सृष्टिः समभवत्।[13] तस्य राज्ञः प्रजया सह कीदृक्ससम्बन्धाः भवेयुरित्यस्य वर्णनं श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् राज्ञःप्रजया समं पुत्रवत् तथा प्रजायाः राज्ञा समं पितृवत्सम्बन्धः भवेदिति।[14] आधुनिको विद्वान् ए. एस अल्तेकरः राज्ञः उत्पत्तिसन्दर्भे स्वमतमुपस्थापयन् वदति यत् "पुराणामनुसारेणोक्तस्य सतयुगस्य भवेन्नाम काप्यवस्था यावज्ज्ञातेतिहासस्य सम्बन्धो वर्तते, हिन्दूविचारकाः एतन्मन्वते स्म यत् समाजस्य रक्षायै विकासाय च शासनसंस्थायाः अस्तित्वमनिवार्यं वर्तते तेन बिना च समाजः स्थिरो भवितुं नार्हति राज्यस्य दैवीयसंस्थारूपेण स्वीकारे तदर्थोऽयं भवति यत् सः समाजवदेव प्राचीनमस्ति, तथा तस्योत्पत्तेः कारणं मनुष्यस्य सहजातसामाजिकी राजनैतिकी च प्रवृत्तिरस्ति।[15] मनुस्मृतेः टीकाकारेण कुल्लूकभट्टेन 'मन्वर्थमुक्तावली'टीकायां धर्मशास्त्रीयतत्त्वानां वर्णनप्रसङ्गे पञ्चधर्मान्तर्गते तथा याज्ञवल्क्यस्मृतिटीकाकारेण विज्ञानेश्वरेण 'मिताक्षरा'टीकायां धर्मशास्त्रीयषड्धर्मान्तर्गते राजधर्मः 'गुणधर्म'रूपेणाभिहितो वर्तते।[16] तथा 'गुणधर्मं' व्याख्यायतोदीरितं वर्तते यत् गुणाश्रितः धर्मः गुणधर्मः वर्तते यथा-अभिषेकादिगुणैः युक्तेन राज्ञा प्रजापालनम्। यथाहि –

---

[11] अर्थ., 1/4

[12] तथैव., 1/13

[13] म.स्मृ., 7/3

[14] भा. महा., 4/12/12

[15] प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, पृ. 22

[16] मन्वर्थ.म.स्मृ., 2/25, मिता. या.स्मृ., 1/1

यो गुणेन प्रवर्तेत गुणधर्मः स उच्यते।

यथा मूर्धाभिषिक्तस्य प्रजानां परिपालनम्।[17]

अस्यैवार्थस्य यथावत्प्रतिपादनं याज्ञवल्क्यस्मृतेः मिताक्षरायामप्यक्रियत। यथाहि –

शास्त्रीयाभिषेकादिगुण-युक्तस्य राज्ञः प्रजा परिपालनादिः। [18]

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राजधर्मशब्दार्थं गुणधर्मशब्दस्य प्रयोगो नाक्रियतापितु राजधर्मशब्दस्यैव प्रयोगो विहितः। यथाहि –

दानधर्मान् राजधर्मान् मोक्षधर्मान् विभागशः।

स्त्रीधर्मान् भगवद्धर्मान् समासव्यासयोगतः।।[19]

पौराणिकेषु तथा स्मृतिककालखण्डेषु राजतन्त्रगणतन्त्रे एव सर्वव्यापकावास्ताम्। इत्थं प्रकारेण समाजे राज्ञः उत्पत्तिः एव महत्त्वं प्राप्यते।

5.1 राज्यस्य सप्ताङ्गानि

धर्मशास्त्रकारैः राज्यस्य सप्ताङ्गविषये स्व-स्वमतानि प्रस्तुतानि सन्ति। एतान्यङ्गानि प्रकृतिरूपेणापि ज्ञायन्ते। राजनैतिकग्रन्थेषु 'प्रकृति''शब्दो राज्यस्य मण्डलस्याङ्गानामपि द्योतको वर्तते। मनु-याज्ञवल्क्य-कौटिल्यानुसारेण स्वामी, अमात्यः, जनपदः, दुर्गः, कोशः, दण्डः एवं मित्रमेतानि राज्यस्य मूलभूतानि कारणानि सन्ति। इमानि राज्यस्य सप्ताङ्गानि कथ्यन्ते।[20] शुक्राचार्येण राज्यस्य सप्ताङ्गानि राज्यस्य शरीररूपेणोल्लिखितानि वर्तन्ते तस्यानुसारेण मन्त्री राज्यस्य नेत्रस्वरूपो भवति, मित्ररूपिराज्याङ्गस्य तेन श्रोत्रस्य सञ्ज्ञा प्रदत्ता वर्तते, कोशः मुखस्वरूपेण स्वीकृतो वर्तते, बलरूप्यङ्गं मनसः सञ्ज्ञया विभूषितमस्ति,

---

[17] मन्वर्थ.म.स्मृ., 2/25

[18] मिता.या.स्मृ., 1/1

[19] भा.महा., 1/9/27

[20] म.स्मृ., 9/294, या.स्मृ., 1/353, अर्थ., 6/1

दुर्गः हस्तस्वरूपेणोल्लिखितः तथा राष्ट्रं चरणसञ्ज्ञया विभूषितं वर्तते, इत्थं प्रकारेण राज्यस्य सप्ताङ्गानि शरीररूपेण वर्णितानि सन्ति।[21] एवमेव श्रीमद्भागवते अङ्गिनाम्नः ऋषेः राज्ञः चित्रकेतोःच सम्वादमध्ये गुरुः, मन्त्री, राष्ट्रम्, दुर्गः, कोशः, सेना, मित्रमिमानि सप्त राज्ञः सप्तावरणरूपेण प्रतिपादितानि सन्ति।[22] एतेषां सप्ताङ्गानां सहयोगेन राजा राज्ये सफलतापूर्वकं शासनं कुरुते। श्रीमद्भागवते निरूपितानि राज्ञः सप्तावरणानि मनुस्मृतौ वर्णितेन राज्यस्य सप्ताङ्गेन सह साम्यं भजन्ते। एतेषु दुर्गस्य, कोशस्य, अमात्यस्य च स्थाने मन्त्री, जनपदस्य स्थाने राष्ट्रं तथा दण्डस्य स्थाने सेना एवं स्वामिनः स्थाने गुरुः इत्यस्योल्लेखो वर्तते। इत्थंप्रकारेण श्रीमद्भागवते स्मृतिसम्मतानि राज्यस्य सप्ताङ्गानि प्राप्यन्ते।

5.2 राजशब्दस्यार्थः

राजन् इति शब्दः नित्यं पुँल्लिङ्गशब्दो वर्तते। अस्य शब्दस्य निष्पत्तिः राजृदीप्तौ इत्यस्माद्दीप्त्यर्थकाद्धातोः कणिन्प्रत्यये तत्संयोगेन च जायते। यस्यार्थो भवति '**राजते शोभते इति राजन्**'।[23] लोके यो मनुष्यः शासकस्य सर्वप्रमुखपदे स्थितो भूत्वा राज्यशासनं सञ्चालयति स्म, प्रजायाः भरणपोषणे रक्षणादिलोकहितेषु रतः सन्निजजीवनं राज्यधर्मे वर्णितसकलनियमानामालम्बनं विधाय यापयति स्म स राजन् इति शब्देन सम्बोध्यते स्म। एतादृशो व्यक्तिः दैवीयशक्तीनामंशैः विभूषितो मन्यते स्म तथा समाजे सः सर्वतो भावेन सर्वैः मनुष्यैः पूजनीयो भवति। तस्य केनापि कथमपि कस्यामप्यवस्थायाञ्चावमाननं धर्मशास्त्रकारैः उचितं न मतम्। राज्ञः स्थानं समाजे मनुष्याणां मध्ये ब्राह्मणान् विहायान्येभ्यः समेभ्यः श्रेष्ठं मतमासीत्। पुराणसाहित्येऽपि राज्ञो महत्त्वस्य प्रतिपादनं प्राप्यते।

---

[21] शु.नी., 1/61-62

[22] भा.महा., 6/14/17

[23] श.द्रु., चतुर्थकाण्डम्, पृ.129

राज्ञः उत्पत्तिसिद्धान्तः

धर्मशास्त्रकारैः राजा देवस्वरूपः मन्यते, अतः तस्योत्पत्तिः देवांशेभ्यो मता वर्तते। मनुस्मृतौ राज्ञः उत्पत्तिः इन्द्रादिविविधदेवानां सारभूतशाश्वतांशेभ्योऽमन्यत। अस्मिन् विषये प्राप्यते यत् जगद्रक्षायै इन्द्रः, पवनः, यमः, सूर्यः, अग्निः, वरुणः, चन्द्रमा तथा कुबेरः इत्येषामष्टदिक्पालानां सारभूतांशैः राज्ञः उत्पत्तिरक्रियतेति।[24] राजा अग्नि-वायु-सूर्य-चन्द्र-यम-कुबेर-वरुणेन्द्रवदेव प्रतापी भवति।[25] अस्मिन्नेव प्रसङ्गे मनुस्मृतेः वचनं वर्तते यद्यदि राजा बाल्यावस्थायां स्यात्तदापि तस्यानादरो न कर्तव्यः यतोहि सः कश्चन महान् देव एव मनुष्यरूपेण तिष्ठति।[26] राज्ञः उत्पत्तेः प्रस्तुतस्मार्तसिद्धान्तानामनुवर्तनं श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽपि दृश्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञः पृथोः उद्भवविषये ऋषिभिःकथ्यते यत् पृथुरूपेण साक्षात् श्रीहरिरेव स्वांशरूपेण संसारस्य रक्षायै अवातरत्।[27] अस्मिन्नेव प्रसङ्गे भागवतमहापुराणे राज्ञे 'पृथु'इत्यस्मै देवताभिः विविधास्त्रप्रदानमपि राज्ञः देवशक्तिसम्पन्तायाः विवरणं भवति।[28]

5.3 राज्ञो महत्त्वप्रतिपादनम्

राज्ञो महत्त्वं श्रीमद्भागवते विस्तरेण प्रतिपादितं वर्तते यथा– शासकवर्गस्याभावे समाजस्य स्थितेः वर्णनमक्रियत यद्यस्मिन् काले राज्ञो रूपं धृत्वा भगवान् पृथिव्यां न द्रक्ष्यते,तदा चौराः वर्धिष्यन्ते तथारक्षितमेषवद्युगपदेकस्मिन्नेव क्षणे समेषां जनानां नाशो भविष्यति।[29] राज्ञोऽभावे वर्णाश्रमाचारयुक्तो वैदिकार्यधर्मो नश्यति तथा अर्थ-लोभकाम-वासनावशीभूताः लोकाः श्वानमरकटवद्वर्णसङ्कराः भूत्वा सन्मार्गात् पथभ्रष्टाः जायन्ते।[30] यस्य लोकस्य राजा नष्टो जायते तत्र चौर्यादितत्त्वानि वर्धन्ते तथा समाजे जनाः परस्परं

---

[24] म.स्मृ., 7/3-4
[25] तथैव 7/7
[26] तथैव 7/8
[27] भा.महा., 4/15/6
[28] तथैव 4/15/14-20
[29] भा.महा., 1/18/43
[30] तथैव 1/18/45

मारणताडनापशब्दप्रयोगमाध्यमेन चावमाननं कुर्वन्ति।[31] इत्थं प्रकारेण समाजेऽव्यवस्था व्याप्नोति सुतराम्।

राज्ञो गुणाः दोषाश्च

धर्मशास्त्रसाहित्ये राज्ञो गुणदोषानां सविस्तरं निरूपणमक्रियत। मनुस्मृतौ दण्डप्रदायकस्य राज्ञो गुणविषय उदीरितं यत् पवित्रः, सत्यप्रतिज्ञः, शास्त्रानुकूलव्यवहारः सहायकयुक्तः तथा बुद्धिमानेव दण्डस्य समुचितप्रयोगे समर्थो भवति।[32] अर्थाद्राजा पूर्वोक्तगुणैः युक्तो भवेत्। अजितेन्द्रियस्य राज्ञो विषये प्राप्यते यद् "विश्वे अजितेन्द्रयस्य राज्ञो यशः जले विद्यमानघृतबिन्दुवत् संक्षिप्तं भवति"[33] अनेन ज्ञायते यद्यशः काम्यमानेन राज्ञा जितेन्द्रियेण भाव्यम्। राजैव प्रजां स्वीयनियन्त्रणे स्थापयितुर्हतीत्यस्य निरूपणं स्मृतिशास्त्रेषु यत्र – तत्र प्राप्यते।[34] दोषानां परित्यागः स्मृतिशास्त्रस्य प्रमुखो विधेयः वर्तते। तदनुसारेण निरूपितं वर्तते यद्राजा कामजान् दशदोषान् तथा क्रोधजानष्टौदोषान् सर्वथा परित्यजेदिति। यतोहि कामजव्यसनेषु दोषेषु वासक्ताः राजानो निश्चयेनैवार्थेन धर्मेण च हीनास्सञ्जायन्ते तथा क्रोधोत्पन्नदोषैः तेषां जीवनं नश्यति अत एव राज्येते दोषाः न भवेयुः। कामजव्यसनान्तर्गतं आखेटः, द्यूतक्रीडा, दिवास्वापः, परदोषकथनम्, स्त्रिष्वाशक्तिः, मादकपदार्थानां सेवनम्, नृत्य-गानादिष्वभिरुचिः तथा वृथाभ्रमणस्य च संकलनं कृतो वर्तते। एतेभ्यःदुर्गुणेभ्यः मुक्त्यर्थं राज्ञे उपदेशः प्रदत्तः वर्तते। इदमेव पैशुन्यमर्थात् अमात्यात् सुकृतबन्धुभ्यश्च गोपनीयरहस्यानां कथनस्य प्रवृत्तिः, साहसम् अर्थात् योग्यव्यक्तेः निम्नकर्मसु नियुक्तेः प्रवृत्तिरथवा लघ्वपराधायापि करनियोजनस्य प्रवृत्तिरथवा बन्धनं कृत्वा कारावासे स्थापनस्य प्रवृत्तिः, द्रोहः अर्थाद्रहस्यात्मकस्य वधस्य प्रवृत्तिः, ईर्ष्या अर्थाज्जीवितायां व्यक्तावाक्रमणस्य प्रवृत्तिरथवा तस्य मारणस्य प्रवृत्तिः, असूया अर्थात् सर्वसाधारणविषयस्यासाधारणत्वेन कथनस्य प्रवृत्तिः,

---

[31] तथैव 1/18/44

[32] म.स्मृ,. 7/31

[33] तथैव 7/34

[34] तथैव 7/44

गुणिनां गुणासहित्वप्रवृत्तिः तथा तेषां गुणेषु दोषारोपणस्य प्रवृत्तिः, अर्थदूषणम् अर्थाद्धनदानस्याप्रवृत्तिरथवास्तेयप्रवृत्तिः, वाक्पौरुष्यमर्थाद्वाण्याः कर्कशत्वं यथापशब्दैः अवमाननं तथा दण्डपारुष्यमर्थाद् अत्यधिकस्य कठोरदण्डस्य तथा लघ्वपराधस्याधिकदण्डप्रदानप्रवृत्तिः अथवा शारीरिको दण्डः एते 'कामजदोषाः' सन्ति। राजैतान् दोषान् परित्यजेत्।[35] एतेषां व्यसनानां मूलकारणं लोभो वर्तते अतः राजा प्रयत्नपूर्वकं लोभं परित्यजेत्।[36] राज्ञः षण्णां वर्जनीयशत्रूणां वर्गस्य – काम-क्रोध-लोभ-मोह-मान-मदादीनामुल्लेखो प्राप्यते।[37] एतेषु प्रत्येकस्मात्कारणादितिहासप्रसिद्धराजानां विनाशो बभूव यथा– कामुकतावशादेव राजा दण्डकोऽविनश्यत्, क्रोधकारणाद् राजा जनमेजयः, लोभकारणाद्राजर्षिः ऐलः, मोह-कारणाद् वातापिनामको दैत्यः, मानकारणात् पुलस्त्यकुलोद्भवः राक्षसराजः रावणः तथा मदकारणाद् दम्भोद्भवनामकादिराज्ञां विनाशो बभूव। यतोहीमे सर्वे शत्रुतुल्यैः षड्भिःअरिभिस्सह युक्ता आसन् अतः राजभिः इमे रिपवः परित्याज्याः।[38] याज्ञवल्क्यस्मृतौ राज्ञो गुणानां वर्णनमित्थं प्राप्यते – महोत्साहवान्, बहुदर्शी, कृतज्ञः, वृद्धसेवकः, विनीतः, सत्यसम्पन्नः, कुलीनः, सत्यवक्ता, पवित्रः, शीघ्रतापूर्वकं कार्यसाधकः, स्मृतिमान्, गम्भीरः, सरलस्वभावः, धार्मिकः, व्यसनरहितः, विद्वान्, शूरः, रहस्यज्ञाता, निजगुप्तदोषनिगूहकः, न्यायविद्याप्रवीणः, राजनीतिप्रवीणः, त्रयाणां वेदानां ज्ञाता च राजा भवेत्।[39] आखेटः, मद्यपानं, तथा द्यूतक्रीडेमे राज्ञो दुर्गुणाः वर्णितास्सन्ति, एतेषां त्रयाणां दुर्गुणानां कारणेन क्रमशः - आखेटकारणात् पाण्डुः, द्यूतक्रीडाकारणाद्राजा नलः, मद्यकारणाच्च समस्ताः यदुवंशिनः विपत्तौ पतिताः इति संसारे समेषां विदितमेव।[40]

---

[35] म.स्मृ., 7/45-48
[36] म.स्मृ., 7/49
[37] शु.नी., 1/143
[38] शु.नी., 1/144-145
[39] या.स्मृ., 1/309-311
[40] शु.नी., 1/142

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञो गुण-दोषनिरूपणं राज्ञां चरित्रगाथामाध्यमेनाक्रियत। चतुर्थे स्कन्धे ध्रुवस्य गुणानां वर्णनं कृतं वर्तते यत्र सः शीलसम्पन्नता, ब्राह्मणभक्तिनिष्ठा, दीनवत्सलतेति गुणैस्सह ध्रुवः धर्ममर्यादारक्षकोऽपि कथितः।[41] राजसु श्रेष्ठराजस्य पृथोः चरितस्य वर्णने गुणनिरूपणद्वारा उत्तमराजस्य गुणानां बृहत्प्रदर्शनं - लोकरक्षकः, प्रशासकः, पालकः, पोषकः, समदर्शी, तितिक्षुः, करुणावान्, क्षितिवद्धैर्यवान् क्षमाशीलश्च, दृढसङ्कल्पी, सत्यप्रतिज्ञः, ब्राह्मणभक्तः, आप्तसेवकः, शरणागतवत्सलः, स्वपत्न्यानुरागी, अन्यस्त्रिषु मातृवद्व्यवहारः, प्रजासु पितृवत्स्नेहकारकः एवं दण्डपाणिः।[42] अनेनैव सह राज्ञः पृथोः क्षमाशीलराजरूपेण वर्णनं प्राप्यते। गाथायाः अनुसारेण महाराजस्य पृथोः शततमस्य यज्ञस्याश्वः देवाधिपतिना इन्द्रेण मुहुर्मुहुः चोर्यते। तदा राज्ञः पृथोः पुत्राः इन्द्रवधायायोजनमकुर्वन्। इन्द्रस्य मृत्युः सुनिश्चितास्तीति विज्ञाय ब्रह्मणा पृथोः सकाशे इन्द्रं क्षन्तुं प्रार्थनाक्रियत। तदा सः इन्द्रमक्षमत।[43] अस्मिन्नेव प्रसङ्गे राजा बलिः धर्मनिष्ठः, सत्यप्रतिज्ञः, कर्तव्यपरायणः, यज्ञादीनां योजकः सद्गुणधारकः इत्यादिरूपेण निरूपितो वर्तते। राज्ञो बलेः धर्मनिष्ठतायाः ज्ञानं गाथामाध्यमेन ज्ञायते। वामनेन भगवत्पादत्रयपरिमिता भूमिः यदायाच्यत तदा गुरोः शुक्राचार्यस्य दानविषयकविरोधे सत्यपि बलिना निजधर्मो रक्षितः इति वर्णनं प्राप्यते तथा तेन तस्मै वामनाय भगवते पादत्रयमितभूमेः दानसङ्कल्पोऽक्रियत।[44] राज्ञः अम्बरीषस्य चरिते सः सद्गुणयुक्तः प्रदर्शितो वर्तते राजा अम्बरीषः व्रती, भगवत्भक्तिनिष्ठः, दीनवत्सलः एवं ऋषीन् प्रति सम्मानभावयुक्तः आसीदिति विशेषेण प्रतिपादितं वर्तते।[45] राजा भरतः धर्मराजप्रतीकरूपेण वर्णितो वर्तते।[46] राज्ञः षड्दोषानां विवेचनं राज्ञो वेनस्य गाथया साम्यं भजते। कथानुसारेण राजा वेनः राज्यलक्ष्म्याः अहङ्कारेण युक्तो भूत्वा धर्मशास्त्रीयाणां

---

[41] भा.महा., 4/12/11 - 12
[42] तथैव 4/16/4 - 27
[43] भा. महा., 4/20 - 18
[44] तथैव 8/18 - 20
[45] तथैव 9/4
[46] तथैव 9/19

नित्य - नैमित्तिककर्मणां विरोधी अभूत्। यस्मात् तस्य राज्ये किञ्चनापि सत्कर्म प्रजाद्वारा न सम्पद्यते स्म। राजा वेनः प्रजासु विविधप्रकारेणात्याचारमारभत, ऋषि-मुनीनामवमाननमारब्धवान्, इत्थं प्रकारेण सः निजप्रजयैव मारितः।[47] राज्ञः अहङ्कारस्वभावः तस्य दोषत्वेन परिगण्यते। राजा परीक्षितः एकः धर्मज्ञः राजा आसीत् किन्तु अहङ्कारग्रसितत्वात् तस्यापि दुःखमग्नतायाः वर्णनं प्राप्यते। कथायाः अनुसारेण पिपासात्रस्तः परीक्षितः ऋष्याश्रमे ध्यानमग्नेन ऋषिणा असत्कृतश्चेत् परीक्षितः मत्सरक्रोधयुक्तो भूत्वा तपोनिरतं ऋषिं पाखण्डिनं मत्वैकं मृतसर्पं तस्य कण्ठे निक्षिपति। राज्ञः इदं कृत्यं राजानमनार्यमसभ्यञ्च निरूपयति।[48] ऋषिं प्रत्याचरितमिदमाचरणं राज्ञो महान् दोषः कथितः। राज्ञो वेनस्याख्यानान्तर्गतमपि राज्ञो दोषानां प्रदर्शनमक्रियत। तदनुसारेण राजा वेनोऽहङ्काराधीनो भूत्वात्मानमेव सर्वातिशायित्वेन मन्यते तथा प्रजायाः हितचिन्ताद् विरतो जायते तथा ऋषिभिः सः सद्धर्माय, सन्मार्गाय तत्कर्तव्याय बोधितस्सन्नपि सः ऋषीन् दुर्वचनैः समबोधयत्तथा तेषामवमाननमकरोदथ च स्वामीश्वरत्वेन व्याख्याति स्म। इत्थं प्रकारेण राज्ञो वेनस्य चरितेऽपि अहङ्कारदोषस्य निरूपणं प्राप्यते।[49] हिरण्यकश्यपोः चरितान्तर्गतेऽपि तस्यात्यधिक- शक्तिसम्पन्ने तथा ऐश्वर्यसम्पन्ने सति तदहङ्कारवशाद् मदयुक्तताया निरूपणमक्रियत, शास्त्रमर्यादां विस्मृत्येत्थमाचरणस्य वर्णनमस्ति येन प्रजासुत्राहि - त्राहीति चीत्कारोऽभूत्तथा तदुग्रदण्डकारणाल्लोकपाला अपि अन्यत्र शरणाय विवशाः बभूवुः।[50] अस्मिन्नेव क्रमे कंसस्य जीवनचरितेऽपि बहूनां दोषाणां विवरणं प्राप्यते, कथानुसारेण कंसः पराक्रमी वर्तते किन्तु सः आत्मजीवनरक्षायै सद्यःजातान् देवक्याः शिशून् मारयति। एतदतिरिच्य तस्य राज्ये तस्य मन्त्रिभिः कृतस्य विविधप्रकारकस्योत्पातस्य विवरणमपि प्राप्यते यस्माच्च तद्राज्यस्य प्रजा त्रसिताभूदित्यपि विवरणं मिलत्येव। इत्थं प्रकारेण

---

[47] तथैव 4/14/1 - 34

[48] भा.महा., 1/19/1

[49] तथैव 4/14/23-28

[50] तथैव 7/4/21

धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु वर्णिताः राज्ञो गुणाः दोषाश्च श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञां चरितं निरूपयन्त्याभिः कथाभिः व्याख्याताः। एतासां कथानां श्रवणेन राजभिस्सद्धर्मस्य ज्ञानमवाप्यते।

5.4 राजधर्मः शब्दस्यार्थः परिभाषा तन्माहात्म्यञ्च

राजधर्मस्यार्थः वर्तते 'राज्ञः धर्मः' महाभारतस्यानुसारेण धर्मो राजाश्रितः भवति।[51] धर्मशब्दस्यार्थो व्यापको वर्तते। एकस्मिन्नेव निश्चिते एवं सीमितेऽर्थेऽस्य शब्दस्य प्रयोगो भारतीयवाङ्मये न कृतो वर्तते। धर्मशब्दः स्थानव्यक्तिसमयभेदेनानेकेष्वर्थेषु स्वीक्रियते। शब्दकल्पद्रुमेऽप्यमेवार्थो प्राप्यते- "**राज्ञो धर्मः राजधर्मः**"।[52] प्रस्तुतपरिभाषानुसारेण राज्ञः कर्तव्यानि, कर्माण्यथवा राज्ञा क्रियमाणानि लोकेऽस्मिन् तानि सर्वाणि कर्माणि यानि च शास्त्रीयधर्मग्रन्थेषु, पुराणेषु, काव्येषु च प्राप्यन्ते येषां च साक्षात्सम्बन्धो राज्ञा सह भवति ते राजधर्माः वक्तुं शक्यन्ते। एतेषु राज्ञः प्राशासनिकानि तथाप्राशासनिकानि कर्माणि, तस्य दिनचर्या एवं तेन शास्त्रविहितानि सर्वाण्यपि आचारव्यवहाररूपादिकर्माणि 'राजधर्माः' कथ्यन्ते। राजधर्मस्यान्यपर्यायशब्दाः राजशास्त्रम्, नृपशास्त्रम् तथा दण्डनीत्यादयश्च प्राप्यन्ते। राजधर्मस्य महत्त्वसम्बन्धे प्राप्यते यद्राजाद्वारा राजधर्मपालनमेवान्यप्रजासु समेषामपि वर्गाणां धर्माचरणे मूलाधारः भवति।[53] राजधर्मः समाजस्य धर्मप्रसादस्य मूलाधारो वर्तते।[54] महाभारते राजधर्मः सर्वेषां धर्माणां तत्त्वं सारो वोक्तः।[55] प्रजातन्त्रशासनेऽपि राजधर्मः अक्षुण्णतया विद्यमानो भवति।

---

[51] महाभारतम्., 12/320/6
[52] श.द्रु., चतुर्थकाण्डम्, पृ.115
[53] पराशर स्मृति एवम् देवल स्मृति का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 110
[54] तथैव
[55] महाभारतम्., 12/141/9-10

5.5 राजधर्मः

महर्षिवेदव्यासविरचिते महाकाव्ये महाभारते राजधर्मः सर्वधर्माणां तत्त्वं सारो वा निगदितः।[56] महाभारतस्य शान्तिपर्वणि राजधर्मान्तर्गते राज्ञः आन्तरिकैः एवं बाह्यगुणैस्सह तस्य कर्तव्याकर्तव्यकर्मणामपि विस्तृतया वर्णनं प्रस्तुतं वर्तते– "प्रजासुखकामनया देवान्ब्राह्मणान् च प्रति शास्त्रवर्णितविधिना व्यवहारः, देवतानां ब्राह्मणानां चार्चनां विधाय राजा धर्मर्णात् मुच्यते, अर्थाद्राज्ञे देवतानां ब्राह्मणानाञ्चार्चनमत्यन्तमावश्यककर्मरूपेण प्राप्यते। राज्ञा पुरुषार्थोऽनुष्ठेयः, पुरुषार्थ एव राज्ञः सर्वोत्तमा नीतिः वर्तते। सत्यधर्मस्य पालनम्। राज्ञः सद्गुणानामुल्लेखः प्राप्यते यत् सः गुणवान्, शीलवान्, मनसेन्द्रियाणां च संयतः, कोमलस्वभावः, धर्मपरायणः, जितेन्द्रियः, दर्शने प्रसन्नवदनः, दाता, उदारचित्तश्च स्यात्। आवश्यकतानुसारेण कोमलकठोरस्वभावयोः आलम्बनम्, विशेषेण ब्राह्मणानां सम्मानम्, कस्याञ्चिदपि परिस्थितौ ब्राह्मणवधाभावः, तेभ्यः प्राणदण्डस्यानभिधानम्, पञ्चमहातक्यां सत्यामपि ब्राह्मणाय शारीरिकदण्डनिषेधः अन्यप्रकारेणदण्डनम्, चतुर्ष्वपि वर्णेषु दयापूर्वको व्यवहारः, अत्यधिकस्य कोमलस्यात्यधिकस्य कठोरस्वभावस्य चाप्रयोगः, प्रमाणानां माध्यमेन सत्यान्वेषणम्, व्यसनानामासक्तेः परित्यागः, यथा गर्भिणी स्त्री निजसन्ततेः पालनं करोति तथैव राजापि स्वप्रजायाः पालनं तया सह व्यवहारं च कुर्यात्, अपराधिभ्यो दण्डप्रदानम्, धैर्यधारणम्, सेवकैस्सह सम्यग्व्यवहारः, उद्योगशीलता, पात्रापात्रेण सह सन्धिविरोधः, कुमार्गगामिभ्यः सर्वेभ्यो दण्डप्रदानम्, इहलोके प्रजावर्गस्य प्रसन्नतैव राज्ञां धर्मः भवति, सत्यसंरक्षणम्, सरलःव्यवहारःराज्ञः उचितं कर्तव्यमस्ति, अन्येषां धनस्याक्षतिः, धनादिप्रदानस्य सम्यग्व्यवस्था, इन्द्रियनिग्रहः, प्रजायाः धर्मसङ्करतातः रक्षणमेव राज्ञां सनातनः धर्मः वर्तते, राजनीतेः षण्णां गुणानां सन्धि-विग्रह-यानासन-द्वैधीभाव-समाश्रयाणां

[56] महाभारतम्., 12/141/9-10

बुद्ध्या निरीक्षणम्, गुप्तचरस्य नियुक्तिः, न्यायविधानम्, धनसङ्ग्रहः, भरण- पोषणप्रबन्धराहित्येन प्रजायाः भरण- पोषणम्, वृद्धोपासना, साध्वसाध्वोः न्यायपूर्वको व्यवहारः, दुष्टेभ्यो दण्डप्रदानम्, दानम्, शुद्धसदाचारस्य पालनम्, शूरवीरता, कुलीनता, आत्मसम्माननिमित्तमन्येषामवमानाभावः, शत्रूणांगतिविधिषु दृष्टिपातः, अत्यधिकविश्वासाभावः तथात्यधिकसन्देहाभावः, क्रोधाभावश्च। राज्यरक्षायास्साधनानि- गुप्तचरस्य नियुक्तिः, अन्यराष्ट्रेषु निजप्रतिनिधेः नियुक्तिः, सेवकान् प्रति ईर्ष्याराहित्येन सह समये वेतनप्रदानम्तथा वृत्तिप्रदानम्, न्यायपूर्वकं करसङ्ग्रहणम्, अन्यायेन प्रजायाः धनस्यास्वीकरणम्, सत्पुरुषाणां सङ्ग्रहः, शूरता, कार्यदक्षता, सत्यभाषणम्, प्रजायाः हित- चिन्तनम्, सरलेन कुटिलोपायेन वा शत्रुपक्षे भेदस्थापनम्, पुरातनानां गृहाणां मन्दिराणाञ्च जीर्णोद्धारः, दीनदुःखिनां संरक्षणम्, समयानुसारं शारीरिकस्यार्थिकस्य च दण्डस्य प्रयोगः, साधुपुरुषाणां त्यागाभावः, कुलीनमनुष्याणाङ्कृते आश्रयप्रदानम्, सङ्ग्रहयोग्यवस्तूनां सङ्ग्रहः, बुद्धिमत्पुरुषाणां सङ्गतिः, पुरस्कारदिना सेनायाः हर्षोत्साहवर्धनम्, नित्यं प्रजायाःसंरक्षणम्, कर्मणि कष्टानुभवराहित्यम्, कोषे धनस्य वृद्धिः, नगररक्षायाः पूर्णरूपेण प्रबन्धनम्, विषयेऽस्मिन् अन्येषु विश्वासाभावः, पुरवासिभिःराजविरुद्धा कूटनीतिराचरिता चेद् भेदजननम्, शत्रुमित्रमध्यस्थलेषु यथोचिता दृष्टिः, अन्यद्वारा स्वसेवकेष्वपि कूटनीतेः वारणम्, स्वयमेव निजनगरस्य निरीक्षणम्, स्वयं कस्याप्युपरि विश्वासं न कुर्यात्, अन्येभ्यः आश्वासनप्रदानम्, नीतिधर्मस्यानुसरणम्, सर्वदा उद्योगशीलता, शत्रुपक्षतः सावधानता तथा निम्नकर्मणां तथा दुष्टपुरुषाणां सर्वतोभावेन त्यागः, इमानि सर्वाण्यपि राज्य- रक्षायाः उपायास्सन्ति। शत्रोः अनवहेलनम्, निजमन्तव्याप्रकटनम्, धार्मिकानुष्ठानानां विधानम् इत्थं प्रकारेण राजधर्मस्य विस्तृतं वर्णनं महाभारते युधिष्ठिरभीष्मयोर्मध्येजातसम्वादमाध्यमेन प्राप्यते।[57] मनु-याज्ञवल्क्यादिस्मृतिकारैरपि राजधर्मविषयकसिद्धान्तानां प्रतिपादनमक्रियत। कौटिलीयार्थशास्त्रे

[57] महाभारतम्. 12/56 - 58

विशेषरूपेण राजधर्मस्य विस्तृतं विवेचनं प्रस्तुतं वर्तते। राज्ञा क्रियमाणानि कर्तव्यकर्माण्येव राजधर्मः इत्याख्यायन्ते। राज्ञः आचरणविषये स्पष्टतया निर्देशः प्राप्यते यद्राजा स्निग्धमित्रेषु सरलव्यवहारं कुर्याद् ब्राह्मणान् प्रति क्षमावान् च स्यादिति।[58] राज्ञानुष्ठीयमानानां नित्यकर्मणां विषये प्राप्यते यत् सः प्रातःकाले प्रजागर्य त्रिवेदिनां वृद्धविदुषां ब्राह्मणानां सेवां कुर्यात्तथा तेषामाज्ञानुसारं कार्याणि सम्पादयेत्।[59] राजा बुद्धिमान् तथा गुणवान्सदपि वृद्धजनेभ्यो विनयादिगुणान् गृह्णीयात्।[60] राजा सर्वतोभावेन जितेन्द्रियस्स्यात्। यज्ञानुष्ठानम्, दानम्, प्रजायाः करस्वीकरणम्, प्रजया सह पितृवद्व्यवहारः, ब्राह्मणानां सत्कारः, अप्राप्तवस्तुनः प्राप्त्यर्थमुद्योगः प्राप्तस्य च संरक्षणम्, आलस्यं परित्यज्य स धर्मार्थकाममोक्षाणामनुष्ठानं कुर्यात्, सेनायाः प्रशिक्षणम्, शत्रुवर्गस्य निरीक्षणम्, वकवद्ध्यानम्, सिंहवत् पराक्रमशीलता, सामदानदण्डभेदैः राज्यशासनम्, प्रातः कालेप्रजागर्य शौचादिकर्मभ्यो निवृत्तो भूत्वा अग्निहोत्रस्य ब्राह्मणानाञ्च सत्कारः, प्रजया शासनाधिकारिभिश्च यथायोग्यं व्यवहारः, स्वात्मरक्षायै बहुमूल्यवस्तूनामपि परित्यागः, आपत्कालनिमित्तं धनसङ्ग्रहणम्, धैर्यवान् स्यात्, उपेतोपेयोपायैः एतैः त्रिभिः अर्थसिद्धेः प्रयत्नः, सन्ध्याकाले अलङ्कृतो भूत्वा युद्धकर्तॄणाम्, वाहनानाम्, अस्त्र-शस्त्राणां तथालङ्काराणां परीक्षणम्, गुप्तचरैस्सह मन्त्रणाविधानम्, प्रजायाः न्यायपूर्वकं धनसङ्ग्रहणम्, निजप्रजां वर्णसङ्करदोषाद्रक्षेत्, बलवद्भ्यो दुर्बलानां रक्षणम्, श्रोत्रियभ्यः, रोगिभ्यः, आर्तेभ्यः, बालकेभ्यः, वृद्धेभ्यः, अतिदरिद्रेभ्यः, कुलीनेभ्यः, चरित्रवद्भ्यो मनुष्येभ्यस्सदा दानादिना सुसम्मानयेत्, इन्द्रवत् प्रजायाः सुखसमृद्धेः वर्धनम्, पवनसदृशदूतानां माध्यमेन सर्वत्रप्रवेशं समवाप्य राज्यनिरीक्षणम्, सम्पूर्णासु प्रजासु समत्वभावेन न्यायविधानम्, पातकिभ्यो दुष्टेभ्यश्च दण्डप्रदानाय अग्निवत्प्रतापः, क्षितिवत् समत्ववान् च इत्यादि मनु- स्मृतौ

[58] म.स्मृ., 7/32
[59] तथैव 7/37
[60] तथैव 7/39

प्रस्तुतविधिना राजधर्मवर्णनमक्रियत।[61] याज्ञवल्क्यस्मृतिकारः महर्षियाज्ञवल्क्योऽपि-राजकर्तव्यकर्मणां विस्तारपूर्वकं वर्णनं चकार यथाहि - राजा प्रातः नित्यकर्मभ्यो निवृत्तो भूत्वा आय–व्ययलेखनस्य निरीक्षणं कुर्यात्, गुप्तचराणां दूतानाञ्च कार्याणां निरीक्षणं कुर्यात्, सेनायाः निरीक्षणं कुर्यात्तथा सेनापतिना सह ब्राह्मणानामपि सत्कारं कुर्याद्, राज्यस्य गुप्तदूतैस्सह सादरं व्यवहरेत्, आचार्यस्य, ऋत्विजस्य पुरोहितस्य चाशीर्वादं प्राप्नुयाद्, गोः, स्वर्णस्य, भूमेः, विवाहोपयोगिधनस्य, गृहस्य च श्रोत्रियब्राह्मणेभ्यो दानं दद्यात्, ब्राह्मणानां विषये क्षमावान् स्यात्, मित्रैस्सह निष्कपटतया व्यवहरेत्, शत्रुविषये क्रुद्धस्स्यात्, प्रजया समं पितृवद्व्यवहरेत्, प्रजां रक्षेत्, करं गृह्णीयात्, श्रेष्ठकर्मयुक्तानां सम्माननं कुर्यात् तथा दुष्टतापूर्वककार्यकर्तॄणां कृते दण्डं प्रयच्छेत्, उत्कोचस्वीकुर्वतः कर्मचारिणः राज्याद्बहिः निष्काषयेत्, श्रोत्रियब्राह्मणेभ्यो दानं प्रदाय स्वराज्ये स्थानं प्रदाय स्थापयेत्।[62] महर्षिणा अत्रिणा राज्ञः पञ्चयज्ञानां वर्णनं तत्सम्पाद्यमानैः पञ्चकार्यैः कृतो वर्तते तदनुसारं - दुष्टेभ्यो दण्डप्रदानम्, श्रेष्ठजनानां पालनम्, न्यायानुसारं धनस्य वृद्धिं कुर्यात्, पक्षपातराहित्येन विचारः तथा राज्यरक्षा एतानि कर्माणि राज्ञः पञ्चयज्ञसमानानि वर्ततन्ते।[63] हारीतस्मृतावपि प्राप्यते यद्राजा राज्यकर्मणि निरतस्सन् क्षत्रियधर्मानुसारं प्रजापालनं कुर्यात्, वेदाध्ययनं कुर्यात्, दानं कुर्यात् तथास्वभार्यायामेव रतिं कुर्यात् तथा कररूपेण प्रजायाः आयस्यषष्ठं भागं गृह्णीयात्।[64] महर्षि - पाराशरद्वारापि राज्ञः कर्तव्यविषये वर्णितं वर्तते। तदनुसारेण - क्षत्रियो राजा शस्त्रमवाप्य प्रचण्डभावेन प्रजानां संरक्षणं कुर्यात् शत्रुसैन्यञ्च विजित्य धर्मपूर्वकं पृथिवीं पालयेत्।[65] शङ्खलिखितस्मृतौ प्राप्यते यद्यो राजा निजप्रजां न रक्षति सः ब्रह्मघातकः इत्युच्यते।

---

[61] म.स्मृ., 7/27, 32, 37, 39, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 79, 80, 81, 99, 100, 101, 102, 106, 107, 145, 146, 212, 214, 215, 222, 223, 9/304, 307, 310, 311

[62] या.स्मृ., 1/327 - 329, 332 - 339

[63] अ.स्मृ., 29

[64] हा.स्मृ., 2/3 - 3

[65] प.स्मृ., 1/67

दुर्बलानाम्, अनाथानाम्, वृद्धानाम्, बालकानां तथा तपस्विमनुष्याणां च रक्षैव तस्य कर्तव्यं वर्तते।[66] गौतमस्मृतावपि राजधर्माणां वर्णनमक्रियत यस्यान्तर्गते वेदाध्ययनम्, यजनम्, दानं तथैतभ्योऽतिरिच्य राज्ञो धर्मः वर्तते यत् समेषां प्राणिनां रक्षा, न्यायपूर्वकं दण्डविधानम्, श्रोत्रियब्राह्मणस्य, उत्साहहीनक्षत्रियादीनां राजकरप्रदानेऽसमर्थानामुपकारिपुरूषाणाञ्च प्रतिपालनम्, विजयायोद्योगः, आपत्काले तर्कस्य विशेषरूपेणावलम्बनम्, रथायुधैस्सह सङ्ग्रामे स्थिरता तथा सङ्ग्रामादपलायनम्।[67] राज्ञः स्वामित्वविषये उल्लेखः प्राप्यते यत् सः ब्राह्मणान् विहाय सर्वेषां मनुष्याणां स्वामी वर्तते। तस्य कर्मणां गुणानाञ्च विषये प्राप्यतेयत् सः सत्यं ब्रूयात्, वेदशास्त्रस्योत्तमां शिक्षां प्राप्नुयात्, विनीतस्वभावः स्यात्, नित्यं पवित्रस्सन् तिष्ठेत्, जितेन्द्रियस्स्यात्, गुणवन्तं निजसहायकरूपेण नियोजयेत्, समत्वभावेन प्रजायाः अवलोकनं कुर्यात्, प्रजायाः हिताय तत्परस्स्यात्, स चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणाञ्च रक्षां कुर्यात्, तथा प्रजाः निजधर्मेषु नियोजयेदस्य प्रमुखं कारणमिदं वर्तते यत् प्रजाद्वारा अधर्माचरणे तस्याधर्मस्य भागं राजापि प्राप्नोति।[68] राज्ञः एतेषामेव धर्माणां वर्णनं वसिष्ठस्मृतावपि कृतं वर्तते।[69] एतदतिरिच्य राज्यप्रबन्धनम्, राजकर्मचारिणां, मन्त्रिणां, सेवकानाम्, सैनिकानाम्, गुप्तचराणाम्, दूतादीनाञ्च नियुक्तिः, सन्धिविग्रहादीनां विचारः, विविधदुर्गाणां निर्माणं तथा तेषां सुरक्षानिमित्तं विविधपद्धतीनामालम्बनम्, दण्डधारणं कृत्वा दण्डयोग्यपात्राणां दण्डनमित्यादीनां राज्ञो विविधधर्माणां विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते।

अस्मिन्नेव क्रमे श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञः परमधर्माणां वर्णनं प्राप्यते कुत्रचित् सूत्रात्मकशैल्यापि तद्वर्णनं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थे स्कन्धे ऋषिभिः राज्ञे वेनायप्रदत्तराजधर्मोपदेशेन राज्ञः धर्माणां परिज्ञानं जायते, यथाहि - राजा मनसा, शरीरेण,

---

[66] शङ्. लि. स्मृ. 24-25

[67] गौ.स्मृ., 10/2

[68] गौ.स्मृ., 11/1

[69] व. स्मृ., 1/40-42, 11/1, 5, 6, 7, 23

बुद्ध्यादिभिश्च धर्माचरणं कुर्यात्, प्रजायाः कल्याणरूपो धर्मः तस्य नष्टे राज्ञः पतनं सञ्जायते अतः तेन धर्मरक्षा कर्तव्या।[70] एतदतिरिच्य भगवता विष्णुनापि राज्ञे पृथवे राजधर्मोपदेशः प्रदत्तः इति प्राप्यते।[71] वेनपुत्रस्य पृथोः राज्याभिषेकानन्तरं बन्दीजनैः तस्य स्तुतिरक्रियत। बन्दिजनैः कृता स्तुतिरत्र राज्ञः पृथोः गुणान् व्याख्याति, तत्रैव राज्ञा पृथुनाचरणीयकर्तव्यानामप्युपाख्यानमक्रियत। प्रस्तुतस्तुतिमाध्यमेन राजधर्मस्यैवोपदेशः प्राप्यते। स्तुत्यानुसारं राज्ञे पृथवे आदेशोऽस्ति यत् सः लोकान् धर्मे प्रवर्त्तयेत्, धर्मस्य मर्यादां संरक्षेत्, विरोधिनः दण्डयेत्, प्रजां पालयेत्, समये - समये यज्ञादिविधिना स्वर्गलोकस्य तथा वृष्ट्यादिव्यवस्थाद्वारा भूलोकस्य हितं साधयेत्, पृथ्वीवदेव सहनशीलः स्यात्, वर्षायाः अभावे, शुष्कताकारणात् प्रजायाः प्राणसंकटे स्वयं इन्द्रोभूत्वा वर्षां कृत्वा प्रजाजीवनं संरक्षेत्, स्वभावभङ्गिमया सम्पूर्णं लोकमानन्दयेत्, कार्ययोजनां निगूहयेत् तथा कार्यकरणशैल्यपि गभीरा स्यात्, शत्रूणां कृतेऽत्यन्तं दुःसहस्स्यात्, सेनादिना सुरक्षितस्सन् तिष्ठेद्येन शत्रवः तं न पराजयेरन्, गुप्तचरैः प्राणिभिश्च सर्वविधव्यापारान् पश्यन्नपि निन्दां स्तुतिं च प्रति उदासीनस्स्यात्, एते धर्ममार्गे स्थितास्सन्तो निजशत्रुपुत्रमपि दण्डनीयाभावे न कथमपि दण्डयिष्यन्ति किञ्च दण्डनीये सतितु निजपुत्रमपि दण्डयिष्यन्ति, सूर्यो मानसोत्तर - पर्वतं यावत्प्रदेशंनिजकिरणैः प्रकाशयति, तावत् सम्पूर्णे क्षेत्रे एतेषांनिष्कण्टकं राज्यंभविष्यति, एते निजकार्यैः सर्वेभ्यः सुखवितारकाः भवतन्ति तथा तान्रञ्जयिष्यन्ति अस्यतादृग्मनोरञ्जनात्मकव्यापारकारणात् प्रजा तान् राजेति कथयिष्यति, इमे दृढव्रताः, सत्यप्रतिज्ञाः, ब्राह्मणभक्ताः, वृद्धसेवकाः, शरणागतवत्सलाः सर्वप्राणिभ्यो मानदातारः दीनेषु दयावन्तश्च भविष्यन्ति, इमे परस्त्रीषु मातृवद्भावेन भक्तिं धारयिष्यन्ति, पत्नींनिजार्धाङ्गवत्मंस्यन्ते, प्रजासु पितृवत् स्नेहं कुर्यात्, ब्रह्मवादिनां सेवकाः भवेयुः,

---

[70] भा.महा., 4/14/14-22

[71] तथैव 4/20/13-16

अन्यप्राणिनः एतेषु तथा स्नेहं करिष्यन्ति यथा स्वशरीरे, इमे सुहृदामानन्दं वर्धयिष्यन्ति। इमे सर्वदा वैराग्यवद्भिः पुरुषैस्सह विशेषेण स्नेहं करिष्यन्ति तथा दुष्टान् दण्डपाणियमराजवत् सदा दण्डयिष्यन्ति, गुणत्रयाधिष्ठाता निर्विकारः साक्षात्श्रीनारायणः एव राजरूपेणावातरत्, अयमद्वितीयवीरः एकछत्रसम्राट् च भूत्वा एकाकी एव उदयाचलपर्यन्तं समस्तं भूमण्डलं रक्षिष्यति तथा स्वकीयं जयशीलरथमारुह्य सर्वत्र प्रदक्षिणां करिष्यति, तदा इतस्ततः समे लोकपालाः पृथ्वीपालाश्च अस्मै उपहारं समर्पयिष्यन्ति तासां स्त्रियश्चतस्य गुणगानं करिष्यन्ति तथेमादिराजं साक्षात् श्रीहरिरूपेण मंस्यन्ते, अयं प्रजापालको राजाधिराजो भूत्वा प्रजायाः जीवननिर्वाहाय गोरूपधारिणीं पृथ्वीं धोक्ष्यति, रणभूमौ कश्चन्नपि शत्रुः अस्य पराक्रमं न सहिष्यते यदायं वने उत्थापितपुच्छसिंहवद्विचरन्निज 'आजवस्य' धनुषःटङ्कारंकुर्वन् भूमण्डले विचरिष्यति, तदा समेऽपि दुष्टजनाः इतस्ततः निगूढाः भविष्यन्ति, अयं सरस्वत्याः उद्गमस्थले शतमश्वमेधयज्ञान्करिष्यति तदान्तिमयज्ञानुष्ठानसमये इन्द्रः अस्य घोटकानपहृत्य नेष्यति, स्वकीयराजप्रासादस्योद्यानेऽस्यैकदा भगवता सनत्कुमारेण सह मेलनं भवितेत्थं प्रकारेण केवलं तस्य भक्तिपूर्वकसेवयायं तं निर्मलं ज्ञानं प्राप्स्यति, येन परब्रह्मणः प्राप्तिः भविष्यति, एवं प्रकारेण यदास्य पराक्रमो जनसम्मुखमागमिष्यति तदायं परमपराक्रमी महाराजः यत्र -तत्र निजचरित्रस्यैव चर्चां श्रोष्यति, अस्याज्ञायाः विरोधं न कोऽपि करिष्यति तथायं सर्वाः दिशः विजित्य निजतेजसा प्रजायाः क्लेशरूपं शूलं च निष्कास्य सम्पूर्णस्य भूमण्डलस्य शासको भविष्यति, तदा देवता असुराश्चाप्यस्य विपुलप्रभावस्य वर्णनं करिष्यन्ति।[72] बन्दिजनानां स्तुतिमाध्यमेन ज्ञायते यत् ते राजानंतस्य कर्तव्यस्य बोधं कारयन्तस्सन्तीति, अर्थात् राजधर्मस्य शिक्षां प्रयच्छन्तः सन्ति यद्राज्ञा पदे आरूढे सति केषां – केषां कार्याणां सम्पादनं करणीयं तथा राज्ञो धर्माश्च के इति इत्थमेव स्मृतिसम्मताः कथिताः धर्मोपदेशाः स्तुतिमाध्येन राज्ञे शिक्षां प्रदातुं सन्तीति वर्णनं प्राप्यते। अन्यस्थलेष्वपि राजधर्मः प्राप्यते। राज्ञः

---

[72] भा. महा., 4/17/12-36

कल्याणं प्रजापालने एव निहितं वर्तते।[73] निजप्रजारक्षणदायित्वं राज्ञ एव भवति, प्रस्तुतकर्तव्यविषये श्रीमद्भागवते प्राचीनबर्हिषः पुत्राणां प्रचेतसां कथा प्राप्यते। तदनुसारं प्रचेतोभिः प्रजायाः वासयोग्यस्थानाय यदा जगतीतले वृक्षाः ज्वाल्यमानाः आसन्तदा वनस्पत्यधिपतिना चन्द्रमसाते उपदिष्टाः तदुपदेशान्तर्गते प्राप्यते यद्-यथा पितरौ बालकस्य, पक्ष्मणी नेत्रयोः, पतिः पत्न्याः, गृहस्थः भिक्षुकाणां, ज्ञान्यज्ञानिनां रक्षां करोति तेषां हितं वाञ्छन्ति तथैव प्रजायाः रक्षा हितं च राज्ञः उत्तरदायित्वं भवति।" राज्ञः परमधर्मो निजधर्मस्य पालनं तथा प्रजां शासयन् तत्तद्धर्मेषु स्थितप्रजाजनानां पालनमपि राज्ञो परमधर्मो वर्तते, विषयेऽस्मिन् राज्ञः परीक्षितस्योक्तिः प्राप्यते - "यदि आपत्कालस्य स्थितिःनास्ति तथा प्रजा आपद्धर्मद्वारा मर्यादां उल्लङ्घयति तदा तान् शास्त्रानुसारं दण्डप्रदानपुरस्सरंस्वधर्मे स्थितजनानां पालनं राज्ञः परमो धर्मः भवति।[74] श्रीमद्भागवते राजा परीक्षितो यदा पृथ्वीरूपां गां तथा धर्मरूपिणं वृषभं कलयुगरूपिपुरुषेण प्रताड्यमानं पश्यति तदा राज्ञो प्रस्तुतकथनं राजधर्ममर्यादां स्थापयति - "दुःखेन त्रस्तानामार्तजनानां दुःखापनयनं राजो परमधर्मो भवति।"[75] इत्थं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतविषयानां वर्णनं विस्तृतरूपेण कुत्रचित् सम्वादरूपेण, क्वचिदुपदेशमाध्यमेन कुत्रचिच्च राज्ञः चरित्र- निरूपणमाध्यमेन वर्णितं वर्तते।

राज्ञा प्रजायाः सन्मार्गे प्रवर्त्तनम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञा स्वप्रजायै तथा स्वपुत्रेभ्यश्च सन्मार्गोपदेशं प्रदाय धर्मपूर्वकं कार्येषु नियोजनस्य विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य पञ्चमे स्कन्धे पञ्चमे अध्याये राज्ञा ऋषभद्वारा निजपुत्रेभ्यः सद्धर्मस्य विस्तारपूर्वकमुपदेशोऽदीयत। तदनुसारं तपः, महापुरुषाणां सेवा, सदाचारे प्रवृत्तिःचोपदिष्टा वर्तते। एतदतिरिच्य प्रमादत्यागस्य,

[73] तथैव 4/20/14
[74] भा.महा., 1/17/16
[75] तथैव 1/17/11

कर्मबन्धनविवेकस्य, देहबन्धनान्मुक्तेरुपायानामपि निरूपणमक्रियत। अथ चादेशे दार्शनिकविषयाः यथा– अज्ञानकारणात् क्लेशस्य प्राप्तिः, देहादौ ममत्वनिमित्तकस्याहङ्कारस्य त्यागेन परमपदस्य प्राप्तेर्निरूपणमपि युगपत् प्राप्यते। भगवतप्राप्तिहेतवे भक्तिः, वैराग्यम्, समत्वम्, ब्रह्मभावेन सह वर्तनम्, अध्यात्मयोगः, ब्रह्मचर्यम्, यमः, वाणीसंयमः, शास्त्रेषुसत्पुरुषेषु च श्रद्धायुक्तबुद्धिः इत्थं प्रकारेणात्यन्तविस्तारपूर्वकमुपदेशमाध्यमेन सद्धर्मेप्रवर्तितम्।[76] राज्ञा प्रजायाः धर्मशिक्षायां प्रवर्तनम्, येन प्रजायाः उद्धारःसम्भवेत्, विषयेऽस्मिन् प्राप्यते यद् यो राजा प्रजायै धर्ममार्गस्य शिक्षामप्रदायैव केवलंताभ्यः करसंग्रहण एव रतो भवति सः केवलं प्रजायाः पापस्यसहभागी भवति तथानिजैश्वर्याच्च्युतो जायते।[77]" राज्ञा ऋषभदेवेननिजप्रजा गृहस्थाश्रमे नियमितेत्यस्य वर्णनं प्राप्यते – ऋषभदेवेन समयानुसारं प्राप्तस्य धर्मस्याचरणं कृत्वा ईश्वरतत्त्वमज्ञातवतेभ्यो जनेभ्यः तस्य शिक्षा प्रदत्ता, तथा समः, शान्तः, सुहृदः तथा परमकारूणिकोभूत्वा धर्मस्य, अर्थस्य, यशसः, सन्ततेः, भोगसुखस्यतथा मोक्षस्य च संग्रहंकुर्वन् गृहस्थाश्रमेजनान् प्रवर्तितवान्।[78]

राज्ञो दानप्रवृत्तिः

मनुस्मृतौ राजा धर्मस्य निरूपणोपरान्तमुक्तं वर्तते यद्राजा धर्मप्राप्त्यर्थं नैकानि भोग्यवस्तूनि द्रव्याणि च ब्राह्मणेभ्यो दानरूपेण दद्यात्।[79] अस्मिन्नेव क्रमे निरूपणं वर्तते यद् वृद्धिमुपगतन्धनं योग्यपात्रेभ्यो दद्यात्।[80] शुक्रनीतौ राज्ञाकृतस्य दानस्योल्लेखः प्राप्यते।[81] एतेषां सन्दर्भानामनुसारेण श्रीमद्भागवते राज्ञा कृतस्य दानस्यापि वर्णनं प्राप्यतेअस्यानेकान्युद्धरणान्यपि

---

[76] भा.महा., 5/5/1 - 27
[77] तथैव 4/21/24
[78] तथैव 5/4/14
[79] म.स्मृ., 7/79
[80] तथैव 7/101
[81] शु.नी., 1/124

प्राप्यन्ते यस्यान्तर्गते जरासन्धस्यदैनिकजीवनचर्यायां पूजनोपरान्तं ब्राह्मणानां सत्कारः तथा तेभ्यो धनादिवस्तूनां दानस्य वर्णनं प्राप्यते।[82] अस्मिन्नेव क्रमेराज्ञा बलिद्वारा भगवतेवामनाय प्रदत्तस्यभूमिदानस्य वर्णनं प्राप्यते।[83] राज्ञाम्बरीषद्वारा ब्राह्मणेभ्यो प्रदत्तस्यधनादिदानस्य वर्णनं प्राप्यते।[84] राज्ञा युधिष्ठिरेण नित्यं ब्राह्मणेभ्यो प्रदत्तस्य दानस्यापि वर्णनं प्राप्यते।[85] परीक्षितद्वारापिप्रदत्तस्यदक्षिणादानस्य वर्णनं प्राप्यते।[86] भगवतः श्रीकृष्णस्य दिनचर्यानिरूपणे दानं प्रमुखक्रियारूपेण वर्णिता वर्तते - देवर्षिनारदः भगवतः श्रीकृष्णस्यदिनचर्यां निरूपयतितस्यान्तर्गते प्राप्यतेयत् सः ब्राह्मणेभ्यो सरलाश्शान्ताश्च सवत्सदोग्ध्रीः गाः प्रददाति। सर्वा अपि गावस्सुन्दर- वस्त्रैः रत्नमालाभिश्च सुसज्जितास्सन्ति। तासांविषाणानिसुवर्णेन तथा खुराःरजतेनचावृत्तानि भवन्ति स्म।[87]

नीतिचतुष्ट्यी

याज्ञवल्क्यस्मृतौ राज्यशासनस्य संचालनस्य नीतीनां वर्णनं प्राप्यते तदनुसारं - "सामदानदण्डभेदाः चत्वारः उपायास्सन्ति एतेषां समुचितप्रयोगेणसफलता प्राप्यते। तथा कस्याप्युपायस्याप्रभावे दण्डाश्रयणं क्रियते।[88] मनुस्मृतावपि प्राप्यते यत् "ये विजयेच्छयाप्रवृत्तस्य राज्ञो विरोधिनःस्युः तान् समान् सामदानदण्डभेदोपायैः वशीकुर्यात्।[89] यदि प्रथमैस्त्रिभिरुपायैः शान्ताः न स्युस्तर्हितेभ्यो दण्डद्वारा बलपूर्वकंयथादण्डं दण्डयेत्।[90] सामादेर्वैफल्ये देशोपमर्यादादिभिः दण्डस्य प्रयोगः करणीयः। मनुस्मृतौ सामदण्डयोः प्रशंसायाः

[82] भा. महा., 10/72/27
[83] तथैव 8/20/16
[84] भा.महा., 9/4/33,34
[85] तथैव 1/13/30
[86] तथैव 1/16/3
[87] तथैव 10/70/7-9
[88] या.स्मृ., 1/347
[89] म.स्मृ., 7/107
[90] तथैव 7/108

उल्लेखः प्राप्यते यद्" विद्वांसो राष्ट्राभिवृद्धये सामादिषु चतुर्षूपायेषु सर्वदा साम-दण्डावेवप्रशंसते।[91] महाभारतेऽपिइत्थमेव राज्यस्य सामदानदण्डभेदोपेक्षानां पञ्चानां नीतीनां वर्णनमक्रियत।[92] इत्थं प्रकारेण धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु सामादिनीतीनां प्रयोगस्योल्लेखः प्राप्यते। एताभिः नीतिभिः राज्यसंचालनं सुगमतापूर्वकं संजायते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञाविहितसामदानदण्डभेदमाध्यमेन शासनस्य नीतीनां वर्णनं प्राप्यते। प्रसङ्गेऽस्मिन् ऋषभदेवस्यविषये उक्तं वर्तते यत्– ऋषभदेवेन ब्राह्मणानामनुसारेणप्रदर्शितसामादिनीतीनां माध्यमेन प्रजायाः पालनमक्रियत। यथाहि –

यद्यपि स्वविदितं सकलधर्मं ब्राह्मं गुह्यं

ब्राह्मणैर्दर्शितमार्गेण सामादिभिरुपायैर्जनतामनुशशास।।[93]

राज्ञा भेदनीतेः प्रयोगः विधातव्यः, अस्योल्लेखः श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णद्वारा कृतस्यास्य नीतेः प्रयोगः प्राप्यते - यथा वायुः वंशसङ्घर्षणेन दावानलमुत्पादयति ततश्च तान् ज्वालयति तथैव पृथिव्याः सारभूतेषु शक्तिशालिषु च राजसु मिथः भेदं जनयित्वा शस्त्रमन्तरेणैव श्रीकृष्णः तानमारयत्।[94] नीतिचतुष्टयस्य प्रयोगो राज्ञा लोकरक्षादायित्वस्य निर्वहनायाक्रियत।

लोकरक्षायाः दायित्वम्

अस्मिन् सन्दर्भे श्रीमद्भागवतमहापुराणे चतुर्थस्कन्धे भगवता विष्णुना राज्ञे पृथवे प्रदत्तोपदेशे प्राप्यते यद् – उत्तमे, मध्यमे, अधमे च पुरुषे समानभावं विधाय सुख -दुःखयोः

---
[91] तथैव 7/109
[92] महाभारतम्., 12/59/35
[93] भा. महा., 5/4/16
[94] तथैव 1/11/34

समो भूत्वा तथा मनः इन्द्रियाणि च विजित्य मन्त्रिभिस्सह लोकरक्षणं कुरु।[95] राज्ञः पृथोः स्वयमुक्ता स्वविषयिण्युक्तिः प्राप्यते।

यस्यामुक्तं वर्तते यदस्मिल्लोकेऽहं प्रजाजनान् शासयितुं, तान् रक्षितुं तथा तेषामाजीविकायाः प्रबन्धनाय तान् पृथक् – पृथक् मर्यादासु व्यवस्थापनाय राजरूपेण नियुक्तोऽस्मि।[96]

दुर्गः

राज्यस्य सप्ताङ्गान्तर्गते राज्ञोक्तानां दुर्गनिर्माणादीनां वर्णनं प्राप्यते। राज्ञो वासस्थलम्, राजकोषः, सेनादीनाञ्च निवासः दुर्गे भवति स्म। शुक्राचार्येण स्वकीयग्रन्थे शुक्रनीतौ दुर्गस्य नवप्रकाराणां वर्णनमक्रियत यस्यान्तर्गते– ऐरिणदुर्गः, पारिखदुर्गः, पारिधदुर्गः, वनदुर्गः, धन्वदुर्गः, जलदुर्गः, गिरिदुर्गः, सैन्यदुर्गः, सहायदुर्गः एतेषां समेषामपि दुर्गाणां लक्षणम्, तारतम्यनिर्देशः, अत्यन्तश्रेष्ठदुर्गादीनाञ्च लक्षणानां वर्णनं प्राप्यते।[97] राज्ञा पृथुनोक्तस्य ग्रामस्य, उपनगरस्य, नगरस्य, दुर्गस्य, पशुशालायाः, शिबिरादीनां निर्मार्णं वर्णनमपि श्रीमद्भागवते राज्ञः पृथोः चरितान्तर्गते प्राप्यते।[98] राज्ञः भौमासुरस्य राजधान्याः प्राग्ज्योतिषपुरस्य वर्णनं श्रीमद्भागवते प्राप्यते तस्य पुरे सुरक्षात्मकदृष्ट्या सर्वादौ पर्वतैः तस्य दुर्गः सर्वतः आवृतः आसीत्,ततश्च शस्त्राणां परिधिरासीत्, अथ च जलपूरिता परिखासीत्, ततश्चाग्न्यावरणेन सुरक्षाव्यवस्थासीत्, तस्मिनावरणे ज्वलनशीलवायोः निक्षेपः आसीत्, एतदतिरिच्यापि स्वपुरस्य सुरक्षायै सर्वविधजालस्यावरणं स्थितमासीद् इत्थं प्रकारेण भौमासुरस्य दुर्गस्य वर्णनं प्राप्यते। स्मृतिषु यथा दुर्गस्य वर्णनमक्रियत तथैव दुर्गः प्राग्ज्योतिषपुररूपेण प्राप्यते।[99]

---

[95] तथैव 4/20/13

[96] भा.महा., 4/21/22

[97] शु.नी., चतुर्थ अध्याय, दुर्गप्रकरण

[98] भा.महा., 4/18/31

[99] तथैव 10/59/3

सभा

सभा एकं तादृशं स्थलं भवति यत्र राजा निजमन्त्रिभिः समैः परामर्शप्रदातृभिश्च सहैकस्मिन् स्थले उपस्थितो भूत्वा राज्यकार्यं मन्त्रणापूर्वकं सञ्चालयति स्म।[100] अस्यां राजकीयसमस्यासु विस्तरेण विवादो जायते। राजा नियमितरूपेण सभोपवेशने उपस्थितो भवति स्म तथा सभायाः व्यक्तीनामनुसारं राज्यस्य हितं सम्पादयति स्म। याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य संविद्वयतिक्रमप्रकरणे सभा समूहनाम्नाप्यभिहिता वर्तते। समूहे कीदृग्व्यक्तीनां वासोभवति स्मास्योल्लेखोऽपि याज्ञवल्क्यस्मृतौप्राप्यते- "श्रौतस्मार्तधर्मवेत्तृणाम्, पवित्राणाम्, लोभहीनानां समूहहितेच्छुकानां वचनानां पालनं करणीयम्"।[101] आधुनिककालेऽपि एतादृक्सभानामायोजनं क्रियते, यस्यां सर्वे सदस्याः उपस्थिताः भूत्वा मन्त्रणां च कृत्वा निजकार्याणि सम्पादयन्ति स्म।

श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य सभायाः वर्णनं प्राप्यते यत्तस्याः सभायाः नाम 'सुधर्मा' आसीत्। तस्याः सभायाः एतादृशो महिमा वर्तते यद् यापि व्यक्तिः तां सभां प्रविशति तांछुत्पिपासे, शोक-मोहौ, जरामृत्यूएताः षडुर्म्यः न बाधन्ते।[102] राज्यसभायां राजसिंहासनस्यमन्त्रिमण्डलस्योपवेशनायासनानां व्यवस्थाक्रियत। राजा सभायाः मध्येउपविशतिस्म। तस्यां सभायां विदूषकाः विभिन्नप्रकारकाः हास्य-विनोदिनः, नटाचार्याः नर्तकाः च तत्र नृत्यादिकं कुर्वन्ति स्म। सभायां मनोरञ्जननिमित्तमपिसर्वविधव्यवस्थाः प्राप्यन्ते। बन्दीजनाः अपि सभायां राज्ञःस्तुतिं कुर्वन्ति। ब्रह्मवादिभिः वेदमन्त्राणां व्याख्याः अपि तत्र प्रस्तूयन्तेस्म। राज्ञां पवित्रचरित्रस्यापि गायनंतत्र श्राव्यतेस्म। राज्यकार्याण्यपि तत्रैव सम्पाद्यन्ते स्म अस्य वर्णनमपि श्रीमद्भागवते प्राप्यते।[103] एतदतिरिक्तं राज्ञो युधिष्ठिरस्य सभायाः

---

[100] या.स्मृ., 2/188
[101] तथैव., 2/191
[102] भा. महा., 10/70/17
[103] भा.महा., 10/70/18-47

उल्लेखः अपि प्राप्यते यद् राजसूययज्ञनिमित्तं पञ्च पाण्डवाः, ब्राह्मणैः, बन्धु–बान्धवैः, सम्बन्धिभिः, कुटुम्बिभिः श्रीकृष्णेन च सह सभायामुपस्थिताः आसन्तत्रराजसूययज्ञविषयेऽपि विचारणाक्रियत।[104] इत्थं प्रकारेणैव सभाया अन्योदाहरणान्यपिप्राप्यन्ते।

मन्त्रिपरिषद्

मनुष्यः स्वयमेकाकी किमपि सुगमं कार्यंकर्तुं समर्थो नास्तितर्हि कथं राज्ञ सम्पूर्णस्य राज्यस्य कार्याणामेकाकितया सम्पादनंकर्तुं शक्यते अर्थात् कर्तुं न शक्यते तदा अस्यां परिस्थितौ राज्यसंचालनाय विदुषां तथा नीतिशास्त्रनिपुणानां विद्वद्वर्गाणां सहायतयामन्त्रिमंडलं नितान्तरूपेण महत्वपूर्णां भूमिकामावहति।[105] इत्थं प्रकारेण राजाकस्यापि कार्यस्यारम्भात् प्राक् निजमन्त्रिगणेन सह विचारणां करोति तथा राज्यस्य शासनसम्बन्धि - समस्यासुमन्त्रणायै विभिन्नविषयाणां विशेषज्ञानामावश्यकता सञ्जायते। अत एव मनुस्मृतौ राजधर्मान्तर्गते कर्मचारिणां नियुक्तिभिस्सह मन्त्रिमण्डस्य नियुक्तीनां चर्चाप्यक्रियत। कौटिल्यार्थशास्त्रे मन्त्रिणां नियुक्तिविषये सविस्तरं वर्णनं प्राप्यते। एतेषामेव वर्णनानामनुसारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे वर्णनं प्राप्यते। श्रीकृष्णस्य राज्यसभायां अनेके विद्वद्गणाः उपस्थिता आसन्। राजनीतिनिपुणस्योद्धवस्यापि श्रीकृष्णसभायां विशिष्टं दायित्वमासीदित्यवबुध्यते। यदा जरासन्धस्य बन्धिभूतराजानां दूतःतेषां राज्ञां मुक्तेः प्रार्थनामुररीकृत्यआगच्छति तथातेषां राज्ञां बन्धनान्मुक्त्यर्थं विचारःकरणीयः आसीत् तदा श्रीकृष्णः सभायामुपस्थितो भूत्वानिजमन्त्रिमण्डले उद्धवेन साकमस्मिन् विषये विचारणामकरोत्। तदा उद्धवः तेषां राज्ञांमुक्तेः उपायंकथयति।[106] राज्ञो युधिष्ठिरस्य राज्यसभायां राजसूययज्ञविषयकविचारविमर्शाय विविधप्रकारकाणां विद्वद्वर्गाणामुपस्थितिः प्राप्यते। एवं प्रकारेण राज्ञा सम्पाद्यमानानां कार्याणां मन्त्रणायै मन्त्रिपरिषदः नियुक्तिः क्रियते।

---

[104] तथैव 10/72/1-2

[105] म.स्मृ., 7/30 - 31, 55

[106] भा.महा., 10/70/46, 10/71/1-10

अश्वमेधादियज्ञानां सम्पादने राजप्रवृत्तिः

मनुस्मृतौ प्राप्यते यद्राजाभूरिदक्षिणावतः विविधयज्ञान् कुर्यादिति।[107] शुक्राचार्योऽपिराज्ञः अष्टप्रकाराचरणान्तर्गते राजसूयप्रभृतियज्ञानुष्ठानस्य परिगणनं चकार।[108] राज्ञाकृतं यज्ञविधानमपि तस्य राजधर्मान्तर्गते प्राप्यते। राज्यस्य विस्ताराय, तथा धर्मादिस्थापनायै चराजभिः अश्वमेधादियज्ञानामायोजनं क्रियते स्म अस्यैव क्रमान्तर्गते ऋषभदेवेननिजराज्ये विहितानां विविधप्रकारकाणांशतं यज्ञानां विधानस्यापि वर्णनं प्राप्यते।[109] राज्ञा पृथुद्वारा विहितानामश्वमेधयज्ञानुष्ठानानां विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते।[110] एवमेव राज्ञा युधिष्ठिरेण विहितस्याश्वमेधयज्ञस्य विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते।[111] श्रीमद्भागवतस्य पञ्चमस्कन्धस्य चतुर्थेऽध्याये राज्ञः ऋषभदेवस्य चरितान्तर्गते राज्ञः उत्तमशासनस्य वर्णनं प्राप्यते यत् तस्य शासनकाले प्रजावर्गैकश्चन्नप्यपराधः समाजे लोके व्याप्तो नासीत्।[112] अस्मिन्नेव क्रमे राज्ञा भरतेन विहितस्य अश्वमेधयज्ञानां वर्णनं प्राप्यते।[113]

समुचितादण्डव्यवस्था

राज्यस्य सफलसंचालनाय तथा सम्पूर्णव्यवस्थानां विशुद्धरूपेण नियमनाय, सामाजिकानां मध्ये शान्तिस्थापनाय प्रजांनिजकर्तव्यपालनाय प्रेरयितुं च न्यायस्य एवं दण्ड - व्यवस्थायाश्च सर्वोच्चं स्थानं विद्यते। मनुष्ये लोभमोहेर्ष्याघृणाद्वेषसदृशकुत्सितप्रवृत्तीनां प्रचलनमभूद्यस्मात् कारणात् समाजेऽव्यवस्थाया एवमराजकतायाश्च प्रादुर्भावोऽभूदतः एतादृशसकलसमस्यानां निराकरणाय मन्वादिना राजव्यवस्था निरूपितातथा तेषां सहायतायै

---

107 म.स्मृ., 7/79
108 शु.नी., 1/124
109 भा.महा., 5/4/17
110 तथैव 4/19/1
111 तथैव 10/ 72/3
112 तथैव 5/4/18
113 तथैव 9/20/26

धर्मशास्त्रकारैः न्यायस्य दण्डव्यवस्थायाश्च प्रतिपादनमक्रियत। राजा न्यायस्य एवं दण्डनिर्धारणस्य चाधिकारिरूपेण नियोजितः। मनुना राज्ञः प्रजापालननामकस्य प्रयोजनस्यसिद्धये, सकलवर्गाणां रक्षकचोरादिकृतोपद्रवेभ्यः संरक्षणाय दण्डस्योत्पत्तिरक्रियत।

अस्मिन् विषये उक्तं वर्तते यद्राज्ञे सर्वप्रथमीश्वरेण सकलजीवानां रक्षकस्य, धर्मस्वरूपपुत्रस्य, ब्रह्मतेजोयुक्तस्य दण्डस्य सृजनमक्रियत।[114] मनुस्मृतावुक्तं वर्तते यत् शुद्धस्वभाववतां मनुष्याणां सम्प्राप्तिः दुर्लभास्ति, कामक्रोधादिवशाद्मनुष्येष्वराजकतायाः जन्म सञ्जायते तथा तेषु परस्परं कलहः उत्पद्यते।[115] नारदस्मृतौ प्राप्यते यद्यदा मनुष्येषु धर्मस्य ह्रासःसञ्जायमानः आसीत् तदा व्यवहारस्य प्रवर्तनमभूत् तथा राजा विवादानां निर्णयकर्ता दण्डधरश्च घोषितः।[116] दण्डप्रयोगविषये प्राप्यते यद्राजा निजराष्ट्रे न्यायानुसारं दण्डस्य प्रयोगं कुर्यात् , शत्रुषु कठोरदण्डस्य प्रयोगं कुर्यात्।[117]

दण्डस्य महत्त्वम्

मनु-याज्ञवल्क्यादिधर्मशास्त्रकारैः दण्डस्य महत्त्वं विशेषप्रकारेण प्रकाशितं वर्तते। महाभारते दण्डस्य महत्त्वविषये प्राप्यते यत् – दण्डः प्रजासु शासनं तेषां रक्षायै करोति संसारः स्वपिति चेत् स जागर्ति अत एव विद्वद्भिस्सः धर्मरूपेण मन्यते दण्ड एव धर्मम्, अर्थम्, कामं च रक्षति अतएव सः त्रिवर्गरूपेण स्थितो वर्तते।[118] कौटिल्येन मत्स्यन्यायाद् मुक्तये दण्डः आवश्यकः मन्यते यतोहि एतं विनाराजकता प्रसरति। चातुर्वर्ण्यव्यवस्थामाश्रम- व्यवस्थां तथा लोकपालनमपि राजा दण्डबलेनैव कुरुते। तस्मादेव सर्वे स्वनियतकर्मणि रताःभवन्ति। अत एव

[114] म.स्मृ., 7/14
[115] तथैव 7/22
[116] ना.स्मृ., 1/2
[117] म.स्मृ., 7/32
[118] महाभारतम्., 12/15/2-3

आन्वीक्षिकी, त्रयी तथा वार्ता तिसृणामपि विद्यानां स्थितिः दण्डस्य अधीना वर्तते।[119] मनोः अनुसारेण दण्डकारणादेव सर्वे चलाचलप्राणिनो निजकर्तव्येषु रताः भवन्ति प्राप्यतेऽपि अस्माद् दण्डभयादेव सकलस्थावरजंगमजीवो भोगाय समर्थाःभवन्ति तथा निजधर्माद् विचलिताःन भवन्ति।[120] उदाहरणस्वरूपेण मन्यते यदितिहासे श्रूयते ऋषिभिः स्थावरेभ्योपि दण्डनिर्धारणं कृतमासीद्यथा अगस्त्येन ऋषिणा विन्ध्यपर्वतस्य, वासुद्वारा हैमवतस्य शाल्मीवृक्षस्य दण्डः उक्तो वर्तते। अन्यद् महत्त्वमपि द्रष्टुं शक्यते दण्डः राजा वर्तते यतोहि दण्डे एव शासनस्य शक्तिः विद्यमाना भवति, दण्ड एव पुरूषः वर्तते यतोहि सः शक्तिसम्पन्नपुरुषाणां स्त्रीवत् तिरस्कारं विधाय तान्निजवशे करोति, दण्ड एव नेता वर्तते यतोहि समस्तान्यपि कार्याणि तेनैव सम्पद्यन्ते, दण्ड एव प्रशासको वर्तते यतोहि दण्डस्य आज्ञया एवसमे निजकर्मणि संलग्नास्सन्ति, अथ च दण्डःचतुर्णामप्याश्रमाणां धर्मस्य प्रतिभूरुक्तो वर्तते।[121]

अन्यस्मिन् स्थले मनुना दण्ड एव धर्मसञ्ज्ञकः कथितः – दण्डः सर्वाः प्रजाः शास्ति, अर्थात् कर्तव्यविधानाय तथाकर्तव्यनिषेधाय च राजा शास्त्रं न शास्त्यपितु दण्ड एव शास्ति, दण्ड एव रक्षति अर्थात् दण्ड एवबलवतः रक्षति, राजपुरुषेषु शयानेषु सत्सु दण्डभयादेव जनाः दुराचरणं न कुर्वते, सर्वेषु शयानेषु सत्सु दण्ड एव जागर्ति, विद्वांसः दण्डं धर्मं मन्यन्ते यतोहि ऐहिकात् तथामुष्मिकदण्डभयादेव लोकस्य प्रवृत्तिर्दृश्यते कारणे कार्यस्योपकारः भवति।[122] ऋषेः याज्ञवल्क्यस्य मते शास्त्रस्य विधि - विधानानुसारेण च व्यवहारे प्रयुज्यमाने सति दण्डः देवताः, राक्षसान् एवं मनुष्येण सहैतं सम्पूर्णं समाजमानन्दयति। शास्त्रस्य विपरीतं दण्डप्रदाने राज्ञः सर्वस्वं विनश्यति किन्तु सम्यग्रूपेण दण्डप्रदानेन राजा यशःकीर्तिं स्वर्गं चप्राप्नोति। यो राजा दण्डस्योचितरूपेण प्रयोगं करोति सः भूरिदक्षिणावतः यज्ञस्य फलमवाप्नोति। वर्गाणां

---

[119] अर्थ., 1/4

[120] म.स्मृ., 7/15

[121] तथैव 7/17

[122] म. स्मृ., 7/18

जातीनां तथा समुदायानां स्वधर्मात् पथभ्रष्टे सति राजा दण्डद्वारा पुनः स्वधर्मपरिपालनायबाध्यतां करोति।[123] श्रीमद्भागवते दण्डस्य महत्त्वविषये प्राप्यते यद् दण्डद्वारा शुद्धिः सञ्जायते।[124] इत्थं प्रकारेणोपर्युक्तोद्धरणैः स्पष्टतास्ति यत् समाजे मनुष्यस्य धन-धान्यस्य रक्षा दण्डमाध्यमेन जायते। स एव शासकस्स एव रक्षको वर्तते। तथा सम्पूर्णस्य संसारस्य नियन्ता दण्डस्वरूपो धर्म एव वर्तते।

दण्डस्य योग्यायोग्यप्राणी

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञः परीक्षितस्य चरितान्तर्गते यदा परीक्षितः गां धर्मस्वरूपं वृषभं चकलयुगरूपिपुरुषात्प्रताड्यमानं पश्यति तदा परीक्षितमुखाद्वधयोग्यप्राणिनः विषये वचनं प्राप्यतेयत् "निरपराधिषु यः प्रहारं करोति सः अपराधी भवति तथा सः वधार्णः च भवति"।[125] अजामिलोपाख्यानान्तर्गते श्रीविष्णुदूतानां यमदूतानां च मध्ये वार्ता संजायते तत्र दण्डाधिकारिणः वर्णनमक्रियत यद् "जीवः शरीरेणाथवा मनोवृत्तिभिःयावन्ति कर्माणि करोति, तेषां साक्षी सूर्यः, अग्निः, आकाशः, वायुः, इन्द्रियाणि, चन्द्रमा, सन्ध्या, रात्रिः, दिनम्, दिशः, जलम्, पृथ्वी, कालः धर्मश्च भवतिएतैः अधर्मस्य परिज्ञानंकार्यतेतदा जीवात्मनः दण्डस्य पात्रस्य निर्णयो भवति तथा पापकर्मकारकाः सर्वे मनुष्याः स्व – स्वकर्मणामनुसारेण दण्डनीयाः भवन्ति।[126] शास्त्रस्योल्लङ्घनकर्ता तथा स्वछन्दाचरणशीलश्च दण्डस्याधिकारी भवति।[127]

वध्यावध्ययोग्यपात्राणां वर्णनम्

श्रीमद्भागवते अवध्यप्राणिनामुल्लेखः प्राप्यते। तदनुसारेण ब्राह्मणः कियदप्यधिकं घोरं पापकर्म कृतवान् स्यात् तस्मै कदापि मृत्युदण्डो विहितो नास्ति। अस्य वर्णनम् अश्वत्थाम्ना

[123] या.स्मृ.,1/356 - 357, 359, 361
[124] भा. महा. 6/2/67
[125] तथैव 1/17/6
[126] भा. महा., 6/1/42-43
[127] तथैव 6/2/67

यदा पाण्डवानां शयानाः पुत्राः हन्यन्ते तदा पञ्चभिः पाण्डवैः तस्य वधः करिष्यते इति विचिन्त्य श्रीकृष्णःतान् कथयति यत् "पतितस्य ब्राह्मणस्यवधःकदापि न करणीयः तथा च आततायी हन्तव्य एव इत्यनयोः आदेशयोः पालनं क्रियताम्"।[128] ब्राह्मणाय दण्डप्रदानविषये प्राप्यते यत् "तस्य मुण्डनम्, धनापहरणम्, तथा स्थानात् बहिष्कृतिरेव ब्राह्मणस्य वधः भवति। तेभ्यः एतदतिरिच्य कस्यचिदन्यस्य शारीरिकवधस्य विधानं नास्ति"।[129] अस्मिन्नेव प्रसङ्गेद्रौपद्यापि अवध्यप्राणिनां वर्णनमक्रियत –"धर्मवेत्तृपुरुषस्य, असावधानस्य, प्रमत्तस्य, प्रगल्भस्य, शयानस्य, बालकस्य, स्त्रियाः, विवेकज्ञानशून्यस्य, शरणागतस्य, रथहीनस्य, तथा भयभीतस्य च शत्रोः कदापिहननं न करणीयम्"।[130] युद्धे अवध्यप्राणिनामप्युल्लेखः प्राप्यते - "ये युद्धे निजास्त्र -शस्त्राणिविस्मरन्ति, येषां रथःभग्नः संजायते, ये भयभीताः स्युः, येयुद्धं त्यक्त्वान्यमनस्का संजातास्स्युः, येषां धनुः खण्डितं स्यात्, ये युद्धाद् विरताः स्युः तादृशलक्षणवन्तः युद्धे वधार्णाः न भवन्ति।"[131] वधयोग्यप्राणिनामुल्लेखोपिद्रौपदीवचनैः प्राप्यते - "परन्तु ये दुष्टाः क्रूराश्च पुरुषाः अन्यान् निहत्य स्वप्राणान् पोषयन्ति तेषां तु वध एव कल्याणाय भवति यतोहि तथाभ्यासेन यदि स जीवति चेत् सः इतोप्यधिकं पापं करोति तस्माच्च कारणात् सः नरकगामी भवति"।[132] युधिष्ठिरः शोकं प्रकटयन् स्वात्मरूपेण कथयति यत् "राजा यदि प्रजाः पालयितुं धर्मयुद्धेशत्रून्हन्याच्चेत्सः पापभाग् भवति, तथाप्यहमस्तात् सन्तुष्टो नास्मि"।[133] इत्थं प्रकारेण धर्मपूर्वकं प्रजायाः पालने धर्मयुद्धे शत्रूणां वधं कर्तुं शक्यते तादृशः व्यक्तिः वधयोग्याय भवति। बलरामेणापि वध्यविषये उक्तं वर्तते यद्यस्मिन् विनयादिगुणाः न सन्ति सोऽपि मृत्युदण्डाय योग्योभवति - "ये धर्मस्य चिह्नं धारयन्ति, परन्तु

[128] तथैव 1/7/53
[129] तथैव 1/7/57
[130] तथैव 1/7/36
[131]भा. महा., 10/4/35
[132] तथैव 1/7/37
[133] तथैव 1/9/50

धर्मं न पालयन्ति ते आधिक्येन पापिनः भवन्ति अतः ते मयाक्रियमाणस्य वधस्य योग्यास्सन्ति"।[134]

दण्डस्य प्रकाराः तथा दण्डविधानम्

धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु विविध-प्रकारेण वर्णितं वर्तते तच्च द्विधा विभक्तुं शक्यते। प्रथमः आन्तरिकः दण्डः तथा द्वितीयश्च बाह्यदण्डः। अत्रान्तरिकदण्डेन तात्पर्यमस्ति यदपराधी मानसिकानुचिन्तनेन पापकर्मणः निवृत्तो भवेदिति। निजापराधं ज्ञात्वा पश्चात्तापमाध्यमेन अपराधस्य पुनरावृत्तितः विमुखीभवनमेवन्तरिकदण्डस्यश्रेण्यामन्तर्भवति। किन्तु या व्यक्तिःतथा कर्तुं न शक्नोति तस्यैबाह्यदण्डस्य व्यवस्था कृतासीत्। धर्मशास्त्रकारैः बाह्यदण्डस्य चतुर्णां भेदानां वर्णनं स्वकीये धर्मशास्त्रे कृतो वर्तते - प्रथमो वाग्दण्डः, द्वितीयो धिग्दण्डः, तृतीयो घनदण्डः, चतुर्थो वधदण्डः। एतेषां दण्डप्रकाराणां प्रयोगः अपराधिनः अपराधस्यनिवृत्तये क्रमेणक्रियते स्म।[135] मनुनापि एतेषामेव दण्डप्रकाराणामुल्लेखः कृतो वर्तते।[136] मनुना दण्डस्य दशानां स्थानानामुल्लेखः कृतो विद्यते - उपस्थः, उदरम्, जिह्वा, हस्तौ, पादौ, नेत्रे, नासिका, कर्णौ,घनं देहश्च।[137] एतेषामेव नियमानां पालनं श्रीमद्भागवते अनेकेषु स्थलेषुप्राप्यते। अश्वत्थामा ब्राह्मणःआसीत्तथातेन यः महाजघन्योपराधः कृतः आसीत्तदर्थंमृत्युदण्डो विहितः आसीत् परन्तु ब्राह्मणः आसीदिति कारणात् तस्मै शारीरिको मृत्युदण्डो दातुं न शक्यते स्म तदास्यां परिस्थितौ तस्य केशानां मुञ्चनं कृत्वा तस्य मस्तिष्कस्थितमणिं निष्कास्यासौ दण्डितः।[138] एकस्मिन् अन्यस्थले यदा शिशुपालेन राजसूययज्ञे श्रीकृष्णस्य अग्रपूजासमये सः दुर्वचनैः अपमानितः तदा शिशुपालाय

134 तथैव 10/78/27
135 या.स्मृ., 1/167
136 म.स्मृ., 8/129
137 तथैव 8/125
138 भा.महा., 1/7/55 - 56

मृत्युदण्डःप्रदत्तः।[139] वाग्दण्डस्यापि वर्णनं प्राप्यते राज्ञा परीक्षितेन कलयुग - रूपिपुरुषो वागदण्डेन दण्डितः।[140] पुराणसाहित्ये ऋषिभिः प्रदत्तशापेनापिदण्डप्रदानस्य वर्णनं प्राप्यतेसः वागदण्डान्तर्गतेऽन्तर्भवति। शापस्योदाहरणानीत्थं वर्तन्ते राज्ञे परीक्षिताय श्रृङ्गिनः ऋषेः श्रापः तत्कृतकुकृत्यानां दण्डस्वरूपमेवास्ति।[141] इत्थं नैकान्युदाहरणानि श्रीमद्भागवतेप्राप्यन्ते।

राजवृत्तिः करनिर्धारणञ्च

राज्ञे शिलोञ्छवृत्तेः प्रशंसा प्राप्यते यत् "यो राजा शिलोञ्छवृत्तिमाध्यमेन स्वजीविकां निर्वहति तस्य राज्ञो यशो लोके जले तैलबिन्दुवद् विस्तारं प्राप्नोति"[142] अर्थात् तस्य यशः सम्पूर्णे संसारे विस्तृतो जायते तथा च सः प्रसिद्धिं प्राप्नोति। राज्ञे जीविकाप्राप्तिः प्रजाजनैः प्रदत्तकरेण भवति स्म अस्मिन्विषये धर्मशास्त्रकारैः प्रजायाः करः कथम्, केनरूपेण, प्रजायाः आयस्य कतमः भागः कररूपेण ग्रहीतव्यः अस्य साङ्गोपाङ्गं वर्णनं कृतं वर्तते। करगृहणविषये प्राप्यतेयत्स राजा प्रजासु दयां विधाय करग्रहणं त्यक्त्वा राज्यनिधेः क्षतिं न कुर्यात् तथा तेभ्यः अधिकं करं स्वीकृत्य तेषां मूलं न विनाशयेत्।[143] राजा स्वराज्ये तथा करसङ्ग्रहणं नियमयेद्यथाजलौका किञ्चिद्रुधिरम्, वत्सः किञ्चिद्दुग्धम् तथा भ्रमरश्च किञ्चिद्रसं पिबति तथैव राजा स्वप्रजायाः किञ्चित् किञ्चिद् वार्षिकं करं स्वीकुर्यात्।[144] पाराशरस्मृतावप्यं भावःइत्थं प्रकारेण प्राप्यते– यथा मालाकारः वृक्षान् मूलान्न नाशयति केवलं तेषां पुष्पाण्येव त्रोटयतितथैव राजा प्रजाभ्यः किञ्चिदेव राजकरं गृह्णीयात्, यथा अङ्गारकारकः वृक्षं लुनाति तथैव राजा प्रजायाः अधिकं करं स्वीकृत्य प्रजां न नाशयेत्।[145] विविधवस्तूनां व्यापारे विविधांशेषु करं गृह्णीयादस्य वर्णनमपि मनुरकरोत्।

---

[139] तथैव 10/74/43

[140] तथैव 1/17/4 - 6, 11, 14, 15

[141] तथैव 1/18/35-37

[142] म.स्मृ., 7/33

[143] तथैव 7/139

[144] तथैव 7/129

[145] प. स्मृ., 1/67-68

वसिष्ठस्मृतावप्युच्यते यद्राजा धर्मानुसारेण प्रजां रक्षयित्वा तेषामर्जितभागात् षष्ठं भागं कररूपेण स्वीकुर्यात्।[146] श्रीमद्भागवतमहापुराणे करनिर्धारणविषये प्राप्यते यद् राज्ञो वृत्तिः समेभ्यो यथायोग्यं करेण तथा दण्डादिना च भवति।[147] राजा प्रजाभ्यः आयस्य षष्ठांशं कररूपेण गृह्णीयात्। किन्तु बिना रक्षणं प्रजाभ्यो यो राजा करं ग्रह्णाति सराजा पातकी भवति।[148] प्रजाभ्यः करमाध्यमेन एवं दण्डमाध्यमेन च धनस्य सङ्ग्रहणं क्रियते स्म।[149]

युद्धकर्म

राज्यस्य विस्ताराय, प्रजायाः रक्षानिमित्तं युद्धकर्म राज्ञः प्रमुखं कर्म कथ्यते। राज्ञो धर्मःवर्तते यत् समानबलवतः, अधिकबलवतः, अथवा हीनबलवतः च शत्रोः आह्वाने शत्रुणा युद्धायाह्वाने चयुद्धं क्षत्रियस्य धर्मः वर्तते इत्थं सस्मरन् स कदापि युद्धाद् विमुखो न भवति।[150] युद्धादपलायनम्, प्रजापालनम्, ब्राह्मणानामादरः एतत् सर्वं राज्ञां कृते कल्याणकारिकर्माण्युक्तानि।[151] युद्धस्य महत्त्वस्यापि प्रतिपादनं मनुनाक्रियत यद् ये राजानः संग्रामेमिथः अन्योन्यवधेच्छया महापराक्रमेण युक्तास्सन्तः विमुखाः न भवन्ति ते निर्विघ्नतया स्वर्गलोकं गच्छन्ति।[152] इत्थं प्रकारेण युद्धस्य विविधनियमानां वर्णनं विस्तरेण स्मृतिषु प्राप्यते। यथा – कीदृशानां शस्त्राणां प्रयोगः शत्रुषु न कुर्यात्, युद्धे अवध्यानां वर्णनम् – रथहीनाः, करबद्धाः, केशानुद्धाट्य धावन्तः, युद्धं त्यक्त्वोपविष्टाः, अथवा शरणागताः, शयानाः, कवचहीनाः, नग्नावस्थायुक्ताः, आयुधरहिताः, युद्धाद्विमुखाः, युद्धद्रष्टारः, अन्येन सह युद्ध्यमानाः, विखण्डितशस्त्राः, पुत्रादिशोकव्याकुलाः, युद्धभियापलायमानाः एते समेपि युद्धेऽवध्याः कथितास्सन्ति।[153] इत्थमेव राजकर्मणः निर्भयेन पालनं कुर्वाणस्य राज्ञो ध्रुवस्य

[146] व. स्मृ., 1/43
[147] भा.महा., 7/11/14
[148] भा.महा., 4/20/14
[149] तथैव 1/12/ 32
[150] म.स्मृ., 7/87
[151] तथैव 7/88
[152] तथैव 7/89
[153] म.स्मृ., 7/90 - 93, या.स्मृ., 1/326,

युद्धस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते प्राप्यते यस्मिन् ध्रुवयक्षयोर्मध्ये जातस्य भीषणयुद्धस्य वर्णनमक्रियत।[154] राज्ञो ध्रुवस्य युद्धेतथा पराक्रमः आसीद् यत् समेऽपि यक्षाः विनाशं प्राप्नुवन्तः आसन्तदा स्वयम्भूः मनुः स्वयं ध्रुवं प्रबोधयितुं प्रकटोऽभवत्तदा राजा ध्रुवो युद्धमत्यजत्।[155] देवासुरसंग्रामस्य महायुद्धस्यापि वर्णनं श्रीमद्भागवतेऽत्यधिकविस्तरेण प्राप्यते यस्मिन् देवानामसुराणाञ्च महायुद्धस्य वर्णनं प्राप्यते। द्वावपि मिथः महता बलेन सम्पन्नौ भूत्वा युद्धं कुरुतःस्म।[156]

एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते राज्येन, राज्ञा एवं राजधर्मेण च सम्बन्धितः विमर्शः उपलभ्यते। इदं विचारणीयं यद्यथा राज्येन, राज्ञया एवं राजधर्मेण सम्बद्धस्य सिद्धान्तस्य प्रतिपादनमाधुनिकैः राजनीतिशास्त्रिभिःकृतो वर्तते ततः उत्कृष्टः विमर्शः श्रीमद्भागवतमहापुराणेप्राप्यतेतथा द्वयोरपि राज्यस्य राज्ञः राजधर्मस्य चविषये समानताःप्राप्यन्ते। यत्राधुनिकराजनितिकशास्त्रिभिश्शुष्कसिद्धान्तस्य प्रतिपादनंकृतं वर्ततेतत्रैव श्रीमद्भागवतमहापुराणेतत्संबन्धितशुष्कसिद्धान्तस्य प्रतिपादनं विहाय तात्कालिकस्य राजधर्मस्योदाहरणवर्णनपुरस्सरं राज्यस्य व्युत्पतिः, राज्ञः कर्तव्यम्, राज्यव्यवस्था, राज - दण्डसिद्धान्तस्य च प्रतिपादनंकृतं वर्तते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्यस्यराज्ञश्च व्युत्पत्ति-संबन्धे दैवीयोत्पत्तिसिद्धान्तः, शक्तिसिद्धान्तः, अभिमतसिद्धान्तः, मन्वाद्यन्यराज्ञां चाख्यानैः स्पष्टः कृतो वर्तते। अथ च राज्ञः प्रजायाश्च संबन्धःकीदृशस्स्यादस्मिन्संदर्भे बहून्याख्यानान्युद्धरणान्यपि चप्राप्यन्ते। अत्र राज्ञः प्रजायाश्च सम्बन्धः जन्यजनकवत् स्यादित्युक्तम्। भागवतेविभिन्नस्मृतीनामुद्धरणानामाधारेण राज्यस्यसप्ताङ्गानाम्, राजव्यवस्थायाः, करव्यवस्थायाः, दण्डव्यवस्थायाः, न्यायव्यवस्थायाः तथा सामाजिकस्य न्यायस्यापि वर्णनं कृतं वर्तते। अस्मिन् पुराणे राज्ञो गुणदोषानां विवेचनं विभिन्नराज्ञांकथा -

---

[154] भा.महा., 4/10

[155] तथैव 4/11/7-35

[156] तथैव 8/10, 11

माध्यमेन स्पष्टंकृतं विद्यते पृथ्वादिराजानामाधारेणराज्ञो गुणदोषानांविमर्शनेनेदं पुराणं पूरितं वर्तते। अतोवक्तुं शक्यते यद्यथा आधुनिकैः राजनीतिज्ञैः राजधर्मस्य वर्णनंकृतं विद्यतेतथैव पुराणान्तर्गतेऽपि प्राप्यते। आधुनिकेतिहासकाराणां चिन्तने राज्यस्य, राज्ञः, तथा राजधर्मस्य वर्णनं व्यक्तिं समयं चसंयोज्य व्यक्तिविशेषस्य घटनानामाधारेणकृतं विद्यते तत्रैव श्रीमद्भागवतमहापुराणे राजधर्मस्य वर्णनं शाश्वतमूल्यानामाधारेणकृतं विद्यते शाश्वतमूल्यानामाधारेण निर्मिताः राजधर्मस्य सिद्धान्ताः सार्वभौमिकाः सार्वकालिकाश्च भवन्ति।

---*---

उपसंहारः

संस्कृतभाषायां निबद्धं सकलसाहित्यं विश्वसाहित्यस्य कृते महत्त्वपूर्णमस्ति। सामाजिकसभ्यतायाः उदयसमयेन एव भारतीयसमाजे दार्शनिकस्य भावगाम्भीर्यस्य च अलौकिकशोभा दृश्यते। देववाणीसंस्कृतभाषा भारतीयानां हृदयेषु गाम्भीर्यभावं प्राप्नोति। अस्य वाङ्मयं सागरस्य सदृशो अत्यन्तव्यापकमस्ति। संस्कृतसाहित्ये वेद-वेदाङ्ग-पुराण-धर्मशास्त्रादीनां बृहद्परम्परा विश्वप्रसिद्धाऽस्ति। धर्मसूत्रेषु गृह्यसूत्रेषु स्मृतिषु सकलपुराणसाहित्येषु सकलमानवजात्याः कृते धर्मः, सदाचारः, नीतिः, पूजा, उपासना, दर्शनं, व्यवहारः, संस्कारः इत्यादिविषयाणां वर्णनं आधिदैविक-आधिभौतिक-आध्यात्मिक-नैतिक-चारित्रिकविकासस्य कृते कृतमस्ति। पुराणसाहित्ये समस्तमानवसमुदायस्य कल्याणार्थं चिन्तनं कृतमस्ति। अत एव पुराणानां भारतीयजनमानसे समादरोऽस्ति। पौराणिकसाहित्ये श्रीमद्भागवतमहापुराणं केवलसाहित्यं नास्ति अपितु धर्म-अर्थ-काम-मोक्षाणां प्राप्तेः साधनमस्ति। श्रीमद्भागवतमहापुराणं सकलशास्त्राणां सारग्रन्थोऽस्ति। धर्मशास्त्रसाहित्ये वर्णितसिद्धान्तानां साङ्गोपाङ्विवेचनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते। प्रस्तुते शोधप्रबन्धे श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनं कृतमस्ति। शोधप्रबन्धस्य पञ्च-अध्यायेषु विभागः कृतोऽस्ति। अध्यायानां संक्षिप्तसारः निम्नानुसारोऽस्ति।

प्रथमोऽध्यायः - पुराणस्वरूपानुशीलनम् : तल्लक्षणं महापुराणाभिधानञ्च

अस्मिन् अध्याये पुराणशब्दस्य व्युत्पत्त्याः, पुराणपरिभाषाः, पुराणलक्षणस्य पुराणप्रकारस्य पुराणसङ्ख्यायाः तथा समयनिर्धारणस्य विवेचनं कृतमस्ति। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य घटनात्मकः, उपदेशात्मकः, स्तुत्यात्मकः, गीतात्मकः चतुर्विधप्रतिपाद्यशैल्याः सारगर्भितं विवेचनं कृतमस्ति। तदुपरान्तं श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यविषयश्रीकृष्णस्य विविधस्वरूपाणां वर्णनं कृत्वा अध्यायः समाप्तः कृतोऽस्ति।

द्वितीयोऽध्यायः - धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचयः

अस्मिन् अध्याये धर्मशब्दस्य धर्मशास्त्रीयार्थप्रतिपादनं कृतं, धर्मस्य लक्षणानां प्रतिपादनं कृतं, वैदिकवाङ्मये प्राप्तधर्मसम्बन्धितपरिभाषाणां तुलनात्मकं विश्लेषणं कृतमस्ति। तदुपरान्तं धर्मसूत्राणां परिचयस्य क्रमे गौतमधर्मसूत्र - बौधायनधर्मसूत्र - आपस्तम्बधर्मसूत्र - हिरण्यकेशिधर्मसूत्र - वसिष्ठधर्मसूत्र - विष्णुधर्मसूत्र - हारीतधर्मसूत्र - शङ्खलिखितधर्मसूत्र - वैखानसधर्मसूत्राणां परिचयः प्रस्तुतः कृतोऽस्ति। अस्मिन् क्रमे मनु - याज्ञल्क्य - नारद - बृहस्पति - कात्यायन - अत्रि - विष्णु - हारीत - औशनस् - अङ्गिरा - संवर्त- लघुयम - आपस्तम्ब - पराशर - व्यास - शङ्ख - लिखित - दक्ष - गौतम - शातातप - बुधस्मृतिग्रन्थानां परिचयः प्रस्तुतः कृतोऽस्ति। अस्मिन् क्रमे भर्तृयज्ञ - विश्वरूप - भारूचि - मेधातिथि - विज्ञानेश्वर - गोविन्दराज - अपरार्क - हरदत्त - कुल्लूकभट्ट - शूलपाणि - श्रीधर - हेमाद्रि - सायण - माधव - श्रीदत्त - चण्डेश्वर - विश्वेश्वरभट्ट - दलपतिराज - मदनरत्न - रघुनन्दनभट्ट - हरिनाथ - रुद्रधर - वाचस्पति - गोविन्दानन्द - टोडरानन्द - नन्दपण्डित - नीलकण्ठ - वीरमित्र - अनन्तदेव - दिवाकरभट्ट - रत्नाकरभट्ट - विश्वकर्मा - नागेशभट्टादीनां भाष्यकाराणां निबन्धकाराणां परिचयः प्रस्तुतः कृतोऽस्ति।

तृतीयोऽध्यायः - श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था

वर्णाश्रमव्यवस्थायां ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रवर्णानां ब्रह्मचर्यगृहस्थवान-प्रस्थसन्न्यासाश्रमाणां च सांगोपांग विवेचनं कृतमस्ति। अस्मिन् जीवनशैलीनां, आचाराणां, व्यवहाराणां, अनुशासनानाञ्च बहद्व्याख्या कृता अस्ति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे मनुष्यस्य देवत्वस्वरूपे परिवर्तनाय आश्रमव्यवस्था श्रेष्ठा मता अस्ति। गृहस्थाश्रमः अन्यत्रयाणां आश्रमाणां आधारः मन्यते तथा अयं आश्रमः सकलजीवानां संरक्षणं पोषणञ्च करोति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे वर्णिताश्रमाणां सिद्धान्तानां तुलनात्मकं विश्लेषणं कृत्वा अध्यायः समाप्तं कृतमस्ति।

चतुर्थोऽध्यायः - श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्काराः

मनुष्यजीवने जन्मतः आरभ्य मृत्युपर्यन्तं संस्काराणाम् अत्यधिकं महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। मनुष्यस्य शारीरिकम् एवं भौतिकविकासार्थं निमित्तं तथा जीवनप्रणाली सुव्यवस्थीकरणार्थं संस्काराणां विधानं धर्मसूत्रेषु, स्मृतिषु, पुराणेषु इत्यादिषु कृतं वर्तते। मुख्यरूपेण मनुष्यजीवने कुप्रभावं कुर्वन्ति ये विघ्नाः तेषां शमनार्थं संस्काराणां निर्माणं प्राप्यते। वस्तुतः एतेषां मुख्यं प्रयोजनं वैदिकमैवं पौराणिकाः ये देवताः तेषाम् आराधनार्थं तथा सर्वकारकोत्थानार्थं, शारीरिकं तथा मानसिकदोषाणां तथा तेषां परिमार्जनार्थम् एवं नूतनगुणानामाविष्करणार्थं संस्काराणां मुख्यं ध्येयं वर्तते। मनुस्मृतौ लभ्यते यत् संस्कारः लोकं परलोकं च पवित्रीकर्तुं भवन्ति इति। श्रीमद्भागवतेऽपि संस्कारात् शुद्धेः सम्बन्धः प्राप्यते। येन गर्भाधानादारभ्य अन्यतेष्टिः पर्यन्तं संस्कारेण सुसंस्कृताः भवन्ति ते द्विजाः इति संज्ञया सम्बोध्यन्ते।

श्रीमद्भागवतमहापुराणे गर्भाधानं, पुंसवनं, जातकर्म, नामकरणम्, उपनयनं, समावर्तनं, विवाहः तथा अन्तेष्टि एतेषां विविधस्थाने वर्णनं कृतम्। एतेषां विषयाणां स्मृतिशास्त्रेषु क्वचित् सम्मतिः दृश्यते क्वचित् वैपरीत्यञ्च दृश्यते। समाजस्य विकासात्मकदृष्ट्या तत्कालीन समाजे अपि संस्काराणां कर्मकाण्डीयपद्धत्या आयोजनं क्रियतेस्म। अत्र च वैदिकमन्त्रेण देवपूजनं तथा संस्काराः भवन्तिस्म। तदनन्तरं ब्राह्मणेभ्यः गोदानं तथा धनदानादिकं क्रियतेस्म अनेन च ज्ञायते यत् गृह्यसुत्रेषु वर्णितानां संस्काराणां पद्धित्याः अवलम्बनं श्रीमद्भागवतमहापुराणकालीन समाजे अपि क्रियतेस्म। संस्कारमाध्यमेनेव व्यक्ते आदिदैविकम् आदिभौतिकम् आध्यात्मिकं विकासः भवतिस्म। एवं प्रकारेण जन्मादारभ्य मृत्युरनन्तरमपि मानवजीवने संस्काराणाम् अधिकं महत्त्वं प्राप्यते। संस्कारमाध्यमेन जीवने परिष्कार तथा व्यक्तेः क्रमिकविकासे सहायः प्राप्यतेस्म। अद्य समाजे धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या पश्यामश्चेत् ज्ञायते यत् संस्काराणां प्रतिबिम्बमात्रं वर्तते। केचन् संस्काराः एव व्यक्तेः जीवने क्रियन्ते। संस्कारान् प्रति

तेषां पारिवारिक उदासीनतायाः कारणात् व्यक्तिः संस्कारवञ्चितः भवति। तथापि प्राचीनकालात् आरभ्य एतावतपर्यन्तं व्यक्तेः जीवने संस्काराः महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहन्तः सन्ति। संस्कारेण व्यक्तेः परिमार्जनेन सहैव शिक्षितः अपि भवति। यतोहि बहूनि शिक्षणानि तस्मै संस्कारमाध्यमेनैव प्राप्यन्ते इति।

पंचमोऽध्यायः - श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितो राजधर्मः

एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते राज्येन, राज्ञा एवं राजधर्मेण च सम्बन्धितः विमर्शः उपलभ्यते। इदं विचारणीयं यद्यथा राज्येन, राज्ञया एवं राजधर्मेण सम्बद्धस्य सिद्धान्तस्य प्रतिपादनमाधुनिकैः राजनीतिशास्त्रिभिः कृतो वर्तते ततः उत्कृष्टः विमर्शः श्रीमद्भागवतमहापुराणेप्राप्यते तथा द्वयोरपि राज्यस्य राज्ञः राजधर्मस्य च विषये समानताः प्राप्यन्ते। यत्राधुनिकराजनितिकशास्त्रिभिश्शुष्कसिद्धान्तस्य प्रतिपादनं कृतं वर्तते तत्रैव श्रीमद्भागवतमहापुराणेतत्संबन्धितशुष्कसिद्धान्तस्य प्रतिपादनं विहाय तात्कालिकस्य राजधर्मस्योदाहरणवर्णनपुरस्सरं राज्यस्य व्युत्पतिः, राज्ञः कर्तव्यम्, राज्यव्यवस्था, राजदण्डसिद्धान्तस्य च प्रतिपादनं कृतं वर्तते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्यस्य राज्ञश्च व्युत्पत्तिसंबन्धे दैवीयोत्पत्तिसिद्धान्तः, शक्तिसिद्धान्तः, अभिमतसिद्धान्तः, मन्वाद्यन्यराज्ञां चाख्यानैः स्पष्टः कृतो वर्तते।

---*---

सन्दर्भग्रन्थाः

सन्दर्भग्रन्थाः

प्राथमिकस्रोतांसि

- अष्टादशस्मृतिः, सम्पा. शुक्ल, राधेश्याम, प्रतिभा प्रकाशन, देहली, 2019
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र हरदत्त और सुदर्शनाचार्य की टीका सहित, हिन्दी अनु. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1971
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र, हरदत्त की उज्जवलावृत्ति सहित, हिन्दी अनु. डा. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1969
- आपस्तम्बधर्मसूत्रम्, डॉ. नरेन्द्र कुमार आचार्य, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010
- काल्यायनस्मृति, अंगेजी अनु. पी. काणे, हिन्दू लॉक्काटर्ली, बम्बई, 1933
- गौतम धर्मसूत्र, हरदत्तकृत मिताक्षरवृत्ति सहित, हिन्दी अनु. डा. उमेशचन्द्र पाण्डेय, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1966
- नारद स्मृति, हिन्दी अनु. डा. ब्रजकिशोर स्वाईं, चौखम्भा संस्कृत भवन ग्रन्थमाला-16, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी, वि. सं. 2053
- पराशरस्मृति, अष्टादश स्मृति (भाषा-टीका सहित), लेखक प. मिहिरचन्द्र, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2006
- बौधायन धर्मसूत्र, गोविन्दस्वामी की टीका सहित, हिन्दी अनु- डॉ. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्भा संस्कृत आफिस, वाराणसी, 1972
- बृहस्पतिस्मृति, सम्पा. जे. जॉली, सेक्रेड बुक ऑफ दि ईस्ट, भाग-33, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 1965
- भारद्वाज गृह्यसूत्र, सम्पा. एच.जे. डब्ल्यू. सालोमन्स, मेहरचन्द लक्ष्मणदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2004

- मनुस्मृति, कुल्लूकभट्ट की टीका सहित, हिन्दी अनु. पं. हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, वि. सं. 2063
- यावल्क्यस्मृति, मिताक्षरा टीका सहित, हिन्दी अनु. डा. गंगासागर राय, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2007
- वसिष्ठ धर्मसूत्र, सम्पा. ए. ए. फ्यूहर्र इण्डोलॉजिकल बुक हाऊस, दिल्ली, 1983
- वैखानस धर्मसूत्र, (वैखानस स्मार्तसूत्र का 8 से 10 प्रश्न तक) सम्पा. डा. कैलेण्ड, मेहरचन्द्र लक्ष्मनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1989
- व्यासस्मृति, अष्टादशस्मृति (भाषा टीका सहित), लेखक पं. मिहिरचन्द्र, नाग प्रकाशक, दिल्ली, 2006
- शंखस्मृति, अष्टादशस्मृति (भाषा-टीका सहित), लेखक पं. मिहिरचन्द्र, नाग प्रकाशक, दिल्ली, 2006
- श्रीमद्भागवतमहापुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2072
- श्रीमद्भगवतमहापुराण (श्रीधरी टीका सहित), निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1940
- स्मृतिचन्द्रिका, (भाग 1-3) देवण्णभट्ट कृत, सम्पां. एल. श्री निवासाचार्य, नाग प्रकाशक, दिल्ली, 1988
- हिरण्यकेशि धर्मसूत्र, (हिरण्यकेशि श्रौतसूत्र का 26वां और 27वां प्रश्न) आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, 1932

द्वितीयकस्रोतांसि

- अथर्ववेद संहिता, सायण भाष्य सहित, सम्पा. प. रामस्वरूप शर्मा गौड, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2003
- अर्थशास्त्र, कौटिल्यकृत, हिन्दी अनु. वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, पंचम संस्करण, 2006

- अपरार्क, आनन्दाश्रम मुद्रणालय, पूना, 1903-2004
- अभिज्ञानकुन्तलम्, कालिदास कृत, अनु. नवलकिशोर शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत, सीरीज, बनारस, 1955
- ईशकेनकठमुंडक उपनिषद्, (शांकर भाष्य सहित) गीता प्रेस, गोरखपुर, तृतीय संस्करण, 1999
- ईशादिदशोपानिषदः, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2015
- ईशाद्यष्टोत्तरशतोपनिषदः, सर्वहितैषी कंपनी, रामघाट, काशी, 1938
- उपनिषदाङ्क, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2068
- ऐतरेय ब्राह्मण, सायणाचार्यकृत वेदार्थप्रकाश भाष्य सहित, सम्पा. सुधाकर मालवीय, प्राच्य भारतीय ग्रन्थमाला 14, वाराणसी, 1980
- ऋग्वेद संहिता, धर्मेन्द्र कुमारा, दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली, 3013
- ऋग्वेद संहिता, व्याख्याकार. पण्डित ईश्वरचन्द्र, कन्हैयालाल जोशी, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2011
- ऋग्वेद संहिता, सायण भाष्य सहित, अनु. प. रामगोविन्द चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2007
- काव्यमीमांसा, सम्पा. गंगासागर राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013
- छान्दोग्य उपनिषद् (शांकर भाष्य सहित), गीता प्रेस, गोरखपुर, चतुर्थ संस्करण
- तंत्रवार्तिक, कुमारलिभट्ट कृत, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
- तैत्तिरीय ब्राह्मण, सायण भाष्य सहित सम्पा. प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशक, दिल्ली, 1998
- तैत्तिरीय संहिता, सम्पा. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, जिला- बलसाड, गुजरात, 1983

- दायभाग एवं मिताक्षरा, सम्पा. के. एल. जोशी, परिमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005
- दायभाग जीमूतवाहन कृत, सम्पा. सुब्रह्मण्य शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
- निरुक्त, यास्ककृत, पं. मुकुन्द झा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1989
- पद्मपुराण, शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2015
- पूर्वमीमांसा सूत्र, शबर भाष्य सहित, व्याख्याकार युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा, 1978
- बृहदारण्यक उपनिषद् (शांकर भाष्य सहित), गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण 1999
- बृहत्संहिता, वराहमिहिरकृत, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1959
- ब्रह्मसूत्रम्, टीकोपेतम्, पण्डितरामतेज पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2010
- ब्रह्माण्डपुराण, गीताप्रस, गोरखपुर, सं. 2076
- भगवद्गीता गीताप्रेस, गोरखपुर, 1979
- भगवन्तभास्करः, नीलकण्ठभट्ट, सम्पा. वेणीमाधवशास्त्री मुसलगावकर, चौखम्बा, संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2016
- मत्स्यपुराण, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2004
- महाभारत सम्पूर्ण (1-4 भाग) (मूल), गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत् 2060
- महाभाष्य, पतंजलि कृत, अनु. चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली सं. 2025
- वराहपुराण, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2010
- वाजसनेयी संहिता, (माध्यन्दिन शाखा) हिन्दी अनुवाद, रामकृष्ण शास्त्री, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2007

- वायुपुराण, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2011
- विष्णुपुराण, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2015
- वीरमित्रोदय, मित्रमिश्र कृत, सम्पा. नित्यानन्दपन्तपर्वतीय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1987
- वैशेषिकसूत्रम्, ढुण्ढिराज शास्त्री, सम्पा. नाराणमिश्र, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2016
- रामायण, भाग 1-2, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2064
- लाट्यायनश्रौतसूत्रम्, एच. जी. रानाडे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1998
- शक्तिभाष्यम्, श्रीपञ्चाननतर्करत्नभट्टाचार्य, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2005
- शुक्रनीति, शुक्राचार्य कृत, हिन्दी अनु. डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1998
- श्रीभाष्यम्, श्रीललितकृष्ण गोस्वामी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2010
- श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1998
- संस्कारप्रकाश, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी

समीक्षात्मकग्रन्था:

- अग्रवाल, गीतारानी, धर्मशास्त्रों का समाज दर्शन, आदर्श विद्या निकेतन, वाराणसी, 1983
- अवस्थी, विश्वम्भर दयाल, वैदिक साहित्य, संस्कृति एवं दर्शन, सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद,1983
- अल्तेकर, अनन्त सदाशिव, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001

- उपाध्याय, बलदेव, वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा संस्थान, वाराणसी, 1981
- उपाध्याय, बलदेव, वैष्णव सम्प्रदायों का साहित्य और सिद्धान्त, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1978
- उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, त्रयोदशखण्ड, पुराण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2006
- उपाध्याय, रामजी, प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, देवभारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966
- उपाध्याय, रामजी, भारत की सांस्कृतिक साधना, प्रकाशन रामनारायण लाल, इलाहाबाद, सं. 2016
- उपाध्याय, कृष्णदेव, हिन्दू विवाह की उत्पत्ति एवं विकास, भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी, 1974
- कश्यप, धनपति देवि, पराशरस्मृति एवम् देवलस्मृति का तुलनात्मक अध्ययन, नाग प्रकाशक, प्रथम संस्करण, 1997
- काणे, पाण्डुरंग वामन, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग 1-5, (हिन्दी अनुवाद) अर्जुन चौबे कश्यप, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान (हिन्दी समिति प्रभाग) लखनऊ, 1992
- कुमार, नरेन्द्र, धर्मसूत्रीय आचार संहिता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 1995
- गुप्ता, देवेन्द्र कुमार, सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010
- गैरोला, वाचस्पति, वैदिक साहित्य और संस्कृति, संवर्तिका प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970
- गैरोला, वाचस्पति, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1960

- चतुर्वेदी, सीताराम, तन्त्र विज्ञान और साधना, चौखम्बा, संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2015
- जायसवाल, सुवीरा, जाति वर्ण-व्यवस्था, (हिन्दी अनु. आदित्य नारायण सिंह) ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 2004
- जैन, जगदीशचन्द्र, जैन आगम साहित्य में वर्णित भारतीय समाज, चौखम्भा विद्याभवन चैक, वाराणसी, 1965
- जौहरी, मनोरमा, वर्णाश्रम व्यवस्था, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1969
- ठाकुर, लक्ष्मीदत्त, प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1965
- त्रिपाठी, हरिहरनाथ, प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1964
- त्रिपाठी, वाचस्पति शर्मा, प्राचीन भारत की दण्ड व्यवस्था, नाग प्रकाशन, दिल्ली, 1989
- त्रिपाडी, प्रतिभा, अपराध एवं दण्ड (स्मृतियों एवं धर्मसूत्रों के सन्दर्भ में), राका प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
- त्रिपाठी, राधावल्लभ, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010
- दुबे, सत्यमित्र, मनु की समाज व्यवस्था, किताब महल, इलाहाबाद, 1964
- द्विवेदी कपिलदेव, अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, विश्वभारती अनुसंधान परिषद, वाराणसी, 1988
- द्विवेदी, प्रेमनारायण, (सम्पा.) भारद्वाज, ऋषभ, वैष्णव पुराणों में आचार मीमांसा, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2018

- धर्मशास्त्राङ्क, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2074
- पाण्डेय, विमलचन्द्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1960
- पाण्डेय, राजबली, हिन्दू संस्कार, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, वि. सं. 2014।
- पाण्डेय, श्यामलाल, वेदकालीन राज्य व्यवस्था, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1971।
- राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, धर्म और समाज, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
- राय, कौशल कुमार, अपराध और दण्डशास्त्र, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1965
- राव, विजय बहादुर, उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1966
- व्यास, शान्तिकुमार नानूराम, रामायण कालीन समाज, साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1964
- विद्यांलकार, निरूपण, भारतीय धर्मशास्त्र में शूद्रों की स्थिति, साहित्य भण्डार, मेरठ, 1971
- शर्मा, रामशरण, शूद्रों का प्राचीन इतिहास, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1979
- शिवदत्त ज्ञानी, वेद कालीन समाज, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1967

कोशग्रन्था:

- अमरकोश, अमरसिंह कृत, सम्पा. पं. शिवदत्त शर्मा, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1985
- दयानन्द वैदिक कोश, राजवीर शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 1975

- धर्मकोश (व्यवहारकाण्ड), सम्पा. लक्ष्मणशास्त्री जोशी, प्रज्ञा पाठशाला मण्डल, सतारा, 1941
- वैदिक कोश, सूर्यकानत, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, 1963
- शब्दकल्पदुम, सम्पा. राधाकान्तदेव बहादुर, मोतीलाल बनारसीदास, 1963
- संस्कृत वाङ्मय कोश, (भाषा 1-2), सम्पा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर, भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता,1988
- संस्कृत साहित्य कोश, राजवंश सहाय हीरा, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी, 1973
- संस्कृत-हिन्दी-इंग्लिश कोश, सूर्यकान्त, ओरियेण्ट लांगमैन लिमिटेड, दिल्ली, 1986
- संस्कृत-हिन्दी कोश, आदित्येश्वर कौशिक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकाश मंत्रालय, शिक्षा विभाग दिल्ली
- हिन्दु धर्मकोश, राजबली पाण्डेय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1988

---*---

परिशिष्टभागः

Drishtikon

Certificate of Publication

is awarded to

दीपक तिवारी

for the paper titled

"स्मृति शास्त्रों में प्रायश्चित्त निरूपण"

Published in *Drishtikon* Journal Vol-11, Issue-04 Year 2019 ISSN: 0975-119X

International Refereed and Indexed Journal for Research Publication

With Impact Factor 5.1 UGC Care Listed

S.N. Sharma

Editor-in-Chief

editor@hindijournals.org

UGC

University Grants Commission

EDUINDEX

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

****Lefr ”kkL=k e ik;f”pÙk fu:i.k****

nhid frokjh
“kks/kNk=&lLdr foHkkx
lkph ck)&Hkkjrh; Kku v/;;u fo’ofo|ky;]
ckjyk] jk;lu] e/;in’k] Hkkjr

lkjk”k

Lefrdkyhu lkekftd 0;oLFkk d vulkj “kkL=fo:) vkpj.k dju ij ik;f”pÙk dk fo/kku iklr gkrk gA ;fn eu’; viu fuR;&ufefRrd dek dk lEiknu fu;r le; ij ugh djrk g rFkk fdlh Hkh ik.kh d ifr fglkRed de djrk g ftll drk d vkfRed mRFkku e ck/kd rÙo fufer gkr g ,lh voLFkk e mld }kjk ik;f”pÙk dju dk fo/kku iklr gkrk gA ftll fd; g; de l mnfoXu ,o v”kkUr eu ”k) gkdj fu”py “kkfUr dk iklr djrk gA rFkk iu% lekt e lEeku ,o LFkku iklr djrk gA ;gh Lefr;k e of.kr ik;f”pÙk dk e[; mÌ”; iklr gkrk gA

ey”kCn & Lefr] ik;f”pÙk A

iLrkouk

ofnd ok³e; l ydj ikjkf.kdxUFkk] Lefr;k e Hkh ik;f”pÙk d fo’k; foLrr :lk j[kk e iklr gkr gA ,o fucU/k xUFkk e Hkh bl fo’k; dk egÙoi.k LFkku iklr gA HknkRed nf’V l bld nk Hkn iklr gkr g & ØRokFk ,o i:’kkFkA igy dk ckã.k] Jkr l=k e ,o f}rh; dk /kel=k] Lefr;k e o.ku iklr gkrk gA nkuk dk e[; mÌ”; fdlh u fdlh idkj dk “kf)dj.k ,o ifjektu djuk gkrk gA mnkgj.kkFk & dk’khrfd ck-½6@12½ e vk;k g & ** ykxk dk dFku g fd tk dN ;K e =fV ;k vfrjd ?kfVr gkrk g mldk iHkko cãk ijkfgr ij iHkkfor gkrk g vkj og onk l mldk ektu djrk g ;k Bhd djrk gA** bl idkj d vudk mnkgj.k ge xUFkk e iklr gkr g ftll ik;f”pÙk dk egÙo idkf”kr gkrk gA

ik;f”pÙkin dh 0;RifÙk &

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

Hkkjrh; /ke”kkL=h; xUFkk e ik;f”pÙk “kCn dk o.ku feyrk gA ik;% ikphu xUFkk e lHkh LFkkuk ij ik;f”pfÙk “kCn Hkh lEkku :Ik l fn[kkb nrk gA[1] mRrjofr xUFkk e ie[k :Ik l ik;f”pÙk “kCn dk i;kx fd;k x;k gA[2] bu nkuk “kCnk e vFk Hkn ugh gA ckã.k xUFkk ,o JkrxUFkk e bu nkuk “kCnk dh 0;fRiÙk inku ugh dh x;hA Jkr l=k e bud y{k.kk dk gh crk;k x;k gA Vhdkdkjk d }kjk bu nkuk ink dh 0;RifÙk d fo’k; e i;Ru fd;k x;k g rFkk dkykUrj e bu nkuk “kCnk dh 0;RifÙk vud fo}kuk d }kjk Lo; dh cf) d vuqlkj fofo/k idkj l inku dh xb gA HkxoUr HkkLdj d ik;f”pÙk e;[k e ik;f”pÙk dh ifjHkk’kk iklr gkrh g &

lkk;k uke ri% ikDr fpÙk fu”p; mP;rA
Rkik fui”p;l;Dr ik;f”pfÙkfefr JreAA[3]

vFkkr ik;f”pÙk “kCn e ik;% in dk vFk ri l fd;k x;k g vkj fpÙk in fu”p;kRedÙo d lUnHk e i;Dr g bl idkj ri vkj fu”p; l ;Dr tk de gkrk g og de gh ik;f”pÙk gA /kr Lokeh d }kjk Hkh vkiLrEc JkrI= d Hkk’; e bldh 0;RifÙk bl idkj nh xb g& ik;% in dk vFk fouk”k g ,o fpÙk in dk vFk l/kku gA[4] egf’k ir¥tfy d }kjk Hkh dgk x;k g & **ik;L; fpfÙkfpÙk;k% lM vLdkjk ok ik;f”pfÙk%**[5]A bl idkj Kkr gkrk g fd bl in e **ik;%** **fpfÙk%@fpÙke** nk Hkkx Fk rFkk **l** vkxe Hkh ogk fo|eku gA **ij ik;f”pÙke** bl idkj “kCn dk vFk ir¥tfy d }kjk dgk x;k gA ikjk”kjek/koh; u ,d Lefr dk mYy[k djr g, cryk;k g fd ik;f”pÙk og g ftld }kjk i”pkÙkki dju oky ikih dk fpÙk lkekU;r% lk’kn }kjk fo’ke d LFkku ij le dj fn;k tkrk g vFkkr l/kkj.k fLFkfr e dj fn;k tkrk g &

ik;”k”p le fpÙk pkjf;Rok inh;rA lk’knk dk;r ;Ùk ik;f”pÙkfefr LereAA ikfiukurkfiu”p fpÙk 0;kdy ln fo’ke Hkofr rPp i’knk ;u orku’Bkuu ik;”kk·o”; le dk;r rn or ik;f”pÙkeA or pkjf;Rok fpÙko’kE;fufeÙk iki inh;r [k.M;r fouk”;r bR;FkAA ¼ijk- ek-½[6]

lkefo/kku dh Vhdk e lk;.k d }kjk Hkh bl “kCn dh 0;RifÙk d fo’k; e viuk er iLrr djr g, dgr g fd *ik;%* “kCn *i* ,o *v;%* l cuk g] vkj bldk vFk g tk fofgr g mld u lEiknu dju dh ?kVuk ;k tkudkjh vkj *fpÙk* dk vFk g *Kku*] vr% fdlh fof”k’V ?kVuk dh Tkkudkjh d i”pkr /kkfed dR;k dk ikyu ik;f”pÙk g&

[1] **;fn dkiy fHk|r rfg rjo dkiy% lltr rr% ik;f”pfÙk%** r- l- 5@1@9@3
[2] **vdker% dr iki ik;f”pÙk fonj c/kk%A** eu-] 11@45
[3] HkxoUrHkkLdj%] f}rh; [k.M%] ik;f”pÙke;[k%] i-2
[4] Jkrik;f”pfÙk dk”k%] i-9
[5] lkkr- e- Hkk-] 6@1@57
[6] /ke”kkL= dk bfrgkl] rrh; Hkkx] i-1044

Copyright©authors

Drishtikon*(Bimonthly Hindi Journal)*

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

v; v;½ ikfIr½A id'k.kk;½ ik;½A fofgr/kekdj.kL; ikfIrfjR;;½A rRidkjfo'k; fpÙk fpfÙkKkueA rRiodku'Bkukfu ik;f”pÙkkfuA lk;.k¼lkefo/kku c‐ 1@5@1½[7]

enuikjhtkr uked xUFk d vUrxr gkjhr d er dk iklr gkrk g ftld vuLkj ik;f”pÙk “kCn dk vFk ,l dk; l g tl & ri] nku ,o ;K ftuL eu’; ifo= gk tkrk g vkj viu ,d= ikik dk uk”k dj nrk g ftl idkj fd oL= {kkj] miLon rFkk [kkyr ikuh e Mkyu ,o ty l /kku l LoPN gk tkrk g &

r= gkjhr½A i;rRoknkifpre”kHk de uk”k;rhfr ik;f”pÙkfefrA ;Ùki½ iHkfrd de mifpr lfpre”kHk iki uk”k;rhfrA drrRdefHk½ dr½ i;rRok}kA “k)Rokno rRik;f”pÙkeA rFkk p iugkjhr½A ;Fkk {kkjkiLonp.Mfu.kknui{kkyukfnfHkokLkfl “k/;fUr ,o rikknku;K½ ikidr½ “kf)ei;fUrA[8]

ik;f”pÙk dh vko”;drk ,o mÌ”; &

eu’; d }kjk o.kJe /ke dk ifjogu djr g, fofo/k idkj d vijk/k ;k iki de u pkgr g, Hkh vKkurk o”k gk tkr g rc mu ikide l efDr d fy, ik;f”pÙk dk fo/kku iklr gkrk gA tc “kkL= d fo/kku fd, x, viu fofgr dek dk ugh djrk gvk rFkk “kkL= l fufUnr fuf’k) dek dk djrk gvk rFkk bfUn;k d “kCn Li”k vkfn fo’k;k e vR;Ur vklDr gkr g, eu’; d fy, ik;f”pÙk dk fo/kku fd;k x;k gA[9] vFkkr tk fuR; lU/;kiklukfn u dju ij] ufefÙkdde u dju ij vkj “ko Li”k dju vkfn e Luku vkfn de ugh dju ij] vfofgr de fuf’k) de vkfn e vklfDr gku ij eu’; tkfr ik;f”pÙk dju d ;kX; gkrk g ,o ik;f”pÙk ugh dju ij eu’; dk fofo/k idkj d nk’ktfur d’V iklr gkr gA tl & Lo.kpkj vxy tUe e u[kjkx l ihfMr gkrk g] ljkiku dju okyk d nUr dky gkr g] cãgR;k dju okyk {k;jkx l ihfMr gkrk g] x:iRuh e xeu dju okyk pejkxh gkrk g] pxyh dju okyk ukfldk d jkx l ihfMr gkrk g] fdlh d nk’kk dk o.ku dju okyk e[k nxU/k ;Dr jkx l ihfMr gkrk g] /kkU; dh pkjh dju okyk fdlh ,d vx dh fuf’Ø;rk d lkFk mRiUu gkrk g] /kkU; e vin0; feykus okyk ,d vx dh vf/kdrk l tUe yrk g] id g, vUu dk pjku okyk eUnkfXu l ihfMr gkrk g] x: vuefr d fouk mul ludj onkfn dk v/;;u dju okyk fouk ok.kh d tUe yrk g] oL= dk pjku okyk “or d’B d jkx l ;Dr gkrk g] v”opjku okyk ix gkrk gA[10] xkre][11]

[7] ogh‐ i‐1045
[8] 0kgh‐
[9] **vdou fofgr de fufUnr p lekpjuA ilDr”k pfUn;k‐Fk’k ik;f”pÙkh;r uj½** eu‐ 11@44
[10] Eku‐] 11@49] 50] 51
[11] xkre‐ Le‐] 20@1]2]3

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

;kKoYD;[12] vkfn Lefr;k e bl idkj o.ku iklr gkrk g A blfy, ikide l efDr d fy, ik;f"pÙk vko";d gA ;fn ikide dk ik;f"pÙk ugh fd;k tkrk g rc blh idkj detfur nk'kk d ifj.kke Lo:Ik fufUnr fpàk l ;Dr gkdj bl ykd e mRiUu gkrk gA[13]

blh idkj ik;f"pÙk d mÌ"; Hkh fuEufyf[kr g & nk'kifjgkj] mRd'k] l/kkue] fo"kf)] eu dk lek/kku] Hk;uk"k] vfu'VQy dk vU;= LFkkiu] ;kX; ekxk ij tkuk] iki dk nj djuk vkfnA

ik;f"pÙk d idkj &

ehekIk d vulkj ik;f"pÙk f}/kk iklr gkrk gA ØRoFk vkj i:'kkFkA[14] ;kxkfn vu'Bkfud dk;k e tk U;urk gkrh g mldh i.krk d fy, tk ik;f"pÙk fd;k tkrk g o ik;% ckã.k xUFkk e rFkk Jkr l=h;xUFkk e o.ku fd; x; g mudk ØRoFk dgr g ,o ekuo thou dk vk/kkfjr djd ftle fopkj fd;k tkrk g o ik;f"pÙk i:'kkFk dg tkr gA mu dk o.ku ie[k :Ik l /keI=k e] LefrxUFkk e fd;k x;k g mUkdk e[; mÌ"; "kf)dj.k] eu dh "kkfUr] lekt e ekU;rk bR;kfn gA Lefr "kkL=k e ie[k :Ik l i:'kkFk ik;f"pÙk dk o.ku feyrk gA bld fofo/k Hkn iklr gkr g & ti] ri] gke] miokl] nku] mifu'kn] onkUr] ofnd lfgrk] e/k_pk] v?ke'k.k] vFkof"kj] "kr:fn;] i:'klDr] jktr vkj jkfg.k lke] cgr vkj jFkUrj lke dk ikB bl idkj d ifo= dju okyh fof/k;k dk o.ku feyrk gA[15]

ie[kikide ,o mud ik;f"pÙk & eu'; d }kjk ekg] en vkj vgdkj d o"khHkr gkdj d ,l de fd; tkr g tk fd Lefr"kkL=k d fu;ek dk vfrØe.k gkrk gA dHkh & dHkh rk ; de l/kkj.k ikide gku d dkj.k l|% fd; x; vFkok ,d nk fnu yxkrkj fd; x; ik;f"pÙk l mu detfur nk'kk l eDr gk tkr gA ijUr tc ?kkj ikide vKkurk o"k ;k Kku gkr g, fd; tkr g rc mu ikide dk ik;f"pÙk ogn ,o dBkj gkrk g ftld dkj.k ik;f"pÙkdrk dh eR; Hkh gk tkrh gA bl idkj ie[k :Ik l iklr ikide d vulkj ik;f"pÙk dk o.ku fuEukulkj g &

- **i¥pegkikrd &**

cãgR;k] ljkiku] Lo.k Lr;] x:iRuh e xeu vkj bu pkj idkj d ikrfd;k e l fdlh ,d idkj d ikrdh l vFkok vud idkj d ikrfd;k l llx djuk Hkh egkikrd dh J.kh e vkrk gA[16]

---

12 ;kK· Le-] 3@207&217
13 **pfjrÙ;erk fuR; ik;f"pÙk fo"k) ;A fuUn|j fg y{k.kj ;Drk tk;Ur·fu'drulAA** Eku-] 11@53
14 /ke"kkL= dk bfrgkl] rrh; Hkkx] i-1044
15 xkre· Le-] 19@3&4
16 **cãgR;k ljkiku Lr; xo³xukxeA egkfUr ikrdkU;kg llx"pk·fi rlgAA** ½d-½eu-] 11@54
cãk e|i LruLrFko x:rYixA ,r egkikrfduk ;"p r lg lolrAA ½[k-½;kK-] 3@227
cãk p ljkik;h Lr;h p x:rYixA egkfUr ikrdkU;kgLrRllxh p i¥peA ½x½fyf[kr-] 73

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

cãgR;k d vUrxr vku okyk vU; ikrd tl & viu dk mPp fn[kku d fy, >B ckyuk] jktk rd igpu okyh pxy[kkjh] x: dk >Bk nk'k nu e ckj ckj mrk: gkuk ; cãgR;k d leku nk'k gA[17]

ljkiku d leku ikrd & v/;;u fd; g; on dk vH;kl u dju l on dk foLej.k gk tkuk] on dh fuUnk djuk] feF;k xokgh nuk] fe= dk o/k djuk] ygl u] l;kt bR;kfn fufUnr inkFk dk Hkktu djuk vkj eye=kfn v[kk| inkFk dk Hkktu djuk ; N% ikrd ljkiku d leku ikrd gA[18]

Lo.k Lr; d leku ikrd & /kjkgj dk mld Lokeh dk u ykVkuk] eu'; dk gj.k djuk] v"o dh pkjh djuk] pknh dh pkjh djuk] fdlh nlj dh Hkfe ij cy iod vf/kdkj dj yuk] ghj dh pkjh djuk ,o vU; jRuk dh pkjh djuk] ; lc Lo.k Lr; d leku ikrd gA[19]

x:iRuh xeu d leku ikrd & Lo; dh ,o fdlh Hkh idkj l ikfjokfjd lEcU/k e yxu okyh cgu d lkFk] pk.Mkfy;k d lkFk] fe= dh iRuh d lkFk] i= dh iRuh d lkFk lEHkkx dju ij x:iRuh xeu dk nk'k yxrk gA[20]

- **miikrd &** xko/k] v;kT;ktu] ijiRuhxeu] vkRefoØ;] vR;kT; x: dk R;kx] vR;kT; ekrk dk R;kx] vR;kT; firk dk R;kx] Lo"kk[kk on dk R;kx] Lekr vfXu dk R;kx] vR;kT;i= dk R;kx] NkV Hkkb dk fookg gku ij vfookfgr jguk] T;B Hkkb vfookfgr jgu ij vut dk fookg djuk] vut dk fookg gku ij vfookfgr jgu oky dk dU;k nuk] T;'B Hkkrk d vfookfgr jgu ij fookg dju oky dk dU;k nuk] ifjfofÙk vFkok ifjoRrk d fookg e ;ktu djuk] dekjh dU;k dk nf'kr djuk] C;kt l thfodk pykuk] cãpkjh dk oryki djuk] rkykc dk cpuk] m|ku dk cpuk] iRuh dk cpuk] lUrku dk cpuk] "kkL= fofgr dky e drO; miu;iu lLdkj vkfn l P;r gkuk] vR;kT; ckU/kok dk R;kx djuk] v/;;u djk; tku oky i:'k l igy gh fuf"pr fd, x, oru dk ydj oneU= v/;;u djkuk] v/;;u djk; tku oky i:'k dk igy gh fuf"pr fd, x, oru dk nku djd oneU= dk v/;;u djuk] vfoØ; nO;k dk cpuk] lo.kkfn d [kkuk e jktkKk l vf/kdkjh gkuk] ogn ;U=k dk pykuk] vk'kf/k ouLifr;k dh fglk djuk] L=h d fofo/k dkek l thfodkiktu djuk] vfHkpkj de djuk] o"khdj.k djuk] vkx tykuk dh dk'B d fy, gj o{kk dk dkVuk] doy viu fy, Hkktu idkuk] fufUnr eu'; dk vUu [kkuk] vf/kdkj gku ij Hkh vkyL;kfn l vXU;k/kku u djuk] cgeY; nO; dh pkjh

17**vur p leRd'k jktxkfe p i"kueA xjk"k pk·yhdfucU/k% lekfu cãgR;;kAA** eu-] 11@55
18**cãkT>rk onfuUnk dkVlk{; lâno/k%A xfgrk·uk|;ktfX/k% ljkikulekfu 'kVAA** eu-] 11@56
19 **fu{kiL;k·gj.k ujk·"ojtrL; pA Hkfeotе.khuk p :DeLr;le LereAA** eu-] 11@57
20 **jr%ld Lo;kfu'k dekjh'oUR;tkl pA l[;% iR=L; p L=h'k x:rYile fon%AA** eu-] 11@58

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

djuk] _f'k_.k] fir_.k vkj no_.k l eDr ugh gkuk] on fojk/kh "kkL=k dk v/;;u djuk] xku l] ok|onu l] uru l thfodk ikIr djuk] /kkU;] jtr] jRuk vkfn l fHkUu dkb Hkh oLr dh pkjh djuk] i"k dh pkjh djuk] e|iku dju okyh L=h d lkFk eFku djuk] L=h] "kn] o";] {kf=; dk o/k djuk] on e vkj on ifrikfnr ikjykfdd Qy e vfo"okl djuk Hkh miikrd d J.kh e vkrk gA[21]

- **tkfrHk"k uked ikrd &** ckã.k d "kjhj e d'V mRiUu djuk] l?ku e v;kX; oLr dk l?kuk] e| dk l?kuk] dfVy O;ogkj djuk] i:'k e eFku djuk Hkh tkfrHk"k uked ikrd dg tkr gA[22]
- **l³djhdj.k uked ird &** x/kHk] v"o] rjxk'V] ex] gfLr] vt] e'k] eRL;] li] efg'k d o/k dju dk l³djhdj.k ikrd dgr gA[23]
- **vik=hdj.k uked ikrd &** fufUnr eu';k l /ku yuk] okf.kT;] "kn dh ifjp;k] vlR; Hkk'k.k Hkh bld vUrxr vkr gA[24]
- **eyk··og uked ikrd &** l{e ,o LFky dfe d o/k dk] if{k;k d o/k dk] e| d lkFk e j[kdj yk; x, inkFk d Hk{k.k dju dk] Qy] i'Ik vkj dk'B dh pkjh dk ,o v/k;] dk Hkh eyk··og uked ikrd d vUrxr fxuk tkrk gA[25]

cãgR;k dk ik;f"pÙk &

bl fo'k; e Lefr;k e yxHkx leku :Ik l dN ifjoru d lkFk ik;f"pÙk dk fo/kku fd;k x;k gA euLefr e iklr gkrk g cã?kkrh ;k cãgR;k dk fopkj dju okyk "kf) d fy, }kn"k o'kk rd ou e dfV;k cukdj jg ,o ftldh gR;k gb g mldk diky vFkok mld vHkko e vU; fdlh d diky dk /otk or n.M e /kkj.k dj fHk{kk ekxdj thou ;kiu djA[26] viuh bPNk l "kL="kkL=fo|k d foK "kL=/kkfj;k d igkj dk y{; cu vFkok tyrh gb vfXu e rhu ckj io"k djuk pkfg;A[27] v"oe/kkfn ;K][28] on dk ti djr g; lk ;ktu pyuk][29] ckã.k dk loLo nku djuk] ;k uohu ?kj nku djuk][30] on dh lfgrk dk rhu ckj ikjk;.k djuk] ljLorh unh d vUrHkko d LFky l unh d cgko dh mYVh fn"kk e ;k=k djrk gvk unh d mnHko LFkku

[21] eu-] 11@59&66
[22] **ckã.kL; :tk% dR;k ?kkfrj?k;e|;k%A tgE; p eFku ifl tkfrHk"kdj LereAA** eu-] 11@67
[23] **[kjk·"ok'VexHkkuke tk·fodo/kl rFkkA l³djhdj.k K; ehukfgefg'kL; pAA** eu-] 11@68
[24] **fufUnrH;k /kuk··nku okf.kT; "knloueA vik=hdj.k K;elR;L; p Hkk'k.keAA** eu-] 11@69
[25] **dfedhVo;kgR;k e|k·uxrHkktueA Qy/k% dleLr;e/k; p eyk··ogeAA** eu-] 11@70
[26] **cãgk }kn"k lek% dfV dRok ou olrA Hk{kk";kRefo"k);Fk dRok "kof"kjk/ote** eu-] 11@72
[27] **y{; "kL=Hkrk ok L;kn fon'kkfePN;k··Reuk%A ikL;nkRekueXuk ok lfe) f=jokdf"kjk%** eu-] 11@73
[28] eu-] 11@74
[29] eu-] 11@75
[30] eu-] 11@76

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

ly{ik lo.krd unh dk vuq lj.k djuk][31] e.Mu djkdj okuiLFk e jgr g; ckã.k d midkj e lyXy jguk][32] ckã.k vFkok xk; dh j{kk e viu ik.kk dk foltu djuk][33] ckã.k d /ku dk pjku oky pkjk dk rhu ckj ifrdkj djuk] pkjk l mld /ku dh j{kk dju e lQy gkuk][34] }kn"k o'k rd cãp; or e jguk][35] voHkrLuku d ty l Luku djuk[36] vkfn ik;f"pÙk dk o.ku iklr gkrk gA bUgh er lEcfU/kr vU; Ler;k tl xkre][37] ;kKoYD;][38] vf=][39] ikjk"kj][40] "k[k][41] vkfn Lefr;k e Hkh o.ku fd;k x;k gA

ljkiku dk ik;f"pÙk &

vkx dh rjg xje ljk dk iku dju ij ml ljk l "kjhj d ty tku ij gh f}t ljk iku d iki l eDr gkrk gA[42] ljk d vykok xke=] nX/k] ?kr] vFkok xkcj d jl dk vR;Ur nkgdRo dh fLFkfr e ej.k i;Ur iku dju ij ikrdh "k) gkrk gA[43] vU; fodYi l xkyke] vtkyke] e'kyke bR;kfn ykek l cu g; oL= /kkj.k djrk gvk] tVk j[krk gvk] ljkikrdh d fpà dk /kkj.k djrk gvk] ,d o'k i;Ur jkf= e gh ,d ckj Hkktu djr g; ik;f"pÙk djuk pkfg;A[44] vKku o"k ok#.kh iku d nk'k l eDr gku d fy; iu% miu;u lLdkj djkuk pkfg;A[45]

Lko.k Lr; ,o 0;fHkpkj dk ik;f"pÙk &

vigrk viu de dk jktk d lkeu tkdj idkf"kr dj ,o jktk l ikFkuk dj fd vki e> nf.Mr djA[46] jktk d }kjk elj dk igkj fd; tku ij eR; dk iklr gkdj og iki eDr gk tkrk g] ckã.k riL;k l gh "k) gk tkrk gA[47] vFkok ckã.k cãp; iod cã gR;k dk ik;f"pÙk djA[48] ljkik;h d or d vkpj.k dju dk o.ku Hkh feyrk gA[49]

x:rYi xeu dk ik;f"pÙk &

[31] eu-] 11@77
[32] eu-] 11@78
[33] eu-] 11@79
[34] eu-] 11@80
[35] eu-] 11@81
[36] eu-] 11@82
[37] xkre-] 23@1
[38] ;kK-3@243
[39] vf=-] 289
[40] ikjk"kj-] 6@18] 12@62&72
[41] "k[k-] 17@1&3
[42] eu-] 11@90
[43] eu-] 11@91] xkre-] 24@1
[44] eu-] 11@92] ;kK-]3@255] vf=-] 75] xkre-] 24@1
[45] eu-] 11@146
[46] eu-] 11@99
[47] eu-] 11@100] ;kK-] 3@257
[48] eu-] 11@101]
[49] ;kK-] 3@258

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

bl iki l "kf) d fy; ikrdh dk v;Ld l fufer rih gb "k¸;k ij "k;u djuk pkfg; ;k ykg fufer vfXu d }kjk rih gb L=h dh ifrek dk vkfyxu dj ;k viu tuu vx dk dkV dj gkFk e ydj nf{k.k fn"kk e ej.ki;Ur pyrk jgA[50] vFkok vU; fodYi l rhu ekl k rd ;okx dk lou djr g; pk;kUnk;.k or djA[51] vFkok ,d o'k rd cãp; or e jgr g; ou e jg vkj ikt kiR;dPN or dk djA[52]

egkikrfd;k d llx dk ik;f"pÙk &

eu ,o ;kKoYD; dk ekuuk g fd tk Hkh egkikrfd;k dk llx djrk g ml llx&iki l efDr d fy; egkikrd okyk gh or djuk pkfg;A[53] fyf[kr d vulkj tk eu'; ftl idkj d ifrr d lkFk llx dk iklr gk tkrk g og mld llx dh "kf) d fy; mlh fofgr ik;f"pÙk vu'Bku djA[54] doy ifr gh fuU| ugh ekuk tkrk Fkk vfir ifrr gku d mijkUrk mRiUu i= Hkh ifrr gh ekuk tkrk Fkk vkj mRrjkf/kdkj l ofpr dj fn;k tkrk FkkA fdUr i=h d ifr ,l fu;e ugh FkA

mDr egkikrdk d ik;f"pÙk o.ku l fofnr g fd ,l egkikrdh;k dk lekt e eku&LkEeku dh ifLFkfr ugh gkrh FkhA bll ;k rk mUg ik.k R;kx djuk gkrk Fkk ;k l/kkj d fy; o'kk lnkpj.k vkj ri }kjk viu vUrl dj.k dk "k) djr g, lekt e ekU;rk iklr gku d fy; i;Ru djuk gkrk FkkA le; d vulkj dfBu ik;f"pÙkk dk ljy Hkh cuk;k x;k gkxkA bl idkj rRdkyhu lekt e ik;f"pÙk dk vR;f/kd egRo Ler;k d v/;;u l fn[kkb nrk gA

lUnHk&xUFk lph

euLefr] ¼lEik-½ "kkL=h] jkd"k] fo|kfuf/k idk"ku] fnYyh] 2005-
euLefr] ¼lEik-½ :Lrxh] Åeyk] t- ih- ifCyd'ku gkÅl] fnYyh] 2005-
euLefr] ¼vu-½ dkf.MUU;k;u] f'kojkt vkpk;] pk[kEck fo|kHkou] okjk.klh] 2014-
;kKoYD;Lefr] ¼lEik-½ ik.M;] me'kpUn] pk[kEHkk lLdr lLFkku] okjk.klh] 2014-
;kKoYD;Lefr] ¼lEik-½ jk;] xxklkxj] pk[kEck lLdr ifr'Bku] fnYyh] 2015-
v'Vkn"kLefr] ukx ifCy"kl] fnYyh] 2006-
HkxoUrHkkLdj] ¼lEik-½ elyxkodj] o.khek/ko "kkL=h] pk[kEck lLdr ifr'Bku] fnYyh] 2016

[50] xkre-] 24@3] eu-] 11@103]104
[51] eu-] 11@106
[52] eu-] 11@105
[53] eu-] 11@181] ;kK-]3@261]
[54] fyf[kr-] 71

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-04
July-August-2019

0;kdj.k&egkHkk";] ¼lEik-½ vH;dj] dk"khukFk oklno] ¼fgUnh vu-½ ik.Mjx ukjk;.k eG] MDdu ,Tkd"ku lklk;Vh] i.k] 1963-

dk.k] ikMjxokeu] /ke"kkL= dk bfrgkl] ¼fgUnh vu-½ vtu pkc dk";i] mÙkjin"k fgUnh lLFkku] y[kuÅ] 1992-

Copyright©authors

ISSN No : 2581-6306
website : http://shisrrj.com
Impact Factor : 5.239

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 4/Issue 3/526 15-Jun-2021

This is to certify that the research paper entitled

श्रीमद्भागवतमहापुराण के कपिलोपाख्यान में वर्णित सांख्यदर्शन

दीपक तिवारी
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय बारला, रायसेन, (मध्य प्रदेश)

After review is found suitable and has been published in the Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(SHISRRJ), Volume 4, Issue 3, May-June 2021. [Page No : 77-83]

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

http://shisrrj.com/SHISRRJ214315

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
SHISRRJ

Associate Editor
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

श्रीमद्भागवतमहापुराण के कपिलोपाख्यान में वर्णित सांख्यदर्शन

दीपक तिवारी
शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग, सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय बारला, रायसेन, (मध्य प्रदेश)

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 77-83
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

सारांश – सांख्य दर्शन में सृष्टि के सकल तत्त्वों का उपदेश किया गया है। सद्गुरु के उपदेश से प्रबोध प्राप्त करके मनुष्य समत्व में स्थित होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेता था। श्रीमद्भागवतमहापुराण के अन्तर्गत कपिलोपाख्यान में मूल तत्त्वों का ज्ञान अत्यन्त सरल, सहज एवं प्रांजल शैली में किया गया है। सांख्य दर्शन के 25 तत्त्वों का वर्णन यथावत् श्रीमद्भागवतमहापुराण में प्राप्त होता है।

मूलशब्द – सांख्य दर्शन – 25 तत्त्व ।

प्रस्तावना– श्रीमद्भागवतमहापुराण पुराण परम्परा में वैष्णव पुराण है। इस पुराण में प्रमुख रूप से भक्ति, ज्ञान तथा वैराग्य का वर्णन किया गया है। इसके प्रणयन कर्ता महर्षि वेदव्यास है। भागवत महापुराण को सभी शास्त्रों के सार रूप में स्वीकार किया गया है यथा – **सर्ववेदेतिहासानां सारं सारं समुद्धतम्।**[1] इसमें सांख्य, योग, वेदान्त आदि का भी वर्णन प्राप्त होता है। श्रीमद्भागवतमहापुराण में वर्णन प्राप्त होता है कि कपिल मुनि ने माता देवहूति को सांख्यशास्त्र का उपदेश किया था। यथा –

विदित्वार्थं कपिलो मातुरित्थं
जातस्नेहो यत्र तन्वाभिजातः
तत्त्वाम्नायं यत्प्रवदन्ति सांख्यं
प्रोवाच वै भक्तिवितानयोगम्।।[2]

सांख्य शब्द की निष्पत्ति व्याकरण द्रष्ट्या 'संख्या' शब्द से 'अण्' प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न होती है।[3] **'सम्यक् ख्याति'** अर्थात् सत्य ज्ञान इसका अर्थ प्रतिपादित होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है **''विचार्यते अनेन इति दर्शनम्''** अर्थात् जिस माध्यम से सद् असद् वस्तु का विचार किया जाय उसे दर्शन कहते है। किसी पदार्थ के तात्त्विक स्वरूप का ज्ञान करना ही दर्शन शब्द का प्रयोजन माना गया है। सांख्य दर्शन

[1] भा. पु. 1/3/42
[2] भा. पु. 3/25/31
[3] सं. हि. को. पृ. 1093

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शब्द का वर्णन महाभारत में प्राप्त होता है कि ''जो संख्या अर्थात् प्रकृति और पुरुष के विवेक – ज्ञान का उपदेश करते हैं, जो प्रकृति का प्रतिपादन करते है तथा जो तत्त्वों की संख्या चतुर्विंशति निर्धारित करते है वे सांख्य कहलाते है'' यथा –

संख्या प्रकुर्वते चैव प्रकृति च प्रचक्षते।

तत्त्वानि च चतुर्विंशत् तेन सांख्या प्रकीर्तिता।।[4]

सांख्यदर्शन के प्रणेता कपिल मुनि माने जाते है। इस दर्शन में 25 तत्त्वों का वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है। श्रीमद्भागवत में वर्णित इन्हीं 25 तत्त्वों का अध्ययन यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रयोजन– ईश्वर विरचित सांख्य दर्शन के सांख्य कारिका ग्रन्थ में सांख्य दर्शन का प्रयोजन दुःखत्रय के आघात से मुक्ति प्राप्त करना है।[5] कपिल मुनि कहते है कि प्रकृति के गुणों को जानने से मनुष्य प्रकृति के गुणों से मुक्त हो जाता है।[6] प्रकृति के गुणों के ज्ञान से आत्मदर्शनरूप ज्ञान की प्राप्ति होती है जिससे अहंकार रूप हृदयग्रन्थि का भेदन हो जाता है जो मोक्ष का कारण है।[7] श्रीमद्भागवत में सांख्य दर्शन के प्रयोजन का वर्णन प्राप्त होता है।

सांख्य के पंचविंशतितत्त्व – श्रीमद्भागवतमहापुराण के अन्तर्गत सांख्यदर्शन के तत्त्वों का वर्णन किया गया है। जिसके अन्तर्गत पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पंचमहाभूत, गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द ये पंचतन्मात्रा, श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना, नासिका, वाक्, पाणि, पाद, उपस्थ और पायु ये दस इन्द्रियां, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये चार अन्तःकरण और काल ये पंचविंशति तत्त्व प्राप्त होते है। काल को ही ईश्वर कहते है यथा – **स भगवान् काल इत्युपलक्षितः**।[8]

महाभूतानि पंचैव भूरापोऽग्निर्मरुन्नभः। तन्मात्राणि च तावन्ति गन्धादीनि मतानि मे।।

इन्द्रियाणि दश श्रोत्रं त्वग्दृग्रसननासिकाः। वाक्करौ चरणौ मेढ्रं पायुर्दशम उच्यते।।

मनो बृद्धिरहंकारश्चित्तमित्यन्तरात्मकम्। चतुर्धा लक्ष्यते भेदो वृत्त्या लक्षणरूपया।।

एतावानेव संख्यातो ब्रह्मणः सगुणस्य ह। सन्निवेशो मया प्रोक्तो यः कालः पंचविंशकः।।[9]

प्रकृति का लक्षण – त्रिगुणात्मक, अव्यक्त, नित्य और कार्य–कारणरूप है तथा स्वयं निर्विशेष होकर भी सम्पूर्ण विशेष धर्मों का आश्रय है, उस तम प्रधान नामक तत्त्व को ही प्रकृति कहते है।[10] सांख्य कारिका में

[4] महाभा. 12/31/42

[5] दूःखात्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हैतो। दृष्टे सापार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात्।। सां. का. क्र. 1

[6] अथ ते सम्प्रवक्ष्यामि तत्त्वानां लक्षणं पृथक्। यद्विदित्वा विमुच्येत पुरुषः प्राकृतैर्गुणैः।। भा. पु. 3/26/1

[7] ज्ञानं निःश्रेयसार्थाय पुरुषस्यात्मदर्शनम्। यदाहुर्वर्णये तत्ते हृदयग्रन्थिभेदनम्।। भा. पु. 3/26/2

[8] भा. पु. 3/26/17

[9] भा. पु. 3/26/11–15

[10] यत्तत्त्रिगुणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम्। प्रधानं प्रकृतिं प्राहुरविशेषं विशेषवत्।। भा. पु. 3/26/10

प्रकृति के लक्षण प्राप्त होते है कि वह प्रकृति तत्त्व मूल तत्त्व है जो किसी का कार्य नहीं है और वह प्रकृति महत् आदि विकृतियों की जननी है।[11]

प्रकृति के कार्य – पंचमहाभूत, पंचतन्मात्रा, चार अन्तःकरण और दस इन्द्रियां प्रकृति के प्रधान कार्य है।[12] प्रकृति से महत्, महत् से अहंकार, अहंकार से षोडश गण सहित पंचमहाभूत उत्पन्न होते है।[13]

महत्–महत्–तत्त्व की उत्पत्ति के विषय में श्रीमद्भागवत में वर्णन प्राप्त होता है कि परमात्मा ने जब प्रकृति के गर्भ में अपने तेज को स्थापित किया तब हिरण्यमय महत्–तत्त्व उत्पन्न हुआ।[14] उत्पन्न होते ही महत् ने जिस अन्धकार से आच्छादित था उस अन्धकार को ग्रहण कर लिया।[15]

चित्त– जो सत्त्वगुणमय, स्वच्छ, शान्त और भगवान की उपलब्धि का स्थान रूप है जो सामान्यतः वासुदेव या चित्त कहलाता है वह महत्तत्त्व में प्रकट होता है।[16] चित्त के लक्षण के विषय में प्राप्त होता है कि जिस प्रकार जल स्वभाविक अवस्था में विकारशून्य, शुद्ध और शान्त होता है उसी तरह चित्त भी स्वच्छत्व, अविकारित्व, और शान्तत्व गुणों से युक्त होता है।[17]

अहंकार– अहंकार महत् का कार्य है अर्थात महत् तत्त्व से अहंकार उत्पन्न हुआ है। जो ईश्वर की निज शक्ति से उद्भूत है। वह अहंकार वैकारिक (सात्त्विक), तैजस और तामस भेद से त्रिविधात्मक है अर्थात् सत्त्वगुणात्मक अहंकार, राजसिक अहंकार, तामसिक अहंकार और अहंकार के इन्हीं त्रिविध भेदों से मन सहित ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां और पंचमहाभूत भी उत्पन्न होते है।[18] श्रीमद्भागवत में पंचमहाभूतेन्द्रियमनोमय अहंकार को ही सहस्त्र शिर वाले संकर्षण अनन्त नाम वाले पुरुष के रूप में वर्णन किया गया है।[19] कर्ता, करण तथा कार्य इन लक्षणों से युक्त यह अहंकार होता है तथा सात्त्विक, राजसिक, तामसिक गुणों के साथ पृथक – पृथक मिलकर ही यह शान्त, क्रियावान, तथा विमूढ लक्षणों वाला होता है।[20]

मन – कपिल मुनि ने बन्धन और मोक्ष का प्रमुख कारण मन को स्वीकार किया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि जब मन विषयों में आसक्त होता है तब वह बन्धन का कारण होता है और जब वह परमात्मा में

---

[11] सां. का. 3

[12] पंचभिः पंचभिर्ब्रह्म चतुर्भिर्दशभिस्तथा। एतच्चतुर्विंशतिकं गणं प्राधानिकं विदुः।। भा. पु. 3/26/11

[13] सां. का. 22

[14] दैवात्क्षुभितधर्मिण्यां स्वस्यां योनौ परः पुमान्। आधत्त वीर्यं सासूत महत्तत्त्वं हिरण्मयम्।। भा. पु. 3/26/19

[15] विश्वमात्मगतं व्यंजन् कूटस्थो जगदङ्कुरः। स्वतेजसापिबत्तीव्रमात्मप्रस्वापनं तमः।। भा. पु. 3/26/20

[16] यत्तत्सत्त्वगुणं स्वच्छं शान्तं भगवतः पदम्। यदाहुर्वासुदेवाख्यं चित्तं तन्महदात्मकम्। भा. पु. 3/26/21

[17] स्वच्छत्वमविकारित्वं शान्तत्वमिति चेतसः। वृत्तिभिलक्षणं प्रोक्तं यथापां प्रकृतिः परा।। भा. पु. 3/26/22

[18] महत्तत्त्वाद्विकुर्वाणाद्भगवद्वीर्यसम्भवात्। क्रियाशक्तिरहङ्कारस्त्रिविधः समपद्यत।।
वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्च यतो भवः। मनसश्चेन्द्रियाणां च भूतानां महतामपि। भा. पु. 3/26/23, 24

[19] सहस्त्रशिरसं साक्षाद्यमनन्तं प्रचक्षते। सङ्कर्षणाख्यं पुरुषं भूतेन्द्रियमनोमयम्।। भा. पु. 3/26/25

[20] कर्तृत्वं करणत्वं च कार्यत्वं चेति लक्षणम्। शान्तधोरविमुढत्वमिति वा स्यादहंकृतेः।। भा. पु. 3/26/26

अनुरक्त होता है तब वह ही मुक्ति या मोक्ष का कारण बन जाता है।[21] यह अपने ममत्व, काम–क्रोधादि विकारों से मुक्त होकर ही शुद्ध चेतनत्त्व से युक्त समत्व की स्थित को प्राप्त करता है।[22]

मन के प्रादुर्भाव के विषय में प्राप्त होता है कि जब अहंकार वैकारिक (सत्त्वगुण) के साथ समन्वित होता तब मन की उत्पत्ति होती है और यह संकल्प, विकल्प लक्षणों वाला होता है जिससे इसमें कामनाओं का उदय होता है।[23] श्रीमद्भागवत में मन को अनिरुद्ध के नाम से व्याख्यायित किया गया है और इनके वर्ण के विषय में वर्णन प्राप्त होता है कि शरद्कालीन कमल के समान श्याम वर्ण वाले है, योगी जन इनकी शनैः शनैः आराधना करते है।[24]

बुद्धि – रजोगुणी अहंकार में विकार उत्पन्न होने पर बुद्धि की सृष्टि होती है। प्रत्यक्ष रूप दृष्ट जगत के पदार्थ से साक्षात्कार होने पर उस पदार्थ की प्रकृति के निर्धारण में इन्द्रियों की सहायता करना है बुद्धि का कार्य है।[25] संशय, विपर्यास, निश्चय, स्मृति, और निद्रा ये बुद्धि के लक्षण कहे गये है।[26] सांख्यकारिका में भी बुद्धि के इन्हीं लक्षणों का वर्णन इस प्रकार किया गया है – किसी वस्तु के निश्चय करने को बुद्धि कहते है, और बुद्धि के धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य ये सात्विक धर्म है।[27] सांख्य सूत्र में भी बुद्धि की यही परिभाषा प्राप्त होती है यथा – **अध्यवसायो बुद्धिः**।[28]

इन्द्रियां, महाभूत एवं तन्मात्रा – रजोगुणी अहंकार के क्षुब्ध होने पर इन्द्रयों की उत्पत्ति होती है। ये इन्द्रियां दो प्रकार की होती है। प्रथम ज्ञानेन्द्रियां द्वितीय कर्मेन्द्रियां। ज्ञानेन्द्रियों का सम्बन्ध प्राणशक्ति से तथा कर्मेन्द्रियों का सम्बन्ध बुद्धि से होता है।[29]

शब्द, आकाश और श्रोत्र – ईश्वरीय तेज से प्ररित होने पर तामसिक अहंकार में विकार उत्पन्न होता है जिससे शब्दतत्त्व प्रकट होता है, शब्द से आकाश तथा उससे श्रवणेन्द्रिय उत्पन्न होती है।[30]

शब्द का लक्षण– जिसके द्वारा किसी शब्द के अर्थात्मक विचार का वहन किया जाता है, जो वक्ता की उपस्थिति का सूचक होता है तथा आकाश का सूक्ष्म रूप होता है उसको शब्द कहते है।[31]

---

[21] चेतः खल्वस्य बन्धाय मुक्तये चात्मनो मतम्। गुणेषु सक्तं बन्धाय रतं वा पुंसि मुक्तये।। भा. पु. 3/25/15
[22] अहंममाभिमानोत्थैः कामलोभादिभिर्मलैः। वीतं यदा मनः शुद्धमदुःखमसुखं समम्।। भा. पु. 3/25/16
[23] वैकारिकाद्विकुर्वाणान्मनस्तत्त्वमजायत। यत्सङ्कल्पविक्पाभ्यां वर्तते कामसम्भवः।। भा. पु. 3/26/27, सां. का. 27
[24] यद्विदुर्ह्यनिरुद्धाख्यं हृषीकाणामधीश्वरम्। शारदेन्दीवरश्यामं संराध्यं योगिभिः शनैः।। भा. पु. 3/26/28
[25] तैजसात्तु विकुर्वाणाद् बुद्धितत्त्वमभूत्सति। द्रव्यस्फुरणविज्ञानमिन्द्रियाणामनुग्रहः।। भा. पु. 3/26/29
[26] संशयोऽथ विपर्यासो निश्चयः स्मृतिरेव च। स्वाप इत्युच्यते बुद्धेर्लक्षणं वृत्तितः पृथक्।। भा. पु. 3/26/30
[27] अध्यवसायो बुद्धिधर्मो ज्ञानं ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्। सात्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्।। सां. का. 23
[28] सां. सू. 2/13
[29] तैजसानीन्द्रियाण्येव क्रियाज्ञानविभागशः। प्राणस्य हि क्रियाशक्तिर्बुद्धेर्विज्ञानशक्तिता। भा. पु. 3/26/31
तामसाच्च विकुर्वाणाद्भगवद्वीर्यचोदितात्। शब्दमात्रमभूत्तस्मान्नभः श्रोतुं तु शब्दगम्।। भा. पु. 3/26/32
[31] अर्थाश्रयत्वं शब्दस्य द्रष्टुर्लिङ्गत्वमेव च। तन्मात्रत्वं च नभसो लक्षणं कवयो विदुः।। भा. पु. 3/26/33

आकाश का लक्षण – सकल जीव राशि को बाह्य तथा आन्तरिक अस्तित्व के लिए स्थान प्रदान करना, जैसे कि प्राणवायु, इन्द्रिय एवं मन का आश्रय होना ये आकाश के लक्षण कहे गये है।[32]

त्वचा – शब्द तन्मात्रा के कार्य आकाश में काल गति से विकार होने पर स्पर्श तन्मात्रा का उद्भव हुआ तथा स्पर्श का ग्रहण कराने वाली त्वगिन्द्रिय उत्पन्न हुई।[33]

वायु का लक्षण – कोमलत्व, कठिनत्व, शीतत्व, उष्णत्व तथा वायु का सूक्ष्म रूप होना ये स्पर्श के लक्षण कहे गये है।[34] गति कराना, हिलाना, मिश्रण, शब्द को पदार्थो तथा अन्य इन्द्रिय बोधों तक पहुंचाने एवं अन्य समस्त इन्द्रियों के समुचित कार्य करते रहने के लिए सुविधाएं प्रदान कराना ये वायु के कर्म लक्षण है।[35]

तेज, नेत्र

स्पर्शतन्मात्रविशिष्ट वायु के विकृत होने पर उससे रूप तन्मात्रा का उदय हुआ तथा उससे तेज और रूप को उपलब्ध कराने वाली नेत्रेन्द्रिय का प्रादुर्भाव हुआ।[36] वायु तथा स्पर्श तन्मात्राओं की अन्तः क्रियाओं से मनुष्य को भाग्य के अनुसार विभिन्न रूप दिखलाई देते है।

रूप की वृत्तियां– वस्तु के आकार का बोध कराना, गौण होना – द्रव्य के अंग रूप से प्रतीत होना, द्रव्य का जैसा आकार – प्रकार और परिमाण आदि हो, उसी रूप में लक्षित होना तथा तेज का स्वरूपभूत होना ये सब रूपतन्मात्रा की वृत्तियां है।[37]

तेज की वृत्तियां –प्रकाशित होना, पाचन करना, क्षुधा – पिपासा उत्पन्न करना, शीत को दूर करना, जल को वाष्प में परिवर्तन करना ये तेज के कार्य है।[38]

जिह्वा, रस – अग्नि तथा दृष्टि की अन्तःक्रिया से दैवीय व्यवस्था के अन्तर्गत रूपतन्मात्रमय तेज के विकृत होने पर उससे रसतन्मात्र की तथा उससे जल तथा रस को ग्रहण करने वाली रसनेन्द्रिय जिह्वा प्रकट हुई।[39] रस स्वस्य शुद्ध स्वरूप में एक ही है किन्तु अन्य भौतिक पदार्थों के संसर्ग से यह कषैला, मधुर, तिक्त, कटु, अम्लीय आदि अनेक प्रकार का हो जाता है।[40]

---

[32] भा. पु. 3/26/34
[33] भा. पु. 3/26/35
[34] भा. पु. 3/26/36
[35] भा. पु. 3/26/37
[36] भा. पु. 3/26/38
[37] भा. पु. 3/26/39
[38] भा. पु. 3/26/40
[39] भा. पु. 3/26/41
[40] भा. पु. 3/26/42

जल की वृत्ति –गीला करना, मिट्टी आदि को पिण्डाकार बना देना, तृप्त करना, जीवित रखना, प्यास बुझाना, पदार्थो को मृदु कर देना, ताप की निवृत्ति करना और जलागारों की निरन्तर पूर्ति करते रहना ये जल की वृत्तियां है।[41]

गन्ध, घ्राणेन्द्रिय – रसस्वरूप जल के विकृत होने पर उससे गन्धतन्मात्र हुआ और उससे पृथ्वी तथा गन्ध को ग्रहण कराने वाली घ्राणेन्द्रिय प्रकट हुई। यद्यपि गन्ध एक है किन्तु सम्बद्ध पदार्थो के अनुपातों के अनुसार अनेक प्रकार की हो जाती है यथा – मिश्रित, दुर्गंध, सुगन्धित, मृदु, तीव्र, अम्लीय आदि।[42]

पृथ्वी का लक्षण – ब्रह्म के स्वरूपों को आकार प्रदान करके, आवास स्थान बनाकर, जल रखने के पात्र बनाकर पृथ्वी के कार्यों के लक्षणों को देखा जा सकता है। अन्य शब्दों में, पृथ्वी सकल चराचर समस्त तत्त्वों का आश्रय स्थल है। ये पृथ्वी के कार्य लक्षण है।[43]

इन्द्रियां और उनकी परिभाषा – वह इन्द्रिय जिसका विषय शब्द है श्रवणेन्द्रिय और जिसका विषय स्पर्श है वह त्वगिन्द्रिय कहलाती है। जिसका विषय अग्नि का विशेष गुण रूप है वह नेत्रेन्द्रिय कहलाती है। जल का विषय जिस इन्द्रिय का विशेष गुण है वह रसनेन्द्रिय के नाम से जानी जाती है। पृथ्वी का विशिष्ट गुण जिस इन्द्रिय का विषय वह घ्राणेन्द्रिय के नाम से कही जाती है।[44]

सृष्टि का कर्म एवं क्रम – श्रीमद्भागवतमहापुराण में विराट् पुरुष की उत्पत्ति के विषय में वर्णन प्राप्त होता है कि जब ये महतादि सभी तत्त्व अपने अपने कारण से उत्पन्न हो गये तब ये पृथक – पृथक तथा स्वतन्त्र थे। ये एक साथ साम्यावस्था में नहीं होने के कारण ये सभी तत्त्व सृष्टि करने में समर्थ प्रतीत नहीं हुए तब ईश्वर काल, कर्म और गुण सहित जगत् की उत्पत्ति के उद्देश्य से उनमें प्रवेश किया। तब एक अण्डा उत्पन्न हुआ और उसी अण्डे में ये महतादि तत्त्व स्थित थे जिससे इन तत्त्वों ने अपने अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए स्थान का निमाण ि किया तब अण्ड में से विराट् पुरुष के समस्त अंग प्रकाशित होने तब उन उन तत्त्वों ने स्वस्य स्वस्य अभिमानी देवताओं सहित अपने अपने स्थानों को सुनिश्चित किया तथा इसे चलायमान करने का प्रयास किया परन्तु ये असफल रहे तब अन्त में चित्त के अधिष्ठाता क्षेत्रज्ञ ने चित्त के सहित हृदय में प्रवेश किया तभी वह विराट् पुरुष चेतन की अवस्था को प्राप्त हो गया।[45]

पुरुष – जिस प्रकार जल यथार्थ सूर्य में प्रतिबिम्बित सूर्य से भिन्न रहता है उसी तरह पुरुष (जीवात्मा) शरीर में स्थित होकर भी प्रकृति के गुणों से अप्रभावित रहता है क्योकि पुरुष अपरिवर्तित, निर्विकार, अकर्ता और

[41] भा. पु. 3/26/43
[42] भा. पु. 3/26/44, 45
[43] भा. पु. 3/26/46
[44] भा. पु. 3/26/47, 48
[45] भा. पु. 3/26/50–72

निगुर्ण होता है।[46] पुरुष जब प्रकृति के गुणो से युक्त होता है तब वह अहंकार के वशीभूत होकर स्वयं को कर्ता के रूप में स्वीकार कर लेता है।[47]

उपसंहार – श्रीमद्भागवतमहापुराण में कपिलोपाख्यान के अन्तर्गत सांख्य दर्शन का वर्णन किया गया है। सांख्य कारिका में प्रकृति, पुरुष, महत्, अहंकार, मन, पंचज्ञानेन्द्रियां, पंचकर्मेन्द्रियां, पंचतन्मात्रा, पंचमहाभूत इन 25 तत्त्वों का वर्णन मिलता है। श्रीमद्भागवत में वर्णित सांख्यदर्शन के 25 तत्त्वों के अन्तर्गत पंचमहाभूत, पंचतन्मात्रा, चार अन्तः करण, दश इन्द्रियां, और काल इनकों ही स्वीकार किया है। यहां काल को ही पुरुष कहा गया है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इनके संयुक्त रूप को अन्तः करण कहा गया है एवं सांख्य कारिका में बुद्धि–अहंकार और मन इन तीनों के संयोग को अन्तःकरण कहा गया है इस प्रकार श्रीमद्भागवत में वर्णित सांख्यदर्शन के अन्तर्गत अन्तःकरण में चार तत्त्वों को समाविष्ट किया गया है और सांख्य कारिका में अन्तः कर में तीन तत्त्वों का समावेश किया गया है जिससे दोनों में वर्णित सांख्य दर्शन में भेद को उपस्थित करता है। यहां साख्य के 25 तत्त्वों में महत्, अहंकार, मन को गिना गया है परन्तु चित्त को नहीं गिना गया है। श्रीमद्भागवत में चित्त को भी इन 25 तत्त्वों में गिना गया है। जो कि सांख्य के 25 तत्त्वों में से ये एक अधिक तत्त्व के रूप में प्राप्त होता है। श्रीमद्भागवत में सांख्य की उसी सृष्टि प्रक्रिया का क्रम सहित वर्णन किया गया है जो कि सांख्य दर्शन में प्राप्त होता है। भागवत में सृष्टि के इन्हीं तत्त्वों को जैसे – महत् को वासुदेव, अहंकार को संकर्षण, मन को अनिरुद्ध, और बुद्धि तत्त्व को प्रद्युम्न नाम से वर्णित किया है। यहां तत्त्वों की उत्पत्ति के साथ ही उन्हीं तत्त्वों के संयोग से विराट् पुरुष की उत्पत्ति का वर्णन भी सविस्तार से किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- श्रीमद्भागवतमहापुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2072
- महाभारत, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2073
- सांख्यसूत्रम्, भट्टाचार्य, रामशंकर, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1977
- सांख्यकारिका, (व्याख्याकार) गौढ., ज्वालाप्रसाद, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013
- संस्कृत–हिन्दी–कोश, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2012

[46] भा. पु. 3/27/1
[47] भा. पु. 3/27/2

स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय
सिरोंजा, सागर (म.प्र.)

आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च

SAGAR

राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्कृत वाङ्मय में रामचरित्र की वर्तमान काल में प्रासंगिकता

दिनांक 22 अप्रैल 2017 (शनिवार)

प्रमाण-पत्रम्

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ./श्री/श्रीमती/कु. दीपक तिवारी

पद शोधच्छात्र

संस्था/स्थान साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय ने संस्कृत विभाग स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय में दिनांक 22 अप्रैल 2017 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की तथा वाल्मीकिरामायणे धर्मशास्त्रीय तत्वानाम् अवलोकन विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

मुख्य संरक्षक/संरक्षक राष्ट्रीय संगोष्ठी	संयोजक/सचिव राष्ट्रीय संगोष्ठी

अन्ताराष्ट्रिय–सङ्गोष्ठी

INTERNATIONAL SEMINAR

संस्कृते विश्वं, विश्वे संस्कृतम्

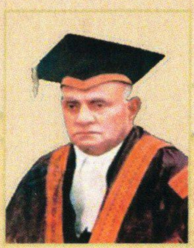

ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

WORLD IN SANSKRIT, SANSKRIT IN THE WORLD

(Sponsored by University Grant Commission, New Delhi)

16- 18 March, 2018

Organized by -

DEPARTMENT OF SANSKRIT

(School of Languages)

Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar, M.P. (India)

(A Central University)

CERTIFICATE

This is to certify that Prof. /Dr. /Shri / Smt/......DEEPAK TIWARI......

......

has participated in the International Seminar on " WORLD IN SANSKRIT, SANSKRIT IN THE WORLD " and presented paper entitled......"श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितस्त्रीधर्माः"......

......

Prof. Radhavallabh Tripathi	Prof. Nivedita Maitra	Prof. Anand Prakash Tripathi
Chief Advisor	Dean	Co-ordinatior, International Seminar
International Seminar	School of Languages	Head, Department of Sanskrit

Curiginal

Document Information

Analyzed document	Ph.D. Thesis Deepak Tiwari,.docx (D119418119)
Submitted	2021-11-22T07:23:00.0000000
Submitted by	Prabhakar Pandey
Submitter email	coordinator.inflibnet@subis.edu.in
Similarity	7%
Analysis address	coordinator.inflibnet.subis@analysis.urkund.com

Sources included in the report

W	URL: https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2016_100K-sentences.txt Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	76
W	URL: http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	17
SA	**Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्च - एकमध्ययनम्_Sanskrit_August19_2021 (1) .docx** Document Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्च - एकमध्ययनम्_Sanskrit_August19_2021 (1) .docx (D112618843)	76
W	URL: https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha%20-%20Dr.%20Uday%20shankar%20Jha_djvu.txt Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	28
W	URL: https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%BF Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	6
W	URL: https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas%20-%20Dr%20Khageshvar%20Mishra_djvu.txt Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	53
SA	**Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx** Document Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)	35
W	URL: https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%AC%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%A3%E0%A4%AE%E0%A5%8D.html Fetched: 2021-11-23T15:09:17.4730000	3
W	URL: https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%83.html Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	45
SA	**Swapan Kumar Debsharma.docx** Document Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)	4
W	URL: https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/ Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000	5

W	URL: https://books.google.co.in/books?id=ZG6kBQAAQBAJ&pg=RA70-PR2&lpg=RA70-PR2&dq=%E0%A4%85%E0%A4%AA%E0%A4%BF+%E0%A4%85%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AF+%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A3%E0%A4%A8%E0%A4%82+%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%A4%E0%A5%87+%E0%A4%AF%E0%A4%A4%E0%A5%8D&source=bl&ots=aTw8xODt-K&sig=ACfU3U0ujLDQi_n9zPkg8Q8drQXC9cwJBg&hl=en&sa=X&ved=2ahUKEwiT7vyD5a70AhVLT2wGHQwtAa4Q6AF6BAgZEAM Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000		1
W	URL: https://kakshakaumudi.com/%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8B%E0%A4%BD%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%83-%E0%A4%AA%E0%A4%B6%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%BF-%E0%A4%97%E0%A5%83%E0%A4%B9/ Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000		1
W	URL: https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%9A%E0%A5%80 Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000		2
W	URL: https://biography.sabdekho.in/10th-sans2/ Fetched: 2021-11-23T16:24:00.0000000		1

Entire Document

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य धर्मशास्त्रीयविवेचनम् (मनु-याज्ञवल्क्योर्विशेषालोके) संस्कृतम् 'पी.-एचडी' उपाधये प्रस्तुतः शोध-प्रबन्धः

शोध-पर्यवेक्षकः शोधार्थी डॉ. विश्वबन्धुः दीपकतिवारी सहायकप्राध्यापकः पी-एच.डी.संस्कृतम् संस्कृतविभागः नामांकन सं. : En16-00017 साँ.बौ.भा.ज्ञा.अ.वि.वि.

संस्कृतविभागः भाषासाहित्यकलासङ्कायः साँचीबौद्धभारतीयज्ञानाध्ययनविश्वविद्यालयः शैक्षणिकपरिसरः, बारला, रायसेनम् (मध्यप्रदेशः) - 464551, भारतम् 2021

प्रथमोऽध्यायः पुराणस्वरूपानुशीलनं तल्लक्षणं महापुराणाभिधानञ्च

1 प्रथमोऽध्यायः पुराणस्वरूपानुशीलनं तल्लक्षणं महापुराणाभिधानञ्च 1.1 पुराणलक्षणम् 1.2 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः 1.3 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपादनशैली 1.4 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यविषयः

भारतीयधर्मदर्शनसंस्कृतिसभ्यातानाम् उत्सः वेदोऽस्ति। विदितमेवास्ति यद् वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययनं स्त्रीणां शूद्राणां पतितब्राह्मणानाञ्च कृते वर्जितमासीत्। स्त्रीशूद्रद्विजातीनां त्रयी न श्रुतिगोचरा तात्कालीनसामाजिकेभ्यः वैदिकसिद्धान्तानवगमयितुं तथा तान् तस्यामेव विचारधारायां योजयितुं पौराणिकसाहित्यस्य सृजनमकारि। येन सर्वेऽपि सामाजिकाः स्वतन्त्ररूपेणाध्ययनं कृत्वा

88%	MATCHING BLOCK 1/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...
ज्ञानं प्राप्तुं शक्नुयुः। पैराणि			

कग्रन्थेषु वैदिकसिद्धान्तानाम् उपबृंहणं कृतमस्ति। "उपबृंहणम्" अस्य शब्दस्यार्थः तथ्यस्य पुष्टीकरणम् अथ च तस्य विस्तारणमस्ति। पौराणिकसाहित्यं प्रामाणिकताप्रदानाय तत् पञ्चमोवेदः इति संज्ञया विभूषितम्। इतिहासपुराणं च पञ्चमोवेद उच्यते छान्दोग्योपनिषदि चतुर्णां वेदानामुल्लेखं कुर्वन् पुराणं पञ्चमोवेदः इत्युक्तमस्ति। पुराणानां प्रामाणिकतायाः परिपुष्ट्यर्थं पद्मपुराणस्योद्धरणं द्रष्टव्यं तद्यथा - ब्रह्मणा सर्वप्रथमं सर्वशास्त्रेभ्यः प्राक् पुराणानां रचना कृता। एवं प्रकारेण स्पष्टमस्ति यत् तात्कालिकसमाजेऽपि पुराणानां महत्त्वपूर्णं सम्माननीयञ्च स्थानमासीत्। पुराणशब्दस्य व्युत्पतिः पुराणशब्दोऽयं नित्यक्लीबे वर्तते। व्युत्पत्तिः शास्त्रदृष्ट्या 'पुरा भवम्' इत्यर्थे "सायंचिरंप्राह्वेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च" अनेन सूत्रेण पुराशब्दात् 'ट्यु' प्रत्ययस्य कृते सति तुटागमे 'पुरातनं' शब्दोऽयं निष्पन्नः भवति। इदं ज्ञातव्यं वर्तते यत् पाणिनिना सूत्रद्वये पुराणशब्दस्य प्रयोगः कृतः वर्तते। अतः विचारणीयम् अस्ति यत् 'पुराण'शब्दस्य

38%	MATCHING BLOCK 2/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...
व्युत्पत्तिक्रमे 'पुरातन'शब्दस्य अर्थव्युत्पत्तिः वक्तुं शक्यते। व्युत्पति			

दृष्ट्या पुराणशब्दः निपातनात् सिद्धो भवति। अतः 'तुडागमाभावे' निपातनात् 'पुराण'शब्दस्य व्युत्पतिः कथ्यते। पुराणशब्दस्य प्रयोगः ऋग्वेदे बहुधाभवत्। ऋग्वेदे प्रयुक्तः 'पु

71%	MATCHING BLOCK 3/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...
राणम्' इति शब्दः विशेषणत्वेन प्रयुक्तः			

अस्ति तथा तस्यार्थः पुराकाले यत् जातम् अथवा प्राचीनम्। निरुक्तकारेण यास्केन अस्य शब्दस्य "पुरा नवं भवति इति पुराणम्" इयं व्युत्पत्तिः कृता। प्राचीनकाले यदासीत् अस्मिन्नर्थेऽपि पुराणशब्दस्य प्रयोगः कृतोऽस्ति। परन्तु पद्मपुराणे अन्या एव व्युत्पतिः कृता वर्तते "पुरा परम्परां वृष्टिं कामयते" अर्थात् यत् प्राचीनतायाः अथवा परस्परायाः इच्छां करोति तत् पुराणम्। इतोपि ब्रह्माण्डपुराणे भिन्ना एव व्युत्पत्तिः दरीदृश्यते "पुरा एतत् अभूत्"। सायणेन सृष्टेरुत्पत्तेः विकासस्य च प्रतिपादकसाहित्यं पुराणमिति कथ्यते। मधुसूदनसरस्वत्यपि सृष्टेरितिहासस्य पुराणसंज्ञां करोति। उपर्युक्तविवेचनानुसारेण वक्तुं शक्यते यत् 'पुराण'शब्दस्य अभिप्रायः तेन ग्रन्थेन सह वर्तते यस्मिन् वाङ्मये परम्परायाः निर्वहनं भवति तथा च तेन सहैव नवीनत्वस्य स्थापनायाः अपि निदेशः भवति। प्रस्तुततात्पर्यानुसारेण पुराणेषु विषयवस्तुनः प्राचीनता अपेक्षिताऽस्ति। पुराणस्य अर्थः भवति पुरातनं, प्राचीनः, प्राचीनतमं संज्ञानुरूपेण एवं पुराणस्य बोधः प्राप्यते। महापुराणानां वर्गीकरणं तथा तेषां नामोल्लेखः अष्टादशमहापुराणानि सात्त्विक्, राजस्, तामस् इत्येतेषु भेदत्रयेषु विभक्ताः वर्तन्

100%	MATCHING BLOCK 6/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)
ते। विष्णुपुराणानुसारे			

ण विषयवस्तुदृष्ट्या पुराणवाङ्मयं वर्गत्रयेषु विभाजितमऽस्ति। सात्त्विकपुराणं तत् भवति यस्मिन् विष्णोः महात्म्यं वर्णितमस्ति। राजसपुराणम् तत् वर्तते यस्मिन् अधिकांशरूपेण ब्रह्मणः अग्नेश्च माहात्म्यवर्णनमस्ति। शिवसम्बन्धितानि पुराणानि तामसपुराणेषु अन्तर्भवन्ति। सात्त्विकपुराणेषु - विष्णुपुराण- नारदपुराण-

भागवतपुराण- गरुणपुराण- पद्मपुराण- वाराहपुराणानामन्तर्भावः भवति। यथा - वैष्णवं नारदीयञ्च तथा भागवतं शुभम्। गारुडञ्च तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शने। राजसपुराणेषु – ब्रह्माण्डपुराणं, ब्रह्मवैवर्तपुराणं, मार्कण्डेयपुराणं, भविष्यपुराणं, वानपुराणं, ब्रह्मपुराणमित्यादिनां संग्रहणमस्ति। यथा - ब्रह्माण्डं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं तथैव च। भविष्यं वामनं ब्राह्मं राजसानि निबोधत। तामसपुराणेषु प्रमुखरूपेण – मत्स्यपुराणं, कूर्मपुराणं, लिङ्गपुराणं, शिवपुराणं, स्कन्दपुराणम्, अग्निपुराणम् इत्येषां परिगणनं भवति। यथा - मात्स्यं कौर्मं तथा लैङ्गं शैवस्कान्दे तथैव च। आग्नेयञ्च षडेतानि तामसानि निबोधत।। श्रीमद्भागवतमहापुराणे अष्टादशमहापुराणानां वर्णनं निम्नलिखितक्रमेण प्राप्यते – ब्रह्मपुराणं, पद्मपुराणं, विष्णुपुराणं, शिवपुराणं, लिङ्गपुराणं, गरुडपुराणं, नारदपुराणं, भागवतपुराणं, अग्निपुराणं, स्कन्धपुराणं, भवष्यिपुराणं, ब्रह्मवैवर्तपुराणं, मार्कण्डेयपुराणं, वामनपुराणं, वराहपुराणं, मत्स्यपुराणं, कूर्मपुराणं, ब्रह्माण्डपुराणम्।

88%	MATCHING BLOCK 4/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं

लैङ्गं सगारुडम्। नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कान्दसंज्ञितम्।। भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं सवामनम्। वाराहं

55%	MATCHING BLOCK 5/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

मात्स्यं कौर्मं च ब्रह्माण्डारव्यमिति त्रिषट्।।

ब्रह्मन्निदं समाख्यातं शाखाप्रणयनं मुनेः। शिष्यशिष्यप्रशिष्याणां ब्रह्मतेजो विवर्धनम् ।। मत्स्यपद्मपुराणयोः वर्णितमहापुराणभेदः परस्परं पूर्णतया भिन्नरूपेण प्राप्यते। अर्थात् सात्विक राजसिक तामसिकभेदेन एकमतत्वं नास्ति। श्रीमद्भागवतपुराणं महापुराणान्तर्गते 'महापुराण'वर्गे समाहितं पुराणसाहित्यं वर्तते। श्रीमद्भागवते पुराणानां पञ्चलाक्षणिकविषयाः पूर्णरूपेण यथास्थानं वर्णिताः सन्ति। 1.1 पुराणलक्षणम् पुराणं पञ्चलक्षणसमाहरणमिति संस्कृतवाङ्मये आधिक्येन दृष्टिपथे आयाति। काव्यमीमांसाकारेण राजशेखरेण सर्गः, प्रतिसंहारः, कल्पः, मन्वतरः, वंशविधिश्चेति पुराणस्य पञ्चलक्षणानि स्वीक्रियन्ते।शब्दकल्पद्रुमे उक्तमस्ति यत् व्यासादिद्वारा प्रणीतं एवञ्च वेदार्थवर्णनहेतुप्रवृत्तं पञ्चलक्षणेन समन्वितं ग्रन्थमिति 'पुराणं' कथ्यते। ब्रह्मवैवर्तपुराणेऽपि अस्यैव पञ्चलक्षणैः समन्वितग्रन्थं 'पुराणम्' उक्तम्। यथा हि -

97%	MATCHING BLOCK 7/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं विप्र!

पुराणं पञ्चलक्षणम्।। 'शुक्रनीति' नामके ग्रन्थेऽपि पुराणस्य एतेषामेव लक्षणानां वर्णनं क्रियते। वायुपुराणेऽपि पुराणस्य पञ्चलक्षणानां वर्णनं प्राप्यते। विष्णुपुराणे, सूतसंहितायामपि एतेषामेव लक्षणानां वर्णनं प्रकाशितमस्ति। अन्येषु पुराणेष्वपि पुराणामानामिदमेव लक्षणं प्रकाशितं कृतम्। पुराणानां इदं लक्षणं प्रतिपाद्यविषयान् लक्षणीकरोति। पुराणानां विषयाणामनुशीलनं स्पष्टीकरोति यत् मुख्यत्वेन सर्वेषु पुराणेषु

80%	MATCHING BLOCK 8/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

सर्गः, प्रतिसर्गः, वंशः, मन्वन्तरः, वंशानुचरि

तमिति पञ्चविषयाणामे

95%	MATCHING BLOCK 9/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5% ...

व विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।

एतेभ्यः पञ्चलक्षणेभ्यः अभिप्रायः वर्तते यत् सृष्टेः उत्पत्तिः केन प्रकारेण अभवत् ? सृष्टेः लयः कुत्र तथा केन प्रकारेण भवति ? पदार्थानाम् उत्पत्तिक्रमः? चरितादिः एतेषां उपर्युक्तविषयाणां विवेचनं येन माध्यमेन क्रियते तत् पुराणमिति। मान्यपरम्परानुसारेण पुराणेषु निम्नोक्तपञ्चविषयाः वर्णिताः सन्ति। सर्गः विविधप्रकाराणां जागतिकपदार्थानामुत्पत्तिः अथवा सृष्टिरेव 'सर्गः' उच्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य द्वादशस्कन्धस्य सप्तमेऽध्याये सर्गस्य लक्षणस्य वर्णनं एवं प्रकारेण कृतम्। तद्यथा - अव्याकृतगुणक्षोभान्महतस्त्रिवृतोऽहमः। भूतमात्रेन्द्रियार्थानां संभवः सर्ग उच्यते।। मूलप्रकृतेः विद्यमानगुणत्रयं सत्वं रजस् तमस् इति चेतनायाः सान्निध्यं अवाप्य क्षुब्धाः भवन्ति। अस्मिन् क्रमे महदादितत्त्वानामपि अभिव्यक्तिः भवति। सात्विकराजसिकतामसिकत्रिगुणात्मकाहंकारात् मनः

100%	MATCHING BLOCK 10/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

पञ्चज्ञानेन्द्रियाणां पञ्चकर्मेन्द्रियाणां

मनश्शब्दरूपरसगन्धस्पर्शादीनां प्रादुर्भावः भवति। पञ्चतन्मात्रेभ्यः पुनः जलाकाशपृथिव्यग्निवायवादीनां पञ्चमहाभूतानामुत्पतिः भवति। उत्पत्तेः इदं विवेचनमेव पुराणेषु 'सृष्टिः' 'सर्गः' वा इति नाम्नाऽभिधीयते। प्रतिसर्गः सृष्टेः सद्यः विपरीतरूपं प्रलयः अस्ति। लोकसिद्धः अयं प्रलयः एव प्रतिसर्गः इति नाम्ना अभिधीयते।

Ouriginal

विष्णुपुराणे अयं 'प्रतिसंचरः' इति नाम्नाभिधीयते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे अस्

71%	MATCHING BLOCK 11/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

य शब्दस्य स्थाने 'संस्था' इति शब्दस्य प्रयोगः कृतः

तथा प्रलयस्य चतुर्णां प्रकाराणां वर्णनं कृतमस्ति - नैमित्तिकं, प्राकृतिकं, नित्यम्, आत्यन्तिकम् । यथा – नैमित्तिक: प्राकृतिको नित्य आत्यन्तिको लय: । संस्थेति कविभि: प्रोक्ता चतुर्धाऽस्य स्वभावत: ।। अस्यातिरिक्तमपि प्रतिसर्गस्थाने श्रीमद्भागवतमहापुराणे 'प्रतिसंक्रमः' इत्ययं शब्दः प्रयुक्तः अस्तिः। यथा कालद्रव्यगुणैरस्य त्रिविधः प्रतिसङ्क्रमः। वंशः ब्रह्मणोत्पन्नानां राज्ञां भूत-वर्तमान-भविष्यकालिकीसन्ततिपरम्परा वंश इत्यमिधीयते। "राज्ञा ब्रह्मप्रसूतानां वंशस्त्रैकालिकोऽन्वयः" भावगतमहापुराणे वंशः राजवंशप्रयन्त्यमेव परिसीमितोऽस्ति परन्तु पुराणान्तरेषु वंशः इत्यनेन ऋषिवंशपरम्परायाः अपि वर्णनं प्राप्यते। मन्वन्तरम् श्रीमद्भागवतमहापुराणे मन्वन्तरम् एवं परिभाषितमस्ति यत् मनुः, देवता, मनुपुत्रः, इन्द्रः, सप्तर्षि: तथा ईशः एताभिः षड्विशेषताभिः युक्तः समयः एव मन्वन्तरमस्ति। मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः। ऋषयोंऽशावतारश्च हरेः षड्-विधमुच्यते।। मन्वन्तरं कालः मानस्य सूचकोऽस्ति चतुर्दशमन्वन्तराणि भवन्ति एवं प्रत्येकस्यापि मन्वन्तरस्यैक: विशिष्ट: मनुः भवति। वंशानुचरितम् मन्वादिवंशोत्पन्नानां वंशजानां राज्ञाञ्च विशिष्टचरितस्य वर्णनं यस्मिन् प्राप्यते तत् वंशानुचरितमित्यभिधीयते। अस्मिन् मनोः वंशोत्पन्नानां महर्षिराज्ञाञ्च चरितमपि समन्वितमस्ति। पौराणिकग्रन्थेषु महर्षीणां चरितस्यापेक्षा राजचरितस्यैव विशेषमहत्वं दरीदृश्यते। एतैः पञ्चलक्षणैः साकं अन्यानि दशलक्षणानि अपि प्राप्यन्ते। एतद् ज्ञातव्यमस्ति यत् दशलक्षणैः समन्वितं शास्त्रमेव 'महापुराणम्' इति संज्ञया विभूषितं भवति। शब्दकल्पद्रुमे महापुराणानां लक्षणमेव प्रतिपादितम् अस्ति। सर्गः, विसर्गः, वृतिः, रक्षा, अन्तरम्,

100%	MATCHING BLOCK 12/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

वंशः, वंशानुचरितम्, संस्था, हेतुः, अपाश्

रयश्चेत्यादि। ब्रह्मवेवर्तपुराणे दशलक्षणानां वर्णनम् एवं प्राप्यते। यथा- सृष्टश्चापि विसृष्टिश्च स्थितिस्तेषाञ्च पालनम्। कर्म्मणां वासना वार्त्त मनुनाञ्च क्रमेण च।। वर्णनं प्रलयानाञ्च मोक्षस्य च निरूपणम्। उत्कीर्त्तनं हरे रेव देवानाञ्च पृथक् पृथक्।। यशाधिकं लक्षणञ्च महतां परिकीर्तितम् ।। श्रीमद्भागवतमहापुराणे एतेषां दशलक्षणानां अन्यसमानार्थकपदैः सङ्कलनमस्ति। सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्ति रक्षान्तराणि च। वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयाः।। दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः। केचित् पंचविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया।। भागवतस्य दशमस्कन्धे

91%	MATCHING BLOCK 13/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

सर्गः, प्रतिसर्गः, वंशः, वंशानुचरि

तम् तथा मन्वन्तरमित्यादि पञ्चलक्षणानां निरूपणं कृतमस्ति। अवशिष्टेषु पञ्चलक्षणेषु 'विसर्गः' सृष्टेः एव भेदः अस्ति। अपाश्रयः इति शब्देन ईश्वरस्य ग्रहणमस्ति तथा सः ईशः जगत्कर्ता वर्तते। एवं प्रकारेण सृष्टिवर्णने तस्यान्तर्भावः सम्भवः अस्ति। वृत्तिशब्दस्य कृते उक्तं यत् "परस्परोपमर्दक भावः" स्पष्टरूपेण वंशानुचरितेऽन्तर्भवति। रक्षापि वंशानुचरितस्यैवान्तर्निहितमस्ति यतोहि अस्मिन् भगवतः अवताराणां वर्णनं दरीदृश्यते तथा भगवतावताराः कश्मिञ्चित् रूपे वंशपरम्परायामेव भवन्ति। अतः वंशानुचरिते अवताराणामपि संग्रहः अभिप्रेतः अस्ति अतः उपरोक्तानि दशलक्षणानि पुराणस्य सर्गादि पञ्चलक्षणेष्वेवान्तर्भवन्ति इति तु सुस्पष्टमेवास्ति। 1.2 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः पुराणसाहित्यस्य कालनिर्धारणम् एकमत्यन्तदुष्करं कार्यं वर्तते। पुराणेषु वर्णितं विषयवस्तु अत्यन्तं प्राचीनं वर्तते। पौराणिकमान्यतानुसारं समेषां पुराणानां प्रणेता महर्षिः वेदव्यासः वर्तते। "इतिहासपुराणानां पिता मे रोमहर्षणः" महर्षिवेदव्यासः महाभारतकालस्य ऋषिः वर्तते। एतेन सिद्धान्तेन ज्ञायते यत् पुराणानां रचना महाभारतकालस्य समकक्षमेव स्वीकर्तुं शक्यते। परञ्च आधुनिक-विदुषां मतमिदं वर्तते यत् पञ्चमशती पर्यन्तं तस्मात् वा किञ्चित्कालपूर्वमेव पुराणं स्वकीयं निश्चितं स्थायि च रूपं धृतवन्तः। लोकमान्यतिलकस्य मतानुसारेण पौराणिकग्रन्थानां रचनाकालः ईशाद्वितीयशताब्देः पश्चात् कथमपि न भवितुं शक्नोति। पार्टिजरमहोदयानुसारं पुराणसाहित्ये मूलरूपे ई. सन् इत्यस्य आरम्भिक शताब्दीपर्यन्तम् अस्तित्वे आगतम् आसीत्। डा. हाजरा पुराणेषु विशेषशोधकार्यं कृतवान्। डॉ. हाजरामतेन प्

50%	MATCHING BLOCK 14/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

राचीनतमेषु पुराणेषु मार्कण्डेयः, ब्रह्माण्डः, विष्

णुः, मत्स्यः, भागवतः, कूर्मश्च वर्तते। आदितः सः द्वे पुराणे प्राचीनतमे स्वीकरोति। विद्वद्भिः भिन्नानि पुराणानि भिन्नेषु कालक्रमेषु स्थापितानि सन्ति। अतः पुराणानां कालनिर्धारणं एवं प्रकारेण कृतं - विष्णुपुराणम् - 400 ई., वायुपुराणम् - 500 ई., कूर्मपुराणम् - 700 ई., हरिवंशपुराणम् - 400 ई. स्वीकुर्वन्ति। एतेषामेव मध्ये भागवतमहापुराणस्य रचनाकालः 600-700 ई. मध्ये स्वीकुर्वन्ति। अग्निपुराणस्य रचनाकालः 800 ई. मन्यते।

85%	MATCHING BLOCK 15/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

महामहोपाध्यायः पी.वी. काणे महोदयः अग्नि

Curiginal

पुराणं 700 ई. पश्चात् तस्य च काव्यशास्त्रीयमंशं 900 ई. स्वीकुर्वन्ति। नारदीयपुराणं दशमशताब्दे: साहित्यं मन्यते। ब्रह्मपुराणस्य अपि एषः कालः मन्यते। स्कन्दपुराणस्य काचित् सामग्री अष्टमशतकस्य अन्यच्च किञ्चित् अंशः तदनन्तरस्य वर्तते। डा. हाजरा गरुडपुराणं दशमशतकस्य स्वीकुर्वति। ब्रह्मवैवर्तस्य विषये विदुषां कथनं वर्तते यत् एतस्य रचना 700 ई. पूर्वकाले एवं जाता आसीत् परञ्च वर्तमानरूपः 16 तमायां शताब्द्यां प्राप्तः। श्रीमद्भागवतपुराणस्य सम्बन्धे द्वैतमतस्य संस्थापकः आनन्दतीर्थः (मध्वाचार्य जन्म- 1199ई.) भागवततात्पर्यनिर्णये श्रीमद्भागवतस्य मूलतात्पर्यस्य निर्देशं कुर्वन् पञ्चमवेदत्वेन अमुं स्वीकृतवान्। आचार्यः रामानुजः (जन्मकाल - 1017ई.) स्वकीये वेदान्ततत्त्वसारे भागवतस्य वेदस्तुतिः (10/87) पर्यन्तं अन्यच्च एकादशस्कन्धात् केचन् श्लोकान् उद्धरितवान्। येन करणेन भागवतस्य तत्पूर्वत्वं सिद्धं भवति। श्रीशंकराचार्यस्य प्रबोधसुधाकरे अनेकेषु पद्येषु भागवतस्य छाया दृश्यते। गुरु

76%	MATCHING BLOCK 16/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

गोविन्दभगवत्पादस्य गुरुणा गौडपादा

चार्येण स्वकीये पञ्चीकरण-व्याख्याने भागवतात् 'जग्रहे पौरुषं रूपम्' (भागवत.1/3/1) श्लोकः उद्धृतः वर्तते। उत्तरगीतायाम् चापि प्रसिद्धस्य पद्यस्य उद्धरणं प्रदत्तं वर्तते। तदुक्तं भावगते - श्रेयः स्रुतिं भक्तिमुदस्यते विभो क्लिश्यन्ति मे केवल बोधलब्धये। तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूल तुषावधातिनाम्।। एवं प्रकारेण बाह्यसाक्ष्यान् आधृत्य श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य गौडपादाद् प्राचीनतमत्वं सिद्धं भवति। आचार्यशंकरस्य आविर्भावकालः संप्तमशत्याः अन्तिमभागे विद्वद्भिः विशिष्टानि प्रमाणानि आधृत्य सिद्धं कृतं वर्तते। तस्य प्रगुरुः गौडपादस्य समयः सप्तमशतकस्य आरम्भः युक्तियुक्तः वर्तते। अत एव भागवतपुराणं षष्ठशतकाद् अर्वाचीनं केनापि प्रकारेण न मन्तुं शक्यते। काश्याः प्रसिद्धसरस्वतीभवनपुस्तकालये बंगाक्षरेषु भागवतस्य एका विशिष्टा प्रति प्राप्ता भवति। यस्याः लिपेः कालः दशमशकतकस्य आर्श्वे पार्श्वे निर्विवादरूपेण सिद्धः कृतः वर्तते। 1.3 श्रीमद्भागवतपुराणस्य प्रतिपादनशैली- विषयविवेचनदृष्ट्या श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य स्वरूपः चतुर्धा विभक्तुं शक्यते – घटनात्मकः, उपदेशात्मकः, स्तुत्यात्मकः, गीतात्मकः। घटनात्मके विभाजने भगवल्लीलायाः साधारणचरित्राणाञ्च ग्रहणं क्रियते। साधारणचरित्रं त्रिषु भागेषु विभक्तुं शक्यते। भविष्येतिहासोपाख्यानभेदेन। इतिहासस्य साधारणतः प्रयोजनद्वयं भवितुं शक्नोति। प्रथमः उपदेशरूपः द्वितीया विशेषशिक्षाप्रदाता च। एतस्योदाहरणं श्रीमद्भागवतः प्रथमे स्कन्धे सूत-शौनकयोः, व्यासनारदयोः, शुकदेवपरीक्षितयोश्च इत्यादयः प्रसङ्गानि वक्तुं शक्यन्ते। एवं प्रकारेण प्रायः सर्वेषु स्कन्धेषु कथाविशेषस्य उपक्रमं कर्तुम् अनेकानां व्यक्तीनां वर्णनं विहितं वर्तते। परमतत्त्वस्य ज्ञानं कारायितुं जन्ममृत्युरूपसंसारचक्रतः मुक्तिमार्गं बोधयितुं च रूपकमाध्यमेन अपि आध्यात्मिकतत्त्वस्य वर्णनं क्रियते। सरलबुद्धिजनानां कृते कथात्मकं चरित्रं स्मरणं स्यात् तदर्थं कथात्मकरूपेण वर्णितानां पात्राणां कृत्यानां च स्पष्टीकरणमपि प्राप्यते। तदनुसारं एतानि पात्राणि स्थूलस्य जगतः न भूत्वा मानसिकानि वर्तन्ते। ज्ञानमेतद् एतैरेव प्राप्तं एतस्योदाहरूपेण श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थे स्कन्धे वर्णितं पुरञ्जनस्य उपाख्यानं पञ्चमे स्कन्धे वर्णितं भवाटव्योपाख्यानञ्च वर्तते। एतैः आख्यानैः यद् विशेषतत्त्वं लक्षितं कारितं वर्तते सः तत्रैव निर्दिष्टः वर्तते। श्रीमद्भागवते यत्रोपाख्यानां वर्णनं वर्तते तत्र तेषां स्पष्टीकरणं कृतं वर्तते यत् एतत् रूपकं वर्तते। यत्र रूपकं नास्ति तत्र रूपकस्य चर्चा अपि नास्ति तस्मात् तानि इतिहासरूपेण वर्तते। श्रीमद्भागवतस्य प्रतिपादनशैल्यनुसारं प्रकृतमहापुराणस्य द्वितीयः रूपः उपदेशात्मकः अस्ति। उपदेशाः अपि

100%	MATCHING BLOCK 17/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

द्विधा विभक्तुं शक्यन्ते। प्

रथमस्तु साधारणोपदेशः द्वितीयस्तु विशेषोपदेशः।

साधारणोपदेशः साधारणोपदेशान्तर्गतं साधुमहात्मसुहृद्गुरुरक्तसम्बन्धिनाम् उपदेशगृहणं कर्तव्यम्। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रत्येकाध्यायेषु तथा सकलसंवादेषु इत्थं प्रकारस्योपदेशः प्राप्यते। यथानुसारं सामान्ये जीवने तानि तत्त्वानि आचरिते सति जीवः स्वयमेव स्वकीयं कल्याणं कर्तुं शक्नोति। वर्णितानां सकलोपदेशानां सारभूततत्त्वमिदं वर्तते यत् सर्वविषयाणाम् आसक्तिं परित्यज्य स्वस्य च कर्तव्यकर्मणः अनुष्ठानं कुर्वन् भगवतः स्मरणं निरन्तरं कर्तव्यम्। ज्योतिषचक्रवर्णनेन भूगोलेत्यादिना च राज्ञां च प्रजानां व्याख्यानेन एतस्याः वार्तायाः परिपुष्टिः कृता वर्तते यत् जीवस्य जीवनस्य पूर्णता केवलं ईश्वरप्राप्तौ वर्तते। विशेषोपदेशः विशेषोपदेशान्तर्गतं प्रमुखरूपेण हंसगीता, कपिलगीता, उद्धवं प्रति श्रीकृष्णस्य उपदेशाः आयान्ति। तथा च चतुःश्लोकीभागवतं, सप्तश्लोकी भागवतं, दीक्षारूपेण ध्रुवं प्रति देवर्षिनारदस्योपदेशः - प्रभृतयः एतस्मिन् वर्गे एव आयान्ति। प्रतिपाद्यविषयस्य प्रतिपाद्यानुक्रमे प्रकृतस्य महापुराणस्य तृतीयः रूपः स्तुत्यात्मकः वर्तते। स्तुतिशब्दस्य साधारणोऽर्थः भवति - प्रशंसा। श्रीमद्भागवते स्तुतीनामत्यधिकं विस्तारं कृतं वर्तते। प्रायः सर्वाः स्तुतयः भगवता श्रीकृष्णेन सम्बद्धाः सन्ति। श्रीकृष्णस्य माध्यमेन परमेश्वरं विष्णुं प्रति आस्था व्यक्ता कृता तथा अन्यच्च काश्चित् स्तुतयः अन्यदेवताभिः सम्बद्धाः प्राप्यन्ते। श्रीमद्भागवते एकेश्वरवादेन सह बहुदेववादस्यापि छाया द्रष्टुं शक्यते। अन्यदेवतानां स्तुतिमाध्यमेनापि श्रीकृष्णस्य महिमा वर्णिता वर्तते। उदाहरणस्वरूपेण द्वितीयस्य स्कन्धस्य पञ्चमेऽध्याये ब्रह्मणः स्तुतिः कृता वर्तते। नारदेण ब्रह्मणः स्तुतिः कृता वर्तते यस्या मुख्यप्रयोजनं ब्रह्मापेक्षया अपि उत्कृष्टतत्त्वज्ञानस्य प्राप्तिरस्ति। श्रीमद्भागवते पृथक् पृथक् इच्छानिमित्तं पृथक् पृथक् देवपूजनं वर्णितमस्ति परञ्च अन्ते निष्काम - सकाम मोक्षेच्छूकानां कृते श्रीकृष्णस्यैव पूजा करणीया इति प्रतिपादिमस्ति। अतः अन्यदेवपूजनमपि देवपरकं न अपितु भगवत्परकमेव सिद्ध्यति। स्तुतेः प्रकारद्वयं विद्येते। प्रथमा सकामस्तुतिः द्वितीया निष्कामस्तुतिः। निष्कामस्तुतेः अपि प्रकारद्वयं स्तः - प्रथमप्रकारान्तर्गतं तत्त्वज्ञानस्य तथा द्वितीयस्यान्तर्गते साधनायाः प्राधान्यं दरीदृश्यते। देवस्तुतौ तत्त्वज्ञानस्य प्राधान्यम् अस्ति अथ च –प्रह्लाद-ध्रुव-अम्बरीष-ब्रह्मादिनां स्तुतौ साधनायाः प्राधान्यं वर्तते। तत्त्वप्राधान्यः स्तुतयः आविश्ववाण्याः विचाराणां स्तुतिकतृणां च भगवति पर्यवसानं कृत्वा स्वस्यापि तस्मिन्नैव पर्यवसानं कुर्वन्ति। साधनाप्राधान्यस्तुतिषु आत्मसाक्षात्कारस्य तथा मुक्तेः अपि निषेधं कृत्वा कथितं यत् "अस्माभिः भक्तस्य सत्सङ्गे लीलाश्रवणे कीर्तने तथा च भक्तचरिते यावता आनन्दानुभूतिः प्राप्यते तावता आत्मस्वरूपस्थितौ अपि न प्राप्यते"। अस्यामेव सन्दर्भे राज्ञः पृथोः स्तुतौ अत्यन्त भावस्य प्राधानतायाः वर्णनं प्राप्यते यत् "अस्मभ्यं दशसहस्राणि कर्णानि यच्छन्तु यैः वयं भवतां कथां श्रोतुं शक्नुमः"। यथा – न कामये नाथ तदप्यहं क्वचिन् न यत्र युष्मच्चरणाम्बुजासवः। महत्तमान्तर्हृदयान्मुखच्युतो विधत्स्व कर्युतमेष मे वरः।। एताभिः सर्वाभिः स्तुतिभिः आत्मशुद्धिः एव भवति। भगवत्तत्त्वज्ञानस्य च प्राप्तिः भवति। साधने भगवत्स्वरूपे निष्ठा भवति। गीतात्मकशैली श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य अन्यतमा प्रतिपादनशैली वर्तते। प्रस्तुतप्रकरणे गीता

80%	MATCHING BLOCK 18/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

त्मकशब्दात् अयं अभिप्रायः वर्तते यत् गे

यात्मिकाशैली

70%	MATCHING BLOCK 19/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

ति। श्रीमद्भगवद्गीता मुख्यतया श्रीकृष्णः

तथा गौणतः तस्य नानावतारैः सृष्टौ स्थितानां मानवानां कल्याणस्य निमित्तम् अर्जुन-उद्धवादिभ्यः अन्तरेङ्गभ्यः प्रदत्तः उपदेशोऽस्ति। तथा एते सर्वे श्रीमद्भागवतस्य उपदेशात्मकभागे एव अन्तर्भवन्ति - कपिलगीता, हंसगीता आदि गीतशब्दस्य शाब्दिकार्थः गायनं वर्तते। यदा अन्तःस्थात्मा स्वव्यथा अन्तवेर्दना तथा अनुभूतिं स्वस्यान्ते संवरणं कर्तुं असमर्थः भवन्ति अर्थात् धैर्यसमाप्तिः यदा भवति तदा स्वयमेव या अन्तर्ध्वनिः निर्गच्छति तस्यैव नाम गीतमस्ति तत् संसारस्य कटुतायाः अनुभवेन, ज्ञानेन, विरहेण, प्रेम्णा, प्रेम्णः इच्छया, विरहसम्भावनया अथवा अन्यैः अपि कारणैः हृदयात् प्रस्फुटिता भवति। श्रीमद्भागवते एतादृशानि प्रसङ्गानि दृष्टिगोचराणि भवन्ति येसु प्रायः अधिकांशप्रसाङ्गानि गोपीनां सन्ति तथा ताः प्रेमानुरागिण्यः सन्ति। गोपीभिः गीतानि पंचगीतानि प्राप्यन्ते। येषु द्वारिकाधीशकृष्णस्य जायानां गीतमेकम्। पिङ्गलायाः एकं गीतम्, भिक्षुकस्य ब्राह्मणस्य गीतमेकम्, ऐलगीतम्, भ्रमरगीतम् आदि सन्ति। संसारस्य कटुतायाः अनुभवेन तासां हृदयेषु या व्यथा समागता सा अस्मिन् गीते चित्राङ्कितास्ति। द्वितीयगीतं ब्राह्मणभिक्षुकस्य वर्तते। सः सात्विकः सदाचारि भूत्वा सामाजिकैः अपमानितः प्रताडितश्च। तेन अपमानेन तेन प्रताडितेनस्य च ब्राह्मणभिक्षुकस्य अन्तर्वेदना अस्मिन् गीते प्रस्फुटिता। श्रीकृष्णस्य जायाभिः परमानन्दस्थितौ नक्तं दिनं दिनं नक्तं च प्रतीयते। गोपीनां हृदयं अनिर्वचनीयं वर्तते यथा प्रेममयः अमृतमयः श्रीकृष्णमयश्च वर्तते। इत्थं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे घटनोपदेशस्तुतिगीतैः माध्यमेन अनेकानेकविषयाणां प्रतिपादनं कृतम्। 1.4 श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यविषयः श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रतिपाद्यः विषयः परमात्मा श्रीकृष्णोऽस्ति। श्रीमद्भागवते भगवतः विविधस्वरूपाणाम् वर्णनं कृतमस्ति। श्रीमद्भागवते दशविषयाणाम् वर्णनमायाति ते सन्ति सर्गः विसर्गः स्थानं पोषणः अति

100%	MATCHING BLOCK 20/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

मन्वन्तरम् ईशानुकथा निरोधः मुक्तिः आश्

रयः एतेषाम् दशविषयाणाम् वर्णनं श्रीमद्भागवते कृतमस्ति। अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणभूतयः। मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।। अस्मिन् भागवते प्रधानविषयः आश्रयोऽस्ति। आश्रयशब्दस्य तात्पर्यं जीवानाम् शरणयोग्यं ईश्वर अथवा व्यक्ताव्यक्ताभासस्य एतेषाम् अधिष्ठानः निरपेक्षः साक्षी ब्रह्मास्ति। अस्यैवाश्रयतत्त्वस्य उपलब्धेः प्रयोजनार्थं अन्य नवविषयाणाम् वर्णनं कृतमस्ति। दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणम्। वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेनार्थेन चाञ्जसा।। सर्ग-विसर्गेत्यादि माध्यमेन प्रभोः अनन्तमहिम्नः ब्रह्मस्वरूपस्य च बोधं कारयित्वा अविद्यायाः निवृत्तकरणमेव श्रीमद्भागवतस्य प्रयोजनं वर्तते। श्रीमद्भागवतस्य प्रत्येकस्कन्धे एव आश्रयतत्त्वस्य निरूपणं कृतमस्ति। शंकराचार्यस्य दृष्ट्यां-सगुणनिर्गुणयोः द्वयोः प्रकारयोः वर्णनं प्राप्तं भवति तथा समस्तविशेषणविकल्पाभ्यां रहितं निर्गुणस्वरूपं स्वीकरणीयम् सगुणस्वरूपं नास्ति। यतोहि उपनिषदग्रन्थेषु यत्रापि ब्रह्मस्वरूपविषये वर्णनमायाति तत्र अशब्दास्पर्शारूपाव्ययेत्यादि निर्विशेषमेव कथितमस्

73%	MATCHING BLOCK 21/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

ति। विशिष्टाद्वैतस्य प्रधानाचार्यः

श्रीरामानुजः शङ्कराचार्यस्य निर्गण मतस्य विपरीतं सगुणरूपे ब्रह्म स्वीकरोति । अस्मिन् विषये तत्त्वं एवं प्रकारेण वर्तते यत् ब्रह्मैव सर्वस्मिन् समये "सर्व" शब्दस्य वाच्योऽस्ति यतोहि चित्तं वा जडः तस्यैव शरीरस्य प्रकार भेदोऽस्ति। तस्य कदाचित् कारणावस्थायाम् सः सूक्ष्मदशापन्नो भवति, नामरूपभेदेन सह विभिन्नो जीवाः जडाः तेषां कायाः भवन्ति। यतोहि परब्रह्मेण तस्य कार्यजगत् भिन्नं नास्ति। श्रीमद्भागवते आश्रयस्य लक्ष्यं एवं प्रकारेण वर्तते। सृष्टिः प्रलयश्च अथवा विषमप्रतीतिः तथा च तस्याभावः द्वयोरपि येन प्रकाशिताः भवन्ति सः परब्रह्मैव आश्रयः अर्थात् अधिष्ठानोऽस्ति स एव परमात्मा इति कथ्यते। यः आध्यात्मिकः पुरुषोऽस्ति सैवाधिदैविकोऽस्ति यः तान् पृथक् करोति स एव आधिभौतिकपुरुषोऽस्ति। यदा प्रथमः न भवति तदा द्वितीयस्यापिपलब्धिः न भवति। एते त्रयः सापेक्षाः सन्ति। एतेषाम् त्रयाणाम् भावम् अभावम् च यो जानाति स अपेक्षाहीनः साक्ष्याश्रयोऽस्ति। आभासश्च निरोधश्च यतश्चध्यवसीयते। स आश्रयः परं ब्रह्म परमात्मेति शब्द्याते।। योऽध्यात्मिकोऽयं पुरुषः सोऽसावेवाधिदैविकः। यस्तत्रोभयविच्छेदः पुरुषो ह्याधिभौतिकः।। एक मेकतराभावे यदा नोपलभामहे। त्रितयं तत्र यो वेद स आत्मा स्वाश्रयाश्रयः।। एवं जीवस्य जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिषु एतेषाम् अवस्थानाम् विश्वं तैजस् तथा च प्रज्ञायाः मायामयरूपेषु यस्य व्यतिरेकान्वयः भवति सः विश्वदशा तथा च तदनन्तरस्य अधिष्ठानब्रह्मैव आश्रयोऽस्ति। त्यतिरेकान्वयो यस्य

100%	MATCHING BLOCK 22/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु।

मायामयेषु तद्ब्रह्म जीववृत्तिष्वपाश्रयः।। एकादशस्कन्धे प्रत्येकस्थाने मुक्तिबन्धनाभ्यां भिन्नस्य यस्य तत्त्वस्य उपदेशः कृतोऽस्ति स आश्रयतत्त्वमेवास्ति। श्रीमद्भगवद्गीतायाम् पराऽपराः प्रकृतिः, क्षेत्रक्षेत्रज्ञाः, क्षराक्षरौ, प्रकृतिपुरुषेभ्यः भिन्नः यस्य तत्त्वस्य वर्णनं कृतमस्ति सः श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य आश्रयतत्त्वोऽस्ति। आश्रयतत्त्वस्य प्रतिपादनाय प्राथमिकनवतत्त्वानां विवेचनं लक्षणपुरस्सरं कृतमस्ति। कायोक्तलक्षणानुगुणं तथा च पुराणानुगुणं पुराणस्य यानि पञ्चलक्षणानि सन्ति तानि केवलं तेष्वेव अङ्गीनि भवन्ति तेषां प्रतिपाद्याः ते एव पञ्चविषयाः भवेयुः। श्रीमद्भागवते पञ्चविषयाः सन्ति एतानि तु केवलं लक्षणानि श्रीमद्भागवते केवलमेकस्य आश्रयस्वरूपस्य भगवतः प्रतिपादनं वर्तते। भगवता सार्द्धं श्रीमद्भागवतग्रन्थस्य प्रतिपादकप्रतिपाद्यभावसम्बन्धः वर्तते। अस्य प्रतिपदस्य प्रतिपाद्यः परब्रह्मभगवान् श्रीकृष्णः एव अङ्

गीक्रियते।

द्वितीयो

56%	MATCHING BLOCK 23/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

ऽध्यायः धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचयः द्वितीयोऽध्यायः धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य

परिचयः 2.1 धर्मसूत्रम् 2.2 स्मृतिः 2.3 भाष्यं निबंधश्च

2.1 धर्मसूत्रम् भारतीयज्ञानपरम्परायां वैदिकसाहित्यं ज्ञानस्य उत्सभूतत्वेन निरूपितमस्ति।

चत्वारश्च

100%	MATCHING BLOCK 24/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

वेदाः – ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः,

अथर्ववे

दश्च। वेदव्युत्पत्तिपादविषया निरूप्यते "वेद्यते ज्ञायते अनेनेति वेदः"। वेदानां चातुर्विध्यं संरचनाश्रितं तत्र च निरूपितविषयाश्रितञ्च। एतदेव चातुर्विध्यम् ऋग्वेदीये पुरूषसूक्ते समुल्लिखितमस्ति।

100%	MATCHING BLOCK 25/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

100%	MATCHING BLOCK 26/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।

अभ्युपेयोपायकरणादिसंयुतो वेदः

83%	MATCHING BLOCK 27/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

चतुर्धा विभज्यते - संहिताब्राह्

मणारण्यकोपनिषदश्च। वेदानां समुचितज्ञानप्राप्त्यर्थं षण्णां वेदाङ्गानामध्ययनं क्रियते। तेषां नामानि मुण्डकोपनिषदि मिलति यथा- "

100%	MATCHING BLOCK 28/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो

ऽथर्ववेदः

100%	MATCHING BLOCK 30/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छन्दोज्योति

षमिति”। कल्पे

46%	MATCHING BLOCK 31/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

श्रौतसूत्राणि गृह्यसूत्राणि धर्मसूत्राणि शुल्वसूत्राणि च सन्निविष्टानि सन्ति। श्रौतसूत्रं ब्राह्मणग्रन्था

नां प्रतिपाद्

यम् - अर्थम् अनुसरत् यज्ञं प्रतिपादयति। गृह्यसूत्रेषु गृहस्थाश्रमवासिनां च कृते कर्तव्यानुष्ठानयोश्च वर्णनं मिलति। धर्मसूत्रेषु सामाजिकानां कर्तव्यानां धर्मादीनां वर्णितमस्ति। इत्थं प्रकारेण शुल्वसूत्रेषु याज्ञिककुण्डनिर्माणस्य विधिः प्राप्यते। “धर्मसूत्रम्” शब्दस्यार्थ: “धर्म:” शब्दस्याऽस्य प्रयोगः वेदब्राह्मणारण्यकोपनिषत्पुराणस्मृत्यादिषु दर्शनशास्त्रसम्बद्धसैद्धान्तिकप्रतिपत्तिप्रतिपादकेषु ग्रन्थेषु च अथ च धर्मशास्त्रे च विविधार्थेषु प्

64%	MATCHING BLOCK 29/353	W	https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%A ...

रयुक्तो अस्ति। अस्यशब्दस्य प्रयोगः पुल्लिङ्गे

अथ च नपुंसकलिङ्गेऽपि मिलति। यथा वेदे पुँल्लिङ्गे - त्वे धर्माण आसते जुहूभिः सिञ्चतीरिव। कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधिश्रियो धिषे विवक्षसे।।

नपुंसकलिङ्गे -

100%	MATCHING BLOCK 32/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। “धर्म:” शब्दस्य अस्य विशिष्टाऽर्थे प्रयोगस्तावत् वर्णनं वैशेषिकदर्शनस्य वैशेषिकसूत्रोपस्कारे प्राप्यते यथा – “

100%	MATCHING BLOCK 34/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

यतोऽभ्युदयनिश्रेःयससिद्धिः स धर्मः”।

अस्य

सूत्रस्य टीकायां वर्णनं मिलति- “अभ्युदयस्तत्त्वज्ञानं निःश्रेयसमात्यन्तिकी दुःखनिवृत्तिः तदुभयं यतः स धर्म:” इति। गौतमधर्मसूत्रे धर्मस्य मूलं प्राप्यते - “वेदोधर्ममूलम्। तद्विदां च स्मृतिशीले।।”।

100%	MATCHING BLOCK 33/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

मनुस्मृतेः मन्वर्थमुक्तावलीटीका

यामपि ज्ञाप्यते - श्रुतिप्रमाणको धर्मः। स्मृतिग्रन्थेषु धर्मोऽयम् द्विधा विभज्यते प्रथमः साधारणधर्मः द्वितीयश्च विशिष्टधर्मः। साधारणधर्मः सकलमनुष्याणां कृते अनुकरणीयः विशिष्टश्च द्वितीयः (असाधारणधर्मः) वर्णाश्रमानुपालनकर्तृभिः नियमत्वेन अनुपालनीयः। साधारणधर्मस्य विवेचनं संस्कृतवाङ्मये बहुशः मिलति। यथा -

100%	MATCHING BLOCK 35/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

दानं दमो दया क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्।। वर्णविशेषस्य धर्मो विशिष्टधर्मः।

92%	MATCHING BLOCK 36/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

वर्णधर्मः, आश्रमधर्मः, वर्णाश्रमधर्मः, नैमित्तिकधर्मः, गुर्णधर्

माश्च एते सर्वे विशिष्टधर्मे सन्निविष्टाः सन्ति। मनुस्मृतेः कुल्लूकभट्टस्य टीकायां 'वर्णविशेषस्य धर्म एव विशिष्टधर्मः' अस्यां प्रतिपत्त्याम् उल्लिखितमस्ति – "वर्णशब्दश्

च

72%	MATCHING BLOCK 37/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

वर्णधर्माऽऽश्रमधर्म-वर्णाश्रमधर्म-गुणधर्म-नैमित्तिकधर्माणामु

पलक्षकः"। "धर्मसूत्रम्" शब्दस्य 'धर्म' अवयवविचारोपरान्तं 'सूत्रं' शब्दः वर्ण्यते। शास्त्रीयार्थानां प्रतिपादकः वाक्यविशेषः सूत्रं यथा – "शास्त्रीयबह्वर्थप्रतिपादकसंक्षिप्तः वाक्यविशेषः"। अन्यत्रापि परिभाषा प्राप्यते -

73%	MATCHING BLOCK 38/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विष्वतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रकृतो विदुः।।

इत्थं सूत्रन्नाम शास्त्रस्य

प्रतिपाद्यस्याल्पाक्षरेण निरूपकः इति। धर्मसूत्राणां परिचयः इदानीं यानि धर्मसूत्राणि प्राप्यन्ते तेषां धर्मसूत्राणां परिचयः प्रस्तूयते। मौलिकग्रन्थेषु समीक्षासु च धर्मसू

95%	MATCHING BLOCK 39/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

त्राणां नामानि प्राप्यन्ते

इत्थं प्रकारेण –

71%	MATCHING BLOCK 40/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

गौतमधर्मसूत्रम्, बोधायनधर्मसूत्रम्, आपस्तम्बधर्मसूत्रम्, हिरण्यकेषिधर्मसूत्रम्, वसिष्ठधर्मसूत्रम्, विष्णुधर्मसूत्रम्,

हारीतधर्मसूत्रम्, शङ्खलिखितधर्मसूत्रम्, वैखानसूत्रम्। एतेषां प्रमुखधर्मसूत्रीयग्रन्थानां क्रमशः परिचयः स्वरूपगतपरिषीलनञ्च प्रस्तूयते। गौतमधर्मसूम् प्राप्तधर्मसूत्रसाहित्ये गौतमधर्मसूत्रं प्राचीनतमं धर्मसूत्रमिति मन्वते विद्वान्सः। सामवेदीयं धर्मसूत्रमिदम्। अस्य धर्मसूत्रस्य रचनाकारः महर्षिगौतमः श्रूयते। लाट्यायनश्रौतसूत्रे तथा च द्राह्यायणश्रौतसूत्रे गौतमनाम्नः आचार्यस्य वर्णनं समुपलभ्यते। यथाहि लाट्यायनश्रौतसूत्रे- "देवा ब्रह्माण आगच्छतागच्छतागच्छतेति गौतमः"। गौतमधर्मसूत्रस्य हरदत्तकृतमिताक्षराटीका तथा च मस्करीकृता टीका प्राप्यते। गौतमधर्मसूत्रस्य प्राचीतमटीकाकारः असहायो अपि श्रूयते। तस्य वर्णनं महाभाष्ये मिलति यथा हि - "एकाकिभिः क्षुद्रकैर्जितमिति असहायैरित्यर्थः"।। गौतमधर्मसूत्रेऽस्मिन् त्रयः प्रश्नाः सन्ति। प्रथमद्वितीययोः प्रश्नयोः नव नव अध्यायाः सन्ति तृतीय प्रश्ने च दशाध्यायाः सन्ति। मूलरूपेण अस्मिन् धर्मसूत्रे अष्टाविंशतिः अध्यायाः सन्ति। अस्मिन् धर्मसूत्रे एकसहस्त्राणि सूत्राणि सन्ति। इदं धर्मसूत्रं केवलं गद्यमयमस्ति। बोधायनधर्मसूत्रम् इदं धर्मसूत्रं बोधायनकल्पसूत्रस्य अंशमा

100%	MATCHING BLOCK 43/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

त्रमस्ति। कृष्णयजुर्वेदीया

चार्यः बोधायनः अस्य धर्मसूत्रस्य रचनाकारो अस्ति। एकस्मिन् स्थाने तर्पणस्य प्रसङ्गे सूत्रकारैः सह काण्व बोधायनस्य नामपि श्रूयते। एतेन कारणेन काण्वबोधायनः वर्तमानधर्मसूत्रस्य रचनाकारः नास्ति। वर्तमानधर्मसूत्रस्य कर्ता अस्य वंशजः अस्ति। यस्य अर्वाचीनता स्वयंसिद्धास्ति। बोधायन धर्मसूत्रस्य एकमात्र

100%	MATCHING BLOCK 41/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

टीकाकारः गौविन्दस्वामी

तस्य टीका

Ouriginal

81%	MATCHING BLOCK 42/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

याः नाम "विवरण" प्राप्यते। गोविन्दस्वामीना

ऽपि बोधायनस्य स्थाने काण्वायनः कथ्यते।

100%	MATCHING BLOCK 44/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

बोधायनधर्मसूत्रं गौतमधर्मसूत्

रस्य पश्चात् रचितम्। अस्य प्रमुखकारणमस्ति अस्मिन् धर्मसूत्रे गौतमस्य नाम आगतः। डा. बर्नेल द्वारा

83%	MATCHING BLOCK 45/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

बोधायनधर्मसूत्रं चतुर्षु प्रश्ने

षु विभज्यते। डा. आर शामशास्त्री एवं डा. कैलेण्डः इदं धर्मसूत्रं स्वमतिना विभाजनं कृतवान्। बोधयनधर्मसूत्रं चतुर्षु प्रश्नेषु विभवतोऽस्ति। अस्मिन् अन्तिमप्रश्नं परिषिष्टः मन्यते। अस्मिन् धर्मसूत्रे प्रश्नस्य विभाजनं अध्यायेषु एवं खण्डेषु कृतम्। प्रथमेप्रश्ने एकादशाध्यायाः एवं एकविंशतिः खण्डाः सन्ति। तृतीये प्रश्ने दशाध्यायाः एवं अष्टादषखण्डाः सन्ति। तृतीये प्रश्ने दशाध्यायाः दशखण्डाः सन्ति। एवं चतुर्थे प्रश्ने अष्टाध्यायाः अष्ट खण्डाः सन्ति। इत्थं प्रकारेण अस्मिन् धर्मसूत्रे मात्र ऊनचत्वारिंशत् सप्तपञ्चाषत् खण्डाश्च सन्ति। परन्तु विषयविभाजनस्य दृष्ट्या धर्मसूत्रमस्तव्यस्तमस्ति। एकैव विषयस्य विवेचनं विभिन्नाध्यायेषु प्राप्यते। एकैव स्थले सर्वान् नियमान् समाप्तः न कृतः। अस्मिन् धर्मसूत्रे विषयाः गद्यशैल्या पद्यशैल्या च निबद्धाः वर्तन्ते। ग्रन्थनामानि अपि उल्लिख्यन्ते अत्र मिलति यथा - चत्वारः वेदाः,

96%	MATCHING BLOCK 46/353	W	https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%A ...

तैत्तिरीयसंहिता, तैत्तिरीयब्राह्

मणः, गोपथब्राह्मणः, तैत्तिरीयारण्यकः, उपनिषद्, उल्लिख्यन्ते अत्र। षट्वेदाङ्गानामपि वर्णनमपि मिलति। बौधायनधर्मसूत्

54%	MATCHING BLOCK 47/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

रे धर्मशास्त्रकाराणामपि नामानि मिलन्ति तेषु –औपजध्निकात्

यकाश्यपगौतमप्रजापतिमौदगल्यहारीतादयः प्रमुखाः सन्ति। आपस्तम्बधर्

मसूत्रम् आपस्तम्बधर्मसू

76%	MATCHING BLOCK 48/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

त्रं कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयशाख्यासह सम्बद्धो

ऽति। इदं धर्मसूत्रं अध्वर्युनामनः ऋत्विजानां प्रमुखकल्पस्य अंङ्गं वर्तते। आपस्तम्बमहर्षिणा प्रणीतं ऐतेन कारणेन अस्य धर्मसूत्रस्य नाम आपस्तम्बधर्मसूत्रमस्ति। अस्यधर्मसूत्रस्य सर्वप्रथमप्रकाशनं हरदत्तकृत उज्ज्वलाटीकया सह बुहलरमहोदयेन बुहलरानुवादेन सह कुम्भकोणस्थानात् संस्कृतमालान्तर्गत सम्पादितं कृतम्। आपस्तम्बधर्मसूत्रस्य क्रमः गौतमबौधायनधर्मसूत्रयोः पश्चात् आगच्छति। पी.वी. काणेमहोदयेन अस्य रचनाकालः 600-300 ई.पू. मध्ये स्वीक्रियते। याज्ञवल्क्यः एवं शंखलिखितः आपस्तम्बं धर्मशास्त्रकाररूपे स्वीक्रियते। आपस्तम्बधर्

मसूत्रस्

66%	MATCHING BLOCK 49/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

य व्याख्याकारः हरदत्तोऽस्ति व्याख्या

याः नाम उज्ज्वला वर्तते। इदं धर्मसूत्रं प्रश्नयोः विभक्तः। प्रश्नस्यविभाजनं पटलेषु कण्डिकासु अस्ति। प्रथमे प्रश्ने एकादश पटलाः सन्ति एवं द्वात्रिंशत्

100%	MATCHING BLOCK 50/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

कण्डिकाः सन्ति। द्वितीये प्

रश्ने पुनः एकादशपटलाः एवं द्वात्रिंशत् कण्डिकाः सन्ति। इत्थं प्रकारेण द्वाविंशति पटलाः एवं एकषष्टिः कण्डिकाः सन्ति। प्रश्नयोः विषयवस्तुनानुसारं व्यवस्थितरूपेण प्रस्तुतिकरणं न कृतम्। कण्डिकासु विषयस्यानुसारेण विभाजनं नास्ति। अपितु एकैवविषयः एकाधिक कण्डिकासु क्रमशः प्रचलितः एवं तस्य विषयस्य मध्येऽन्यविषयाणां विवेचनमपि क्रियते। अस्य धर्मसूत्रस्य प्रमुखविशेषता भाषाशैली अस्ति। अतः एतेन कारणेन इदं धर्मसूत्रमन्यधर्मसूत्राणां विलक्षणं वर्तते। अस्य भाषा अत्याधिक प्राचीनतमा एवं पाणिनेः नियमसम्मतं नाऽस्ति एवं गद्यपद्यमयोऽस्ति। धर्मशास्त्रीयाचार्यानां नामापि आगच्छन्ति यथा – कण्वः,

100%	MATCHING BLOCK 51/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

काण्वः, कुणिकः, कुत्सः, कौत्सः, पुष्करसादिः, वार्ष्यायणिः, श्वेतकेतुः, हारीतः।

सम्पूर्णवेदवेदाङ्गस्य अतिरिक्तः पुराणस्य महाभारतस्याऽपि उल्लेखं प्राप्यते। आपस्तम्बे पूर्वमीमांसायाः सम्बद्धः पारिभाषिकशब्दानां एवं सिद्धान्तानां अधिकाधिकोल्लेखः मिलति। आपस्तम्बधर्मसूत्रस्य उल्लेखः ब्रह्मसूत्रस्य भाष्येऽपि प्राप्नोति।

60%	MATCHING BLOCK 52/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

हिरण्यकेशिधर्मसूत्रम् इदं धर्मसूत्रं हिरण्यकेशिकल्पसू

त्रस्य भागोऽस्ति। कल्पसूत्रस्य षडविंशतिः एवं सप्तविंषतिः प्रश्नैव हिरण्यकेशिधर्मसूत्रमस्ति। धर्मसूत्रमुपरि महादेवदीक्षितकृत उज्ज्वला टीकाऽपि प्राप्यते। डॉ. किर्स्ते महोदयेन मातृदत्तभाष्याधारे

100%	MATCHING BLOCK 56/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

हिरण्यकेशिगृह्यसूत्रस्य

सम्पादनं कृतम्। पी. वी. काणे मतानुसारेण इदं धर्मसूत्रं स्वतन्त्ररचना नास्ति। तथा कोंगू राज्ञः दानपात्रे (454 ई.) हिरण्यकेशिशाखायाः ब्राह्मणानां चर्चितोऽस्ति। आधुनिकरत्नागिरिजनपदस्य ब्राह्मणः स्वं हिरण्यकेशि मन्यते। हिरण्यकेषिब्राह्मणानां सम्बन्धः तैत्तिरीयशाखायाः खाण्डिकेयभागस्य चरणेन सह अस्ति। चरणव्यूहस्य भाष्ये उद्धृत महार्णवानुसारेण हिरण्यकेशिजनाः सह्यपर्वतस्य एवं परशुरामक्षेत्रं निकषा समुद्रतटात् दक्षिण-पश्चिम दिशोः वसति। टीकाकारः महादेवानुसारेण अस्य सूत्रस्य कालः आपस्तम्बधर्मसूत्रोपरान्त स्वीक्रियते। इत्थं प्रकारेण हिरण्यकेशिधर्मसूत्रम् आपस्तम्बधर्मसूत्रोपरान्त रचनाऽस्ति। वसिष्ठधर्मसूत्रम् इदं वसिष्ठधर्मशास्त्रं शब्देनापि सम्बोध्यते। अस्य श्रौतसूत्रं एवं गृह्यसूत्रं न मिलति। धर्मसूत्रं संक्षिप्तम् एवं महत्वपूर्णमस्ति। कुमारिलमतानुसारेण वसिष्ठधर्मसूत्रस्य अध्ययनं विशेषतः

100%	MATCHING BLOCK 53/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

ऋग्वेदस्य विद्यार्थीनः

कृतवन्तः। मनुना सर्वप्रथम इदं धर्मसूत्रं धर्मप्रमाणरूपेण स्वीकृतम्। इदं धर्मसूत्रं गौतमबौधायनापस्तम्बादिधर्मसूत्राणां श्रृंखलायां महत्त्वपूर्णमस्ति। कलकत्तातः प्रकाशितं (1876 ई.) जीवानन्दविद्यासागरद्वाराकृत सङ्ग्रहे विंशोऽध्यायस्य एवं एकविंशतितमोऽध्यायस्य कश्चितांशः मिलति। एतत् विवरणं एम. एन. दत्त, कलकत्तायाः (1980 ई.) सङ्ग्रहेऽपि अस्ति। परन्तु आनन्दाश्रमस्य स्मृतिसङ्ग्रहे (1905 ई.) तथा बाम्बेसंस्कृतसीरीज मालायां डॉ. फुहररस्य संस्करणे त्रिंशत्तमोऽध्यायाः सन्ति। इदं संस्करणं सर्वाधिकं प्रमाणिकं वर्तते। अस्य धर्मसूत्रस्य भाषा शैली गौतमधर्मसूत्रेण सह सम्यक्प्रकारेण मिलति। उदाहरणार्थं वसिष्ठधर्मसूत्रस्य विं

100%	MATCHING BLOCK 54/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

शतितमोऽध्यायः गौतमधर्मसूत्रस्य एकोनविंशतितमोऽध्याये

न सह अक्षरशः समानमस्ति। अन्यत्र अपि शब्दार्थरुपेण समानतायाः अभावः नास्ति। बौधायनधर्मसूत्रस्य अधिकांश नियमानाम् अस्मिन् धर्मसूत्रे अस्ति। पी. वी. काणे महोदयः वसिष्ठधर्मसूत्रं मनुस्मृतेः पूर्वं मन्यते। कारणं मनुस्मृतौ वसिष्ठधर्मसूत्रं धर्मप्रमाणरुपेण स्वीक्रियते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राचीनतमस्मृतिकारेषु वसिष्ठं धर्मसूत्रकाररुपे उल्लेखं कृतवान्। एतेन कारणेन स्पष्टमस्ति यत् स्मृतिकारेषु एवं भाष्यकारेषु वसिष्ठस्य महत्त्वपूर्णस्थानम् आसन्। तीरदेवस्य राजिमताम्रपत्रे अस्य धर्मसूत्रस्य उद्धरणं मिलति यस्य समयः अष्टशताब्दया अन्तिमः कालः मन्यते। अतः अस्य धर्मसूत्रस्य समयः ईसापूर्व 300-100 मध्ये स्वीकरणीयम्। विष्णुधर्मसूत्रम् बंगालस्थित एशियाटिकसोसायटी द्वारा जीवानन्दकृत धर्मशास्त्रसंग्रहे (1876 ई.) इदं धर्मसूत्रं प्रकाशितम्। पुनः एम.एन. दत्तेन (1909 ई.)

वैजयन्ती टीकया सह एषः ग्रन्थः प्रकाशितः। सेक्रेड बुक आफॅ दि ईस्ट ग्रन्थस्य सप्तमे खण्डे डॉ. जे. जॉली महोदयेन अस्य आङ्गलभाषायाम् अनुवादं कृतम्। वैजयन्ती टीकयानुसारेण अस्य धर्मसूत्रस्य सम्बन्धः यजुर्वेदीयकाठकशाखया सह अस्ति। श्राद्धकल्पे वाचस्पतिमतानुसारं विष्णुधर्मसूत्रं काठकशाखीयविद्यार्थीनां कृते अस्ति। यतोहि विष्णुः तस्याः शाखायाः सूत्रकारः वर्तते। अस्मिन् धर्मसूत्रे सूत्ररचना गद्यपद्यात्मकं वर्तते। अस्य प्रथमोऽध्यायः तथा च अन्तिमौ अध्यायौ पद्यमयौस्तः। अस्मिन् धर्मसूत्रे शताध्यायाः सन्ति। अस्य भाषा शैली सरलाऽस्ति व्याकरणस्य नियमानुकूला वर्तते। धर्मसूत्रे मनु-याज्ञवल्क्यस्मृतिभ्याम् अधिकांशतः विषयाणां ग्रहणं कृतम्। अस्य प्रारम्भिकांशानां समयः 300-200 ई.पू. मन्यते। प्रो. काणे महोदयः अस्य अनुमानिककालनिर्धारणं कृतवान्। डॉ. जॉली महोदयेन

82%	MATCHING BLOCK 55/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

विष्णुधर्मसूत्रं याज्ञवल्क्यस्मृतेः

प्राक् मन्यते। अस्य मतस्य खण्डनं काणे महोदयद्वारा कृतम्। अस्मिन् वेदवेदाङ्गेतिहासधर्मशास्त्रपुराणानामोल्लेखः अभवत्। इदं वसिष्ठधर्मसूत्रेण सह समानमस्ति। छन्दोऽपि पर्याप्तमात्रायामस्ति यथा – अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, त्रिष्टुपादिछन्दसां प्रयोगः अभवत्। हारीतधर्मसूत्रम् इदं धर्मसूत्रं कृष्णयजुर्वेदीयधर्मसूत्रमस्ति पी. वी. काणे महोदयेन अस्योल्लेखितम्। अस्य प्रमुख कारणं हारीतधर्मसूत्रस्य मैत्रायणी परिषिष्टेन एवं मानवश्राद्धकल्पसूत्रेण सह समानता वर्तते।

95%	MATCHING BLOCK 61/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

हेमाद्रिकृत चतुवर्गचिन्तामणि

नानुसारेण

83%	MATCHING BLOCK 57/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

हारीतधर्मसूत्रस्य एकः भाष्यकारो

ऽपि आसीत्। अस्मिन् धर्मसूत्रे काशमीरीशब्दः "कफेल्ला" प्रयोगेण हारीतं काशमीरवासी

100%	MATCHING BLOCK 58/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

वक्तुं शक्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ

धर्मशास्त्रकाररुपेण हारीतस्योल्लेखितम्। नासिकजनपदस्य इस्लामपुरनामकस्थानात् हारीतधर्मसूत्रस्य एकः हस्तप्रतिलिपिः वामनशास्त्री प्राप्तवान् अस्मिन् त्रिंशोऽध्यायाः सन्ति। मनुस्मृतेः टीकायां हारीतस्य वर्णनं कृतम्। अस्मिन् धर्मसूत्रे निरुपिताः प्रमुखविषयाः - धर्मस्य व्याख्या, ब्रह्मचारीणां भेदाः, स्नातकस्य गृहस्थस्य आचारव्यवहाराणां वर्णनं, संन्यासीनां नियमानां वर्णनं, भक्ष्याभक्ष्यं, आशौचसम्बन्धिनियमाः, पञ्चमहामखानांविधिविधानञ्च, वेदाध्ययनस्य अनध्यायनस्य वर्णनं, राजधर्मसम्बन्धि नियमाः,

62%	MATCHING BLOCK 59/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

स्त्रीणां धर्माणां वर्णनं, प्रायश्चित्तानां

वर्णनं इत्यादिविषयाः समाहिताः। हारीतः विवाहप्रकारेषु क्षात्रमानुषौ विवाहभेदौ स्वीकृतवान्। अष्टाविधविवाहान्तर्गते आर्षप्राजापत्यविवाहयोः उल्लेखितं न कृतवान्। हारीतेन ब्रह्मवादिनीस्त्रीणां वेदाध्ययनं स्वीक्रियते। अस्मिन् धर्मसूत्रे वेदवेदाङ्गधर्मशास्त्राणां सङ्केतं कृतम्। गद्यपद्यभाषायां गणेशपूजनस्य वर्णनम् अपरार्कद्वारा उद्धरणं प्रस्तुतं कृतम्।

78%	MATCHING BLOCK 60/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

शङ्खलिखितधर्मसूत्रम् अस्य धर्मसूत्रस्य

अध्ययनं शुक्लयजुर्वेदीयछात्रैः कृतम्। महाभारतमहाकाव्ये शंखलिखितस्य कथा प्राप्नोति। याज्ञवल्क्योऽपि शंखलिखितं धर्मशास्त्रकाररुपे गण्यते। तथा आपस्तम्बधर्मसूत्रे उज्ज्वला टीकायां शंखलिखितस्योल्लेखं मिलति। जीवानन्दस्य स्मृतिसंग्रहे अस्य अष्टादशाध्यायाः सन्ति। शंखलिखितधर्मसूत्रमुपरि भाष्यस्य संकेतमपि मिलति कन्नौजनरेशगोविन्दचन्द्रस्य लक्ष्मीधरेण स्वस्य कल्पतरुग्रन्थे अस्य चर्चा अकुरूत। लक्ष्मीधरस्य कालः 1100-1160 ख्रिस्ताब्दोऽस्ति। इदं भाषाशैलीदृष्ट्या पूर्वधर्मसूत्राणामनुसरति एवं कौटिल्यस्य समकक्षमस्ति व्याकरणसम्मितं वर्तते। इदं गौतमापस्तम्बसूत्रोपरान्त एवं याज्ञवल्क्यस्मृतेः प्राक् कृति अस्ति एतेन कारणेन अस्य कालः ईसापूर्व 300-100 ख्रिस्ताब्दमध्ये मन्यते। वैखानसधर्मसूत्रम् डॉ. डब्ल्यू कैलेण्डद्वारा सम्पादितं इदं धर्मसूत्रं

Ouriginal

वैखानसस्मार्तसूत्रस्य एकः भागोऽस्ति। अस्मिन् स्मार्तसूत्रे दशप्रश्नाः सन्ति यस्मिन् प्रथमसप्तप्रश्नानां सम्बन्धः वैखानसगृह्यसूत्रेण सह अस्ति। एवञ्च अन्तिम त्रिप्रश्नानां सम्बन्धः धर्मसूत्रेण सह वर्तते। अस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनं टी. गणपतिशास्त्रीणा 1913 ईश्वीशताब्द्यां कृतम्। महादेवः सत्याषाढश्रौतसूत्रमुपरि लिखिता वैजयन्ती टीकायां कृष्णयजुर्वेदीयषट्सूत्रान्तर्गते बौधायनभारद्वाजापस्तम्बहिरण्यकेशिबाधूलवैखानसानां चर्चितोऽस्ति। गौतमधर्मसूत्रे वैखानसशब्दः वानप्रस्थस्य स्थाने आगतः। बौधायनधर्मसूत्रेऽपि वैखानसशब्दः प्राप्नोति तस्मिन् स्थाने वैखानसशब्दस्य व्याख्या

76%	MATCHING BLOCK 62/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्राप्नोति - वैखानसशास्त्रानुसारेण

यः आचरणं करोति सः वैखानसः। एतत् सूत्रं वसिष्ठधर्मसूत्रेऽपि प्राप्यते। अस्मिन् धर्मसूत्रे त्रयः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकः प्रश्नः खण्डेषु विभक्तोऽस्ति। प्रथमे प्रश्ने एकादशखण्डाः द्वितीये प्रश्ने पञ्चदशखण्डाः एवं तृतीये प्रश्नेऽपि पञ्चदशखण्डाः सन्ति। इत्थं प्रकारेण अस्मिन् धर्मसूत्रे एकचत्वारिंशतखण्डाः प्राप्यन्ते। 2.2 स्मृतिः भारतीयधर्मशास्त्रीयपरम्परायां अस्य शब्दस्य द्वौ अर्थौ प्रचलितः एकस्मिन् अर्थे वेदवाङ्मयेतर सकलग्रन्थेन सह सम्बन्धितः द्वितीयेऽर्थे

धर्मशास्

70%	MATCHING BLOCK 68/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

त्रीय मनु-याज्ञवल्क्यादिस्मृत्यादि

भिः सह सम्बन्धः। महाभारतेऽपि स्मृत्याः द्वौ भेदौस्तः महास्मृतिः अनुस्मृतिः भेदाच्च। जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्रे मुख्यतया श्रौतगृह्यसूत्रैव स्मृतिः मन्यते। गौतमधर्मसूत्रे स्मृतिं धर्मस्योपादनरुपेण स्वीक्रियते। स्मृतिकाराणां सम्बन्धे विविधमतानामुल्लेखितोऽस्ति तस्मिन् सर्वप्रथमं गौतमधर्मसू

त्रे

71%	MATCHING BLOCK 63/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

मनोः नाम आगतम्। बौधायनः सप्तधर्मशास्त्रकाराणामु

ल्लेखनं करोति तेषां नामानि - औपजंघनिः,

100%	MATCHING BLOCK 64/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

कात्यः, काश्यपः, गौतमः, प्रजापतिः, मौद्गल्यः, हारी

तश्च। वसिष्ठः, आपस्तम्बः अपि स्वस्य स्वस्य धर्मसूत्रे प्रसङ्गवशानामोल्लेखं करो

ति। मनुस्मृतौ महर्षिमनुः षट्

84%	MATCHING BLOCK 65/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

धर्मशास्त्रकाराणामुल्लेखं करोति

ते

38%	MATCHING BLOCK 66/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

षां नामानि प्राप्यन्ते- अत्रिः, उतथ्यस्य पुत्रः, भृगुः, वसिष्ठः, वैखानसः, शौ

नकश्च।

47%	MATCHING BLOCK 67/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतौ महर्षियाज्ञवल्क्येन तत्कालीन धर्मशास्त्

रकाराणां सङ्कलनं कृतं तेषां वर्णनं मिलति यथा- मनुः, अत्रिः, विष्णुः, हारीतः,

Curiginal

69%	MATCHING BLOCK 69/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

याज्ञवल्क्यः, उषनः, अङ्गिरा, यमः, आपस्तम्बः, संवर्तः, कात्यायनः, बृहस्पतिः, पराशरः, व्यासः, शङ्खलिखितः, दक्षः, गौतमः, शातातपः,

वसिष्

ठश्च। पराशरस्मृतौ वर्णितानि नामानि - पैठानसस्मृतौ षट्त्रिषत् नामनि आगतानि। शङ्खलिखितधर्मशास्त्रे, योगियाज्ञवल्क्यग्रन्थे, भविष्यपुराणे, प्रयोगपारिजाते, कुमालिभट्टकृत तन्त्रवार्तिके, चतुर्विंशतिनामकग्रन्थे, अङ्गिरा स्मृतौ षट्त्रिशन्मतनामकग्रन्थे, धर्मशास्त्रकाराणां तथा स्मृतिनां नामानि प्राप्यन्ते। इत्थं प्रकारेण आचारस्य, व्यवहारस्य, एवं प्रायश्चित्तस्य प्रकाशणार्थं सामाजिकानां व्यवस्थानां कृते महर्षि

65%	MATCHING BLOCK 70/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

भिः धर्मशास्त्रीय स्मृतिग्रन्थानां रचिताः। स्मृति

शब्दस्यार्थः अस्य शब्दस्य व्याकरणगतनिष्पत्तिः "स्मृ चिन्तायां" धातोः "क्तिन्" प्रत्ययस्य संयोगेन सह भवति। अयं नित्यस्त्रीलिङ्गशब्दः अस्यार्थः अनुभूतिविषयकज्ञानं अर्थात् अनुभूतिजन्यविषयकज्ञानं, स्वाम्याश्रितक्रियाजन्यसंस्कारजन्यज्ञानं, अनुभव संस्कार जन्य ज्ञानं स्मृतिः। धर्मशास्त्रदृष्ट्या मनु-याज्ञवल्क्यादिना रचितशास्त्रविशेषः अस्य शब्दस्यार्थः तस्मिन् सन्दर्भे स्मरन्ति वेदमनया एवं महर्षिभिर्वेदानामर्थस्य चिन्तनं स्मृतिः।

58%	MATCHING BLOCK 72/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रमैव स्मृतिः महर्षि मनुना मनुस्मृतौ

कथितम्। सा च सात्त्विकराजसतामसभेदेन त्रिविधः प्राप्यते यथा- तथैव स्मृतयः प्रोक्ता ऋषिभिस्त्रिगुणान्विताः।

87%	MATCHING BLOCK 71/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

सात्त्विका राजसाश्चैव तामसाः

शुभदर्शने।। वासिष्ठं चैव हारीतं व्यासं पाराशरं तथा। भारद्वाजं काश्यपञ्च सात्त्विका मुक्तिदाः शुभाः।। च्यावनं याज्ञवल्क्यञ्च आत्रेयं दाक्षमेव च। कात्यायनं वैष्णवञ्च राजमाः स्वर्गदा मताः।। गौतमं बार्हस्पत्यञ्च संवर्तञ्च यमं स्मृतं। साङ्ख्यं चौषनसं देवि तामसा निरयप्रदाः।। इति पाद्ममोत्तरखण्डे 43 अध्यायः।। मनुस्मृतिः महर्षिमनुना प्रणीता स्मृतिः मनुस्मृतिः अस्ति। इयं स्मृतिः पद्यबद्धस्मृतिषु प्राचीनतमा स्मृतिः विद्वद्भिः मन्यते। धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु इयं स्मृतिः महत्त्वपूर्णा, प्रौढा चास्ति। महर्षिमनोः नामोल्लेखः विविधग्रन्थेषु प्राप्यते यथा आत्रेयकृष्णयजुर्वेदीयसंहितायां, ताण्डिकौथुमराणायनीयपंचविशब्राह्मणे, यास्कीयनिरूक्

ते, वसिष्ठधर्

76%	MATCHING BLOCK 73/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

मसूत्रे, बौधायनधर्मसूत्रे, आपस्तम्बधर्मसूत्रे,

गौतमधर्मसूत्रे, कूर्मपुराणे, मत्स्यपुराणे, स्कन्दपुराणे, वाल्मीकिरामायणे, महाभारते, वात्स्यायनप्रणीतकामसूत्रे

87%	MATCHING BLOCK 74/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

इत्येतेषु ग्रन्थेषु प्राप्यते।

मनुस्मृत्यां प्राप्तश्लोकानां सदृशाः श्लोकाः अनेकेषु ग्रन्थेषु प्राप्यते यथा - पातञ्जलमहाभाष्ये महर्षिपतंजलिना, कुमारिलभट्टेन, भगवत्पादशङ्करेण उपनिषद्ग्रन्थानां भाष्ये, ब्रह्ममीमासांसूत्रस्य शारीरिकभाष्ये, श्रीमद्भगवद्गीतायाः व्याख्यायां मनुस्मृतेः श्लोकाः उद्धृताः सन्ति। महर्षिमनोः तथा मनुस्मृत्याः प्रसिद्धिः इत्थं प्रकारेण विविधग्रन्थेषु प्राप्यते। हेमाद्रिविरचितचतुर्वर्गचिन्तामणेः दानखण्डे मानवधर्मशास्त्रस्य चतुर्विधसंहिता

88%	MATCHING BLOCK 75/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

नां नामोल्लेखं प्राप्यते यथा - भार्

गवीयमनुसंहिता, नारदीयमनुसंहिता, नारदीयमनुसंहिता, बार्हस्पत्यामनुसंहिता, च आङ्गिरसीमनुसं

हिता। अस्यां स्मृत्यां

92%	MATCHING BLOCK 88/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

द्वादशाध्यायाः सन्ति प्रथमेऽध्याये

सृष्टेरूत्पत्तिः, सकलजीवानामुत्पत्तिः, कालस्यवर्णनं, संक्षिप्तरूपेण वर्णानां कमर्णां वर्णनमस्

38%	MATCHING BLOCK 76/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

ति। द्वितीयेऽध्याये धर्मः, संस्कारः, ब्रह्मचारीणां सकलधर्मान् कथ्यते। तृतीयेऽध्याये

गृहस्थाश्रमस्य, अष्टधाविवाहस्य, पंचयज्ञानां, पितृकार्यस्य, श्राद्धकर्मणः वर्णनमस्ति। चतुर्थेऽध्याये गृहस्थधर्मसम्बन्धितधर्माः निरूपिताः यथा - व्रतं, शुचिता, आचारः, अनध्यायः, अनाचारस्य निन्दा, इत्यादयः। पंचमेऽध्याये मृत्युस्थितेः, भक्ष्याभक्ष्य, वेदविहितहिंसायाः निषेधस्य, सपिण्डतायाः, शौचाशौचप्रकरणस्य, आचमनस्य, शुचितायाः, स्त्रीधर्मस्य, गृहस्थस्य कालावधेः वर्णनमस्ति। षष्टेऽध्याये वानप्रस्थसंन्यासयोः सूक्ष्मरूपेण विवेचनम् प्राप्यते। सप्तमेऽध्या

70%	MATCHING BLOCK 77/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5% ...

ये राजधर्मस्य विस्तरेण वर्णनं प्राप्यते।

अष्टमेऽध्याये व्यवहारस्य, विवादस्य, व्यापारस्य, कर्मकारकवेतनस्य, सीमाविवादस्य, साहसस्य, स्त्रीसङ्ग्रहणस्य, दायभागस्य वर्णनं कृतमस्ति। नवमेऽध्याये स्त्रीपुंसानां धर्मस्य, स्त्रीरक्षायाः, नियोगस्य, द्वितीयविवाहस्य, दण्डस्य, राजकर्त्तव्यानां, वैश्यसूद्रयोः धर्माणां वर्णनं कृतमस्ति। दशमेऽध्याये वर्णशङ्करत्वस्य, व्रात्यस्य, उपनयनयोग्यतायाः, साधारणधर्मस्य, षट्कर्मणः, वर्णानां कर्मणां, वृत्तिविषयकनियमानां, प्रतिग्रहन्दायाः प्रतिपादनं कृतमस्ति। एकादशतमेऽध्याये दानार्हब्राह्मणानां, यज्ञस्य, प्रायश्चित्तस्य विस्तरेण प्रतिपादनं कृतमस्ति। द्वादशतमेऽध्याये कर्मविपाकस्य, कर्मणा जीवस्य गत्याः, आत्मज्ञानस्य, मोक्षफलस्य वर्णनम् अस्मिन् अध्याये अस्ति। मनुस्मृतौ व्याख्याः अपि लिखिता कृताः सन्ति तासां

34%	MATCHING BLOCK 78/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

नामानि यथा - भारूचिकृतं मनुशास्त्रविवरणं, मेधातिथिकृतं मनुभाष्यं, गोविन्दरा

जकृता मन्वाशयानुसारिणी टीका, सर्वज्ञनारायणकृता

72%	MATCHING BLOCK 79/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

मन्वर्थविवृतिः, कुल्लूकभट्टकृता मन्वर्थमुक्तावली, राघवानन्

दसरस्वतीकृता मन्वर्थचन्द्रिका, नन्दनाचार्यकृता नन्दिनी, रामचन्द्रकृता व्याख्या,

62%	MATCHING BLOCK 80/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

मणिरामदीक्षितकृता सुखबोधिनी, कृष्णनाथकृता व्याख्या,

रूचिदत्तकृताव्याख्या, काश्मीरकव्याख्या। महर्षिमनोः समयः ईसापूर्वद्वितीयशताब्दी मन्

78%	MATCHING BLOCK 81/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

यते। याज्ञवल्क्यस्मृतिः महर्षियाज्ञवल्क्

यः

वैदिकऋषिपरम्परायामागच्छति। अयं शुक्लयजुर्वेदस्य संहिताकर्ता अस्ति। महाभारतस्य शान्तिपवर्णि याज्ञवक्यसम्बन्धितकथायाः वर्णनं मिलति।

Ouriginal

67%	MATCHING BLOCK 82/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

बृहदारण्यकोपनिषदि याज्ञवल्क्यस्य चर्चा प्राप्

नोति यस्मिन् राजाजनकेन याज्ञवल्क्याय एकसहस्रगवां दानं करोति।

35%	MATCHING BLOCK 83/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

याज्ञवल्क्यस्मृतिः याज्ञवल्क्येन रचिता एतेन कारणेन अस्याः स्मृतेः नाम याज्ञवल्क्यस्मृति

अस्ति। अस्याः स्मृतेः प्रथमः व्याख्याकारः विश्वरूपः अस्

ति।

100%	MATCHING BLOCK 84/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतिः मनुस्मृतेः

अत्यधिसुसंगठिताऽस्ति। याज्ञवल्क्यः सम्पूर्णस्मृतिं त्रिषु विभागेषु विभाजनं कृत्वा विषयान् उचिते स्थाने सुव्यवस्थितं कृतवान्। अस्यां स्मृतौ पुनरूक्तिदोषः न वर्तते। इयं स्मृतिः अनुष्टुप् छन्दसि निबद्धाऽस्ति। स्मृतेः भाषाशैली सरला सहजा सुबोध्या च अस्ति। अस्यां स्मृतौ नवाधिकसहस्

राणि

90%	MATCHING BLOCK 85/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

श्लोकाः प्राप्यन्ते। स्मृतिः

अध्यायेषु विभा

जितमस्ति। प्रथमस्य अध्यायस्य नाम आचाराध्यायः द्वितीयस्य नाम व्यवहारोऽध्यायः तृतीयस्य नाम प्रायश्चित्तमध्यायोऽस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृतौ षट्

100%	MATCHING BLOCK 86/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

वेदाङ्गानि चतुर्दशविद्या

याः वर्णनं मिलति। धर्मशास्त्रस्य एवं अर्थशास्त्रस्य परस्पविरोधयोः धर्मशास्त्रं प्रथमं मन्यते। मनु-याज्ञवल्क्योः मध्ये किञ्चित मतभेदं मिलति यथा- मनुस्मृतौ ब्राह्मणः शूद्रकन्यया सह विवाहः कर्तुं शक्नोति किन्तु याज्ञवल्क्यमतानुसारं विवाहः न कर्तुं शक्यते। मनुस्मृतौ दैविकपूजनस्याभावः याज्ञवल्क्ये पूजनस्य मन्त्रः एवं नवग्रहपूजनं, गणपतिपूजनं विषेषरूपेण मिलति इत्यादयाः।

76%	MATCHING BLOCK 87/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतेः शुक्लयजुर्वेदेन सह विशेषः सम्बन्धो

ऽस्ति। अस्यां उद्धृतानां मन्त्राणां

100%	MATCHING BLOCK 89/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

सम्बन्धः वाजसनेयी संहितया सह

अस्ति। नीलकण्ठः स्वस्यप्रायश्चित्तमयूखे उक्तवान् यत्

92%	MATCHING BLOCK 90/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

शङ्कराचार्यः ब्रह्मसूत्रभाष्ये या

Curiginal

ज्ञवल्क्येन उक्तविषयाणां उल्लेखं कृतवान्। एतेन कारणेन ईसापूर्वप्रथमशताब्दी एवं ईसापश्चात् तृतीयशताब्दी मध्

63%	MATCHING BLOCK 91/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

ये याज्ञवल्क्यस्मृते कालः भवितुं शक्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ विश्

वरूपः, विज्ञानेश्वरः, अपरार्कः,

शूलपाणिश्च टीका लिखितवन्तः। नारदस्मृतिः इयं नारदस्मृतिः संस्करणद्वयोः प्राप्यते। डा. जॉली महोदयेन अस्याः सम्पादनं कृतम्। अस्याः भाष्यकारः असहायः वर्तते। स्मृतिरियं अष्टादशप्रकारेण विभक्ता वर्तते। एतेषु अष्टादशप्रकारेषु प्रमुखरूपेण अधोक्तानां विषयाणां वर्णनमस्ति ते च यथा – ऋणादानम्, उपनिधिः, सम्भूयसमुत्थानं,

36%	MATCHING BLOCK 92/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

क्रीतानुशयः, समस्या नपाकर्म, सीमाबन्धः, स्त्रीपुंसंयोगः, दायभागः, साहसः, वाक्पारुष्यं, दण्डपारुष्यं,

प्रकीर्णं चेति। धर्मशास्त्रकारेषु याज्ञवल्क्येन नारदस्य गणना न कृता। वर्तमाननारदस्मृत्याम् अष्टाविंशत्याधिकसहस्राणि पद्यानि सन्ति। विश्वरूपस्य कृतायां टीकायां, मेधातिथेः कृतायां

43%	MATCHING BLOCK 93/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

टीकायां, मिताक्षराटीकायां अस्याः स्मृत्याः अनेकानि उद्धरणानि प्राप्यन्ते। स्मृ

तिरियं

सम्पूर्णरूपेण अनुष्टुपछन्दसि आबद्धा वर्तते। सम्भवतः

43%	MATCHING BLOCK 94/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

नारदस्मृतिः याज्ञवल्क्यस्मृत्याः पश्चात् रचिता स्यात् यताहि याज्ञवल्क्येन दिव्यस्य

केवलं पञ्चप्रकाराः एवोक्ताः किन्तु नारदेन सप्तप्रकाराः उक्ताः। नारदस्मृत्यां विशेषतया व्यवहारपदानामेव वर्णनं विद्यते। बृहस्पतिस्मृतिः याज्ञवल्क्येन बृहस्पतेः गणना धर्मषास्त्रकारेष्वेव कृता। अस्याः स्मृत्याः रचनाकारः बृहस्पतिः वर्तते। अस्यां स्मृत्यामेव बृहस्पतेः नामोल्लेखः प्राप्यते। इयं एकोनाशीतिः पद्येषु निबद्धा

100%	MATCHING BLOCK 95/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

ऽस्ति। स्मृतिचन्द्रिकायां

बृहस्पतेः श्राद्धसम्बन्धितानि उद्धरणानि आगतानि सन्ति। पाराशरमाधवीये,

88%	MATCHING BLOCK 96/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

निर्णयसिन्धौ तथा संस्कारकौस्तुभौ

बृहस्पतेः उद्धरणा

89%	MATCHING BLOCK 97/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

नि प्राप्यन्ते। मिताक्षरायां टीकायां

वृद्धबहस्पतेः उद्धरणमस्ति। अपरार्केन वृद्धबृहस्पतेः कानिचन् उद्धरणानि स्वीकृतानि सन्ति। अस्यां मुख्यरूपेण दानवर्णनं कृतमस्ति। अस्यान्तर्गतं सुवर्णदानं, पृथ्वीदानं, गोचर्मलक्षणं, नीलवृषभलक्षणं, निन्दावर्णनं, भूमिहरफलं, सरोवरादीनां निमार्णकार्यस्य वर्णनं प्राप्यन्ते। डा. जॉली महोदयानुसारेण बृहस्पतेः कालखण्डः षष्ठी अथवा सप्तमीशताब्देः मध्ये स्वीक्रियते। कात्यायनस्मृतिः व्यवहारपदस्य क्षेत्रे मनुनारदबृहस्पतिकात्यायनानां एतेषां विशेषस्थानमस्ति। एतेषां गणना याज्ञवल्क्येन धर्मशास्त्रकारेषु कृता। अस्याः स्मृत्याः रचना कात्यायनेन कृतास्ति। इयं स्मृतिः खण्डेषु विभक्ताः अस्ति। एवं प्रकारेण अस्यां एकोनविंशत्

खण्डानि सन्ति। प्रत्येकस्मिन् खण्डे विविधविषयाणां वर्णनंमस्ति। अस्यां मुख्यरूपेण आचाराणामुल्लेखः, नित्यनैमित्तिककर्मान्तर्गतं श्राद्धः, त्रिविधक्रियाः, अग्न्याधानम्, शमीगर्भादिः अनेकानि प्रकरणानि प्रतिपादितानि सन्ति तथा इतोपि अग्निमन्थनम्, अग्न्याधानम्, स्रुवालक्षणं, समिधालक्षणं, हवनकर्म, सन्ध्योपासन विधेः वर्णनं, तर्पणविधिवर्णनं, मृतकदाहसंस्कारवर्णनं, मृतकनिमित्ततर्पणवर्णनम् इत्यादीनां विषयाणां निरूपणं कृतम्। व्यवहारमयूखे बृहत्कात्यायनस्य तथा दायभागे वृद्धकात्यानस्य उद्धरणं प्राप्नोति। जीवानन्दस्य संग्रहे त्रिषु प्रपाठकेषु, एकोनविंशत् खण्डेषु, पंचशतपद्येषु कात्यायन इति नामधेयः एकः ग्रन्थः विद्यते। अयं अनुष्टुपछन्दसि अस्ति परन्तु कुत्रचित् इन्द्रवज्रा छन्दः अपि प्राप्यते। अत्रिसंहिता अत्रिसंहिता महर्षि अत्रिणा प्रणीताऽस्ति। याज्ञवल्क्येन अपि धर्मशास्त्रकारेषु अस्य गणना कृता। इयं स्मृतिः पद्यरूपेण दरीदृश्यते। अस्यां अष्टनवत्युत्तरविशतम् पद्यानि सन्ति। अत्रिसंहितायां प्रमुखरूपेण धर्मशास्त्रोपदेशः, शुद्धिप्रकरणम्, यम-नियमवर्णनम्, प्रायश्चित्तः, दानफलम्, श्राद्धफलम्, निबन्ध ब्राह्मणः तथा धर्मफलादिनां कथनं प्राप्यते।

विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रम् विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रम् भगवता विष्णुना प्रोक्तम् अस्ति इति मन्यते। इदं धर्मशास्त्रम् अध्यायेषु विभक्तमस्ति। एवं इदं धर्मशास्त्रं पञ्च अध्यायेषु त्रयोदशोत्त्लेकशतम् पद्ये

100%	MATCHING BLOCK 98/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

षु प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ

अस्योल्लेखः प्राप्यते। अस्यां

मुख्यरूपेण चतुर्णां वर्णानां धर्मस्य,

80%	MATCHING BLOCK 99/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

संस्काराणां, ब्रह्मचारिणां वस्त्रा

भूषणानि तथा आचाराणां, चतुर्वर्णकर्तव्यकर्माणां, चतुर्णाम् आश्रमवासिनां आचारः इत्यादिविषये चर्चा कृता वर्तते।

हारीतस्मृतिः अस्याः स्मृतेः रचयिता धर्मशास्त्रकारः हारीतः वर्तते। अनेन इयं सप्ताध्यायेषु प्रणीता वर्तते। सम्पूर्णा स्मृतिः त्रिनवेत्युत्तरेकशतम् श्लोकेषु विभक्ता वर्तते। प्रत्येकस्मिन अध्याये विविध विषयाणां वर्णनं प्राप्यते। यथा- प्रथमेऽध्याये वर्णाश्रमधर्मस्य,

75%	MATCHING BLOCK 100/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

द्वितीयेऽध्याये चतुर्णां वर्णानां धर्

मस्य,

51%	MATCHING BLOCK 101/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

तृतीयेऽध्याये ब्रह्मचर्याश्रमधर्मस्य, चतुर्थेऽध्याये गृहस्थाश्रमधर्मस्य, पंचमेऽध्याये वानप्

रसथधर्मस्य,

58%	MATCHING BLOCK 102/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

षष्ठेऽध्याये संन्यासाश्रमधर्मस्य, सप्तमेऽध्याये

योगस्य वर्णनम् प्राप्यते। याज्ञवल्क्येनापि धर्मशास्त्रकारेषु अस्य गणना कृता। औशनस्मृतिः अस्याः स्मृतेः रचनाकारः उशना अर्थात् शुक्राचार्यः अस्ति। महर्षि

55%	MATCHING BLOCK 103/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

याज्ञवल्क्येन अस्योल्लेखः धर्मशास्त्रकारेषु कृतः

इयं एकपंचाशत् पद्येषु निबद्धा वर्तते। अस्यां ब्रह्मचारिणः धर्मस्य,

Curiginal

68%	MATCHING BLOCK 104/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

श्राद्धाशौचः, प्रेतकर्म, प्रायश्चित्तः,

अनुलोमः, प्रतिलोमः विवाहोत्पन्नापत्यानां नामानि तथा तेभ्यः योग्यकर्माणां वर्णनमस्यां स्मृतौ अस्ति। अंगिरसस्मृतिः जीवानन्दस्य धर्मशास्त्रसंग्रहे द्विसप्ततिः पद्येषु अंगिरा धर्मशास्त्रमेव लघुरूपेण उपलब्धं दरीदृश्यते। इदमेव अस्याः संक्षिप्तरूपं विद्यते। एतेषु पद्येषु अधिकतया प्रायश्चित्तवर्णनमस्ति। अस्यान्ते उच्छिष्टभोजननिषेधो विद्यते। अन्यविषयाणां वर्णनं एवं अस्ति – वस्त्रधारणम्, भोजनसंबंधिनियमाः, दानादेः वर्णनम् अपि प्राप्यते। अष्टादशस्मृतेः अन्तर्गतमपि द्वसप्तति पद्येषु इयं प्रकाशिता। अंगिरा ऋषेः उल्लेखः

100%	MATCHING BLOCK 105/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते।

मिताक्षरा एवं वेदाचार्यस्य स्मृतिरत्नावल्याम् बृहदंगिरायाः नाम अपि आगतम् वर्तते। मिताक्षरया मध्यम अंगिरायाः नाम अपि स्वीकृतमस्ति। संवर्तस्मृतिः अस्याः स्मृतेः रचनाकारः आत्मविद्यायां पारंगतः संवर्तः ऋषिः विद्यते। स्मृतिरियं 223 पद्येषु निबद्धा वर्तते।

100%	MATCHING BLOCK 106/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

याज्ञवल्क्येन स्मृतिका

ररूपेणास्योल्लेखो विहितमस्ति। अस्यां मुख्यरूपेण ब्रह्मचर्याचारः, योगस्य प्राणायामादिविषयाणां वर्णनं प्राप्यते। जीवानन्दस्य तथा आत्मानन्दस्य संग्रहेषु संवर्तक्रमेण 227तः 230 पद्यानि प्राप्यन्

62%	MATCHING BLOCK 107/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

ते। मिताक्षरया बृहत्संवर्तस्योल्लेखः कृतः

वर्तते। लघुयमस्मृतिः इयं यमेन निर्मिता वर्तते। अयं अपि धर्मशास्त्रकारेषु गण्यते। वसिष्ठधर्मसूत्रे यमं धर्मशास्कारं मत्वा तस्य स्मृत्याः उद्धरणं स्वीकृतम्। इयम् एकोनशतपद्येषु निबद्धाः। अस्यां मुख्यरूपेण प्रायश्चित्तवर्णनमस्ति। प्रायश्चित्तस्यान्तर्गतं विविधव्रतानां वर्णनं प्राप्नोति। इष्टपूर्ताभ्याम् सह पिण्डदानस्यपि वर्णनं कृतम्। जीवनन्दसङ्ग्रहे एका यमस्मृतिः वर्णितं यस्यां अष्टसप्ततिः श्लोकाः सन्ति। आपस्तम्बस्मृतिः अङ्गिरास्मृत्याम् आपस्तम्बस्य उल्लेखः प्राप्तः। ऋषिणा याज्ञवल्क्येनापि आपस्तम्बऋषेः वर्णनं कृतम्। आपस्तम्बस्मृत्यामपि आपस्तम्बस्योल्लेखः कृतः। इयं स्मृतिः

76%	MATCHING BLOCK 108/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

दशाध्यायेषु विभक्ताः अस्ति। अस्यां स्

मृत्यां अष्टानवत्यधिकशतश्लोकाः

100%	MATCHING BLOCK 109/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्राप्नुवन्ति। अस्यां गोरो

धनादिः, गोहत्या, शुद्धिः, अशुद्धिः, वस्त्रधारणं, रजस्वला, विवाहः, सुरादिसेवनं, दूषितान्नस्य निषेधः, मोक्षाधिकारणामभिधानं एतेषां विषयाणां वर्णनं प्राप्यते। पराशरस्मृतिः

पराशरस्मृतिः एका प्राचीना

76%	MATCHING BLOCK 110/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

स्मृतिः अस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृत्यां

पराशरः धर्मशास्त्ररूपेण कथितः। वर्तमानकाले

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 111/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

पराशरस्मृतिः द्वादशाध्याये

षु निबद्धाऽस्ति। अस्यां स्मृत्यां प्रमुखरूपेण प्रथमेऽध्याये धर्मोपदेशस्य लक्षणस्य च,

37%	MATCHING BLOCK 112/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

द्वितीयेऽध्याये गृहस्थाश्रमधर्मस्य, तृतीयेऽध्याये शौचाचारास्य, चतुर्थेऽध्याये नानाविधप्रायश्चित्तनां, पंचमेऽध्याये पु

नः प्रायश्चित्तस्य, षष्ठेऽध्याये विविधप्राणीनां वधं करणे सति प्राप्तदोषाणां

100%	MATCHING BLOCK 113/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

निवारणार्थं प्रायश्चित्

तस्य, सप्तमेऽध्याये द्रव्यशुद्धेः, अष्टमेऽध्याये धर्माचारणस्य, नवमेऽध्याये गोसेवायाः उपदेशस्य, दशमेऽध्याये अगम्यागमन करणे सति प्रायश्चित्तस्य, एकादशेऽध्याये भक्ष्याभक्ष्यस्य करणे सति प्राप्तदोषेभ्यः मुक्त्यर्थं प्रायश्चित्तस्य तथा द्वादशेऽध्याये पुनः भक्ष्याभक्ष्यसम्बन्धितप्रायश्चित्तनां एतेषां विषयाणां वर्णनं कृतम्। व्यासस्मृतिः जीवानन्दः आनन्दाश्रमश्चानयोः संग्रहेषु व्यास नाम्ना संयुक्तस्मृतिः प्राप्यते। व्यासस्मृतिः महर्षि व्यासेन रचिता वर्तते। महर्षि व्यासस्याप्युल्लेखः याज्ञवल्क्यस्मृतौ दरीदृश्यते। अस्याः स्मृतेः विभाजनम् अध्यायेषु वर्तते तथा

66%	MATCHING BLOCK 114/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

अस्यां स्मृतौ चत्वारः अध्यायाः 250 श्लोकाश्च सन्ति। प्रथमेऽध्याये धर्मा

चरण, षोडशसंस्काराणामथ च ब्रह्मचारेः आचाराणामपि वर्णनं

100%	MATCHING BLOCK 115/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

क्रियते। द्वितीयेऽध्याये

विवाहविधेः, स्त्रीधर्मस्य च वर्णनं प्राप्यते। तृतीयेऽध्याये स्नानादिनित्यनैमित्तिकश्राद्धादिकर्माणां वर्णनमस्ति। चतुर्थेऽध्याये गृहस्थाश्रमस्य प्रशंसा, तीर्थः एवं च अन्यविविधाचाराणां वर्णनं प्राप्यते। शङ्खस्मृतिः इयं स्मृतिः शङ्खऋषिणा प्रणिता वर्तते। धर्मशास्त्रकारशंख इति ऋषेः उल्लेखः अस्याः एव स्मृतेः मंगलाचरणे

100%	MATCHING BLOCK 116/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ

अपि धर्मशास्त्रकाररूपेण शङ्खऋषेः उल्लेखः वर्तते। अस्याः विभाजनम् अध्यायेषु वर्तते। अस्यां स्

100%	MATCHING BLOCK 117/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

मृतौ अष्टादशाध्यायाः सन्ति।

प्रथमेऽध्या

96%	MATCHING BLOCK 119/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

ये ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः शूद्राना

ञ्चा

पि चतुर्णां कर्माणां वर्णनम् अस्ति। द्वि

55%	MATCHING BLOCK 120/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

तीयेऽध्याये एतेषां चतुर्णां वर्णानां संस्काराणां

चर्चा विहिता वर्तते। तृतीयेऽध्याये ब्रह्मचारेः आचारवर्णनमस्ति। चतुर्थेऽध्याये विवाहसंस्कारस्य वर्णनम् अस्ति। पंचमेऽध्याये पंचमहायज्ञानां वर्णनं वर्तते। षष्ठेऽध्याये वानप्रस्थिनां संन्यासिनाञ्च धर्मनिरूपितमस्ति। सप्तमेऽध्याये प्राणायामधारणाध्यानादिनां लक्षणानिरूपितमस्ति। अष्टमेऽध्याये नित्यनैमित्तिक लिखितस्मृतिः अस्याः स्मृत्याः प्रणेता लिखित ऋषि अस्ति। महर्षि

78%	MATCHING BLOCK 118/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

णा याज्ञवल्क्येन याज्ञवल्क्यस्मृत्

यां लिखितस्योल्लेखः धर्मशास्त्रीभिः सह परिगणनं कृतम्। अस्यां स्मृत्यां त्रिनवतिः श्लोकाः सन्ति। अस्यां प्रमुखरूपेण इष्टकर्म, पूर्तकर्म, बलिवैश्वदेवकर्म, अतिथिपूजनं, सांस्कृतिकं जीवनं, अशौचादिः ऐषां विषयाणां प्रतिपादनं कृतम्। दक्षस्मृतिः जीवानन्दसङग्रहे दक्षस्मृत्याः सङ्कलनं कृतम्। इयं प्राचीनतमा स्मृतिः अस्ति। विश्वरूपः स्वस्य टीकायां, मिताक्षरा टीकायाम्, अपरार्ककृतायां टीकायाम् अस्याः स्मृत्याः उद्धरणं स्वीकृतवन्तः। दक्षेन निर्मिता इयं

76%	MATCHING BLOCK 121/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

स्मृतिः अस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृत्यां

दक्षस्योल्लेखः प्राप्यते। इयं स्मृतिः सप्ताध्यायेषु विभिक्तास्ति। अस्याः स्मृ

75%	MATCHING BLOCK 122/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

त्याः प्रथमाध्यायस्य तृतीये श्लोके

प्राप्नोति यत्

71%	MATCHING BLOCK 123/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासीनां

हितप्रयोजनार्थं प्रजापतिः दक्षः अयं शास्त्रं रचितवान्। अस्यां स्मृत्यां मुख्यरूपेण आश्रमधर्मः, दिनचर्या, वैदिककर्म, गृहस्थाश्रमस्याचारः, नवकर्म, स्त्रीधर्मः, शौचाचारः, अशौचः, समाधिः, योगः, इन्द्रियनिग्रहः, अध्यात्मयोगसाधनं, द्वैतानुभाद्योगसाधनं, शास्त्रस्याध्यायनफलादयः एतेषां विषयाणां वर्णनं प्राप्नुवन्ति। गौतमस्मृतिः महर्षिः गौतमः वैदिकऋषिरूपेण जगति प्रसिद्धोऽस्ति। एतेन गौतमधर्मसूत्रस्य तथा गौतमस्मृत्याः अपि प्रणयनं कृतम्। महर्षिः याज्ञवल्क्यः धर्मशास्त्ररूपेण अस्य गणना करोति। इयं स्मृतिः एकविंशत्यध्यायेषु विभिक्ताः सन्ति। इयं गद्यपूर्णा अस्ति। मुख्यतया वर्णधमः, विवाहः, आश्रमधर्मः, संस्काराः, कर्त्तव्याकर्त्तव्यकर्म, वर्णानां वृत्यः, राजधर्मः, व्यवहार, शौचाचारः,

42%	MATCHING BLOCK 124/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

श्राद्धः, कर्मविपाकः, प्रायश्चित्तानि, व्रतानि, दायभागः आदयः विषयाणां

वर्णनं प्राप्यन्ते। शातातपस्मृतिः इयं स्मृतिः शातातपद्वारा रचिता अस्योल्लेखः या

76%	MATCHING BLOCK 125/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

ज्ञवल्क्यस्मृत्यां धर्मशास्त्रकारा

णां मध्ये प्राप्यते। इयं स्मृतिः षष्ठाध्यायेषु निबद्धाः। अस्यां स्मृत्यां प्रमुखतया प्रायश्चित्तस्य वर्णनं आयाति तस्यान्तर्गतं अकृतप्रायप्रायश्चित्तं, पूर्वजन्मकृतप्रायश्चित्तं, ब्राह्मणमहत्त्वं, कुष्ठनिवारणार्थप्

रायश्चित्तं,

Ouriginal

100%	MATCHING BLOCK 126/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्

तं,

मधुतैलादीनां स्तेयकर्मणा प्राप्तदोषनिवारणार्थप्

87%	MATCHING BLOCK 127/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

रायश्चित्तं, अगम्यागमनप्रायश्चित्

तम्, अनुचितव्यवहारेण प्राप्त दोषाणां निवृत्त्यर्थप्रायश्चित्तं एतेषां विषयाणां वर्णनं प्राप्नोति। बुधस्मृतिः अष्टादशस्मृतिषु बुधस्मृतेः अपि संकलनं कृतं वर्तते। स्मृतिरियं सूत्रेषु निबद्धा वर्तते एवं च अस्यां स्मृतौ पद्यान्यपि प्राप्यन्ते। इयं स्मृतिः अत्यन्तसंक्षिप्तरूपेण प्राप्यते। अस्यां पंचचत्वारिंशत् सूत्राण्येव श्लोकरूपेण उपलभ्यन्ते। अस्यां मुख्यरूपेण चातुर्वण्यधर्मस्य विषयः वर्णनमस्ति। 2.3 भाष्यं च निबन्धम् भारतीयसंस्कृतसाहित्ये समुचितार्थस्य प्रकाशनाय भाष्यपरम्परायारुदयोऽभवत्। "भाष्यम्" अयं शब्दः नित्यं क्लीबे वर्तते। अस्य व्याकरणीया व्युत्पत्तिः "भाष्" धातोः "ण्यत्" प्रत्यये सति भवति। शब्दकल्पद्रुमकारेण एनं एवं प्रकारेण परिभाषितमस्ति यत् "भाष्यते विवृततया वर्ण्यते इति"। लिंगादिसंग्रहटीकायां भरतेन भाष्यस्य परिभाषेयं एवं वर्णितास्ति तद्

यथा –

80%	MATCHING BLOCK 128/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः। स्वपदानि च वर्ण्यते भाष्यं भाष्यविदो विदुः।। एवं प्

रकारेण सूत्रार्थवर्णनं तस्य प्रत्येकमपि पदानुसारेणैव क्रियतेऽथवा यत्रैवं प्रकारेण वर्णनं क्रियते विद्वतसमुदायैः तस्मै "भाष्यं" इति संज्ञा प्रदीयते। भाष्यमाध्यमेन सर्वेषां ग्रन्थानां प्रत्येकपदस्य पूर्वापरभावेन युक्तशास्त्रोक्त रीत्या च मूलभावस्याथ चार्थस्य प्रकटीकरणं क्रियते। यस्मात् सामान्यः विद्वतसमुदायः तस्य सम्पूर्णस्य समुचितार्थस्य च प्राप्तिं कर्तुं शक्नुयुः। अत केवलं धर्मशास्त्रीयग्रन्थानामुपरि लिखितभाष्यानां भाष्यकाराणाञ्च

100%	MATCHING BLOCK 129/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

संक्षिप्तः परिचयः प्रदीयते।

यस्यान्तर्गतधर्मसूत्रेषु स्मृतिग्रन्थेषु च लिखितप्रमुखरूपेण प्राप्तभाष्यभाष्यकाराणाञ्च परिचयः निम्नोक्तरीत्या प्रस्तुतं वर्तते तद्यथा-

95%	MATCHING BLOCK 130/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

असहायः डॉ. जौली महोदयेन सम्पादितं

नारदस्मृतौ कल्याणभट्टेन संशोधितम् असहायकृतस्य भाष्यस्य अंशः उद्धृतम्। व्यवहारमयूखस्य प्रथमेऽध्याये प्राप्यते यत् केशवभट्टेन प्रेरणां प्राप्य कल्याणभट्टः असहायस्य टीकां संशोधितं कृतवान्।

87%	MATCHING BLOCK 131/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

विश्वरूपेण याज्ञवल्क्यस्मृतौ

असाहयस्य नामोल्लेखं कृतम्। अनिरुद्धः हारलताग्रन्थे अस्य उल्लेखं कुर्वन् कथयति यत् असहायेन गौतमधर्मसूत्रेऽपि भाष्यं लिखितम्। सरस्वतीविलासस्य ज्ञायते यत् मनु याज्ञवल्क्

65%	MATCHING BLOCK 132/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

य असहाय मेधातिथि विज्ञानेश्वर अपरार्क

निबन्धकारैः कृतस्य धर्मस्य विभागं स्वीकृतम्। विवादरत्नाकरग्रन्थे प्राप्नोति यत् असहायः मनुस्मृतौ टीका लिखितवान्। इत्थं प्रकारेण ज्ञायते यत् एतेन गौतमधमसूत्रमनुस्मृत्यादिग्रन्थेषु भाष्यं लिखितम्। पी. वी. काणे महोदयः अस्य समयं 750 ईश्वी स्वीकरोति। भर्तृयज्ञः विद्वतवर्गमध्ये अयम् प्रसिद्धः भाष्यकारोऽस्ति। मेधातिथिना मनुस्मृत्याः भाष्ये अस्योल्लेखं कृतम्। आपस्तम्बसूत्रध्वनितार्थकारिकाकारेण त्रिकाण्डमण्डनेन स्वग्रन्थे अस्यं मतं उद्धृतम्। ग्रन्थावलोकनेन ज्ञायते यत् कात्यायनश्रौतसूत्रेऽपि एकायाः टीकायाः निमार्णं कतम्। नित्याचारप्रदीपनामके ग्रन्थावलोकनेन ज्ञानं भवति यत् अयम् गौतमधर्मसूत्रे टीकायाः रचना कृता। अस्य समयः 800 ईश्वी मन्यते। विश्वरूपः त्रिवेन्द्रमसंस्कृतमालायाः अन्तर्गतं श्रीगणपतिशास्त्रिणा याज्ञवल्क्यस्मृतौ अधिकारिकरूपेण लिखि

100%	MATCHING BLOCK 133/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

तं विश्वरूपस्य बालक्रीडाटीकायाः

प्रकाशनं कृतम्। याज्ञवल्क्यीयमिताक्षरायाः भूमिकायाम् उक्तं यत् विश्वरूपः महर्षियाज्ञवल्क्यस्य सिद्धान्तानां व्याख्या विस्तरेण कृतवान्। विश्वरूपेण ऋग्वेदीयमन्त्राणां ब्राह्मणोपनिषदादिग्रन्थानां यथा स्थाने उद्धृतम्। एतेन धर्मशास्त्रकाराणां उल्लेखः क्रियते यथा - उशना, अङ्गिरा,

85%	MATCHING BLOCK 134/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

अत्रिः, आपस्तम्बः, कात्यायनः, काश्यपः, गार्

ग्यः, वृद्धगार्ग्यः,

गौतमः, जातुकर्णः, दक्षः, नारदः, पाराशरः, पितामहः, पुलस्त्यः, पैठानीसः, बृहस्पतिः, बौधायनः, भारद्वाजः, भगुः, मनुः, वृद्धमनुः, यमः,

47%	MATCHING BLOCK 135/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यः, वृद्धयाज्ञवल्क्यः, वसिष्ठः, विष्णुः, व्यासः, शङ्खः, शातातपः, शोनकः, संवर्तः, सुमन्तुः, स्वयंभू, हारीतः

इत्यादयः। पी. वी. काणे महोदयानुसारेण अस्य समयं 750 ईश्वीतः 1000 ईश्वीपर्यन्तं स्वीक्रियते। भारुचिः भारुचिः भाष्यकारशृङ्खलायां सम्मिलितम् अस्ति। अस्योल्लेखः याज्ञवल्क्यमिताक्षराटीकायां, पाराशरमाधवीये, सरस्वतीविलासे च प्राप्यते। मिताक्षरायाः समयः 1050 ईश्वी मन्यते अतः भारूचेः समयः मिताक्षरायाः पू

70%	MATCHING BLOCK 136/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

र्वं स्वीक्रियते। रामानुजाचार्यः स्ववेदा

र्थसङ्ग्रहे ग्रन्थे विशिष्टाद्वैतसम्

100%	MATCHING BLOCK 137/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्रदायस्य भूतपूर्वाचार्याणा

म् उल्लेखः कृतवान् यथा - बोधायनः, टङ्कः, द्रमिडः, गुहादेवः, कपर्दी, भारूचिः। आपस्तम्बगृह्यसूत्रस्य भाष्ये सुदर्शनाचार्यः भारूचेः मतानां चर्चा कृतवान् अस्ति। पी. वी. काणेमहोदयेन अस्य समयं नवशताब्दीपूर्वार्द्धं मन्यते। मेधातिथिः मेधातिथिः एकः प्रसिद्धः भाष्यकारोऽस्ति। अयं मनुस्मृतौ विस्तृता विद्वत्तापूर्णा व्याख्या कृता। एषः मनुस्मृतेः प्राचीनतमः भाष्यकाररूपेण प्रसिद्धोऽस्ति। स्वस्य

75%	MATCHING BLOCK 138/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

भाष्ये गौतमः, आपस्तम्बः, वसिष्ठः, विष्णुः, शङ्खः, मनुः, याज्ञवल्क्यः,

नारदः, पाराशरः, बृहस्पितिः, कात्यायनादीनाम् उद्धरणं प्रस्तुतं कृतम् अस्ति। एतेन असहायस्य अन्यभाष्यकाराणां च उल्लेखं कृतम्। लोल्लटः स्वस्य श्राद्धप्रकरणे ग्रन्थे मेधातिथेः उल्लेखं कृतवान् अस्ति। विश्वेश्वरसरस्वत्याः यतिसङ्ग्रहे मेधातिथेः वर्णनं प्राप्नोति। मनुस्मृतेः व्याख्याकारः कुल्लूकभट्टः मेधातिथिं गोविन्दराजस्य पूर्वं स्वीक्रियते। अतः अस्य समयः 1057 ईश्वीतः 1100 ईश्वीपर्यन्तं मन्यते। विज्ञानेश्वरः धर्मशास्त्रसाहित्ये विज्ञानेश्वरकृता मिताक्षराटीकायाः स्थानं महत्त्वपूर्णमस्ति। अस्याः टीकायाः प्रभावः अत्यधिकोऽस्ति। यथा - व्याकरणशास्त्रे महर्षिपतञ्जलेः महाभाष्यस्य स्थानं तथा काव्यशास्त्रे मम्मटकृतः काव्यप्रकाशस्थानं वर्तते तथैव धर्मशास्त्रे मिताक्षरायाः स्थानं वर्तते। आधुनिकव्यवहारपद्धत्यां मिताक्षरा

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 139/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

याः महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति।

100%	MATCHING BLOCK 140/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

मिताक्षरा याज्ञवल्क्यस्मृतौ

लिखितं भाष्यम् अस्ति। अनेकेषु ग्रन्थेषु ऋजु

73%	MATCHING BLOCK 141/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

मिताक्षरा, प्रमिताक्षरा, मिताक्षरा नामा

नि प्राप्यन्ते। अस्मिन् भाष्ये निबन्धकाराणां

52%	MATCHING BLOCK 142/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

भाष्यकाराणां च प्राप्यते यथा - असहायः, विश्वरूपः, मेधाति

थिः, श्रीकरः, भारूचिः, भोजदेवश्च। स्मृतिकाराणां वर्णनम् अपि प्राप्यते यथा - अङिगरा, बृहदङ्गिरा, मध्यमाङ्गिरा, अत्रिः, आपस्तम्बः, आश्वलायनः, उपमन्युः उशना, ऋष्यश्रृङ्गः, कश्यपः, काण्वः, कात्यायनः, कार्ष्णाजिनिः, कुमारः, कृष्णद्वैपायनः, क्रतुः, गार्ग्यः, गृह्यपरिशिष्टः, गोभिलः, गौतमः, चतुर्विंशतिमतः, च्यवनः, छागलः, जमदग्निः, जातुकर्ण्यः, जाबालः, जैमिनिः, दक्षः, दीर्धतमा, देवलः, धौम्यः,

100%	MATCHING BLOCK 143/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

नारदः, पराशरः, पारस्करः, पितामहः,

पुलस्त्यः, पैठानसिः, प्रचेताः वृद्धहारीतः। अस्मिन् भाष्ये विविधग्रन्थानां नामपि प्राप्यते। विज्ञानेश्वरः स्वस्य भाष्ये स्वयं विज्ञानयोगी उक्तवान्। अयम् भारद्वाजगोत्रीयः पद्मनाभट्टस्य पुत्रः आसीत् तथा पूर्वमीमांसायाः ज्ञाता आसीत्। लक्ष्मीधरस्य कल्पतरूग्रन्थे अस्य नामोल्लेखोऽस्ति। लक्ष्मीधरस्य समयः द्वादशशताब्दी अस्ति एतेन कारणेन अस्य समयः 1050 ईश्वी मन्यते। गोविन्दराजः

95%	MATCHING BLOCK 144/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

गोविन्दराजः मनुस्मृतेः टीका

कारोऽस्ति। एतेन मनु स्मृतौ मनुटीका नाम्नः भाष्यं लिखितम्। एतेन धर्मशास्त्रीयस्मृतिमञ्जरी ग्रन्थस्य निर्माणं कृतम्। अयम् गोविन्दराजः नारायणस्य पौत्रः तथा माध्वस्य पुत्र आसीत्। कुल्लूकभट्टेन गोविन्दराजकृतभाष्यस्य अनेकानि उद्धरणानि प्रस्तूयन्ते। कुल्लूकभट्टः मेधातिथिं गोविन्दराजस्य पूर्वं स्वीकृतवान्। याज्ञवल्क्यीयमिताक्षराटीकायां गोविन्दराजस्य उल्लेखं न कृतम्। अस्य समयः 1050 ईश्वी मन्यते। अनिरूद्धस्य हारलताग्रन्थे अस्य चर्चा अस्ति। अपरार्कः अपरादित्

50%	MATCHING BLOCK 145/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

यः याज्ञवल्क्यस्मृतेः टीकाकारोऽस्ति। एतेन याज्ञवल्क्यस्मृतौ कृ

तं भाष्यं पुणेस्थितम् आनन्दाश्रमेण प्रकाशितं। भाष्यस्य अन्ते प्राप्यते यत् अयं विद्याधरस्य वंशजोऽस्ति तथा जीमूतवाहनस्य कुलोत्पन्नः शिलाहार अपरादित्यः प्रसिद्धोऽस्ति। इदं ग्रन्थं मिताक्षरावत् टीका अस्ति परन्तु निबन्धनाम्ना प्रसिद्धास्ति। अस्मिन् निबन्धात्मकभाष्ये दीर्घसूत्रीयोदाहरणं प्रस्तूयते। पुराणादिग्रन्थेभ्य उदाहरणम् उद्धृतं करोति तथा अस्मिन् भाष्ये पुराणानां नामानि प्राप्यते यथा - आदित्यपुराणम्, कूर्मपुराणम्, कालिकापुराणम्, देवीपुराणम्, नन्दीपुराणम्, नृसिंहपुराणम्, पद्मपुराणम्, ब्रह्मपुराणम्, ब्रह्माण्डपुराणम्, भविष्योत्तरपुराणम्, मत्स्यपुराणम्, मार्कण्डेयपुराणम्, लिङ्गपु

Ouriginal

83%	MATCHING BLOCK 146/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

राणम्, वराहपुराणम्, वामनपुराणम्, वायुपुराणम्,

विष्णुपुराणम्, वि

ष्णुधर्मोत्तरपुराणम्, शिवधर्मोत्तरपुराणम्, स्कन्दपुराणम् इत्यादयः। पी. वी. काणे मतानुसारेण अस्य समयः 115 ईश्वीतः आरभ्य 1130 ईश्वीपर्यन्तं मन्यते। हरदत्तः हरदत्तः टीकाकाररूपेण प्रसिद्धोऽस्ति। एतेन वैदिकसूत्रीयग्रन्थेषु टीका कृता यथा - आपस्तम्बगृह्यसूत्रे अनाकुलाटीकायाः, आपस्तम्बमन्त्रपाठे भाष्यस्य, आश्वलायनगृह्यसूत्रे अनाविला टीकायाः, गौतमधर्मसूत्रे मिताक्षरा टीकायाः लेखनं कृतम्। एतेन कृतं भाष्यं आदर्शभाष्यं मन्यन्ते। धर्मसूत्राणां भाष्येषु स्मृतेः उद्धरणानि प्रस्तूयते। निबन्धकाराणां चर्चा स्वकीयभाष्येषु न कृता अस्ति। भाष्यकारः हरदत्तः दक्षिणभारतस्य निवासी आसीत्। वीरमित्रोदयधर्मशास्त्रीयग्रन्थे हरदत्तं दक्षिणीनिबन्धकारः मन्यते। हरदत्तः शिवस्योपासक आसीत्। नारायणभट्टः स्वग्रन्थे प्रयोगरत्नाकरे हरदत्तस्य मिताक्षराया उज्ज्वलाटीकायाः नामोल्लेखनं कृतवान्। अस्य समयः 1100 ईश्वीतः 1130 ईश्वी पर्यन्तं स्वीक्रियते। कुल्लूकभट्टः कुल्लूकभट्टः मनुस्मृतेः टीकाकारोऽस्ति एतेन मन्वर्थमुक्तावली टीकायाः रचना कृता या मनुस्मृते अन्यभाष्यानां सर्वश्रेष्ठा टीकाऽस्ति। अस्य टीकायाः शैली संक्षिप्ता, स्पष्टा, उद्देश्यपूर्णाऽस्ति। अस्या अन्तर्गतं गोविन्दराजस्य, धरणीधरस्य, भास्करस्य, भोजदेवस्य, मेधातिथेः, वामनस्य, भट्टवार्तिकस्य, विश्वरूपस्य उल्लेखं कृतम्। अयं बङ्गालप्रदेशस्य बारेन्द्रकुलस्य नन्दननिवासी भट्टदिवाकरस्य पुत्र आसीत्। एतेन धर्मशास्त्रीयस्मृतिसागरनामकग्रन्थस्य प्रणयनं कृतम्। बुहलरमहोदयः अस्य समयं 1500 ईश्व स्वीकरोति। शूलपाणिः बङ्गालप्रदेशस्य धर्मशास्त्रकाराणां प्रमुखरूपेण अस्य गणना क्रियते। अयं याज्ञवल्क्यस्मृतेः टीकायाः रचना कृता अस्याः नाम दीपकलिका अस्ति। इयं व्याख्या संक्षिप्ता अस्ति। व्याख्यायां प्रयुक्तम् उद्धरणं वीममित्रोदये अष्टाविंशतितत्वादौ च प्राप्यते। रूद्रधरेण शूलपाणेः कृते 'गोडीयः' शब्दस्य प्रयोगः कृतः। एतेन कारणेन शूलपाणेः बंगीयत्व मन्यते। अस्य समयः पी. वी. काणेमतानुसारेण 1500 ईश्वी मन्यते। निबन्धः भारतीयस्मृतिषु पौराणिकग्रन्थेषु च मनुष्याणां कल्याणार्थं कर्त्तव्याकर्त्तव्यरूपेण विधिनिषेधात्मकं यत् वचनं प्राप्यते तदैव सर्वमान्यरूपेण शास्त्रम् इत्यभिधीयते। स्मृतिग्रन्थाः पौराणिकग्रन्थाश्च संख्यात्मकदृष्टया बहुलाः प्राप्यन्ते। उभयोः ग्रन्थयोः प्रतिपादितः विषयसिद्धान्तयोः विरोधाभासवैमत्यप्रदर्शनं यत्किञ्चित दृष्टिगोचरं भवति। अतः विरोधाभासवैमत्यनिवारणार्थं, विविधग्रन्थेषु प्राप्यविषयाणां सङ्कलनोद्देश्येन निबन्धग्रन्थाणां परम्परायाः उद्भवः अभूत्। एतान् ग्रन्थान् भारतीयसनातनधर्मस्य विधिकृत्यादीनां निर्णायकग्रन्थरूपे स्वीक्रियन्ते तथा एतान् विश्वकोषः इति नाम्नाऽपि वक्तुं शक्यते।

100%	MATCHING BLOCK 147/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

श्रुतिस्मृतिपुराणादि

वाङ्गयेषु धर्मशास्त्रसम्बन्धिः दान-आचा

र-

78%	MATCHING BLOCK 148/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

श्राद्ध-प्रायश्चित्तादिविषयाणां प्रतिपाद्यते।

तैः विषयैः

सह सम्बन्धितविषयवस्तुनां सङग्रहणं निबन्धग्रन्थेषु प्राप्यन्ते। निबन्धग्रन्थाणां मुख्यप्रयोजनं धर्मशास्त्रीयविविधविषयाणां सङकलनं तथा तेषां निर्णयं प्रस्तूयते। धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु निबन्धग्रन्थः स्वतन्त्रः ग्रन्थः नास्ति। अस्मिन् ग्रन्थेषु धर्मशास्त्रीयविषयाणां विस्तारपूर्वकं सङकलनं प्राप्यते। शब्दशास्त्रीयदृष्टया अयं शब्दः पुल्लिङ्गमऽस्ति। निबन्धशब्

70%	MATCHING BLOCK 149/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

दस्य निष्पत्तिः 'नि' उपसर्गपूर्वकं 'बन्ध्' धातोः '

घञ्' प्रत्ययसंयोगेन भवति। अस्यार्थः 'ग्रन्थस्य वृत्तिः'। लक्ष्मीधरविरचितकृतकल्पतरूः

100%	MATCHING BLOCK 153/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्था

नां परम्परायां पण्डितलक्ष्मीधरभट्टेन विरचितः कृत्यकल्पतरूः अत्यन्तमः प्राचीनतमः निबन्धग्रन्थोऽस्ति अस्य अपरनाम कल्पतरूः अपि अस्ति। अयं कान्यकुब्जस्य राजा गोविन्दचन्द्रस्य महामात्य आसीत्। अस्य समयः द्वादशशताब्दी मन्यते। कृत्यकल्पतरूः धर्मशास्त्रीयविधिनियमानां एकः विशालकायग्रन्थोऽस्ति। अयं ग्रन्थः त्रयोदशभागेषु विभक्तोऽस्ति यथा - ब्रह्मचारिकाण्डः, ग्रहस्थकाण्डः, नियतकाण्डः, श्राद्धकाण्डः, दानकाण्डः, प्रतिष्ठाकाण्डः, तीर्थकाण्डः, शुद्धिकाण्डः, राजधर्मकाण्डः, व्यवहारकाण्डः, शान्तिकाण्डः, आचारकाण्डः, मोक्षकाण्डश्च। विद्वद्भिः मन्यन्ते अस्य ग्रन्थस्य अस्यातिरिक्तः अनेकाः

Curiginal

काण्डाः स्म। देवण्णभट्टकृतस्मृतिचन्द्रिका केशवादित्यस्य पुत्रः देवण्णभट्टः दक्षिणी निबन्धकारोऽस्ति तथा अयं सोमयाजी अपि अस्ति। अस्य समयः द्वादशशताब्दी मन्यते। दक्षिणभारते व्यवहारन्यायसम्बन्धिनिर्णयस्य

95%	MATCHING BLOCK 150/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

कृते स्मृतिचन्द्रिका प्रा

माणिकः ग्रन्थोऽस्ति। अयं ग्रन्थः बृहदकाण्डषु विभक्तः। अस्मिन् ग्रन्थे संस्काराः, आह्निककृत्यं,

87%	MATCHING BLOCK 151/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

व्यवहारः, प्रायश्चित्तं, श्राद्

धम् इत्यादयः विषयाः सन्ति। जीमूतवाहनकृतधर्मरत्नः बङ्गप्रदेशस्य पारिभद्रकुलोत्पन्नजीमूतवाहनस्य धर्मशास्त्रकाराणां विशेषस्थानं वर्तते। एतेन त्रयाणां ग्रन्थानां प्रणयनं कृतम् यथा -

90%	MATCHING BLOCK 152/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

कालविवेकः, व्यवहारमातृका, दायभागश्च। इमे त्

रयः ग्रन्थाः धर्मरत्ननाम्नः ग्रन्थस्य भागोऽस्ति। कालविवेकनाम्नः ग्रन्थे समयसम्बन्धिः विषयानां वर्णनमस्ति। व्यवहारमातृकाग्रन्थे व्यवहारविधिनां वर्णनं प्राप्यते। दायभागग्रन्थे विधिसम्बन्धिः विषयानां वर्णनं वर्तते। अयं भोजदेवगोविन्दराजयोश्च उल्लेखं कृतम् अतः अस्य समयः द्वादशशताब्दीपूवार्द्धः मन्यते। अनिरुद्धप्रणीता हारलतापितृदयिता अनिरूद्धः बंगप्रदेशस्य प्राचीनधर्मशास्त्रकाररूपेण प्रसिद्धोऽस्ति। एतेन हारलता पितृदयिता च द्वयोः ग्रन्थयोः रचना कृताऽस्ति। पितृदयितायाः एकं अपरनाम कर्मोपदेशिनीपद्धति अपि अस्ति। इमौ ग्रन्थौ आचारसम्बन्धिविषयान् प्रकाशितं कुरूतः। अस्मिन् ग्रन्थे श्राद्धकर्मणः अपि वर्णनं प्राप्नोति। अयं बंगालस्य

100%	MATCHING BLOCK 154/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

चम्पाहट्टीयब्राह्मण आसीत्।

अस्य समयः द्वादशशताब्दी अस्ति। बल्लालसेनरचितः दानसागरः दानसागरग्रन्थस्य रचयिता बंगालप्रदेशस्य बल्लालसेनास्ति अयं विजयसेनस्य पुत्र आसीत्। अस्यातिरिक्तः त्रयः ग्रन्थाः अपि प्राप्यन्ते यथा -

87%	MATCHING BLOCK 155/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

आचारसागरः, प्रतिष्ठासागरः, अद्भुतसा

गरः। दानसागरे दानसम्बन्धिः सकलसिद्धान्तानां संचयनं कृतम्। बल्लालसेनः प्रसिद्धः धर्मशास्त्री अनिरूद्धस्य शिष्योऽस्ति। अस्य समयः द्वादशशताब्दी स्वीक्रियन्ते। श्रीधरकृतः स्मृत्यर्थसारः स्मृत्यसारः धर्मशास्त्रीयविषयाणां सङ्ग्राहकमहत्त्वपूर्णः ग्रन्थोऽस्ति अस्य निर्माता श्रीधराचार्योऽस्ति अयं विष्णुभट्टोपाध्यायस्य पुत्रोऽस्ति। अयं ग्रन्थः

87%	MATCHING BLOCK 156/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

त्रिषु विभागेषु विभक्तोऽस्ति

यथा - आचारप्रकरणम्, आशौचप्रकरणं, प्रायश्चित्तप्रकरणम्। अस्मिन् ग्रन्थे मुख्यरूपेण कलिवर्ज्यप्रकरणं, संस्काराः, ब्रह्मचारीणां कर्त्तव्याः, गोत्रं, प्रवरः, सपिण्डताविवेचनं, शौचं, आह्निककर्म, श्राद्धं, शुद्धाशुद्धिः, प्रायश्चित्तं च विषयाः

55%	MATCHING BLOCK 158/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

सन्ति। हेमाद्रिप्रणीतः चतुर्वर्गचिन्तामणिः चतुर्वर्गचिन्तामणिधर्मशास्त्

Curiginal

रीयनिबन्धस्य प्रणेता हेमाद्रिः अस्ति। अयं विशालकायनिबन्धोऽस्ति। विशेषरूपेण दक्षिणभारते प्रसिद्धोऽस्ति। हेमाद्रिः दक्षिणभारतीयोऽस्ति। अस्य समयः त्रयोदशशताब्दी मन्यते। अयं वत्सगोत्रीयकामदेवस्य पुत्रोऽस्ति। अयं देवगिरीयादवराजमहादेवस्य अमात्यः आसीत्। चतुर्वर्गचिन्तामणिः धार्मिककृत्यानां धार्मिकनिर्णयानां च विश्वकोषात्मकग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे पंचखण्डाः सन्ति खण्डानां नामानि यथा - व्रतखण्डः, दानखण्डः, तीर्थखण्डः, मोक्षखण्डः, परिशेषखण्डश्च। परिशेषखण्डः चतुर्थभागेषु विभक्तः आसीत् तस्य नामानि यथा - देवता, कालनिर्णयः, कर्मविपाकः, लक्षणसमुच्चयश्च। सायणमाधवकृताः धर्मशास्त्रीयग्रन्थाः आचार्यः सायणः वेदानां व्याख्याकारोऽस्ति एतेन कारणेन एकः प्रसिद्ध आचार्योऽस्ति। अस्य ज्येष्ठभ्राता माधवः आसीत् यः माधवाचार्यविद्यारण्यस्वामीनाम्ना प्रसिद्धः स्म। आचार्यः सायणः विजयनगरस्य अधिपतिमहाराजबुक्कस्य महाराजहरिहरस्य च महामात्यः आसीत्। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दीईश्वी मन्यते। सायणस्य पितुः नाम मायणः तथा मातुः नाम श्रीमती स्म। अयं चतुर्वेदीब्राह्मणकुलोत्पन्नः अभवत्। अयं वेदानां भाष्येण सह धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां लेखनं कृतवान् तस्य नामानि यथा - पुरूषार्थसुधानिधिः, दत्तकमीमांसा, स्मृतिसङ्ग्रहः,

100%	MATCHING BLOCK 157/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

कुरूक्षेत्रमाहात्म्यः,

पराशरस्मृतेः पाराशरमाधवीय भाष्यं, कालनिर्णयः कालमाधवीयः वा चास्ति। पाराशरमाधवीयः महत्त्वपूर्णः ग्रन्थोऽस्ति अस्य अन्यनाम आचारमाधवीयः पराशरमाधवीयश्च अस्ति। कालनिर्णये पंचप्रकरणानि सन्ति यथा - उपोद्घातप्रकरणं, वत्सरप्रकरणं, प्रतिपत्प्रकरणं, द्वितीयादितिथिप्रकरणं, प्रकीर्णप्रकरणं च।

88%	MATCHING BLOCK 159/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

श्रीदत्तोपाध्यायः मध्ययुगीनमैथि

लधर्मशास्त्रीयनि

95%	MATCHING BLOCK 160/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

बन्धकारेषु श्रीदत्तोपाध्याय

प्राचीनतमोऽस्

88%	MATCHING BLOCK 161/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

ति। अयं धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना कृ

तवान् यथा - आचारादर्शः, छन्दोगाह्निकः, समयप्रदीपः, पितृभक्तिः, श्राद्धकल्पश्च। आचारादर्शमुपरि दामादरमैथिलेन लिखिता आचारादर्शबोधिनी टीका प्राप्नोति। सामवेदीयपाठकानां कृते छन्दोगाहनिकश्राद्धकल्पयोः ग्रन्थयोः रचना कृता। यजुर्वेदीयानुयायीनां कृते पितृभक्तिः नाम्नः ग्रन्थस्य निमार्णं कृतम्। समयप्रदीपनाम्नः ग्रन्थे सकलव्रतानां समयस्य विवेचनं कृतमस्ति। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी ईश्वी मन्यते। चण्डेश्वरः चण्डेश्वरः मिथिलायाः

100%	MATCHING BLOCK 162/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रीयनिबन्धकाराणां

सर्वश्रेष्ठः मन्यते। अस्य

100%	MATCHING BLOCK 163/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्था

न्तर्गतं स्मृतिरत्नाकरः, विवादरत्नाकरः, कृत्यरत्नाकरः, गृहस्थरत्नाकरः, दानरत्नाकरः,

65%	MATCHING BLOCK 164/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

शुद्धिरत्नाकरः, कृत्यचिन्तामणिः, राजानीति

रत्नाकरः, दानवाक्यावलिः, शिववाक्यावलिश्च आयान्ति। स्मृतिरत्नाकरे सप्ताध्यायाः सन्ति यथा - कृत्यः, दानं, व्यवहारः, शुद्धिः, पूजा, विवादः, गृहस्थश्च। विवादरत्नाकरः शततरङ्गेषु विभक्तोऽस्ति। कृत्यरत्नाकरे द्वाविंशति तरङ्गाः सन्ति। गृहस्थरत्नाकरे अष्टशष्टिः तरङ्गाः सन्ति। दानरत्नाकरे उनत्रिंशततरङ्गाः

Ouriginal

प्राप्यन्ते। शुद्धिरत्नाकरे चतुत्रिंशत तरङ्गाः सन्ति। राजनीतिरत्नाकरे शोडषतरङ्गाः प्राप्नोति। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी ईश्वी मन्यन्ते। शूलपाणिकृतः स्मृतिविवेकः शूलपाणिः बङ्गालप्रदेशस्य धर्मशास्त्री आसीत्। अस्य धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां नामानि इत्थं प्रकारेण प्राप्नो

64%	MATCHING BLOCK 165/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

ति यथा - एकादशीविवेकः, तिथिविवकेः, दत्तविवेकः, दुर्गोत्सवविवेकः, दोलायात्राविवेकः, प्रायश्चित्तविवेकः, कालविवेकः, शुद्धिविवकेः, श्राद्

धविवकेः इत्यारदयः। सकलविवेकानां सम्मिलितनाम स्मृतिविवेकोऽस्ति। शूलपाणिः राढीयब्राह्मणोऽस्ति। अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते। विश्वेश्वरभट्टप्रणीतः मदनपरिजातः विश्वेश्वरभट्टस्याश्रयदाताराजा मदनपालः आसीत्। मदनपालस्य कालखण्डः चतुर्दशशताब्दी ईश्वी मन्यते। आश्रयदाताराजामदनपालस्य स्मृत्यां विश्वेश्वरभट्टः मदनपारिजातनामकग्रन्थस्य लेखनं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य विभागः स्तबकेषु अस्ति एवं नवस्तबकाः सन्ति तेषां नामानि यथा - ब्रह्मचर्यस्तबकः, गृहस्थस्तबकः, आह्निकस्तबकः, गर्भाधानादिसंस्कारस्तबकः, अशौचस्तबकः, द्रव्यशुद्धिस्तबकः, श्राद्धस्तबकः, विभागस्तबकः, प्रायश्चित्तस्तबकश्च। दलपतिराजनिर्मितः नृसिंहप्रसादः नृसिंहप्रसादग्रन्थं धर्मशास्त्रीयविश्वकोशः मन्यते। अस्य ग्रन्थस्य द्वादशविभागाः सन्ति तेषां नामानि यथाः संस्कारसारः, आह्निकसारः, श्राद्धसारः, कालसारः, व्यवहारसारः, प्रायश्चित्तसारः, कर्मविपाकसारः, व्रतसारः, दानसारः, शान्तिसारः, तीर्थसारः, प्रतिष्ठासारश्च। अस्य समयः पंचादशशताब्दी ईश्वी मन्यते। मदनरत्नः अयं एकः विशालकायनिबन्धग्रन्थोऽस्ति। अस्य ग्रन्थस्य अपरनाम रत्नदीपः मदनप्रदीपश्च अस्ति। राजामदनसिंहस्य राज्याश्रये प्रणीतः एतेन

76%	MATCHING BLOCK 167/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

कारणेन अस्य ग्रन्थस्य नाम मदनरत्नो

ऽस्

72%	MATCHING BLOCK 166/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

ति। अस्मिन् ग्रन्थे सप्तोद्योगाः सन्ति यथा - समयोद्योतः, आचारोद्योतः, व्यवहारोद्योतः, प्रायश्चित्तोद्योतः, दानोद्योतः, शुद्धयो

द्योतः, शान्त्युद्योतश्च। अस्य ग्रन्थस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी स्वीकरोति। रघुनन्दनभट्टाचार्यकृतं स्मृतितत्त्वं रघुनन्दनभट्टाचार्यः बङ्गप्रदेशस्य एकः प्रौढः धमशास्त्रकारोऽस्ति। अयं बन्धघटीयब्राह्मणहरिहरभट्टाचार्यस्य पुत्रः आसीत्। अस्य धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्मृतितत्त्वमस्ति। स्मृतितत्त्वे अष्टाविंशति प्रकरणानि सन्ति यथा - मलमासतत्त्वं, दायतत्त्वं, संस्कारतत्त्वं, शुद्धितत्त्वं, प्राश्चित्ततत्त्वं, विवाहतत्त्वं, विवाहतत्त्वं, विधितत्त्वं, जन्माष्टमीतत्त्वं, दुर्गोत्सवतत्त्वं, व्यवहारतत्त्वं, एकादशीतत्त्वं, जलाशयोत्सर्गतत्

10%	MATCHING BLOCK 169/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

त्वं, ऋग्वेदीवृषोत्सर्गतत्त्वं, यजुर्वेदीवृषोत्सर्गतत्त्वं, सामवृषोत्सर्गतत्त्वं, व्रततत्त्वं, देवप्रतिष्ठातत्त्वं, दिव्यतत्त्वं, ज्योतिषतत्त्वं, वास्तुयागतत्त्वं, दीक्षातत्त्वं, आह्निकतत्त्वं, क्रियाततत्त्वं, मठप्रतिष्ठातत्त्वं, पुरुषोत्तमक्षेत्रतत्त्वं, छन्दोगयाश्राद्धतत्त्वं, यजुर्वेदीश्राद्धतत्त्वं, शूद्रकृत्

यविचारतत्त्वं च। स्मृतितत्त्वस्यातिरिक्तः गयाश्राद्धपद्धतिः, रासयात्रापद्धतिश्च धर्मशास्त्रीयग्रन्थौस्तः। अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते। हरिनाथकृतः स्मृतिसारः स्मृतिसारस्य रचनाकारः हरिहरनाथोऽस्ति। अयं ग्रन्थः अप्रकाशितोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे आचारः, संस्कारः, व्यवहारः इत्यादयः विषयाणां विवेचनं कृतमस्ति। शूलपाणिः

51%	MATCHING BLOCK 168/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

दुर्गोत्सवविवेके तथा मिसरुमिश्रः विवादचन्द्रे ग्रन्थे हरिहरनाथकृतस्मृतिसा

रग्रन्थस्य उद्धरणम् उद्धृतमस्ति। अस्य समयः चतुर्दशशताब्दी ईश्वी अस्त। रुद्रधरः रुद्रधरः मिथिलायाः धर्मशास्त्रकारोऽस्ति। एतेन

100%	MATCHING BLOCK 171/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्था

नां लेखनं कृतं तेषां नामानि यथा -

Curiginal

87%	MATCHING BLOCK 170/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

शुद्धिविवेकः, श्राद्धविवेकः,

वर्षकृत्यम् इत्यादयः। मिथिलायाः धार्मिककृत्यानां कृते अयं प्रामाणिकः ग्रन्थोऽस्ति। रुद्रधरः रत्नाकारस्य, स्मृतिसारस्य, शूलपाणेश्च उल्लेखनं कृतवान्। अतः अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते। मिसरुमिश्रः मिसरुमिश्रः मिथिलायाः निवासी आसीत्। एतेन विवादचन्द्रनामकधर्मशास्त्रीयग्रन्थस्य लेखनं कृतम्। चन्द्रसिंहस्य समकालिकः मिसरुमिश्रस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी मन्यते। अस्य ग्रन्थस्य मुख्यविषयः व्यवहारदायभागौस्तः। वाचस्पतिमिश्रः मिथिलायाः सर्वश्रेष्ठः निबन्धकारोऽस्ति। व्यवहारविधियोः निर्णयात्मकः ग्रन्थः व्यवहारचिन्तामणिः प्रसिद्धोऽस्ति। अस्यातिरिक्तः अन्यधर्मशास्त्रीयग्रन्थानामपि लेखनं कृ

तं यथा - आचारचि

न्तामणिः, आह्निकचि

98%	MATCHING BLOCK 172/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

न्तामणिः, शुद्धिचिन्तामणिः, कृत्यचिन्तामणिः, तीर्थचिन्तामणिः, तिथिनि

र्णयः, द्वैतनिर्णयः, शुद्धिनिर्णयः,

64%	MATCHING BLOCK 174/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

कृत्यमहार्णवः, आचारमहार्णवः, विवादमहार्णवः, व्यहारमहार्णवः, दानमहार्णवः, शुद्धिमहार्णवः, पितृ

यज्ञमहार्णवः,। वाचस्पतिमिश्रः मिथिलायाः राजाहरिनारायणस्य परामर्शदाता आसीत्। अस्य समयः पंचदशशताब्दी ईश्वी वर्तते।

100%	MATCHING BLOCK 173/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

गोविन्दानन्दः गोविन्दानन्

दस्य बङ्गालप्रदेशस्य निबन्धकाराणां विशेषस्थानं वर्तते। अस्य अपरनाम कङ्कणाचार्योऽस्

66%	MATCHING BLOCK 175/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

ति। अस्य पितुर्नाम गणपतिभट्टः आसीत्। अस्य

समयः षोडशशताब्दी ईश्वी स्वीक्रियते। अयं कौमुदी नाम्

100%	MATCHING BLOCK 176/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

ना धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां

लेखनं कृतवान् यथा - दानकौमुदी, क्रियाकौमुदी, श्राद्धकौमुदी, वर्षकृत्यकौमुदी, शुद्धिकौमुदी, गोविन्दकौमुदी च। अयं प्रसिद्धधर्मशास्त्रकारशू

100%	MATCHING BLOCK 177/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

लपाणेः प्रायश्चित्तविवेके

तत्त्वकौमुदीनामकवैदुष्यपूर्णाटीकाऽपि लिखितवान्। टोडरानन्दः मुगलराज्ञः अकबरस्य कोषामात्यटोडरमलेन टोडरानन्दनामकधर्

100%	MATCHING BLOCK 178/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

Curiginal

निर्माणं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य विभागाः सन्ति तेषां नामानि यथा - आचारसौख्यं, व्यवहारसौख्यं, दानसौख्यं, श्राद्धसौख्यं, विवेकसौख्यं, विवाहसौख्यं, प्रायश्चित्तसौख्यं, वास्तुसौख्यं, समयसौख्यं च। अस्य निबन्धकारस्य समयः षोडशशताब्दी ई. मन्यते। नन्दपण्डितः काश्याः विद्वत्परम्परया सह नन्दपण्डितस्य सम्बन्धोऽस्ति। अस्य पितुर्नाम धर्माधिकारी आसीत्। अयं महाराजाकेशवनायकस्य आश्रितः पण्डितः स्म। अस्य समयः षोडशशताब्दी ई. मन्यते। अस्य दत्तकमीमांसानामकग्रन्थः

87%	MATCHING BLOCK 179/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्रसिद्धः ग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन्

ग्रन्थे

दत्तकपुत्रस्य सम्बन्धे सकलविधिनियमानां सूक्ष्मविधिना प्रतिपादनं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य अपरनामपुत्रीकरणमीमांसाऽस्ति। एतेन याज्ञवल्क्यीयमिताक्षराटीकायां प्रमिताक्षरा भाष्यं कृतमस्ति। नीलकण्ठकृतः भगवन्तभास्करः भगवन्तभास्करप्रसिद्धग्रन्थस्य रचना नीलकण्ठः कृतवान्। अस्य ग्रन्थस्य अपरनाम स्मृतभास्करोऽस्ति। अयं नारायणभट्टस्य पौत्रः तथा प्रसिद्धमीमांसाकशङ्करभट्टस्य पुत्रः आसीत्। नीलकण्ठस्य आश्रयदाताराजा सेङ्गरक्षत्रियावर्तसभगवन्तदेवः आसीत्। आश्रयदातामहाराज्ञः यशसे कृते धर्मशास्त्रीयग्रन्थस्य नाम भगवन्तभास्करः कृतः। अस्मिन् ग्रन्थे मीमांसारीत्याः प्रयोगः कृतः। अस्य निबन्धस्य विभागः द्वादशमयूखेषु कृतः यथा - संस्कारमयूखः, आचारमयूखः, समयमयूखः, श्राद्धमयूखः, नीतिमयूखः, व्यवहारमयूखः, दानमयूखः, उत्सर्गमयूखः, प्रतिष्ठामयूखः, प्रायश्चित्तमयूखः, शुद्धिमयूखः, शान्तिमयूखश्च। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. अस्ति। नारायणभट्टः काश्यां समागतभट्टकुलस्य मूलप्रतिष्ठापकः नारायणभट्टः मन्यते।

अस्य पितुर्नाम रामेश्वरभट्टः आसीत्। अस्य धर्मशास्त्

80%	MATCHING BLOCK 180/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

रीयग्रन्थाः सन्ति यथा - त्रिस्थलीसेतुः,

प्रयोगरत्नः, अन्त्येष्टिपद्धतिः, रुद्रपद्धतिश्च। अस्य समयः षोडशशताब्दी ई. अस्ति। वीरमित्रकृतः वीरमित्रोदयः

100%	MATCHING BLOCK 181/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां वी

रमित्रोदयस्य सर्वाधिकं महत्त्वपूर्णस्थानं वर्तते। श्रीहंसमिश्रस्य पौत्रः तथा परशुराममिश्रस्य पुत्रः वीरमित्रः अस्य ग्रन्थस्य रचनाकारोऽस्ति। अयं ओरछानरेशवीरसिंहदेवस्य राज्यसभायाः विशिष्टप्रतिभासम्पन्नविद्वान् आसीत्। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. मन्यते। अस्मिन् ग्रन्थे द्वाविंशतिभागाः सन्ति तेषां नामानि इत्थं प्रकारेणास्ति

97%	MATCHING BLOCK 182/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

यथा - परिभाषाप्रकाशः, संस्कारप्रकाशः, आह्निकप्रकाशः, पूजाप्रकाशः, प्रतिष्ठाप्रकाशः, राजनीतिप्रकाशः, व्यवहारप्रकाशः, शुद्धिप्रकाशः, श्राद्धप्रकाशः, तीर्थप्रकाशः, दानप्रकाशः, व्रतप्रकाशः, समयप्रकाशः, ज्योतिषप्रकाशः, शान्तिप्रकाशः, कर्मविपाकप्रकाशः, चिकित्साप्रकाशः, प्रायश्चित्तप्रकाशः, प्रकीर्णप्रकाशः, लक्षणप्रकाशः, भक्तिप्रकाशः, मोक्षप्रका

शश्च।

अनन्तदेवकृतः स्मृतिकौस्तुभः अयं ग्रन्थः धर्मशास्त्रीयविषयाणां प्रौढग्रन्थोऽस्ति। महाराष्ट्रीयब्राह्मणः अनन्तदेवः अस्य ग्रन्थस्य प्रणेता अस्ति। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. मन्यते। अस्य पितुर्नाम बोपदेवः आसीत्। एतेन पंचदशधर्

100%	MATCHING BLOCK 186/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना क्

रियते यथा - स्मृतिकौस्तुभः, प्रायश्तिदीपिका, कालविन्दुनिर्णयश्च प्रमुखाः ग्रन्थाः सन्ति। स्मृतिकौस्तुभः एकः अत्यन्तविशालकायग्रन्थोऽस्ति यः सप्तखण्डेषु विभक्तः अस्ति तषां नामानि यथा - संस्कारकौस्तुभः, आचारकौस्तुभः, राजधर्मकौस्तुभः, दानकौस्तुभः, उत्सर्गकौस्तुभः, प्रतिष्ठाकौस्तुभः, तिथिसंवत्सरकौस्तुभश्च। प्रत्येकः कौस्तुभः दीधितिषु प्रकरणेषु वा विभक्तोऽस्ति। सकलकौस्तुभानां सम्मिलितं नाम स्मृतिकौस्तुभः कथ्यते। इत्थं प्रकारेण अस्मिन् ग्रन्थे अष्टाशीत्याध्यायाः सन्ति। अनन्तदेवस्य अन्यधर्मशास्त्रीयग्रन्थाः सन्ति तेषां नामानि यथा - अग्निहोत्रप्रयोगः, आग्रहायणप्रयोगः, चातुर्मास्य प्रयोगः,

अन्त्येष्टिप्रयोगः, नक्षत्रसत्रप्रयोगः, भगवन्नामकौमुदीटीकाप्रकाशिका, भगवद्विर्णयः, मथुरासेतुः, मीमांसान्यायप्रकाशिकाटीका, देवतातत्त्वविचारः, सिद्धान्ततत्त्वश्च। दिवारकरभट्टकृतधर्मशास्त्रसुधानिधिः दक्षिणात्यधर्मशास्त्रकाराणां पण्डितदिवाकरभट्टस्य नाम विशेषगौरवेण साकं शोभते। अस्

62%	MATCHING BLOCK 183/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

य पितुर्नाम महादेवभट्टः तथा मातुर्नाम

गङ्गा आसीत्। अस्य समयः सप्तदशशताब्दी ई. मन्यते। शास्त्रसुधानिधिग्रन्थस्य विभागः स्वतन्त्रोऽस्ति तस्य नाम यथा आचारार्कः,

43%	MATCHING BLOCK 184/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

तिथ्यर्कः, दानहारावली, प्राश्चित्तमुक्तावली, आह्निकचन्द्रिका, श्राद्धचन्द्रिका च।

अस्मिन् ग्रन्थे स्मृतिपुराणयोः विविधविषयाणां निर्णयात्मकसङ्कलनमस्ति। काशीनाथोपाध्यायकृतधर्मसिन्धुः काशीनाथोपाध्यायविरचितधर्

100%	MATCHING BLOCK 185/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

धर्मसिन्धोः अपरनाम धर्मसिन्धुसारोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे सकलधर्मशास्त्रीयविषयाणां सङ्कलनं सङकलितविषयाणां निर्णयोऽपि अस्ति एतेन कारणेन अयं ग्रन्थः विशेषलोकप्रियग्रन्थोऽस्ति। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. मन्यते। मोरोपन्तकविना काशीनाथोपाध्यायस्य जीवनचरितं लिखितम्। अयं ग्रन्थः त्रिषु परिच्छेदेषु विभक्तोऽस्ति। प्रथमपरिच्छेदे सामान्यरीतिः, कालनिर्णयः, सङ्क्रान्तिनिर्णयः, सङ्क्रान्तिदाननिर्णयः, मलमासादिनिर्णयः, सिंहस्थगुरुमीमांसा, व्रतोपवासनिर्णयः, तिथिनां निर्णयः, स्थालीपाकविचारः, ग्रहणमीमांसा इत्यादयः। द्वितीयपरिच्छदे व्रतोपवासादीनां समयस्य विस्तरेण वर्णितमस्ति। तृतीयपरिच्छेदे

52%	MATCHING BLOCK 187/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

द्वौ भागौ स्तः पूवार्द्धः उत्तरार्द्धश्च। पूर्वार्

द्धे संस्काराणां विधिः, अह्निककृत्यः, अग्न्याधानं, देवप्रतिष्ठा, शान्तिपौष्टिकर्म, नित्यनैमित्तिकर्म इत्यादयः। उत्तरार्द्धे विशेषरूपेण श्राद्धप्रकरणमस्ति। नागेशभट्टः नागेशभट्टः वैयाकरणः आसीत् एते

100%	MATCHING BLOCK 189/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

न धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना कृता।

अस्य पितुर्नाम शि

वभट्टः तथा गुरोर्नाम हरिदीक्षितः आसीत्। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. अस्ति। अयं शेखरनाम्ना

67%	MATCHING BLOCK 191/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धर्मशास्त्रीय ग्रन्थान् लिखितवान् यथा - आचारेन्दुशेखरः, तिथीन्दुशेखरः, तीर्थेन्दुशेखरः, प्रायश्चित्तेन्दुशेखरः, श्रा

द्धेन्दुशेखरः,

लक्षणरत्नमालिका, सापिण्डयदीपक, सपिण्डीमंञ्जरी च। रत्नाकरभट्टकृतव्रतकल्पद्रुमः देवभट्टस्य पुत्रः रत्नाकरभट्टः व्रतकल्पद्रुमस्य रचनाकारोऽस्ति। अस्य आश्रयदाताराजा महाराजजयसिंहः आसीत्। अस्य समयः अष्टादशशताब्दी ई. स्वीक्रियते। महाराज्ञः प्रेरणया अस्य गन्थस्य लेखनं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य अपरनाम जयसिंहव्रतकल्पदुमोऽस्ति। अयं ग्रन्थः एकोनविंशतिस्तबकेषु विभक्तोऽस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे सकलव्रतानां सङ्कलविधियोः वर्णनमस्ति। पण्डितविश्वशर्माकृतव्रतराजः पण्डितगोपालशर्मणः पुत्रः विश्वशर्मा व्रतराजधर्

100%	MATCHING BLOCK 188/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

प्रणेता अस्ति तथा काश्याः दैवज्ञः याज्ञिकः पुराणधर्मशास्त्राणां ज्ञाता आसीत्। अस्मिन् ग्रन्थे देवोपासना, पूजापद्धतिः, हवनकर्म, व्रतोद्यापनं, व्रतलक्षणं, देशः, अधिकारी, धर्मः, प्रायश्चित्तम्, उपवासधर्मः, हविष्यविधिः, अग्न्युत्तारणं, प्राणप्रतिष्ठा, व्रतकथा इत्यादयः व्रतसम्बन्धिसकलविषयाणां विवेचनमस्ति।

तृतीयोऽध्यायः श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था

3. तृतीयोऽध्यायः श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपिता वर्णाश्रमव्यवस्था 3.1 वर्णधर्माः 3.2 आश्रमधर्माः

भारतीयसामाजिकव्यवस्था अत्यन्तप्राचीना अस्ति। अस्याः व्यवस्थायाः उद्भवः संचालनञ्च ऋषीणां व्यवहारेषु द्रष्टुं शक्यते। ऋषयः यासां व्यवस्थानां समाजस्य कृते निर्धारणं कृतवन्तः तासु व्यवस्थासु जीवनव्यवहारं कुर्वन् भारतीयसमाजेन युगपर्यन्तकालः सुचारुरूपेण व्यतीतः। सामाजिकव्यवस्थायाः सम्यक् संचालनार्थं अनेकानेकव्यवस्थानां विधानं कृतं तासु वर्णव्यवस्थायाः स्थानं महत्त्वपूर्णमस्ति। अस्याः व्यवस्थायाः अन्तर्गतं वर्णानां चतुर्धाविभाजनं

कृतं यथा -

100%	MATCHING BLOCK 193/353	SA	Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः।

ऋषयः प्रत्येकवर्णस्य कृते आवश्यकं कर्त्तव्यानामाचाराणाञ्च निरूपणं कृतवन्तः, यस्मात् चतुर्षु वर्णेषु सामंजस्यं स्थापितं भवेत्। वर्णानां प्रथमोल्लेखः ऋग्वेदस्थपुरुषसूक्ते प्राप्यते। एतस्मिन्

100%	MATCHING BLOCK 190/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

चतुर्णां वर्णानामुत्पत्तिः

विराट्पुरुषस्य विभिन्नाङ्गेभ्यः निर्दिष्टा यथा -

68%	MATCHING BLOCK 192/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः

पद्भ्यां शूद्रो अजायत्।। अनन्तरं धर्मशास्त्रकाराः वेदान् प्रमाणरूपेण स्वीकुर्वन् एतां व्यवस्थां स्वीकृतवन्तः। एतेषु वर्णेषु परस्परं विरोधः न आसीत् अपितु एतत् विभाजनं प्रतीकात्मकम् आसीत्। चत्वारो वर्णाः मिलित्वा समाजस्य पूर्णतां साधयन्ति यथा शरीरस्य पूर्णता सर्वेषाम् अङ्गानां स्वस्थे पूर्णे च सति भवति। तथैव समाजस्य पूर्णता चतुर्णां वर्णानाम् उन्नत्यां सत्यां भवितुमर्हति। एतेषु वर्णेषु कस्यचित् एकस्य वर्णस्य अभावे विकले वा सति समाजस्य संचालनं बाधितं भविष्यति। वर्णानाम् इदं विभाजनं तेषां दक्षतानां क्षमतानाञ्च आधारेण कृतमस्ति। प्रत्येकवर्णः स्वकीयया दक्षतया क्षमतया च समाजस्य उन्नत्यां योगदानं करोतिस्म। ब्राह्मणस्य कृते मुखप्रतीकः निर्धारितः। एषः प्रतीकः ब्राह्मणस्य कार्यं प्रकटीकरोति अर्थात् ब्राह्मणस्य कार्याणि मुखेन वाचा वा सम्बन्धितानि भवन्ति। बाहुः शक्तेः रक्षणस्य च प्रतीकः। प्रायः सर्वाणि कार्याणि कराभ्यां सम्पादितानि भवन्ति। अतैव क्षत्रियाणां कृते बाहुप्रतीकः निर्धारितः। ऊरुः शरीरस्य आधारस्तम्भः भवति - समाजस्य आर्थिकस्थतेः आधारः वैश्यः मन्यते। सः सर्वविधव्यापाराणां संचालनं करोति। अतैव तस्य कृते ऊरुप्रतीकः निर्धारितः। सम्पूर्णसमाजस्य गतिः शूद्रवर्णे समाश्रिता वर्तते। यथा शरीरस्य गतिः पादयोः आश्रिता वर्तते। अतैव शूद्रवर्णस्य कृते पादप्रतीकः निर्धारितः। यथा शरीरस्य प्रत्येकम् अङ्गम् आवश्यकं महत्त्वपूर्णञ्च भवति, कस्यापि अङ्गस्य न्यूनतायां सत्यां शरीरं स्वकीयं संचालनं सम्यग्रूपेण कर्तुं असमर्थः भवति तथैव प्रत्येकवर्णः समाजस्य कृते आवश्यकः उपयोगी च भवति। एकस्यापि वर्णस्याभावे समाजः स्वकीयं संचालनं निर्बाधरूपेण कर्तुं असमर्थः भवति। 3.1 वर्णधर्माः वर्णशब्दस्य निष्पत्तिः 'वृ वरणे' इति धातोः 'णित'प्रत्ययस्य संयोगेन जायते अस्य च अर्थः वृणोति। संस्कतवाङ्मये वर्णशब्दस्य प्रयोगः पुल्लिङगे नपुंसकलिङ्गे च अभूत्। निरूक्तकारयास्केन यस्य व्युत्पत्तिः 'वर्णो वृणीते' क्रियते। शब्दकोशग्रन्थेषु वर्णशब्दस्य अनेकाः अर्थाः प्राप्यन्ते। वर्णोत्पत्तिः ऋग्यज्वर्थवेदीयानां पूरुषसूक्तेषु वर्णानामुत्पत्तिः विराट्पुरूषस्याङ्गेभ्यः प्रदर्शयते। यथा - मुखात्

55%	MATCHING BLOCK 196/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

ब्राह्मणस्य, बाहुभ्याम् क्षत्रियस्य, ऊरोः वैश्यस्य, पादात् शूद्रस्योत्

पत्तेः अनुसरणं मनुस्मृत्यामपि प्राप्यते। श्रीमद्भगवद्गीतायां वर्णानामुत्पत्तिः श्रीकृष्णात् एव दृश्यते। उत्पत्तेः अस्य क्रमस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतेऽपि

70%	MATCHING BLOCK 194/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

प्राप्यते यथा - विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा

मुखबाहूरुपादजाः। वर्णानां प्रकाराः श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य एकादशस्कन्धे सप्तदशेऽध्याये कृष्णोद्धवसम्वादे श्रीकृष्णः उद्धवं प्रति सम्बोधितं कुर्वन् कथयति यत् सृष्टेः आरम्भे कृतयुगे सकलमानवानां 'हंस' नाम्नः एकः वर्णः आसीत्। यथा – आदौ कृतयुगे वर्णो नृणां हंस इति स्मृतः। अस्य सम्वादस्यानन्तरं प्राप्यते यत्

त्रेतायुगे विराट्पु

रु

85%	MATCHING BLOCK 195/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

षात् ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राणा

मुत्पत्तिः अभवत्। अस्य क्रमस्योल्लेखः पूर्वस्य ग्रन्थेषु प्राप्नोति। ऋग्वेदीयपुरूषसूक्ते, यजुर्वेदीयपूरूषसूक्ते, अथर्ववेदीयपूरूषसूक्ते च द्रष्टव्यम्। धर्मसूत्रस्मृतिषु अस्य क्रमस्य वर्णनं कृतं – ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णाः। वर्णोत्पत्तीरुद्देश्यम् 'लोकानां तु वृद्ध्यर्थम्' अर्थात् लोकेस्थितसकलमानवानां सम्पूर्णसामाजिकव्यवस्थायाः सिद्ध्यर्थं वर्णानामुत्पत्तिः मनुस्मृत्यां कथिता। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य तृतीयस्कन्धस्य तृतीयेऽध्याये विराट्पुरुषात् वर्णानामुत्पत्त्या साकं तेषां कर्त्तव्यकार्याणामपि सूत्रात्मकशैल्यां वर्णितम्। यथा – यस्तून्मुखत्वाद्वर्णानां मुख्योऽभूद्ब्राह्मणो गुरूः। अर्थात् ब्राह्मणस्य मुखात् उत्पत्तिः भवति ऐतेन कारणेन ब्राह्मणः क्षत्रियवैश्यशूद्रवर्णानां गुरूः अस्ति। अत्र ब्राह्मणस्य विद्याभ्याससम्बन्धिकार्यान् प्रतिपाद्यते। क्षत्रियस्य कृति – यो जातस्त्रायते वर्णान् पौरूषः कण्टकक्षतात्। अथात् चैरादितत्त्वात् रक्षणं क्षत्रियस्य कर्त्तव्यमस्ति। इत्थं प्रकारेण व्यापारकर्मणि वैश्यस्य, सेवाकर्मणि शूद्रस्य च कर्त्तव्यानामपि उल्लेखः प्राप्यते। अनेन कारणेन स्पष्टं भवति यत् वर्णानामुत्पत्त्याः मुख्यप्रयोजनं समाजे स्थितसकलकार्याणां सम्पादनार्थं वर्णानामुत्पत्तिः कृता। या व्यवस्था अद्यपि अस्मिन् समाजे विद्यमानोऽस्ति। 3.1.1 ब्राह्मणधर्मः चतुर्षु वर्णेषु प्रथमं स्थानं ब्राह्मणस्य आयाति। अस्य वर्णस्योत्पत्तिः मुखाद्भवति येन कारणेन सः समाजस्य प्रमुखः श्रेष्ठश्च मन्यते। वेदपुराणधर्मादिशास्त्राणां सकलशिक्षायाः ज्ञानं कारयितुं प्रथमः अधिकारः अस्यैव वर्णस्य आसीत्। अत्र ब्राह्मणेन कर्त्तव्यकर्माणां वृत्यादीनां विवेचनं क्रियते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यसन्दर्भानां धर्मशास्त्रीयपरिप्रेक्षे तुलनात्मकं विवेचनं प्रस्तूयते। ब्राह्मणस्य श्रेष्ठत्त्वम् श्रीमद्भागवते प्राप्यते यत् ब्राह्मणः जन्मना एव गुरूः भवति। एतस्य वर्णनं श्रीशुकदेवः श्रीबलरामकृष्णयोश्च नामकरणसंस्कारस्य समये पुरोहितगर्गमुनेः माहात्म्ये नन्देन उद्घाटयति - "भवान् ब्रह्मवादीनां श्रेष्ठः तथा च सर्वान् मनुष्यान् संस्कारेण पावनीकर्तुं समर्थोऽस्ति यतोहि ब्राह्मणः जन्मना एव श्रेष्ठः गुरूश्च भवति"। यथा – त्वं हि ब्रह्मविदां श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुमर्हसि। बालयोरनयोनृणां जन्मना ब्राह्मणो गुरुः।। आपस्तम्बधर्मसूत्रेऽपि कथितं अयं वर्णः जन्मना गुरूः अस्ति। महाभारतेऽपि एतस्य विषये उल्लेखः लभ्यते। मनुस्मृत्यानुसारेण जात्याः विशिष्टातायाः, उत्पत्तिस्थानस्य श्रेष्ठतायाः, श्रुतिस्मृतिविहिताचरणात्, यज्ञोपवीताद्युच्चसंस्कारयुक्तात्, वेदशास्त्रादिज्ञत्वात् च ब्राह्मणः सर्ववर्णानां स्वामि इति कथ्यते। एवमुक्तप्रकारेण इदं स्पष्टं भवति यत् समाजे ब्राह्मणानाम् अत्यन्तम् उच्चस्थानम् आसीत्। किन्तु वास्तविकावलोकनेन ज्ञायते यत् इदं स्थानं तेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः एव आसीत् येऽहर्निशं त्यागमयतपस्वीजीवनवृत्त्या समाजस्य समक्षं उच्चादर्शं प्रस्तुतीकुर्वन्तिस्म। अथ च येषाम् उपरि देशस्य संस्कृतेः विकासस्य संरक्षणस्य च दायित्वम् आसीत्। अन्यथा समाजस्य अन्यवर्णैः प्रारम्भतः अद्यपर्यन्त एतां महत्तां पालयितुं न शक्यन्ते स्म। एतैः कारणैः महाभारते कथितं यत् स एव ब्राह्मणः पदवाच्यः भवितुमर्हति यः जातकर्मादिविविधसंस्कारैः सुसंस्कृतः स्यात्, यः पवित्रः स्यात्, वेदाभ्यासयुक्तः षट्कर्मणाम् अनुष्ठानकर्त्ता स्यात्, शौचेन सदाचारेण च युक्तः भवेत्, स्वकीयजीवनपालयन् गुरूवाक्येषु श्रद्धावान् स्यात्, वृतार्थी सत्यवादी च स्यात् स एव ब्राह्मणः भवितुमर्हति। एतैः लक्षणैः समन्वितब्राह्मणानां वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे वेदव्यासः, शुकदेवः, गर्गाचार्यः, सान्दीपनिः आदीनामाचार्याणां वर्णनं प्राप्यन्ते। ब्राह्मणजीवनस्योद्देश्यम् ब्राह्मणः अत्यन्तसात्त्विकवृत्त्या एवं जीवनं व्यापयेत् इत्यत्र प्रमाणार्थं इदं लभ्यते - यत् "ब्राह्मणस्य शरीरम् अत्यन्तं दुर्लभम् अस्ति। अतः अनेन शरीरेण सांसारिकविविधभोगानां, विषयाणाञ्च आनन्दप्राप्तयितुं नास्ति। इदं शरीरं कृच्छ्रादिव्रतानां करणार्थं एवं आनन्दस्वरूपमोक्षप्राप्त्यर्थमस्ति"। यथा – ब्राह्मणस्य हि देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते। कृच्छ्राय तपसे चेह प्रेत्यानन्तसुखाय च।। ब्राह्मणस्य लक्षणम् श्रीमद्भागवतमहापुराणे ब्राह्मणस्य लक्षणविषये वर्णनं प्राप्यते - "शमः, दमः, तपः, शौचं, सन्तोषः, क्षमा, लोकव्यवहारे सरलता, ज्ञान, दया, भगवत्परायणता, सत्यकथनञ्च" इत्यादि एतानि लक्षानि प्राप्यन्ते। यथा – शमो दमस्तपः शौचं संतोषः क्षान्तिरार्जवम्। ज्ञानं दयाच्युतात्मत्वं सत्यं च ब्रह्मलक्षणम्।। पुनः एकादशस्कन्धे पुनः कृष्णोद्धवसम्वादे ब्राह्मणस्य स्वभावविषये प्राप्यते यत् – शमः, दमः, तपः, सन्तोषः, क्षमा, लोकव्यवहारे सरलता, कृष्णभक्तिः, दया, सत्यकथनञ्च इत्यादि गुणाः ब्राह्मणस्य स्वभावस्य परिचायकाः भवन्ति। यथा – शमो दमस्तपः शौचं सन्तोषः क्षान्तिरार्जवम्। मद्भक्तिश्च दया सत्यं ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमाः।। अत्रिऋषिणा अपि ब्राह्मणस्य उपर्युलिखितलक्षणानां वर्णनं कृतम् यथा - पवित्रता, मङ्गलाचरणं, परिश्रमी, अनसूया, स्पृहा, दमः, दया, दानम् एते गुणाः समुपलभ्यन्ते। ब्राह्मणं सकलसाहित्येषु आदर्शरूपेण प्रस्तुतं कृतम्। यस्मात् ब्राह्मणेतरवर्णाः ब्राह्मणस्य सात्त्विकपूर्णजीवनशैलीं पश्यन् प्रेरणां प्राप्त्वा स्वस्य जीवनेऽपि एषां गुणानां विकासं कुर्युः एवं मनुष्यत्त्वं प्राप्नुयुः। ब्राह्मणस्य विहिताविहितकर्म श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतं ब्राह्मणस्य विहितकर्मणां वर्णनं समुपलभ्यते यस्मिन् यज्ञः, अध्ययनं, दानं, ब्रह्मचर्यञ्च अस्ति। यथा – इज्याध्ययनदानानि विहितानि द्विजन्मनाम्।। ब्राह्मणस्य कर्मान्तर्गतम् अध्ययनम्, अध्यापनं, दानं, प्रतिग्रहं, यजनं, याजनं एतेषां कर्मणामपि वर्णनं प्राप्यते। यथा – विप्रस्याध्ययनादीनि षडन्यस्याप्रतिग्रहः।। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य प्रथमस्कन्धस्य प्रथमोऽध्याये मुनिनां वर्णनं प्राप्यन्ते ये ब्राह्मणस्य कर्मान्तर-आगतानाम् अग्निहोत्रादिकर्मणां प्रतिदिनं कुर्वन्ति स्म यथा – मुनयः प्रातर्हुतहुताग्नयः। ब्राह्मणस्य वृत्यः वृत्तिं विना जीवनयापनं न भवति। इत्याकाङ्क्षया वृत्याः सम्बन्धेऽपि विषयः प्राप्यते यत् सः वार्ताशालीनयायावरशिलोञ्छवृत्त्यायैः स्वजीवनस्य पालयेत्। यथा – वार्ता विचित्रा शालीनयायावरशिलोंछनम्। विप्रवृत्तिश्चतुर्धेयं श्रेयसी चोत्तरोत्तरा।। प्रतिग्रहणम् इत्यस्य पदस्य अर्थः दत्तस्य दानस्य स्वीकरणम् इति तथा अध्यापनं, याजनञ्च एतानि त्रीणी कर्माणि केवलं ब्राह्मणेभ्यः एव विहितानि सन्ति। एतैः कर्मैः ब्राह्मणः एव जीवनं यापयेत्। अन्यवर्णः एतै कर्मैः जीवनं न यापयेत्। यथा – प्रतिग्रहोऽध्यापनं च ब्राह्मणस्यैव याजनम्।। एवं विधस्य आचरणस्य प्रोतसाहनाय श्रीमद्भागवते एतेषामाचराणां पालनेन प्राप्तानां फलानां वर्णनं कृतम् - "यः ब्राह्मणः गृहस्थधर्मस्य निष्कामभावेन निर्वहति, कृषिक्षेत्रादिहाटकेषु निपतितं बीजमन्नं च संगृह्य संतोषपूर्वकं स्वस्य जीवनं यापयति, स्वस्य शरीर-प्राण-अन्तःकरण-आत्मादीनां परमात्माश्रीकृष्णं समर्पयति, बन्धुवान्धवसंसारिकबन्धनादिषु कदापि आसक्तिं न करोति सः संन्यासं विना एव परमशान्तिसुखस्वरूपं परमपदमवाप्नोति।" यथा – शिलोञ्छवृत्त्या परितुष्टचित्तो धर्मं महान्तं विरजं जुषाणः। मय्यर्पितात्मा गृह एव तिष्ठन्नातिप्रसक्तः समुपैति शान्तिम्।। ब्राह्मणस्यापद्धर्मः श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य एकाशदस्कन्धे कृष्णोद्धवसम्वादे अर्थात् श्रीकृष्णेन उद्धवस्य कृते कृतस्य उपदेशस्य माध्यमेन ब्राह्मणस्यापद्धर्मस्य सम्बन्धे प्राप्यते यत् यदि सः अध्ययन-अध्यापनयाजनादिभिः जीविकां निर्वोढुम् असमर्थः भवति तर्हि तादृग्दशावस्थायां सः वैश्यवृत्त्याः अनुसरन् जीवनं यापयेत्। जीवनसंकटस्य समये क्षत्रियवृत्त्याऽपि जीवनं जीवेत् परन्तु कदाऽपि श्वानवृत्त्याः न आचरेत्। इत्थं प्रकारेण आपद्धर्मेऽपि सः क्षत्रियवैश्ययोश्च वृत्त्याः प्रयोगः जीविकार्थं कर्तुं शक्नोति। श्वानवृत्त्याः निषेधः अपि कृतमस्ति। यथा – सीदन् विप्रो वणिग्वृत्त्या पण्यैरेवापदं तरेत्। खड्गेन वाऽऽपदाक्रान्तो न श्ववृत्त्या कथंचन।। स्मृत्यावलोके विवेचनम् मनुयाज्ञवल्क्यादिस्मृतिषु ब्राह्मणस्य पूर्वोक्तकथितं षट्कर्माणां वर्णितमस्ति। यस्यान्तर्गतं अध्ययन-अध्यापन-यजन-याजन-दान-प्रतिग्रहणकर्माणि समाहिताः सन्ति। एतेभ्यः कर्मेभ्यः त्रीणि कर्माणि अध्यापनं याजनं प्रतिग्रहं तस्य जीविकायाः साधनस्वरूपे प्राप्यन्ते। तत्र वेदाभ्यासः ब्राह्मणस्य मुख्यं कर्म कथितम्। अत्रिसंहितायां ब्राह्मणस्य कृते 'तपः' इति अधिककर्मणः उल्लेखः

Ouriginal

प्राप्यते। अस्य इष्टपूर्तश्च कर्मयोः वर्णनमपि अत्रिसंहितायां कृतम्। लघुहारीताचार्यः अपि ब्राह्मणानां कर्मप्रकरणे एतानि एव कर्माणि प्रोवाच। एवञ्च अध्यापनस्य त्रिविधम् उद्देश्यम् उल्लिखितं कुर्वन् लिखति - यः ब्राह्मणः एतानि त्रीणि उद्देश्यम् विहाय अन्यम् उद्देश्यम् स्वीकृत्य अध्यापयति सः शूद्राचारसंज्ञको भवति। तानि त्रीणि उद्देश्यानि एवं प्रकारकानि भवन्ति - प्रथमं धर्मज्ञानार्थम् अध्यापनं, द्वितीयम् अर्थलाभार्थम् अध्यापनं, तृतीयं पूर्णतः परोपकारार्थम् अध्यापनम्। यत्रैव प्रमुखरूपेण वेदस्य अध्ययनेन सह धर्मशास्त्रस्य अध्ययन-अध्यापनयोश्च अपि निर्देशः समुपलभ्यते। ब्राह्मणस्य अन्याचाराणामपि

100%	MATCHING BLOCK 197/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम्।

पराशरस्मृत्यां अन्यस्मृतिभ्यां पृथक् षट्कर्मणां वर्णनं मिलति यानि कर्माणि अन्यस्मृतिषु नित्यकर्मरूपेण गण्यते तानि कर्माणि सन्

85%	MATCHING BLOCK 198/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

ति - सन्धा, स्नानं, जपः, होमः, देवपूजनं, वैश्

यदेवकर्म च इति। बुधस्मृत्यां सामान्यरूपेण अध्यापनं, याजनं, क्रयः, विक्रयः, शिलोञ्छः, भिक्षा, कृषिश्च इत्यादिना जीवनं यापयितुं शक्नोति। आपत्कालीनधर्माणां विषयेऽपि सर्वासु स्मृतिषु ग्रन्थेषु समानरूपेण एकस्यैव सिद्धान्तस्य प्राप्तिः भवति यस्यान्तर्गतं यदि ब्राह्मणः स्मृतिवर्णितविहितकर्मणां सम्पादनेन जीविकायाः प्राप्तिः न भवेत् तर्हि क्षत्रियवैश्यवृत्तिभ्याम् धनं प्राप्येत्। परन्तु सम्यक् स्थितिं प्राप्य आपद्धर्म त्यजन् पूर्ववत् स्वस्य स्वभाविककर्मणि प्रतिष्ठितं भवनीयम्। निष्कर्षः एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृत्याञ्च वर्णितसिद्धान्तानामवलोकनेन ज्ञायते यत् धर्मशास्त्रीयसिद्धानां परिपालनार्थं पौराणिकग्रन्थेषु कथात्मकशैल्या तेषां उपबृंहणं कृतम्। धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या श्रीमद्भागवते वर्णक्रमान्तर्गतं तेषां कर्मणां वर्णनं कृतं तेषु आपद्धर्मस्य समये शस्त्रधारणस्य वर्णनं प्राप्नोति। परन्तु पौराणिकग्रन्थेषु द्रोणाचार्यः, अश्वत्थामा, कृपाचार्यः एतेषाम् आगतानां पात्राणां सम्यक् अध्ययनेन प्राप्यते यत् तस्मिन् समयेऽपि ब्राह्मणः स्वस्य धर्मेण साकं क्षत्रियधर्मस्यापि परिवहतिस्म। धर्मशास्त्रेषु वर्णितं सम्मानं ब्राह्मणः तदैव प्राप्तं करोतिस्म यदा सः स्वस्य जीवने श्रुतिस्मृतिषु विहितनियमाचाराणां विधिवत् पालनं करोतिस्म गौतमधर्मसूत्रे अस्योल्लेखः प्राप्नोति। अनेन ज्ञायते यत् पूर्वस्मिन् समयेऽपि तादृशाः ब्राह्मणाः भवन्तिस्म ये स्वकीयानां कर्त्तव्यानां कर्मणां च सम्पादनं कुर्वन्तिस्म। समाजे तेषां सम्मानः नगण्यः भवतिस्म। तादृशाः ब्राह्मणाः पतिताः ब्राह्मणाः कथ्यन्तेस्म। स्मृतिग्रन्थेषु तादृशानां विधिवतवर्णनं

100%	MATCHING BLOCK 199/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्राप्नोति। एवं प्रकारेण

तत्कालीन समाजे द्विविधाः अपि ब्राह्मणाः विद्यमानाः आसन्। श्रीमद्भागवते तपस्वी ब्राह्मणस्वरूपे वेदव्यासशुकदेवादीनां वर्णनं प्राप्यते येषां जीवनं वैराग्यपूर्णाः आसीत्। समाजे वसन् शिक्षाप्रदानार्थं ऋषिसान्दीपनेः वर्णनं कृतम्। यस्य गुरूकुले अनेकानेकविद्यार्थीनां विद्याध्ययनं अभवत्। पुरोहितस्य स्वरूपे गर्गाचार्यस्य वर्णनं कृतम्। यः वसुदेवस्य कुलपुरोहितः आसीत्। येन विधिपूर्वकं बलरामकृष्णयोः नामकरणं कृतम्। अस्यां श्रृंखलायाम् अनेकानेकपात्राणां वर्णनं स्मृतिसम्मतम् आचारयुक्तः कृतम्। 3.1.2 क्षत्रियधर्मः ब्राह्मणवर्णानन्तरं क्षत्रियवर्णस्यैव महत्त्वपूर्णस्थानं समाजे प्राप्यते। क्षत्रियवर्णस्थाः जनाः समाजस्य संचालनं करोतिस्म तथा च प्राशासनिकं कार्यं, युद्धकार्यं, दण्डव्यवस्था, सकलप्राणिनां रक्षणम् इत्यादयः अस्यैव वर्णस्य प्रमुखाः कर्त्तव्याः आसन्। एतस्य वर्णस्योत्पत्तिः विराट्पुरुषस्य बाहुभ्याम् अभवत् यथा – बाहुभ्योऽवर्तत क्षत्रं क्षत्रियस्तदनुव्रतः। यथा मानवदेहे बाहू शरीरस्य रक्षाख्यं कार्यं कुरुतः तथैव विराट्पुरुषस्य बाहुभ्याम् उत्पन्नः क्षत्रियवर्णस्थ जनः देशसेवां करोति तथा तत्कालीनसमाजे देशस्थसमाजस्य सुरक्षायाः कर्त्तव्यकर्माणि क्षत्रियेण सम्पाद्यते यथा – योजातस्त्रायते वर्णान् पौरुषः कण्टकक्षतात्। क्षत्रियः स्वकीययुद्धकौशलेन प्रशासनिकव्यवस्थया च समाजस्य परिपालनं पोषणञ्च करोतिस्म। अस्मिन्नेवार्थैव श्रीमद्भागवतमहापुराणे क्षत्रियवर्णानां कर्माणि प्राप्यन्ते। यत्र चोक्तं - "राजा पितृवत् सकलप्रजानां कष्टं दूरीकुर्यात् यथा गजराजः अन्यानां गजानां रक्षणं करोति तथा च धैर्यं धारणं कुर्वन् स्वेन स्वात्मानः उद्धारं करोति"। यथा – सर्वाः समुद्धरेद् राजा पितेव व्यसनात् प्रजाः। आत्मानमात्मना धीरो यथा गजपतिर्गजान्।।

क्षत्रियलक्षणम् क्षत्रियाणाम् आत्मस्थितलक्षणानां वर्णनमपि श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते। अस्यान्तर्गतं - युद्धे उत्साहः, वीरता, धीरता, तेजस्विता, त्यागः, मनोजयः, क्षमा, ब्राह्मणान् प्रति भक्तिः, अनुग्रहः, प्रजायाः रक्षणं एतानि लक्षणानि प्राप्यन्ते। यथा - शौर्यं वीर्यं धृतिस्तेजत्याग आत्मजयः क्षमा। ब्रह्मण्यता प्रसादश्च रक्षा च क्षत्रलक्षणम्।। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य एकादशे स्कन्धे कृष्णोद्धवयोः सम्वादे श्रीकृष्णः एतान् क्षत्रियस्य प्रकृत्यान्तर्गतं वर्णनं कृतवान्। यथा – तेजो बलं धृतिः शार्यं तितिक्षौदार्यमुद्यमः। स्थैर्यं ब्रह्मण्यतैश्वर्यं क्षत्रप्रकृतयस्त्विमाः।। विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रे क्षत्रियस्य आत्मनि स्थितानां व्यवहारगतानां लक्षणानि समुपलभ्यन्ते अस्यान्तर्गतं तेजः, धैर्यं, दक्षता, सङ्ग्रामं प्रति अविमुखता, दानम्, ईश्वरभावेन प्रजानां परिपालनम् इमे गुणाः वर्णिताः। क्षत्रियकर्म श्रीमद्भागवतमहापुराणे पृथुचरित्रावलोकनेन क्षत्रियस्य कर्मणः सम्बन्धे वर्णितं प्रजायाः सर्वविधसंवर्धनं, सुशासनं, रक्षणञ्च क्षत्रियस्य कर्माणि सन्ति। मन्वादिस्मृतिग्रन्थेषु सामान्यतया प्रजायाः रक्षणं, दानं, यजनम्, अध्ययनं क्षत्रिणां धर्माः कथ्यन्ते। अस्यातिरिक्तोऽपि शस्त्रस्य धारणं करणमपि तस्य धर्मः कथितः। राजर्षिणा मनुना याज्ञवल्क्येन ऋषिणा च प्रजानां रक्षणं

क्षत्रियस्य विशिष्टः धर्मः वर्णि

87%	MATCHING BLOCK 200/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

तः। याज्ञवल्क्यस्मृत्याः मिताक्

Curiginal

षराटीकायां प्राप्यते यत् प्रजापालनप्रधानरूपेण तस्य धर्मः कथितः। सेवाविषये तु मिलति यत् सः ब्राह्मणस्यैव सेवेत। पृथ्वीपालनस्य सम्बन्धे निदेशः मिलति यत् सः शस्त्रान् धृत्वा, शत्रुसेनां विजित्य, प्रजायाः पालनं कुर्वन् धर्मपूर्वकं धरायाः शिष्यात्। गौतमस्मृत्यां क्षत्रियस्य कर्त्तव्यानां विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते। इत्थं प्रकारेण क्षत्रियवर्णस्य कर्त्तव्यकर्मणां वर्णनं स्मृतिग्रन्थेषु कृतम्। क्षत्रियस्य चरित्रम् चरित्रस्य सन्तुलनार्थं श्रूयते यत् सः सर्वदा स्वभार्यया सहैव जीवनं जीवेत् एवं स्वभार्यायां रमेत। समाजे परदाराणां न ऐच्छेत्। श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गतं मनुकृष्णबलरामपृथुऋषभादीनां जीवनावलोकनेन ज्ञायते यत् सर्वाः स्वभार्यासु रमन्ते। एतेषां जीवने चरित्रात्मकदोषाः न प्राप्यन्ते। नैतिकव्यवहाराणां शिक्षाप्रदानार्थं श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतं सिद्धान्तानां कथात्मकशैल्यां वर्णनं प्राप्यते। क्षत्रियस्य वृत्तिः श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते यत् क्षत्रियः अर्थपुरुषार्थस्य सिद्ध्यर्थं ब्राह्मणवर्णं परित्यज्

71%	MATCHING BLOCK 201/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

य अन्येभ्यः सर्वेभ्यः वर्णेभ्यः ते

षां योग्यतायाः क्षमतायाश्च अनुसारं धनानि कररूपेण ग्रहणं कुर्यात्। यथा – राज्ञो वृत्तिः प्रजागोप्तुरविप्राद् वा करादिभिः। स्मृतिग्रन्थेषु अस्यैव सिद्धान्तस्य सूक्ष्मचिन्तनेन स्पष्टीभवति यत् क्षत्रियः सामान्यावस्थायां प्रजायाः कररूपेण तासां धनानां षष्ठांशः स्वीकुर्यात्। इत्थं प्रकारं स्मृतिविहितसिद्धान्तानुसारं राज्ञः वृत्तिः वर्णिता। एतेन माध्यमेन तस्य जीवनं यापनं भवतिस्म। क्षत्रियस्यापद्धर्मः आपद्धर्मस्य सम्बन्धे प्राप्यते यत् यदा क्षत्रियः प्रजापालनादीनां माध्यमैः स्वस्य जीवनं यापनं कर्तुं न शक्नोति तदा सः अस्याम् अवस्थायां वैश्यवृत्त्याः आश्रयः स्वीकुर्यात्। वने गत्वा विविधपूशूनां वधं कृत्वा मृगयावृत्त्या जीवनं निर्वहेत्, ब्राह्मणवत् अध्यापनं कृत्वा जीवनं निर्वहेत्। परन्तु श्वानवृत्त्या तु कदापि जीवनं न जीवेत्। यथा – वैश्यवृत्त्या तु राजन्यो जीवेन्मृगययाऽऽपदि। चरेद् वा विप्ररूपेण न श्ववृत्त्या कथंचन।। सः आपत्कालेऽपि कृषिकर्म न स्वीकुर्यात्। वैश्यधर्मान्तर्गतं प्राप्तधर्मेण, शास्त्रविहितविक्रययोग्यवस्तूनां विक्रीणानः जीविकोपार्जनं कुर्यात्। यस्यान्तर्गतं विक्रयार्थं विहिताविहितवस्तूनां सङ्कलनं प्राप्यते। प्राणसङ्कटे सति सः ब्राह्मणवृत्त्याः न अनुसरेत्। अस्यां स्थित्यां प्रजायाः तेषां धनानां चतुर्थांशः कररूपेण गृह्णीयात्। आपद्धर्मस्य स्थित्यामपि सः स्वकर्त्तव्यानां पालयेत्। याज्ञवल्क्यस्मृत्याम् आपद्धर्मविषये प्राप्यते यत् क्षत्रियः तेषां वस्तूनां विक्रयः कुर्यात् येषां वस्तूनां विक्रयः ब्राह्मणः न कर्तुं शक्यतेस्म। गौतमस्मृत्यां क्षत्रियस्य कृते वैश्यकर्मणां वर्णनं मिलति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे क्षत्रियधर्मस्य प्रोत्साहनार्थं स्वधर्मपालनेन प्राप्तफलस्य वर्णनं कृतं - "यदि राजा स्वस्य धर्मस्य प्रालनं निष्ठापूर्वकं करोति तदा सः सूर्यसमप्रभविमाने आरुह्य स्वर्गलोकं गच्छति तत्र इन्द्रेण सह सुखपूर्वकं वसति"। यथा – एवं विधो नरपतिर्विमानेनार्कवर्चसा। विधूयेहाशुभं कृत्स्नमिद्रेण सह मोदते।।

निष्कर्षः असुरसमुदायात् सभ्यसमाजस्य सुरक्षात्मकदृष्ट्या क्षत्रियवर्णः अत्यन्तमहत्त्वपूर्णः वर्णः अस्ति। यस्य सुरक्षायाः सुशासनस्य च नेतृत्वे सभ्यसमाजस्थजनाः स्वस्य स्वस्य कर्माणि सफलतापूर्वकं पूर्णं कुर्वन्तिस्म। श्रीमद्भागवतमहापुराणे सद्गुणैः युक्तः श्रेष्ठक्षत्रियस्य स्वरूपे वर्णनं कतृम्। यः स्वस्य प्रजायाः सुरक्षायै समृद्ध्यर्थं स्वस्य श्रेष्ठप्रदर्शनं करोतिस्म। श्रीमद्भागवते निष्ठुरक्रूरकुशासकस्वरूपे क्षत्रियवेनस्य वर्णनं प्राप्यते। एवं प्रकारेण तत्कालीन समाजे क्षत्रियाणां वर्णनं प्राप्नोति। 3.1.3 वैश्यधर्मः भारतीयवर्णव्यवस्थायाः अन्तर्गतं वैश्यवर्णः वर्णक्रमपङक्त्यां तृ

100%	MATCHING BLOCK 202/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

तीयं स्थानं प्राप्नोति।

वैदिकग्रन्थानाम् अनुसरणं कुर्वन् श्रीमद्भागवतेऽपि अस्य वर्णस्य उद्भवः विराट्पुरुषस्य ऊरोः कथितः। यथा – विशोऽवर्तन्त तस्योर्वोर्लोकवृत्तिकरीर्विभो। ऋग्वेदे अयं शब्दः अनेकेषु मन्त्रेषु उद्धृतः। प्राचीनकालात् अद्यपर्यन्त अयं वर्णः समाजे आधारस्तम्भस्य रूपे प्रतिष्ठितमस्ति। एतेनैव समाजस्य सकलानाम् आर्थिकगतिविधिनां व्यापाराणाञ्च संचालनं क्रियते। तैत्तिरीयसंहितायां वैश्यवर्णं समाजे अन्यवर्णानाम् अपेक्षा संख्यात्मकदृष्ट्या बहुलसमुदायस्य रूपे निरूपणं कृतम्। समाजे पशुपालनं कृषिकर्म च अस्य वर्णस्य प्राचीनकार्यम् आसीत्। तत्कालीनसमाजे एतेषु वर्णितेषु कार्येषु अस्य महत्त्वपूर्णभूमिकायाः वर्णनं स्मृतिपौराणिकग्रन्थेषु अकरोत्। वैश्यलक्षणम् श्रीमद्भागवतमहापुराणे वैश्यस्य लक्षणानां वर्णनं प्राप्यते यत् देवतागुरुभगवतः प्रति भक्तिः, धर्मार्थकामपुरुषाथाणां रक्षा करणं, आस्तिक्यं, उद्योगशीलता, लोकव्यवहारे निपुणता। यथा – देवगुर्वच्युते भक्तिस्त्रिवर्गपरिपोषणम्। आस्तिक्यमुद्यमो नित्यं नैपुणं वैश्यलक्षणम्।। अस्यैव पुराणस्य एकादशस्कन्धस्य सप्तदशेऽध्याये वैश्यस्य स्वभावानां वर्णनं कृतं – आस्तिकता, दानकर्मणि निष्ठ., अदम्भः, ब्राह्मणानां सेवा, धनसंचयेन असंतुष्टिः इत्यादयः गुणाः प्राप्यन्ते। यथा – आस्तिक्यं दाननिष्ठा च अदम्भो ब्रह्मसेवनम्। अतुष्टिरर्थोपचयैर्वैश्यप्रकृतयस्त्विमाः।। वैश्यकर्मवृत्तिश्च कर्मदृष्ट्या श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते यत् वैश्यः ब्राह्मणानां अनुयायीं भूत्वा वार्तया वृत्त्या स्वस्य आजीविकां प्राप्नुयात्। यथा – वैश्यस्य वार्तावृत्तिश्च नित्यं ब्रह्मकुलानुगाः। विष्णुपुराणे वार्तावृत्त्याः अन्तर्गतं कृषिः, वाणिज्यं, पशुपालनम् इत्यादयः कर्माणि आगच्छन्ति। पुराणसाहित्ये प्राप्यते यत् एताः वृत्यः ब्रह्मणा वैश्यं जीविकायाः प्राप्त्यर्थम् अदत्त। श्रीमद्भगवद्गीतायामपि वैश्यस्य स्वभाविककर्मणाम् अन्तर्गतं कृषिः, गौरक्षा, वाणिज्यम् इत्यादिनं गणना कृता। यथा –

100%	MATCHING BLOCK 203/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।

पशूनां रक्षा, दानम्, अध्ययनं, कृषिकर्म, व्याजवृत्त्या जीवनं यापनं च वैश्यवर्णस्य धर्मान् कथितम्। गवां रक्षया, व्यापारकर्मणा जीवनं यापयेत्।

100%	MATCHING BLOCK 204/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

ब्राह्मणस्य क्षत्रियस्य

च सेवा वैश्

यकर्म कथितम्। धनैः ब्राह्मणान् संतुष्येत्, यज्ञसमये ऋत्विजान् तृप्तिकारकं भोजनं कार्येत्, मरणपर्यन्तं यज्ञादिकर्मसु धनादिभिः युक्त दम्भपूर्णवाण्याः न व्यवहरेत्। लघुहारीतस्मृत्यामपि कृषिः, गौरक्षा, पशुपालनं, व्यापारकर्म, लौहकर्म एतेषां कर्मणां वर्णनं वैश्यस्य विशेषकर्मसु प्राप्यन्ते। श्रीमद्भागवतस्य महापुराणस्य दशमस्कन्धे गोपानां वर्णनं प्राप्यते याः गवां रक्षणस्य, कृषिकर्मणः, व्यापारादीनां सम्पादनं स्वस्य जीवने कुर्वन्तिस्म। एतैः राजानं करप्रदानकरणस्य वर्णनमपि कृतम्। यथा – नन्दः कंसस्य वार्षिक्यं करं दातुं कुरूद्वह ।

वैश्यस्यापद्धर्मः श्रीमद्भागवतमहापुराणे वैश्यस्यापद्धर्मस्य विषये प्राप्यते यत् वैश्यः शूद्रवृत्त्या, कारुकर्मणा, जीवनं यापयेत्। यथा – शूद्रवृत्तिं भजेद् वैश्यः शूद्रः कारुकटक्रियाम्। कृच्छ्रान्मुक्तो न गर्ह्येण वृत्तिं लिप्सेत कर्मणा।। मनुस्मृत्यां कथितं यत् यदा स्वस्य धर्मस्य पालनेन जीवनं न यापयितुं शक्नोति तदा सः निषिद्धकार्यान् त्यजन् शूद्रवृत्या जीवनं यापयेत्। तथा पुनः सामार्थ्यापन्ने सति स्वस्य धर्मे प्रतिष्ठेत्। निष्कर्षः इत्थं प्रकारेण पौराणिकग्रन्थेषु स्मृतिग्रन्थेषु च प्राप्यसन्दर्भानां विवेचनेन ज्ञायते यत् वैश्यवर्णः समाजे अर्थव्यवस्थायाः आधारस्तम्भः आसीत्। अद्यपि अयं वर्णः समाजे आधारस्तम्भरूपेण स्थितः अस्ति। श्रीमद्भागवते स्मृतिषु च प्राप्यसन्दर्भानाम् अध्ययनेन प्राप्यते यत् श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतविचारधारायाः एव समर्थनं कृतम्। श्रीमद्भागवते गोपानां वर्णनं मिलति एतेषां वैश्यकर्मणा सह सम्बन्धः ज्ञायते। एते वैश्यवर्णस्थकार्याणां सम्पादनं कुर्वन्ति।

3.1.4 शूद्रधर्मः धर्मशास्त्रीयव्यवस्थायाः अन्तर्गतम् अस्य वर्णस्य व्युत्पत्तिक्रमे चतुर्थं स्थानं बुध्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे वैदिकग्रन्थानां अनुसरन् विराट्पुरुषस्य पादेभ्यः एतस्य वर्णस्य समुत्पत्ति अभूतदिति अवगम्यते। यथा – पद्भ्यां भगवतो जज्ञे शुश्रूषा धर्मसिद्धये। तस्यां जातः पुरा शूद्रो यद्वृत्या तुष्यते हरिः।। पी. वी. काणे महोदयानुसारेण "ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर जिन, दास और दस्युओं का उल्लेख मिलता है"। आर. एस. शर्मानुसारेण "शूद्र वर्णान्तरगत दास और दस्यु थे उचित नहीं है। वास्तव में आर्थिक तथा सामाजिक विषमताओं के कारण आर्य और आर्येत्तर दोनों ही वर्गों के अन्दर श्रमिक समुदाय का उदय हुआ जो भविष्य में शूद्र शब्द से सम्बोधित किया गया"। एतै वर्णस्थजनैः समाजे श्रमिककार्याणाम् आर्पूतिः कृता। शूद्रवर्णस्य एतेषां कर्मणां वर्णनं तत्कालीनसाहित्ये अकरोत्। पुराणेषु शद्रस्य मुख्यकर्त्तव्यं द्विजातिनां निश्चलसेवा करणमासीत् यथा – शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा। शूद्रलक्षणम् श्रीमद्भागवते शद्रवर्णानां लक्षणानां वर्णनं प्राप्यते। एतानि लक्षाणानि शद्राणाम् आत्मगतस्भावान् लक्ष्यते। अस्यान्तर्गतं - सज्जनानां सान्निध्ये विनम्रतापूर्वकम् आचरणं, शुचिता, सेवाकर्म, मन्त्रान् विना यज्ञकर्म, अस्तेयं, सत्यस्य गवां ब्राह्मणानाञ्च रक्षणं एतानि लक्षणानि अकथयन्। यथा – शूद्रस्य संनतिः शौचं सेवा स्वामिन्यमायया। अमन्त्रज्ञो ह्यस्तेयं सत्यं गोविप्ररक्षणम्।। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतस्य एकादशे स्कन्धे श्रीकृष्णोद्धवयोश्च सम्वादे शूद्रस्य एतानि लक्षणानि स्वभावरूपेण वर्ण्यते - विप्राणां गवां च सेवकर्म, देवानां यजनं, स्वपुरुषार्थेण प्राप्तसम्पायां संतुष्टिः शद्रस्य एते स्वभावाः प्राप्यन्ते। यथा – शुश्रुषणं द्विजगवां देवानां चाप्यमायया। तत्र लब्धेन सन्तोषः शूद्रप्रकृतयस्त्विमाः।। शूद्रकर्म

100%	MATCHING BLOCK 205/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।

श्रीमद्भवद्गीतायां शद्रवर्णस्य सेवाकर्म स्वभावरूपेण निरूपितम्। स्मृतिषु प्राप्यते यत् अयं वर्णः पंचमहायज्ञानां मन्त्ररहितेन सम्पद्येत्। अयं नित्यधर्मस्य पूर्तधर्मस्य च अधिकारी उक्तः। पुराणेषु निर्दिष्टोऽस्ति यत् शूद्रदम्पती सदा स्वस्य कर्मणि निष्ठावान् भवेत्, सः देशकालादीनां ज्ञाता भवेत्, रजोगुणात् तमोगुणात् विमुक्तः भवेत्, अहंकाररहितः भवेत्, शुद्धचित्तवान्, अतिथिसत्कारकर्त्ता, विनीतः, श्रद्धावान्, पवित्रतापूर्णः, लोभमोहाभ्याम् रहितः, अन्यं प्रति नमस्कारशीलः, चैर्यादिकुकृत्यादिगुणेभ्यः रहितः, गोब्राह्मणानां रक्षकः, स्वस्य भार्यायां रमेत्। लघुहारीतेन लघुहारीतस्मृत्यां शूद्रधर्मान्तर्गतं प्राप्यते - पाकयज्ञकरणस्य निर्देशः कृतः, याचकाय दानं दद्यात्, अलसं परित्यज्य पाकयज्ञेन देवानां यजनं विधिपूर्वकेन कुर्यात्। शूद्रवर्णः एकमात्रः वर्णः अस्ति यस्य कार्यं सर्वाणां वर्णानां सेवा करणम् अस्ति। विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रे प्राप्यते यत् सः क्रमेण त्र्याणां वर्णानां सेवाकर्माणि कुर्यात्। वेदज्ञानां गृहस्थब्राह्मणानाञ्च सेवा एव तस्य परमः धर्मः अस्ति। गौतमस्मृत्यां शद्रवर्णस्य कर्त्तव्यानां कर्मणां विस्तृतरूपेण वर्णनं कृतम्। शूद्रस्य वृत्तिः शद्रः यस्य सेवा करोति सः स्वामि सेवकस्य जीविकायाः निर्वहणं करोतिस्म। स्वामि येषां सम्पदायाः अर्जितिस्म तासु सम्पदासु सेवकस्यापि अधिकारः आसीत्। यथा – शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा वृत्तिश्च स्वामिनो भवेत्। शूद्रः स्वस्य बन्धुबान्धवानां भरणपोषणार्थं सर्वेभ्यः वर्णेभ्यः धनसङ्ग्रहणं कर्तुं शक्यतेस्म। स्वामिद्वारा प्रदत्तधनसम्पदासु सन्तुष्टः भवेत् यथा - तत्र लब्धेन संतोषः यदा द्विजसेवामात्रेण तस्य जीवननिर्वहणं न भवतिस्म तदा सः कारुकर्मणा आजीविकायाः प्राप्तस्य वर्णनं प्राप्यते। यथा – शूद्रः कारुकटक्रियाम् जीविकायाः इच्छया सः धनाढ्यवैश्यक्षत्रियाणां सेवां कुर्यात्। सर्वाणां वर्णानां सेवायाः अन्तर्गतं ब्रह्मवर्णानां सेवा तस्य विशेषकर्मरूपेण निरूपितम्। श्रीमद्भागवते प्राप्यवर्णनानुसारेणैव मनुस्मृत्यां शूद्रस्य वृत्याः सम्बन्धे प्राप्यते यत् तस्य वृत्याः व्यवस्था स्वामिः कुर्यात्। सः कषिकर्मणा, गवां रक्षणेन, वार्तया, वर्णानां सेवया, कारुकर्मणा च जीविकायाः प्राप्तिः कुर्यात्। शूद्रस्यापद्धर्मः श्रीमद्भागवतमहापुराणे सर्वाणां वर्णानां कृते आपद्धर्माणां वर्णनं कृतम्। अस्मिन् सन्दर्भे उक्तः निम्नवर्णस्य पुरुषः आपत्कालं विना उत्तमवर्णस्य वृत्तिनाम् अवलम्बनं न कुर्यात्। आपत्काले सर्वे वर्णाः सर्ववृत्तीः स्वीकुर्युः। आपत्कालेऽपि सर्वाभिः वृत्तिभिः जीवनं यापनं कुर्युः परन्तु श्वानवृत्त्याः आश्रयः न स्वीकुर्युः। यथा – जघन्यो नोत्तमां वृत्तिमनापदि भजेन्नरः। ऋते राजन्यमापत्सु सर्वेषामपि सर्वशः।। निष्कर्षः एवं प्रकारेण ज्ञायते यत् शूद्रवर्णः तत्कालीनसमाजे अन्यानां त्र्याणां वर्णानां सेवाकर्मणि संलग्नः आसीत्। अस्यातिरिक्तः सः कृषिमाध्यमेन शिल्पकलामाध्यमेन स्वस्य जीविकायाः प्राप्तुं स्वतन्त्रः आसीत्। श्रीमद्भागवतमहापुराणे शूद्रस्य कर्मणि सेवाकर्मणः वर्णनं कृतम्। श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गतं पात्राणाम् उल्लेखनं कृतमस्ति। यः सेवाकर्मणा स्वस्य जीविकां प्राप्नोति। अस्यान्तर्गतं एका त्रिवक्रा नाम्नः सेविकायाः वर्णनं मिलति या राज्ञः कंसस्य कृते मलयाचलचन्दनस्य लेपनिर्माणं करोतिस्म। एकस्य रजकस्यापि वर्णनं प्राप्यते येन वस्त्रप्रक्षालनस्य कार्यं सम्पद्यतेस्म। सौचिकस्य वर्णनं कृतं यत् वस्त्रान् सीव्यतिस्म। सुदामा नाम्नः एकः मालाकारः प्राप्नोति यः पुष्पाणां मालायाः निर्माणं कृत्वा राज्ञः कंसस्य सेवां करोतिस्म। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे शूद्रवर्णस्थपात्राणां वर्णनमपि कृतम् येषां जीवनं

87%	MATCHING BLOCK 208/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानां सेवा

कर्माणि संलग्नः आसीत्।

आश्रमधर्माः भारतीयसनातनपरम्परायां जीवनस्य लक्ष्यं वर्तते पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्तिः। पुरुषार्थचतुष्टयान्तर्गते धर्मार्थकाममोक्षाणां समावेशो वर्तते। एतेषां प्राप्तये जनाः सर्वदा प्रयत्नशीलाः भवन्ति। धर्मशास्त्रकारैः पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्तेः सुगमतायै चतुर्णामाश्रमाणां व्यवस्था कृता वर्तते, एते चत्वारः आश्रमाः वर्तन्ते -

100%	MATCHING BLOCK 206/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमश्च,

धर्मशास्त्रेषु एतेषामाश्रमाणां कर्तव्यस्य आचारस्य च विधानं कृतं वर्तते। आश्रमनियमान् पालयन् जनः निजकर्तव्यं परिसमाप्य पुरूषार्थचतुष्टयं प्राप्तुं शक्नोति, इत्थं प्रकारेण आश्रमाणां विधानं मानवजीवनस्य सफलतायै एव कृतं वर्तते।

भौतिकोन्नतिप्राप्तिः नापितु जन्मकर्मबंधनैर्मुक्तिप्राप्तिरेव मनुष्यस्य मुख्यं लक्ष्यं वर्तते। महाभारते चतुर्णामाश्रमाणां महत्त्वसंबन्धे प्राप्यते यत् सविधिपूर्वकं चतुरः आश्रमानङ्गीकृत्याचारस्य पालनं कृत्वा सः ब्रह्मलोके महीयते इति। इत्थं प्रकारेणाश्रमाणां व्यवस्था आनन्दपूर्वकजीवनशैल्या सह मोक्षप्राप्तेः साधनरूपापि वर्तते इति स्पष्टतया ज्ञातुं शक्यते ।

त्रिऋणात्मकतत्त्वमपि आश्रमव्यवस्थायाः मूले महत्त्वपूर्णतत्त्वरूपेणविद्यते। ऋषीणाम्, मुनी

87%	MATCHING BLOCK 207/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

नाम्, पुराणानां धर्मशास्त्राणा

ञ्चानुसारेण मनुष्यो जन्मप्रभृ

52%	MATCHING BLOCK 209/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

तित्रिभिः ऋणैर्युक्तो भवति – जायमानो ब्राह्मणस् त्रिभि

र् ऋणैर् ऋणवान् जायते, एतानि त्रीणि ऋणानीत्थं वर्ततन्ते - देवऋणम्, ऋषिऋणम्, पितृऋणम्। दैवीयकर्मकाण्डीय – पद्धतीनामवलम्बनेन सह नैरन्तर्येण यज्ञाद्यनुष्ठानविधानेन देवऋणान्मुक्तिर्जायते – यज्ञेन देवेभ्यः। वेदाध्ययनेन, निरन्तरवेदाभ्यासेन, अन्यशास्त्राणामध्ययनेन वा सः ऋषिऋणान्मुक्तो भवति। यथा - स्वाध्यायेन ऋषिभिः। अस्य प्राथमिकमुद्देश्यं तु ऋषीन् प्रति आभारप्रकटनमासीद् एषां कृपया वयं ज्ञानोपार्जनं कृतवन्तः। अतः सः ब्रह्मचर्याश्रमे उषित्वा ज्ञानोपार्जनं करोति स्म, ततश्च वानप्रस्थाश्रमं प्रविश्य स्वकीयं ज्ञानं ब्रह्मचारिभ्य एवमन्तेवासिभ्यः प्रदाय ऋषिऋणान्मुक्तो भवति स्म। सन्ततेः उत्पत्यनन्तरं सः पितृऋणान्मुक्तोभवति स्म। यथा - प्रजया पितृभ्यः। किन्तु पितृऋणान्मुक्तये गृहस्थाश्रमे प्रवेशः अनिवार्यः आसीद् यतोहि अस्मिन्नेवाश्रमे व्यक्तिः प्रजां संवर्ध्य निजपैतृकवंशस्य वृद्धिं कृत्वा पितृणाद्विमुच्यते स्म। महाभारतस्यानुसारं यो मनुष्यः ऋणत्रयान्मुक्तेः पूर्वमेव संन्यस्तो भवति, सः वेदविरूद्धमार्गमेवाश्रयते।

मनुस्मृतेः अनुसारं यो मनुष्यः ऋणत्रयान्मुक्तिं विनै

55%	MATCHING BLOCK 210/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

व मोक्षं प्राप्तुं प्रयतते सः अधोगतिं प्राप्नोति ।

इत्थं प्रकारेणाश्रमाणां व्यवस्था प्राचीनभारतीयमनीषिणामद्वितीयज्ञानस्य प्रज्ञायाश्च प्रतीकरूपेण वर्तते, यत्र ज्ञान – विज्ञानेन सह लौकिक – पारलौकिककर्मणां धर्मस्य भोगस्य त्यागस्य चाद्भुतसमन्वयस्य प्रदर्शनं भवति।

आश्रमशब्दस्य अर्थः संस्कृतभाषायां श्रमधातोः आश्रमशब्दस्य निष्पत्तिर्जायते, यस्य सामान्यरूपेणार्थो भवति – परिश्रमः। शब्दकल्पद्रुमे अस्य शब्

87%	MATCHING BLOCK 211/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

दस्य व्युत्पत्तिः आङ् उपसर्गपूर्वका

त् श्रमधातोः घञ् प्रत्यये सति प्रदर्शिता वर्तते। तत्रास्यार्थः 'शास्त्रोक्तधर्मविशेषः' इत्युको वर्तते, तस्यानुसारेण शास्त्रप्रोक्तधर्मविशेष एव आश्रम इत्युक्तः। वाल्मीकिरामायणे अस्यार्थः 'कुटी' इति स्वीकृतो वर्तते, अर्थात् तत्स्थलं यत्र तपस्विनः तपः पूर्णजीवनं यापयन्ति। पी. वी. वामनकाणे इत्यस्यानुसारं आश्रमशब्दस्य व्युत्पत्तिः अर्थो वा इत्थं वर्तते - 'आश्राम्यन्ति अस्मिन् इति आश्रमः' अर्थात् तादृशं जीवनस्तरं यत्रात्यधिकः परिश्रमः स्यात्।मनुस्मृत्या अनुसारमाश्रमव्यवस्थायाः प्रमुखं प्रयोजनं मनुष्यजीवनाय तादृशक्रमप्रदानं येन सः जीवनस्य सम्यग्विकासं कुर्वन् मुक्तिं प्राप्नुयात्। आश्रमव्यवस्था सनातनसंस्कृतेः अद्वितीयविशेषता वर्तते।

धर्मशास्त्रकाराः स्वीय - स्वीयग्रन्थेषु चतुर्भ्यः अपि आश्रमेभ्यः केषाञ्चन विशेषधर्माणां कर्तव्यानञ्च विधानं चक्रुः यस्य सम्पालनं प्रतिव्यक्ति अनिवार्यं वर्तते। महर्षिगौतमस्यानुसारं आश्रमधर्मविहीनो जनः पतितः स्वीक्रियते तथा एतादृशेन पतितेन सह वाद -सम्वादसम्बन्धिव्यवहारोऽपि निषिद्धो वर्तते। एतादृशस्य

जनस्य समाजे किमपि सम्मानजनकं स्थानं नासीत्, नैव च एतादृशाः जनाः समाजे कस्यचिज्जनस्य सम्माननस्याधिकारिणः आसन्।

3.2.1 ब्रह्मचर्याश्रमः

भारतीयधर्मशास्त्रकारैः स्वीयस्मृतिग्रन्थेषु मानवजीवनस्य प्रथमो भागः ब्रह्मचर्याश्रमाय योग्यो मन्यते। बालकस्य विद्याध्ययनयोग्यावस्थायाः प्राप्तौ सत्यांतस्याश्रमधर्माः प्रारभ्यन्ते। ब्रह्मचर्याश्रमप्रवेशात् पूर्वं पितृभ्यां तस्यान्यसंस्कारा अक्रियन्त,किन्तु ततः परम् आचार्यद्वारा ज्ञानं प्राप्नुवन् बालकः स्वयमात्मानं संस्कृतं कुर्वन् विकासाय प्रयतते। अस्मिन् आश्रमे वसन् सः निजशक्तीः संचयन् समस्तभौतिकसुखसुविधाभ्यः दूरे भूत्वा संयमितानुशासितजीवनं गमयति तथा स्वस्

76%	MATCHING BLOCK 212/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

य शारीरिकम्, मानसिकम्, आध्यात्मिकं

च विकासं करोति । इत्थं प्रकारेणायमाश्रमः इन्द्रिय -संयमस्य, चरित्रनिर्माणस्य, कठोरतपसः, अध्ययनस्य तथा अनुशासनस्य च काल - खण्डः मन्यते । अयमाश्रमः पूर्णरूपेण ग्रहस्थाश्रमाय आधारभूतो वर्तते। अस्मिन्नाश्रमान्तर्गतगुरुकुले वसन् विद्यार्थी आत्मानं शिक्षाद्वारा मानसिकरूपेण, चारित्रिकरूपेण तथा योग्यं करोति येन सः स्वीयगृहस्थाश्रमं पालयन् अन्येषां त्रयाणामाश्रमाणां पालनस्योत्तरदायित्वं निर्वोढुं शक्नुयात् । ब्रह्मचर्यम् इति मुख्यतया शब्दद्वयेन निष्पद्यते, यत्र प्रथमपदं 'ब्रह्म' तथा द्वितीयपदं 'चर्यम्' वर्तते। अत्र "ब्रह्म" - पदस्यार्थः महान् एवं चर्यपदस्यार्थः विचरणं वर्तते । इत्थं प्रकारेण ब्रह्चर्यस्यार्थः ब्रह्मणः मार्गे गमनं वर्तते । सामान्यरूपेण ब्रह्मचर्येण तात्पर्यम् इन्द्रियनिग्रहः अथवा वेदाभ्यासव्रतपालनमासीत्।

इत्थं प्रकारेण नियम – संयम - पालनपुरस्सरं वेद - वेदाङ्गाद्यध्ययनं ब्रह्मचारिणः प्रमुखं कर्तव्यं मन्यते। अस्मिन्नाश्रमे प्रवेशः उपनयनसंस्कारेण सह भवति। धर्मशास्त्रकारैः वर्गत्रयाय उपनयनसंस्कारस्य वर्णनमक्रियत, शूद्राय उपनयन - संस्कारस्य विधानं न प्राप्यते। ब्राह्मणस्योपनयनसंस्कारः अष्टमे

81%	MATCHING BLOCK 213/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

वर्षे, क्षत्रियस्य एकादशे वर्षे, वैश्यस्य च

द्वादशे वर्षे कर्तव्यः। अयं सन्दर्भः श्रीमद्भागवते इत्थं प्रकारेण प्राप्यते - "गर्भाधानादिसंस्काराणां क्रमे यज्ञोपवीत - संस्काररूपद्वितीयजन्म सम्प्राप्य गुरुकुले वसेत्। उपनयनस्य शाब्दिकोऽर्थः 'कुमारस्य आचार्यसमीपनयनमस्मिन् कर्मणि' तत्कृत्यं येनबालकः आचार्यस्य समीपम् आनीयते तथास्य संस्कारस्य माध्यमेन तस्य द्वितीयं जन्म भवति। वस्तुतः द्विजशब्दस्यतात्पर्यं जन्मद्वयेन वर्तते, एकं मातुःगर्भाद्, द्वितीयं मूंजमेखलाधारणस्य पश्चाद् गुरोः गर्भाद्, अस्मिन् जन्मनि सावित्री तस्य माता तथा आचार्यः तस्य पिता भवति ।

स्मृतिकालीनसमाजे ब्रह्मचर्याश्रमः पूर्णरूपेण वैराग्ययुक्तः आसीत्। मन्वादिस्मृतिषु विस्तारपूर्वकं ब्रह्मचर्यस्य आचाराणां वर्णनमक्रियत। तस्यान्तर्गते – उपनयनसंस्कारस्य पश्चाद् गुरुकुले प्रविश्य विध्यनुसारं क्रमेण वेदाध्ययनम् कर्तव्यम्। ब्रह्मचारी निजवर्णानुसारं चर्म, सूत्रम्, मेखलाम्, दण्डम्, वस्त्रादि धारयेत् ।सः इन्द्रियनिग्रहपूर्वकं तपसः नियमान् पालयेत्। नित्यकर्मान्तर्गते स्नानम्, देवानाम्, ऋषीणाम्, पितृगणानाञ्च तर्पणम्, देवार्चनम्, समिधाधानञ्च सन्ति।

ब्रह्मचारिणः निषिद्धकर्मणामुल्लेखः

श्रीमद्भागवते ब्रह्मचारिणः निषिद्धकर्मणां वर्णनं प्राप्यते यथा - अञ्जनधारणम्, सौन्दर्यवर्धकमुखरागादिचूर्णलेपनम्, स्त्रीणां चित्रनिर्माणम्, मांस - मद्यसेवनम्, सुगन्धितद्रव्यप्रयोगः, आभूषणादिधारणम्, गुप्तेन्द्रियाणां केशानां नखानाञ्च कर्तनादिकं निषिद्धकर्म वर्तते। सः निरीक्षणात्मकदृष्ट्या स्त्रियाः दर्शनम्, स्पर्शम्, वार्तालापादिकम्, मैथुनकर्म कुर्वन् प्राणिषु दृष्टिपातं न कुर्यात्। अस्मिन्नेव परिप्रेक्ष्ये स्मृति – ग्रन्थेष्वपि ब्रह्मचारिणः निषिद्धकर्मणां वर्णनं प्राप्यते। यथा - मधुमांसभक्षणम्, सुगन्धिद्रव्याणां लेपनम्, उत्कटाम्ल - मधुर – लवणादिरसयुक्तभोजनम्, मालाधारणम्, स्त्रीभिस्सह सम्पर्कः, प्राणिनां हिंसा, तैलादिना शरीरमर्दनम्, अंजनप्रयोगः, उपानद्धारणम्, छत्रधारणम्, कामः, क्रोधः, लोभः, नृत्यम्, गानम्, वादनम्, द्यूतः, वादविवादः, अन्यदोषाणां कथनम्, असत्यभाषणम्, मैथुनेच्छया स्त्रीदर्शनम्, स्पर्शः,वार्यस्खलनम्, एतानि सर्वाण्यपि कर्माणि ब्रह्मचारिणः कृते निषिद्धानि वर्तन्ते। यानि कर्माणि तेन न कर्तव्यानि ।

गुरुं प्रति ब्रह्मचारिणः आचारः

गुरुः, आचार्यः सर्वदेवमयः भवति सः ईश्वरस्वरूपः इत्युच्यते । आचार्यस्यानुगमनम् एवं सदाचारपूर्वकं सुश्रूषाविधानंब्रह्मचारिणः कर्तव्यं वर्तते । गुरोः समीपे वसन् ब्रह्मचारी मनः, बुद्धिम्, वाणीं शरीरं च संयमयन् गुरुं पश्यन् करबद्धस्सन् तिष्ठेत् । गुरोः आह्वाहने सति सः अध्ययनं कुर्यात् तथा अध्ययनात् पूर्वं पश्चाच्च क्रमशः शिरसा गुरुचरणौ प्रणमेत् । दक्षिणहस्तं उत्तरीयवस्त्राद् बहिः कृत्वा तिष्ठेत्, सदाचारं पालयन् गुरुद्वारा 'आस्यताम्' इति कथनात् परं गुरुं प्रति मुखं कृत्वा उपविशेत् । सः विद्यार्थी गुरोः अनुगमनं कुर्यात्, उपविष्टवतः गुरोः प्रतिश्रवणमुत्थाय कुर्यात्, गुरोः विपरीतदिशि मुखं कृत्वा तस्य प्रतिश्रवणं न कुर्यात्, गुरोःप्रतिश्रवणं तेन सहसम्भाषणञ्च विनम्रतापूर्वकं कुर्यात् । शिष्यस्य आसनम्, शय्या च गुरोः आसनादिभ्यः निम्नस्तरे स्यात् । गुरोः नामोच्चारणं न कुर्यात् तथा तस्य प्रत्येकं कार्यस्यानुकरणमपि न कुर्यात् । गुरोः दोषान् न शृणुयात्, इत्यादि प्रकारेणगुरुं प्रति शिष्यस्य आचाराणां वर्णनं प्राप्यते।

इत्थं प्रका

95%	MATCHING BLOCK 214/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

रेण ब्रह्मचारिणे भिक्षायाः,

Curiginal

आचमनस्य, भोजननियमस्य, वेदाध्ययनविधेः, गुरुवन्दन - विधेः, प्राणायामस्य, सावित्रीजपस्य, अग्निकार्यस्य, शौचाचारस्य, इन्द्रियसंयमस्य, संध्योपासनस्य, अभिवादनस्य, पंचमहायज्ञस्

100%	MATCHING BLOCK 215/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

य, नित्य-नैमित्तिककर्मणः,

इत्यादीनां वर्णनं सविस्तरं प्राप्यते ।

गुरूकुले विद्यार्थिनः आचारः

श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते ब्रह्मचर्याश्रमस्य वर्णनं सप्तमे एकादशे च स्कन्धे प्राप्यते, यत्रोक्तं वर्तते यद् ब्रह्मचारिणः मुख्यः धर्मः आचार्यस्य सेवाविधानं वर्तते । इन्द्रियाणां निग्रहं कुर्वन् सः गुरुकुले वसेत् तथा गुरूणां चरणयोः सुदृढानुरागं विधाय तद्धिताय का

100%	MATCHING BLOCK 216/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

र्यं कुर्यात् । प्रतिदिनं

गुरोः जागरणात् पूर्वं संजागृयात् तथा गुरोः शयनस्य पश्चात् शयनं कुर्यात्, वस्त्रभोजनादिकमपि गुरोः अपेक्षया न्यूनमात्रायामेव स्वीकुर्यात् । गुरुकुले वसन् वेद - वेदाङ्गाद्यध्ययनम् उपनिषदादीनाञ्चाध्ययनं कुर्यात् । सायंकाले प्रातः च गुरुम्, अग्निम्, सूर्यं तथान्यश्रेष्ठदेवान् उपासीत एवं द्वयोः सन्ध्ययोः मौनं भूत्वा एकाग्रचित्तः च भूत्वा गायत्रीं जपेत् । ब्रह्मचारी मेखलाम्, कमण्डलुम्, मृगचर्म, वस्त्रम्, जटाम्, दण्डम्, यज्ञोपवीतं तथा हस्ते कुशं धारयेत् । सायंकाले तथा प्रातःकाले भिक्षाटनं कुर्यात् तथा गुरवे समर्पयेत्, गुरोः आज्ञानुसारमेवभिक्षां गृह्णीयात् यदि आज्ञा न स्यात् तदा विना भोजनमेव तिष्ठेत् । शीलादिकं पालयन् अल्पाहारं कुर्यात् तथा श्रद्धवान् जितेन्द्रियश्च तिष्ठेत्, स्त्र्यधीनैः सह तथा स्त्रीवर्गेण सहावश्यकतानुसारमेव व्यवहरेत् । बलपूर्वकं निजेन्द्रियेषु संयमं धारयेत् । युवकः ब्रह्मचारी युवत्या गुरुपत्न्या स्वस्य केशप्रसाधनम्, शरीरमर्दनम्, स्नानम्, इत्यादि कार्याणि नकारयेत्, यदा ताःएकान्ते न स्युः तदापि आवश्यकतानुसारमेवताभिस्सहव्यवहरेत् । अस्य विशिष्टकारणमिदं वर्तते यद् यावद् आत्मसाक्षात्कारेण देहः इन्द्रियाणि च प्रतीतिमात्रमितिविनिश्चित्यस्वतन्त्रो न जायते तावदहं 'पुरुषः' 'इयं स्त्री' अयंद्वैतः खण्डितः न भवति, अथ च इदमपि निश्चितमेव यदेतादृशः पुरुषाः यावत् स्त्रियाः संसर्गे स्थास्यन्ति तावत् तासु तेषां भोग्य - बुद्धिः भविष्यति । ब्रह्मचारीवीर्यस्खलनं न कुर्याद् यदि भवति चेद् जले स्नानं कृत्वा प्राणायामं गायत्रीजपं च कुर्यात् । अग्नौ, गुरौ तथा सर्वप्राणिषु ईश्वरं सम्पश्यन् मामेव उपासेत, इत्थं प्रकारेण ब्रह्मचारी समेभ्यः पापेभ्यो विमुच्यते । यदि ब्रह्मचारी ब्रह्मलोकम् इच्छति चेत् तदा सः आजीवनं ब्रह्मचर्यव्रतं पालयेत् । शौचम्, आचमनम्, स्नानम्, सन्ध्योपासनम्, सरलता, तीर्थसेवा, जपः, मनसः, वाण्याः, शरीरस्य च संयमः, अस्पृश्यानामस्पर्शः, भक्ष्याक्ष्यविचारः, वाणीप्रयोगस्य विवेकः एते आचाराः ब्रह्मचारिणे सहैवान्यवर्गेभ्यश्चोक्ताः वर्तन्ते । गुरुदक्षिणासम्बन्धे प्राप्यते यद् यदि शिष्यः सामर्थ्यवान् वर्तते चेत् सः गुरोः अनुसारं दद्यात् ।

इत्थं प्रकारेणश्रीमद्भागवते त एव नियमाः प्राप्यन्ते ये च ब्रह्मचर्यसम्बन्धे

87%	MATCHING BLOCK 217/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

मनुस्मृतौ एवं याज्ञवल्क्यस्मृतौ

च प्राप्

यन्ते। ब्रह्मचारिणः समेषां नियमानामेकसाकमध्ययनेन ज्ञायते यद् ब्रह्मचारिणः प्रमुखमुद्देश्यं गुरुकुले उषित्वा वेदादिसकलविद्यानामध्ययनं भवति स्म, तत्र उषित्वा सः आश्रमस्य विविधक्रियाकलापैः व्यावहारिकं ज्ञानमर्जयति स्म । भिक्षाटनेन सः अहंकारादिदुर्गुणेषु विजयं प्राप्य विनयादिगुणैः सम्पन्नो भवति स्म । निषिद्धकर्मणांपरित्यागेन तस्य मनः, मस्तिष्कम्, ध्याने एकाग्रचित्तं भवति स्म, तथा सः बाह्याडम्बरैः मुक्तो भूत्वा अन्तर्मुखी संजायते स्म, इत्थं प्रकारेण ब्रह्मचर्यद्वारा सः स्वकीयं सम्पूर्णं विकासं करोति स्म ।

3.2.2 गृहस्थाश्रमः

ब्रह्मचर्याश्रमस्य पश्चाद् गुरोः आज्ञां स्वी

87%	MATCHING BLOCK 218/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

कृत्य ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रमं

प्रविशेत् । गृहस्थाश्रमः भारतीयसमाजे द्वितीयाश्रमरूपेण प्रतिष्ठितो वर्तते । ब्रह्मचारी समावर्तनोपरान्तं स्नानं कृत्वा क्रोधविनिर्मुक्तः प्रसन्नचित्तस्सन् गुरोराज्ञया सवर्णजातीयया, असगोत्रया, असपिण्डया, अप्रवरया, अस्पृष्टमैथुनया, युवत्या सह विवाहं कृत्वा गृहस्थाश्रमं प्रविशेत् । अस्मिन् आश्रमे जनः निजपारिवारिकस्य, सामाजिकस्य तथा धार्मिकस्य च कर्तव्यस्य निर्वाहं करोति तथा समाजस्य सशक्तीकरणे तथा गतिशीलतायां च निजयोगदानं ददाति स्म । सामाजिकधारणायाः अनुसारमेकाकी जनः यज्ञादिकर्मणां विधाने अयोग्यः भवति अतः सः विवाहोपरान्तं गृहस्थाश्रमं प्रविश्य

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 219/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

एतानि सर्वाणि कार्याणि सम्पा

दयति स्म्। एतमाश्रममं प्रविश्य सः सामर्थ्यानुगुणं धनं संगृह्य तस्य प्रयोगं स्वस्मै समाजाय च करोति स्म । धर्मशास्त्रकारैः गृहस्थिभ्यः उक्तं वर्तते यत् पूर्वं देवान्, पितृन्, अतिथीन्,

100%	MATCHING BLOCK 220/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

ब्रह्मचारिणः, वानप्रस्थिनः,

सन्यासिनः, भृत्यान् संपोषयेत् ततः अवशिष्टेन स्वीयं जीवनं यापयेत्। गृहस्थाश्रमः सामाजिकव्यवस्थायाः आधारस्तम्भरूपेण प्रतीयते यतोहि समेषामाश्रमाणां पालनमनेन आश्रमेण परिपूर्णरूपेण भवति । अयमेवाश्रमः नानाकर्तव्यानामुत्तरदायित्वानां च निर्वाहं कुरुते ।

पुराणेषु गृहस्थाश्रमस्य मान्यता सर्वश्रेष्ठत्तवरूपेण प्राप्यते । समस्तस्थावरजङ्गमविहङ्गमप्राणिनां जीवनं गृहस्थाश्रमेवालम्बते । परिव्राजकस्य, ब्रह्मचारिणः तथा वेदाध्येतुः, तीर्थगन्तुः, स्नानाय गतस्य देवदर्शनाय गतस्य भ्रमणकर्तुः वा येषां निश्चित भोजनप्रबन्धः नासीद् अर्थाद् यदा सायंकालः संजायते तत्रैव वासः क्रियते स्म, एतादृशानामाश्रयः गृहस्थाश्रम एव भवति स्म । गृहस्थः पूज्यपुरुषाणां जलेन, आसनादिना सत्कारं कृत्वा तेषां सम्मानं कृत्वा निर्धनो भूत्वापि धन्यो भवति स्म । देवानाम्, ऋषीणाम,पितृणाञ्चापि अस्मिन्नेवाश्रमे पूजनं भवति स्म । अत एव अयमाश्रमः पितृणाम्, देवानाम्, ऋषीणाम्, मनुष्याणां तथा समेषामन्यप्राणिनां स्वस्य च कल्याणस्याश्रयः कथितः । गृहस्थाश्रमे उषित्वा मनुष्यः धर्मम्, अर्थम्, कामम्, प्रजानन्दम्, अमृतम्, यशः, तथा शोकरहितं शुद्धलोकं च प्राप्नोति, यस्यं कल्पनां योगिनोऽपि न कर्तुं शक्नुवन्ति ।

गृहस्थस्य महत्त्वं तस्योच्चकर्तव्यानां कारणादेवासीत्, अतः गृहस्थाश्रमस्य श्रेष्ठतायाः मूलाधारः सदाचारः आसीत् । अन्यथा ऋद्धि - सिद्धिपरिपूर्णतायामपि कर्तव्यहीनगृहस्थस्य गृहं सर्पप्राणिनः आश्रयभूतवृक्षवन्निन्दितः आसीत्। क्रोधादिषट्शत्रून् जेतुं तेभ्यः रक्षणाय च गृहस्थाश्रमः उत्तमदुर्गरूपेण वर्तते । स्मृतिग्रन्थेषु गृहस्थस्य निमि

त्

100%	MATCHING BLOCK 221/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

तं नित्य - नैमित्तिक -काम्

यकर्मणां वर्णनमत्यधिकविस्तरेण एवं सूक्ष्मरूपेणाक्रियत ।

गृहस्थप्रकारः

धर्मशास्त्रकारैः गृहस्थस्य विविधप्रकाराणामुल्लेखः कृतो वर्तन्ते, यत्र बौधायनधर्मसूत्रे गृहस्थस्य द्विधा विभाजनं प्राप्यते, प्रथमः शालीनः द्वितीयश्च यायावरः । पी. वी. काणे इत्यस्यानुसारं शालीनाः गृहे तिष्ठन्ति, तेषां सविधे कर्मकराः पश्चादयश्च भवन्ति स्म, ते स्थिररूपेण ग्रामेषु निवसन्ति स्म, तेषां सकाशे समृद्धसम्पत्तिरपि भवति स्म तथा ते सांसारिकं जीवनं यापयन्ति स्म। किन्तु यायावराः अत्युत्तमजीविकया जीवनं यापयन्ति स्म, ते क्षेत्राद् अन्ननयनवेलायां यदन्नं धरायां पतति स्म तं तस्मात् क्षेत्रात् संगृह्य जीविकोपर्जनं कुर्वन्ति स्म । ते सम्पत्तेः संग्रहं न कुर्वन्ति स्म, याजनेन, अध्यापनेन, प्रतिग्रहेण वाजीवनं न यापयन्ति स्म । वैखानसधर्मसूत्रे गृहस्थानां चतुर्धा विभाजनं प्राप्यते ।

1. वार्तावृत्तिः-कृषिणा, पशुपालनेन, वाणिज्येन वा प्राप्तजीविकाः,

2. शालीनाः – याजनं विधाय प्राप्तधनेन गृहस्थस्य कर्तव्यानां निर्वाहकाः,

3. यायावराः- अध्ययनाध्यापनेन, यजन - याजनेन, दान - प्रतिग्रहेण वा जीवननिर्वाहकाः ।

4. घोराचारिकाः - अध्यापनेन, याजनेन, तथा प्रतिग्रहेण नापितु केवलं शिलोञ्छवृत्त्याअन्नं संगृह्य स्वयमेव याजकाः भवन्ति स्म।

महाभारते तथा याज्ञवल्क्यस्मृतौ उभयत्रापि गृहस्थस्य चतुष्प्रका

87%	MATCHING BLOCK 222/353	W	https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

राणामुल्लेखः प्राप्यते । महाभा

रतस्यानुसारं चत्वारः प्रकाराः आसन् -

1. कुसूलधान्यम् - विहितेभ्यः ब्राह्मणस्य षट्कर्मभ्यः प्राप्तजीविकाः ।

Curiginal

2. कुम्भधान्यम् - केवलमध्ययने, यजने दाने वा अनुरक्ताः ।

3. अश्वस्तनम् - अध्ययनाय दानाय च महत्तत्त्वं यच्छन्ति ।

4. कपोतीमाश्रिताः - केवलं स्वाध्याये दत्तचित्ताः ।

याज्ञवल्क्यानुसारेण अपि गृहस्थस्य चतुर्धा विभाजनं

100% MATCHING BLOCK 223/353 W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते

यथा –

1. कुसूलधान्याः - वर्षत्रयं यावद्धनसंग्राहकाः ।

2. कुम्भीधान्याः - एकं वर्षं यावत् सामग्रीसंग्राहकाः

3. त्र्यवाहिकाः - दिनत्रयं यावत् सामग्रीसंग्रहकाः ।

4. अश्वस्तनिकाः - केवलमेकस्य दिवसस्य कृते सामग्रीसंग्रहकाः ।

महाभारते एवं याज्ञवल्क्यस्मृतौ च केवलं विभाजितनामसु एव समानता प्राप्यते, तेषां जीविकोपार्जनसिद्धान्तेषु तु कथमपि समानता दृष्टिगोचरा न भवति । एतेषां समेषां विभाजनानामध्ययनेन स्पष्टी भवति यद् एते प्रकाराः ब्राह्मण - गृहस्थाश्रमवासिनामेव स्युः न तु वैश्यक्षत्रिययोरिति, यतोहि अन्यवर्गजनेभ्यस्तु नैकानि साधनानि स्मृतिग्रन्थेषु वर्णितानि सन्ति, केवलं ब्राह्मणस्य कृते एव जीविकायाः त्रीणि कर्माणि निर्दिष्टानि, तस्य कृते सामान्यपरिस्थितौ एतेभ्यः अतिरिक्तकर्मणां साधनानां वा विकल्पः न निर्दिष्टो वर्तते एवं धनस्य अन्नसंग्रहणस्य वा समस्या ब्राह्मणवर्णस्य कृते एव आसीदतः स्पष्टीभवति यदयं यः विभाजनप्रकारः प्राप्यते सः ब्राह्मणवर्णाय एव स्यादिति ।

श्रीमद्भागवतमहापुराणे गृहस्थाश्रमाय विविधकर्तव्यानाम्, कर्मणाम्, एवमनुष्ठानानां वर्णनं प्राप्यते । यस्यान्तर्गते उक्तं वर्तते यद् गृहस्थः पञ्चमहायज्ञैः अर्थाद् ब्रह्मयज्ञेन, पितृयज्ञेन, देवयज्ञेन, भूतयज्ञेन तथा अतिथियज्ञेन च श्रीकृष्णं यजेत ।

87% MATCHING BLOCK 224/353 SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

मनुस्मृतौ एवं याज्ञवल्क्यस्मृता

वपिपंचमहायज्ञानां निर्देशः प्राप्यते, अत्र पञ्चमहायज्ञाः विस्तृतरूपेण प्राप्यन्ते" गृहस्थः विवाहनिष्पादिताग्नौ गृह्यसूत्रानुसारं पञ्चमहायज्ञान् सम्पादयेत् । प्रारब्धप्राप्तवृत्त्या गृहस्थः यज्ञादिकार्याणि सम्पादयेत् तथा तत्रावशिष्टान्नेन निजजीवनं यापयेत् । गृहस्थः निजकार्याणि वासुदेवमर्पयेत् तथा महामुनीन् उपासेत । सः श्रद्धापूर्वकं भगवतः लीलावताराणां सुधापानं कुर्यात् । बुद्धिमान्पुरूषः अनासक्तभावेन अन्तरात्मना विरक्तस्सन् संसारेण शरीरेण च सह व्यवहरेत् । पुनः वैराग्ययुक्तव्यवहारस्य निर्देशः प्राप्यते यद् मात्रा - पित्रा, भ्रात्रा, बन्धुभिः, मित्रैः, तथान्यजनैस्सह अन्तरात्मना निर्ममतया तेषामनुमोदनं कुर्यात् । गृहस्थः समस्तसम्पत्तिमुपयुञ्जन् संचयराहित्येन इदं मन्येत यदिदं सर्वमप्यैश्वर्यमीश्वरप्रदत्तं वर्तते इति । मनुष्याणामधिकारः केवलं तावत्सम्पत्तौ वर्तते यावता तस्य क्षुधा उपसमेत । एतस्याः अधिकसम्पत्तिस्थापने तु सः चौरः एव भवति तथा दण्डस्य अधिकारी भवति । सर्वैः प्राणिभिस्सह पुत्रवद् व्यवहरेत् । त्रिवर्गस्य प्राप्तये अधिकं कष्टं न सहेत, देशकालप्रारब्धानुगुणं यत् प्राप्येत तस्मिन्नेव सन्तुष्टस्स्यात् । निजसम्पत्या सर्वानपि जीवान् संतोषयेत् । स्त्रीष्वनासक्तः स्यात् ।

गृहस्थद्वारा श्राद्धविधानस्यापि वर्णनं प्राप्यते । श्राद्धतिथीनां वर्णनमप्यक्रियत । स्नानेन, जपेन, तपसा, होमेन, व्रतेन, द्विजार्चनेन, पितृकार्येण च अक्षयफलप्राप्तेः वर्णनं प्राप्यते। शुभकार्यसम्पादनसमये दानस्य वर्णनम्, दानयोग्यपात्रेभ्य एव दानं दद्यात्। गृहस्थस्य मुख्यधर्मः समेषां प्राणिनां रक्षा वर्तते । इत्थं प्रकारेण श्रीमद्भागवते गृहस्थधर्माणां वर्णनं शास्त्र - सम्मतमेव प्राप्यते ।

एवं रीत्या वक्तुं शक्यते यद् व्यक्तिगतरूपेण, पारिवारिकरूपेण, सामाजिकरूपेण च सर्वतोभावेन गृहस्थाश्रमस्यात्यधिकं महत्त्वं वर्तते । अस्मिन्नेवाश्रमे उषित्वा जनः देवऋणात्, पितृऋणात् , ऋषिऋणाच्च मुक्तिं प्राप्नोति स्म । पञ्चमहायज्ञानांमाध्यमेन सः निजपरिवारस्य भरण - पोषणेन साकं समाजस्यान्यसदस्यान् प्रत्यपि निजकर्तव्यं पालयति स्म, अस्मिन्नेवाश्रमे सः धर्मार्थकामपुरुषार्थान् अर्जयन् प्राप्तिमार्गे संलग्नो भूत्वा तिष्ठति स्म, यत् समस्तमानवजीवनस्यान्तिमं चरमं च लक्ष्यं भवति । अन्याश्रमाणां पालन - पोषणं गृहस्थाश्रमद्वारा एव भवति स्म अत एव गृहस्थाश्रमः सर्वोत्तमः आश्रमः तथान्याश्रमाणामाधारः मन्यते स्म ।

3.2.3 वानप्रस्थाश्रमः अयमाश्रमः सांसारिकसमस्तबन्धनेभ्यः मुक्त्युद्देश्यस्य दृष्ट्या प्रथमसोपानं मन्यते स्म। यथा

100% MATCHING BLOCK 225/353 W https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

ब्रह्मचर्याश्रमः गृहस्थाश्रमा

य आधाररूपेण वर्तते तथैववानप्रस्थः संन्यासे प्रवेशाय योग्यत्त्वं सम्पादयति स्म । अस्मिन्नाश्रमेऽपि प्रवेशस्य आयुषः वर्णनं न प्राप्यते । यदा मनुष्यः गृहस्थाश्रमसम्बन्धिनिजकर्माणि, उत्तरदायित्वानि, कर्तव्यान् पूर्णरूपेण सम्पादयति स्म तदा तस्यास्मिन्नाश्रमे प्रवेशायानुमतिः भवति स्म । क्रमदृष्ट्यायमाश्रमः

तृतीयस्थाने वर्तते। एवं रीत्या मनुष्यस्य आयुषः तृतीयकालखण्डे अस्याश्रमस्य कर्तव्यानाम्, नियमानां निर्वाहः अनिवार्यः आसीत्। महाभारते प्राप्यते यद् यदा गृहस्थः वृद्धत्वं प्राप्नुयात्, तस्य सन्ततेः अपि सन्ततिः संजायेत तदा अर्थाद् यदा सः गृहस्थाश्रमस्य सर्वोत्तरदायित्वानां पालने समर्थः स्यात् तदा सः निजेन्द्रियाणि वशीकुर्वन् पत्न्या सह पत्नीं विना वा जीवनस्य तृतीयभागरूपं वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत्। श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् "गृहस्थमनुष्यः वानप्रस्थाश्रमप्रवेष्टुः भार्यायै पुत्रान् समर्प्य अथवा आत्मना सह संस्थाप्य शान्तचेतसा निजायुषः तृतीयकालखण्डमरण्ये गमयेत्। याज्ञवल्क्यः कथयति यद् "गृह्याग्निना सह सपत्नीकः पत्निं विना वा वानप्रस्थं प्रविशेत् ।अयमेव भावः मनुस्मृतावपि प्राप्यते - "स्नातकद्विजः शास्त्रविधानानुसारं वृद्धावस्थायाम् अग्निहोत्रस्य साधनगार्हपत्यादिना सह जितेन्द्रियस्सन् वने निवशेत्। लघुहारीते अप्युक्तं वर्तते यद् "सम्यग्रीत्या पुत्रपौत्रादीन् निजवृद्धावस्थां च दृष्ट्वा, निजभार्यां पुत्रेभ्यः समर्प्य अथवा अत्मना सह संस्थाप्य वनं गच्छेत्। बौधायनस्यानुसारंवैखानसऋषिद्वारोपदिष्टशास्त्रानुसारं चाचरणशीलः जन एव वानप्रस्थी वर्तते। अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः जीवनं वैखानसव्रतमुक्तम्। मनोः अनुसारं वानप्रस्थे जीवयिता वैखानसशास्त्रानुसारं जीवनं यापयेत्।

वानप्रस्थिप्रकाराः

विष्णुस्मृतौ एवं बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्रे च वानप्रस्थिनः चतुर्णामाश्रमाणामुल्लेखः कृतो वर्तते। विष्णुस्मृतेः अनुसारं यथा –

1. भूरिसंवार्षिकः – ये वानप्रस्थिनः एकवर्षाय विधिपूर्वकं वनस्यान्नादिपदार्थान् संगृह्णन्ति तथा वानप्रस्थस्यधर्मे तत्पराः सन्तः, जितेन्द्रियाः भूत्वा समयं यापयन्ति।

2. अन्यप्रकारकाः वानप्रस्थिनः मृत्युपर्यन्तं वने निवसन्ति वने प्राप्यमाणस्यान्नस्य षड्मासं यावत् संग्रहं कुर्वन्ति, पंचमहायज्ञे तत्पराः भवन्ति एकस्यां रात्रौ उपवासं कृत्वा द्वितीयदिवसस्य रात्रौ भोजनं कुर्वन्ति तथा धर्मपूर्वकं शरीरं त्यजन्ति।

3. तृतीयप्रकारस्यवानप्रस्थिनः एकस्मै मासाय अरण्यान्नसंग्रहं कुर्वन्ति शुद्धव्रतमेवं कर्माणि च कुर्वन्ति। रात्रिद्वयं उपवासं कृत्वा तृतीयदिवसस्य रात्रौ भोजनं कुर्वन्ति।

४. सद्यः प्रक्षालकः - एतेमात्रमेकस्य दिवसस्य कृते अरण्यान्नस्य संग्रहणं कृत्वा पञ्चमहायज्ञे तत्पराः भवन्ति।

बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्रे अपि भिन्ननामभिः प्रकाराः लक्षणानि च प्राप्यन्ते यानि विष्णुस्मृतिप्राप्तलक्षणेभ्यः भिन्नानि सन्ति- यथा

1. वैखानसः - यः अन्तेवासी अरण्येवसन् फलानि, मूलानि तथा कृष्टभूम्यन्नं गृह्णाति, अग्निहोत्रं पंचमहायज्ञं च करोति सः आत्मज्ञानी वैखानसवानप्रस्थः कथ्यते।

2. उदुम्बरः - अयं वानप्रस्थी पूर्वदिशातः फलानि, अकृष्टभूम्यन्नं समिधामादाय च पञ्चमहायज्ञमग्निहोत्रं च करोति, सः महाज्ञानी अपि कथ्यते।

3. फेनपः - यः चतुराभ्यासकर्ता वनवासी, फलात् निष्पन्नतैलेन, वन्यफलेन, श्रुतिविहितवन्यान्नेन चाग्निहोत्रं करोति, जलाशयनिष्पन्नपवित्रजलेन तथा अयाचितवन्यफलेन वनान्नेन चपञ्चमहायज्ञं करोति सः फेनपः कथ्यते।

4. वालखिल्यः – यः वल्कलं तथा चीवरं च धारयति, अग्निहोत्री आत्मज्ञानी चास्ति, संगृहीतान्नं कार्तिकमासस्यान्ते त्यजतिसः वालखिल्यः इत्युच्यते।

इत्थं प्रकारेण वानप्रस्थिनां चतुष्प्रका

100%	MATCHING BLOCK 226/353	W	https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

राणामुल्लेखः प्राप्यते।

विष्णुस्मृतिवर्णितवानप्रस्थिनां प्रकारेषु द्वितीयतृतीयनाम्नामुल्लेखो नास्ति। बौधायनधर्मसूत्रे पचमानकस्य अपचमानकस्य द्वयोः वानप्रस्थिप्रकारयोः वर्णनं प्राप्यते। द्वयोरपिपञ्च-पञ्चभेदाः प्राप्यन्ते। पचमानकस्यपञ्चप्रकाराः प्राप्यन्ते – 1. सर्वारण्यकः 2. वैतुषिकः 3. कन्दमूलभक्षकः 4. फलभक्षकः 5. शाकभक्षकः। इत्थं प्रकारेणैव अपचमानकस्यापि पञ्चप्रकाराः प्राप्यन्ते- 1. उन्मज्जकः 2. प्रवृत्ताशिनः 3. मुखेनादायिनः 4. तोयाहारः 5. वायुभक्षकः च। वैखानसधर्मसूत्रानुसारमपि सपत्नीकापत्नीकनामकभेदद्वयं प्राप्यते। सपत्नीकस्य चत्वारः भेदाः प्राप्यन्ते - 1. औदुम्बरः 2. वैरिंचः 3. बालखिल्यः 4. फेनपः | अपत्नीकस्य अनेकभेदाः प्राप्यन्ते। इत्थमेव महर्षिवाल्मीकिरचितरामायणस्य अरण्यकाण्डे वानप्रस्थिनामनेककोटीनां वर्णनं प्राप्यते यस्यान्तर्गते - वैखानसः, वालखिल्यः,सम्प्रक्षालकः, मरीचिपः, अश्मकुट्टः, शीर्णपर्णाशिनः, पत्राहारः, तापसः, दन्तोलूखली, अन्मज्जकः, गायशय्यः, अशय्यः, अनवकाशिकः, मुनिः, सलिलाहारः, वायुभक्षकः, आकाश - निलयः, स्थण्डिल - शाही, उर्ध्ववासी, दान्तः, आर्द्रपटवासाः, सजपः, तपोनिष्ठः, पञ्चाग्नि

58%	MATCHING BLOCK 227/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

सेव्यादिवानप्रस्थिनामुल्लेखो प्राप्यते।

वानप्रस्थवर्णितानामाचारात्मकधर्माणामुद्देश्यम्

अस्मिन्नाश्रमे वर्णितधर्माणां प्रमुखमुद्देश्यं वासनारागद्वेषमिश्रितगृहस्थाश्रमजीवनस्याचाराद् भिन्नः संयमपूर्णाचारयुक्तः भूत्वा तपोनिष्ठः च भूत्वा अरण्ये वसन् परमतत्त्वस्यान्वेषणमासीत्। अयमाश्रमः ब्रह्मचर्याश्रमस्य संयमपूर्णाध्ययनशील - जीवनस्य तथा गृहस्थाश्रमस्य सुविधाजनकसेवायुक्तजीवनस्य च आचाराणां समुच्चयस्वरूपः आसीत्। अनया विधिना सः वने निवसन् शनैः - शनैः स्वाध्ययनेन, तत्त्वचिन्तनेन, तपस्यया च निजव्यक्तित्वविकासे समर्थो भवति स्म। अतः इदमारण्यकजीवनं संन्यासाश्रमस्य सिद्धतासीद् यत्र समस्तमानसिकविकाराणां शमनं भवति स्म। इत्थं प्रकारेण कठिन - तपसा, त्यागेन, संयमेन, साधनया, आत्मनिग्रहेण पवित्रतापूर्णजीवनं यापयन् वैराग्यप्राप्तिः उद्देश्यम् आसीत्।

Curiginal

अनेनाश्रमेण सम्बन्धिताचारस्यवर्णनं श्रीमद्भागवतस्य सप्तमस्कन्धे एकादशस्कन्धे च उपदेशरूपेण प्राप्यते । यत्र नारद-युधिष्ठिरस्य एवं कृष्णोद्धवस्य च सम्वादरूपेण प्राप्यते, प्राप्तविषयाणां च विवेचनमित्थं प्रकारेण प्राप्यते ।

आहारनिमित्तं पदार्थः एवम् आहारविधिः

श्रीमद्भागवतमहापुराणे वानप्रस्थिनः आहारसम्बन्धिविषये वर्णनं प्राप्यते, अस्यान्तर्गते उक्तमस्ति यद् "वानाप्रस्थी कृष्टभूम्युत्पन्नमन्नम्, अकृष्टभूम्युत्पन्नमन्नम्, अग्निपाकान्नम्, अपक्वान्नं च न गृह्णीयात् केवलं सूर्यतापेन पक्वमन्नमेव गृह्णीयात् | सः वनस्य पवित्रकन्द – मूलैः अन्यफलैरेव वा शरीरस्य निर्वाहं कुर्यात् । कन्दमूलानि सः अग्नौ भर्जनं कृत्वा, समयानुसारपक्वफलानि ऊलूखले पाषाणे वा कुट्टनं कृत्वा यथासौविद्ध्यं दन्तैः चर्बणं कृत्वा वा भक्षयेत् । सः कं पदार्थं कुतः आनयेत्, कदानयेत्, कं पदार्थं भक्षयेत्, इत्यादिकं ज्ञात्वैव स्वजीवननिर्वाहाय स्वमेव सर्वविधकन्दमूलादीनां संग्रहं कुर्यात् । देशकालाद्यनभिज्ञजनद्वारा आनीतान् भूतकाले संग्रहीतान् वा पदार्थान् नोपयुञ्जेत। महाराजमनुरपि इत्थमेव वानप्रस्थिनां कृते वर्णनमकरोत् - भूमौ उत्पन्नानि, जले उत्पन्नानि शाकादीनि, पवित्रवृक्षोत्पन्नपुष्पाणि, फलानि, मूलानि तथा फलनिष्पन्नतैलान्यपि भक्षयेत् । वानप्रस्थिनां वर्जितान्नेषु मधु, मांसः, कवकम्, भूतृणम्, शेलुफलम्, कृष्टभूम्युत्पन्नमन्नम्, ग्रामे उत्पन्नफलमूलानां परिगणनं वर्तते । अग्नौ पक्वम्, समयानुसारं वृक्षेभ्यः प्राप्तफलानि, पाषाणकुट्टितम्, उलुखले वा कुट्टितं दन्तैः चर्बणं कृत्वा भोक्तव्यम् । पूर्वसंचितमन्नम् अश्विनमासे संत्यजेत् । महर्षियाज्ञवल्क्यः एकस्मै दिवसाय, एकमासाय, षड्मासाय एकवर्षाय च भोजनसंग्रहस्य वर्णनं कृतवान् । मनुस्मृतौ एतेषां कृते भोजनग्रहणस्य मात्रायाः वर्णनं कृतं वर्तते यत् ते अष्टग्रासपरिमितमेव भोजनं स्वीकुर्युः । इत्थं प्रकारेण भागवते स्मृतिग्रन्थेषु च वानप्रस्थाहारसम्बन्धी यः विषयः प्राप्यते तत्र समानान्तरभावो विद्यते ।

हवनमग्निहोत्राद्याचारश्च

वने स्वयमुत्पन्नधान्यद्वारा नित्य - नैमित्तिककर्मसम्पादनाय चरुपुरोडाशनिर्माणं कृत्वा समयानुसारं संध्यासमये हवनं कुर्यात् । अग्निहोत्रस्य अग्नेः रक्षायै गुहासुकन्दराणामाश्रयं स्वीकृत्य वसो विधातव्यः । वेदविहितपशुद्वारा सः वानप्रस्थी माम् न यजेत्। देवताभिः वानप्रस्थिने अग्निहोत्रस्य, दर्शपौर्णमासस्य, चातुर्मास्यादीनां विधानं तथैव कृतं वर्तते यथा गृहस्थिभ्यः कृतं वर्तते । मनुस्मृतौ इत्थं प्रकारेण वर्णनं प्राप्यते, यथा - अग्निहोत्रम्, पंचमहायज्ञः, भिक्षाप्राप्तान्नेन बलिहरणम्, पुनः अग्निहोत्रम्, दर्शेष्टिः, पौर्णमासः, नक्षेष्टिः, आग्रयणेष्टिः, चातुर्मासस्येष्टिः, उत्तरायणयज्ञः, दाक्षायणयज्ञः, पुरोडोशचरूद्वारा देवताभ्यः होमः इत्यादीनां वर्णनमक्रियत ।

58%	MATCHING BLOCK 229/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)
याज्ञवल्क्यस्मृतौ उक्तमस्ति यद् गृह्याग्निना			

सह वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत् । अनेन वाक्येन ज्ञायते यत् सोपि अग्निहोत्रादिकं समर्थयतीति। अग्नेः रक्षायै पर्णकुटीरे गुहासु वा वासः भवति स्म तथा स्वयमनावृते स्थले । लघुहारीमध्येपि इत्यत्र अग्निहोत्रविधानस्य वर्णनं प्राप्यते ।

वानप्रस्थाश्रमे व्रतम्

वानप्रस्थीपुरुषः यदा रोगेण जरया वा निजकर्तव्यविधानेऽसमर्थः स्यात्, वेदान्तादिवर्णिततत्त्वचिन्तने वा समर्थः स्यात् तथा अनशनादिव्रतानि अनुष्ठेयानि । मनुस्मृत्यनुसारमुक्तं वर्तते यत् चान्द्रायणविध्यनुगुणं मासस्य शुक्लकृष्णपक्षयोः सः वृतमाचरेत्, अथवा शुक्लपक्षान्ते एव तरलरूपेणापक्वं यवागूं सेवेत । याज्ञवल्क्यस्मृतावपि वर्णितं यत्चान्द्रायणव्रतेन अथवा सर्वदा कृच्छ्रव्रतं कुर्यात्, पक्षानन्तरं मासानन्तरं दिनस्यावसाने वा भोजनं कुर्यात् ।

वानप्रस्थाश्रमे वस्त्राणि

वानप्रस्थी वस्त्रस्य स्थाने वृक्षवल्कलेन, पत्रेण, तृणेन वा आच्छादनयोग्यं वस्त्रसदृशं निर्माय धारयेद् मृगचर्म वा धारयेत् । मनुस्मृतौ मृगचर्म, खण्डितवस्त्रं च पूर्णरूपेण वस्त्रं नोक्तमतः तमेव धारयेत् । अश्विनमासागमनेन सह सः जीर्णवस्त्राणि संत्यजेत् ।

वानप्रस्थाश्रमे शौचाद्याचारः

वानप्रस्थी केशान्, रोमाणि, नखान्, समश्रुसदृशान् शरीरस्य मलानि नापसारयेत्, दन्तधावनादिकर्माण्यपि न कुर्यात्, तडागनद्यादिषु, सरोवरादिषु वा स्नायात् पृथिव्यां च शयीत । अयमेव नियमः मनुयाज्ञवल्क्यस्मृत्यादिष्वित्थं प्रकारेण प्राप्यते यत् सः प्रातःकाले स्नायात्, जटारोमनखादिकं च धारयेत् । वानप्रस्थिद्वारा सायं - प्रातः मध्याह्ने च स्नानं कर्तव्यम्।

वानप्रस्थाश्रमे शयनाद्याचारः

मनुस्मृत्यनुसारंभूमावेव विपरिवर्तयेत् । पृथिव्यां शयीत । याज्ञवल्क्यानुसारं शुद्धो भूत्वा भूमावेव शयीत । श्रीमद्भागवतानुसारमपि अस्यैव समर्थनं कुर्वाणो वेदव्यासः कथयति यत् सः पृथिव्यामेव शयनं कुर्यात् । शय्यायामासन्दे च आच्छादनं विनैव भूमौ शयीत ।

वानप्रस्थाश्रमे सहनशीलता

श्रीमदभागवते वानप्रस्थिने शारीरिकसहनशीलतायाः वर्णनं प्राप्यते यत् सः शीतवायोः, अग्नेः, वर्षायाः, च प्रकोपादिकं सहेत । व्रतादिद्वारा तावानेव कष्टं सहेत यावता बुद्धिविपर्ययो नस्यात् । ग्रीष्मर्तौ पञ्चाग्नितपः, वर्षर्तौ अनावृत्तप्रदेशे वर्षाधारासहनम्, शीतर्तौ कण्ठपर्यन्तं जले स्थित्वा शीतसहनम्, इत्थं प्रकारेण घोरतपस्यामयं जीवनं गमयेत्। घोरतपस्याद्वारा स्वकीयं चर्म पूर्णरूपेण शुष्कीकुर्याद् येन देहस्य समस्तनाडीनां दर्शनं भवेत् । अन्यस्मृतिषु कथितं यद् ग्रीष्म काले पंचाग्निमध्यस्थो भूत्वा तपः कुर्यात् । अर्थात् त्रिषु ऋतुषु ऋतुधर्मानुकूलम् उग्रतपश्चर्यापूर्णजीवनं गमयेत् ।

कारणतत्त्वेषु कार्यतत्त्वानां विलयःआत्मस्वरूपे स्थितिश्च

अस्य विषयस्यान्तर्गते प्राप्यते यद् अनशनात् पूर्वं सः आवहनीयाद्यग्नीन् स्वात्मनि विलयेत् ।अहम्भावं त्यक्त्वा स्वशरीरे स्थितानि तत्त्वानि तेषां कारणशरीरे विलयेत् । अस्मिन् विषये विस्तृतवर्णनं प्राप्यते यत् सः स्वशरीरे स्थितंरोमछिद्राकाशं आकाशतत्त्वे विलयेत्, प्राणान्वायौ, स्थिततेजः अग्नौ, रक्त - कफादिजलीयतत्त्वानि जले, अस्थ्यादिकठोरपदार्थान् पृथिव्यां विलयेत् । वाणीं तस्याः कर्म शब्दात्मकभाषणं च तस्याः अधिष्ठातृदेवतायामग्नौ, पाणिं तत्कौशलं च इन्द्रे, चरणं तद्गतिं चकालस्वरूपविष्णौ, रतिं उपस्थं च प्रजापतौ, पायुम् उत्सर्गं च तदाश्रयानुसारं मृत्यौ श्रोत्रं तच्छब्दात्मककर्म च दिशासु, स्पर्शं त्वचं च वायौ, नेत्रसहितरूपं ज्योतिषि, मधुरादिरससहितं रसेन्द्रियंजले, घ्राणेन्द्रियं तद्द्वाराघ्रातगन्धं च पृथिव्याम्, मनोरथैस्सह मनः चन्द्रमसि, अवगम्यमानपदार्थैस्सहबुद्धिंब्रह्मणि, अहंभावं तथा अहंकारं चरूद्रे, चेतनासहितचित्तं क्षेत्रज्ञे, विलयेदेवमेवजीवस्य ब्रह्मणि, पृथिव्याः जले, जलस्याग्नौ, अग्नेः वायौ, वायोराकाशे, आकाशस्याहङ्कारे, अहंकारस्य महत्तत्त्वस्याव्यक्ते, अव्यक्तस्य अविनाशिपरमात्मनि लयः कर्तव्यः । इत्थं प्रकारेण अविनाशिपरमात्मरूपेणावशिष्टं यच्चिद्वस्तुवर्तते, सः आत्मा वर्तते, सोऽहमिति ज्ञात्वा अद्वितीयभावे स्थितो भवेत् । यथा स्वाश्रयकाष्ठादिं भस्म कृत्वा यथाग्निः शान्तो भूत्वा स्वरूपे स्थितो भवति तथैव सोऽपि उपरतो भवेत् । एवं रीत्या तपश्चर्यां कुर्वन् शनैः शनैः अधिकाधिकं तपः कुर्वता येन स्वबुद्धिः स्थिरीकृता स्यात्, सः अग्निं स्वात्मनि संस्थाप्य उत्तरदिशि गच्छेत् ।

वानप्रस्थनिर्वाहस्य फलम्

वानप्रस्थस्य आचाराणां निर्वहनकर्तारः अनायासेन ऋषीणां महान्तं लोकं गच्छन्ति । देहपातं यावत्, मौनं धृत्वा, अतीन्द्रियतपस्वी ब्रह्म संस्मरन्ब्रह्मलोके पूज्यते । यो वानप्रस्थी स्वमनः वशे संस्थाप्य, समाधिस्थः सन्तपश्चर्यामाश्रयते, सः पापविनिर्मुक्तः, निर्मलतया प्रशान्तरूपेण च तिष्ठति, सः पुराणपुरुषस्य दिव्यस्वरूपं प्राप्नोति ।

इत्थं प्रकारेण आश्रमे निवसन्सः वानप्रस्थी सांसारिकैः भौतिकबन्धनैश्च दूरे भूत्वा इन्द्रियनिग्रहम्, कठोरसाधनाम्, तपस्यां च कुर्वाणोमोक्षप्राप्तये उद्योगं करोति स्म तथा स्वप्रवृत्तीनां प्रयोगं सामाजिककल्याणाय संवर्धनाय च करोति स्म । सः सद्ज्ञानेन सकलमानवान् उपदिश्यसन्मार्गं प्रति प्रेरयति स्म। सः अस्यां कालावधौ निष्कामभावेन जीवहिंसात्यागपूर्वकं जीवनं यापयति स्म । श्रीमद्भागवते स्थाने -स्थाने राजभिः एतादृशस्य चरितयुक्तस्य ऋणिगणस्य सम्मानस्य तथा तेषामुपदेशग्रहणस्य च वर्णनमक्रियत, एवं च एतादृशऋषिगणः अत्यधिकसम्माननीयदृष्ट्यावलोक्यते स्म ।

3.2.4 संन्यासाश्रमः

संन्यासाय वानप्रस्थोपरान्तमायुषः चतुर्थो भागः सुनिश्चितः आसीत् । यत्र सः सांसारिकभोग्यपदार्थान् परित्यज्य एकाकि एवं तपपूर्णजीवनं यापयन् इन्द्रियाणि मनः च निगृह्य मोक्षप्राप्तिप्रयोजनाय निरन्तरं प्रयते स्म । बौधायनधर्मसूत्रानुसारं सः स्वगृहस्थानि एवं वानप्रस्थानि च सकलकर्तव्यानि निभाल्य संन्यस्तो भवेत् । महाभारतस्यानुसारं वानप्रस्थोपरान्तं वृद्धावस्थाकारणात्शरीरस्य दुर्बलतायां रोगग्रस्ते वा सति संन्यासं स्वीकुर्यात् ।मनोः अनुसारम् रागादिषु विजयमवाप्य जितन्द्रिये सतिसंन्यासं गृह्णीयात् । स्मृति

ग्रन्थेषु

95%	MATCHING BLOCK 230/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

स्पष्टरूपेण उल्लेखः प्राप्यते

यत् क्षत्रियस्य वैश्यस्य च कृते केवलं त्रयः एव आश्रमाः विहिताः, एवं संन्यासाश्रमः केवलं ब्राह्मणाय विहितः । विष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रेपि एतादृशः एव सिद्धान्तः प्राप्यते । संन्यासिनः प्रकाराः

यथा संन्यासात् पूर्वविहितानामाश्रमवासिनां विविधप्रकाराणामुल्लेखः वर्तते तथैव संन्यासाश्रमस्य आचारनियमानामनुसारं जीवनयापकानामपि विविधप्रकाराः प्राप्यन्ते । संन्यासोपनिषदः अनुसारम् - कुटीचक्रः, बहूदकः, हंसः, परमहंसः, तुरीयातीतः, तथा वधूतः इत्थं ब्रह्मचारिणां षड् भेदाः प्राप्यन्ते । वैखानसधर्मसूत्रे संन्यासिनां चतुष्प्रकाराणामुल्लेखः वर्तते - कुटीचक्रः, बहूदकः, हंसः परमहंसश्च । एतद्धर्मसूत्रानुसारमेव एते चत्वारः भेदाः विष्णु - स्मृतावपि प्राप्यन्ते - कुटीचक्रः, बहूदकः, हंसः परमहंसश्च । एतेषांश्रेष्ठतासम्बन्धे उत्तरोत्तरक्रमेण श्रेष्ठत्वस्

100%	MATCHING BLOCK 228/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5% ...

य वर्णनं प्राप्यते। महाभारते

ऽपि अस्यपूर्णविवरणं प्राप्यते यथा -

चतुर्विधा भिक्षवस्तु कुटीचक्रबहूदकौ । हंसः परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः ।।

कुटीचक्रः

एते संन्यासिनः एकदण्डिनः त्रिदण्डिनः वा भवन्ति । सकलसुखानि, भोग्यपदार्थान् , पुत्रैश्वर्यसुखं च परित्यज्य प्रयत्नपूर्वकं ममत्त्वादिकं परित्यज्य पुत्रैस्साकमेव निवसन्ति । सः अन्यस्य कस्यापि भोजनं न स्वीकरोति । कामक्रोधादिकं परित्यज्य पुत्रनिमित्तं धनमपि न संगृह्णाति स्म । यः निजगृहे भोजनादिकं ग्रह्णाति स्म सः कुटीचक्रनामकः संन्यासी इत्युच्यते स्म ।पतञ्जलिद्वारा एते ऐकागारिकनामकशब्देनापि सम्बोध्यन्ते स्म ।

बहूदकः

Ouriginal

यः संन्यासी स्वबन्धुवान्धवान् परित्यज्य, त्रिदण्डं धारयति, भिक्षापात्रं यज्ञोपवीतं च धारयति, प्राणायामं करोति, गायत्रीजपं, हृदये विश्वरूपं भगवन्तं ध्यायन् निजेन्द्रियाणि जित्वा जीवति, कषायवस्त्राणि धारयति सः बहूदकः संन्यासी इत्युच्यते ।

हंसः

यः सम्पूर्णवन्धुबान्धवान् परित्यज्य योगमार्गे स्थितो भवति, तथा सकलेन्द्रियसमूहं वशीकृत्य तिष्ठति सः हंस - नामकः संन्यासी कथ्यते । अयं संन्यासी मुमुक्षुः सन् प्राजापत्यम्, चान्द्रायणम्, तुलापुरुषम् तथान्यव्रतान्याचरन्स्वशरीरंशुष्कयति तथा यज्ञोपवीतम्, दण्डम्, जन्तुभ्यः रक्षायै वस्त्राणि च धारयति ।

परमहंसः

अयं चतुर्थः प्रकारकः संन्यासी अत्यन्तश्रेष्ठः मतः । अस्य विषये प्राप्यते यत् - यः निरन्तरं स्वशरीरे व्यापकरूपेण ब्रह्मणः दर्शनं करोति, प्राणायामं कुर्वन् सर्वसङ्गैः रहितः स्वस्मिन् स्थितः, आत्मना युक्तः, गृहादिपरिग्रहं संत्यज्य योगी भूत्वा नित्यं पृथिव्यां विचरति सः ध्यानभिक्षुः अर्थात् परमहंसः कथ्यते ।

संन्यासे प्रवेशयोग्यता

ब्रह्मचर्याश्रमे उपनयनसंस्कारानन्तरं विद्यार्थी दीक्षितो भवति ततः परं तस्य वेदाद्यध्ययनं कार्यते उपनयनात् पूर्वं कस्यापि बालकस्य वैदिकसंहिताध्ययनं न कार्यते । गौतमीयतन्त्रे अस्य वर्णनं प्राप्यते -

द्विजानामनुपनीतानां स्वधर्माध्ययनादिषु ।

यथाधिकारो नास्तीह सन्ध्योपासनकर्मसु ।।

गृहस्थाश्रमेपि समावर्तनसंस्कारस्य पश्चाद् विवाहसंस्कारेण सः ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रमस्य सर्वकर्तव्यानां पालनस्य योग्यतां धारयति । एवं रीत्या यः आश्रमद्वयस्य परिपालनं विधिपूर्वकं कुरु

78%	MATCHING BLOCK 231/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

ते सः वानप्रस्थाश्रमं प्रवेष्टुं शक्नो

ति । किन्तु संन्यासाश्रमे प्रवेशयोग्यतायाः वर्णनं स्मृतिग्रन्थेषु प्राप्यते । मनुस्मृतौ उच्यते यद् ऋणत्रयान्मुक्तेः अनन्तरमेव मोक्षप्राप्तेः मार्गं स्वीकृत्य ऋणमुक्तिं विनैव यदि संन्यासे प्रवृत्तो भवति चेत् सः नरकं गच्छति । वेदानध्यायी अपि संन्यासं गृहीतुं न शक्नोति यदि सः इत्थं करोति चेत् सोऽपि नरकं गच्छति, सहैव येन यज्ञानां प्रीणनं कृतं नास्ति सोपि संन्यासस्य योग्यो नास्ति । इत्थं प्रकारेण स्मृतिकालीनसमाजे प्रत्येकं मनुष्याय संन्यासधारणस्य अनुमतिः नास्ति । चतुर्षु वर्गेषु केवलं ब्राह्मण एव संन्यासस्य योग्यो मतः । अपि च येन वेदाद्यध्ययनं कृतं स्याद् ऋणत्रयान्मुक्तिश्च प्राप्ता स्यात् स एव संन्यासग्रहणस्य पात्रं भवति ।

संन्यासग्रहणविधिः

प्राचीनभारतीयसमाजे यदा द्विजः वानप्रस्थाश्रमस्य सकलनियमान् परिपालयति स्म तदा संन्यासाश्रमप्रवेशयोग्यतां धारयति स्म । संन्यासाश्रमे प्रवेशाय विशेषानुष्ठानात्मककार्याणां वर्णनं श्रीमद्भागवते एवं मन्वादिस्मृतिग्रन्थेषु विस्तारपूर्वकमक्रियत - श्रीमद्भागवते उक्तमस्ति यद् यदा सम्यकतया विरागस्योत्पत्तिः जायते तदा सः सर्वविधाग्नीन् परित्यज्य संन्यस्तो भवेत् । सः पूर्वं वेदविधिपूर्वकम् अष्टविधश्राद्धान् प्राजापत्ययज्ञं च कुर्यात् तथा तस्य यज्ञस्य ऋत्विजाय निजसर्वस्वं प्रदाय तान् अग्नीन् स्वप्राणेषु संस्थाप्य निरपेक्षो भूत्वा संन्यासे विचरेत् । इतोपि प्राप्यते यद् वानप्रस्थिनि ब्रह्मविचारसामर्थ्यस्य सत्वेपि शरीरं विना सर्वं परित्यज्य संन्यासं गृह्णीयात् ।मनुरपि अस्यैव मतस्योल्लेखं कृतवान् । यत्र चोल्लिखितं यद् "सर्वस्वदक्षिणावतीं प्राजापत्येष्टिं समाप्य अग्निमपि स्वस्मिन् आरोप्य ब्राह्मणगृहात् पूर्णकालाय गच्छेत्'। याज्ञवल्क्यस्मृतावपि इत्यमेव उपदेशः प्रदत्तः "वानप्रस्थस्य गृहस्थाश्रमस्य वानन्तरं सर्ववेदसंबद्धदक्षिणायुक्त - प्राजापत्येष्टिविधानात् परमग्नीन् स्वस्मिन् आरोप्य वेदाध्ययनम्, जपम् च कृत्वा पुत्रमुत्पाद्य अन्नदानं कृत्वा यथाशक्ति यज्ञं कृत्वा मोक्षे मतिं धारयेदन्यथा न । बौधायनस्मृतौ संन्यासग्रहणविधेः अन्त्यन्तविस्तरेण वर्णनं प्राप्यते यत्र शिरसः केशानां कर्तनम्, शमश्रुनखादीनां कर्तनम्, दुग्धस्य, दध्नः, घृतस्य, जलस्य च प्राशनम्, सावित्रीजपः, होमप्रक्रिया, इत्याद्यनुष्ठानानां विधेः वर्णनं प्राप्यते । लधुहारीतस्मृतावपि संन्यासविधेः वणर्नमक्रियत, यत्र वैश्वानरेष्टेः विशेषरूपेण वर्णनंप्राप्यते, अपि च श्राद्धादिकर्मणाम्, अग्नीनां चात्मनि समारोपस्योल्लेखः वर्तते ।

वसिष्ठेनापि एवमेव रीत्या संकेतः प्रदत्तः उक्तञ्च परिव्राजकः सर्वप्राणिभ्यः अभयं दक्षिणां च प्रदाय संन्यासे प्रतिष्ठितो भवेत् । एवं रीत्या धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु संन्यासप्रवेशस्य विधीनां वर्णनमक्रियत । श्रीमद्भागवतमहापुराणेपि एतेषामेव विधीनां समर्थनं सामञ्जस्यं च प्राप्यते ।

संन्यासिविहिताचाराः कर्माणि च

संन्यासिविहिताचाराः –

संन्यासिनः आचारसम्बन्धे प्राप्यते यत् सः समस्तप्राणिनां हितैषी स्यात्, सर्वदा शान्तः स्यात्, स्वात्मनि एव रमेत, कस्याप्याश्रये न तिष्ठेत् ,नारायणपरायणो भूत्वा एकाकी एव संसारे विचरेत् । सः स्वस्य अनिश्चितजीवनस्य आगम्यमानमृत्योश्च अभिनन्दनं न कुर्याद् इत्थं प्रकारेण जीवनं यापयन् सः कालं प्रतीक्षेत । संन्यासिनः कृते स्पष्टनिर्देशः प्राप्यते यत् सः इच्छति चेत् संन्यासाश्रमचिह्नानि त्यक्तुं शक्नोति अस्य प्रमुखकारणमिदं यत् संन्यासिनः कृते कस्याप्याश्रमस्य बन्धनं धर्मस्य कारणं नास्ति । सः आत्मानुसन्धाने निरतः स्यात्, अत्यन्तविचारशीलः सन् अपि सः समाजे अबोधबालकवत् तथा कविविद्वान्भूत्वापि समाजे मनुष्याणां मध्ये मूकवद् व्यवहरेत् । सः जलं छननं कृत्वा पिबेत्, धरायां दृष्ट्वा चलेत्, नित्यं सत्यं ब्रूयात्, बुद्धिविवेकद्वारा पूर्णविचारणया शरीरद्वारा कार्याणि सम्पादयेत् । सः एकाकी एव विचरणं कुर्यात्, येन सः निरन्तरं चिन्तनशीलः स्याद् एवम् आत्मतत्त्वस्यशोधनं कर्तुं पारयेत्, सः जितेन्द्रियः तिष्ठेत्, अर्थात्

सकलभोग्यपदार्थेभ्योविरतः सन् वैराग्यपूर्णजीवनचर्यायाः आचरणं स्यात्, नित्यमात्मन्येव रमेत, सामान्य - रूपेण प्रतिकूलपरिस्थितिषु धैर्यं धारयेत्, सर्वेषु परमात्मानं पश्

100% MATCHING BLOCK 232/353 W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

येत् । ज्ञानेन्द्रियाणि

विजित्य सः भोग्यपदार्थानां क्षुद्रतां ज्ञात्वा तान् संत्यजेत् तथा ईश्वरानन्दमात्मनि प्राप्य विचरेत् । सः भिक्षानिमित्तमेव ग्रामम्, नगरम्, आपणं वा गच्छेत्, अन्यस्मिन् समये सः पवित्रदेशे 'तीर्थस्थले', नदीषु, पर्वतेषु, वने आश्रमेषु वा पृथिव्यां ममत्वरहितो भूत्वा विचरेत् । सः दृश्यमानसकल - पदार्थन् क्षरणशीलान् ज्ञात्वा तेभ्यो विरक्तस्स्यात् ।निपुणो भूत्वाजडवदाचरणम्, विविध-विधिज्ञः सन्नपि पशुवृत्त्या आचरणम्, विद्वान् सन्नपि विवेकशून्यवदाचरणं कुर्यात् । सःसम्दृष्ट्या युक्तस्स्यात्, धैर्यवान् स्यात्, अतिवादं न कुर्यात् । संन्यासी सर्वासु परिस्थितिषु समानरूपेण तिष्ठेत् । सः सर्वविधसहायतारहितो भूत्वा सर्वदा एकाकी एव पृथिव्यां विचरेद् एवं रीत्या सः स्वमोक्षसिद्धये सुखदुःखानुभवरहितः सन् सम्यग्विचारशीलो भूत्वा मुक्तिमवाप्नोति ।

सः अग्निरहितः स्यात्, अन्नप्राप्तिनिमित्तमेव ग्रामं गच्छेत्, स्थिरबुद्धिः स्यात्, मननशीलः इन्द्रियैकाग्रतायुक्तः स्यात् । मनुस्मृतावपि उक्तमस्ति यत् सः स्वात्मनि रमेत, आत्मद्वारा देहसहाय्येन मुमुक्षुः संसारे विचरेत् ।

इत्थं प्रकारकलक्षणयुक्ते भगवतः दत्तात्रेयस्य चरित्रे इत्थं प्रकारकाणि लक्षणानि दृश्यन्ते । प्रह्लादद्वारा कृते वर्णने स्पष्टोल्लेखः प्राप्यते ।

संन्यासिनः निषिद्धाचारः कर्माणि च

संन्यासिद्वारापरित्याज्याचाराणां कर्मणां च विषये समुचितरूपेण उल्लेखो वर्तते । अस्यान्तर्गते उक्तमस्ति यत् सः संन्यासी असत्यानात्मवस्तुप्रतिपादकशास्त्राणि नाधीयीत, स्वजीवननिर्वाहाय जिविकाप्राप्त्युद्योगं न कुर्यात्, सः वादविवादार्थं तर्कपूर्णवार्तां न कुर्यात्, संसारे सर्वदा सर्वैः मनुष्यैस्साकं निष्पक्षो भूत्वा व्यवहरेत् । सः शिष्यादिसंग्रहमपि न कुर्यात्, अधिकग्रन्थानामभ्यासं न कुर्यात्, व्याख्यानं न दद्यात्, महत्कार्याणि च नारभेत । सः वेदस्य कर्मकाण्डभागं न व्याख्यायेत् , पाखण्डाचरणं न कुर्यात्, तर्क - वितर्कम्, वाद -विवादं च नकुर्यात्, देहार्थं केनापि द्वेषं न कुर्यात् । कस्मै चिदपि न क्रुध्येत्, अवमानने सत्यपि द्वेषं न कुर्यात्, कदापि असत्यमपि न वदेत् । परिव्राजकः नक्षत्रविद्यया, अनुशासनात्मक - नीतिविद्यादिना अथवा व्यवहाररीत्युपदेशेन वाधिकभिक्षाप्राप्तेः कामनां न कुर्यात् । सः तादृशं गृहं न प्रविशेद्यद् वानप्रस्थिभिः,ब्राह्मणैः,पक्षिभिः,श्वानैः,भिक्षुभिः, वा व्याप्तं स्यात् ।

वस्त्रनिर्धारणम्

श्रीमद्भागवते उक्तं वर्तते यत् सः केवलं तावता परिमाणेन वस्त्रं धारयेद् येन गुप्ताङ्गस्याच्छानं स्यात् । भागवतस्यैकादशे स्कन्धे कृष्णोद्धवसम्वादे अस्यैव वर्णनं प्राप्यते यत् सः तावदेव वस्त्रं धारयेदेन लोकमर्यादायाः उल्लङ्घनं न स्यात् । सः जीर्णवस्त्रं धारयेत् ।

निवासनिर्देशः

सः निर्जने एकान्तस्थाने तिष्ठेत् । सः सर्वदा नियते स्थाने न वसेत् । सः निवासाय वृक्षस्य मूले वसेत् । इत्थं प्रकारेण ज्ञायते यत् संन्यासी जनसमूहमध्ये न वसेत् । तेन तस्य आध्यात्मिकजीवनमबाधितमेव भवति ।

चिन्तनम्

संन्यासिने निर्देशः प्राप्यते यत् सम्पूर्णविश्वं कार्यकारणतातः अतीते परमात्मनि अध्यस्तं जानन् कार्यकारण - स्वरूपेऽस्मिन् जगति ब्रह्मस्वरूपात्मानं विवकेपूर्णबुद्ध्या पश्येत् । आत्मदर्शी संन्यासी सुषुप्तिजागरणयोः सन्धौ स्वात्मानुरूपस्य स्वरूपस्यानुभवं कुर्यात् ।

अपि च बन्धनमोक्षौ द्वावपि मायारूपौ, वस्तुतः न किमपीत्थं विचिन्तयेत् । सः निरन्तरमीश्वरभावनया परिपूर्णस्स्यात् तथेश्वरं स्वतः अभिन्नम्, अद्वितीयम्, अखण्डरूपं च चिन्तयेत् । सः बन्धनमोक्षविषये चिन्तयेद् अथ च एवमपि निश्चिनुयाद् यद् विषयप्राप्त्यर्थमिन्द्रियाणां विक्षिप्तिरेव बन्धनं तथा संयम एव मोक्ष इति । सः मनसः, वाण्याः, प्राणानां च संघातरूपजगत् मायारूपं ज्ञात्वा आत्मस्वरूपे स्थितस्स्यात्, ततश्च जगतः चिन्तनं न कुर्यात् ।

दण्डधारणम्

दण्डधारणस्यदार्शनिकोल्लेखः श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् वाण्यै मौनम्, शरीराय निश्चेष्टस्थितिः, मनसे च प्राणायामरूपी दण्डः वर्तते, यस्य सकाशे एते त्रयः दण्डाः वर्तन्ते सः दण्डी, केवलं शरीरे वंसदण्डधारणेन कश्चन दण्डी न भवति । अत्र दण्डेनाशयः नियन्त्रणं सञ्यमश्च, यदि संन्यासी एवं प्रकारेण निजजीवने संयमं न धारयति चेत् सः स्वमार्गात् पथभ्रष्टः पतितश्च मन्यते ।

भिक्षा भोजनं च

संन्यासी कस्माद् भिक्षां स्वीकर्तुं शक्नोति, कस्माच्च भिक्षा स्वीकर्तव्या, भिक्षया प्राप्तं भोजनं कथं कर्तव्यमित्यादिविषयाणां प्रतिपादनं श्रीमद्भागवते कृतं वर्तते यद् चतुर्षु वर्णेषु ये पतिताः अर्थात् पातकिनः सञ्जाताः तेभ्यः भिक्षां न याचेत, सहैव सः केवलमनिश्चितसप्तगृहेभ्य यावन्मात्रया प्राप्येत तावत्या एव सन्तुष्येत । इत्थं प्रकारेण प्राप्तभिक्षामादाय ग्रामाद्बहिः जलाशयं गत्वा हस्तपादौ प्रक्षाल्य भिक्षां पवित्रीकृत्य ब्रह्मविष्णुसूर्यसमस्तप्राणिषु यथाशास्त्रविधि समुचितविभागं कृत्वावशिष्टान्नं भक्षयेत् ।

वानप्रस्थिभ्यः भिक्षां याचयित्वा प्राप्तान्नेन शिलविधिना प्राप्तान्नेन वा संन्यासस्य सिद्धिः भवति । सः भोजनस्य प्राप्तौ अप्राप्तौ वा हर्षं शोकं च न प्रकटयेद् द्वयोरपि स्थित्योः धैर्यं धारयेत् । प्राणनिमित्तमेव भिक्षाटनं कर्तव्यं यतोहि प्राणानां स्थैर्ये तत्त्वविचारः तत्त्वविचाराच्च

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 233/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

तत्त्वज्ञानस्य प्राप्तिः

तेन च मुक्तिमवाप्नोति । कुल्लूकभट्टः मनुस्मृतेः टीकायां भिक्षापात्रं वर्णितवान्, सः भिक्षार्थं मृत्पात्रमुपयुञ्जीत । निरन्तरं भिक्षायाचनेन तस्य हृदयाद् व्यवहाराच्च अहङ्कारः निर्गच्छति । तथा सः ईश्वरस्य सानिध्यमवाप्नोति ।

परमहंसधर्माः

श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् ज्ञाननिष्ठः, विरक्तः, मुमुक्षुः, भक्तपुरुषश्च वेद -शास्त्रोक्तविधिनिषेधेभ्यः परं भूत्वा स्वच्छन्दं विचरेयुः, एवं ते आश्रममर्यादासु निर्बद्धाः न भवन्ति । एतं सन्दर्भं श्रीधरस्वामी निजश्रीधरीटीकायां स्पष्टीकुर्वन् उल्लिखति यद् एतस्मात्पूर्वं संन्यासिनां ये धर्माः कथिताः ते बहूदकसंन्यासिनां धर्माःसन्ति अस्मिन् भावे परमहंसानां धर्माः कथिताः ।

ज्ञाननिष्ठसंन्यासिनः धर्माः

ज्ञानीपुरुषः शौचस्य, आचमनस्य, स्नानादिकर्माणि केवलं लीलामाध्यमेन आचरेद् केवलं विधिकिंकरो भूत्वा पालनं न कुर्यात्, ज्ञाननिष्ठपुरुषं प्रति एवमुक्तमस्ति यतोहि सः पूर्णकालाय अभेदत्त्वं प्राप्तवान्, यस्माद् मृत्योः परं सः ईश्वरेण सह एकत्वं भजेत ।

वैराग्यनिष्ठसंन्यासिधर्माः

ज्ञाननिष्ठसंन्यासिने एतादृशाः नियमाः नोक्ताः अस्य प्रमुखकारणमिदं वर्तते यत् सः अभेदत्त्वभावे स्थितो वर्तते तस्य पतनमिदानीं न सम्भवम्, किन्तु यस्य एतादृशं ज्ञानं भावश्च एतावता न जागृतः सः पतितः भवितुमर्हति एतं विषयं मनसि निधाय श्रीकृष्णः उद्धवाय वैराग्यनिष्ठसंन्यासिधर्मान् प्रणिगदति । जितेन्द्रियपुरुषस्य यदेदं निश्चितं स्यात् संसारविषयभोगस्य फलं दुःखस्वरूपं वर्तते तदा सः विरक्तस्सन् गुरोः मुनेश्च शरणं गच्छेत् ।

80%	MATCHING BLOCK 234/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

सः गुरोः भक्तिं कुर्यात्, श्रद्धां धा

रयेत्, गुरोः दोषान् नान्वेषयेत्, ब्रह्मज्ञानप्राप्तिपर्यन्तं गुरावीश्वरभावं निधाय तं सेवेत् । एवं रीत्या सः ब्रह्मज्ञानप्राप्तिपर्यन्तं संन्यासाश्रमे जीवनं यापयेत् ।

श्रीकृष्णोद्धवसंवादे इदंस्पष्टरूपेण प्राप्यते यद् यदि संन्यासग्रहणोपरान्तम् इन्द्रियनिग्रहद्वारावैराग्यं न सिद्ध्यति सः ज्ञानवैराग्यरहितो वर्तते तथापि सः त्रिदण्डिसंन्यासीभूत्वा स्वोदरपोषणं करोति चेत् सः ईश्वरेण सह विश्वासघातं करोति, एवं रीत्या सः ऐहिकपारलौकिकोभयगतिभ्यां वञ्चितो भवति, तथा तस्य पतनं संजायते ।

पुर्वोक्तप्रकारेण अस्मिन्नाश्रमे जनः स्वसमस्तेच्छाः कामनाः पूर्णरूपेण त्यक्त्वा एकाग्रचित्तेन ईश्वरभक्तौ विलीनो भूत्वा नितान्तमेकाकितपस्विजीवनं गमयन् मोक्षप्राप्तिप्रयासान् कुर्वाणः स्यात् । अस्मिन्नाश्रमे यद्यपि तेसमाजात् पूर्णतः पृथग् वसन्ति स्म तथापि स्वसुदृढानुशासनेन, संयमेन, तपश्चर्यया, निवृत्या अहिंसया च समाजं सन्मार्गं प्रेरयन्ति स्म । समाजस्यनागरिकाः अपि तेषामनुशासितानासक्तजीवनेन प्रेरणां प्राप्नुवन्ति स्म ।

श्रीमद्भागवतगतप्राप्यविषयानां विवेचनेनं प्राप्यते यद् व्यक्तिः क्रमेण प्रत्येकमाश्रमस्य व्यक्तिगतकर्तव्यानि, उत्तरदायित्वानि, परिपालयन् समस्तासक्तिभिः अनासक्तो भूत्वा जीवने मुक्तिभावं

100%	MATCHING BLOCK 235/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

प्राप्नोति । शास्त्रीय -

परम्परायां मनुष्यजीवनं सफलीकर्तुमेतेषां चतुर्णामाश्रमाणां निर्माणमत्यधिकमनोवैज्ञानिकविधिनाक्रियत, येन सः जीवने प्रयुज्यमानव्यवहारस्य, आचारस्येत्यादीनां च ज्ञानं गुरूकुले उषित्वा विनम्रतापूर्वकं

38%	MATCHING BLOCK 236/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

प्राप्नोति स्म । ततः परं सः विवाहितः सन् प्राप्ताचाराणां ज्ञानस्ये

त्यादीनां च प्रयोगं कृत्वागृहस्थाश्रमे वंशादीनां विस्तारं कृ

त्वा

100%	MATCHING BLOCK 237/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

नित्य – नैमित्तिक – काम्य - कर्

मणां विधि

वदनुष्ठानं कृत्वा स्वकर्तव्यकर्मणः निवृत्तो भूत्वा वानप्रस्थं स्वीकृत्य अत्र विद्यमानसर्वविधानुष्ठानं विधाय सकलद्वन्द्वान् विजित्य संन्यासमार्गे अग्रसरो भवेत् क्रमशः मुक्तिभावं

66%	MATCHING BLOCK 238/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

च सम्प्राप्य मोक्षं प्राप्नुयात् ।

आश्रमव्यवस्था मनुष्यजीवनस्य साफल्याय सुगमसाधनरूपेण प्राप्यते । एतन्माध्यमेन जीवशैल्याः सौन्दर्यपूर्णविधिज्ञानाय मार्गः प्राप्यते यश्च सकलसंसाराय भारतीयसनातनजीवनशैलीद्वारा प्रदीयते । भारतीयाश्रमव्यवस्था अद्भुतजीवनयापनस्य कला वर्तते अत्र न कश्चित्संदेहः । श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते चतुर्णामाश्रमाणां यत् किमपि उपदेशात्मकशैलीरूपेण तथा पात्राणां जीवनशैलीरूपेण वा प्राप्यते तद्धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या सङ्गतमेव प्राप्यते ।

चतुर्थोऽध्यायः श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्काराः

चतुर्थोऽध्यायः श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितसंस्काराः 4.1

87%	MATCHING BLOCK 239/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

गर्भाधानसंस्कारः 4.2 पुंसवनसंस्कारः 4.3

जातकर्मसंस्कारः 4.4 नामकरणसं

39%	MATCHING BLOCK 240/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

स्कारः 4.5 उपनयनसंस्कारः 4.6 समावर्तनसंस्कारः 4.7 विवाहसंस्कारः 4.8 अंत्येष्टिसंस्कारः

भारतीयऋषयः महर्षयः आचार्याश्च सकलमानवजात्याः नैतिकचारित्रिकाध्यात्मिकभौतिकानां विकासार्थं येषां सिद्धान्तानाम् आचाराणानाञ्च स्थापना कृतवन्तः तेषु संस्काराणां

87%	MATCHING BLOCK 241/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। संस्

कारेण मानवस्य जीवनं सुसंस्कृतं, सुव्यवस्थितं तथा अनुशासितञ्च भवति। अनेन मनुष्यस्य तथा समाजस्य कल्याणं भवति। संस्काराणां महत्त्वं एतेन तथ्यमाध्मेन ज्ञायते यत् जन्मादारभ्य मृत्युपर्यन्तं तस्य संस्काराणामान्तं न भवति। संस्काराणां लौकिदृष्ट्या प्रयोजनं भौतिकं तथा सांस्कृतिकोन्नतिः एव नास्ति अपितु आध्यात्मिकं जीवनमपि परिशुद्धं करणमस्ति एवं मन्यते यत् संस्कारहीनमनुष्यः सकलविधकार्येषु अयोग्यः भवति।

एवं प्रकारेण

88%	MATCHING BLOCK 242/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

संस्काराणां माध्यमेन मनुष्यस्य

जीवनं समुन्नतं परिष्कृतं करणमस्ति यैः सः एकाग्रचित्तं भूत्वा स्वजीवनस्य परमलक्ष्यं प्राप्नुयात्। शंखस्मृत्यानुसारं संस्कारयुक्तः तथा अष्टाऽत्मगुणयुक्तः मनुष्यः ब्रह्मलोकं गत्वा ब्रह्मपदं प्राप्नोति यस्मात् पुनः सः न च्यवते इति। यथा -

47%	MATCHING BLOCK 243/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

संस्कारैः संस्कृतः पूर्वैरूत्तरैरनुसंस्कृतः। नित्

Curiginal

यमष्टगुणैर्युक्तो ब्राह्मणो ब्राह्मलौकिकः। ब्राह्मं पदमाप्नोति यस्मान्न च्यवते पुनः।। संस्काराणामन्तर्गतं यज्ञादिकर्मकाण्डीयपद्धत्या देवतान् प्रसन्नं कृत्वा सुखमयं जीवनस्य निर्माणं क्रियते। येन च जीवने विघ्नः न भवेयुः, जीवनस्य महत्त्वपूर्णस्थलेषु एतेषाम् आयोजनं क्रियतेस्म येन च मनुष्ये काचित् विकृतिः न उत्पद्येत् तथा सः स्वाभाविकगत्या स्वजीवनं विकासेत्। डॉ. राजबली पाण्डेयानुसारम् एतेषां मुख्योद्देश्यं

66%	MATCHING BLOCK 244/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

केवलम् औपचारिकः दैहिकः संस्कारः न अपि तु संस्कार्यव्यक्तेः सम्पूर्ण व्यक्तित्त्वस्य परिष्कारः शुद्धता, परिपूर्णता चा

स्ति। लक्ष्मीदत्तठाकुरानुसारं संस्काराणां मुख्यं प्रयोजनं केवलं शारीरिकसौन्दर्यस्य वृद्धिः न अपि तु तस्य आध्यात्मिकाभ्युदयम्। प्राचीनकालादारभ्य एतावत्पर्यन्तं अनेकप्रकारपरिवर्तनानन्तरमपि हिन्दूसमाजे संस्का

87%	MATCHING BLOCK 245/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

राणां महत्त्वपूर्णं स्थानम् आसीत्।

संस्कारशब्दः नित्यपुल्लिङ्गः वर्तते। अस्य व्युत्पत्तिः "सम" उपसर्गपूर्वकात् "कृञ् करणे" धातोः भावार्थे "भावेघञ्" इत्यनेन घञ् प्रत्यये सति अयं शब्दः निष्पद्यते अस्य अभिप्रायः परिशोधनं तथा शुद्धता वर्तते। महाभारतस्य आदिपर्वणि महर्षि व्यासा

नुसारेण संस्कारेण मनुष्यः

85%	MATCHING BLOCK 246/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

संस्कारितः परिमार्जितः भवति – "संस्का

रैः संकृतास्ते"। शबरस्वामिनानुसारं संस्कारो नाम सः येन व्यक्तिः कार्ययोग्यो

भवति – "

94%	MATCHING BLOCK 248/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य"।

महर्षिः जैमिन्यानुसरं संस्कारार्थः यज्ञस्य पवित्रकार्येण क्रियते। तन्त्रवार्तिकानुसारं संस्कारो नाम क्रिया एवं विधयः ये च योग्यतां प्रयच्छन्ति - योगयतां

100%	MATCHING BLOCK 249/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

चादधानाः क्रियाः संस्काराः इत्युच्यन्ते।

जगद्गुरुशङ्कराचार्यानुसारं संस्कारेण गुणाधानं क्रियते दोषाणाम् अपनयनं च क्रियते – "संस्कारो हि नाम गुणाधानेन वा स्याद् दोषापनयनेन वा"। वीरमित्रोदये नामके निबन्धग्रन्थेऽपि संस्कारस्य परिभाषा प्राप्यते शारीरिकाध्यात्मिकप्रकृतेः आधायकसविध्यानुष्ठानानां नामैव संस्कारः – "

77%	MATCHING BLOCK 247/353	W	https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितग्रियाजन्योऽतिशयविशेषः संस्कारः"।

प्राचीनार्वाचीनविद्वानसः स्वस्य रीत्या संस्कारान् परिभाषितं कृतवन्तः। सकलपरम्परायाः अध्ययनोपरान्तं बुध्यते यत् संस्कारः आत्मशुद्ध्यर्थं कर्त्तव्या क्रिया धार्मिकं सामाजिकम् अनुष्ठानमस्ति। यैः अनुष्ठानैः मानवानां सर्वविधोन्नतिः भवति। संस्काराणां प्रयोजनम् मनुष्यजीवने जन्मतः आरभ्य

100%	MATCHING BLOCK 250/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

मृत्युपर्यन्तं संस्कारा

णाम् अत्यधिकं

Ouriginal

91%	MATCHING BLOCK 251/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्ततेस्म।

मनुष्यस्य शारीरिकम् एवं भौतिकविकासार्थं निमित्तं तथा जीवनप्रणाली सुव्यवस्थीकरणार्थं संस्काराणां विधानं धर्मसूत्रेषु, स्मृतिषु, पुराणेषु इत्यादिषु कृतं वर्तते। मुख्यरूपेण मनुष्यजीवने कुप्रभावं कुर्वन्ति ये विघ्नाः तेषां शमनार्थं संस्काराणां निर्माणं प्राप्यते। वस्तुतः एतेषां मुख्यं प्रयोजनं वैदिकमैवं पौराणिकाः ये देवताः तेषाम् आराधनार्थं तथा सर्वकारकोत्थानार्थं, शारीरिकं तथा मानसिकदोषाणां तथा तेषां परिमार्जनार्थम् एवं नूतनगुणानामाविष्करणार्थं संस्काराणां मुख्यं ध्येयं वर्तते। मनुस्मृतौ लभ्यते यत् संस्कारः लोकं परलोकं च पवित्रीकर्तुं भवन्ति इति। श्रीमद्भागवतेऽपि संस्कारात् शुद्धेः सम्बन्धः प्राप्यते। येन

38%	MATCHING BLOCK 252/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

गर्भाधानादारभ्य अन्यतेष्टिः पर्यन्तं संस्कारेण सुसंस्कृताः भवन्ति ते

द्विजाः इति संज्ञया सम्बोध्यन्ते। संस्कारतत्त्वे उद्धृतं हारीतानुसारेण यदा कश्चित् व्यक्तिः गर्भाधानविध्यानुसारं संभोगे कर्मणि प्रवृत्तो भवति तदा सः स्वभार्यायां वेदाध्ययनयोग्यं भ्रूणं स्थापयति इति। पुसवनसंस्कारेण सः गर्भे पुरुषः उत नरः भवति। सीमन्तोन्नयनसंस्कारेण मातृपितृभ्याम् उत्पन्नदोषान् दूरीकरोति। बींज रक्तं एवं भ्रूणात् उत्पन्नदाषाः जातकर्म, नामकरणं, चूडाकरणं एवं समावर्तनं विधिपूर्वकं क्रियते तर्हि इमे दोषाः नष्टाः भवन्ति। एतैः अष्टप्रकारकैः संस्का

83%	MATCHING BLOCK 253/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

रैः गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्मनामकरणं, अन्नप्रासनं, चू

डाकरणं एवं समावर्तनेन पवित्रत्त्वस्य प्राप्तिः भवति। एवं च संस्कारैः व्यक्तिः सामाजिकमूल्यानां तथा आदर्शानां ज्ञानं लभते। एतैः संस्कारैः जायमानविविधप्रकारकविधिविधानैः अनुष्ठानादि द्वारा तस्य सामाजिकीकरणं भवति। संस्काराणां मुख्यमुद्देश्यं भौतिकम् एवं लौकिकसमृद्धिप्राप्तिः। दीर्घजीवनं, सुखं, समृद्धिः, सम्पत्तिः, शक्तिबुद्धिवैभवसन्तानादीनामिच्छा व्यक्तिः देवताभिः करोति। संस्काराणां ध्येयं निवारणार्थकमपि वर्तते संस्कारेण अदृश्यबाधानां एवम् अशुभ शक्तीनाञ्च विनाशस्य कामना अनेन क्रियते इति।

संस्काराणां संख्या वैदिकवाङ्मये संस्कारशब्दस्य नोल्लेखः प्राप्यते। परन्तु वैदिकसाहित्ये गर्भाधानं विवाहः तथा अन्येष्ठिसम्बन्धितः धार्मिकक्रियाणामुल्लेखः प्राप्यते। ऋग्वेदे, अथर्ववेदे, गोपथब्राह्मणे, शतपथब्राह्मणे, उपनिषदि साहित्येषु च संस्कारान्तर्गतक्रियाणां वर्णनं विस्तारपूर्वकं प्राप्यते एवं संस्कारशब्दस्य प्रयोगमकृत्वा कर्मकाण्डान्तर्गत यज्ञानां, पूजाविधीनां, अर्चनापद्धितीनाञ्च विवेचने कृतमस्ति। संस्काराणां वर्णनम् एवं विधीनां क्रमपूर्वकं विस्तारेण वर्णनं गृ

45%	MATCHING BLOCK 254/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

ह्यसूत्रेषु कृतं वर्तते। धर्मसूत्रेषु स्मृतिषु च संस्काराणां

नामानि वर्णितानि सन्ति।

विविधगृ

47%	MATCHING BLOCK 255/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

ह्यसूत्रानुसारेण संस्काराणां संख्या - आश्वलायन गृह्यसूत्रे एकादशसंस्काराणां वर्णनं वर्तते - विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, चूडाकरणं, अन्नप्राशनम्, उपनयनं, समावर्तनं, अन्तेष्टिः

इति। पारस्करमुनिभिः स्वग्रन्थे

39%	MATCHING BLOCK 256/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

पारस्करगृह्यसूत्रे षोडशसंस्काराणां कृते महत्त्वं दत्तमस्ति। पारस्करगृह्यसूत्रे षो

डशसंस्काराणामुल्लेखः -

69%	MATCHING BLOCK 257/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, केशान्तसमावर्तनम्, अन्त्येष्टिः इति।

वैशायनगृह्यसूत्रे द्वादशसं

स्काराणां वर्णनं

73%	MATCHING BLOCK 258/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

वर्तते - विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणम्, उपनिष्क्रमणम्, अन्नप्रा

शनं, कर्णवे

धनम्, उपनयनं, समावर्तनं, पितृमेधः इति। वाराहगृह्यसूत्रे त्रयोदशसंस्काराणां वर्णनं दृश्यते -

67%	MATCHING BLOCK 259/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

जातकर्म, नामकरणं, दन्तोगमनम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, वेदव्रतानि, गोदानं, समावर्तनं, विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनम्

इति। वैखानसगृह्यसूत्रान्तर्गते वैखानसमुनिभि अष्टादशसंस्काराणां वर्णनं कृतं - ऋतृसंगमनं, गर्भाधानं,

96%	MATCHING BLOCK 260/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

सीमन्तं, विष्णुबलिः, जातकर्म, उत्थानं,

नामकरणम्, अन्नप्राशनं, प्रवसागमनं, पिण्डवर्धनं, चौलकर्म, उपनयनं,

77%	MATCHING BLOCK 261/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

पारायणं, व्रतबन्धविसर्गः, उपाकर्म, उत्सर्जनं, समावर्तनं, पाणिगृ

हणम् इति। गौतमगृह्यसूत्रे गौतमधर्मसूत्रवदेव चत्वारिं

100%	MATCHING BLOCK 262/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

शत् संस्काराणामुल्लेखः

प्

रस्तुतः वर्तते। गौतमधर्मसूत्रान्तर्गतसर्वाधिकाः

59%	MATCHING BLOCK 263/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

चत्वारिंशत् संस्काराः उल्लिखिताः सन्ति ते च - गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, चै

लकर्म, उपनयनं, वेदस्य चत्वारः व्रतं, स्नानं, विवाहः, पञ्चमहामखाः (देवयज्ञः, पितृयज्ञः, मनुष्ययज्ञः, भूतयज्ञः, ब्रह्मयज्ञः), सप्तपाकयज्ञाः (अष्टका, पावर्णः, श्राद्धः, श्रावणी, आग्राहायणी, चैत्री, आश्वजायी), सप्तहविर्यज्ञाः (अग्न्याधेयम्, अग्निहोत्

66%	MATCHING BLOCK 264/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

रं, दर्शपूर्णमासः, आग्रायणं, चातुर्मास्यं, निरूढपशुबन्धः, सौ

त्रामणिः), सप्तसोमयज्ञाः (अग्निष्टोमः, अत्यग्निष्टोमः, उक्थ्यः, षोडशी, वाजपेयः, इतिरात्रः, आप्तोर्यामः)। एवं प्रकारेण गौतमस्मृ

66%	MATCHING BLOCK 265/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

त्यामपि चत्वारिंशत् संस्काराः उल्लिखिताः

Ouriginal

सन्ति। विष्णुधर्मसूत्रे दशसंस्काराणामेव वर्णनमस्ति परन्तु तत्र गर्भाधानस्य स्थाने निषेधः, नामकरणस्य स्थाने नामध्येयं, निष्क्रमणस्य स्थाने आदित्यदर्शनम् इत्यादिभिः नाम्ना अभिहितं वर्तते। अङ्गिरा ऋषिभिः पञ्चविं

53%	MATCHING BLOCK 266/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

शतिः संस्काराणामुल्लेखः कृतः वर्तते। तत्र – गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तं, बलिः, जातकर्म, ना

मकर्म, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चैलकर्म, उपनयनं, वेदस्य चत्वारि व्रतानि, स्नानोद्वाह, आग्रहणं, अष्टका, श्रावणी, आश्वयुजी, मार्गशीर्षी, पार्वणः, उत्सर्गः, उपाकर्म, पञ्चमहायज्ञाः इति। जातूकर्ण्यद्वारा षोडशसंस्काराणां वर्णनं कृतमस्ति – आधानं,

54%	MATCHING BLOCK 268/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

पुंसः, सीमन्तः, जातकर्म, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, चोलकर्म, मौजी, चतुर्व्रतानि,

गोदानं, समावर्तनं, विवाहः। महर्षिमनुना मनुस्मृतौ त्रयोदशसंस्काराणां वर्णनं कृतं –

67%	MATCHING BLOCK 267/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, केशान्त, समावर्

तनं, विवाहः, अन्त्येष्टि इति। महर्षियाज्ञवल्क्येनापि केशान्तसंस्कारं त्यक्त्वा अन्येषां मनु

62%	MATCHING BLOCK 270/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

स्मृतौ वर्णितानां संस्काराणामुल्लेखः

कृतः वर्तते। राजबलीपाण्डेयानुसारं महर्षिगौतमेन उद्धृतसंस्काराणाम् अनुक्रमणिकायां संस्कारेषु तथा यज्ञेषु भेदः न दृश्यते मया। सर्वेषु गृह्यसूत्रेषु तथा श्रौतयज्ञेषु येषां ब्राह्मणे तथा श्रौतसूत्रे विशद्वर्णनं प्राप्यते तच्च उपरि उल्लिखितसंस्कारैस्सह संयुक्तं वर्तते। अत्र

56%	MATCHING BLOCK 269/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

संस्कारशब्दस्य प्रयोगः सामान्यरूपेण समस्तधार्मिककृत्या

र्थे कृतः वर्तते।

68%	MATCHING BLOCK 271/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

हारीतानुसारेण यज्ञानां समावेशः देवसंस्कारेषु तथा मनुष्

यजीवने विभिन्नस्थलेषु कृतानां संस्काराणां समावेशः ब्राह्मसंस्कारे अन्तर्भवति। केवलं ब्राह्मसंस्कारः एवं यथार्थः इति। निःसन्देहः यज्ञोऽपि परोक्षरूपेण पवित्रीकरणार्थं भवतिस्म किन्तु तेषां मुख्यं लक्ष्यं देवानामाराधना आसीत् तथा च संस्काराणां प्रधानं ध्येयं संस्कार्यव्यक्तेः व्यक्तित्वं तथा देहं सुसंस्कृतीकरणमासीत्। स्मृत्यान्तर्गतसंस्कारशब्दस्य प्रयोगः केवलं तेषु एव धार्मिककृत्येषु कृतः वर्तते यत्र अनुष्ठानं व्यक्तेः व्यक्तित्वशुद्ध्यर्थं क्रियते। सकलस्मृतिनां पुराणानां च पर्यालोचनेन स्पष्टीभवति यत् संस्कारान् विना मनुष्याणां सर्वविधविकासः न भवितुं शक्यते। संस्काराणां सङ्ख्यात्मकदृष्ट्या अनेकानेकमत-मतान्तरं प्रप्यान्ते परन्तु भारतीयसमाजे षोडशसंस्कारान् सर्वसम्मत्या स्वीक्रियन्ते। सर्वाधिकप्रचलिताः षोडशसं

55%	MATCHING BLOCK 272/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

स्काराः प्राप्यन्ते यथा – गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडा

करणं, कर्णभेदनम्, विद्यारभ्यः, उपनयनं, वेदारम्भः, केशान्तः, समावर्तनं, विवाह, अन्त्येष्ट्येति।

4.1 गर्भाधान संस्कारः भारतीयसंस्कृतौ गर्भाधानसंस्कारः अत्यन्तमहत्त्वपूर्णम् एवं पवित्रं वर्तते। अनेन संस्कारेण दम्पतीकृते श्रेष्ठसन्तानस्य प्राप्तिः भवति। गर्भाधानमाध्यमेन पुरुषः स्त्रियां स्वबीजं स्थापयित्वा सन्तानस्य कामनां करोति। संस्कारप्रकाशे प्राप्यते - येन कर्मणा पतिः स्वपत्न्यां गर्भस्थापनं करोति तत् गर्भाधानम् इत्युच्यते। वैदिकदृष्ट्या अथर्ववेदे अस्य प्रचलनं प्राप्यते। इदं त्यक्त्वा बृहदारण्यकोपनिषदि अपि अस्य

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 274/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

संस्कारस्य स्पष्टरूपेण

कर्मकाण्डीयमन्त्रविधिः एवं भावनात्मकमन्त्रसहितं गर्भाधानस्य अपि वर्णनं सविस्तारेण लभ्यते। तस्य च मेधावी तथा गुणवान् सन्तानप्राप्त्यर्थं तस्य वर्णनं कृतमस्ति। गर्भाधानस्य निमित्तं विवाहः तद्दिनादारभ्य कस्मिन् दिनस्य रात्रौ गर्भाधानं कर्तव्यं तथा कस्मिन् रात्रौ गर्भाधानं न कर्तव्यमित्यस्यापि विविरणं लभ्यते। मन्वादिस्मृतिकारैः गर्भाधानस्य विविरणं कृतमस्ति। लघ्वाश्वलायनस्मृतौ गर्भाधानसंस्कारस्य कर्मकाण्डीयपद्धत्या विवरणं प्राप्यते। तदन्तर्गत्या अस्य संस्कारस्य दिनं, नक्षत्रं, तिथ्यादीनां वर्णनं लभ्यते तथा अस्मिन् संस्कारे निमित्तनां पूजनं, हवनं तथा सूर्योपासनायाः वर्णनं प्राप्यते। गर्भाधानात् पूर्वं स्थालीपाकः, आग्रयणं तथा अग्निकरणम् एतेषाम् उल्लेखः लभ्यते। एवं च वि

55%	MATCHING BLOCK 273/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

वाहानन्तरं येन कर्मणा पुरुषः स्वशुक्रं स्त्रियां धारयति तत् गर्भाधानमि

त्युच्यते।

गर्भाधानसंस्कारनिमित्तं विस्तारपूर्वकं गृह्यसूत्रेषु प्राप्यन्ते। भारद्वाजमुनिना संस्कारविषये एवमुक्तम् अयं संस्कारः गर्भधारणस्य संस्कार अतः प्रथमगर्भधारणसमये एवं कर्तव्यः यतोहि एकदा पवित्रं क्षेत्रं भविष्यस्य प्रत्येकं गर्भं पवित्रीकरो

78%	MATCHING BLOCK 276/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

ति। अस्य संस्कारस्य करणसमये उपयुक्तः कालः

तथा वातावरणस्य पूर्णरूपेण ध्यानं रक्ष्यते। यतोहि अयं संस्कारः तदैव सम्पन्नो भवति यदा पत्नी गर्भाधारणार्थं शारीरिकरूपेण समर्था ऋतुकाले भवति। शास्त्रीयदृष्ट्या गर्भाधानादिसकलसंस्काराः विशेषप्रकारस्य ज्यौतिषीयमुहूर्तम् उत समयस्य विशेषकालखण्डे यत् शुभमेवं पवित्रं स्वीक्रियते तस्मिन् विशेषकालखण्डे सर्वप्रकारकसंस्कारकरणेन कारणेन वा एतेषां वर्णनं लभ्यते। दिने तथा सायं काले गर्भाधानसंस्कारस्य निषेधः प्राप्यते। अस्योल्लेखः महर्षिकश्यपदित्योः सम्बादकाले प्राप्यते। यदा दित्या सन्ध्याकाले गर्भधारणकरणार्थं अनुमोदनमं करोति तदा महर्षिः कश्यपः सन्ध्याकाले गर्भाधानस्य निषेधवर्णनं कुर्वन् वदति – "त्वत्सदृशी भार्यायाः उपकाराणां प्रतीकारभावं वयं स्वजीवने पूर्णरूपेण दातुं न शक्नुमः। तथापि भवत्याः पुत्रप्राप्तिकाममहं यथाशक्तिमवश्यं पूरयामि। परन्तु इदानीं भवत्याः एकं मुहूर्तं सथातव्यं, येन च जनाः माम् न निन्देयुः। अयं कालः राक्षसादीनां कालः वर्तते द्रष्टुमपि भयानकं वर्तते अस्मिन् समये भगवतः भूतनाथस्य भूतप्रेतादि सञ्चरन्ति। अस्मिन् सन्ध्याकाले भूतभावनभूतपतिः भगवान् शङ्करः स्वगणं भूतप्रेतादिभिः सह वृषभारूढो भूत्वा सञ्चरणं करोति"। एवं प्रकारकैः उक्तिभिः सन्ध्याकाले गर्भाधारणस्य निषेधः प्रतिपादितो वर्तते। वसुदेवस्य देवक्यां गर्भधारणास्य वर्णनं लभ्यते। देवहूतिद्वारा स्वपतिऋषिकर्दमात् गर्भधारणेच्छा प्रकटीकरणस्य वर्णनमेवं कर्दमऋषिद्वारा गर्भाधानकारणस्य वर्णनं प्राप्यते। कर्दमऋषिद्वारा सन्तानप्राप्तिनिमित्तं स्वस्वरूपस्य नवधा विभागं कृत्वा एकाग्रचित्तेन अर्धाङ्गरूपीस्वपत्नयां भावनां कुर्वन् तस्याः गर्भे वीर्यस्थापनं कृतम्। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गत गर्भाधानसं

52%	MATCHING BLOCK 277/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

स्कारस्य विवरणं प्राप्यते। अत्र अस्य संस्कारस्य

विधिविधा

95%	MATCHING BLOCK 275/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5% ...

नामुल्लेखः न प्राप्यते के

वलं सम्बादमाध्यमेन अस्य संस्कारस्य वर्णनं लभ्

39%	MATCHING BLOCK 281/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

यते। 4.2 पुंसवनसंस्कारः गर्भाधानसंस्कारानन्तरं गर्भे सन्तानस्य निश्चये पुंसवनसंस्कारः

87%	MATCHING BLOCK 280/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

क्रियते। अस्य संस्कारस्य मुख्

यं प्रयोजनं गर्भस्थप्रतिष्ठितस्य शिशोः पुत्ररूपेण परिणमतेस्म। अस्यैव संस्कारस्य वैदिकसंहितासु अपि पुत्रप्राप्त्युद्देश्येन प्रार्थनायाः स्वरूपम् उल्लेखो

100%	MATCHING BLOCK 278/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ

78%	MATCHING BLOCK 282/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

प्राप्यते यत् अयं संस्कारः गर्भस्थशिशोः

स्पन्दनात् पूर्वं कर्तव्यः। आपस्तम्बः, विष्णुः तथा बृहस्पत्यानुसारेण अयं संस्कारः गर्भधारणस्य स्पष्टतयाज्ञाने सति कर्तव्यः। गर्भाधाने सति गर्भाधानस्य तृतीये मासे पुंसवनसंस्कारकरणस्योल्लेखः प्राप्यते। अस्मिन् संस्कारे औषधीनां गर्भवत्याः नासिकाद्वारेण प्रवेशः कार्यते। अस्मिन् संस्कारसन्दर्भे एव श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽपि पुंसवनसंस्कारस्य वर्णनं धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या सम्मतैव प्राप्यते तथा

52%	MATCHING BLOCK 279/353	W	https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

अत्र अस्य संस्कारस्य व्रतरूपेण वर्णनं प्राप्यते।

अयं एकवर्षरूपेण वर्णितोऽस्ति यस्मिन् भगवतः विष्णोः पूजादिसात्त्विकनियमानां पालनस्य वर्णनं लभ्यते। महर्षि कश्यपेन दिति कृते अस्य व्रतस्य विधानं कथितं वर्तते। अत्र धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या वर्णितसदाचारपूर्वकाचरणस्य पालनं कर्तुमुल्लेखः प्राप्यते। अस्मिन् व्रते धारणकर्तुं आचरणस्योल्लेखः एवं प्राप्यते – "अस्मिन् व्रते प्राणिहिंसा न कर्तव्या, अशुभापवित्रवस्तूनां स्पर्शः न भवेत्, तडागादिषु स्नानं न कर्तव्यम्, क्रोधो न कर्तव्यः, दुर्जनैस्सह सम्भाषणं न कर्तव्यम्, मलिनवस्त्राणां धारणं न कर्तव्यम्, केनचित् धृता माला न धर्तव्या, उच्छिष्ठमभोज्यम्, चण्डिकायाः मांसयुक्तप्रसादस्य ग्रहणं न कर्तव्यम्, अपवित्रव्यक्तिद्वारा आनीतं भोजनं तथा रजस्वलाद्वारा दृष्टं भोजनं न भुञ्जीत, हस्तेन निर्मिता अंञ्जलिना जलं न पेयम्, उच्छिष्ठमुखाः, विना आचमनं, सन्ध्यासमये, केशानुद्घाट्य, श्रृङ्गाररहितः, वाणीसंयमं विना, शिरम् अनाच्छाद्य बहिः क्वचिदपि न गन्तव्यम्, पादमप्रच्छाल्य, अपवित्रावस्थायां आर्द्रपादाभ्यां उत्तरस्यां पश्चिमस्याञ्च दिशि, अन्यैस्सह, नग्नावस्थायां प्रातः तथा सायं निन्द्रा न कर्तव्या। प्रतिदिनमल्पाहारात् प्राक् गोब्राह्मणलक्ष्म्यादि भगवतः अच्युतस्य पूजा कर्तव्या। पतिसहितस्त्रीणां तथा पतिपूजा कर्तव्या"। एवं प्रकारेण इदं व्रतं वर्षं यावत् क्रियते। अस्य व्रतस्य प्रारम्भः

100%	MATCHING BLOCK 283/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

मार्गशीर्षमासस्य शुक्लपक्

षीयप्रतिपदादारभ्य अग्रिमवर्षस्य मार्गशीर्षमासस्य अमावास्यायां पूर्णो भवतिस्म। अस्मिन् भगवतः विष्णोः पूजा, स्तवनं, कीर्तनं, प्रणामः सदाचारस्य पालनं, मन्त्रजपः, कथाश्रवणं, नित्यहोमः, उद्यापनदिने पाकयज्ञमाध्यमेन पायसेन होमस्य विधानं वर्तते। अस्य व्रतस्य प्रयोगः सर्वप्रथमं दित्याः उत्तमपुत्रप्राप्त्युद्देश्येन कृतः आसीत्।

4.3 जातकर्मसंस्कारः मनुस्मृतौ जातकर्मसं

58%	MATCHING BLOCK 287/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

स्कारस्य विषये प्राप्यते यत् अस्मिन् संस्कारे

मधु तथा घृतस्य सेवनं सुवर्णोपकरणेन कार्यते इति। धर्मशास्त्रेषु जातकर्मसंस्कारात् पूर्वं नान्दीश्राद्धकरणस्याप्युल्लेखः लभ्यते। अयं संस्कारः शिशोः जन्मकाले क्रियते। बृहदारण्यकोपनिषदि

100%	MATCHING BLOCK 284/353	W	https://books.google.co.in/books?id=ZG6kBQAAQB ...

अपि अस्य वर्णनं प्राप्यते यत्

जातकर्मणि पुत्रं स्वीकृत्य दधिघृत्योः होमः तथा सुवर्णपात्रेण तस्य सेवनं पुत्रस्य कृते कारणीयमिति तथा शिशोः कर्णे वाग्, वाग्, वाग्, इति त्रिवारम् उच्चारणीयम्। पौराणिकसाहित्ये जातकर्मसंस्कारकरणस्योल्लेखः केवलं प्राप्यते। तत्र विधेः वर्णनं न कृतमस्ति। शिशोः जन्मानन्तरं क्रियमाणः संस्कारः जातकर्म संस्कारः। महाराजयुधिष्ठिरद्वारा परीक्षितस्य जन्मकाले जातकर्म संस्कारकारणस्य वर्णनं श्रूयते। श्रीधरीटीकायामपि "जातकं जातकर्म" इत्युक्त्वा स्पष्टीकृतं वर्तते। भगवतः विष्णुना यदा वामनावतारः स्वीकृतः तत्काले तेषां जातकर्मसंस्कारः कृत इत्यपि लभ्यते। अस्य स्पष्टीकरणं श्रीधरीटीकायाः अध्ययनेन लभ्यते। एतैः "कर्माणि" इत्यस्य स्थाने "जातकर्माणि" इति शब्दप्रयोगः कृतः अस्ति। इदं त्यक्त्वापि षष्ठमे स्कन्धे यदा चित्रकेतोः गृहे सन्तानोत्पित्तिः जातः यदा तस्य जातकर्म संस्कारः कारितः इत्यपि श्रूयते यत् वस्त्राभूषणैः अलङ्कृ

37%	MATCHING BLOCK 285/353	W	https://kakshakaumudi.com/%E0%A4%89%E0%A4%A6%E ...

तः सन् ब्राह्मणेन स्वस्तिवाचनं कारयित्वा, तेषामाशीर्वादं स्वीकृत्

य जातकर्मसंस्कारः कारितः तथा जातकर्म संस्कारानन्तरं ब्राह्मणानां कृते सुवर्णं, रजतं, वस्त्रम्, आभूषणं, ग्रामः अथवा गजाः तथा गावः प्रदत्ताः। दशमस्कन्धे श्रीकृष्णस्य जन्मकाले नन्देन स्नानं कृतं तथा पवित्रो भूत्वा सुन्दरं वस्त्राभूषणं धृत्वा, वेदज्ञ ब्राह्मणद्वारा स्वस्तिवाचनं कारयित्वा स्वपुत्रस्य जातकर्म संस्कारः कारितः तत्पश्चात् देवतानां तथा पि

61%	MATCHING BLOCK 286/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4% ...

तृणां विधिपूर्वकं पूजा कृता तथा ब्राह्मणानां

कृते विविधप्रकारकाणां वस्तूनां दानं च दत्तम्। एवं प्रकारेण प्राप्यते यत् तत्कालीन समये जातकर्म संस्कारे कर्मकाण्डीयपद्धति अवलम्बतेस्म इति।

4.4 नामकरणसंस्कारः शिशोः सम्बोधनार्थं नाम उत् सज्ञायाः आवश्यकतायां नामकरणसंस्कारः क्रियते। वैदिककालीन देवताभिस्सह मानवानामपि संज्ञायाः अपेक्षा भवति तत्पूरणार्थमयं संस्कारः क्रियते। बृहस्पतिद्वारा नामकरणस्य महत्त्वं प्रकाशितं वर्तते। तत्रोल्लेखः प्राप्यते – "नाम सकललौकिकव्यवहाराणां हेतुः वर्तते, तत् शुभाशुभकर्मणां भाग्यस्य हेतुः वर्तते, नाम्ना एव मनुष्यः कीर्तिं लभते अतः नामकरणमत्यावश्यकं वर्तते"। मनुस्मृतौ संस्कारविषयकं

100%	MATCHING BLOCK 288/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।

एतदन्तर्गततया उक्तं वर्तते – "शिशोः जन्मानन्तरं दशमे दिवसे उत् द्वादश दिवसे नामकरणसंस्कारः करणीयः यत् तदनन्तरं शुभतिथौ, शुभमुहूर्ते, शुभनक्षत्रे अयं संस्कारः कर्तव्यः"। चतुर्षु वर्णेषु वर्तमानानां बालकानां बालिकानाञ्च केन प्रकारेण नामानि भवेयुः, अस्मिन् विषये बृहत् प्रकाशः कृतः वर्तते। पुराणेषु अयं स्वस्तिवाचनं तथा वृद्धिश्राद्धानन्तरं यथाविधिः अनुष्ठीयते इत्यपि उल्लिखितं वर्तते। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य दशमस्कन्धे गर्गाचार्यैः श्रीकृष्णस्य तथा बलरामस्य नामकरणसंस्कारस्य वर्णनं कृतम्। विद्वद्भिः संज्ञायाः प्रकारद्वयम् उक्तम् प्रथमा केवलसंज्ञा द्वितीया अन्वर्तसंज्ञा इति। अन्वर्तसंज्ञान्तर्गततया व्यक्तेः आत्मिकं तथा व्यवहारिकगुणधर्मानुसारेण तथा नामार्थानुरूपतया संज्ञा भवति इदमेव अन्वर्तसंज्ञा इत्युच्यते। एतत् संज्ञानुरूपमेव गर्गाचार्यैः श्रीकृष्णबलरामयोः नामकरणं कृतम् इति श्रूयते। गर्गाचार्यद्वारा श्रीकृष्णबलरामयोः नामकरणसंस्कारैवं श्रूयते – "अयं रोहिणी पुत्रः अतः अस्य नाम रौहिणेयः भवेत्, अयं स्वबान्धवान् प्रसन्नं करोति अतः अस्य नाम रामः भवेत्, अस्य बलस्य सीमा न भवति अत अस्य नाम बलम् इति भवेत्, मानवेषु मतभेदे सति अयं मार्ग प्रदर्शयति अत एतस्य नाम "संकर्षणं" भवेत्। श्रीकृष्णस्य नामकरणे प्राप्यते यत् - अयं कृष्ण अतः अस्य नाम कृष्णः भवेत् तथा वसुदेवस्य गृहे एतस्य जन्म जातम् अतः अस्य नाम वासुदेवः भवेत् इति"। बालानां नामकरणसम्बन्धे अक्षराणां सुन्दरत्वं तथा उच्चारणे सौलभ्यं तथा सार्थकत्वं एतेषु विषयेषु मनः दीयते। तेषां नामानि सह देवानां सम्बन्धः योज्यते तथा दैवीय गुणानामाशाङ्कृत्वा गुणान् प्रकटीकुर्वन्ति यानि नामानि तानि एव दत्वा उत्कृष्टं एवं विशिष्टगुणानाम् अपेक्षा क्रियते इति।

4.5 उपनयनसंस्कारः प्राचीनभारतीयैः ब्रह्मावलोकधिषणैः शिक्षायाः विस्तारार्थं प्रयोजनरूपेण उपनयनसंस्कारः विहितः। अयं संस्कारः तदा क्रियते यदा विद्यार्थी वैदिकशिक्षायारारम्भं करोति। सर्ववर्णीयाः बालकाः अस्य संस्कारात् प्राक् शूद्रवत् भवन्ति। मन्वानुसारेणाऽपि एवम् उल्लेखः प्राप्यते यत् यावत् पर्यन्तं द्विजातिनां उपनयन संस्कारः न भवति तावत्पर्यन्तं ते शूद्रवदेव भवन्ति। अनेन ज्ञायते यत् तत्काले अयं सिद्धान्तः प्रचलितः आसीत् यत् प्रत्येकोऽपि व्यक्तिः शूद्र एव उत्पद्यते तथा संस्काराणां सुसम्पन्ने सत्येव सः द्विज इत्युच्यते। उपनयनसंस्कारानन्तरं विद्यार्थी वेदाध्ययनाधिकारी भवति। तथा गायत्री उपदेशोऽपि तत्काले क्रियते यदा उपनयनसंस्कारः सम्पद्यते तदा। एवं प्रकारेण तत्कालीन समाजे विद्याध्ययनार्थं उपनयनसंस्कार: आवश्यक: आसीत्। मनृस्मृत्यां प्राप्यते यत् - गर्भकालात् अष्

100%	MATCHING BLOCK 289/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

टमे वर्षे ब्राह्मणस्य, एकादशवर्षे क्षत्रियस्य

तथा द्वादशवर्षे वैश्यस्य

उपनयनसंस्कारः कर्तव्येति। उपनयनस्य अस्य सिद्धान्तस्

Curiginal

90%	MATCHING BLOCK 290/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

य वर्णनं याज्ञवल्क्यस्मृत्या

मपि प्राप्यते। विविध प्रयोजनदृष्ट्या अपि

90%	MATCHING BLOCK 291/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

अस्य संस्कारस्य वर्णनं कृतं

वर्तते। एतदन्तर्गततया उक्तं यत् अध्ययनं तथा चरित्रसमृद्ध्यर्थं ब्राह्मणस्य उपनयनं पञ्चमे वर्षे बलकामनया क्षत्रियस्य उपनयनं षष्ठे वर्षे धनेच्छार्थं वैश्यस्य अष्टमे वर्षे उपनयनसंस्कारः कर्तव्यः। यदि एतेषु वर्णेषु उपनयनसंस्कारः न क्रियते तर्हि

55%	MATCHING BLOCK 292/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

ब्राह्मणस्य षोडशो वर्षे, क्षत्रियस्य द्वाविंशत्यां वैश्यस्य चतुर्विंशत्यामुपनयनं संस्कारः

कर्तव्यः। उपनयनसंस्कारान्तर्गततया छात्रस्य कृते यज्ञोपवीत धारणं कार्यते। अनेन संस्कारेण सममेव छात्रस्य गुरुकुले प्रवेशः भवति तथा तत्र वेदानीनामध्ययनं तथा उपनीतिनियमानां पालनञ्च कर्तव्यं भवति। अनेन संस्कारेण सह विद्यार्थी कृते दण्डः, कमण्डलुः, भिक्षापात्रं, मेखला, चर्म यज्ञोपवीतादि धरणीयं भवति। यच्च विद्यार्थी लक्षणमित्युच्यते। एतेषां सिद्धान्तानां व्यवहारिकपक्षस्यापि श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्रतिपादनं कृतमस्ति। अस्य प्रथमोल्लेखः श्रीमद्भागवतमहापुराणे राजाभरतस्य तृतीये जन्मकाले कृतः वर्तते। तत्र उक्तं - तेषां जन्म सात्विकब्राह्मणकुले जातः तदा एतेषां पितृपादैः शास्त्रानुसारेण समावर्तनपर्यन्तं विवाहात् प्राक् सर्वेऽपि उपनयनादिसंस्काराः कारिताः तथा शास्त्रविध्यनुसारं शौचाऽचमनादि आवश्यककर्मणां शिक्षा अपि दत्तेति। भगवतः वामनस्य अवतारात्मकजन्मादनन्तरं तेषां यज्ञोपवीतसं

100%	MATCHING BLOCK 294/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

स्कारस्य वर्णनं प्राप्यते – "दे

वगुरुबृहस्पतिना तेषां यज्ञोपवीतसंस्कारः कारितः, सविता एव गायत्रीमन्त्रस्य दीक्षां प्रदत्तवती, कश्यपऋषिणा मेखला प्रदत्ता, पृथ्वी द्वारा मृगचर्म दापितम्, चन्द्रेण दण्डः प्रदत्तः, माता अदित्या कौपीनवस्त्रं, कटिवस्त्रञ्च प्रदत्तं, आकाशस्य अभिमानिदैवतैः छत्रप्रदानं कृतं, ब्रह्मणा कमण्डलुः, सप्तर्षिद्वारा कुश प्रदानं, सरस्वत्या रूद्राक्षमालायाः प्रदानं कृतं, यक्षराजकुबेरेण भिक्षापात्रं प्रदानं कृतमेवं रीत्या तेषामुपनयनसंस्कारः जातः"। श्रीकृष्णेन सान्दीपनिमुनिना साङ्गवेदस्य अध्ययनं कृतम्। अस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे तृतीयस्कन्धे प्राप्यते। अस्योल्लेखः श्रीधरीटीकायां कृतः वर्तते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे दशमे स्कन्धे श्रीकृष्णबलरामयोः उपनयनसंस्कारस्य वर्णनं लभ्यते। अत्र च गर्गाचार्यैः तेषामुपनयनं विधिपूर्वकं द्विजातिसमुचितमुपनयनं कारितमासीत्। संस्कारानन्तरं ब्राह्मणानां कृते दानस्यापि वर्णनं प्राप्यते। उपनयनानन्तरं गुरुकुलं गत्वा विधिपूर्वकं गायत्रीव्रतस्य धारणं कृतं तथा वेदादीनामध्ययनञ्च कृतम्।

4.6 समावर्तनसंस्कारः यदा छात्रः गुरुकुले भूत्वा विद्याध्ययनं परिपूर्णं करोति तदा तस्

90%	MATCHING BLOCK 295/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

य गृहस्थाश्रमे प्रवेशार्थो

द्देशेन समावर्तनसंस्कारः क्रियते। अयं संस्कारः ब्रह्मचर्याश्रमस्य समाप्तिः सूचकः वर्तते। शिक्षां समाप्य यदा विद्यार्थी गृहं प्रति गच्छतिस्म तदा अयं संस्कारः क्रियतेस्म। समावर्तनस्यार्थः वेदाध्ययनान्तरं स्वगृहं प्रति पुनरागमनम्। समावर्तनान्तर्गततया वेदादिव्रतान् परिसमाप्य तथा गुरुदक्षिणायाः विधानं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे नाभेः पुत्रऋषभदेवद्वारा गुरोः कृते यथोचितं दक्षिणायाः दानं तथा गृहस्थप्रवेशस्य अनुमतिः स्वीकरणम् अनेन समावर्तनसंस्कारस्य सङ्केतः प्राप्यते।

4.7 विवाहसंस्कारः विवाहः मानवजीवनस्य एकम् आवश्यकम् अपरिहार्यं च संस्कारः वर्तते। यच्च समाजनिर्माणस्य एका आधारभूता शिला च वर्तते। विवाहसंस्कारः सत्ये तथा कर्तव्ये च प्रतिष्ठितः आसीत्। विवाहः दम्पतिः तथा दम्पत्या आत्मा, मनः, प्राण एवं शरीरस्य आध्यात्मिकसम्बन्धद्वारा सुदृढं कर्तुमेकः प्रयत्नः वर्तते। वैवाहिकजीवनं विना समाजस्य कल्पनाऽपि कर्तुं न शक्यते। प्राचीनकालादेव सकलधर्मशास्त्रेषु तथा पुराणेषु विवाहस्

100%	MATCHING BLOCK 293/353	W	https://biography.sabdekho.in/10th-sans2/

य अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्था

नमासीत्। अनेन माध्यमेन मनुष्

90%	MATCHING BLOCK 296/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

यः गृहस्थाश्रमे प्रवेशार्थं

समर्थो भवति। वेदेषु विवाहसूक्

55%	MATCHING BLOCK 297/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

तानामुल्लेखः दृश्यते। गृह्यसूत्रेषु विवाहार्थं

दिनं, नक्षत्रं, मासादीनामुल्लेखः कृतः तथा विवाहविधीनामपि

100%	MATCHING BLOCK 298/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम्।

विधिपूर्वकविवाहानन्तरं सन्तानोत्पत्तौ सः पितृऋणा

100%	MATCHING BLOCK 299/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

त् विमुक्तो भवति। मनुस्मृत्

याम् अष्टप्रकारकविवाहानां वर्णनं प्राप्यते। तदन्तर्गततया बह्मविवाहः, देवविवाहः, आर्षविवाहः, प्राजापत्यविवाहः, असुरविवाहः, गान्धर्वविवाहः, राक्षसविवाहः तथा पैशाचविवाहेति। अयमेव विवाहः याज्ञवल्क्यस्मृत्यामपि उल्लिखितः वर्तते। एषु प्रथमचत्वारः विवाहः सम्मानजनकाः तथा द्वितीयचत्वारः समाजे निन्दिताः सन्ति। अस्य विषये मनुस्मृत्यां वर्णभेदेन निन्दिताः विवाहोऽपि प्रशंसनी

47%	MATCHING BLOCK 302/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

यः उक्तोस्ति। यथा - क्षत्रियस्य कृते राक्षसविवाहः, वैश्यस्य

तथा शुद्रस्य कृते असुरविवाहः प्रशंसनीयः वर्तते। एतेषां समेषां विवाहानां परिभाषाणामपि प्रदर्शनं मनुस्

66%	MATCHING BLOCK 300/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

मृत्यां तथा याज्ञवल्क्यस्मृत्यां प्राप्

यते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे विवाहस्य विविधरीत्याः वर्णनं प्राप्यते। एतदन्तर्गततया ब्रह्मविवाहः, गान्धर्वविवाहः, प्रतिलोमादि विवाहः इति।

विवाहनिमित्तं वरकन्ययोः योग्यत्वम् स्मृतिषु विवाहं ये कुर्वन्ति तेषां शारीरिकं, कुलं, परम्परा, गुणः तथा आयुः आधारेण योग्यता वर्णिता अस्ति। अस्य मुख्यं कारणं वर्तते यत् सन्तानस्य उपरि एतेषां गुणानां प्रभावः भवति। विवाहे गुणयुक्तायाः कन्यायाः वरनिश्चयार्थं किञ्चित् उद्धरणं प्राप्यते - देवहूती युवकं, शीलं, सद्गुणयुक्तं पतिमिच्छतिस्म तथा कर्दमस्य शीलं, विद्या, रूपादिगुणान् दृष्ट्वा सा तत्र आसक्ता जाता। मनुना अपि ते गुणसमूहेषु समृद्धः इति कृत्वा कन्यादानं कृतम् आसीत्। देवहूती अपि सुन्दरी तथा लावण्ययुक्ता आसीत्। तस्याः सुन्दरता तथा आसीत् येन लक्ष्मी अपि लज्जिता भवतिस्म, विश्वावसुः अपि तां दृष्ट्वा मूर्च्छितः जातः आसीत्। रुक्मिणी अपि कृष्णस्य रूपं गुणं च दृष्ट्वा तत्र आसक्ता आसीत्। श्रीकृष्णोऽपि तां बुद्ध्या, सुलक्षणया उदारशीलादि गुणेन् एषा परिपूर्णा वर्तते इति ज्ञात्वा विवाहं कर्तुमिच्छन्तिस्म। सत्यभामोऽपि स्त्रीरत्नमासीत् गुणयुक्ता च तस्याः पिता सत्रजितेन कृष्णद्वारा मणिमानीय समर्पणेसति तेषां समर्पणं महतोदात्तगुणं दृष्ट्वा स्वकन्यायाः दानं दत्तमासीत्। स्वयंवरः धर्मशास्त्रे वर्णितं विवाहं त्यक्त्वाऽपि स्वयंवरस्य एकः प्रकारः राजवंशेषु दृश्यतेस्म यत्र राज्ञां समायोजनं भवतिस्म तथा सर्वस्मात् राजपरिवारस्य राजकुमाराः, राजा, महाराजाश्च आहूयतेस्म तथा कया स्वेच्छया पतिः निश्चिनोतिस्म। परन्तु कदाचित् सभायां ये आयाताः तैः स्वबलस्य परीक्षा अपि दातव्या भवतिस्म। सत्यायाः स्वयंवरकाले श्रीकृष्णेन सप्तवृषभाणां एकदा एव नाथनं कृतमासीत्। लक्ष्मणायाः स्वयंवरे जले प्रतिफलनं दृष्ट्वा मत्स्यभेदनं कृतम् अतः लक्ष्मणा श्रीकृष्णस्य कण्ठे रत्नमालां स्थापितवती इति। राजपरिवारेषु तस्मिन् समये विवाह हेतु वरस्य निश्चयनार्थं स्वयंवरस्य आयोजनं क्रियतेस्म। अस्य च उदाहरणं द्रुपदेन स्वपु

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 301/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5% ...

त्र्याः द्रौपद्याः विवाहा

र्थं कृतस्वयंवरस्य उल्लेखो प्राप्यते। ब्रह्मविवाहः महाराजः मनोः पुत्री देवहूती तस्याः विवाहः कर्दमऋषिणा सह भवति येन प्रकारेण विवाहः भवति तत्तुल्यः ब्रह्मविवाहः वर्तते। देवहूत्याः स्पष्टानुमत्यैव तस्याः विवाहः कर्दमऋषिणा सह जातः मनुः तथा शतरूपाद्वारा तयोः कृते आशीर्वादात्मकं वस्त्राभूषणं च दत्तम्। अनेन प्रकारेण यः विवाहो भवति सः ब्रह्मविवाह इत्युच्यते। मनुस्मृतौ ब्रह्मविवाहस्य लक्षणं लभ्यते। तत्र वेदाध्ययनं समाप्तं यस्य वरस्य तं स्वयमाहूय वस्त्राभूषणै आच्छाद्य तथा मधुपर्केण पूजयित्वा कन्यायाः यदि दानं क्रियते तर्हि तत् ब्रह्मविवाह इत्युच्यते। कर्दमः एकः ऋर्षिः तथा वेदज्ञानीश्च वर्तते अतः तस्य विवाहः अनेन समं कारितः। अनेन ज्ञायते यत् अयं ब्रह्मविवाहः इति। एवमेव श्रीमद्भागवतमहापुराणे ब्रह्मविवाहस्य अन्यदुदाहरणं प्राप्यते। तत्र च दक्षस्य प्रसूत्या सह, धर्मस्य दक्षस्य त्रयोदश कन्याभिस्सह, अग्नेः स्वाहा सह, पितृणां स्वधा सह, शिवस्य सत्या सह, बलरामस्य रेवत्या सह ,भद्रायाः श्रीकृष्णेन सह एवं वर्णनं प्राप्यते। गान्धर्वविवाहः

100%	MATCHING BLOCK 303/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

मनुस्मृत्यां याज्ञवल्क्यस्मृत्यां

च गान्धर्ववि

100%	MATCHING BLOCK 305/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू ... (D112618843)

वाहस्योल्लेखः प्राप्यते।

अत्र च उल्लिखितं कन्यायाः वरस्य च इच्छया यदा आलिङ्गनपूर्वकं परस्परं संयोगो भवति, कामवासनया मैथुनसुखार्थं विशेषेण उपयुज्यते तत् गान्धर्वविवाहः इत्युच्यते। श्रीकृष्णरुक्मिण्योः विवाहः गान्धर्वविवाहः इति ज्ञायते। अस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्पष्टतया कृतं वर्तते। तत्र च – "भीष्मकनन्दिन्या रुक्मिण्या आह्वने सति शिशुपालः तथा तस्य सहायकानां मानमर्दनं कृत्वा गान्धर्वविधिना विवाहार्थं स्वनित्यसंगिनीरुक्मिणीं यथा आनितवन्तः गरुडा अमृतकलशमानितवन्तः"। इदं त्यक्त्वा अपि दुष्यन्तद्वारा कण्वस्य दत्तकपुत्री शकुन्तला तस्याः गान्धर्वविवाहः जातः इत्यपि उपलभ्यते। बाणासुरस्य पुत्री उषा तथा अनिरुद्धस्यापि गान्धर्वविवाहः जातः इति प्राप्यते। तत्र च दुष्यन्तः सञ्चरन् कण्वस्य आश्रमं दृष्ट्वा तं प्रति गच्छति तत्र च शकुन्तलां दृष्ट्वा अयं मोहितो भवति सा अपि एनं दृष्ट्वा मोहितः भवति तदा उभयोः इच्छानुसारेण सम्भोगो भवति। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे अपि उषायाः तथा अनिरुद्धस्य कथायां प्राप्यते यत् उषा स्वप्ने एकं नवयुवकं पश्यति चित्रलेखया तस्य युवकस्य चित्रं उषाद्वारा वर्णितवर्णनानुसारेण निर्मीयते। चित्रलेखा चित्रे दृष्टवन्तं युवकं स्वमायाशक्तया तं तस्य गृहात् उषायाः राजभवने आनयति। तदा उषानिरुद्धयोर्मध्ये प्रेमपूर्णसम्बन्धः भवति तदनन्तरं द्वयोर्मध्ये सम्भोगक्रियायाः सम्पादनं भवति। एवञ्च स्मृतिषु वर्णितानां लक्षणानामालोके विमर्शनं कृत्वा प्राप्यति यत् अयं गान्धर्वविवाहस्य श्रेण्यामागच्छति। राक्षसविवाहः श्रीमद्भागवतमहापुराणे राक्षसविवाहस्यापि वर्णनं प्राप्यते। अत्र च अर्जुनसुभद्रयोः उदाहरणम् अस्यान्तर्गतं प्राप्यते यत् अर्जुनेन सुभद्रायाः अपहरणं कृतं सैनकैः अर्जुनस्य रोधः कृतः तथापि अर्जुनेन सैनकानां तिरस्कारपूर्वकं मारणं तथा सुभद्रायाः परिजनानां करुणक्रन्दनमिदं ज्ञापयति यत् अयं राक्षसविधेः विवाहः इति। श्रीकृष्णद्वारा रुक्मेः पराजयः तथा रुक्मिण्याः हरणं राक्षस विवाहस्य एकः प्रकारः इत्युच्यते। राक्षसविवाहस्य मातापिताऽऽदिसम्बन्धिनाः विरोधं कुर्वन्तिस्म तथा युद्धं च भवतिस्म इति। सवर्णविवाहः समाजे यद्यपि अनुलोमविवाहः प्रतिलोमविवाहश्च प्राप्येते तथापि प्रथमं मान्यता सवर्ण विवाहस्य कृते आसीत्। अस्मिन् विषये श्रीमद्भागवतमहापुराणे श्रीकृष्णेन उद्धवः यदा उपदिष्टः तदा एवं विषयं प्रकाशान् वदति – "ब्रह्मचारिणां कृते अपेक्षते यत् शास्त्रं तथा लक्षणसम्पन्नकुले वर्धमानयाः कन्यया सह विवाहः कर्तव्येति"। श्रीमद्भागवतमहापुराणे ययातिं विहाय येषां क्षत्रियाणां विवाहस्य वर्णनं कृतं तेषां सर्वेषां विवाहः क्षत्रियकन्याभिस्सह जातम् इत्येतस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणे प्राप्यते श्रीकृष्णस्य रुक्मिण्या सह, अनिरुद्धस्य उषया सह, अर्जुनस्य दौपद्या तथा सुभद्रया सह, दुष्यन्तस्य शकुन्तलया सह इत्यादि उदाहरणानि प्राप्यते। अनुलोमविवाहः श्रीमद्भागवतमहापुराणे सवर्णया सह अनुलोम विवाहस्य उल्लेखः वर्तते यत् श्रीधरस्वाम्यानुसारं वर्णक्रमात् स्मृत्युक्तम् अनुलोमविवाहस्य सूचकः वर्तते। राजाशर्यातेः पुत्री सुकन्या तस्याः विवाहः भृगुवंशीयच्यवनेन सह अनुलोमविवाहरूपेण प्राप्यते। एवमेव राजामान्धाता तस्य पञ्चाशत् पुत्रीणां विवाहः सौभरिऋषिणा सह जातः सोऽपि एतदन्तर्गततयैव आगच्छति। मनोः कन्यायाः देवहूत्याः कर्दमेन सह विवाहोऽपि अनुलोम विवाहः। ब्राह्मणपुरुषस्य शूद्रास्त्र्या सह दाम्पत्यसम्बन्धविषये समाजे हीनभावना आसीत्। वृषलीपतिः निन्द्यतेस्म तथा सः तेन दोषेण नरकं गच्छति इति धारणा प्राप्यते। प्रतिलोमविवाहः शुक्राचार्यस्य पुत्री देवयान्याः कृते बृहस्पतेः श्रापः आसीत् यत् तस्याः विवाहः ब्राह्मणकुले न भवतीति। तदा अस्यां परिस्थित्यां क्षत्रियः राजा अयाति तेन सह अस्याः विवाहः का

52%	MATCHING BLOCK 304/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

रितः, ब्राह्मणकन्यायाः क्षत्रियेण, वैश्येन, शूद्

रण वा सह विवाहः यदि भवति तत् प्रतिलोम विवाहः इत्युच्यन्ते। एतद्रीत्या अयं विवाहः प्रतिलोम विवाहेऽन्तर्भवति। श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽपि अस्य विवाहस्य "प्रतिलोमकः" इति शब्देन सम्बोधनं कृतमस्ति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे धर्मशास्त्रस्य दृष्ट्या विपरीतविवाहस्य वर्णनं प्राप्यते तत्र च प्रद्युम्नस्य मातुलः रुक्मेः

Ouriginal

47%	MATCHING BLOCK 309/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

पुत्र्याः विवाहस्य उल्लेखः प्राप्यते। धर्मशास्त्रानु

सारं मातुलस्य पुत्री भगिनी सदृशी भवति। स्मृत्यानुसारेण यया सह विवाहः भवति सा कन्या स्वमातुः तथा पितुः गोत्रसपिण्डयोः तद्वती न भवेत्। या कन्या मातृतो मातुः सन्ताने पञ्चमादूर्ध्वं पितृतः पितुः सन्ताने सप्तमादूर्ध्वं उपरि भवति तया सह विवाहः कर्तव्यः। अत्र प्रद्युम्नेन यस्याः विवाहः कृतः सा तस्य मातृसपिण्डस्य कन्

58%	MATCHING BLOCK 308/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

या वर्तते तथा याज्ञवल्क्यस्मृत्यानुसारं मातुः

प्रथमसपिण्डस्य कन्या ज्ञायतेस्म। एवं प्रकारेण अयं विवाहः धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या वेदविरुद्धः सिद्धो भवति। एवं च श्रीमद्भागवतमहापुराणे तादृशविवाहस्यापि वर्णनं कृतं वर्तते यच्च सर्वथा स्मृतिविरूद्ध एवास्ति। तत्र च श्रीकृष्णद्वारा स्वपितुः भगिनी श्रुतकीर्ति तस्याः पुत्री भद्रा तया सह विवाहकर्म धर्मशास्त्रीयसम्मतं न प्रतीयते। यतोहि पितृभगिन्याः पुत्री भगिनी सदृशा भवति। अस्मिन् विषये मनुस्मृत्यां प्रायश्चित्तप्रकरणे एषा उक्

36%	MATCHING BLOCK 306/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

तिः प्राप्यते यत् पितृभगिन्याः पुत्री, मातुभगिन्याः पुत्री, मातुलस्य पुत्री,

एताभिस्सह यदि सम्भोगः क्रियते तर्हि चान्द्रायणव्रतम् आचरणीयम्। अनेन ज्ञायते श्रीकृष्णद्वारा स्वपितृभगिन्याः पुत्र्या सह विवाहः स्मृतिविरुद्धः वर्तते।

4.8

82%	MATCHING BLOCK 307/353	W	https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

अन्त्येष्टिसंस्कारः अयं संस्कारः

जीवनस्य अन्तिमः संस्कारः

व्यक्तेः मरणानन्तरं तत्सम्बन्धिनः अयं संस्कारः कुर्वन्ति। एतदन्तर्गततया अनेके धार्मिकः कार्यकलापाः भवति। यथार्थेन अयं संस्कारः व्यक्तेः आत्मनः शान्त्यर्थम्। अयं आत्मसंस्कारः इत्यपि नाम वर्तते अस्य विषये प्राप्यते – "अन्त्येष्टि आत्मनः उत्थानार्थं तथा पवित्रीकर्तुं एकः संस्कारः वर्तते। मरणासनावस्थां प्राप्तः व्यक्तिः स्वजीवनात् हतोत्साहाभूत्वा स्वसद्गतिं प्राप्तुं सत्कुल्येषु संलग्नो भवति तथा परमात्मतत्त्वचिन्तने लीनः भवति। अनेन प्रकारेण अयमात्मसंस्कारः वर्तते।" मनुष्यस्य मृत्योरनन्तरं देहनिमित्तं पारलौकिक दृष्ट्या या क्रियाः

66%	MATCHING BLOCK 310/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

क्रियन्ते त एव अन्त्येष्टिः संस्कारः

पदेन उच्यन्ते। एतस्मिन् समये देहस्य दाहः क्रियते तथा तत्कालादारभ्य पिण्डदानादि क्रियाः अपि आरभ्यन्ते।

50%	MATCHING BLOCK 311/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

मनुस्मृतौ तथा याज्ञवल्क्यस्मृतौ च वचनं प्राप्यते यत् अयं संस्कारो

ऽपि मन्त्रोच्चारसहितं सम्पन्नं कर्तव्यम्। स्मृतिग्रन्थेषु मृतव्यक्तेः ये संस्काराः तेषां विस्तारेण वर्णनं वर्तते। तथा च कस्य अयं संस्कारः कर्तव्यः कस्य न कर्तव्यः इत्यपि प्राप्यते। ये स्वच्छन्दरूपेण अनैतिकं जीवनं यापयन्ति तेषां अन्त्येष्टि तथा पिण्डदानादीनां निषेधः वर्तते। एवं प्रकारेण धर्मशास्त्रेषु अन्त्येष्टिकर्मणः

83%	MATCHING BLOCK 312/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

विस्तारेण वर्णनं प्राप्यते। श्

रीमद्भागवतमहापुराणे अन्त्येष्टिक्रियायाः सर्वप्रथमोल्लेखः वर्तते तच्च युधिष्ठिरेण भीष्मस्य प्राणत्यागे सति तेषां दाहसं

Curiginal

100%	MATCHING BLOCK 313/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

स्कारस्य वर्णनं प्राप्यते

अत्र वेदव्यासेन "निर्हरणादीनि" शब्दस्य प्रयोगः कृतः वर्तते च श्रीधरीटीकायां "दाहसंस्कारादीनि" इत्यर्थ उक्तः वर्तते। चित्रकेतुना स्वमृतपुत्रस्य देहसंबन्धित अन्त्येष्टिक्रिया कृता इति श्रूयते। अस्य अन्यत्र उल्लेखः हिरण्यकशिपुना स्वाग्रजस्य हिरण्याक्षस्य मरणे सति तर्पणादिकं कृतम् इति च लभ्यते। अस्मिन् विषये वेदव्यासेन "कटोदकं" शब्दस्य प्रयोगः कृतः यस्यार्थः श्रीधरस्वामिना श्रीधरीटीकायां "कटोदकं प्रेताय प्रदेयमुदकम्" इत्युक्ते प्रेतनिमित्तं जलप्रदानमित्यर्थः। एवमेव "आब्दि"शब्दस्य स्थाने "प्रेतश्राद्धादिकम्" इत्युक्तं वर्तते अर्थात् मृतव्यक्तेः उद्देश्येन क्रियमाणं श्राद्धं कर्म। एकमन्यदुदारणमपि प्राप्यते हिरण्यकशिपुना स्वबान्धवान् देहस्य अनित्यता तथा जीवस्य नित्यता इत्येतत् सम्बन्धे एकम् उपाख्यानं वर्णितमस्ति यत्र च सुयज्ञनामकोपाख्यानस्य अन्तर्गतस्य पात्रसुयज्ञस्य अन्त्येष्टिकर्म कृतम् इति उल्लिखितं तथा अन्त्येष्टि इत्यर्थे "सांपरायिकम्" इति शब्दप्रयोगः कृतः अस्यार्थः श्रीधरस्वामिना "परलोककृत्यम्" इति उक्तः यस्यार्थः परलोकदृष्ट्या क्रियमाणकृत्यः। श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य सप्तमे स्कन्धे एव हिरण्यकशिपोः मृत्युः यदा जायते तदा प्रह्लादद्वारा पिताहिरण्यकशिपोः अन्त्येष्टिः संस्कारः कारितः इति लभ्यते। तत्र च "प्रेतकार्याणि" इति शब्दः प्राप्यते। गरुडपुराणेऽपि मृतव्यक्तेः निमित्तः सम्बोधनार्थं प्रेत इति संज्ञा प्राप्यते। इत्थंप्रकारेण प्रेतकार्याणिशब्दस्य तात्पर्यः मृतमनुष्यस्य निमित्तक्रियमाणकर्म भवति। एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे अन्त्येष्टि अथवा श्राद्धनिमित्तं बहूनि पदानि प्रयुक्तानि सन्ति। श्रीमद्भागवतमहापुराणे गर्भाधानं, पुंसवनं, जातकर्म, नामकरणम्, उपनयनं, समावर्तनं, विवाहः तथा अन्तेष्टि एतेषां विविधस्थाने वर्णनं कृतम्। एतेषां विषयाणां स्मृतिशास्त्रेषु क्वचित् सम्मतिः दृश्यते क्वचित् वैपरीत्यं च दृश्यते। समाजस्य विकासात्मकदृष्ट्या तत्कालीन समाजे अपि संस्काराणां कर्मकाण्डीयपद्धत्या आयोजनं क्रियतेस्म। अत्र च वैदिकमन्त्रेण देवपूजनं तथा संस्काराः भवन्तिस्म। तदनन्तरं ब्राह्मणेभ्यः गोदानं तथा धनदानादिकं क्रियतेस्म अनेन च ज्ञायते यत् गृ

71%	MATCHING BLOCK 314/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

ह्यसुत्रेषु वर्णितानां संस्काराणां

पद्धित्याः अवलम्बनं श्रीमद्भागवतमहापुराणकालीन समाजे अपि क्रियतेस्म। संस्कारमाध्यमेनेव व्यक्ते आदिदैविकम् आदिभौतिकम् आध्यात्मिकं विकासः भवतिस्म। एवं प्रकारेण जन्मादारभ्य मृत्युरनन्तरमपि मानवजीवने

52%	MATCHING BLOCK 315/353	SA	Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसू... (D112618843)

संस्काराणाम् अधिकं महत्त्वं प्राप्यते। संस्कारमाध्यमेन

जीवने परिष्कार तथा व्यक्तेः क्रमिकविकासे सहायः प्राप्यतेस्म। अद्य समाजे धर्मशास्त्रीयदृष्ट्या पश्यामश्चेत् ज्ञायते यत् संस्काराणां प्रतिबिम्बमात्रं वर्तते। केचन् संस्काराः एव व्यक्तेः जीवने क्रियन्ते। संस्कारान् प्रति तेषां पारिवारिक-उदासीनतायाः कारणात् व्यक्तिः संस्कारवञ्चितः भवति। तथापि प्राचीनकालात् आरभ्य एतावतपर्यन्तं व्यक्तेः जीवने संस्का

100%	MATCHING BLOCK 316/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

राः महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्

वहन्तः सन्ति। संस्कारेण व्यक्तेः परिमार्जनेन सहैव शिक्षितः अपि भवति। यतोहि बहूनि शिक्षणानि तस्मै संस्कारमाध्यमेनैव प्राप्यन्ते इति।

पञ्चमोऽध्यायः श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपितो राजधर्मः

पञ्चमोऽध्यायः श्रीमद्भागवतमहापु

राणे निरूपितो

100%	MATCHING BLOCK 317/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

राजधर्मः 5.1 राज्यस्य सप्ताङ्गानि 5.2

रा

जशब्दस्यार्थः

5.3 राज्ञो महत्त्वप्रतिपादनम्

5.4 राजधर्मः शब्दस्यार्थः परिभाषा तन्माहात्म्यञ्च

5.5 राजधर्मः

सृष्टेः प्रारम्भकालादेव सभ्यसमाजे सामाजिकैस्सह सम्बन्धितविविधमूल्यानाम् उल्लेखः

100%	MATCHING BLOCK 319/353	SA	Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

अस्माकं संस्कृतसाहित्ये

षु, धर्मशास्त्रेषु, नितिशास्त्रग्रन्थेषु च प्राप्नोति – सामाजिकाधिकारः, सम्पत्तिविभाजनविधिः, नैतिकमूल्यम्, मानवमूल्यम्, सामाजिक- कर्तव्यम्, व्यक्तिगतकर्तव्यं राज्यादिरक्षणं तथा

100%	MATCHING BLOCK 318/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

सामाजिकव्यवस्थायाः नियमनाय

च राज्यस्य संकल्पनाक्रियत। संकल्पितराज्यरक्षायै तथा तद्विकासायच राजव्यवस्थायाः निर्माणमक्रियत। सृष्ट्यां मनुष्यः आत्मनियन्त्रितो भूत्वा निजधर्मस्य सम्यक्पालनं करोति स्म। किन्तु कालक्रमेण यदा राग-द्वेषसदृशदुष्प्रवृत्तीनां प्रभावेण समाजे अन्यायस्य, अराजकतायाः एवमव्यवस्थायाः स्थितिः समुत्पन्ना तथा सर्वत्र मत्स्य–न्यायस्य व्यापकरूपेण प्रभावोऽभवत्तदास्याः समस्यायाः समाधानाय राज्ञः आवश्यकता समभूत्। ऋग्वेदे इत्थं प्रकारेण वर्णनं प्राप्यते यद् भययुक्तमानवाः मुक्तिप्राप्तये राजपदस्य निर्माणं कृत्वा राज्ञो वरणमकुर्वन्। ऐतेरयब्राह्मणे कथानकमाध्यमेन निरूपितमस्ति यद् देवासुराणां मध्येवारं-वारं युद्धे सति देवाः पराजिताः भवन्ति स्म। देवाः पराजयस्य कारणानां विमर्शमकुर्वन्। अनेनायं निष्कर्षः समागतः यत् तेषां पराजयस्य प्रमुखं कारणं तेषां मध्ये राज्ञोभाव एवासीदिति। तदा ते सर्वसम्मत्या 'सोमं' निजनृपत्वेन चितवन्तः तथासुरान् च पराजितवन्

45%	MATCHING BLOCK 320/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

तः। तैत्तिरीयब्राह्मणे प्राप्यते यत् सर्वेषु देवेषु श्रेष्ठः,

यशस्वी तथा शक्तिशाली इन्द्र एवासीदतः सो राजा बभूव। इत्थं प्रकारेणैतैः उद्धरणैः इयं स्पष्टता जायते यद् युद्धपरिणामस्वरूपेण राज्ञः उत्पत्तिःसमभूत् तथा सैव व्यक्तिः नृपत्वेन स्वीक्रियते स्म या रणभूमौ सफलनेतृत्वं कुर्यात्, यतोहि युद्धे विजयः राज्ञः पराक्रमेणैव भवति स्म। महाभारते राज्ञः उत्पत्तेः द्वयोः सिद्धान्तयोः वर्णनमक्रियत। प्रथम-सिद्धान्तान्तर्गते समाजे समेऽपि स्व-स्वधर्माणां पालनं निजेच्छया कुर्वन्ति स्म तथा समाजस्य समेषामुत्तरदायित्वानां कर्तव्यानाञ्च पालनं कुर्वन्ति स्म, किन्तु यदा कामक्रोधादिकारणेन वेदस्य धर्मस्य च विनाशः प्रवर्धितः, तदा चौरादिभ्यः त्रस्तान् जनान् वीक्ष्यतान् रक्षितुं व्यवस्थायाः नियमनाय देवताः ब्रह्मणः पार्श्वं जग्मुः। तदा ब्रह्मा आचारशास्त्रं निर्ममे तथा 'विरजा'नामकं राजानं सृष्ट्वा तस्य ग्रन्थस्य राज्ञा क्रियान्वयनमकारयत्। इत्थमेवान्यसिद्धान्तानुसारेण यदा समाजे पूर्णरूपेणाराजकतायाः विस्तारोऽभूत्तथासामाजिकानां संख्यात्यधिकावर्धततदा जनसमुदायः ब्रह्मणः शरणमुपागच्छत्तथैकस्य सुयोग्यराजस्य प्राप्तये प्रार्थयत्। इत्थं प्रकारेणब्रह्मणा मनुः राजपदे नियोजितः। श्रीमद्भागवते प्रथमः सम्राड् मनुः तथा साम्राज्ञी शतरूपा चोल्लिखिता वर्तते, ययोश्चोत्पत्तिः ब्रह्मणः शरीरात्प्रजायाः वृद्ध्यर्थं समजायत। मनु - शब्दस्य विशेषणत्वेन 'स्वराट्'शब्दस्य प्रयोगोऽक्रियत। 'स्वेन राजते इति स्वराड्' इति व्युत्पत्या स्पष्टमस्ति यद् ब्रह्मणा राजरूपेण मनोः सृष्टिरक्रियत। मनुस्मृतावुक्तमस्ति यद्राजोत्पत्तिः स्वस्वधर्मेसंलग्नवर्गाणां तथाश्रमाणां रक्षायै चाक्रियत। श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽप्यस्यैवार्थस्य प्रतिपादनमक्रियत यद् – राज्ञः दुस्सहतेजसा सुरक्षिता प्रजैवनिजकल्याणमवाप्नोति। अथ चैकमितोप्यनेनार्थेनसम्बन्धितमन्योद्धरणं श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् ब्राह्मणानां रक्षायै ब्रह्मणा क्षत्रियाः नियुक्ताः। कौटिल्यानुसारं वर्णनं वर्तते यत् समाजे प्रसृतस्वच्छन्दव्यवहारस्य नियन्त्रणाय यदा दण्डप्रयोगो न भवति तदा मत्स्यन्यायस्य स्थितिरुत्पद्यते, यतोहि दण्डधरस्याभावे बलवता दुर्बलोनिगृह्यते। इत्थं प्रकारेण मत्स्यन्यायात् त्रसितनागरिकैः मनुः निजनृपतिः घोषितः तथा रक्षाकारणात् तस्मै निजसम्पत्तेः 'एकं भागं' कररूपेण प्रदातुमभिमताःसञ्जाताः। मनुस्मृतौ राजोत्पत्तिसन्दर्भे औच्यत यद्यदा सर्वासु दिक्ष्वराजकतायाः विस्तारोऽभवत्तथा जनाः तयाराजकतया व्याकुलाः भूत्वैकस्मात् स्थानात् स्थानान्तरं पलायमाना आसन् तथा विश्वे एतेषां कोऽपि रक्षकश्च नासीत्तदा सम्पूर्णचराचरस्य रक्षायै राज्ञः सृष्टिः समभवत्। तस्य राज्ञः प्रजया सह कीदृक्ससम्बन्धाः भवेयुरित्स्य वर्णनं श्रीमद्भागवते प्राप्यते यद् राज्ञःप्रजया समं पुत्रवत् तथा प्रजायाः राज्ञा समंपितृवत्सम्बन्धः भवेदिति। आधुनिको विद्वान् ए. एस अल्तेकरः राज्ञः उत्पत्तिसन्दर्भे स्वमतमुपस्थापयन् वदति यत् "पुराणामनुसारेणोक्तस्य सतयुगस्य भवेन्नाम काप्यवस्था यावज्ज्ञातेतिहासस्य सम्बन्धो वर्तते, हिन्दूविचारकाः एतन्मन्यन्ते स्म यत् समाजस्य रक्षायै विकासाय च शासनसंस्थायाः अस्तित्वमनिवार्यं वर्ततेतेन विना च समाजः स्थिरो भवितुं नार्हति राज्यस्य दैवीयसंस्थारूपेण स्वीकारे तदर्थोऽयं भवति यत् सः समाजवदेव प्राचीनमस्ति, तथातस्योत्पत्तेः कारणं मनुष्यस्य सहजातसामाजिकी राजनीतिकी च प्रवृत्तिरस्ति। मनुस्मृतेः टीकाकारेण

87%	MATCHING BLOCK 321/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

कुल्लूकभट्टेन 'मन्वर्थमुक्तावली'

टीकायां धर्मशास्त्रीय-तत्त्वानां वर्णनप्रसङ्गे पञ्चधर्मान्तर्गते तथा

Ouriginal

100%	MATCHING BLOCK 322/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

याज्ञवल्क्यस्मृतिटीकाकारेण विज्ञानेश्वरेण '

मिताक्षरा'टीकायां

धर्मशास्त्रीयषड्धर्मान्तर्गते राजधर्मः 'गुणधर्म' रूपेणाभिहितो वर्तते। तथा 'गुणधर्मं' व्याख्यायतोदीरितं वर्तते यत् गुणाश्रितः धर्मः गुणधर्मःवर्तते यथा- अभिषेकादिगुणैः युक्तेन राज्ञा प्रजापालनम्। अस्यैवार्थस्य यथावत्प्रतिपादनं

100%	MATCHING BLOCK 323/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

याज्ञवल्क्यस्मृतेः मिताक्

षरा

यामप्यक्रियत। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राजधर्मशब्दार्थं गुणधर्मशब्दस्य प्रयोगो नाक्रियतापितु राजधर्मशब्दस्यैव प्रयोगोविहितः। पौराणिकेषु तथा स्मृतिककालखण्डेषु राजतन्त्रगणतन्त्रे एव सर्वव्यापकावास्ताम्। इत्थं प्रकारेण समाजे राजोत्पत्तिः एवं महत्त्वं च प्राप्यते ।

5.1 राज्यस्य सप्ताङ्गानि धर्मशास्त्रकारैः राज्यस्य सप्ताङ्गविषयेस्व-स्वमतानि प्रस्तुतानि सन्ति। एतान्यङ्गानि प्रकृतिरूपेणापि ज्ञायन्ते। राजनैतिकग्रन्थेषु 'प्रकृति"शब्दो राज्यस्य मण्डलस्याङ्गानामपि द्योतको वर्तते । मनु-याज्ञवल्क्य-कौटिल्यानुरारेण स्वामी, अमात्यः, जनपदः, दुर्गः, कोशः, दण्डः एवं मित्रमेतानि राज्यस्य मूलभूतानि कारणानि सन्ति। इमानि राज्यस्य सप्ताङ्गानि कथ्यन्ते। शुक्राचार्येण राज्यस्य सप्ताङ्गानि राज्यस्य शरीररूपेणोल्लिखितानि वर्तन्ते तस्यानुसारेण मन्त्री राज्यस्य नेत्रस्वरूपो भवति, मित्ररूपिराज्याङ्गस्यतेन श्रोत्रस्य संज्ञा प्रदत्ता वर्तते, कोशः मुखस्वरूपेण स्वीकृतो वर्तते, बलरूप्यङ्गं मनसः संज्ञया विभूषितमस्ति, दुर्गः हस्तस्वरूपेणोल्लिखितः तथा राष्ट्रंचरणसंज्ञया विभूषितं वर्तते, इत्थं प्रकारेण राज्यस्य सप्ताङ्गानि शरीररूपेण वर्णितानि सन्ति। एवमेव श्रीमद्भागवतेअङ्गिनाम्नः ऋषेः राज्ञः चित्रकेतोः च सम्वादमध्ये गुरुः, मन्त्री, राष्ट्रम्, दुर्गः, कोशः, सेना, मित्रमिमानि सप्त राज्ञः सप्तावरणरू

100%	MATCHING BLOCK 324/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

पेण प्रतिपादितानि सन्ति।

एतेषां सप्ताङ्गानां सहयोगेन राजा राज्ये सफलतापूर्वकं शासनं कुरुते। श्रीमद्भागवते निरूपितानि राज्ञः सप्तावरणानिमनुस्मृतौ वर्णितेन राज्यस्य सप्ताङ्गेन सह साम्यं भजन्ते। एतेषु दुर्गस्य, कोशस्य, आमात्यस्य च स्थाने मन्त्री, जनपदस्य स्थाने राष्ट्रं तथा दण्डस्य स्थाने सेना एवंस्वामिनः स्थाने गुरुः इत्यस्योल्लेखो वर्तते। इत्थंप्रकारेण श्रीमद्भागवते स्मृतिसम्मतानि

100%	MATCHING BLOCK 328/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

राज्यस्य सप्ताङ्गानि प्रा

प्यन्ते ।

5.2 राजशब्दस्यार्थः राजन् इति शब्दः नित्यं पुँल्लिङ्गशब्दो वर्तते। अस्य शब्दस्य निष्पत्तिः राजृदीप्तौ इत्यस्माद्दीप्त्यर्थकाद्धातोः कणिन् प्रत्ययेतत्संयोगेन च जायते। यस्यार्थो भवति 'राजते शोभते इति राजन्'। लोके यो मनुष्यः शासकस्य सर्वप्रमुखपदे स्थितो भूत्वा राज्यशासनंसंचालयति स्म, प्रजायाः भरणपोषणेरक्षणादिलोकहितेषु रतः सन्निजजीवनं राज्यधर्मे वर्णितसकलनियमानामालम्बनं विधाय यापयति स्म स राजन् इति शब्देन सम्बोध्यते स्म। एतादृशी व्यक्तिः दैविकशक्तीनामंशैः विभूषितो मनयते स्म तथा समाजे सा सर्वतो भावेनसर्वैः मनुष्यैः पूजनीया भवति स्म। तस्य केनापि कथमपि कस्यामप्यवस्थायाञ्चावमाननं धर्मशास्त्रकारैः उचितं न मतम्। राज्ञः स्थानं समाजे मनुष्याणां मध्ये ब्राह्मणान् विहायान्येभ्यः समेभ्यः श्रेष्ठं मतमासीत्। पुराणसाहित्येऽपि राज्ञो महत्त्वस्य प्रतिपादनं प्राप्यते।

राजोत्पत्तिसिद्धान्तः

धर्मशास्त्रकारैः राजा देवस्वरूपः मन्यते, अतः तस्योत्पत्तिः देवांशेभ्यो मता वर्तते। मनुस्मृतौ राज्ञः उत्पत्तिः इन्द्रादिविविधदेवानां सारभूतशाश्वतांशेभ्योऽमन्यत। अस्मिन् विषयेप्राप्यते यत् जगद्रक्षायै इन्द्रः, पवनः, यमः, सूर्यः, अग्निः, वरुणः, चन्द्रमा तथा कुबेरः इत्येषामष्टदिक्पालानां सारभूतांशैः राज्ञः उत्पत्तिरक्रियतेति। राजा

81%	MATCHING BLOCK 325/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

अग्नि-वायु-सूर्य-चन्द्र-यम-कुबेर-वरुणे

Ouriginal

न्द्रवदेव प्रतापी भवति। अस्मिन्नेव प्रसङ्गे मनुस्मृतेः वचनं वर्तते यद्यदि राजा बाल्यावस्थायां स्यात्तदापि तस्यानादरो न कर्तव्यः यतोहि सः कश्चन महान् देव एव मनुष्यरूपेण तिष्ठति। राज्ञः उत्पत्तेः प्रस्तुतस्मार्तसिद्धान्तानामनुवर्तनं श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽपि दृश्यते । श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञः पृथोः उद्भवविषये ऋषिभिः कथ्यते यत् पृथुरूपेण साक्षात् श्रीहरिरेवस्वांशरूपेण संसारस्य रक्षायै अवातरत्। अस्मिन्नेव प्रसङ्गे भागवतमहापुराणे राज्ञे पृथवेदेवताभिः विविधास्त्रप्रदानमपि राज्ञः देवशक्तिसम्पन्तायाः विवरणं भवति।

5.3 राज्ञो महत्वप्रतिपादनम् राज्ञो महत्वं श्रीमद्भागवतेविस्तरेण प्रतिपादितं वर्तते यथा – शासकवर्गस्याभावे समाजस्य स्थितेः वर्णनमक्रियत यद्यस्मिन् काले राज्ञो रूपं धृत्वा भगवान् पृथिव्यां न द्रक्ष्यते,तदा चौराः वर्धिष्यन्ते तथारक्षितमेषवद्युगपदेकस्मिन्नेव क्षणे समेषां जनानां नाशो भविष्यति। राज्ञोऽभावे वर्णाश्रमाचारयुक्तो वैदिकार्यधर्मो नश्यति तथा अर्थ-लोभकाम-वासनावशीभूताः लोकाः श्वानमरकटवद्वर्णसंकराः भूत्वा सन्मार्गात् पथभ्रष्टा जायन्ते। यस्य लोकस्य राजा नष्टो जायते तत्र चौर्यादितत्त्वानि वर्धन्ते तथा समाजेजनाः परस्परं मारणताडनापशब्दप्रयोगमाध्यमेन चावमाननं कुर्वन्ति। इत्थं प्रकारेण समाजेऽव्यवस्था व्याप्नोति सुतराम् ।

राज्ञो गुणाः दोषाश्च

धर्मशास्त्रसाहित्ये राज्ञो गुणदोषानांसविस्तरं निरूपणमक्रियत। मनुस्मृतौ दण्डप्रदायकस्य राज्ञो गुणविषय उदीरितं यत् पवित्रः, सत्यप्रतिज्ञः, शास्त्रानुकूलव्यवहारः सहायकयुक्तः तथा बुद्धिमानेव दण्डस्य समुचितप्रयोगे समर्थो भवति। अर्थाद्राजा पूर्वोक्तगुणैः युक्तो भवेत्। अजितेन्द्रियस्य राज्ञो विषये प्राप्यते यद् "विश्वे अजितेन्द्रयस्य राज्ञो यशः जलेविद्यमानघृतबिन्दुवत् संक्षिप्तं भवति" अनेन ज्ञायते यद्यशः कामयमानेन राज्ञा जितेन्द्रियेण भाव्यम्। राजैव प्रजां स्वीयनियन्त्रणे स्थापयितुर्हतीत्यस्य निरूपणं स्मृतिशास्त्रेषु यत्र – तत्र प्राप्यते। दोषानां परित्यागः स्मृतिशास्त्रस्य प्रमुखो विधेयः वर्तते। तदनुसारेण निरूपितं वर्तते यद्राजा कामजान् दश दोषान् तथा क्रोधजानष्टौदोषान् सर्वथा परित्यजेदिति। यतोहि कामजव्यसनेषु दोषेषु वासक्ता राजानो निश्चयेनैवार्थेन धर्मेन च हीनास्सञ्जायन्ते तथा क्रोधोत्पन्नदोषैः तेषां जीवनं नश्यति अत एव राज्येते दोषा न भवेयुः। कामजव्यसनान्तर्गते आखेटः, द्यूतक्रीडा, दिवास्वापः, परदोषकथनम्, स्त्रिषाशक्तिः, मादकपदार्थानां सेवनम्, नृत्य-गानादिष्वभिरुचिः तथा वृथाभ्रमणस्य च संकलनं कृतो वर्तते। एतेभ्यःदुर्गुणेभ्यः मुक्त्यर्थं राज्ञे उपदेशः प्रदत्तः वर्तते। इदमेवपैशुन्यमर्थात् अमात्यात् सुकृतबन्धुभ्यश्च गोपनीयरहस्यानां कथनस्य प्रवृत्तिः, साहसम् अर्थात् योग्यव्यक्तेः निम्नकर्मसु नियुक्तेः प्रवृत्तिरथवा लघ्वपराधायापि करनियोजनस्य प्रवृत्तिरथवा बन्धनं कृत्वा कारावासेस्थापनस्य प्रवृत्तिः, द्रोहः अर्थाद्रहस्यात्मकस्य वधस्य प्रवृत्तिः, इर्ष्या अर्थाज्जीवितायां व्यक्तावाक्रमणस्य प्रवृत्तिरथवा तस्य मारणस्य प्रवृत्तिः, असूया अर्थात् सर्वसाधारणविषयस्यासाधारणत्वेन कथनस्य प्रवृत्तिः, गुणिनां गुणासहित्वप्रवृत्तिः तथा तेषां गुणेषु दोषारोपणस्य प्रवृत्तिः, अर्थदूषणम् अर्थाद्धनदानस्याप्रवृत्तिरथवास्तेयप्रवृत्तिः, वाक्पौरुष्यमर्थाद्वाण्याः कर्कशत्वं यथापशब्दैः अवमाननं तथा दण्डपारुष्यमर्थाद् अत्यधिकस्य कठोरदण्डस्य तथा लघ्वपराधस्याधिकदण्ड-प्रदानप्रवृत्तिः अथवा शारीरिको दण्डः एते 'कामजदोषाः' सन्ति । राजैतान् दोषान् परित्यजेत्। एतेषां व्यसनानां मूलकारणं लोभो वर्तते अतः राजा प्रयत्नपूर्वकं लोभं परित्यजेत्। राज्ञः षण्णां वर्जनीयशत्रूणां वर्गस्

66%	MATCHING BLOCK 326/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

य – काम-क्रोध-लोभ-मोह-मान-मदादीना

मुल्लेखो प्राप्यते। एतेषु प्रत्येकस्मात्कारणादितिहासप्रसिद्धराजानां विनाशो बभूव यथा – कामुकतावशादेव राजा दण्डकोऽविनश्यत्, क्रोधकारणाद् राजा जनमेजयः, लोभकारणाद्राजर्षिः ऐलः, मोह-कारणाद् वातापिनामको दैत्यः, मानकारणात् पुलस्त्यकुलोद्भवः राक्षसराजः रावणः तथा मदकारणाद् दम्भोद्भवनामकादिराजानां विनाशो बभूव। यतोहीमे सर्वे शत्रुतुल्यैः षड्भिःअरिभिस्सह युक्ता आसन् अतः राजभिः इमे रिपवः परित्याज्याः। याज्ञवल्क्यस्मृतौ राज्ञो गुणानां वर्णनमित्थं प्राप्यते – महोत्साहवान्, बहुदर्शी, कृतज्ञः, वृद्धसेवकः, विनीतः, सत्यसम्पन्नः, कुलीनः, सत्यवक्ता, पवित्रः, शीघ्रतापूर्वकं कार्यसाधकः, स्मृतिमान्, गम्भीरः, सरलस्वभावः, धार्मिकः, व्यसनरहितः, विद्वान्, शूरः, रहस्यज्ञाता, निजगुप्तदोषनिगूहकः, न्यायविद्याप्रवीणः, राजनीतिप्रवीणः, त्रयाणां वेदानां ज्ञाता च राजा भवेत्। आखेटः, मद्यपानं, तथा द्यूतक्रीडेमे राज्ञो दुर्गुणाः वर्णितास्सन्ति, एतेषां त्रयाणां दुर्गुणानां कारणेन क्रमशः - आखेटकारणात् पाण्डुः, द्यूतक्रीडाकारणाद्राजा नलः, मद्यकारणाच्च समस्ताः यदुवंशिनः विपत्तौ पतिताः इति संसारे समेषां विदितमेव ।

श्रीमद्भागवतमहापुराणेराज्ञो गुण-दोषनिरूपणं राज्ञां चरित्र - गाथामाध्यमेनाक्रियत। चतुर्थे स्कन्धे ध्रुवस्य गुणानां वर्णनं कृतो वर्तते यत्र सः शीलसम्पन्नता, ब्राह्मणभक्तिनिष्ठा, दीनवत्सलतेति गुणैस्सह ध्रुवः धर्ममर्यादारक्षकोऽपि कथितः। राजसु श्रेष्ठराजस्य पृथोः चरितस्य वर्णने गुणनिरूपणद्वारा उत्तमराजस्य गुणानां बृहत्प्रदर्शनं - लोकरक्षकः, प्रशासकः, पालकः, पोषकः, समदर्शी, तितिक्षुः, करूणावान्, क्षितिवद्धैर्यक्षमाशीलः, दृढसंकल्पी, सत्यप्रतिज्ञः, ब्राह्मणभक्तः, आप्तसेवकः, शरणागतवत्सलः, स्वपत्न्यानुरागी, अन्यस्त्रिषु मातृवद्व्यवहारः, प्रजासु पितृवत्स्नेहकारकः एवं दण्डपाणिः। अनेनैव सहराज्ञः पृथोः क्षमाशीलराजरूपेण वर्णनं प्राप्यते। गाथायाः अनुसारेण महाराजस्य पृथोः शततमस्य यज्ञस्याश्वः देवाधिपतिना इन्द्रेण मुहुर्मुहुः चोर्यते। तदा राज्ञः पृथोः पुत्राः इन्द्रवधायायोजयनमकुर्वन्। इन्द्रस्य मृत्युः सुनिश्चितास्तीति विज्ञाय ब्रह्मणापृथोः सकाशे इन्द्रं क्षन्तुंप्रार्थनाक्रियत। तदा सः इन्द्रमक्षमत। अस्मिन्नेव प्रसङ्गे राजा बलिः धर्मनिष्ठः, सत्यप्रतिज्ञः, कर्तव्यपरायणः, यज्ञादीनायोजकः सद्गुणधारकः इत्यादिरूपेण निरूपितो वर्तते। राज्ञो बलेः धर्मनिष्ठतायाः ज्ञानं गाथामाध्यमेन ज्ञायते। वामनेन भगवतापादत्रयपरिमिता भूमिः यदायाच्यत तदा गुरोः शुक्राचार्यस्य दानविषयकविरोधे सत्यपि बलिनानिजधर्मो रक्षितः इति वर्णनं प्राप्यते तथा तेन तस्मै वामनाय भगवते पादत्रयमितभूमेः दानसंकल्पोऽक्रियत। राज्ञः अम्बरीषस्य चरिते सः सद्गुणयुक्तः प्रदर्शितो वर्तते राजा अम्बरीषः व्रती, भगवद्भक्तिनिष्ठः, दीनवत्सलः एवं ऋषीन् प्रति सम्मानभावयुक्तः आसीदिति विशेषेण प्रतिपादितं वर्तते। राजा भरतः धर्मराजप्रतीकरूपेण वर्णितो वर्तते। राज्ञः षड्दोषानां विवेचनं राज्ञो वेनस्यगाथया साम्यं भजते। कथानुसारेण राजा वेनः राज्यलक्ष्म्याः अहङ्कारेण युक्

70%	MATCHING BLOCK 327/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

तो भूत्वा धर्मशास्त्रीयाणां नित्य - नै

Ouriginal

मित्तिककर्मणां विरोधी अभूत्। यस्मात् तस्य राज्येकिञ्चनापि सत्कर्म प्रजाद्वारा न सम्पद्यते स्म। राजा वेनः प्रजासु विविधप्रकारेणात्याचारमारभत, ऋषि-मुनीनामवमाननमारब्धवान्, इत्थं प्रकारेण सः निजप्रजयैव मारितः। राज्ञः अहङ्कारस्वभावः तस्य दोषत्वेन परिगण्यते। राजा परीक्षितः एकः धर्मज्ञः राजा आसीत् किन्तु अहङ्कारग्रसितत्वात् तस्यापि दुःखमग्नतायाः वर्णनं प्राप्यते। कथायाः अनुसारेण पिपासात्रस्तः परीक्षितः ऋष्याश्रमे ध्यानमग्नेन ऋषिणा असत्कृतश्चेत् परीक्षितः मत्सरक्रोधयुक्तो भूत्वा तपोनिरतं ऋषिं पाखण्डिनं मत्वैकं मृतसर्पं तस्य कण्ठे निक्षिपति। राज्ञः इदं कृत्यं राजानमनार्यमसभ्यञ्च निरूपयति। ऋषिंप्रत्याचरितमिदमाचरणं राज्ञो महान् दोषः कथितः। राज्ञो वेनस्याख्यानान्तर्गतेऽपि राज्ञो दोषानां प्रदर्शनमक्रियत। तदनुसारेण राजा वेनोऽहङ्कराधीनो भूत्वात्मानमेव सर्वातिशायित्वेन मन्यते तथा प्रजायाः हितचिन्ताद् विरतो जायते तथा ऋषिभिः सः सद्धर्माय, सन्मार्गाय तत्कर्तव्याय बोधितस्सन्नपिसःऋषीन् दुर्वचनैः समबोधयत्तथा तेषामवमाननमकरोदथ च स्वमीश्वरत्वेन व्याख्याति स्म। इत्थं प्रकारेण राज्ञो वेनस्य चरितेऽपि अहङ्कारदोषस्य निरूपणं प्राप्यते। हिरण्यकश्यपोः चरितान्तर्गतेऽपितस्यात्यधिक - शक्तिसम्पन्ने तथा ऐश्वर्यसम्पन्ने सति तदहङ्कारवशाद् मदयुक्तताया निरूपणमक्रियत, शास्त्रमर्यादां विस्मृत्येत्थमाचरणस्य वर्णनमस्ति येन प्रजासुत्राहि - त्राहीति चीत्कारोऽभूत्तथा तदुग्रदण्डकारणाल्लोकपाला अपि अन्यत्र शरणाय विवशाबभूवुः। अस्मिन्नेवक्रमे कंसस्य जीवनचरितेऽपि बहूनां दोषानां विवरणं प्राप्यते, कथानुसारेण कंसः पराक्रमी वर्तते किन्तु सः आत्मजीवनरक्षायै सद्यःजातान् देवक्याः शिशून् मारयति। एतदतिरिच्य तस्य राज्ये तस्य मन्त्रिभिः कृतस्य विविधप्रकारकस्योत्पातस्य विवरणमपि प्राप्यते यस्माच्च तद्राज्यस्य प्रजा त्रसिताभूदित्यपि विवरण मिलत्येव। इत्थं प्रकारेण धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु वर्णिताः राज्ञो गुणाः दोषाश्च श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञां चरितंनिरूपयन्त्याभिः कथाभिः व्याख्याताः। एतासां कथानां श्रवणेन राजभिस्सद्धर्मस्य ज्ञानमवाप्यते ।

5.4 राजधर्मः शब्दस्यार्थः परिभाषा तन्माहात्म्यंच राजधर्मस्यार्थः वर्तते 'राज्ञः धर्मः' महाभारतस्यानुसारेण धर्मो राजाश्रितः भवति। धर्मशब्दस्यार्थो व्यापको वर्तते । एकस्मिन्नेव निश्चिते एवं सीमितेऽर्थेऽस्य शब्दस्य प्रयोगो भारतीयवाङ्मये न कृतो वर्तते। धर्मशब्दः स्थानव्यक्तिसमयभेदेनानेकेष्वर्थेषु स्वीक्रियते। शब्दकल्पद्रुमेऽप्यमेवार्थो प्राप्यते- "राज्ञो धर्मः राजधर्मः"। प्रस्तुतपरिभाषानुसारेण राज्ञः कर्तव्यानि, कर्माण्यथवा राज्ञा क्रियमाणानि लोकेऽस्मिन् तानि सर्वाणि कर्माणि यानि चशास्त्रीयधर्मग्रन्थेषु, पुराणेषु, काव्येषु च प्राप्यन्ते येषां च सक्षात्सम्बन्धो राज्ञा सह भवति ते राजधर्माः वक्तुं शक्यन्ते। एतेषु राज्ञः प्राशासनिकानि तथाप्राशासनिकानि कर्माणि, तस्य दिनचर्या एवं तेन

100%	MATCHING BLOCK 329/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

शास्त्रविहितानि सर्वाण्

यपि आचारव्यवहाररुपादि कर्माणि 'राजधर्माः' कथ्यन्ते। राजधर्मस्यान्यपर्यायशब्दाः राजशास्त्रम्, नृपशास्त्रम् तथा दण्डनीत्यादयश्च प्राप्यन्ते। राजधर्मस्य महत्वसम्बन्धे प्राप्यते यद्राजाद्वारा राजधर्मपालनमेवान्यप्रजासु समेषापि वर्गाणां धर्माचरणे मूलाधारः भवति। राजधर्मः समाजस्य धर्मप्रसादस्य मूलाधारो वर्तते। महाभारते राजधर्मः सर्वेषां धर्माणां तत्त्वं सारो वोक्तः। प्रजातन्त्रशासनेऽपि राजधर्मः अक्षुण्णतया विद्यमानो भवति।

5.5 राजधर्मः महर्षिवेदव्यासविरचिते महाकाव्ये महाभारते राजधर्मः सर्वधर्माणां तत्त्वं सारो वा निगदि

तः।

100%	MATCHING BLOCK 330/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

महाभारतस्य शान्तिपर्वणि राजधर्

मान्तर्गते राज्ञः आन्तरिकैः एवं वाह्यगुणैस्सह तस्य कर्तव्याकर्तव्यकर्मणामपि विस्तृततया वर्णनं प्रस्तुतं वर्तते – "प्रजासुखकामनया देवान्ब्राह्मणान् च प्रति शास्त्रवर्णितविधिना व्यवहारः, देवतानां ब्राह्मणानां चार्चनां विधाय राजा धर्मार्णात् मुच्यते, अर्थाद्राज्ञे देवतानां ब्राह्मणानाञ्चार्चनमत्यन्तमावश्यककर्मरूपेण प्राप्यते। राज्ञा पुरुषार्थोऽनुष्ठेयः, पुरुषार्थ एव राज्ञः सर्वोत्तमा नीतिः वर्तते । सत्यधर्मस्य पालनम्। राज्ञः सद्गुणानामुल्लेखः प्राप्यते यत् सः गुणवान्, शीलवान्, मनसेन्द्रियाणां च सँय्यन्त, कोमलस्वभावः, धर्मपरायणः, जितेन्द्रियः, दर्शने प्रसन्नवदनः, दाता, उदारचित्तश्च स्यात्। आवश्यकतानुसारेण कोमलकठोरस्वभावयोः आलम्बनम्, विशेषेण ब्राह्मणानां सम्मानम्, कस्याश्चिदपि परिस्थितौ ब्राह्मणवधाभावः, तेभ्यः प्राणदण्डस्यानभिधानम्, पञ्चमहातक्यां सत्यामपि ब्राह्मणाय शारीरिकदण्डनिषेधः अन्यप्रकारेणदण्डनम्, चतुर्ष्वपि वर्णेषु दयापूर्वको व्यवहारः, अत्यधिकस्य कोमलस्यात्यधिकस्य कठोरस्वभावस्य चाप्रयोगः, प्रमाणानां माध्यमेन सत्यान्वेषणम्, व्यसनानामासक्तेः परित्यागः, यथा गर्भिणी स्त्री निजसन्ततेः पालनं करोति तथैव राजापि स्वप्रजायाः पालनं तया सह व्यवहारं च कुर्यात्, अपराधिभ्यो दण्डप्रदानम्, धैर्यधारणम्, सेवकैस्सह सम्यग्व्यवहारः, उद्योगशीलता, पात्रापात्रेण सह सन्धिविरोधः, कुमार्गगामिभ्यः सर्वेभ्यो दण्डप्रदानम्, इहलोके प्रजावर्गस्य प्रसन्नतैव राज्ञां धर्मः भवति, सत्यसंरक्षणम्, सरलःव्यवहारःराज्ञः उचितं कर्तव्यमस्ति, अन्येषांधनस्याक्षतिः, धनादिप्रदानस्य सम्यग्व्यवस्था, इन्द्रियनिग्रहः, प्रजायाः धर्मसंकरतातः रक्षणमेव राज्ञां सनातनः धर्मः वर्तते, राजनी

तेः षण्णां

84%	MATCHING BLOCK 332/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

गुणानां सन्धि-विग्रह-यानासन-द्वैधीभाव-समाश्रया

णां

बुद्ध्या निरीक्षणम्, गुप्तचरस्यनियुक्तिः, न्यायविधानम्, धनसंग्रहः, भरण - पोषणप्रबन्धराहित्येन प्रजायाः भरण - पोषणम्, वृद्धोपासना, साध्वसाध्वोः न्यायपूर्वको व्यवहारः, दुष्टेभ्यो दण्डप्रदानम्, दानम्, शुद्धसदाचारस्य पालनम्, शूरवीरता, कुलीनता, आत्मसम्माननिमित्तमन्येषामवमानाभावः, शत्रूणांगतिविधिषु दृष्टिपातः,

अत्यधिकविश्वासाभावः तथात्यधिकसन्देहाभावः, क्रोधाभावश्च। राज्यरक्षायास्साधनानि- गुप्तचरस्य नियुक्तिः, अन्यराष्ट्रेषुनिजप्रतिनिधेः नियुक्तिः, सेवकान् प्रति ईर्ष्याराहित्येन सह समये वेतनप्रदानम्तथा वृत्तिप्रदानम्, न्यायपूर्वकं करसंग्रहणम्, अन्यायेन प्रजायाः धनस्यास्वीकरणम्, सत्पुरुषाणां संग्रहः, शूरता, कार्यदक्षता, सत्यभाषणम्, प्रजायाः हित- चिन्तनम्, सरलेन कुटिलोपायेन वा शत्रुपक्षे भेदस्थापनम्, पुरातनानां गृहाणां मन्दिराणाञ्च जीर्णोद्धारः, दीनदुःखिनां संरक्षणम्, समयानुसारं शारीरिकस्यार्थिकस्य च दण्डस्य प्रयोगः, साधुपुरुषाणां त्यागाभावः, कुलीनमनुष्याणाङ्कृते आश्रयप्रदानम्, संग्रहयोग्यवस्तूनां संग्रहः, बुद्धिमानपुरुषाणां संगतिः, पुरस्कारदिना सेनायाः हर्षोत्साहवर्धनम्, नित्यं प्रजायाःसंरक्षणम्, कर्मणि कष्टानुभवराहित्यम्, कोषे धनस्य वृद्धिः, नगररक्षायाः पूर्णरूपेण प्रबन्धनम्, विषयेऽस्मिन् अन्येषु विश्वासाभावः, पुरवासिभिःराजविरुद्धा कूटनीतिराचरिता चेद् भेदजननम्, शत्रुमित्रमध्यस्थलेषु यथोचिता दृष्टिः, अन्यद्वारा स्वसेवकेष्वपि कूटनीतेः वारणम्, स्वयमेव निजनगरस्य निरीक्षणम्, स्वयं कस्याप्युपरि विश्वासं नकुर्यात्, अन्येभ्यः आश्वासनप्रदानम्, नीतिधर्मस्यानुसरणम्, सर्वदा उद्योगशीलता, शत्रुपक्षतः सावधानता तथा निम्नकर्मणां तथा दुष्टपुरुषाणांसर्वतोभावेन त्यागः, इमानि सर्वाण्यपि राज्य- रक्षायाः उपायास्सन्ति। शत्रोः अनवहेलनम्, निजमन्तव्याप्रकटनम्, धार्मिकानुष्ठानानां विधानम् इत्थं प्रकारेण राजधर्मस्य विस्तृतं वर्णनं महाभारते युधिष्ठिरभीष्मयोर्मध्येजातसम्वादमाध्यमेन प्राप्यते।

78%	MATCHING BLOCK 331/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

मनु-याज्ञवल्क्यादिस्मृतिकारैरपि रा

जधर्मविषयकसिद्धान्तानां प्रतिपादनमक्रियत। कौटिलीयार्थशास्त्रे विशेषरूपेण राजधर्मस्य विस्तृतं विवेचनं प्रस्तुतंवर्तते। राज्ञा क्रियमाणानि कर्तव्यकर्माण्येव राजधर्मः इत्याख्यायन्ते। राज्ञः आचरणविषये स्पष्टतया निर्देशः प्राप्यते यद्राजा स्निग्धमित्रेषु सरलव्यवहारं कुर्याद् ब्राह्मणान् प्रति क्षमावन् च स्यादिति। राज्ञानुष्ठीयमानानां नित्यकर्मणां विषये प्राप्यते यत् सः प्रातःकाले प्रजागर्य त्रिवेदिनां वृद्धविदुषां ब्राह्मणानां सेवां कुर्यात्तथा तेषामाज्ञानुसारं कार्याणि सम्पादयेत्। राजा बुद्धिमान् तथा गुणवान्सदपि वृद्धजनेभ्यो विनयादिगुणान् गृह्णीयात्। राजा सर्वतोभावेन जितेन्द्रियस्स्यात्। यज्ञानुष्ठानम्, दानम्, प्रजायाः करस्वीकरणम्, प्रजया सह पितृवद्व्यवहारः, ब्राह्मणानां सत्कारः,

62%	MATCHING BLOCK 333/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

अप्राप्तवस्तुनः प्राप्त्यर्थमुद्योगः प्राप्तस्य च संरक्षणम्,

आलस्यं परित्यज्य स धर्मार्थकाममोक्षाणामनुष्ठानं कुर्यात्, सेनायाः प्रशिक्षणम्, शत्रुवर्गस्य निरीक्षणम्, वकवद्ध्यानम्, सिंहवत् पराक्रमशीलता, सामदानदण्डभेदैः राज्यशासनम्, प्रातः कालेप्रजागर्य शौचादिकर्मभ्यो निवृत्तो भूत्वा अग्निहोत्रस्य ब्राह्मणानाञ्च सत्कारः, प्रजया शासनाधिकारिभिश्च यथायोग्यं व्यवहारः, स्वात्मरक्षायै बहुमूल्यवस्तूनामपि परित्यागः, आपत्कालनिमित्तं धनसंग्रहणम्, धैर्यवान् स्यात्, उपेतोपेयोपायैः एतैः त्रिभिः अर्थसिद्धेः प्रयत्नः, संध्याकाले अलङ्कृतो भूत्वा युद्धकर्तॄणाम्, वाहनानाम्, अस्त्र-शस्त्राणां तथालंकाराणां परीक्षणम्, गुप्तचरैस्सह मन्त्रणाविधानम्, प्रजायाः न्यायपूर्वकं धनसंग्रहणम्, निजप्रजां वर्णसंकरदोषाद्रक्षेत्, बलवद्भ्यो दुर्बलानां रक्षणम्, श्रोत्रियभ्यः, रोगिभ्यः, आर्तेभ्यः, बालकेभ्यः, वृद्धेभ्यः, अतिदरिद्रेभ्यः, कुलीनेभ्यः, चरित्रवद्भ्यो मनुष्येभ्यस्सदा दानादिना सुसम्मानयेत्, इन्द्रवत् प्रजायाः सुखसमृद्धेः वर्धनम्, पवनसदृशदूतानां माध्यमेन सर्वत्रप्रवेशं समवाप्य राज्यनिरीक्षणम्, सम्पूर्णासु प्रजासु समत्वभावेन न्यायविधानम्, पातकिभ्यो दुष्टेभ्यश्च दण्डप्रदानाय अग्निवत्प्रतापः, क्षितिवत् समत्ववान् च इत्यादि मनु - स्मृतौ प्रस्तुतविधिना राजधर्मवर्णनमक्

61%	MATCHING BLOCK 334/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

रियत। याज्ञवल्क्यस्मृतिकारः महर्षियाज्ञवल्क्

योऽपिराजकर्तव्यकर्मणां विस्तारपूर्वकं वर्णनंचकार यथाहि - राजा प्रातः नित्यकर्मभ्यो निवृत्तोभूत्वा आय – व्ययलेखनस्य निरीक्षणं कुर्यात्, गुप्तचराणां दूतानाञ्च कार्याणां निरीक्षणं कुर्यात्, सेनायाः निरीक्षणंकुर्यात्तथा सेनापतिना सह ब्राह्मणानामपि सत्कारं कुर्याद्, राज्यस्य गुप्तदूतैस्सह सादरं व्यवहरेत्, आचार्यस्य, ऋत्विजस्य पुरोहितस्य चाशीर्वादं प्राप्नुयाद्, गोः, स्वर्णस्य, भूमेः, विवाहोपयोगिधनस्य, गृहस्य च श्रोत्रियब्राह्मणेभ्यो दानं दद्यात्, ब्राह्मणानां विषये क्षमावान् स्यात्, मित्रैस्सह निष्कपटतया व्यवहरेत्, शत्रुविषये क्रुद्धस्स्यात्, प्रजया समं पितृवद्व्यवहरेत्, प्रजां रक्षेत्, करं गृह्णीयात्, श्रेष्ठकर्मयुक्तानां सम्माननं कुर्यात् तथा दुष्टतापूर्वककार्यकर्तॄणां कृते दण्डं प्रयच्छेत्, उत्कोचस्वीकुर्वतः कर्मचारिणः राज्याद्बहिः निष्काषयेत्, श्रोत्रियब्राह्मणेभ्यो दानं प्रदाय स्वराज्ये स्थानं प्रदाय स्थापयेत्। महर्षिणा अत्रिणाराज्ञः पञ्चयज्ञानां वर्णनंतत्सम्पाद्यमानैः पञ्चकार्यैः कृतो वर्तते तदनुसारं - दुष्टेभ्यो दण्डप्रदानम्, श्रेष्ठजनानां पालनम्, न्यायानुसारं धनस्य वृद्धिं कुर्यात्, पक्षपातराहित्येन विचारः तथा राज्यरक्षा एतानि कर्माणि राज्ञः पञ्चयज्ञसमानानि वर्तन्ते। हारीतस्मृतावपि प्राप्यते यद्राजा राज्यकर्मणि निरतस्सन् क्षत्रियधर्मानुसारं प्रजापालनं कुर्यात्, वेदाध्ययनं कुर्यात्, दानं कुर्यात् तथास्वभार्यायामेव रतिं कुर्यात् तथा कररूपेण प्रजायाः आयस्यषष्ठं भागं गृह्णीयात्। महर्षि - पाराशरद्वारापि राज्ञः कर्तव्यविषये वर्णितं वर्तते। तदनुसारेण - क्षत्रियो राजा शस्त्रमवाप्य प्रचण्डभावेन प्रजानां संरक्षणं कुर्यात् शत्रुसैन्यञ्च विजित्य धर्मपूर्वकं पृथिवीं पालयेत्। शङ्खलिखितस्मृतौ प्राप्यते यद्यो राजा निजप्रजां न रक्षति सः ब्रह्मघातकः इत्युच्यते। दुर्बलानाम्, अनाथानाम्, वृद्धानाम्, बालकानांतथा तपस्विमनुष्याणां च रक्षैव तस्य कर्तव्यं वर्तते। गौतमस्मृतावपि राजधर्माणां वर्णनमक्रियत यस्यान्तर्गते वेदाध्ययनम्, यजनम्, दानं तथैतभ्योऽतिरिच्य राज्ञो धर्मः वर्तते यत् समेषां प्राणिनां रक्षा, न्यायपूर्वकं दण्डविधानम्, श्रोत्रियब्राह्मणस्य, उत्साहहीनक्षत्रियादीनां राजकरप्रदानेऽसमर्थानामुपकारिपुरूषाणाञ्च प्रतिपालनम्, विजयायोद्योगः, आपत्काले तर्कस्य विशेषरूपेणावलम्बनम्, रथायुधैस्सह संग्रामे स्थिरता तथा संग्रामादपलायनम्। राज्ञः स्वामित्वविषये

87%	MATCHING BLOCK 335/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4% ...

उल्लेखः प्राप्यते यत् सः ब्राह

मणान् विहाय सर्वेषां मनुष्याणां स्वामी वर्तते। तस्य कर्मणां गुणानाञ्च विषये प्राप्यतेयत् सः सत्यं ब्रूयात्, वेदशास्त्रस्योत्तमां शि

57%	MATCHING BLOCK 336/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

क्षां प्राप्नुयात्, विनीतस्वभावः स्यात्, नित्यं

पवित्रस्सन् तिष्ठेत्, जितेन्द्रियस्स्यात्, गुणवन्तंनिजसहायकरूपेण नियोजयेत्, समत्वभावेन प्रजायाःअवलोकनं कुर्यात्, प्रजायाः हिताय तत्परस्स्यात्, स

76%	MATCHING BLOCK 337/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणाञ्च

रक्षां कुर्यात्, तथा प्रजाः निजधर्मेषु नियोजयेदस्य प्रमुखं कारणमिदं वर्तते यत् प्रजाद्वारा अधर्माचरणे तस्याधर्मस्य भागं राजापि प्राप्नोति। राज्ञः एतेषामेव धर्माणां वर्णनं वसिष्ठस्मृतावपि कृतं वर्तते। एतदतिरिच्य राज्यप्रबन्धनम्, राजकर्मचारिणां, मन्त्रिणां, सेवकानाम्, सैनिकानाम्, गुप्तचराणाम्, दूतादीनाञ्च नियुक्तिः, सन्धिविग्रहादीनां विचारः, विविधदुर्गाणां निर्माणं तथा तेषां सुरक्षानिमित्तं विविधपद्धतीनामालम्बनम्, दण्डधारणंकृत्वा दण्डयोग्यपात्राणां दण्डनमित्यादीनां राज्ञो विविधधर्माणां विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते।

अस्मिन्नेव क्रमे श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञः परमधर्माणां वर्णनं प्राप्यते कुत्रचित् सूत्रात्मकशैल्यापि तद्वर्णनं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थे स्कन्धे ऋषिभिः राज्ञे वेनायप्रदत्तराजधर्मोपदेशेन राज्ञः धर्माणां परिज्ञानं जायते, यथाहि - राजा मनसा, शरीरेण, बुद्ध्यादिभिश्च धर्माचरणं कुर्यात्, प्रजायाः कल्याणरूपो धर्मः तस्य नष्टे राज्ञः पतनं सञ्जायते अतः तेन धर्मरक्षा कर्तव्या। एतदतिरिच्य भगवता विष्णुनापि राज्ञे पृथवे राजधर्मोपदेशः प्रदत्तः इति प्राप्यते। वेनपुत्रस्य पृथोः राज्याभिषेकानन्तरंबन्दीजनैः तस्य स्तुतिरक्रियत। बन्दिजनैः कृता स्तुतिरत्र राज्ञः पृथोः गुणान् व्याख्याति, तत्रैव राज्ञा पृथुनाचरणीयकर्तव्यानामप्युपाख्यानमक्रियत। प्रस्तुतस्तुतिमाध्यमेन राजधर्मस्यैवोपदेशः प्राप्यते। स्तुत्यानुसारं राज्ञे पृथवे आदेशोऽस्ति यत् सः लोकान् धर्मे प्रवर्त्तयेत्, धर्मस्य मर्यादांसंरक्षेत्, विरोधिनःदण्डयेत्, प्रजां पालयेत्, समये - समये यज्ञादिविधिना स्वर्गलोकस्य तथा वृष्ट्यादिव्यवस्थाद्वारा भूलोकस्य हितं साधयेत्, पृथ्वीवदेव सहनशील:स्यात्, वर्षायाः अभावे, शुष्कताकारणात् प्रजायाः प्राणसंकटे स्वयं इन्द्रोभूत्वा वर्षां कृत्वा प्रजाजीवनं संरक्षेत्, स्वभावभङ्गिमया सम्पूर्णं लोकमानन्दयेत्, कार्ययोजनां निगूहयेत् तथा कार्यकरणशैल्यपि गभीरा स्यात्, शत्रूणां कृतेऽत्यन्तं दुःसहस्स्यात्, सेनादिना सुरक्षितस्सन् तिष्ठेद्येन शत्रवः तं न पराजयेरन्, गुप्तचरैः प्राणिभिश्च सर्वविधव्यापारान् पश्यन्नपि निन्दां स्तुतिं च प्रति उदासीनस्स्यात्, एते धर्ममार्गे स्थितास्सन्तो निजशत्रुपुत्रमपि दण्डनीयाभावे न कथमपि दण्डयिष्यन्ति किञ्च दण्डनीये सतितु निजपुत्रमपि दण्डयिष्यन्ति, सूर्यो मानसोत्तर - पर्वतं यावत्प्रदेशंनिजकिरणैः प्रकाशयति, तावत् सम्पूर्णे क्षेत्रे एतेषां निष्कण्टकं राज्यं भविष्यति, एते निजकार्यैः सर्वेभ्यः सुखवितारकाः भवतन्ति तथा तान्रञ्जयिष्यन्ति अस्य तादृग्मनोरञ्जनात्मकव्यापारकारणात् प्रजा तान् राजेति कथयिष्यति, इमे दृढव्रताः, सत्यप्रतिज्ञाः, ब्राह्मणभक्ताः, वृद्धसेवकाः, शरणागतवत्सलाः सर्वप्राणिभ्यो मानदातारः दीनेषु दयावन्तश्च भविष्यन्ति, इमे परस्त्रीषु मातृवद्भावेन भक्तिं धारयिष्यन्ति, पत्नींनिजार्धाङ्गवत्मंस्यन्ते, प्रजासु पितृवत् स्नेहं कुर्यात्, ब्रह्मवादिनां सेवका भवेयुः, अन्यप्राणिनः एतेषु तथा स्नेहं करिष्यन्ति यथा स्वशरीरे, इमे सुहृदामानन्दं वर्धयिष्यन्ति। इमे सर्वदा वैराग्यवद्भिः पुरुषैस्सह विशेषेण स्नेहं करिष्यन्ति तथा दुष्टान् दण्डपाणियमराजवत् सदा दण्डयिष्यन्ति, गुणत्रयाधिष्ठाता निर्विकारः साक्षाच्छ्रीनारायणः एव राजरूपेणावातरत्, अयमद्वितीयवीरः एकछत्रसम्राट् च भूत्वा एकाकी एव उदयाचलपर्यन्तं समस्तं भूमण्डलं रक्षिष्यति तथा स्वकीयं जयशीलरथमारुह्य सर्वत्र प्रदक्षिणां करिष्यति, तदा इतस्ततः समे लोकपालाः पृथ्वीपालाश्च अस्मै उपहारं समर्पयिष्यन्ति तासां स्त्रियश्चतस्य गुणगानं करिष्यन्ति तथेमादिराजं साक्षात् श्रीहरिरूपेण मंस्यन्ते, अयं प्रजापालको राजाधिराजो भूत्वा प्रजायाः जीवननिर्वाहाय गोरूपधारिणीं पृथ्वींधोक्ष्यति, रणभूमौ कश्चन्नपि शत्रुः अस्य पराक्रमं न सहिष्यते यदायं वने उत्थापितपुच्छसिंहवद्विचरन्निज 'आजवस्य' धनुषःटङ्कारंकुर्वन् भूमण्डले विचरिष्यति, तदा समेऽपि दुष्टजनाः इतस्ततः निगूढाः भविष्यन्ति, अयंसरस्वत्याः उद्गमस्थले शतमश्वमेधयज्ञान्करिष्यति तदान्तिमयज्ञानुष्ठानसमये इन्द्रः अस्य घोटकानपहृत्य नेष्यति, स्वकीयराजप्रासादस्योद्यानेऽस्यैकदा भगवता सनत्कुमारेण सह मेलनं भवितेत्थं प्रकारेण केवलं तस्य भक्तिपूर्वकसेवयायं तं निर्मलं ज्ञानं प्राप्स्यति, येन परब्रह्मणः प्राप्तिः भविष्यति, एवं प्रकारेण यदास्य पराक्रमो जनसम्मुखमागमिष्यति तदायं परमपराक्रमी महाराजः यत्र -तत्र निजचरित्रस्यैव चर्चां श्रोष्यति, अस्याज्ञायाः विरोधं न कोऽपि करिष्यति तथायं सर्वाः दिशः विजित्य निजतेजसा प्रजायाः क्लेशरूपं शूलं च निष्कास्य सम्पूर्णस्य भूमण्डलस्य शासको भविष्यति, तदा देवता असुराश्चाप्यस्य विपुलप्रभावस्य वर्णनं करिष्यन्ति। बन्दिजनानां स्तुतिमाध्यमेन ज्ञायते यत् ते राजानंतस्य कर्तव्यस्य बोधं कारयन्तस्सन्तीति, अर्थात् राजधर्मस्य शिक्षां प्रयच्छन्तः सन्ति यद्राज्ञा पदे आरूढे सति केषां – केषां कार्याणां सम्पादनं करणीयं तथा राज्ञो धर्माश्च के इति इत्थमेव स्मृतिसम्मताः कथिताः धर्मोपदेशाः स्तुतिमाध्येन राज्ञेशिक्षां प्रदातुं सन्तीति वर्णनं प्राप्यते। अन्यस्थलेष्वपि राजधर्मः प्राप्यते। राज्ञः कल्याणं प्रजापालने एव निहितं वर्तते। निजप्रजारक्षणदायित्वं राज्ञ एव भवति, प्रस्तुतकर्तव्यविषये श्रीमद्भागवते प्राचीनबर्हिषः पुत्राणां प्रचेतसां कथा प्राप्यते । तदनुसारं प्रचेतोभिः प्रजायाःवासयोग्यस्थानाय यदा जगतीतले वृक्षाः ज्वाल्यमानाः आसन्तदा वनस्पत्यधिपतिना चन्द्रमसाते उपदिष्टाः तदुपदेशान्तर्गते प्राप्यते यद् - यथा पितरौ बालकस्य, पक्ष्मणी नेत्रयोः, पतिः पत्न्याः, गृहस्थः भिक्षुकाणां, ज्ञान्यज्ञानिनां रक्षांकरोति तेषां हितं वाञ्छन्ति तथैव प्रजायाः रक्षा हितं च राज्ञः उत्तरदायित्वं भवति।" राज्ञः परमधर्मोनिजधर्मस्य पालनं तथा प्रजांशासयन् तत्तद्धर्मेषु स्थितप्रजाजनानां पालनमपि राज्ञो परमधर्मो वर्तते, विषयेऽस्मिन् राज्ञः परीक्षितस्योक्तिः प्राप्यते - "यदि आपत्कालस्य स्थितिःनास्ति तथा प्रजा आपद्धर्मद्वारा मर्यादां उल्लङ्घयति तदा तान् शास्त्रानुसारं दण्डप्रदानपुरस्सरंस्वधर्मे स्थितजनानां पालनं राज्ञः परमो धर्मः भवति। श्रीमद्भागवते राजा परीक्षितो यदापृथ्वीरूपां गां तथा धर्मरूपिणं वृषभं कलयुगरूपिपुरुषेण प्रताड्यमानं पश्यति तदा राज्ञो प्रस्तुतकथनं राजधर्ममर्यादां स्थापयति - "दुःखेन त्रस्तानामार्तजनानां दुःखापनयनं राजो परमधर्मो भवति।" इत्थं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणे स्मृतिसम्मतविषयानां वर्णनं विस्तृतरूपेण कुत्रचित् सम्वादरूपेण, क्वचिदुपदेशमाध्यमेन कुत्रचिच्च राज्ञः चरित्र- निरूपणमाध्यमेन वर्णितं वर्तते ।

Curiginal

राज्ञा प्रजायाः सन्मार्गे प्रवर्त्तनम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञास्वप्रजायै तथा स्वपुत्रेभ्यश्च सन्मार्गोपदेशं प्रदाय धर्मपूर्वकं कार्

68%	MATCHING BLOCK 338/353	W	https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5% ...

येषु नियोजनस्य विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य पञ्चमे स्कन्धे पञ्चमे अध्यायेराज्ञा ऋषभद्वारा निजपुत्रेभ्यः सद्धर्मस्य विस्तारपूर्वकमुपदेशोऽदीयत। तदनुसारं तपः, महापुरुषाणां सेवा, सदाचारे प्रवृत्तिःचोपदिष्टा वर्तते। एतदतिरिच्य प्रमादत्यागस्य, कर्मबन्धनविवेकस्य, देहबन्धनान्मुक्तेरुपायानामपि निरूपणमक्रियत। अथ चादेशे दार्शनिकविषयाः यथा – अज्ञानकारणात् क्लेशस्य प्राप्तिः, देहादौ ममत्वनिमित्तकस्याहङ्कारस्य

100%	MATCHING BLOCK 339/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

त्यागेन परमपदस्य प्राप्ते

र्निरूपणमपि युगपत् प्राप्यते। भगवतप्राप्तिहेतवे भक्तिः, वैराग्यम्, समत्वम्, ब्रह्मभावेन सह वर्तनम्, अध्यात्मयोगः, ब्रह्मचर्यम्, यमः, वाणीसंयमः, शास्त्रेषुसत्पुरुषेषु च श्रद्धायुक्तबुद्धिः इत्थं प्रकारेणात्यन्तविस्तारपूर्वकमुपदेशमाध्यमेन सद्धर्मप्रवर्तितम्। राज्ञा प्रजायाः धर्मशिक्षायां प्रवर्तनम्, येन प्रजायाः उद्धारःसम्भवेत्, विषयेऽस्मिन् प्राप्यते यद् यो राजा प्रजायै धर्ममार्गस्य शिक्षामप्रदायैव केवलंताभ्यः करसंग्रहण एव रतो भवति सः केवलं प्रजायाः पापस्यसहभागी भवति तथानिजैश्वर्याच्च्युतो जायते।" राज्ञा ऋषभदेवेननिजप्रजा गृहस्थाश्रमे नियमितेत्यस्य वर्णनं प्राप्यते – ऋषभदेवेन समयानुसारं प्राप्तस्य धर्मस्याचरणंकृत्वा ईश्वरतत्त्वमज्ञातवतेभ्यो जनेभ्यः तस्य शिक्षा प्रदत्ता, तथा समः, शान्तः, सुहृदः तथा परमकारूणिकोभूत्वा धर्मस्य, अर्थस्य, यशसः, सन्ततेः, भोगसुखस्यतथा मोक्षस्य च संग्रहंकुर्वन् गृहस्थाश्रमेजनान् प्रवर्तितवान्।

राज्ञोदानप्रवृत्तिः

मनुस्मृतौ राजाधर्मस्य निरूपणोपरान्तमुक्तं वर्तते यद्राजा धर्मप्राप्त्यर्थं नैकानि भोग्यवस्तूनिद्रव्याणि च ब्राह्मणेभ्यो दानरूपेण दद्यात्। अस्मिन्नेव क्रमे निरूपणं वर्ततेयद् वृद्धिमुपगतन्धनं योग्यपात्रेभ्यो दद्यात्। शुक्रनीतौ राज्ञाकृतस्य दानस्योल्लेखः प्राप्यते। एतेषां सन्दर्भानामनुसारेण श्रीमद्भागवते राज्ञा कृतस्य दानस्यापि वर्णनं

प्राप्यतेअस्

78%	MATCHING BLOCK 340/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

यानेकान्युद्धरणान्यपि प्राप्यन्ते

यस्यान्तर्गते जरासन्धस्यदैनिकजीवनचर्यायां पूजनोपरान्तं ब्राह्मणानां सत्कारः तथा तेभ्यो धनादिवस्तूनां दानस्य वर्णनं प्राप्यते। अस्मिन्नेव क्रमेराज्ञा बलिद्वारा भगवतेवामनाय प्रदत्तस्यभूमिदानस्य वर्णनं प्राप्यते। राज्ञाम्बरीषद्वारा ब्राह्मणेभ्यो प्रदत्तस्यधनादिदानस्य वर्णनं प्राप्यते। राज्ञा युधिष्ठिरेण

80%	MATCHING BLOCK 341/353	W	http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic ...

नित्यं ब्राह्मणेभ्यो प्रदत्तस्य

दानस्यापि वर्णनं प्राप्यते। परीक्षितद्वारापिप्रदत्तस्यदक्षिणादानस्य वर्णनं प्राप्यते। भगवतः श्रीकृष्णस्य दिनचर्यानिरूपणे दानं प्रमुखक्रियारूपेण वर्णिता वर्तते - देवर्षिनारदः भगवतः श्रीकृष्णस्यदिनचर्यां निरूपयतितस्यान्तर्गते प्राप्यतेयत् सः ब्राह्मणेभ्यो सरलाश्शान्ताश्च सवत्सदोग्ध्रीः गाः प्रददाति। सर्वा अपि गावस्सुन्दर-वस्त्रैः रत्नमालाभिश्च सुसज्जितास्सन्ति। तासांविषाणानिसुवर्णेन तथा खुराःरजतेनचावृत्तानि भवन्ति

62%	MATCHING BLOCK 342/353	W	https://archive.org/stream/dharmashastrasyaiti ...

स्म। नीतिचतुष्ट्यी याज्ञवल्क्यस्मृतौ रा

ज्यशासनस्य संचालनस्य नीतीनां वर्णनं प्राप्यते तदनुसारं - "सामदानदण्डभेदाः चत्वारः उपायास्सन्ति एतेषां समुचितप्रयोगेणसफलता प्राप्यते। तथा कस्याप्युपायस्याप्रभावे दण्डाश्रयणं क्रियते। मनुस्मृतावपि प्राप्यते यत् "ये विजयेच्छयाप्रवृत्तस्य राज्ञो विरोधिनःस्युः तान् समान् सामदानदण्डभेदोपायैः वशीकुर्यात्। यदि प्रथमैस्त्रिभिरुपायैः शान्ताः न स्युस्तर्हितेभ्यो दण्डद्वारा बलपूर्वकंयथादण्डं दण्डयेत्। सामादेवैफल्ये देशोपमर्यादादिभिः दण्डस्य प्रयोगः करणीयः। मनुस्मृतौ सामदण्डयोः प्रशंसायाः उल्लेखः प्राप्यते यद्" विद्वांसो राष्ट्राभिवृद्धये सामादिषु चतुर्षूपायेषु सर्वदा साम- दण्डावेवप्रशंसते। महाभारतेऽपिइत्थमेव राज्यस्य सामदानदण्डभेदोपेक्षानां पञ्चानां नीतीनां वर्णनमक्रियत। इत्थं प्रकारेण धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु सामादिनीतीनां प्रयोगस्योल्लेखः प्राप्यते। एताभिः नीतिभिः राज्यसंचालनं सुगमतापूर्वकं संजायते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञाविहितसामदानदण्डभेदमाध्यमेन शासनस्य नीतीनां वर्णनं

Ouriginal

प्राप्यते। प्रसङ्गेऽस्मिन् ऋषभदेवस्यविषये उक्तं वर्तते यत् – ऋषभदेवेन ब्राह्मणानामनुसारेणप्रदर्शितसामादिनीतीनां माध्यमेन प्रजायाः पालनमक्रियत। राज्ञा भेदनीतेः प्रयोगः विधातव्यः, अस्योल्लेखः श्रीमद्भागवतेश्रीकृष्णद्वाराकृतस्यास्य नीतेः प्रयोगः प्राप्यते - यथा वायुः वंशसंघर्षणेन दावानलमुत्पादयतिततश्च तान् ज्वालयति तथैव पृथिव्याः सारभूतेषु शक्तिशालिषु च राजसुमिथः भेदं जनयित्वा शस्त्रमन्तरेणैव श्रीकृष्णः तानमारयत्। नीतिचतुष्टयस्य प्रयोगो राज्ञा लोकरक्षादायित्वस्य निर्वहनायाक्रियत ।

लोकरक्षायाः दायित्वम्

अस्मिन् सन्दर्भेश्रीमद्भागवतमहापुराणे चतुर्थस्कन्धे भगवता विष्णुना राज्ञे पृथवेप्रदत्तोपदेशे प्राप्यते यद् – उत्तमे, मध्यमे, अधमे च पुरुषे समानभावं विधाय सुख -दुःखयोः समो भूत्वा तथा मनः इन्द्रियाणि च विजित्य मन्त्रिभिस्सह लोकरक्षणंकुरु। राज्ञः पृथोः स्वयमुक्ता स्वविषयिण्युक्तिः प्राप्यते।

यस्यामुक्तं वर्तते यदस्मिल्लोकेऽहंप्रजाजनान् शासयितुं, तान् रक्षितुं तथा तेषामाजीविकायाः प्रबन्धनाय तान् पृथक् – पृथक् मर्यादासु व्यवस्थापनाय राजरूपेण नियुक्तोऽस्मि।

दुर्गः

राज्यस्य सप्ताङ्गान्तर्गते राज्ञोक्तानां दुर्गनिर्माणदी

100%	MATCHING BLOCK 343/353	SA	Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

नां वर्णनं प्राप्यते। राज्ञो

वासस्थलम्, राजकोषः, सेनादीनाञ्च निवासः दुर्गेभवति स्म। शुक्राचार्येणस्वकीयग्रन्थे शुक्रनीतौ दुर्गस्यनवप्रकाराणां वर्णनमक्रियत यस्यान्तर्गते– ऐरिणदुर्गः, पारिखदुर्गः, पारिधदुर्गः, वनदुर्गः,

54%	MATCHING BLOCK 344/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

धन्वदुर्गः, जलदुर्गः, गिरिदुर्गः, सैन्यदुर्गः, सहायदुर्गः

एतेषां समेषामपि दुर्गाणां लक्षणम्, तारतम्यनिर्देशः, अत्यन्तश्रेष्ठदुर्गादीनाञ्च लक्षणा

100%	MATCHING BLOCK 347/353	SA	Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

नां वर्णनंप्राप्यते। राज्ञा

पृथुनोक्तस्य ग्रामस्य, उपनगरस्य, नगरस्य, दुर्गस्य, पशुशालायाः, शिविरादीनां निमार्णं वर्णनमपि श्रीमद्भागवते राज्ञः पृथोः चरितान्तर्गते प्राप्यते। राजा भोमासुरस्यराजधान्याः प्राग्ज्योतिषपुरस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतेप्राप्यतेतस्य पुरे सुरक्षात्मकदृष्ट्यासर्वादौ पर्वतैः तस्यदुर्गः सर्वतः आवृतः आसीत्,ततश्च शस्त्राणां परिधिरासीत्, अथ च जलपूरिता परिखासीत्, ततश्चाग्न्यावरणेन सुरक्षाव्यवस्थासीत्, तस्मिनावरणेज्वलनशीलवायोः निक्षेपः आसीत्, एतदतिरिच्यापिस्वपुरस्य सुरक्षायैसर्वविधजालस्यावरणं स्थितमासीद् इत्थं प्रकारेणभौमासुरस्य दुर्गस्य वर्णनं प्राप्यते। स्मृतिषु यथा दुर्गस्य वर्णनमक्रियत तथैव दुर्गः प्राग्ज्योतिषपुररूपेण प्राप्यते ।

सभा

सभा एकं तादृशं स्थलं भवति यत्र राजा निजमन्त्रिभिः समैः परामर्शप्रदातृभिश्च सहैकस्मिन् स्थले उपस्थितो भूत्वा राज्यकार्यं मन्त्रणापूर्वकं संचालयति स्म। अस्यां राजकीयसमस्यासु विस्तरेण विवादो जायते। राजा नियमितरूपेण सभोपवेशने उपस्थितोभवति स्म तथा सभायाः व्यक्तीनामनुसारं राज्यस्य हितं सम्पादयति स्म।

71%	MATCHING BLOCK 345/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य संवि

द्वयतिक्रमप्रकरणे सभा समूहनाम्नाप्यभिहिता वर्तते। समूहे कीदृग्व्यक्तीनां वासोभवति स्मास्योल्लेखोऽपि

100%	MATCHING BLOCK 346/353	W	https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4% ...

याज्ञवल्क्यस्मृतौप्राप्यते -"

Curiginal

श्रौतस्मार्तधर्मवेत्तृणाम्, पवित्राणाम्, लोभहीनानां समूहहितेच्छुकानां वचनानां पालनं करणीयम्"। आधुनिककालेऽपिएताद्दक्सभानामायोजनंक्रियते, यस्यां सर्वे सदस्याः उपस्थिताः भूत्वा मन्त्रणां च कृत्वा निजकार्याणि सम्पादयन्ति स्म ।

श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य सभायाः वर्णनं प्राप्यते यत्तस्याः सभायाः नाम 'सुधर्मा' आसीत्। तस्याः सभायाः एताद्दशो महिमा वर्तते यद् यापि व्यक्तिः तां सभां प्रविशति तांछुत्पिपासे, शोक-मोहौ, जरामृत्यूएताः षडुर्म्यः न बाधन्ते। राज्यसभायां राजसिंहासनस्यमन्त्रिमण्डलस्योपवेशनायासनानां व्यवस्थाक्रियत। राजा सभायाः मध्येउपविशतिस्म। तस्यां सभायां विदूषकाः विभिन्नप्रकारकाः हास्य-विनोदिनः, नटाचार्याःनर्तकाः च तत्र नृत्यादिकं कुर्वन्ति स्म। सभायां मनोरञ्जननिमित्तमपिसर्वविधव्यवस्थाः प्राप्यन्ते। बन्दीजनाः अपि सभायां राज्ञःस्तुतिं कुर्वन्ति। ब्रह्मवादिभिः वेदमन्त्राणां व्याख्याः अपि तत्र प्रस्तूयन्तेस्म। राज्ञां पवित्रचरित्रस्यापि गायनंतत्र श्राव्यतेस्म। राज्यकार्याण्यपि तत्रैव सम्पाद्यन्ते स्म अस्य वर्णनमपि श्रीमद्भागवते

प्राप्यते। एतदतिरिक्

100%	MATCHING BLOCK 348/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...
तं राज्ञो युधिष्ठिरस्य			

सभायाः उल्लेखः अपि प्राप्यते

यद् रा

जसूययज्ञनिमित्तं पञ्च पाण्डवाः, ब्राह्मणैः, बन्धु–बान्धवैः, सम्बन्धिभिः, कुटुम्बिभिः श्रीकृष्णेन च सह सभायामुपस्थिताः आसन्तत्रराजसूययज्ञविषयेऽपि विचारणाक्रियत। इत्थं प्रकारेणैव सभाया अन्योदाहरणान्यपिप्राप्यन्ते।

मन्त्रिपरिषद्

मनुष्यः स्वयमेकाकी किमपि सुगमं कार्यंकर्तुं समर्थो नास्तितर्हि कथं राज्ञ सम्पूर्णस्य राज्यस्य कार्याणामेकाकितया सम्पादनंकर्तुं शक्यते अर्थात् कर्तुं न शक्यते तदा अस्यां परिस्थितौ राज्यसंचालनाय विदुषां तथा नीतिशास्त्रनिपुणानां विद्वद्वर्गाणां सहायतयामन्त्रिमंडलं नितान्तरूपेण महत्वपूर्णां भूमिकामावहति। इत्थं प्रकारेण राजाकस्यापि कार्यस्यारम्भात् प्राक् निजमन्त्रिगणेन सह विचारणां करोति तथा राज्यस्य शासनसम्बन्धि - समस्यासुमन्त्रणायै विभिन्नविषयाणां विशेषज्ञानामावश्यकता सञ्जायते । अत एव मनुस्मृतौ राजधर्मान्तर्गते कर्मचारिणां नियुक्तिभिस्सह मन्त्रिमण्डस्य नियुक्तीनां चर्चाप्यक्रियत। कौटिल्यार्थशास्त्रे मन्त्रिणां नियुक्तिविषये

100%	MATCHING BLOCK 349/353	W	https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%A ...
सविस्तरं वर्णनं प्राप्यते। एतेषा			

मेव वर्णनानामनुसारेण श्रीमद्भागवत्महापुराणे वर्णनं प्राप्यते।

28%	MATCHING BLOCK 350/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...
श्रीकृष्णस्य राज्यसभायां अनेके विद्वद्गणाः उपस्थिता आसन्। राजनीतिनिपुणस्योद्धवस्यापि श्रीकृष्			

णसभायां विशिष्टं दायित्वमासीदित्यवबुध्यते। यदा जरासन्धस्य बन्धिभूतराजानां दूतःतेषां राज्ञां मुक्तेः प्रार्थनामुररीकृत्यआगच्छति तथातेषां राज्ञां बन्धनान्मुक्त्यर्थं विचारःकरणीयः आसीत् तदा श्रीकृष्णः सभायामुपस्थितो भूत्वानिजमन्त्रिमण्डले उद्धवेन साकमस्मिन् विषये विचारणामकरोत्। तदा उद्धवः तेषां राज्ञांमुक्तेः उपायंकथयति। राज्ञो युधिष्ठिरस्य राज्यसभायां राजसूययज्ञविषयकविचारविमर्शाय विविधप्रकारकाणां विद्वद्वर्गाणामुपस्थितिः प्राप्यते। एवं प्रकारेण राज्ञासम्पाद्यमानानां कार्याणां मन्त्रणायै मन्त्रिपरिषदः नियुक्तिः क्रियते।

अश्वमेधादियज्ञानां सम्पादने राजप्रवृत्तिः

मनुस्मृतौ प्राप्यते यद्राजाभूरिदक्षिणावतःविविधयज्ञान् कुर्यादिति। शुक्राचार्योऽपिराज्ञः अष्टप्रकाराचरणान्तर्गते राजसूयप्रभृतियज्ञानुष्ठानस्य परिगणनं चकार। राज्ञाकृतं यज्ञविधानमपि तस्य राजधर्मान्तर्गते प्राप्यते। राज्यस्य विस्ताराय, तथा धर्मादिस्थापनायै चराजभिः अश्वमेधादियज्ञानामायोजनं क्रियते स्म अस्यैव क्रमान्तर्गते ऋषभदेवेननिजराज्ये विहितानां विविधप्रकारकाणांशतं यज्ञानां विधानस्यापि वर्णनं प्राप्यते। राज्ञा पृथुद्वारा विहितानामश्वमेधयज्ञानुष्ठानानां विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते। एवमेव राज्ञा युधिष्ठिरेण विहितस्याश्वमेधयज्ञस्य विस्तारपूर्वकं वर्णनं प्राप्यते। श्रीमद्भागवतस्य पञ्चमस्कन्धस्य चतुर्थेऽध्याये राज्ञः ऋषभदेवस्य चरितान्तर्गते राज्ञः उत्तमशासनस्य वर्णनं प्राप्यते यत् तस्य शासनकाले प्रजावर्गेकश्चनप्यपराधः समाजे लोके व्याप्तो नासीत्। अस्मिन्नेव क्रमे राज्ञा भरतेन विहितस्य अश्वमेधयज्ञानां वर्णनं प्राप्यते।

समुचितादण्डव्यवस्था

राज्यस्य सफलसंचालनाय तथा सम्पूर्णव्यवस्थानां विशुद्धरूपेण नियमनाय, सामाजिकानां मध्ये शान्तिस्थापनाय प्रजांनिजकर्तव्यपालनाय प्रेरयितुं च न्यायस्य एवं दण्ड - व्यवस्थायाश्च सर्वोच्चं स्थानं विद्यते। मनुष्ये लोभमोहेर्ष्याघृणाद्वेषसद्दशकुत्सितप्रवृत्तीनां प्रचलनमभूद्यस्मात् कारणात् समाजेऽव्यवस्थाया एवमराजकतायाश्च प्रादुर्भावोऽभूदतः एताद्दशसकलसमस्यानां निराकरणाय मन्वादिना राजव्यवस्था निरूपितातथा तेषां सहायतायैधर्मशास्त्रकारैः न्यायस्य

दण्डव्यवस्थायाश्च प्रतिपादनमक्रियत। राजा न्यायस्य एवं दण्डनिर्धारणस्य चाधिकारिरूपेण नियोजितः। मनुना राज्ञः प्रजापालननामकस्य प्रयोजनस्यसिद्धये, सकलवर्गाणां रक्षकचोरादिकृतोपद्रवेभ्यः संरक्षणाय दण्डस्योत्पत्तिरक्रियत।

अस्मिन् विषये उक्तं वर्तते यद्राज्ञे सर्वप्रथमीश्वरेणसकलजीवानां रक्षकस्य, धर्मस्वरूपपुत्रस्य, ब्रह्मतेजोयुक्तस्य दण्डस्य सृजनमक्रियत। मनुस्मृतावुक्तं वर्तते यत् शुद्धस्वभाववतांमनुष्याणां सम्प्राप्तिः दुर्लभास्ति, कामक्रोधादिवशान्मनुष्येष्वराजकतायाः जन्म सञ्जायते तथा तेषु परस्परं कलहः उत्पद्यते। नारदस्मृतौ प्राप्यते यद्यदा मनुष्येषु धर्मस्य ह्रासःसञ्जायमानः आसीत् तदा व्यवहारस्य प्रवर्तनमभूत् तथा राजा विवादानां निर्णयकर्ता दण्डधरश्च घोषितः। दण्डप्रयोगविषये प्राप्यते यद्राजा निजराष्ट्रे न्यायानुसारं दण्डस्य प्रयोगं कुर्यात् , शत्रुषुकठोरदण्डस्य प्रयोगं कुर्यात् ।

दण्डस्य महत्त्वम्

मनु-याज्ञवल्क्यादिधर्मशास्त्रकारैः दण्डस्य महत्त्वंविशेषप्रकारेण प्रकाशितंवर्तते। महाभारते दण्डस्य महत्त्वविषये प्राप्यते यत् – दण्डः प्रजासु शासनं तेषां रक्षायै करोति संसारः स्वपिति चेत् स जागर्ति अत एव विद्वद्भिस्सः धर्मरूपेण मन्यते दण्ड एव धर्मम्, अर्थम्, कामं च रक्षति अतएव सः त्रिवर्गरूपेण स्थितो वर्तते। कौटिल्येन मत्स्यन्यायाद् मुक्तये दण्डः आवश्यकःमन्यते यतोहि एतं विनाराजकता प्रसरति। चातुर्वर्ण्यव्यवस्थामाश्रम- व्यवस्थां तथा लोकपालनमपि राजा दण्डबलेनैव कुरुते। तस्मादेव सर्वे स्वनियतकर्मणि रताःभवन्ति। अतएव

55%	MATCHING BLOCK 351/353	SA	Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

आन्वीक्षिकी, त्रयी तथा वार्ता त्रिसृणामपि विद्या

नां स्थितिः दण्डस्य अधीना वर्तते। मनोः अनुसारेण दण्डकारणादेव सर्वे चलाचलप्राणिनोनिजकर्तव्येषु रताः भवन्ति प्राप्यतेऽपि अस्माद् दण्डभयादेव सकलस्थावरजंगमजीवो भोगाय समर्थाःभवन्ति तथा निजधर्माद् विचलिताःन भवन्ति। उदाहरणस्वरूपेण मन्यतेयदितिहासे श्रूयते ऋषिभिः स्थावरेभ्योपि दण्डनिर्धारणंकृतमासीद्यथा अगस्त्येन ऋषिणाविन्ध्यपर्वतस्य, वासुद्वारा हैमवतस्यशाल्मीवृक्षस्य दण्डः उक्तो वर्तते। अन्यद् महत्त्वमपि द्रष्टुं शक्यते दण्डः राजा वर्तते यतोहि दण्डेएव शासनस्य शक्तिः विद्यमानाभवति, दण्ड एव पुरूषः वर्ततेयतोहिसः शक्तिसम्पन्नपुरुषाणां स्त्रीवत् तिरस्कारंविधायतान्निजवशेकरोति, दण्ड एव नेता वर्ततेयतोहि समस्तान्यपि कार्याणि तेनैव सम्पद्यन्ते, दण्ड एव प्रशासको वर्तते यतोहि दण्डस्य आज्ञया एवसमे निजकर्मणि संलग्नास्सन्ति, अथ च दण्डःचतुर्णामप्याश्रमाणां धर्मस्य प्रतिभूरुक्तो वर्तते ।

अन्यस्मिन् स्थले मनुना दण्ड एवधर्मसंज्ञकः कथितः – दण्डः सर्वाः प्रजाः शास्ति, अर्थात् कर्तव्यविधानाय तथाकर्तव्यनिषेधाय च राजा शास्त्वं न शास्त्यपितु दण्ड एव शास्ति, दण्ड एव रक्षति अर्थात् दण्ड एवबलवतः रक्षति, राजपुरुषेषु शयानेषु सत्सुदण्डभयादेवजनाःदुराचरणं न कुर्वते, सर्वेषु शयानेषु सत्सु दण्ड एव जागर्ति, विद्वांसः दण्डं धर्ममन्यन्तेयतोहि ऐहिकात् तथामुष्मिकदण्डभयादेव लोकस्य प्रवृत्तिर्दृश्यते कारणे कार्यस्योपकारः भवति। ऋषेः याज्ञवल्क्यस्य मते शास्त्रस्य विधि - विधानानुसारेण च व्यवहारेप्रयुज्यमाने सति दण्डः देवताः, राक्षसान् एवं मनुष्येण सहैतंसम्पूर्णं समाजमानन्दयति । शास्त्रस्य विरीतं दण्डप्रदाने राज्ञः सर्वस्वं विनश्यति किन्तु सम्यग्रूपेण दण्डप्रदानेन राजा यशःकीर्तिं स्वर्गं चप्राप्नोति। यो राजा दण्डस्योचितरूपेण प्रयोगं करोति सः भूरिदक्षिणावतः यज्ञस्य फलमवाप्नोति। वर्गाणां जातीनां तथा समुदायानांस्वधर्मात् पथभ्रष्टे सति राजा दण्डद्वारा पुनः स्वधर्मपरिपालनायबाध्यतांकरोति। श्रीमद्भागवते दण्डस्य महत्त्वविषयेप्राप्यतेयद् दण्डद्वारा शुद्धिः सञ्जायते। इत्थं प्रकारेणोपर्युक्तोद्धरणैः स्पष्टतास्ति यत् समाजे मनुष्यस्य धन-धान्यस्य रक्षा दण्डमाध्यमेनजायते। स एव शासकस्स एव रक्षको वर्तते। तथा सम्पूर्णस्य संसारस्य नियन्ता दण्डस्वरूपो धर्म एव वर्तते।

दण्डस्य योग्यायोग्यप्राणी

श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्ञः परीक्षितस्य चरितान्तर्गतेयदा परीक्षितः गां धर्मस्वरूपं वृषभं चकलयुगरूपिपुरुषात्प्रताड्यमानं पश्यति तदा परीक्षितमुखाद्वध्योग्यप्राणिनः विषये वचनं प्राप्यतेयत् "निरपराधिषु यः प्रहारं करोति सः अपराधी भवति तथा सः वधार्णः च भवति"। अजामिलोपाख्यानान्तर्गते श्रीविष्णुदूतानां यमदूतानांच मध्ये वार्ता संजायतेतत्र दण्डाधिकारिणः वर्णनमक्रियत यद् "जीवः शरीरेणाथवा मनोवृत्तिभिःयावन्ति कर्माणि करोति, तेषां साक्षी सूर्यः, अग्निः, आकाशः, वायुः, इन्द्रियाणि, चन्द्रमा, सन्ध्या, रात्रिः, दिनम्, दिशः, जलम्, पृथ्वी, कालः धर्मश्च भवतिएतेः अधर्मस्य परिज्ञानंकार्यतेतदा जीवात्मनः दण्डस्य पात्रस्य निर्णयोभवति तथा पापकर्मकारकाः सर्वे मनुष्याः स्व – स्वकर्मणामनुसारेण दण्डनीयाः भवन्ति। शास्त्रस्योल्लङ्घनकर्ता तथा स्वछन्दाचरणशीलश्च दण्डस्याधिकारी भवति ।

वध्यावध्ययोग्यपात्राणां वर्णनम् श्रीमद्भागवते अवध्यप्राणिनामुल्लेखः प्राप्यते । तदनुसारेण ब्राह्मणः कियदप्यधिकं घोरं पापकर्म कृतवान् स्यात् तस्मै कदापि मृत्युदण्डो विहितोनास्ति। अस्य वर्णनम् अश्वत्थाम्ना यदा पाण्डवानांशयानाः पुत्राः हन्यन्तेतदा पञ्चभिः पाण्डवैःतस्य वधःकरिष्यते इति विचिन्त्य श्रीकृष्णःतान् कथयति यत् "पतितस्य ब्राह्मणस्यवधःकदापि न करणीयः तथा च आततायी हन्तव्य एव इत्यनयोः आदेशयोः पालनं क्रियताम्"। ब्राह्मणाय दण्डप्रदानविषये प्राप्यते यत् "तस्य मुण्डनम्, धनापहरणम्, तथा स्थानात् बहिष्कृतिरेव ब्राह्मणस्य वधः भवति। तेभ्यः एतदतिरिच्य कस्यचिदन्यस्य शारीरिकवधस्य विधानंनास्ति"। अस्मिन्नेव प्रसङ्गेद्रौपद्यापि अवध्यप्राणिनां वर्णनमक्रियत –"धर्मवेत्तृपुरुषस्य, असावधानस्य, प्रमत्तस्य, प्रगल्भस्य, शयानस्य, बालकस्य, स्त्रियाः, विवेकज्ञानशून्यस्य, शरणागतस्य, रथहीनस्य, तथा भयभीतस्य च शत्रोः कदापिहननं न करणीयम्"। युद्धे अवध्यप्राणिनामप्युल्लेखः प्राप्यते - "ये युद्धे निजास्त्र -शस्त्राणिविस्मरन्ति, येषां रथःभग्नः संजायते, ये भयभीताः स्युः, येयुद्धं त्यक्त्वान्यमनस्का संजातास्स्युः, येषां धनुः खण्डितंस्यात्, ये युद्धाद् विरताः स्युःतादृशलक्षणवन्तःयुद्धेवधार्णाः न भवन्ति।" वधयोग्यप्राणिनामुल्लेखोपिद्रौपदीवचनैः प्राप्यते - "परन्तु ये दुष्टाः क्रूराश्च पुरुषाःअन्यान् निहत्य स्वप्राणान् पोषयन्तितेषां तु वध एवकल्याणाय भवति यतोहितथाभ्यासेन यदि स जीवति चेत् सः इतोप्यधिकं पापंकरोतितस्माच्च कारणात् सनरकगामी भवति"। युधिष्ठिरः शोकं प्रकटयन् स्वात्मरूपेण कथयति यत् "राजा यदि प्रजाः पालयितुं धर्मयुद्धेशत्रून्हन्याच्चेत्सः पापभाग्न भवति, तथाप्यहमस्तात् सन्तुष्टो नास्मि"। इत्थं प्रकारेण धर्मपूर्वकं प्रजायाः पालने धर्मयुद्धे शत्रूणां वधःकर्तुं शक्यते तादृशी व्यक्तिः वधयोग्याभवति। बलरामेणापि वध्यविषये उक्तं वर्तते यद्यस्मिन् विनयादिगुणाः न सन्ति सोऽपि मृत्युदण्डाय योग्योभवति - "ये धर्मस्य चिह्नं धारयन्ति, परन्तु धर्मं न पालयन्ति ते आधिक्येन पापिनः भवन्ति अतः तेमयाक्रियमाणस्य वधस्य योग्यास्सन्ति"।

दण्डस्य प्रकाराः तथा दण्डविधानम्

धर्मशास्त्रीयग्रन्थेषु विविध- प्रकारेण वर्णितं वर्ततेतच्च द्विधाविभक्तुं शक्यते। प्रथमः आन्तरिकः दण्डः तथा द्वितीयश्च बाह्यदण्डः। अत्रान्तरिकदण्डेन तात्पर्यमस्ति यदपराधी मानसिकानुचिन्तनेन पापकर्मणः निवृत्तोभवेदिति। निजापराधं ज्ञात्वा पश्चात्तापमाध्यमेनअपराधस्य पुनरावृत्तितः विमुखीभवनमेवन्तरिकदण्डस्यश्रेण्यामन्तर्भवति। किन्तु या व्यक्तिःतथा कर्तुं न शक्नोति तस्यैबाह्यदण्डस्य व्यवस्था कृतासीत्। धर्मशास्त्रकारैः बाह्यदण्डस्यचतुर्णां भेदानां वर्णनंस्वकीयेधर्मशास्त्रेकृतो वर्तते - प्रथमो वागदण्डः, द्वितीयो धिग्दण्डः, तृतीयो घनदण्डः, चतुर्थो वधदण्डः। एतेषां दण्डप्रकाराणां प्रयोगः अपराधिनः अपराधस्यनिवृत्तये क्रमेणक्रियते स्म। मनुनापि एतेषामेव दण्डप्रकाराणामुल्लेखः कृतो वर्तते। मनुना दण्डस्य दशानां स्थानानामुल्लेखः कृतो विद्यते - उपस्थः, उदरम्, जिह्वा, हस्तौ, पादौ, नेत्रे, नासिका, कर्णौ,घनं देहश्च। एतेषामेव नियमानां पालनं श्रीमद्भागवते अनेकेषु स्थलेषुप्राप्यते। अश्वत्थामा ब्राह्मणःआसीत्तथातेन यः महाजघन्योपराधः कृतः आसीत्तदर्थंमृत्युदण्डो विहितः आसीत् परन्तु ब्राह्मणः आसीदिति कारणात् तस्मै शारीरिको मृत्युदण्डोदातुं न शक्यतेस्म तदास्यां परिस्थितौ तस्य केशानां मुञ्जनं कृत्वा तस्य मस्तिष्कस्थितमणिंनिष्कास्यासौ दण्डितः। एकस्मिन् अन्यस्थले यदा शिशुपालेन राजसूययज्ञे श्रीकृष्णस्य अग्रपूजासमये सः दुर्वचनैः अपमानितः तदा शिशुपालाय मृत्युदण्डःप्रदत्तः। वाग्दण्डस्यापि वर्णनं प्राप्यते राज्ञा परीक्षितेन कलयुग - रूपिपुरुषो वागदण्डेन दण्डितः। पुराणसाहित्ये ऋषिभिः प्रदत्तशापेनापिदण्डप्रदानस्य वर्णनं प्राप्यतेसः वागदण्डान्तर्गतेऽन्तर्भवति। शापस्योदाहरणानीत्थं वर्ततन्तेराज्ञे परीक्षिताय श्रृङ्गिनः ऋषेःश्रापःतत्कृतकुकृत्यानांदण्डस्वरूपमेवास्ति। इत्थं नैकान्युदाहरणानि श्रीमद्भागवतेप्राप्यन्ते ।

राजवृत्तिः करनिर्धारणञ्च

राज्ञे शिलोंछवृत्तेःप्रशंसा प्राप्यतेयत् "यो राजा शिलोंछवृत्तिमाध्यमेनस्वजीविकांनिर्वहतितस्य राज्ञो यशो लोके जले तैलबिन्दुवद् विस्तारंप्राप्नोति" अर्थात् तस्य यशः सम्पूर्णे संसारेविस्तृतो जायतेतथा च सः प्रसिद्धिंप्राप्नोति। राज्ञे जीविकाप्राप्तिः प्रजाजनैः प्रदत्तकरेण भवति स्मअस्मिन्विषयेधर्मशास्त्रकारैः प्रजायाः करःकथम्, केनरूपेण, प्रजायाः आयस्य कतमः भागः कररूपेण ग्रहीतव्यः अस्य साङ्गोपाङ्गं वर्णनंकृतं वर्तते। करगृहणविषयेप्राप्यतेयत्स राजा प्रजासु दयां विधाय करग्रहणं त्यक्त्वाराज्यनिधेः क्षतिंन कुर्यात् तथातेभ्यः अधिकं करंस्वीकृत्य तेषां मूलंन विनाशयेत्। राजा स्वराज्येतथा करसंग्रहणं नियमयेद्यथाजलौका किञ्चिद्रुधिरम्, वत्सः किञ्चिद्दुग्धम् तथा भ्रमरश्च किञ्चिद्रसं पिबति तथैव राजा स्वप्रजायाः किञ्चित् किञ्चिद् वार्षिकं करंस्वीकुर्यात्। पाराशरस्मृतावप्यं भावःइत्थं प्रकारेण प्राप्यते –यथा मालाकारः वृक्षान् मूलान्न नाशयतिकेवलं तेषांपुष्पाण्येव त्रोटयतितथैव राजा प्रजाभ्यः किञ्चिदेव राजकरंगृह्णीयात्, यथा अङ्गारकारकः वृक्षंलुनाति तथैव राजा प्रजायाः अधिकं करंस्वीकृत्य प्रजां न नाशयेत्। विविधवस्तूनां व्यापारे विविधांशेषु करं गृह्णीयादस्य वर्णनमपि मनुरकरोत्। वसिष्ठस्मृतावप्युच्यते यद्राजा धर्मानुसारेण प्रजां रक्षयित्वातेषामर्जितभागात् षष्ठं भागं कररूपेणस्वीकुर्यात्। श्रीमद्भागवतमहापुराणेकरनिर्धारणविषये प्राप्यते यद् राज्ञो वृत्तिः समेभ्यो यथायोग्यं करेण तथा दण्डादिना च भवति। राजा प्रजाभ्यः आयस्यषष्ठांशं कररूपेण गृह्णीयात्। किन्तु विना रक्षणं प्रजाभ्यो यो राजा करं ग्रह्णाति सराजा पातकी भवति। प्रजाभ्यः करमाध्यमेन एवं दण्डमाध्यमेन च धनस्य संग्रहणं क्रियतेस्म।

युद्धकर्म

राज्यस्य विस्ताराय, प्रजायाः रक्षानिमित्तं युद्धकर्म राज्ञः प्रमुखं कर्म कथ्यते। राज्ञो धर्मःवर्तते यत् समानबलवतः, अधिकबलवतः, अथवा हीनबलवतः च शत्रोः आह्वाने शत्रुणा युद्धायाह्वाने चयुद्धं क्षत्रियस्य धर्मः वर्तते इत्थं सस्मरन् स कदापि युद्धाद् विमुखो न भवति। युद्धादपलायनम्, प्रजापालनम्, ब्राह्मणानामादरः एतत् सर्वं राज्ञां कृतेकल्याणकारिकर्माण्युक्तानि। युद्धस्य महत्त्वस्यापि प्रतिपादनं मनुनाक्रियत यद् ये राजानः संग्रामेमिथः अन्योन्यवधेच्छया महापराक्रमेण युक्तास्सन्तः विमुखाः न भवन्ति ते निर्विघ्नतया स्वर्गलोकं गच्छन्ति। इत्थं प्रकारेण युद्धस्य विविधनियमानां वर्णनं विस्तरेण स्मृतिषुप्राप्यते। यथा – कीदृशानां शस्त्राणां प्रयोगः शत्रुषु न कुर्यात्, युद्धेअवध्यानां वर्णनम् – रथहीनाः, करबद्धाः, केशानुद्घाट्य धावन्तः, युद्धं त्यक्त्वोपविष्टाः, अथवा शरणागताः, शयानाः, कवचहीनाः, नग्नावस्थायुक्ताः, आयुधरहिताः, युद्धाद्विमुखाः, युद्धद्रष्टारः, अन्येन सह युद्ध्यमानाः, विखण्डितशस्त्राः, पुत्रादिशोकव्याकुलाः, युद्धभियापलायमानाः एते समेपि युद्धेऽवध्याः कथितास्सन्ति। इत्थमेव राजकर्मणः निर्भयेन पालनंकुर्वणिस्य राज्ञो ध्रुवस्य युद्धस्य वर्णनं श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते प्राप्यतेयस्मिन् ध्रुवयक्षयोर्मध्ये जातस्यभीषणयुद्धस्य वर्णनमक्रियत। राज्ञो ध्रुवस्य युद्धेतथा पराक्रमः आसीद् यत् समेऽपि यक्षाः विनाशंप्राप्नुवन्तः आसन्तदा स्वयम्भूः मनुः स्वयं ध्रुवं प्रबोधयितुं प्रकटोऽभवत्तदा राजा ध्रुवो युद्धमत्यजत्। देवासुरसंग्रामस्य महायुद्धस्यापि वर्णनं श्रीमद्भागवतेऽत्यधिकविस्तरेण प्राप्यते यस्मिन् देवानामसुराणाञ्च महायुद्धस्य वर्णनं प्राप्यते। द्वावपि मिथः महता बलेन सम्पन्नौ भूत्वा युद्धं कुरुतःस्म।

एवं प्रकारेण श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गते राज्येन, राज्ञा एवं राजधर्मेण च सम्बन्धितः विमर्शः उपलभ्यते। इदं विचारणीयं यद्यथा राज्येन, राज्ञया एवं राजधर्मेण सम्बद्धस्

100%	MATCHING BLOCK 352/353	W	https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/t ...

य सिद्धान्तस्य प्रतिपा

दनमाधुनिकैः राजनीतिशास्त्रिभिःकृतो वर्तते ततः उत्कृष्टः विमर्शः श्रीमद्भागवतमहापुराणेप्राप्यतेतथा द्वयोरपि राज्यस्य राज्ञः राजधर्मस्य चविषये समानताःप्राप्यन्ते। यत्राधुनिकराजनितिकशास्त्रिभिश्शुष्कसिद्धान्तस्य प्रतिपादनंकृतं वर्ततेतत्रैव श्रीमद्भागवतमहापुराणेतत्संबन्धितशुष्कसिद्धान्तस्य प्रतिपादनं विहाय तात्कालिकस्य राजधर्मस्योदाहरणवर्णनपुरस्सरं राज्यस्य व्युत्पतिः, राज्ञः कर्तव्यम्, राज्यव्यवस्था, राज - दण्डसिद्धान्तस्य च प्रतिपादनंकृतं वर्तते। श्रीमद्भागवतमहापुराणे राज्यस्यराज्ञश्च

व्युत्पत्ति-संबन्धे दैवीयोत्पत्

88%	MATCHING BLOCK 353/353	W	https://archive.org/stream/sanskritshastramanj ...

तिसिद्धान्तः, शक्तिसिद्धान्तः,

Ouriginal

अभिमतसिद्धान्तः, मन्वाद्यन्यराज्ञां चाख्यानैः स्पष्टः कृतो वर्तते। अथ च राज्ञः प्रजायाश्च संबन्धःकीदृशस्स्यादस्मिन्संदर्भे बहून्याख्यानान्युद्धरणान्यपि चप्राप्यन्ते । अत्र राज्ञः प्रजायाश्च सम्बन्धः जन्यजनकवत् स्यादित्युक्तम्। भागवतेविभिन्नस्मृतीनामुद्धरणानामाधारेण राज्यस्यसप्ताङ्गानाम्, राजव्यवस्थायाः, करव्यवस्थायाः, दण्डव्यवस्थायाः, न्यायव्यवस्थायाः तथा सामाजिकस्य न्यायस्यापि वर्णनं कृतं वर्तते। अस्मिन् पुराणे राज्ञो गुणदोषानां विवेचनं विभिन्नराज्ञांकथा - माध्यमेन स्पष्टंकृतं विद्यते पृथ्वादिराजानामाधारेणराज्ञो गुणदोषानांविमर्शनेनेदं पुराणं पूरितं वर्तते । अतोवक्तुं शक्यते यद्यथा आधुनिकैः राजनीतिज्ञैः राजधर्मस्य वर्णनंकृतं विद्यतेतथैव पुराणान्तर्गतेऽपि प्राप्यते। आधुनिकेतिहासकाराणां चिन्तने राज्यस्य, राज्ञः, तथा राजधर्मस्य वर्णनं व्यक्तिं समयं चसंयोज्य व्यक्तिविशेषस्य घटनानामाधारेणकृतं विद्यते तत्रैव श्रीमद्भागवतमहापुराणे राजधर्मस्य वर्णनं शाश्वतमूल्यानामाधारेणकृतं विद्यते शाश्वतमूल्यानामाधारेण निर्मिताः राजधर्मस्य सिद्धान्ताः सार्वभौमिकाः सार्वकालिकाश्च भवन्ति ।

140

140

Curiginal

Hit and source - focused comparison, Side by Side

Submitted text As student entered the text in the submitted document.
Matching text As the text appears in the source.

1/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	88% MATCHING TEXT	4 WORDS
ज्ञानं प्राप्तुं शक्नुयुः। पैराणि			ज्ञानं प्राप्तुं शक्नुयुः इत्थं प्रकारेण	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

2/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	38% MATCHING TEXT	6 WORDS
व्युत्पत्तिक्रमे 'पुरातन'शब्दस्य अर्थव्युत्पत्तिः वक्तुं शक्यते। व्युत्पति			व्युत्पत्तिः निघण्टुशब्दस्य व्युत्पत्तिः एवं भवति । 87077 व्युत्पत्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

3/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	71% MATCHING TEXT	6 WORDS
राणम्' इति शब्दः विशेषणत्वेन प्रयुक्तः			रुष इति शब्दं (प्रातिपदिकम्) विशेषणत्वेन प्रयोक्तु	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

6/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS
ते। विष्णुपुराणानुसारे				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

4/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	88% MATCHING TEXT	6 WORDS
ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं			ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च वा	

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

5/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	55% MATCHING TEXT	5 WORDS
मात्स्यं कौर्मं च ब्रह्माण्डारव्यमिति त्रिषट्।।			मात्स्यं च गारुडं तद्वद्ब्राह्मं डाख्यमिति त्रिषट् २८	

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

Ouriginal

7/353	SUBMITTED TEXT	21 WORDS	97%	MATCHING TEXT	21 WORDS

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं विप्र!

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुरा

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

8/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	80%	MATCHING TEXT	5 WORDS

सर्गः, प्रतिसर्गः, वंशः, मन्वन्तरः, वंशानुचरि

सर्गः, 2. प्रतिसर्गः, 3. वंशः, 4. मन् वतरः, 5. वंशानुचरि

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

9/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	95%	MATCHING TEXT	5 WORDS

व विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।

विविस्तृतं वर्णनं प्राप्यते ।

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%% ...

10/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

पञ्चज्ञानेन्द्रियाणां पञ्चकर्मेन्द्रियाणां

पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि, पञ्चकर्मेन्द्रियाणि,

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

11/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	71%	MATCHING TEXT	9 WORDS

य शब्दस्य स्थाने 'संस्था' इति शब्दस्य प्रयोगः कृतः

य शब्दस्य स्थाने 'अनामयम्' इत्यस्य शब्दस्य प्रयोगः कृतः । 27549

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

12/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

वंशः, वंशानुचरितम्, संस्था, हेतुः, अपाश्

वंशः, 7. वंशानुचरितम्, 8. संस्था, 9. हेतुः, 10. अपाश्

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

13/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	91%	MATCHING TEXT	4 WORDS

सर्गः, प्रतिसर्गः, वंशः, वंशानुचरि

सर्गः, 2. प्रतिसर्गः, 3. वंशः, 4. मन्वतरः, 5. वंशानुचरि

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

14/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	50% MATCHING TEXT	5 WORDS
राचीनतमेषु पुराणेषु मार्कण्डेयः, ब्रह्माण्डः, विष्			रू यते च पुराणेषु मार्कण्डेयो महामुनिः अपश्यद्वैष्	

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

15/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	85% MATCHING TEXT	5 WORDS
महामहोपाध्यायः पी.वी. काणे महोदयः अग्नि			महामहोपाध्यायः डो. पी.वी. काणेमहोदया नां	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

16/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	76% MATCHING TEXT	3 WORDS
गोविन्दभगवत्पादस्य गुरुणा गौडपादा			गोविन्दभगवत्पादस्य गुरुः आसीत्? .. उत्तरम्- गौडपादः।	

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

17/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100% MATCHING TEXT	4 WORDS
द्विधा विभक्तुं शक्यन्ते। प्			द्विधा विभक्तुं शक्यन्ते । प्	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

18/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	80% MATCHING TEXT	6 WORDS
त्मकशब्दात् अयं अभिप्रायः वर्तते यत् गे			ति । 20978 आवैदिककालात् अयं अभिप्रायः वर्तते यत्, गा	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

19/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	70% MATCHING TEXT	5 WORDS
ति। श्रीमद्भगवद्गीता मुख्यतया श्रीकृष्णः			त् । 90175 श्रीमद्भगवद्गीता यां भगवता श्रीकृष्णे	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

20/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100% MATCHING TEXT	5 WORDS
मन्वन्तरम् ईशानुकथा निरोधः मुक्तिः आश्			मन्वन्तरम्, ईशानुकथा, निरोधः, मुक्तिः, आश्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

21/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	73% MATCHING TEXT	4 WORDS

ति। विशिष्टाद्वैतस्य प्रधानाचार्यः

तानि । 85619 विशिष्टाद्वैतस्य सम्प्रदायाचार्या

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

22/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	100% MATCHING TEXT	6 WORDS

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु।

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु ११२

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

23/353	SUBMITTED TEXT	24 WORDS	56% MATCHING TEXT	24 WORDS

ऽध्यायः धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य परिचय: द्वितीयोऽध्यायः धर्मशास्त्रीयसाहित्यस्य

ऽध्याये धर्मशास् रेतिहा सस्य परिचयात्मकं विवरणम्, द्वितीयेऽध्याये सूत् रसाहित्यस्यो

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

24/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	100% MATCHING TEXT	6 WORDS

वेदाः – ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः,

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

25/353	SUBMITTED TEXT	29 WORDS	100% MATCHING TEXT	29 WORDS

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे । 78089

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

26/353	SUBMITTED TEXT	11 WORDS	100% MATCHING TEXT	11 WORDS

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ॥

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

27/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	83% MATCHING TEXT	4 WORDS

चतुर्धा विभज्यते - संहिताब्राह्

चतुर्विधं विभज्यते, 1. वेदानां संहिताः, 2. ब्राह्

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Curiginal

28/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

30/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छन्दोज्योति

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

31/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	46%	MATCHING TEXT	9 WORDS

श्रौतसूत्राणि गृह्यसूत्राणि धर्मसूत्राणि शुल्वसूत्राणि च सन्निविष्टानि सन्ति।
श्रौतसूत्रं ब्राह्मणग्रन्था

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

29/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	64%	MATCHING TEXT	6 WORDS
रयुक्तो अस्ति। अस्यशब्दस्य प्रयोगः पुल्लिङ्गे				रयुक्तः 'अस्तिर्यः-शब्दस्यापि प्रयोगोऽस्ति। उभावपि पुल्लिङ्गे	

W https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%AC%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A5%8D%E0%A ...

32/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।				यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्"	

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

34/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

यतोऽभ्युदयनिश्रेःयससिद्धिः स धर्मः"।

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

Ouriginal

33/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS
मनुस्मृतेः मन्वर्थमुक्तावलीटीका			मनुस्मृतौ मन्वर्थमुक्ता- वलीटीका,		

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

35/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS
अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।			अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः । 10589		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

36/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	92%	MATCHING TEXT	5 WORDS
वर्णधर्मः, आश्रमधर्मः, वर्णाश्रमधर्मः, नैमित्तिकधर्मः, गुर्णधर्			वर्णधर्मः, आश्रमधर्मः, वर्णाश्रमधर्मः, नैमित्तिकधर्मः, गु णधर्		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

37/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	72%	MATCHING TEXT	1 WORDS
वर्णधर्माऽऽश्रमधर्म-वर्णाश्रमधर्म-गुणधर्म-नैमित्तिकधर्माणामु			वर्णधर्म, आश्रमधर्म, वर्णाश्रमधर्म, गुणधर्म, निमित् तधर्म, सामा		

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

38/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	73%	MATCHING TEXT	5 WORDS
अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विष्वतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रकृतो विदुः।।			अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्वि चतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः।।		

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

39/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	95%	MATCHING TEXT	4 WORDS
त्राणां नामानि प्राप्यन्ते			तिकाराणां नामानि प्राप्यन्ते ।		

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

40/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	71% MATCHING TEXT	7 WORDS

गौतमधर्मसूत्रम्, बोधायनधर्मसूत्रम्, आपस्तम्बधर्मसूत्रम्, हिरण्यकेषिधर्मसूत्रम्, वसिष्ठधर्मसूत्रम्, विष्णुधर्मसूत्रम्,

गौतमधर्मसूत्रम्, 2. बौधायनधर्मसूत्रम्, 3. आपस्तम्बधर्मसूत्रम्, दहिरण्यकेशिधम्रसूत्रम्, 5. वशिष्ट-धर्मसूत्रम्, 6. वैखानसधग्रसूत्रम्, 7. विष्णुधर्मसूत्रम्। 58.

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

43/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS

त्रमस्ति। कृष्णयजुर्वेदीया

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृतनञ्ञ - एक ... (D112618843)

41/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100% MATCHING TEXT	3 WORDS

टीकाकारः गौविन्दस्वामी

टीकाकारः गोविन्दस्वामी ।

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

42/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	81% MATCHING TEXT	6 WORDS

याः नाम “विवरण” प्राप्यते। गोविन्दस्वामीना

य नाम प्राप्यते । गोविन्दस्वामिनः

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

44/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS

बोधायनधर्मसूत्रं गौतमधर्मसूत्

बोधायनधर्मसूत्रे गौतमधर्मसूत्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

45/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	83% MATCHING TEXT	3 WORDS

बोधायनधर्मसूत्रं चतुर्षु प्रश्ने

बौधायनधर्मसूत्रे चत्वारः प्रश्नाः

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Ouriginal

46/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	96% MATCHING TEXT	2 WORDS
तैत्तिरीयसंहिता, तैत्तिरीयब्राह्			तैत्तिरीयसंहितायाः, तैत्तिरीयब्राह्	

W https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%AC%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A5%8D%E0%A ...

47/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	54% MATCHING TEXT	6 WORDS
रे धर्मशास्त्रकाराणामपि नामानि मिलन्ति तेषु –औपजघ्निकात्			रेधर्मशास्त्रकाराणां नामानि तेषां नि चोट्ङ्किता	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

48/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	76% MATCHING TEXT	3 WORDS
त्रं कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयशाख्यासह सम्बद्धो				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनञ्ञ - एक ... (D112618843)

49/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	66% MATCHING TEXT	4 WORDS
य व्याख्याकारः हरदत्तोऽस्ति व्याख्या			य बहवः व्याख्याकाराः सन्ति । 86985 व्याख्या	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

50/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100% MATCHING TEXT	4 WORDS
कण्डिकाः सन्ति। द्वितीये प्				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनञ्ञ - एक ... (D112618843)

51/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	100% MATCHING TEXT	9 WORDS
काण्वः, कुणिकः, कुत्सः, कौत्सः, पुष्करसादिः, वार्ष्यायणिः, श्वेतकेतुः, हारीतः।			काण्वे- कुणिक-कुत्स-कौत्स-पुष्करसादिवार्ष्यायणि-श्वेतकेतु-हारीता	

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Ouriginal

52/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	60% MATCHING TEXT	8 WORDS

हिरण्यकेशिधर्मसूत्रम् इदं धर्मसूत्रं हिरण्यकेशिकल्पसू

हिरण्यकेशिधर्मसूत्रस्य स्थानमन्यतममेव । धर्मसूत्रमिदं हिरण्यकेशिकल्पस्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

56/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS

हिरण्यकेशिगृह्यसूत्रस्य

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

53/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100% MATCHING TEXT	3 WORDS

ऋग्वेदस्य विद्यार्थीनः

ऋग्वेदस्य विद्यार्थिनः

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

54/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100% MATCHING TEXT	3 WORDS

शतितमोऽध्यायः गौतमधर्मसूत्रस्य एकोनविंशतितमोऽध्याये

शत्तमेऽध्याये गौतमधर्मसूत्रस्य एकोनविंशतितमोऽध्यायो

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

55/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	82% MATCHING TEXT	3 WORDS

विष्णुधर्मसूत्रं याज्ञवल्क्यस्मृतेः

विष्णुधर्मसूत्राणां विषयसाम्यं याज्ञवल्क्यस्मृतौ

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

61/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	95% MATCHING TEXT	2 WORDS

हेमाद्रिकृत चतुर्वर्गचिन्तामणि

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

57/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	83% MATCHING TEXT	3 WORDS

हारीतधर्मसूत्रस्य एकः भाष्यकारो

हारीतधर्मसूत्रस्य कश्चन भाष्यकार

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Ouriginal

58/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

वक्तुं शक्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ

वक्तुं शक्यते । याज्ञवल्क्यस्मृतौ,

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

59/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	62%	MATCHING TEXT	5 WORDS

स्त्रीणां धर्माणां वर्णनं, प्रायश्चित्तानां

स्त्रीपुंधर्मः, पापभेदाः, प्रायश्चित्तानि

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

60/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	78%	MATCHING TEXT	8 WORDS

शङ्खलिखितधर्मसूत्रम् अस्य धर्मसूत्रस्य

शङ्खलिखितधर्मसूत्रं रचितवान् । अस्य धर्मसूत्रस्य

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

62/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	76%	MATCHING TEXT	4 WORDS

प्राप्नोति - वैखानसशास्त्रानुसारेण

प्राप्नोत् । 86685 वैद्य शास्त्रानुसारेण

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

68/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	70%	MATCHING TEXT	2 WORDS

त्रीय मनु-याज्ञवल्क्यादिस्मृत्यादि

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

63/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	71%	MATCHING TEXT	6 WORDS

मनोः नाम आगतम्। बौधायनः सप्तधर्मशास्त्रकाराणामु

मनोः नाम उद्धरति । बौधायनः सप्त धर्मशास्त्रकाराणां नामा

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Ouriginal

64/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	100%	MATCHING TEXT	7 WORDS

कात्यः, काश्यपः, गौतमः, प्रजापतिः, मौद्गल्यः, हारी

कात्य - काश्यप - गौतम - प्रजापति- मौद्गल्य - हारी

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

65/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	84%	MATCHING TEXT	3 WORDS

धर्मशास्त्रकाराणामुल्लेखं करोति

धर्मशास्त्रकाराणां नाल्लेखोऽस्ति ।

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

66/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	38%	MATCHING TEXT	10 WORDS

षां नामानि प्राप्यन्ते- अत्रिः, उतथ्यस्य पुत्रः, भृगुः, वसिष्ठः, वैखानसः, शौ

षु भगवान् मुः प्रप्रथमः । तेन अत्रि-उतथ् यपुत्र-भृरु-वसिष्ठ-वैखानस-शौ

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

67/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	47%	MATCHING TEXT	4 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतौ महर्षियाज्ञवल्क्येन तत्कालीन धर्मशास्त्

याज्ञवल्क्यस्मृतौ याज्ञवल्क् यतिरिक्तानामन्येषामूनविंधर्मशास्त्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

69/353	SUBMITTED TEXT	15 WORDS	69%	MATCHING TEXT	15 WORDS

याज्ञवल्क्यः, उषनः, अङ्गिरा, यमः, आपस्तम्बः, संवर्तः, कात्यायनः, बृहस्पतिः, पराशरः, व्यासः, शङ्खलिखितः, दक्षः, गौतमः, शातातपः,

याज्ञवल्क्य-अत्रि-विष्णु-हारीत-औशनस-आङ्गीरस-यम-आपस्तम्ब-संवर्त-कात्यायन-बृहस्पति-पराशर-व्यास-ख-लिखित-दक्ष-गौतम-शातातप-

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

70/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	65%	MATCHING TEXT	5 WORDS

भिः धर्मशास्त्रीय स्मृतिग्रन्थानां रचिताः। स्मृति

भिः धर्मशास्त्रकारैः बहवो हि स्मृतिग्रन्थः विनिर्मिताः । सू त्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

Ouriginal

72/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	58%	MATCHING TEXT	6 WORDS

धर्मशास्त्रमैव स्मृतिः महर्षि मनुना मनुस्मृतौ

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

71/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

सात्त्विका राजसाश्चैव तामसाः

सात्त्विकी राजसी चैव तामसी

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

73/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	76%	MATCHING TEXT	4 WORDS

मसूत्रे, बौधायनधर्मसूत्रे, आपस्तम्बधर्मसूत्रे,

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

74/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

इत्येतेषु ग्रन्थेषु प्राप्यते।

इत्यादिषु ग्रन्थेषु प्राप्यते । 50579

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

75/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	88%	MATCHING TEXT	6 WORDS

नां नामोल्लेखं प्राप्यते यथा - भार्

नां नामोल्लेखः प्राप्यते । यथा- श्रा

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

88/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	92%	MATCHING TEXT	4 WORDS

द्वादशाध्यायाः सन्ति प्रथमेऽध्याये

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ़्तनञ्च - एक ... (D112618843)

Ouriginal

76/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	38%	MATCHING TEXT	9 WORDS

ति। द्वितीयेऽध्याये धर्मः, संस्कारः, ब्रह्मचारीणां सकलधर्मान् कथ्यते। तृतीयेऽध्याये

ति। द्वितीयाध्याये -२४९ श्लोकाः, धर्मप्रमाणानि, जातकर्मादय उपनयनान्तसंस्काराः, ब्रह्मचारिणः जीवनवृत्तिश्च । तृतीयाध्याये -२८६

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

77/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	70%	MATCHING TEXT	6 WORDS

ये राजधर्मस्य विस्तरेण वर्णनं प्राप्यते।

य तीर्थस्य विस्तृतरूपेण वर्णनं प्राप्यते ।

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0% ...

78/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	34%	MATCHING TEXT	8 WORDS

नामानि यथा - भारूचिकृतं मनुशास्त्रविवरणं, मेधातिथिकृतं मनुभाष्यं, गोविन्दरा

नामानि तेषां मतानि चोट्ङ्कितानि । 1 ` मन्वुस्मृतेः नवटीकाः सन्ति । यथा ~ (9) मेधातिथेः मलुभाष्यम्, (२) गोविन्दरा

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

79/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	72%	MATCHING TEXT	4 WORDS

मन्वर्थविवृतिः, कुल्लूकभट्टकृता मन्वर्थमुक्तावली, राघवानन्

मन्वर्थविवृत्तिकारः। ४. कुल्लुकभट् टः - मन्वर्थमुक्तावलिकारः। ५. राघवानन्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

80/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	62%	MATCHING TEXT	5 WORDS

मणिरामदीक्षितकृता सुखबोधिनी, कृष्णनाथकृता व्याख्या,

मणिरामदीक्षितकृता सुखबोधिनीटीका । कुल्लूकोऽपि मनुस्मृतिव्याख्या

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

81/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	78%	MATCHING TEXT	7 WORDS

यते। याज्ञवल्क्यस्मृतिः महर्षियाज्ञवल्क्

यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ याज्ञवल्क्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Ouriginal

82/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	67% MATCHING TEXT	4 WORDS

बृहदारण्यकोपनिषदि याज्ञवल्क्यस्य चर्चा प्राप्

बृहदाररण्यकोपनिषदि याज्ञवल्क्यस्आख्यायिका प्राप्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

83/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	35% MATCHING TEXT	10 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतिः याज्ञवल्क्येन रचिता एतेन कारणेन अस्याः स्मृतेः नाम याज्ञवल्क्यस्मृति

याज्ञवल्क्यस्मृत्योराधारेण नारदस्मृतेः रचन) याज्ञवल्क्येन स्मृतिकाषु न 1. अत अनुमीयते यत् . नारदस्य नामोल्लेखो नैव विहितः ।. न याज्ञवल्क्यस्मृते

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

84/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100% MATCHING TEXT	3 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतिः मनुस्मृतेः

याज्ञवल्क्यस्मृति: मनुस्मृत्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

85/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	90% MATCHING TEXT	4 WORDS

श्लोकाः प्राप्यन्ते। स्मृतिः

श्लोकाश्च प्राप्यन्ते । स्मृति

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

86/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS

वेदाङ्गानि चतुर्दशविद्या

वेदाङ्गानां चतुर्दशविद्या

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

87/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	76% MATCHING TEXT	5 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतेः शुक्लयजुर्वेदेन सह विशेषः सम्बन्धो

याज्ञवल्क्यस्मृतेः शुक्लयजुर्वेदेन सह निविडसम्बन्धः

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Curiginal

89/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

सम्बन्धः वाजसनेयी संहितया सह | सम्बन्धो वाजसनेयी संहितया सह

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

90/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	92%	MATCHING TEXT	3 WORDS

शङ्कराचार्यः ब्रह्मसूत्रभाष्ये या | शङ्कराचार्याणां ब्रह्मसूत्रभाष्ये अस्याः

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

91/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	63%	MATCHING TEXT	8 WORDS

ये याज्ञवल्क्यस्मृते कालः भवितुं शक्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ विश् | यं याज्ञवल्क्यस्मृतौ केषुचित् स्थलेषु प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतेः शु

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

92/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	36%	MATCHING TEXT	10 WORDS

क्रीतानुशयः, समस्या नपाकर्म, सीमाबन्धः, स्त्रीपुंसंयोगः, दायभागः, साहसः, वाक्पारुष्यं, दण्डपारुष्यं, | क्रीतानुशयः।। ञ - ७ श्लोकाः - समयस्यानपाकर्म । ट - ४३ श्लोकाः - सीमाविवादः । गणित ठ - ११३ श्लोकाः - स्त्रीपुंधर्मः। ड - ५२ श्लोकाः - दायभागः । ढ - २७ श्लोकाः - साहसम् । ण - ३२ श्लोवाक्पारुष्य-दण्डपारुष्ये ।

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

93/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	43%	MATCHING TEXT	10 WORDS

टीकायां, मिताक्षराटीकायां अस्याः स्मृत्याः अनेकानि उद्धरणानि प्राप्यन्ते। स्मृ | टीकायां, हरदत्तस्य मिताक्षराटीकायां च जातूकर्ण्यस्योद्धरणानि प्राप्यन्ते । मो

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

94/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	43%	MATCHING TEXT	9 WORDS

नारदस्मृतिः याज्ञवल्क्यस्मृत्याः पश्चात् रचिता स्यात् यताहि याज्ञवल्क्येन दिव्यस्य | नारदस्मृतिः याज्ञवल्क्यस्मृतेः परमेव प्रणीताऽभवत् । याज्ञवल्क्यः पञ्चविधानि दिव् या

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Curiginal

95/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100% MATCHING TEXT	3 WORDS
ऽस्ति। स्मृतिचन्द्रिकायां			ऽस्ति । स्मृतिचन्द्रिकाया	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

96/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	88% MATCHING TEXT	4 WORDS
निर्णयसिन्धौ तथा संस्कारकौस्तुभौ			निर्णयसिन्धौ संस्कारकौस्तुभे	

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

97/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	89% MATCHING TEXT	5 WORDS
नि प्राप्यन्ते। मिताक्षरायां टीकायां			न् प्राप्यन्ते । मिताक्षरायो, अपरार्क-टीकायां,	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

98/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100% MATCHING TEXT	4 WORDS
षु प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ			षु प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतेः	

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

99/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	80% MATCHING TEXT	3 WORDS
संस्काराणां, ब्रह्मचारिणां वस्त्रा				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

100/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	75% MATCHING TEXT	4 WORDS
द्वितीयेऽध्याये चतुर्णां वर्णानां धर्			द्वितीयाध्याये पञ्चदशश्लोकैः चतुर्णां वर्णानां धर्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

101/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	51%	MATCHING TEXT	6 WORDS

तृतीयेऽध्याये ब्रह्मचर्याश्रमधर्मस्य, चतुर्थेऽध्याये गृहस्थाश्रमधर्मस्य, पंचमेऽध्याये वानप्

तृतीयाध्याये - १५ श्लोकाः - ब्रह्मचर्याश्रमधर् माः। चतुर्थाध्याये - ७७ श्लोकाः - गृहस्थाश्रमधर् माः । पञ्चमाध्याये - १० श्लोकाः - वानप्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

102/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	58%	MATCHING TEXT	4 WORDS

षष्ठेऽध्याये संन्यासाश्रमधर्मस्य, सप्तमेऽध्याये

षष्ठाध्याये - २३ श्लोकाः - संन्यासाश्रमधर् माः । सप्तमाध्याये - २१

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

103/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	55%	MATCHING TEXT	5 WORDS

याज्ञवल्क्येन अस्योल्लेखः धर्मशास्त्रकारेषु कृतः

याज् ञवलक्येनापि गौतमस्योल्लेखः धर्मशास्त्रप्रयोजकेषुं कृतः ।

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

104/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	68%	MATCHING TEXT	4 WORDS

श्राद्धाशौचः, प्रेतकर्म, प्रायश्चित्तः,

श्राद्ध-अंशौच-पा प- प्रायश्चित्त-

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

105/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते।

याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते।

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

106/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

याज्ञवल्क्येन स्मृतिका

याज्ञवल्क्येन स्मृतिका

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

107/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	62%	MATCHING TEXT	5 WORDS

ते। मिताक्षरया बृहत्संवर्तस्योल्लेखः कृतः

ति । मिताक्षरायां बरृहतूसंवर्तस्य नामोल्लेखोऽस्ति ।

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

108/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	76%	MATCHING TEXT	5 WORDS

दशाध्यायेषु विभक्ताः अस्ति। अस्यां स्

दशाध्यायेषु विभक्तोऽस्ति। यास्

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

109/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

प्राप्नुवन्ति। अस्यां गोरो

प्राप्नुवन्ति । 16993 अस्य गिरेः

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

110/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	76%	MATCHING TEXT	4 WORDS

स्मृतिः अस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृत्यां

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

111/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

पराशरस्मृतिः द्वादशाध्याये

पराशरस्मृतौ द्वादशाध्यायाः

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

112/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	37%	MATCHING TEXT	8 WORDS

द्वितीयेऽध्याये गृहस्थाश्रमधर्मस्य, तृतीयेऽध्याये शौचाचारास्य, चतुर्थेऽध्याये नानाविधप्रायश्चित्तनां, पंचमेऽध्याये पु

द्वितीयेऽध्याये गृहस् थधर्मविचार तृतीयाध्याये ुशौवव्यवस्या, चतुर्थाध्याये विविधप्रायश्चित्तम्, पञ्चमाध्याये प्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

113/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

निवारणार्थं प्रायश्चित्

निवारणार्थं प्रायश्चित्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

114/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	66%	MATCHING TEXT	9 WORDS

अस्यां स्मृतौ चत्वारः अध्यायाः 250 श्लोकाश्च सन्ति। प्रथमेऽध्याये धर्मा — अस्यां स्मृतौ द्दशाध्यापरिमिताः श्लोकाश्च सन्ति । अत्प्रथमाध्याये धर्मा

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

115/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

क्रियते। द्वितीयेऽध्याये — क्रियते । 58395 द्वितीयेऽध्याये

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

116/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ — प्राप्यते । याज्ञवल्क्यस्मृतौ

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

117/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

मृतौ अष्टादशाध्यायाः सन्ति। — मृतौ अष्टादशाध्यायाः सन्ति । 88315

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

119/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	96%	MATCHING TEXT	5 WORDS

ये ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः शूद्राना

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

120/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	55%	MATCHING TEXT	6 WORDS

तीयेऽध्याये एतेषां चतुर्णां वर्णानां संस्काराणां

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्च - एक ... (D112618843)

118/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	78%	MATCHING TEXT	3 WORDS

णा याज्ञवल्क्येन याज्ञवल्क्यस्मृत् — णायाज्ञवल्क्यः प्रतिपादयति । दोन याज्ञवल्क्यस्मृते

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Ouriginal

121/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	76%	MATCHING TEXT	4 WORDS

स्मृतिः अस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृत्यां

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

122/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	75%	MATCHING TEXT	5 WORDS
त्याः प्रथमाध्यायस्य तृतीये श्लोके				ताया: प्रथमोध्यायस्य अर्जुनविषादयोगस्य तृतीयः (३) श्लोकः । 87081	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

123/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	71%	MATCHING TEXT	2 WORDS
ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासीनां				ब्रह्मचारी, गृहस्थवानप्रस्थानां च कदापि संन्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

124/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	42%	MATCHING TEXT	8 WORDS
श्राद्धः, कर्मविपाकः, प्रायश्चित्तानि, व्रतानि, दायभागः आदयः विषयाणां				श्राद्ध-अंशौच-पाप- प्रायश्चित्त-वीर्थादि विषयाः वर्णि	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

125/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	76%	MATCHING TEXT	2 WORDS
ज्ञवल्क्यस्मृत्यां धर्मशास्त्रकारा				ज्ञवल्क्यस्मृतौ परिगणितेषु धर्मशास्त्रकारे	

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

126/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS
प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्				प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

127/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	87%	MATCHING TEXT	2 WORDS
रायश्चित्तं, अगम्यागमनप्रायश्चित्				रायश्चित्तम् अगम्यागमनप्रायश्चित्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

128/353	SUBMITTED TEXT 21 WORDS	80% MATCHING TEXT 21 WORDS
	सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः। स्वपदानि च वर्ण्यते भाष्यं भाष्यविदो विदुः।। एवं प्	सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वर्णै; सूत्रानुसारिभि: । स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदे बिदुः।।' । प्

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

129/353	SUBMITTED TEXT 4 WORDS	100% MATCHING TEXT 4 WORDS
	संक्षिप्तः परिचयः प्रदीयते।	संक्षिप्तः परिचयः प्रदीयते । 5090

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

130/353	SUBMITTED TEXT 10 WORDS	95% MATCHING TEXT 10 WORDS
	असहायः डॉ. जौली महोदयेन सम्पादितं	असहायः डोऽ. जालीमहोदयेन सम्पादिता

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

131/353	SUBMITTED TEXT 3 WORDS	87% MATCHING TEXT 3 WORDS
	विश्वरूपेण याज्ञवल्क्यस्मृतौ	विश्वरूप याज्ञवल्क्यस्मृतेः

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

132/353	SUBMITTED TEXT 6 WORDS	65% MATCHING TEXT 6 WORDS
	य असहाय मेधातिथि विज्ञानेश्वर अपरार्क	य-असहाय-विश्वरूमेधातियि- विज्ञानेश्वर -कुल्लूअपरार्क-

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

133/353	SUBMITTED TEXT 4 WORDS	100% MATCHING TEXT 4 WORDS
	तं विश्वरूपस्य बालक्रीडाटीकायाः	ति । विश्वरूपस्य बालक्रीडाटीकायां,

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

Ouriginal

134/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	85% MATCHING TEXT	5 WORDS

अत्रिः, आपस्तम्बः, कात्यायनः, काश्यपः, गार्

अत्रि-आपस्तम्ब- अङ्गिरा-उशना त्यायन-काश्यप-गा ार्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

135/353	SUBMITTED TEXT	13 WORDS	47% MATCHING TEXT	13 WORDS

याज्ञवल्क्यः, वृद्धयाज्ञवल्क्यः, वसिष्ठः, विष्णुः, व्यासः, शङ्खः, शातातपः, शोनकः, संवर्तः, सुमन्तुः, स्वयंभू, हारीतः

याज्ञवल्क्य - मानवधर्म - लिखित - वसिष्ठ - विष्णु - व्यास - शङ्ख - शातातप- संवर्त् त- हारीताः।

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

136/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	70% MATCHING TEXT	4 WORDS

र्वं स्वीक्रियते। रामानुजाचार्यः स्ववेदा

रं एवमेव स्वीक्रियते यदयं मा धवाचार्यः स्ववाद्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

137/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS

प्रदायस्य भूतपूर्वाचार्याणा

प्रदायस्य भूतपूर्वाचार्येण

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

138/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	75% MATCHING TEXT	9 WORDS

भाष्ये गौतमः, आपस्तम्बः, वसिष्ठः, विष्णुः, शङ्खः, मनुः, याज्ञवल्क्यः,

भाष्ये मेधातिथिना गौतम-बौधायन-आपस्तम्ब-वसिष्ठ- विष्णु-शङ्ख-मलु-याज्ञवल्क्य-

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

139/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100% MATCHING TEXT	5 WORDS

याः महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति।

य महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति । 61454

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

140/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

मिताक्षरा याज्ञवल्क्यस्मृतौ

मिताक्षरा याज्ञवल्क्यस्मृतेः

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

141/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	73%	MATCHING TEXT	4 WORDS

मिताक्षरा, प्रमिताक्षरा, मिताक्षरा नामा

मिताक्षरोपरि प्रमीताक्षरा प्रतीताक्षरा वा, मि

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

142/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	52%	MATCHING TEXT	8 WORDS

भाष्यकाराणां च प्राप्यते यथा - असहायः, विश्वरूपः, मेधाति

भाष्यकारेषु हरदत्त-मस्कराचार्य-असहाय-विश्वरूप मेधाति

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

143/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

नारदः, पराशरः, पारस्करः, पितामहः,

नारद-पराशर-पारस्कर-पितामह-

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

144/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	95%	MATCHING TEXT	3 WORDS

गोविन्दराजः मनुस्मृतेः टीका

गोविन्दराजः | मनुस्मृतौ मनुटीका, 1050

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

145/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	50%	MATCHING TEXT	6 WORDS

यः याज्ञवल्क्यस्मृतेः टीकाकारोऽस्ति। एतेन याज्ञवल्क्यस्मृतौ कृ

यं याज्ञवल्क्यस्मृतौ केषुचित् स्थलेप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतेः शुक्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

146/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	83%	MATCHING TEXT	5 WORDS

राणम्, वराहपुराणम्, वामनपुराणम्, वायुपुराणम्,

राणम्, वराहपुराणम्, विष्णुपुरावायुपुराणम् 4.

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Curiginal

147/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	100%	MATCHING TEXT	1 WORDS

श्रुतिस्मृतिपुराणादि | श्रुतिस्मृतिपुराणादि

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

148/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	78%	MATCHING TEXT	4 WORDS

श्राद्ध-प्रायश्चित्तादिविषयाणां प्रतिपाद्यते। | श्राद्ध-अशौच-यतिधर्म-प्रायश्चित्तानां विषयाणां प्रतिपादनं दृश्यते ।

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

149/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	70%	MATCHING TEXT	7 WORDS

दस्य निष्पत्तिः 'नि' उपसर्गपूर्वकं 'बन्ध्' धातोः ' | दस्य निष्पत्तिः सम् उपसर्गपूर्वकं ख्याधातोः

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

153/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	100%	MATCHING TEXT	1 WORDS

धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्था

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

150/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	95%	MATCHING TEXT	3 WORDS

कृते स्मृतिचन्द्रिका प्रा | केतः स्मृतिचन्द्रिकायां प्रा

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

151/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS

व्यवहारः, प्रायश्चित्तं, श्राद् | व्यवहार-प्रायश्चित्ताशौवादि

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

152/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	90%	MATCHING TEXT	5 WORDS

कालविवेकः, व्यवहारमातृका, दायभागश्च। इमे त् | कालविवेकः, व्यवहारमातृका, दायभागश्चे ति

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

Ouriginal

154/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

चम्पाहट्टीयब्राह्मण आसीत्।

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

155/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS

आचारसागरः, प्रतिष्ठासागरः, अद्भुतसा

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

156/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

त्रिषु विभागेषु विभक्तोऽस्ति

त्रिषु विभागेषु विभक्ताः भवन्ति । 71557

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

158/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	55%	MATCHING TEXT	2 WORDS

सन्ति। हेमाद्रिप्रणीतः चतुर्वर्गचिन्तामणिः चतुर्वर्गचिन्तामणिधर्मशास्त्

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

157/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

कुरूक्षेत्रमाहात्म्यः,

कुरुक्षेत्रमाहात्म्यं

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

159/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	88%	MATCHING TEXT	1 WORDS

श्रीदत्तोपाध्यायः मध्ययुगीनमैथि

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

160/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	95%	MATCHING TEXT	3 WORDS

बन्धकारेषु श्रीदत्तोपाध्याय

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

161/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	88%	MATCHING TEXT	5 WORDS

ति। अयं धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना कृ

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

162/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

धर्मशास्त्रीयनिबन्धकाराणां

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

163/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	100%	MATCHING TEXT	1 WORDS

धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्था

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

164/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	65%	MATCHING TEXT	3 WORDS

शुद्धिरत्नाकरः, कृत्यचिन्तामणिः, राजानीति

शुद्धिचिन्तामणिः, कृत्यचिन्तामणिः, तीर्थचिन्ता

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

165/353	SUBMITTED TEXT	12 WORDS	64%	MATCHING TEXT	12 WORDS

ति यथा - एकादशीविवेकः, तिथिविवकेः, दत्तविवेकः, दुर्गोत्सवविवेकः, दोलायात्राविवेकः, प्रायश्चित्तविवेकः, कालविवेकः, शुद्धिविवकेः, श्राद्

ति । यथा - एकादशीविवेकः, तिथिविवेकः, दत्तक विवेकः, दुर्गोत्सवविवेकः, यात्राविवेकः, प्रतिष्टाविवेकः, प्रायश्चित्तविवेकः, रासयात्राविवेकः, व्रतकालविवेकः, शुद्धिविवेकः, श्राद्

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

167/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	76%	MATCHING TEXT	5 WORDS

कारणेन अस्य ग्रन्थस्य नाम मदनरत्नो

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

Ouriginal

166/353	SUBMITTED TEXT	13 WORDS	72%	MATCHING TEXT	13 WORDS
ति। अस्मिन् ग्रन्थे सप्तोद्योगाः सन्ति यथा - समयोद्योतः, आचारोद्योतः, व्यवहारोद्योतः, प्रायश्चित्तोद्योतः, दानोद्योतः, शुद्ध्यो				ति । अस्मिन् यन्थे सप्तोद्योतानां समावेशो वर्तते, यथा-. समयो द्योतः, आचारोद्योतः, व्यवहारोद्योतः, - प्रायश्चित्तोद्योतः, दानोद्योतः, शद्धदुद्यो	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

169/353	SUBMITTED TEXT	17 WORDS	10%	MATCHING TEXT	17 WORDS
त्वं, ऋग्वेदीवृषोत्सर्गतत्त्वं, यजुर्वेदीवृषोत्सर्गतत्त्वं, सामवृषोत्सर्गतत्त्वं, व्रततत्त्वं, देवप्रतिष्ठातत्त्वं, दिव्यतत्त्वं, ज्योतिषतत्त्वं, वास्तुयागतत्त्वं, दीक्षातत्त्वं, आह्निकतत्त्वं, क्रियाततत्त्वं, मठप्रतिष्ठातत्त्वं, पुरुषोत्तमक्षेत्रतत्त्वं, छन्दोगयाश्राद्धतत्त्वं, यजुर्वेदीश्राद्धतत्त्वं, शूद्रकृत्					

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

168/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	51%	MATCHING TEXT	6 WORDS
दुर्गोत्सवविवेके तथा मिसरुमिश्रः विवादचन्द्रे ग्रन्थे हरिहरनाथकृतस्मृतिसा				दुर्गोत्सिवविवेके, मिसरुमिश्रेण च विवादचन्द्रे हरिनाथलिखितस्मृतिसा	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

171/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	100%	MATCHING TEXT	1 WORDS
धर्मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्था					

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

170/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS
शुद्धिविवेकः, श्राद्धविवेकः,				शुद्धिविवेकः, श्राद्दविवेकः,	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

172/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	98%	MATCHING TEXT	5 WORDS
न्तामणिः, शुद्धिचिन्तामणिः, कृत्यचिन्तामणिः, तीर्थचिन्तामणिः, तिथिनि				न्तामणिः, शुद्धिचिन्तामणिः, कृत्यचिन्तामणिः, तीर्थचिन्ता तिथिचिन्	

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Ouriginal

174/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	64%	MATCHING TEXT	7 WORDS

कृत्यमहार्णवः, आचारमहार्णवः, विवादमहार्णवः, व्यहारमहार्णवः, दानमहार्णवः, शुद्धिमहार्णवः, पितृ

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

173/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	100%	MATCHING TEXT	1 WORDS
गोविन्दानन्दः गोविन्दानन्				गोविन्दानन्द गोविन्दानन्	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

175/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	66%	MATCHING TEXT	7 WORDS
ति। अस्य पितुर्नाम गणपतिभट्टः आसीत्। अस्य				त् I 17551 अस्य पितुर्नाम प्रभुदयाल आसीत् I 17552 अस्य	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

176/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

ना धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

177/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS
लपाणेः प्रायश्चित्तविवेके				लपाणेः प्रायश्चित्तविवेकः	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

178/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS
मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य				मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य	

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

179/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS
प्रसिद्धः ग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन्				प्रसिद्धः ग्रन्थोऽस्ति I 82038 रामानु	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

180/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	80%	MATCHING TEXT	6 WORDS

रीयग्रन्थाः सन्ति यथा - त्रिस्थलीसेतुः,

रीयग्रन्थाः के सन्ति? | उत्तरम्-1. त्रिस्थलीसेतु, 2.

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

181/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां वी

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

182/353	SUBMITTED TEXT	24 WORDS	97%	MATCHING TEXT	24 WORDS

यथा - परिभाषाप्रकाशः, संस्कारप्रकाशः, आह्निकप्रकाशः, पूजाप्रकाशः, प्रतिष्ठाप्रकाशः, राजनीतिप्रकाशः, व्यवहारप्रकाशः, शुद्धिप्रकाशः, श्राद्धप्रकाशः, तीर्थप्रकाशः, दानप्रकाशः, व्रतप्रकाशः, समयप्रकाशः, ज्योतिषप्रकाशः, शान्तिप्रकाशः, कर्मविपाकप्रकाशः, चिकित्साप्रकाशः, प्रायश्चित्तप्रकाशः, प्रकीर्णप्रकाशः, लक्षणप्रकाशः, भक्तिप्रकाशः, मोक्षप्रका

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

186/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना क्

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

183/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	62%	MATCHING TEXT	6 WORDS

य पितुर्नाम महादेवभट्टः तथा मातुर्नाम

य पितुर्नाम दे वरातः, मातुर्नाम

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

184/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	43%	MATCHING TEXT	7 WORDS

तिथ्यर्कः, दानहारावली, प्राश्चित्तमुक्तावली, आह्निकचन्द्रिका, श्राद्धचन्द्रिका च।

तिर्थ्यर्कः, आचारार्कः, दानहीरावलीप्रकाशः, प्रायश्चित्त- मुक्तावली, अन्त्येष्प्रकाशः, श्राद्धचन्द्रिका चे

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

Ouriginal

185/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

187/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	52%	MATCHING TEXT	6 WORDS

द्वौ भागौ स्तः पूवार्द्धः उत्तरार्द्धश्च। पूर्वार्

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

189/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

न धर्मशास्त्रीयग्रन्थानां रचना कृता।

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

191/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	67%	MATCHING TEXT	10 WORDS

धर्मशास्त्रीय ग्रन्थान् लिखितवान् यथा - आचारेन्दुशेखरः, तिथीन्दुशेखरः,
तीर्थेन्दुशेखरः, प्रायश्चित्तेन्दुशेखरः, श्रा

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

188/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

मशास्त्रीयनिबन्धग्रन्थस्य

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

193/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः।

SA Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

190/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

चतुर्णां वर्णानामुत्पत्तिः

चतुर्णां वर्णानामुत्पत्ति

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

192/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	68%	MATCHING TEXT	9 WORDS

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीदिमन मनुम् बाहुयुग्मे तथा बाहू राजन्य इति विन्यसेत् १०१ ऊरू तदस्य यद्वैश्य

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

196/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	55%	MATCHING TEXT	7 WORDS

ब्राह्मणस्य, बाहुभ्याम् क्षत्रियस्य, ऊरोः वैश्यस्य, पादात् शूद्रस्योत्

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्त्तनञ्च - एक ... (D112618843)

194/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	70%	MATCHING TEXT	5 WORDS

प्राप्यते यथा - विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा

पुरं च तैः विप्रक्षत्रियविट्शूद्र

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

195/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	85%	MATCHING TEXT	2 WORDS

षात् ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राणा

ष् कृब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्रा णां

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

197/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम्।

विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम् । 10247

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

198/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	85%	MATCHING TEXT	8 WORDS
ति - सन्धा, स्नानं, जपः, होमः, देवपूजनं, वैश्			तः। ८. सन्ध्यास्नान - जप - होम - देवपूजन - आतिथ्य - वैश्		

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

199/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS
प्राप्नोति। एवं प्रकारेण			प्राप्नोत् । 30204 एवं प्रकारेण		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

200/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS
तः। याज्ञवल्क्यस्मृत्याः मिताक्					

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

201/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	71%	MATCHING TEXT	5 WORDS
य अन्येभ्यः सर्वेभ्यः वर्णेभ्यः ते			य अन्येभ्यः सर्वेभ्यः राज्येभ्यः छात्		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

202/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS
तीयं स्थानं प्राप्नोति।			तीयं स्थानं प्राप्नोत्। 88113		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

203/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	100%	MATCHING TEXT	8 WORDS
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।			कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

204/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS
ब्राह्मणस्य क्षत्रियस्य					

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्च - एक ... (D112618843)

Curiginal

205/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।			परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् । 63205		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

208/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	87%	MATCHING TEXT	2 WORDS
ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानां सेवा					

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

206/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS
ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमश्च,			ब्रह्मचर्याश्रमः, 2. गृहस्थाश्रमः, 3. वानप्रस्थाश्रमः, 4. संन्यासाश्रमश्च ।		

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

207/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS
नाम्, पुराणानां धर्मशास्त्राणा			नि च पुराणानि धर्मशास्त्राणि		

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

209/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	52%	MATCHING TEXT	7 WORDS
तित्रिभिः ऋणैर्युक्तो भवति – जायमानो ब्राह्मणस् त्रिभि			त्तिरीयसंहितायां श्रूयते- 'जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभिः		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

210/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	55%	MATCHING TEXT	9 WORDS
व मोक्षं प्राप्तुं प्रयतते सः अधोगतिं प्राप्नोति ।			वा मोक्षः प्राप्तः । 11719 अन्ते पाण्डुः यदा मरणं प्राप्तवान् तदा ते		

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

211/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS
दस्य व्युत्पत्तिः आङ् उपसर्गपूर्वका					

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

212/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	76%	MATCHING TEXT	5 WORDS

य शारीरिकम्, मानसिकम्, आध्यात्मिकं

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

213/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	81%	MATCHING TEXT	7 WORDS

वर्षे, क्षत्रियस्य एकादशे वर्षे, वैश्यस्य च

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

214/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	95%	MATCHING TEXT	5 WORDS

रेण ब्रह्मचारिणे भिक्षायाः,

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

215/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS
य, नित्य-नैमित्तिककर्मणः,				य नित्य-नैमित्तिककर्मणां	

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

216/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS
र्यं कुर्यात् । प्रतिदिनं				रि यः २६ कुर्यात्प्रतिदिनं	

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

217/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

मनुस्मृतौ एवं याज्ञवल्क्यस्मृतौ

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

218/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS
कृत्य ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रमं				कृत्वा ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रमे	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

219/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

एतानि सर्वाणि कार्याणि सम्पा

एतानि सर्वाणि कार्याणि सम्पू

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

220/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

ब्रह्मचारिणः, वानप्रस्थिनः,

ब्रह्मचारिणां वानप्रस्थिनां

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

221/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

तं नित्य - नैमित्तिक -काम्

त् ७८ नित्यं नैमित्तिकं काम्

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

222/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

राणामुल्लेखः प्राप्यते । महाभा

राणामुल्लेखः प्राप्यते। भा

W https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

223/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते

याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते।

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

224/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS

मनुस्मृतौ एवं याज्ञवल्क्यस्मृता

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्त्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

225/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

ब्रह्मचर्याश्रमः गृहस्थाश्रमा

ब्रह्मचर्याश्रमः, 2. गृहस्थाश्रमः, 3.

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Ouriginal

226/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100% MATCHING TEXT	3 WORDS
राणामुल्लेखः प्राप्यते।			राणामुल्लेखः प्राप्यते।	

W https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

227/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	58% MATCHING TEXT	3 WORDS
सेव्यादिवानप्रस्थिनामुल्लेखो प्राप्यते ।			सुदेवः इत्यादीनां राज्ञां नामोल्लेखः प्राप्यते । 55663	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

229/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	58% MATCHING TEXT	5 WORDS
याज्ञवल्क्यस्मृतौ उक्तमस्ति यद् गृह्याग्निना				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

230/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	95% MATCHING TEXT	4 WORDS
स्पष्टरूपेण उल्लेखः प्राप्यते				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

228/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100% MATCHING TEXT	4 WORDS
य वर्णनं प्राप्यते। महाभारते			याः वर्णनं प्राप्यते । महाभारते	

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0% ...

231/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	78% MATCHING TEXT	5 WORDS
ते सः वानप्रस्थाश्रमं प्रवेष्टुं शक्नो			तः अहं वानप्रस्थाश्रमं प्रविष्टः । 61674 पत्नी	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

232/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100% MATCHING TEXT	4 WORDS
येत् । ज्ञानेन्द्रियाणि			य तु ७४ ज्ञानेन्द्रि याणि	

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

Ouriginal

233/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

तत्त्वज्ञानस्य प्राप्तिः — तत्त्वज्ञानस्य प्राप्त्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

234/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	80%	MATCHING TEXT	6 WORDS

सः गुरोः भक्तिं कुर्यात्, श्रद्धां धा — सीत् । 39034 गुरौ भक्तिः कार्या, श्रद्धा विधे

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

235/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

प्राप्नोति । शास्त्रीय -

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

236/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	38%	MATCHING TEXT	10 WORDS

प्राप्नोति स्म । ततः परं सः विवाहितः सन् प्राप्ताचाराणां ज्ञानस्ये — प्राप्नोति स्म । 93341 सर्वेषु विषयेषु नैपुण्यं प्राप्तः सः स्वस्य ज्ञानस्य

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

237/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	100%	MATCHING TEXT	7 WORDS

नित्य – नैमित्तिक – काम्य - कर् — नित्य-नैमित्तिक-काम्य-कर्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

238/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	66%	MATCHING TEXT	6 WORDS

च सम्प्राप्य मोक्षं प्राप्नुयात् । — च सम्प्राप्य जीवनलक्ष्यं प्राप्नो ति । 30576

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

239/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS

गर्भाधानसंस्कारः 4.2 पुंसवनसंस्कारः 4.3

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्च - एक ... (D112618843)

Curiginal

240/353	SUBMITTED TEXT	11 WORDS	39%	MATCHING TEXT	11 WORDS

स्कारः 4.5 उपनयनसंस्कारः 4.6 समावर्तनसंस्कारः 4.7 विवाहसंस्कारः
4.8 अंत्येष्टिसंस्कारः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

241/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। संस्

महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते अस्य । 95215 सीमासु

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

242/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	88%	MATCHING TEXT	4 WORDS

संस्काराणां माध्यमेन मनुष्यस्य

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

243/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	47%	MATCHING TEXT	3 WORDS

संस्कारैः संस्कृतः पूर्वैरूत्तरैरनुसंस्कृतः। नित्

संस्कृतभाषा अनिवार्या । 96458 संस्कृतं तु तस्य प्रियः विषयः आसीत् ।
96459 संस्कृतं तु

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

244/353	SUBMITTED TEXT	15 WORDS	66%	MATCHING TEXT	15 WORDS

केवलम् औपचारिकः दैहिकः संस्कारः न अपि तु संस्कार्यव्यक्तेः सम्पूर्ण
व्यक्तित्त्वस्य परिष्कारः शुद्धता, परिपूर्णता चा

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

245/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	87%	MATCHING TEXT	10 WORDS

राणां महत्त्वपूर्णं स्थानम् आसीत्।

रोः अति महत्त्वपूर्णं स्थानम् आसीत् । 14121

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

246/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	85% MATCHING TEXT	5 WORDS
संस्कारितः परिमार्जितः भवति – "संस्का			संस्कारिता/परिमार्जिता भाषा संस्कृ	

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

248/353	SUBMITTED TEXT	14 WORDS	94% MATCHING TEXT	14 WORDS
संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्ज्ञाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य"।				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

249/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	100% MATCHING TEXT	10 WORDS
चादधानाः क्रियाः संस्काराः इत्युच्यन्ते।				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

247/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	77% MATCHING TEXT	3 WORDS
आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितग्रियाजन्योऽतिशयविशेषः संस्कारः"।			आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहहितक्रियादिजन्योऽतिशयविशेषः संस्कारः"।	

W https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

250/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS
मृत्युपर्यन्तं संस्कारा			मृत्युपर्यन्तं संस्काराः	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

251/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	91% MATCHING TEXT	4 WORDS
महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्ततेस्म।			महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते अस्य । 95215 सीमा	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

252/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	38% MATCHING TEXT	8 WORDS
गर्भाधानादारभ्य अन्यतेष्टिः पर्यन्तं संस्कारेण सुसंस्कृताः भवन्ति ते			गर्भाधाना त् अन्त्येष्टिपर्यन्तं द्विजमात्राणां सर्वे संस्काराः वैदिकमन्त्रैः भवन्ति । 24251 उक्तं	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Curiginal

253/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	83%	MATCHING TEXT	7 WORDS

रैः गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्मनामकरणं, अन्नप्रासनं, चू

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

254/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	45%	MATCHING TEXT	8 WORDS

ह्यसूत्रेषु कृतं वर्तते। धर्मसूत्रेषु स्मृतिषु च संस्काराणां

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

255/353	SUBMITTED TEXT	26 WORDS	47%	MATCHING TEXT	26 WORDS

ह्यसूत्रानुसारेण संस्काराणां संख्या - आश्वलायन गृह्यसूत्रे एकादशसंस्काराणां वर्णनं वर्तते - विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, चूडाकरणं, अन्नप्राशनम्, उपनयनं, समावर्तनं, अन्त्येष्टिः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

256/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	39%	MATCHING TEXT	7 WORDS

पारस्करगृह्यसूत्रे षोडशसंस्काराणां कृते महत्त्वं दत्तमस्ति। पारस्करगृह्यसूत्रे षो

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

257/353	SUBMITTED TEXT	18 WORDS	69%	MATCHING TEXT	18 WORDS

विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, केशान्तसमावर्तनम्, अन्त्येष्टिः इति।

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

258/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	73%	MATCHING TEXT	10 WORDS

वर्तते - विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणम्, उपनिष्क्रमणम्, अन्नप्रा

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ृत्तनञ्ञ - एक ... (D112618843)

259/353	SUBMITTED TEXT	14 WORDS	67%	MATCHING TEXT	14 WORDS

जातकर्म, नामकरणं, दन्तोगमनम्, अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं,
वेदव्रतानि, गोदानं, समावर्तनं, विवाहः, गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनम्

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

260/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	96%	MATCHING TEXT	5 WORDS

सीमन्तं, विष्णुबलिः, जातकर्म, उत्थानं,

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

261/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	77%	MATCHING TEXT	6 WORDS

पारायणं, व्रतबन्धविसर्गः, उपाकर्म, उत्सर्जनं, समावर्तनं, पाणिगृ

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

262/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

शत् संस्काराणामुल्लेखः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

263/353	SUBMITTED TEXT	14 WORDS	59%	MATCHING TEXT	14 WORDS

चत्वारिंशत् संस्काराः उल्लिखिताः सन्ति ते च - गर्भाधानं, पुंसवनं,
सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, चै

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

264/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	66%	MATCHING TEXT	6 WORDS

रं, दर्शपूर्णमासः, आग्रायणं, चातुर्मास्यं, निरूढपशुबन्धः, सौ

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्ज - एक ... (D112618843)

Urkund/Ouriginal

265/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	66%	MATCHING TEXT	5 WORDS

त्यामपि चत्वारिंशत् संस्काराः उल्लिखिताः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

266/353	SUBMITTED TEXT	12 WORDS	53%	MATCHING TEXT	12 WORDS

शतिः संस्काराणामुल्लेखः कृतः वर्तते। तत्र – गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तं,
बलिः, जातकर्म, ना

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

268/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	54%	MATCHING TEXT	9 WORDS

पुंसः, सीमन्तः, जातकर्म, नामकरणम्, अन्नप्राशनं, चोलकर्म, मौजी,
चतुर्व्रतानि,

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

267/353	SUBMITTED TEXT	11 WORDS	67%	MATCHING TEXT	11 WORDS

गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म, नामकरणं, निष्क्रमणम्,
अन्नप्राशनं, चूडाकरणम्, उपनयनं, केशान्त, समावर्

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

270/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	62%	MATCHING TEXT	4 WORDS

स्मृतौ वर्णितानां संस्काराणामुल्लेखः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

269/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	56%	MATCHING TEXT	4 WORDS

संस्कारशब्दस्य प्रयोगः सामान्यरूपेण समस्तधार्मिककृत्या

संस्कार-शब्दस्यार्थां भवन्ति? उत्तरम्- सामान्यरूपेण समस्त-धार्मिककृत्या

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

Curiginal

271/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	68%	MATCHING TEXT	6 WORDS

हारीतानुसारेण यज्ञानां समावेशः देवसंस्कारेषु तथा मनुष्

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

272/353	SUBMITTED TEXT	13 WORDS	55%	MATCHING TEXT	13 WORDS

स्काराः प्राप्यन्ते यथा – गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तोन्नयनं, जातकर्म,
नामकरणं, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनं, चूडा

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

274/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

संस्कारस्य स्पष्टरूपेण

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

273/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	55%	MATCHING TEXT	9 WORDS

वाहानन्तरं येन कर्मणा पुरुषः स्वशुक्रं स्त्रियां धारयति तत् गर्भाधानमि

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

276/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	78%	MATCHING TEXT	7 WORDS

ति। अस्य संस्कारस्य करणसमये उपयुक्तः कालः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

277/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	52%	MATCHING TEXT	7 WORDS

स्कारस्य विवरणं प्राप्यते। अत्र अस्य संस्कारस्य

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

Curiginal

275/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	95%	MATCHING TEXT	4 WORDS

नामुल्लेखः न प्राप्यते के

नामोल्लेखः एव न प्राप्यते । कि

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0% ...

281/353	SUBMITTED TEXT	12 WORDS	39%	MATCHING TEXT	12 WORDS

यते। 4.2 पुंसवनसंस्कारः गर्भाधानसंस्कारानन्तरं गर्भे सन्तानस्य निश्चये पुंसवनसंस्कारः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्च - एक ... (D112618843)

280/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	87%	MATCHING TEXT	4 WORDS

क्रियते। अस्य संस्कारस्य मुख्

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्च - एक ... (D112618843)

278/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

प्राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ

प्राप्यते । याज्ञवल्क्यस्मृतौ

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

282/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	78%	MATCHING TEXT	6 WORDS

प्राप्यते यत् अयं संस्कारः गर्भस्थशिशोः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ◌्तनञ्च - एक ... (D112618843)

279/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	52%	MATCHING TEXT	7 WORDS

अत्र अस्य संस्कारस्य व्रतरूपेण वर्णनं प्राप्यते।

अत्र अन्त्येष्टिसंस्कारस्याशुभत्वात् वर्णनं न प्राप्यते।

W https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

283/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100% MATCHING TEXT	2 WORDS
मार्गशीर्षमासस्य शुक्लपक्			मार्गशिर्षमासस्य शुक्लपक्	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

287/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	58% MATCHING TEXT	7 WORDS
स्कारस्य विषये प्राप्यते यत् अस्मिन् संस्कारे				

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

284/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	100% MATCHING TEXT	6 WORDS
अपि अस्य वर्णनं प्राप्यते यत्			अपि अस्य वर्णनं प्राप्यते यत्	

W https://books.google.co.in/books?id=ZG6kBQAAQBAJ&pg=RA70-PR2&lpg=RA70-PR2&dq=%E0%A4%85%E0%A4%AA%E ...

285/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	37% MATCHING TEXT	7 WORDS
तः सन् ब्राह्मणेन स्वस्तिवाचनं कारयित्वा, तेषामाशीर्वादं स्वीकृत्			त्य • ब्राह्मण साहित्य • सरमा पणि संवाद सूक्त • विश्वामित्र नदी संवाद सू क्त	

W https://kakshakaumudi.com/%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8B%E0%A4%B ...

286/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	61% MATCHING TEXT	7 WORDS
तृणां विधिपूर्वकं पूजा कृता तथा ब्राह्मणानां			तिथौ विधिपूर्वकं उपवासः कृतः । तदनन्तरं ब्राह्मणाना	

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%9A%E0%A5%80

288/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100% MATCHING TEXT	4 WORDS
विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।			विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते । 42607	

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

289/353 **SUBMITTED TEXT** 6 WORDS **100%** **MATCHING TEXT** 6 WORDS

टमे वर्षे ब्राह्मणस्य, एकादशवर्षे क्षत्रियस्य

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

290/353 **SUBMITTED TEXT** 3 WORDS **90%** **MATCHING TEXT** 3 WORDS

य वर्णनं याज्ञवल्क्यस्मृत्या

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

291/353 **SUBMITTED TEXT** 5 WORDS **90%** **MATCHING TEXT** 5 WORDS

अस्य संस्कारस्य वर्णनं कृतं

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

292/353 **SUBMITTED TEXT** 9 WORDS **55%** **MATCHING TEXT** 9 WORDS

ब्राह्मणस्य षोडशो वर्षे, क्षत्रियस्य द्वाविंशत्यां वैश्यस्य चतुर्विंशत्यामुपनयनं
संस्कारः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

294/353 **SUBMITTED TEXT** 5 WORDS **100%** **MATCHING TEXT** 5 WORDS

स्कारस्य वर्णनं प्राप्यते – "दे

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

295/353 **SUBMITTED TEXT** 3 WORDS **90%** **MATCHING TEXT** 3 WORDS

य गृहस्थाश्रमे प्रवेशार्थो

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

293/353 **SUBMITTED TEXT** 5 WORDS **100%** **MATCHING TEXT** 5 WORDS

Submitted	Matching
य अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्था	या अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्था

W https://biography.sabdekho.in/10th-sans2/

296/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	90%	MATCHING TEXT	4 WORDS

यः गृहस्थाश्रमे प्रवेशार्थं

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ़त्तनञ्च - एक ... (D112618843)

297/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	55%	MATCHING TEXT	5 WORDS

तानामुल्लेखः दृश्यते। गृह्यसूत्रेषु विवाहार्थं

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ़त्तनञ्च - एक ... (D112618843)

298/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम्। | विस्तारपूर्वकं वर्णनं कृतम् । 10247

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

299/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

त् विमुक्तो भवति। मनुस्मृत् | त् विमुक्तो भवति । 73584 मनुस्मृति

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

302/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	47%	MATCHING TEXT	9 WORDS

यः उक्तोस्ति। यथा - क्षत्रियस्य कृते राक्षसविवाहः, वैश्यस्य

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ़त्तनञ्च - एक ... (D112618843)

300/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	66%	MATCHING TEXT	4 WORDS

मृत्यां तथा याज्ञवल्क्यस्मृत्यां प्राप् | मित् र याज्ञवल्क्यस्मृतिः पूर्णरूपे

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

301/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

न्याः द्रौपद्याः विवाहा | न्याः द्रौपद्याः विवाहः

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0% ...

303/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

मनुस्मृत्यां याज्ञवल्क्यस्मृत्यां

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

305/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

वाहस्योल्लेखः प्राप्यते।

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

304/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	52%	MATCHING TEXT	5 WORDS

रितः, ब्राह्मणकन्यायाः क्षत्रियेण, वैश्येन, शूद्

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

309/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	47%	MATCHING TEXT	5 WORDS

पुत्र्याः विवाहस्य उल्लेखः प्राप्यते। धर्मशास्त्रानु

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

308/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	58%	MATCHING TEXT	6 WORDS

या वर्तते तथा याज्ञवल्क्यस्मृत्यानुसारं मातुः

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्तनञ्च - एक ... (D112618843)

306/353	SUBMITTED TEXT	10 WORDS	36%	MATCHING TEXT	10 WORDS
तिः प्राप्यते यत् पितृभगिन्याः पुत्री, मातुभगिन्याः पुत्री, मातुलस्य पुत्री,			ते पितृरूपि णे ६५ पितृ पात्र नमस्तु भ्यं नमस्ते मुक्तिहेतवे गयायां पितृरू		

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

307/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	82%	MATCHING TEXT	8 WORDS
अन्त्येष्टिसंस्कारः अयं संस्कारः			अन्त्येष्टिसंस्कारः अन्तिमोसंस्कारः		

W https://sanskritjyoti.blogspot.com/2019/03/

Curiginal

310/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	66%	MATCHING TEXT	6 WORDS

क्रियन्ते त एव अन्त्येष्टि: संस्कार:

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनज्ञ - एक ... (D112618843)

311/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	50%	MATCHING TEXT	9 WORDS

मनुस्मृतौ तथा याज्ञवल्क्यस्मृतौ च वचनं प्राप्यते यत् अयं संस्कारो

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनज्ञ - एक ... (D112618843)

312/353	SUBMITTED TEXT	9 WORDS	83%	MATCHING TEXT	9 WORDS

विस्तारेण वर्णनं प्राप्यते। श्

विस्तृतरूपेण वर्णनं प्राप्यते । 90951 श्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

313/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

स्कारस्य वर्णनं प्राप्यते

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनज्ञ - एक ... (D112618843)

314/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	71%	MATCHING TEXT	4 WORDS

ह्यसुत्रेषु वर्णितानां संस्काराणां

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनज्ञ - एक ... (D112618843)

315/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	52%	MATCHING TEXT	6 WORDS

संस्काराणाम् अधिकं महत्त्वं प्राप्यते। संस्कारमाध्यमेन

SA Susmita_Purkayastha_PhD_Thesis_पार□□□करगृह्यसूत्र□ �तसंस्काराणां न���रन्तर्यं परिवर ्ततनज्ञ - एक ... (D112618843)

316/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

रा: महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्

रे महत्त्वपूर्णां भूमिकां निरू

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Ouriginal

317/353	SUBMITTED TEXT	14 WORDS	100%	MATCHING TEXT	14 WORDS

राजधर्मः 5.1 राज्यस्य सप्ताङ्गानि 5.2 | राजधर्मः, राज्यस्य सप्ताङ्गानि,

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

319/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

अस्माकं संस्कृतसाहित्ये

SA Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

318/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

सामाजिकव्यवस्थायाः नियमनाय | सामाजिकव्यवस्थायाः नियमनाय

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

320/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	45%	MATCHING TEXT	8 WORDS

तः। तैत्तिरीयब्राह्मणे प्राप्यते यत् सर्वेषु देवेषु श्रेष्ठः, | ति । 55822 तैत्तिरीयब्राह् मणस्य अनुसारं देवेषु श्रेष्ठः

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

321/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	87%	MATCHING TEXT	3 WORDS

कुल्लूकभट्टेन 'मन्वर्थमुक्तावली' | कुल्लुकभट्टः - मन्वर्थमुक्तावलि

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

322/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतिटीकाकारेण विज्ञानेश्वरेण ' | याज्ञवल्क्यस्मृतिटिकाकारेण विज्ञानेश्वरेण

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

Ouriginal

323/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतेः मिताक्

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

324/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

पेण प्रतिपादितानि सन्ति।

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

328/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

राज्यस्य सप्ताङ्गानि प्रा

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

325/353	SUBMITTED TEXT	1 WORDS	81%	MATCHING TEXT	1 WORDS

अग्नि-वायु-सूर्य-चन्द्र-यम-कुबेर-वरुणे

अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द् यम, कुवेर, वरुण,

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...

326/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	66%	MATCHING TEXT	3 WORDS

य – काम-क्रोध-लोभ-मोह-मान-मदादीना

य कामं क्रोधं च लोभं मोहं मदं तथा १०३ परापवादं नि

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

327/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	70%	MATCHING TEXT	6 WORDS

तो भूत्वा धर्मशास्त्रीयाणां नित्य - नै

तो भूत्वा धर्मशास्त्रीयविषयानाश्रित्य तेन

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

329/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

शास्त्रविहितानि सर्वाण्

शास्त्रविहितानि सर्वाणि

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

330/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

महाभारतस्य शान्तिपर्वणि राजधर्

महाभारतस्य शान्तिपर्वणि राजधर्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

332/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	84%	MATCHING TEXT	2 WORDS

गुणानां सन्धि-विग्रह-यानासन-द्वैधीभाव-समाश्रया

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

331/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	78%	MATCHING TEXT	2 WORDS

मनु-याज्ञवल्क्यादिस्मृतिकारैरपि रा

मनु याज्ञवल्क्यादय: स्मृतिकारा: आचारं

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

333/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	62%	MATCHING TEXT	6 WORDS

अप्राप्तवस्तुनः प्राप्त्यर्थमुद्योगः प्राप्तस्य च संरक्षणम्,

अप्राप्तवस्तूनां प्राप्तिः ' योगः', प्राप्तवस्तूनां संरक्षणमे

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

334/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	61%	MATCHING TEXT	3 WORDS

रियत। याज्ञवल्क्यस्मृतिकारः महर्षियाज्ञवल्क्

राप्यते। याज्ञवल्क्यस्मृतौ याज्ञवल्क्

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

335/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	87%	MATCHING TEXT	5 WORDS

उल्लेखः प्राप्यते यत् सः ब्राह्

उल्लेखः प्राप्यते यत् – " ब्राह्

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%9A%E0%A5%80

Ouriginal

336/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	57%	MATCHING TEXT	6 WORDS

क्षां प्राप्नुयात्, विनीतस्वभावः स्यात्, नित्यं

क्षं प्राप्नुवन्ति वै ४१ न तां गतिं सुरा यान्ति यो

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

337/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	76%	MATCHING TEXT	3 WORDS

चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणाञ्च

चतुर्णां वर्णानां चतुर्णामाश्रमाणाञ्च

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

338/353	SUBMITTED TEXT	7 WORDS	68%	MATCHING TEXT	7 WORDS

येषु नियोजनस्य विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।

येषु अस्य तीर्थस्य विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते ।

W https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0% ...

339/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

त्यागेन परमपदस्य प्राप्ते

त्यागेन परमपदस्य प्राप्तिः

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

340/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	78%	MATCHING TEXT	3 WORDS

यानेकान्युद्धरणान्यपि प्राप्यन्ते

यानि कानि चोद्धरणानि प्राप्यन्ते ।

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

341/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	80%	MATCHING TEXT	4 WORDS

नित्यं ब्राह्मणेभ्यो प्रदत्तस्य

नेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः प्रदत्तवान् तस्य

W http://peterffreund.com/Vedic_Literature/Vedic%20Literature%20Unicode/Purana/narada%20purana.rtf

342/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	62%	MATCHING TEXT	8 WORDS

स्म। नीतिचतुष्ट्यी याज्ञवल्क्यस्मृतौ रा

स्मृरूपरि नवभ्◌ाष् यायाज्ञवल्क्यस्मृतेरू

W https://archive.org/stream/dharmashastrasyaitihasdrkhageshvarmishra/Dharma%20Shastrasya%20Itihas% ...

Curiginal

343/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	100%	MATCHING TEXT	5 WORDS

नां वर्णनं प्राप्यते। राज्ञो

SA Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

344/353	SUBMITTED TEXT	5 WORDS	54%	MATCHING TEXT	5 WORDS

धन्वदुर्गः, जलदुर्गः, गिरिदुर्गः, सैन्यदुर्गः, सहायदुर्गः

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

347/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

नां वर्णनंप्राप्यते। राज्ञा

SA Swapan Kumar Debsharma.docx (D110789690)

345/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	71%	MATCHING TEXT	3 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य संवि	याज्ञवल्क्यस्मृते राचाध्यायस्य द्वि

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

346/353	SUBMITTED TEXT	2 WORDS	100%	MATCHING TEXT	2 WORDS

याज्ञवल्क्यस्मृतौप्राप्यते -"	याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्राप्यते।

W https://amp.sa.autograndad.com/73930/1/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0% ...

348/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

तं राज्ञो युधिष्ठिरस्य	तेः राज्ञः युधिष्ठिरस्य

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

Curiginal

349/353	SUBMITTED TEXT	4 WORDS	100%	MATCHING TEXT	4 WORDS

सविस्तरं वर्णनं प्राप्यते। एतेषा

सविस्तरं वर्णनं प्राप्यते। एतेषां

W https://amp.sa.freejournal.org/9502/1/%E0%A4%AC%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A5%8D%E0%A ...

350/353	SUBMITTED TEXT	8 WORDS	28%	MATCHING TEXT	8 WORDS

श्रीकृष्णस्य राज्यसभायां अनेके विद्वद्गणाः उपस्थिता आसन्। राजनीतिनिपुणस्योद्भवस्यापि श्रीकृष्

श्रीकृष्णेन अपि राजीमत्यै आशीर्वादाः प्रदत्ताः । 90007 श्रीकृष्णेन बाल्यं वृन्दावने यापितम् । 90008 श्रीकृष्

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

351/353	SUBMITTED TEXT	6 WORDS	55%	MATCHING TEXT	6 WORDS

आन्वीक्षिकी, त्रयी तथा वार्ता त्रिसृणामपि विद्या

SA Kuldeep Singh Dharamshastra LBSRSV.docx (D110195447)

352/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	100%	MATCHING TEXT	3 WORDS

य सिद्धान्तस्य प्रतिपा

य सिद्धान्तस्य प्रतिपा

W https://svn.apache.org/repos/bigdata/opennlp/tags/langdetect-183_RC2/leipzig/data/san_wikipedia_2 ...

353/353	SUBMITTED TEXT	3 WORDS	88%	MATCHING TEXT	3 WORDS

तिसिद्धान्तः, शक्तिसिद्धान्तः,

त सिद्धान्तः, 2. फलित सिद्धान्तः।

W https://archive.org/stream/sanskritshastramanjushadr.udayshankarjha/Sanskrit%20Shastra%20Manjusha ...